किस्त-किस्त जीवन

डा० शेफालिका वर्मा

रक अवकाश

कटा आकाश
(गद्य–गीत),
सात (कविता

और उर्वशीमे
कविता संग्रह)
गी, दूरदर्शन,
त–प्रसारित।
ओरियल गोल्ड
चेतना सम्मान
विभूति सम्मान
काव्यविनोदिनी
शिर श्रीवास्तव
न यूरोपक बोर्ड
बायोग्राफिकल
ऑफ द इयर'

साहित्य परिषद्,
आन्दोलन, रेड

ल, बजपुरा
ना)



डा० शेफालिका वर्मा

किस्त-किस्त जीवन



एकटा प्रसंग

सुख तँ मानवक चारू कात छिड़िआयल रहैत अछि मुदा हमरा वेदनाक मोतीए चुनबामे किएक आनन्द भेटैत अछि, किएक तोष भेटैत अछि? एकर विश्लेषण के करत? 'स्वयं' कँ उपगृहीत करबा सँ पहिनहि 'स्वयं' कें हेराय नहि दी – ई आशंका कखनो काल एकटा विकल आ वि शृंखल मानसिक स्थितिमे धकेलि दैत अछि हमरा तखन अपन जिनगीमे भटकल भोतिआयल अनगिन चेहरा–मोहरा आ संवाद परिसंवादक बरियाती हमर चेतनाक तप्त धरातल पर बरखाक मेघ जकाँ झुकि जाइत अछि। एतेक लग, एतेक लग जे एकटा हल्लुक प्रयाससँ हम ओकरा छुबि सकैत छी। भावावेशमे हमर आंगुर स्वतः मेघ दिस उठैत अछि, मुदा, स्पर्शातुर आंगुर आ झुकल मेघक मध्य तखनो एकटा निर्मम दूरी रहिए जाइत अछि। किन्तु ई वेदना सभ दिन हमर शक्ति रहल, दुर्बलता नहि।

Cover Design : Abhay / 09304429215

एकटा बालिका, एकटा किशोरी, एकटा युवती, एकटा प्रौढ़ा आ एकटा वृद्धाक भाव-भंगिमा तथा अनुभूतिक संकलित स्वरूप थिक किस्त-किस्त जीवन जे अपन कायाक स्वरूप बदलैत गेलि, सम्बन्धक डोर बदलैत गेलि मुदा ओकर अल्हड़ता, ओकर निश्च्छल, सरल, सहज सौम्यता सभ अवस्थामे ओहिना विद्यमान रहलैक, अक्षुण्ण रहलैक।

एकटा पिताक दुलारू बेटी, एकटा पतिक प्रियतमा पत्नी, बेटा-बेटी, जमाय, पुतहु, नाति-नातिन, पोता-पोतीक वात्सल्यक सरिताक कलकल निनादक भाव व्यक्त करयवला साक्ष्य अछि किस्त-किस्त जीवन जे परिवारक सुख-समृद्धि, सम्बन्धक प्रेममय एवं सौहार्द्रपूर्ण निर्वहनक ओहने त्यागमय चित्र प्रस्तुत करैछ जे कहियो जनकनन्दिनी सीता प्रदर्शित कयलनि आ आइ धरि हमरा सभक आदर्श बनल छथि।

साहित्यिक क्षेत्रमे कथा, कविता, उपन्यास, निबन्ध, यात्रावृतान्त आदिक मौलिक लेखनक स्थिति-परिस्थिति आ ताहि संग जीवनानुभूतिक सूक्ष्मतम भावभूमिकेँ कतहु उपन्यासक कलेवरमे, कतहु कथाक सांचमे, कतहु विशुद्ध कविताक त्वरामे, कतहु एकटा निर्भीक पत्रकारक तेवरमे तँ कतहु एकटा गंभीर चिन्तकक रूपमे अपन जीवन गाथाकेँ किस्त-दर किस्त प्रस्तुत कऽ रहल छथि मैथिलीक प्रख्यात लेखिका डा० शेफालिका वर्मा जे पाठकक मोनकेँ ओहिना तृप्त करतनि जेना पियासल पथिककेँ निर्झर झरनाक एक-एक बुन्द शीतलता प्रदान करैत छैक।

-शरदिन्दु चौधरी



डा० शेफालि

नाम : डॉ० शेफालिका वर्मा
पिता : स्व० ब्रजेश्वर मल्लिक
पति : स्व० ललन कुमार वर्मा
शिक्षा : एम.ए., पी. एच-डी. (हिन्दी)
वृत्ति : एस. एन. एस. आर. के. ए
प्राप्त हिन्दी विभागाध्यक्ष।
प्रकाशित कृति : स्मृति रेखा (संस्मृति) विप्र
(कथा संग्रह), यायावरी (
अर्थयुग (कथा संग्रह), नागप
संग्रह) फणीश्वरनाथ रेणु (अ
अप्रकाशित कृति : रजनीगंधा, अनाम अनुभूति (
नारी चित्रण (हिन्दी शोध ग्रन्थ
एकर अतिरिक्त विभिन्न
सेमिनारमे दू सयसँ उपर क
सम्मान : ★ 'मैथिली एकेडेमी, इलाहाबाद
मेडल (1974)। ★ चेतना
(2004) ★विद्यापति सेवा
(2005) ★मैथिली एकेडमी
सम्मान' ★ मुख्यमंत्री नीती
शेखर सम्मान' 2007, ★ 'म
परीक्षामे शामिल तथा विशे
इन्स्टीच्यूट, नार्थ कैलिफोर्नि
लेल अनुशंसित।
साहित्य अकादमी; चेतना समिति; सहरसा नगर प
कोसी क्षेत्रीय महिला साहित्यकार संघ, जयप्रकाश
क्रास आदि संस्था सभमे पदाधिकारी/सदस्य रूपमे

सम्पर्क :
103, 105 शेफालिका-ललन होम्स, अभिषेक (सु
बेलीरोड, पटना - 800 014, फोन नं०
ई-मेल : shefalika_writer

किस्त-किस्त जीवन

डॉ० शेफालिका वर्मा

प्रकाशक
शेखर प्रकाशन
पटना - 24

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन
2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी
इन्द्रपुरी, पटना - 24
मोबाइल : 09334102305

☐ प्रथम संस्करण : 2008

☐ मूल्य : 300 टाका

☐ **शब्द संयोजन :** अभय कुमार झा

☐ **आवरण कला चित्र :** उदय, चानपुरा

☐ **मुद्रक :** कुशल कम्प्यूटर्स
कदमकुआँ, पटना - 3
मोबाइल : 9304429215

☐ **पुस्तक प्राप्ति स्थान :** ★ शेखर प्रकाशन, पटना-24
9334102305

★ 103/105, शेफाली-ललन होम्स
अभिषेक अपार्टमेन्ट, मौर्या पथ, खजपुरा
बेली रोड, पटना-14, दूरभाष : 0612-2591900

KIST-KIST JIVAN

by

Dr. Shefalika Verma

300/- Rs. Only

समर्पण

अन्तर हमर अहाँ कें अर्पण !
स्मृतिक स्नेह-घन मे
किस्त किस्तक पाती सभ मे
हँसैत-बजैत, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष
सभ पात्र-पात्रा कें, संगहि
सभ हृदय जीवि कें भाव-समर्पण
प्रेमक ई शतदल कोमल...............!



शेफाली-ललन
9.5.08

आमुख

आत्मकथा मात्र जिनगीक कथा-पिहानी नहि होइत अछि वरन् आत्माक संपूर्ण दिग्दर्शन, वैचारिक क्रांति, मनोभावक उतार चढ़ाव घटनाक्रमक संग-संग चलैत अछि। ई परिस्थितिक विश्लेषण सेहो होइत अछि। संपूर्ण आत्मकथा लिखबामे धरती कागज भऽ जाय, सागर सियाही तैयो आत्मकथा पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि । एहि क्रम मे 'किस्त-किस्त' छह-सात सय पृष्ठ लिखा गेल छल। एकर प्रकाशन लेल सोचबो नहि कने छलहुँ। अचानक प्रकृति पेटी पर पंचानन, शरदिन्दुक उदय भेल। प्रकाशन लेल दबाव पड़ल। संक्षेप करबाक आग्रह भेल। एहि क्रिया-प्रक्रियामे कतऽ के छुटलाह कतऽ की भंग-अभंग रहल, सोचबा लेल पाठक पर छोड़ि देलहुँ।

हम कोनो एहेन महान् व्यक्ति नहि छी जकर आत्मकथाक कोनो महत्व हो आ ने कोनो एहेन साहित्यकार छी जकरा बुझबा लेल लोक ललायित होइछ । ई कथा थीक एकटा अति भावुकमना साधारण लड़कीक जे शहरक वैभव विलासक मध्य जन्म लैत कोना ग्रामीण परिवेशमे, जीवनक बाटमे अपन सहनशीलताक चरम पर पारिवारिक, सामाजिक पारंपरिक दायित्वक निर्वाह करैत रहलीह । कोना मैथिली साहित्यक देहरियो धरि आइ पहुँचि सकलीह। जहिना पृथ्वीमे तीन भाग जल आ एक भाग धरती रहैत छैक ओहिना हमर जीवनमे तीन हिस्सा भावना-कल्पना आ एक हिस्सा यथार्थ रहल अछि- किन्तु एहि सभसँ फराक हमर समस्त जिनगी 'कम्प्रोमाइजक' एडजस्टमेन्टक' जिनगी रहल परिस्थितिक संग, परिवारक संग, समाजक संग।

किस्त-किस्त जीवन एहि कारण जे एहि मे डायरीक पन्नाक संग सभ किछु आयल अछि। डायरी लिखबाक हिस्सक हमरा कहिया लागल छल मोन नहि अछि- साइत बाल्यकालसँ, किएक तँ शरद, बंकिम, अज्ञेय आदिक संग हम बेदरासँ जवान भेलहुँ फेर अमृता, अज्ञेय, जैनेन्द्र, महादेवीक संग अपन मोनके रंगैत रहलहुँ। अन्ठावन इस्वीसँ दू हजार एक धरि हमर आलमारीमे डायरीक अमार लागि गेल। वर्माजी बजैत छलाह- 'हम डायरीक पन्नाकें पुस्तकाकार प्रकाशित करबा दैत छी। हमरो मोनमे उत्साह जागल किएक तँ डायरी मात्र घटना-दुर्घटनाक भार वहन नहि करैत अछि अपितु ओहि संग गुम्फित मनोभाव, दशा-प्रदशा परिलक्षित होइत रहैत अछि। अतीतकें समेटि भविष्यक मजगूत इमारत ठाढ़ करबामे डायरी न्यों केर पाथरक काज करैत

अछि। डायरी लिखनाइ समयकेँ कैद करब थीक। बीतल क्षणक इजोतमे भविष्यक नव दिशा, नव विहानक संरचना थीक, समाजकेँ आगू बढ़ैबाक प्रयास थीक।

वर्माजी चलि गेलाह। डायरीक पन्ना क्रमबद्ध राखल छल-सोचलहुँ बच्चा सभकेँ ई थाती सौंपि देब किन्तु जखन वर्माजीक बिना जीवऽ पड़ल तँ जीवनक छिड़िआएल पन्नाकेँ फेरसँ एकत्र करबाक प्रयास करय लगलहुँ।

खास कऽ वर्माजीक समय-असमय बाजल 'डायलग' सभकेँ। जीवनक भागदौड़मे ओ किछु बजैत छलाह तँ हम नोट कऽ लैत छलहुँ- ओ बजैत छलाह-लिख लियऽ रन्नो, लिख लियऽ जे हम बजैत छी ओकरा डायलग नहि बुझू। लिखल रहत, पढ़ैत रहब तँ काज आओत जिनगीमे......हम भरिसक प्रयास करैत छलहुँ आगूमे जे कागज भेटि जाय, अखबारक पन्ना भेटि जाय, ओहि पर लिखि ली। आइ जीवनक एहि एकाकीपनमे पागल जकाँ ओ कागजक टुकड़ी सभ ताकि रहल छी। कतहु किछु भेटि जाइत अछि तँ लगैत अछि विश्वक संपदा भेटि गेल।

हमरामे साहसक जागरण भेल। बीतल-बीताओल जिनगीक खंड-खंडकेँ जोड़बाक प्रयास ई आत्मकथा छी। वर्माजी प्रत्यक्ष नहि रहला पर हम डायरीक पन्नाकेँ यथावत प्रकाशित करबाक साहस नहि कऽ सकलहुँ किएक तँ 'मन को किन्तु समझनेवाला फिर ऐसा मन न मिलेगा'।

हम दुनू गोटे पति-पत्नी कम प्रेमी-प्रेमिका बेसी रहलहुँ। हमर जिनगी हुनक गान-तानसँ, प्लेटोनिक प्रेमसँ शुरू भेल आ हुनके गान-तान पर खत्म भऽ गेल। जे किछु घटल, मोनक तहमे घटल-तँ एहि किस्त-किस्तमे कतहु वेदनाक आधिक्य, कतहु चिंतनक, कतहु उपदेशक बाहुल्य आबि गेल अछि डायरीसँ उतारल कतरन जकाँ! **बार्नर्डशा** कहने छथि- यदि सभ व्यक्ति अपन जीवनी लिखऽ लागथि तँ विश्वमे सुन्दर उपन्यासर्क कमी नहि रहत! स्मृति पर स्मृति अबैत अछि। कोन पहिने कोन बादमे एकर निरूपण कठिन छल। स्मरण-विस्मरणमे, स्मृति विस्मृतिमे सभटा ओझरा गेल। सभटा घटना-क्रम एक दोसरा केँ ठेलैत आगू-पाछू अबैत अछि। जेना जे अबैत रहल ओहि सभकेँ पंक्तिबद्ध करबाक चेष्टा ई पुस्तक थीक। सक्षम पाठक आलोचक स्वयं सोझरा लेताह आ हमरो बाट देखौताह।

जहिना बोधगयामे बुद्धक मूर्त्तिकेँ सभ अपन-अपन मोनसँ देखि चीनी आकृति, थायलैंडी आकृति बना देलनि ओहिना आत्मकथामे सभ अपन-अपन मोनक चीज देखैत छथि? नहि तँ ककरो जीवनसँ आनकेँ कोन प्रयोजन? प्रत्येक आत्मकथाक पाठक भिन्न-भिन्न मानसिकताक होइत छथि- अपना अनुरूपे ग्रहण करैत छथि?

एक बात लेल हम सुधि पाठक आ आलोचकगणसँ क्षमा चाहब जे अपन आत्मकथामे हम जहिना जीलहुँ ओहिना लिखलहुँ- जेना हम अपन पिताकेँ 'पापा' कहैत रही तँ पित्तीकेँ बाबूजी। यदि हम संबोधन बदलि दितहुँ तँ सभटा मिथ्या भऽ जइतैक। एहि भावात्मक आत्मकथाकेँ भावात्मके दृष्टिकोणसँ बुझल जाय संसारमे एकटा एहनो प्राणी अछि जे अपन मोनक दुनियामे बेसी जीवैत अछि। कोनो भावुक स्त्रीकेँ बुझबा लेल तर्क-वितर्क, संशय-असंशयबला मोन नहि वरन् सहृदय, सहसंवेद्य संश्लेषण रहबाक चाही। हँ, ओकालत-पेशाक प्रति हमरा बड़ श्रद्धा अछि। तेँ हम ओकालतक खास कय एकटा सिद्धान्तवादी ओकिलक रोध-अवरोध, कष्ट संघर्षक विशद वर्णन एहिमे केने छी। जँ एहि पथक पथिककेँ कनिको इजोत भेटि जायत तँ हमर प्रयास सार्थक हएत।

हम आभार प्रकट करैत छी अपन समस्त परिवार केर, समस्त पाठक-पाठिकागण केर, समस्त साहित्यिक प्रेरणा स्रोत केर संगहि बन्धु जीवकांत केर जे आइ सँ बीस बरिस पहिनहि हमरा एहि लेल प्रेरित कयने छलाह। मधुकांत, शंकरदेव, चन्द्रेश, आजाद, खास कऽ पंचानन-शददिन्दुक संगे शेखर प्रकाशन परिवार लेल हमर हार्दिक नमन जिनक सिनेहक प्रतिफल थीक ई पुस्तक।

-शेफालिका

'शेफाली-ललन होम्स', पटना

विषय-क्रम

काल क्रूर रहल

'जिन्दगी में तो सभी प्यार किया करते हैं
मैं तो मर कर भी मेरी जान तुझे चाहूँगा......

गीतक स्वर गुँजि रहल अछि। हम अन्हारोमे हुनकर उपस्थितिकेँ अनुभूत कऽ रहल छी। आँखि फाड़ि-फाड़ि गाबयबलाकेँ ताकि रहल छी- जरूर एहिठाम एहि आस-पास कतहु छथि- स्तब्ध हम पड़ल छी- अपन हृदयक धड़कब स्वयं सुनि रहल छी- असगरपनक भय जेना हमरा सुनामी मे ठाढ़ कऽ देलक- जे चलि गेल ओ चलि गेल जे बचि गेल ओ ठूंठ जकाँ ठाढ़ रहि गेल- सौंसे लहरि ओकरा कचरा बुझि जिनगीक रेत पर पटकि देलक। 'उठू-उठू रन्नो। अहाँ हिम्मत वाली छी। सौंसे संसार अहाँक आगू अछि- बढ़ू आगू बढ़ू जिनगीक सामना करू। यथार्थमे आउ-' जेना ई हमरा अपन बाँहिमे घेरने होथि- अपन स्वरसँ सम्मोहित करैत होथि- अहाँकेँ आब नव संसारक सृजन करऽ पड़त, अपना बूते जीवऽ पड़त। हम अहाँक साँस-साँस मे छी अलग कहाँ छी रन्नो, अहाँ सँ अलग कहाँ छी- मैं तो मर कर भी मेरी जान तुझे चाहूँगा- 'मरकर'- देह सिहरि जाइछ- किएक ई गीत ओ हमरा सुनौलनि- किएक? कहाँ तँ ओ हमरा भरि पाँज पकड़ि भरि-भरि राति गबैत छलाह।

-तुम्हें छीन ले मेरी बाँहों से कोई मेरा प्यार यूँ बेसहारा नहीं है......तखन आइ हमरे प्यार बेसहारा भऽ गेल जे भगवती हुनके छीनि लेलनि।

समाचार-पत्र सभमे बराबर पढ़ि रहल छी हृदय रोग विशेषज्ञ सभक सम्मेलन भऽ रहल छैक। इन्दिरा गाँधी हृदय रोग संस्थानमे फलाँ मशीन आबि रहल अछि, फलाँ मशीन आबि रहल अछि। की सम्मेलन आ मशीनसँ इलाज भऽ रहल छैक ? जाधरि समर्पित डाक्टर नहि होयत - डाक्टरमे मानवता नहि होयत, अपन कर्तव्य पालनक भान नहि होयत- ताधरि की करत ई मशीन सभ ?

हमर पति ललन कुमार वर्मा, जे पटना हाइकोर्टक वरीय अधिवक्तामे सँ छलाह ओ एहि दुनियासँ चलि गेलाह, दैवी कारण जे हो, किन्तु इन्दिरा गाँधी हृदय रोग संस्थानक दुर्व्यवस्था एकर सभसँ पैघ कारण बनि गेल जकरा जखन जेबाक रहैछ

केओ रोकि नहि सकैत अछि किन्तु की कोनो अस्पतालक आकस्मिक विभाग इमरजेन्सीक एहन खस्ता हाल रहैत छैक? की यैह व्यवस्था थीक- जंग लागल मशीन, प्राण रक्षक दवाइ विहीन विभाग, खाली पड़ल आक्सीजन सिलेंडर, टूटल-भांगल एलेक्ट्रिक शाक- की डाक्टर सभ एतेक हृदयहीन होइत छथि ? अपन प्राइवेट नर्सिंग होमकें चलबैक कारण हृदय रोग संस्थान सन विभागक एतेक उपेक्षा ? ओहि ठाम खाली वर्त्तमानकें भूत बनयबाक मशीन बाँचल छैक– आर किछु नहि, आर किछु नहि– नफरत भऽ गेल हमरा डाक्टर सभक नाम सँ यदि मरीजक तत्काल उपचारमे डाक्टर लागि जाइत छैक, प्राणापण चेष्टा करबाक सन्ता जखन रोगी नहि बचय तँ एतबा संतोष तँ अवश्य होइत छैक जे डाक्टर जान-प्राण लगा देलकैक किन्तु विधाते वाम छलाह ? आ आँखिक आगू पन्ना सभ फड़फड़ाय लागल- हिनकर कविता सभ केदार जी, नीरजा, मनोरंजन जीक पत्र सभ आँखिमे मरचाइक बुकनी सन लागि रहल छल- नोर नहि छल खाली लहरि-आगिक लहरि मरचाइक बुकनीक लहरि।

जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू

आदरणीया दीदी जी !
सादर नमन ।

आदरणीय वर्मा जी के आकस्मिक निधन से हम यहाँ बडी उद्विग्नता का अनुभव कर रहे हैं। आपके लिए तो यह मर्मभेदी दुःख कितना रहा है, इसका यत्किंचित् अनुमान ही लगा सकते हैं। अनुकूल, गुणी जीवनसाथी का अचानक साथ छोड़ जाना कितना वेदनाजनक होता होगा, सोचकर भी मन बैठ जाता है। संसार में यही विचित्रता है। यह सदा संसरण-परिवर्तनशील है, जो थे अब नहीं हैं, जो हैं वे भी कुछ दिनों बाद नहीं रहेंगे । आप मुझ से इसकी वास्तविकता को अधिक समझती हैं। कृपया धैर्य मत छोड़ियेगा। पुत्र-पुत्रियों एवं अन्य छोटे-बच्चों को आपके आशीर्वाद एवं सान्निध्य की आवश्यकता है। पुत्रों में वर्मा जी का अंश रूप देखकर मन को समझाने का प्रयास कीजिएगा। मुझे सदा मुस्कुराते हुए आपके मुख में तैरती शून्यता, का मानो यहीं से दर्शन हो रहा है।

ईश्वर आपको इस महती वेदना को सहने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें । एवं आपकी सन्तति एवं बन्धु-बान्धवगण वर्मा जी के वियोग-दुःख को भुलाने में सहायक हों यह प्रार्थना करते हुए वर्मा जी की दिवंगत आत्मा की परम शान्ति की कामना परमात्मा परमेश्वर से करता हूँ ।

आपका
अनुजतुल्य
केदार नाथ शर्मा
(संस्कृत विभाग)
24.12.2001

प्रिय शेफालिका जी,

की लिखू से फुरवे ने करैए । शोकसँ मर्माहत छी। हम किछु दिन पहिने सुनने छलहुँ -ई शोक समाचार - 'ललन जी नहि छथि- कोनो श्रेष्ठ व्यक्तिक मुँह सँ। विश्वास नहि होइत छल-मुदा, बुझलहुँ ने - अधलाह समाचार फूसि नञि होइत छैक। अहाँ पर सदिखन मोन लागल रहैत अछि- कोना हैब..... ।

हमरा सहरसाक साँझ - ललन भैयाक स्वर ......'अभी कुछ प्यार बाँकी है.......' - की, ई शेष भऽ सकैत छैक? पुनः प्रयाग मे, अमरनाथ झा जन्मशती वार्षिकीक अवसर पर अपना सभक भेंट घाँट- से सभ एतेक जल्दी ओ छोड़ि कऽ चल गेलाह ?

अहाँ दऽ ओ लिखने छथि जे जहिना कोमल छी, तहिना अचल....... भगवान अहाँक अटूट सामर्थ्यकें बनौने रहथु। अहाँक वेदना मोती बनिकऽ आखर बनय, किएक तँ अहाँ पर दोबर दायित्व अछि जे धीया-पूता अहींक आँखिमे अपन पिताक छवि देखऽ चाहत, तें अपन आँखि नोरे भरल नहि राखी । श्री 108 जगदम्बा पूरा घर कें शोक सहबाक सामर्थ्य देथु।

अहींक
(नीरजा रेणु)
03.01.2002

श्रद्धया शेफालिका जी,

प्रणाम,

हमरा सतत प्रतीत होइत रहल जे अहाँ सभ सँ दूर रहितहुँ हम ओहि सारस्वत परिवारक सर्वाधिक निकट छी । प्रात:स्मरणीय पूज्य भायक प्रेरणामय व्यक्तित्वहिं तँ हमरासभक सम्बल रहल। ''कोशी कातक गाम बरू हो उजरल, मुदा गाम केर लोक सभक अछि कीर्ति चहुँदिसि पसरल''- हुनकहि पाबि हम ई पाँति बाँचैत छलौं। ओ हमरा छोड़ि गेलाह - ई अकस्माते जखन ज्ञात भेल तँ हतप्रभ रहि गेलौं । अपना पर तामस भेल-कारण विश्वविद्यालयक संघर्षमे हम एना अपनलोकसँ वेसुध रहलौं - तकर भान ओहि क्षण भेल ।

हम पटना अहाँक ओहिठाम गेल छलौं। अहाँ दिल्ली प्रवासमे रही । हम अहाँक व्यथित मनकें जनैत छी जे सतत् सारस्वत - साधनामे लीन अहाँ सदृश विदुषी कोना हमरा सभक लेल, आत्मज-आत्मजाक लेल, समाज साहित्य आओर संस्कृतिक, रक्षार्थ जीवैत - प्रेरणामयी बनल रहलीह।

सत्य प्रकाशक माँ बड़ व्यग्र छथि अहाँक हेतु । हमर परिवार सतत् अहाँक आज्ञाक पालन करबाक संकल्प सँ भरल अछि । कखनो - कोनो क्षण अपने कोनो आदेश प्रदान करबैक हम सभ कृतार्थ होयब। सभक कुशल-समाचार लिखबाक कृपा करबैक ।

माँ तारा सँ अहाँक सपरिवार कुशलताक आकांक्षी ।

– मनोरंजन झा

स्नातकोत्तर विभाग (मैथिली) सहरसा

2.1.2002

चालीस वर्षक प्रिये संगम कोना बीति गेल। पत्नी मनोरमां देहि क साकार रूप पयलौं माँ सँऽ

गप्पो पूर्ण नहि कऽ सकलौं एतेक क्षण कोना बीति गेल ।
पुष्प वाटिका छोट छीन सपना जे देखने छलौं हम अहाँ
देखू अपन ओहि उपवनकें हंसैत विहुँ सैत सुमन सभकें ।

सुमन घीचि अनलक आर सुमन सभ, युगल-पुष्प सँ कली बनल-
की कहियो संभव छल बिनु प्रेरणा बिनु सहयोग अहाँ कें
जीवन मे कतेक झंझा आयल विचलित नहि होमऽ देलौं
अपनं उत्साहित बयना सँ सतत उपर उठलौं अहाँ हमरा
कतेक बात के याद करी मोन विह्वल भऽ जाइछ
वरदान स्वरूपा भेटलौं अहाँ हमरा हर क्षण साकार केलौं खुशीक
सभ धर्म निभयलौं अहाँ सभ अपराध क्षमा केलौं हमर
छोट-छोट एहि भाव सुमन समर्पित, आइ अहाँ के
जनम अवधि हम रूप निहार ल
नयन न तिरपित भेल! प्रार्थना इएह
कहियो नइ दुख पाबी अहाँ माता मे विश्वास हमर.........'
अपन रन्नो, रनिया, छम्मो, राज कें विवाहक चालीसम वर्षगांठ पर

– ललन

3.7.99

सीटीसी ब्राडग्रीन हास्पिटल, लीवरपुल यू के

एक मास बादे हमर जन्म दिन पर लिखने छलाह–
अपन प्यारी मोहक प्रभासित पत्नी 'राज'कें जे हमर प्रेरणा बनि हमर जीवनकें
सम्मोहक रूपसँ सजौलन्हि सभ पर स्नेहक बरखा करैत रहू
जे अहाँ सभ दिनसँ कऽ रहल छी!
हम एतबे अनुभूत करैत छी
एको क्षण हम अहाँ बिनु
एहि संसारमे रहि नहि सकैत छी.....

– ललन

9.8.1999, ओम्सकर्क, यू.के.

आँखि सँ झहरैत नोर मे हम भोरुका सूरज जकाँ स्पष्ट देखि रहल छलहुँ कतेक खुश छलाह ओहि दिन वर्मा जी जे हुनक डाक्टर बेटी बंदना (पींकी) इंगलैंड सँ आबि रहल छलीह। वएह दूनू बेकति तँ इंगलैंड मे अपन पापाक जान बचौने छलथि ।

'99 मे जखन इंगलैड जएबाक भेल तँ आश्चर्य छल– एक मिनट मे बंदना पाहुनक इच्छाक सम्मान करैत तैयार भऽ गेलाह जएबा लेल । हँ, ई दोसर बात छलैक जे संजीव तावत नौकरी सँ त्याग पत्र दऽ वकालत आरंभ कऽ लेने छलाह पिताक संरक्षण मे। किएक तँ क्लाइन्ट आ केसक अवहेलना ई कोनो शर्त्त पर नहि कऽ सकैत छलाह। इंगलैण्डो मे घुमैत फिरैत मानवाधिकार पर पुस्तक लिखैत रहलाह । कानूनक बिना ई जीवि नहि सकैत छलाह। मात्र दुई मासक लेल हम सभ गेल छलहुँ। ठीक दू मास पूरा होयतहि जखन हम सभ भारत लौटवा लेल छलहुँ कि विपत्तिक हिमालय खसि पड़ल छल हमरा सभ पर। ओहि समय पींकी कावेन्ट्री मे पदस्थापित छलीह। के पी ओहिठाम ओम्सकर्क अस्पताल मे। प्रीतू एनी ओहिठाम पढ़ैत छलीह तँ हम सभ ओम्सकर्क मे छलहुँ। वर्माजी खूब सुन्दर सँ सलाद बनौने छलाह– खाली पाहुनेटा कें स्टाइल अबैत छैक – देखू हमहूँ स्टाइल सँ सलाद बनावैत छी आइ– पाहुन खूब हँसल छलाह – तीनू गोटे भोजन कय पाहुन कें अस्पताल लेल विदा कएलहुँ । दुनू गोटे कनिक काल टी वी देखलहुँ। फेर ई कहलन्हि चलू उपर जाकऽ बेडरूम मे आराम करैत छी। दुनू बच्चा स्कूल मे छल । हम सभ ऊपर चलि गेलहुँ आराम करबा लेल। एम्हर ओम्हरक गप्प किछु काल धरि करैत रहलहुँ कि अचक्के ई बाजऽ लगलाह – हमरा छाती मे दरद कऽ रहल अछि। हम कहलहुँ पाहुन कँ बजा दी की ? कहलनि नहि कथी लेल बजेबैक। मोन नहि अछि हमरा एक बेर सहरसा स्टेशन पर एहिना दरद उठल छल। वेलियम खा लेलहुँ तँ आराम भऽ गेल– एखनो वेलियम खा लैत छी, आराम भऽ जायत । मुदा हिनकर दरद बढ़ल गेल। हम तुरन्त पाहुन कें फोन कयलहुँ। ओ आपरेशन थियेटरक ड्रेसेमे भागल अयलाह । हिनका देखिकें कोनो दबाइ दऽ दोसर कोठरी सँ अस्पतालक एम्बुंलेन्स लेल फोन कयलनि– मम्मी पापा के तुरन्त अस्पताल लऽ जाय पड़तैक। हिनका सँ पुछलथिन– पापा अहाँ नीचा सीढ़ी सँ उतरि सकैत छी? हिनकर तँ इच्छा शक्ति प्रबल छल– हँऽ हँऽ किएक नहि ? ई नीचा ड्राइंग रूम मे चलि गेलाह आ हम कपड़ा बदलऽ लागलहुँ। नीचा अबैत छी तँ देखैत छी ई सोफा पर शरविद्ध पक्षी जकाँ छाती पकड़ि छटपटा रहल छलाह। पाहुन एम्बुलेन्स छोड़ि अपन कार मे हिनका पकड़ि कें बैसा देलथिन। क्वार्टर तँ अस्पताल कैम्पसे मे छल किन्तु ओहिठाम पहुँचबा सँ पहिने ई कारमे पौदान पर खसि पड़लाह– हम चीकड़ैत रहलहुँ पाहुन पापा खसि पड़लाह किन्तु पाहुन बिना कोनो ध्यान देने स्पीड मे हॉर्न दैत कार कें इमरजेन्सी मे पहुँचा देलनि । कार सँ हिनका निकालल गेल – एकदम अँइठ मँइठ गेल रहथि, बेहोश–बेसुध । असगर पाहुन सँ नहि उठि सकलाह छनहि मे चारि पाँच वार्ड ब्याय पाहुन सभ मिलि हिनका उठा कें इमरजेन्सी मे लऽ गेल । हम कानि रहल छलहुँ । सभटा सिस्टर हमरा पकड़ने दोसर रूम मे लऽ गेल

– हमर मुँह सँ एके स्वर टेपरिकार्डर जकाँ बहरा रहल छल – सेंभ हिम– सेभ हिम – ओ सभ हमरा साँत्वना दऽ रहल छल । डा० के. पी. कर्णक एतेक पैघ रुतबा ओहि अस्पताल मे छल जे डाक्टर सँ नर्स धरि हुनका लेल जान देबा लेल तैयार – हम पाहुनक आँखि मे नोर देखितहिँ बूझि गेलहुँ जे कार्डिएक एरेस्ट भेल छल। बचबाक उम्मीद नहि छल । किन्तु ओहिठाम डाक्टर सभ हिनका बचा लेलक। ओकर सभक थ्योरी छल जे साँस रूकि जाइत अछि तकर बादहुँ ब्रेन काज करैत रहैत छैक । आ एलेक्ट्रिक शॉक दऽ कए प्राण कें ब्रेन सँ हार्ट मे आनल जायत छैक । कतेक सटीक थ्योरी अछि ई – जखन अकस्मात संजीवक बेर मे 11 बजे राति मे हमर सीजेरियन सहरसा मे भेल छल तँ हम अनुभूत कएने छलहुँ। तखन बेहोश करबाक प्रक्रियामे चाह छकना सनक एकटा बड़का छकना पर उज्जर कपड़ा राखि मुँह पर उनटा देल जाइत छल ओहि पर सँ इथर ढारल जाइत छल। हम बलि पशु सन छटपटा रहल छलहुँ। डाक्टर मेहताक आदेशानुसार हम सांस लैत छलहुँ, छोड़ैत छलहुँ । एकटा नर्स नाड़ी पर हाथ राखने छल। हम सभटा बुझि रहल छलहुँ। हमर सायाक गिरह खोललक । फेर पेट पर कुछ लगौलक – तावत हमर दुनू हाथ दुनू दिस अवस भऽ कऽ खसि पड़ल, दुनू पैर दुनू दिस । नर्स बाजल। चलि गेलीह, चलि गेलीह। हम ओकरा कहऽ चाहैत छलहुँ हम बेहोश नहि भेल छी, हम सभटा जानि रहल छी किन्तु आश्चर्य छल; नहि तँ अपन हाथ हिला सकैत छलहुँ आ नहि तँ पयर। नहि तँ किछु बाजि सकैत छलहुँ। कान मे स्टोव सन घन–घन केर स्वर भऽ रहल छल। डाक्टरक छूरा हमर पेट पर सीधा चलल– जेना केओ नौह गड़बैत होअय ई अनुभूति हमरा भऽ रहल छल। हम कहऽ चाहैत छलहुँ एखन नहि काटू हमरा, हम होस मे छी किन्तु हम अवस आ तकर बादे हम अचक्के अचेत भऽ गेलहुँ।

इएह तँ जिनगीक अन्तिम क्षण मे अनुभूत होइत हेतैक। एहिना तँ हिनका लागल हेतैक। मोन पड़ि जायत अछि 18 अक्टूबर 2001क ओ अभागल साँझ जे 'शेफालिका' के पुनः अंधकारमय 'रजनी' बना गेल। देखतहिं देखतहिं हमर जीवनकें रंगीन टीवी सँ ब्लैक एण्ड ह्वाइट बना गेल – सांझुक पांच बजैत होयत । खुरपी हाथ मे मेने बाड़ी सँ पहुँचलाह– हमरा किछु जलखै दऽ दियऽ बड़ कमजोरी लागि रहल अछि। हमर कोर मे संस्कृति छलीह जे अपन दादा के देखतहि हुमचि–हुमचि हुनका लग जएबा लेल चाहैत छलीह– ई खाली दुलार कएलन्हि– आइ हमरा ताकत नहि अछि जे कोरा मे लेब । खाली छाती सँ ओकरा सटा लेलन्हि– शबनम सांझ दऽ रहल छलीह। हम हॉर्लिक्स आ ब्रेड हुनका दऽ देलौ। आधा गिलास हॉर्लिक्स पीबि छोड़ि देलनि। तावत संजीव आएल पापा किछु क्लाइन्ट आयल छथि– आइ कहि दहक जे हम बाहर जा रहल छी। एखन नञि भेंट करब। हँ, अहाँ अपन बात कऽ लियऽ फेर

हमरा कहलनि– चलू आइ डा० अग्रवाल सँ दवाय के विषय मे पुछिए लैत छी – हमर मोन खुश भऽ गेल– आइ अपना सँ तैयार तँ भेलाह डाक्टर लग जएबा लेल। ओना मोन मे आएल कि सांझ मे जायब, एतेक दूर डाक्टरक क्लिनिक अछि। फेर सोचलहुँ जे एको बेर हम टारब तँ ई फेर भोरो नहि जेताह– कहीं मोन नहि बदलि जाय– हम तुरंत तैयार भऽ गेलहुँ– एक बेर अग्रवाल ओतऽ बैसय पड़ल तँ जखन डाक्टर केँ मालूम भेलैक तऽ बड़ अफसोस करैत बाजल छल– वर्माजी अहाँ केँ एतेक काल बैसऽ पड़ल, हम माफी मँगैत छी । आन बेर अहाँ आउ तँ हमरा खाली एकटा चिट पठा दियऽ। हम तुरंत बजा लेब– कतेक बेर तँ डाक्टर फीसो हिनका सँ नहि लैत छल। कागज पत्तर लय लेलहुँ– एकोटा पुरजा नहि छोड़ब – हिनकर बात पर हम मुस्काय देलहुँ – हँऽ हँऽ, सभटा लऽ लेने छी । हमर बैग मे टाका होयत ओहो लऽ लेब– हम बिना कारणे हड़बड़ा गेल रही। पैसा देखलहुँ तँ मात्र तीनटा 50क नोट छल– जँ डाक्टर फीस लय लेत तँ 50 टाका......मम्मी। पैसा नहि अछि तँ हम दऽ दैत छी– बन्दना बजलीह– नहि–नहि संजीवक संग मे अछि अहाँ तावत आराम करू । हम जहिना जाइत छी ओहिना चलि आएब। सांचे हम जहिना गेलहुँ ओहिना चलि एलहुँ हिनक निष्प्राण शरीर लऽ कऽ कतेन उत्साह सँ हम सभटा पुरजा सभ लऽ कऽ कार मे बैसि रहलहुँ– संजीव कार स्टार्ट करऽ लागल– पापा गाड़ी मे बैसि जाउ ने– ई कम्पाउण्डक गेट खोलि ओकरा पकड़ि केँ ठाढ़ छलाह– पहिने अहाँ गाड़ी निकालू फेर गेट बन्न करब, तखन बैसब। एतेक प्रेम हुनका अपन फिएट कार सँ छल जे हरदम ओकरा अपने सँ साफ करैत रहैत छलाह। एकटा खरोंच तक गाड़ी मे नहि लागबाक चाही। अपन सीट पर संस्कृति केँ बैसाय कार बन्न कऽ देने छलाह। गाड़ी गेट सँ निकलल, संस्कृति केँ निकालि शबनमक कोर मे दय देलनि। रस्ता मे पुछलनि पैसा नेने छी ने ? डेढ़ सए टाका तँ छल लऽ नेने छी– पाछूक सीट पर बैसल हम बजलहुँ डेढ़ सय– ई चौंकि गेलाह – कनेक चश्मा लगा के देखियौक तँ कतेक छैक– सरिपों चश्मा लगा के पर्स सँ टाका निकाललहुँ तँ पाँच सय केर तीनटा नोट छल– ई हँसय लगलाह– कतेक बेर कहैत छी चश्मा लगाकऽ काज करू सौ टकियाक बदला पाँच सय केर नोट अहाँ नौकरो के दऽ दैत छी । ठीके कतेक बेर हम एहेन गलती करैत छलौं– अहाँ किएक ने सय टकिया आ पाँच सय टकिया अलग अलग राखि दैत छी– एहि सभ हँसी मजाकक सँग गाड़ी सँ जाइत छलहुँ– अग्रवाल केँ की सभ कहबाक छैक ई सभ बात मोन पाड़ैत रहलहुँ– पींकी केँ किएक नहि लऽ लेलहुँ– भरि दिनक थाकल छल, हम छोड़ि देलहुँ– ई चुप भऽ गेलाह– पुछलाह कतेक बाजल अछि – छह बाजि गेल पापा – ड्राइव करैत, घड़ी देखैत संजीव बाजल– तारामंडल लग पहुँचबा पर ई बजलाह हमरा सांस लेबा मे तकलीफ भऽ रहल

अछि– पटेल नगर सँ तारामंडल धरि कतेक हाहाहीही करैत एलहुँ कि अचक्के हुनक बात सुनि गाड़ी रोकि दवाइ लेमय लागलहुँ। सोना मेडीकल सँ संजीव दवाइ कीनि रहल छल आ हम दौड़ि केँ बगलक बूथ सँ अग्रवाल केँ फोन लगौलहुँ। फोन नहि लागल। बस घर पर बंदना केँ कहि देलहुँ जे हम सभ कार्डियोलोजी डिपार्टमेण्ट इमरजेन्सी जा रहल छी – डा० अग्रवाल एक बेर कहने रहथि जे कहियो कोनो एहेन स्थिति होयत तँ सीधा इमरजेन्सी लऽ जएबा लेल– संजीव तीव्र गति सँ गाड़ी इन्दिरा गाँधी हृदय रोग विभाग दिस भगा रहल छल। श्री कृष्ण मेममोरियल लग हिनका सांस लेबा मे बड़ कष्ट होमय लागल– हमरा इंगलैंडे जकाँ भऽ रहल अछि– एतबे बजैत छलाह– गाडी नहि रोकू; जल्दी चलू– हम पाछाँक सीट पर सँ हिनकर पीठ ससारि रहल छलहुँ। पीठ घाम सँ नहायल छल आ हम पागल जकाँ बाजि रहल छलहुँ–बेटा हमर, अहाँ केँ किछु नहि होयत– बेटा–बेटा हम नहि जानैत छी पति केँ कष्ट मे देखि हमर मुँह सँ खाली बेटा–बेटाक संबोधन किएक अनवरत निकलि रहल छल। छह साढ़े छह बजैत होयत। अशोक राजपथ पर ट्रैफिक जाम– तैयो हम सभ कोहुना इमरजेन्सी पहुँचलहुँ। संजीव दौड़ि केँ स्ट्रेचर आनबा लेल चलि गेल। ओहिनो स्थिति मे ई स्वयं कारक गेट खोलि ठाढ़ भऽ गेलाह– हम हुनका रोकि देलहुँ– अहाँ नहि चलू, संजीव स्ट्रेचर आनबा लेल गेल अछि। ओ स्ट्रेचर पर स्वयं उछलि केँ बैसि गेलाह। जल्दी चलू हमरा तुरन्त ऑक्सीजन दियऽ । जाहिठाम डाक्टरक काउन्टर छल ओहिठाम स्ट्रेचर राखल गेल। थाकल ठेहियायल चेहरा नेने एकटा डाक्टर आ सलवार सूट मे एकटा लड़की गरदनि मे आला लटकौने एकदम प्रोफेशनल जकाँ ओ डाक्टरनी बी० पी० चेक करऽ लागल आ डाक्टर दवाइक पुरजा लिखि संजीव केँ आनऽ लेल कहलक। ई चिकरि रहल छलाह– हमरा पहिने ऑक्सीजन दियऽ, माथ तर तकिया दियऽ हम अपन हाथक तकिया बनाय माथ तर राखि देलहुँ! हमहूँ चिकरऽ लागलहुँ–पहिने ऑक्सीजन दियौक– तैयो ओ सभ आराम सँ ECG लेमऽ लागल– रूटीन जकाँ आराम सँ चेकअप! की एकरे नाम इमरजेन्सी थीक– पहिने कोन चीजक जरूरत पेशेन्ट केँ छैक– ई डाक्टर नहि बुझैत छैक? जान बचबऽवला दवाइ की इमरजेन्सी मे नहि राखैत छैक जे ओहन समय मे बाजार भेजैत छैक? हम चिकरऽ लगलहुँ– पहिने ऑक्सीजन दियौक, एक दू आदमी हमरा पकड़ि लेलक– हम छटपटाय लगलहुँ– छोड़ू हमरा पहिने ऑक्सीजन लगाउ– एक आदमी ऑक्सीजन आनि नली हिनक नाक मे देलक। नली नीचा खसि पड़ल। फेर वएह नली गंदा फर्श सँ उठाय नाक मे लगा देलक। चारू दिस भीड़ लागि गेल छल जेना कोनो तमाशा भऽ रहल हो। हम चिकरि रहल छलहुँ की भेलैक हिनका, हमरा कहू– हम छटपटा रहल छलहुँ। असहाय जकाँ चारू कात देखि रहल छलहुँ । संजीवो प्राण रक्षक दवाय

आनऽ गेल छल- पंछी पिंजरा छोड़ि चुकल छल । डाक्टर छाती पर मुक्का मारि रहल छल- तावत संजीव दवाय कीनि डाक्टर कें देमऽ लागल। हम बड़ जोर सँ चिकरलहुँ- संजीव। अकचका कें ताकलक- की भेलैक मम्मी- फेर ओ चिकरऽ लागल - एलेक्ट्रिक शाक नहि अछि की इमरजेन्सी मे- एकटा आदमी बेजान मशीन आनि देखौलक - काज नहि कऽ रहल छैक- इंगलैण्ड मे मरल व्यक्ति कें इमरजेन्सी मे जीवित कय देल गेल छल किएक तँ ब्रेन जीवित छल। हृदय सँ सांस जाइत छैक किन्तु दिमाग जीविते रहैत छैक आ एहिठामक डाक्टर हार्ट देखि फेल कहि दैत छैक। हमर मोन छटपटाइत रहल- हिनकर दिमाग काज करैत हेतैक। सभटा सुनैत हेताह। कतेक बेवस अपना कें बुझैत हेताह– हम की कयलहुँ- किछु नहि– एहि डाक्टर सभक व्यवस्था के कारण-कारण हम असहाय भऽ गेलहुँ- लगैत छल ई हृदय रोग संस्थान नहि थीक वरण वर्त्तमान कें भूत बनवऽवला हृदयहीन मशीन बनल डाक्टर सभक आरामगाह थीक- घृणा भऽ गेल छल डाक्टर शब्द सँ। धरतीक देवता कहबय वला सभक व्यवस्था एतेक खराब?

दू-दू बेर सावित्री बनि यमराज सँ हिनका छीनने छलहुँ फेर तेसर बेर एहेन धोखा? हँसैत-बजैत चलि गेलाह। भगवती एतेकटाक अन्याय हमरा संग किएक कएलन्हि। हम सभ दिन सँऽ मातृभक्त छलहुँ चाहे हमर अपन माय रहय वा कि सासु माय आ कि दुर्गा माय, फेर माँ भऽ कऽ अपन बेटी कें एहि पाथरक बाट पर कोना असगर कऽ देलनि। नीरजाक पाती - आँखि पोछि लियऽ भाभी.....

कतेक प्रसन्न भऽ बंदना आयल छलीह पटना। 17 अक्टूबर 2001 तारीख छल! दिन छल कलशस्थापन ! घरक कोन-कोन, छत, देवाल सभ पींकीक आगमनक राग अलापि रहल छल ! हिनकर खुशी जेना मन मे नञि अँटि रहल छल- की सभ बना रहल छी पीकू लेल ? की-की तैयारी भऽ रहल छैक?

शबनम भानस सँ लऽ कऽ घर दुआर सम्हारि रहल छलीह - पापाक जन्मदिन अछि। संजीव लंचे मे हाइकोर्ट सँ चलि एलाह !

जन्मदिनक पार्टी लेल हाइकोर्ट सँ कटलेट आ दहीबाड़ा मंगौने रही ! जाइत काल संजीव कें कहबा लेल हम बिसरि गेल छलौं। ई पुछलाह-गुड्डू कें कहने छलिऐ आनबा लेल ! अहूँ लॉयर्स एसोशिएसन मे फोन कऽ कहि दिऔक- हमरा हँसी आबि गेल, हाइकोर्ट-कैन्टीनक भेजीटेबुल कटलेट आ दहीबड़ा हिनका बड़ पसिन्द छलनि। फोन लगैलों तँ एसोसिएशनक लाइब्रेरियन जयप्रकाशजी फोन उठौलनि- संजीव जी तँ इजलास मे छथि ! हम अपन समाद दऽ देलियैक ! फेर जयप्रकाश जी हिनका विषय मे पुछलक - कतेक काल धरि जयप्रकाश सँ हिनक बात होइत रहल ! असल मे हिनक विनम्र स्वभाव सभकें अप्पन बना लैत छल! गप्पक क्रम मे ई पुनः

जयप्रकाश जी कें कटलेट सभ लेल मोन पाड़ि दबा लेल कहलनि- बेटी इंगलैंड सँ आबि रहल अछि, जयप्रकाश जी तें हम हाइकोर्ट नहि जायब। 19 अक्टूबर कें क्लोजिंग डे अछि ओहि दिन हम जरूर आयब..... मुदा, के जनैत छल 19 अक्टूबर तक की सभ भऽ जायत।

संजीव हैप्पी बर्थ डेक लेल पैघ केक लऽ कऽ आयल। बैलून आ हैप्पी बर्थ डेक बैनर स्वीटी देवाल सभ पर सजा रहल छलीह ! - चारि बजे हवाई अड्डा जएबाक अछि - गुड्डू हड़बड़ा कऽ बाजल। ई बजलाह-हमरा एहिठाम छोड़ि देब! बड़ थकान लागि रहल अछि।

पापा जइतथि तऽ पींकी दी बड़ खुश हेतीह - संजीव फुसफसा कें बाजल- मुदा हम किछु नहि कहलहुँ - तावत दिल्ली सँ तरुणाक फोन आयल- हवाई अड्डा सँ बाजि रहल छी ! हम सभ पींकी दीदी कें पएर छुबि रहल छी । आब जहाज मे चढ़ए वाली अछि ...... हिनक तनमन मे हलचल भेल........ हमहूँ जायब।

कलश स्थापनक दिन हिनक जन्म छल ! माँ कहैत छथि जे कलश बैसि गेल छल तकर बाद ललनीक जन्म भेल ! पहिने जनम हेतियैक तऽ कलश नहि बैसितौक जन्माशौचक कारण।

ई 17 अक्टूबर दू हजार एकक कलश स्थापन छल! डेढ़ मास पहिने हम सभ पटेल नगर मे ओझा जीक मकान मे आयल छलौं। बड़का मकान, बड़का हाता छल। पाँच हजार रूपैया मकानक भाड़ा छल ! कहथिन- चलु, आब अपना सभकें मौज करबाक समय आयल अछि ! चारि हजार हम देबैक आ एक हजार जया सँ कहब महीना देबा लेल- मोने मन हँसी अबैत छल- जया सँ कहब - आइधरि तऽ अपन दुख दर्द खास कय टाका-पैसाक तंगी अपन बेटा-बेटी कें नहि बुझऽ देलनि आ नहि तऽ हमरा कहऽ देलनि, आ आइ बजैत छथि जया सँ कहब, - हम प्रकटत: किछु नहि बजलहुँ मुस्काइत रहलौं आइ हिनका मुँह सँऽ ई बात निकलल तँ-अपन पुत्रहु सँ।

एहि सँ पहिने हम सभ दस बरीस रहलहुँ द्विवेदी जीक मकान मे ! सभ दिन उन्नति होइत रहल-कहियो कोनो कष्ट नहि भेल !

हमर सभक इच्छा छल जे एहिठाम सँ जाइ तँ अपन मकान मे जाइ ! सभ दिन दुनू गोटे मे इएह झगड़ा होइत रहल । हम कहैत रही बनल बनाएल मकान यानी "फ्लैट मे जायब ! ओ कहैत छलाह- जमीन लेब, घर बनायब।

अहाँ की बुझबै घर बनेबाक दर्द- आ हम सहरसाक घर बनेबाक कष्ट दोहरा दैत छलहुँ- तखन तँ हम जवान छलहुँ आब हमरा सक नहि अछि-

किन्तु, कतेक तरहक तर्क दऽ हमरा पछारैत रहैत छलाह। अपन कार सँ हिनका बड़ प्रेम छल। एक बरीस मुश्किल सँ रहल हएब कि अचक्के ई कहलनि, मकान दोसर खोजू ! नहि नीक लगैत अछि । हम सभ घर मे रहैत छी आकार सदिखन हवा, बिहारि रौद मे सड़क पर ठिठुरैत-सिहरैत!

एहि क्रम मे शिवपुरी आबि गेलहुँ । मकान छोट देखि द्विवेदी जी अपन समधि ओझा जीक मकानक चर्चा कयलनि ! पटेल नगर मे ई मकान छल-सद्यः निर्मित! पाँच हजार किराया रहितो बड़ सऽख सँ वर्मा जी मकान लेलनि! दू दू टा गैरेज, स्वतंत्र घर, बंड़का कैम्पस, कोन मे नौकर लेल कोठरी, लहलहाइत फूल पौधा, पूब मुँहक मकान, छत पर जेबाक सीढ़ी ! अद्‌भुत मकान छल ! एकदम नया बनल! खाली गृहप्रवेश भेल छल, किन्तु हमरा सभ सँ पहिने केओ किराएदार नहि आयल छल।

भावुक आ संवेदनशील होएबाक कारण पहिलुक किरायेदार होएबा सँ हमरा हिचक भऽ रहल छल ! प्रत्येक व्यक्ति जकाँ मकानोक एकटा व्यक्तित्व होइत अछि! एहि मकान धरि पहुँचबा मे कतेक दिक्कत आयल।

ई मकान देखबा लेल संजीव आयल छल। रातुक आठ-नौ बाजि गेल ओकर कोनो पता नहि ! हम दुनू गोटे घर मे एकदम असगर रही ! स्वीटी यानी शबनम राँची मे छलीह ! एकदम चिन्ता सँ बेकल भऽ गेलहुँ- कतेक असहाय भऽ जाइत अछि मानव जखन कतौ कोनो सहारा नहि भेटैत छैक ! सेन्टू कें फोन कएलहुँ - कोनो बात नहि दीदी, कनि देर आर देखि लियऽ- चिन्ता नहि करू ।

कनिक काल बाद गुड्डू आयल हाथ-पयर ठेहुना सँऽ शोणित बहैत, नंगराइत! ठाम ठाम पएर हाथ मे छेछार लागल छलै।

अनचिन्हार बाट छल, मकान देखि घुरि रहल छल। मैथिली अकादमी लग बाट पर खुलल मेन होलक कतार लागल छल ! अचक्के ओ एकटा मेन होल मे खसि पड़ल- पता नहि कतेक गहीर ओ मेन होल छल - संजीवक पएर ओहि मे लटकल छल आ दुनू हाथ जेना मेनहोलक कोनो पाथर पर जमि गेलैक। ओहि सुनसान गली मे एकटा स्तब्धता पसरल छल। कतहु केओ नहि, अन्हार गुज-गुज - संजीव अपन असहायावस्थाक वर्णन कऽ रहल छल- कतेक देर बाद ओकरा चेतना आयल जे ओ कतऽ लटकल अछि, अपन तरहथ पर जोर दऽ उपर उठवा केर प्रयास करैत छल - हम अपना कें एकदम सँ होश मे राखने रही जे एकरत्ती मन चंचल भऽ जायत तऽ हम पताल मे चलि जायब- मम्मी तखन अहींक खियाल अबैत छल-हमर माए खरजितिया केने अछि हमरा किछ नहि होयत-अचक्के हमरा जेना एकटा कोनो शक्ति तरहथ मे, हाथ मे आबि गेल आ हम ऊपर आबि गेलहुँ - भरि देह-हाथक सोणित

हम साफ कऽ रहल छलहुँ । आँखि सँ अविरल अश्रु बहि रहल छल! - ई सड़क बेली रोड कें बोरिंग रोड सँ जोड़बाक एकमात्र सड़क छल, तकर एतेक दुर्दशा ! ठाम-ठाम मेन होल खुलल छलैक- एहिना ककरो बेटा खसि पड़य तऽ ओ गटर सँ सीधे गंगा मे चलि जायत आ लोक बुझत अपहरण भऽ गेल कतहु घर छोड़ि चलि गेल ।

तखने हम दूनू गोटे एके संग बाजि उठलौं - जे मकान देखबा मे हमर बेटा मृत्युक मुँह मे जाइत छल, ओहि मे रहऽ लागब तँ की होयत? - नहि ई मकान नहि लेब - एकटा दृढ़ निश्चय दूनू गोटे कऽ लेलहुँ।

किन्तु, होनी कें के टारि सकैत अछि ! मृत्यु जेना जबरदस्ती अपन हाथ पसारि हिनका खींचि रहल छल ! एकदिन भोरे भोर टहलैत ओ मकान देखऽ चलि गेलहुँ । देखिते दंग रहि गेलहुँ ओकर सुन्दरता पर ! एक तल्ला मकान, फूल-पत्तीक गमला सँ सजल बड़का-बड़का कोठरी, बड़का टा भनसा घर - विचित्र सम्मोहक घर छल । जेना अंग्रेजक जमानाक बंगला सभ !

वर्मा जी देखतहि मुग्ध भऽ गेलाह- एकदम निर्णय लऽ लेलनि - आब जे भाइ लागय ई मकान जरूर लेब ! आब हमरा सभ कें 'ऐश' करबाक समय आयल अछि - ओ वर्मा जीक निर्णय नहि छल अपितु मकानक आमंत्रण छल - आउ-आउ, हम अहाँक प्रतीक्षा कऽ रहल छी- आब देर नहि करू।

आ कोना कोना ई मकान लेलहुँ अलगे कथा अछि ! किन्तु, जखन हम सभ स्वयं आबऽ लगलहुँ तँ बाटमे कारक ऊपरका केरियर सँ कोनो समान खसि पड़ल! कार रोकि देखैत छी अन्हार मे । हमर गौरी पूजबाक सिनुर खसल, छिड़िआइल छल- गाड़ीक भीतर सँ निकालि कखन वर्मा जी पूजाक समान ऊपर राखि देलनि ई हम नहि बुझि सकलहुँ ! हमर हृदय थर-थर काँपि रहल छल - माँ भगवती ई की भऽ गेल - सड़क पर आँचर सँ सिनुर पोछि रहल छलहुँ भैरव भैरवीक गोहारि लगबैत! सभ देवी देवता कें मोने-मोन मनबैत नव घर मे पएर राखलहुँ !

अगस्तक अंत मे, प्रायः 30 अगस्त के एहि मकान मे आयल छलहुँ - पूजा पहिने करा नेने रही ! वर्माजी कें तँ जेना नव जिनगी भेटि गेलैक ! बड़ प्यार सँ मकान कें सजौलनि ! आरामकुर्सी पर बैसि जाइ छलाह - बड़ चैन भेटैत अछि आब! पटी-बढ़ी राजू जया जानत - हमहूँ बड़ उत्साहित रहैत रही- तकर बाद सौंसे कम्पाउन्ड मे तरकारी, साग फूल आदिक खेती आरम्भ केऽदेलनि जे हमरा समधि राजकुमार बाबू कहने छथि- अहाँक एतेक जमीन अछि एकरे उपज सँ अहाँ मकानक भाड़ा दैत रहब! आ बागबानी तँ हिनकर जान छल! ओकालतक बाद दोसर पेशा हिनकर इएह खेती छल ! खेतिहर जमीन्दारक बेटा छलाह तेँ नस-नस मे खेती

समायल छल! भोरे भोर छत पर टहलैत छलाह तान्या केँ खेलाबैत छलाह - आब अरूषी अदिति आयत तँ कहब देखू सभ बेर अहाँ सभ संजय गांधी पार्क जेबा लेल छटपटाइत रही एहि बेर संजय गांधी पार्क हम घरे पर लऽ अनलौं ! रोड न०-1 क कातें-कात एक लाइन सँ मकान सभ बनल छल, पटेल नगर मे, दक्षिण उत्तर सेहो मकान - किन्तु पश्चिम दिस सँ कतेको कट्ठाक विशाल बाड़ी छल जाहि मे पुरातन युगक गाछ सभ लागल छल ! ओहि गाछक ठारि सभ छत पर झुकैत झुकैत जेना आपस मे कतेको गप करैत होअय- विशाल बाड़ी मे तीमन तरकारी सभ किछु लागल छल आ एकदम सुनसान - जे प्राकृतिक दृश्य हिनका सुन्दरताक कारण लगैत छल ओ हमरा मे एकटा भय समा देने छल !

छतक एक कोन मे गृहप्रवेश जे भेल छल तकर कलश सभ ओहिना पड़ल छल। बरसाक पानि सँ भरल कारी कारी। लगैत छल प्रत्येक कलश सँ दू दू टा आँखि घुरि रहल हो! इ बात हम ककरो नहि कहलहुँ ! सभ खुश छल सभ उत्साहित !

स्वीटी एतेक खुश - मम्मी अहाँ एहिठाम सलवार सूट पहिरू ने के चीन्हैत अछि एतऽ?

चारू बगल सँ सभ अड़ोस-पड़ोस तकैत रहैत छल-के अछि ई सभ - भाग्यक मारल? ई अनुभूति आब होइत अछि? सभक दृष्टि मे विस्मयक बोध होइत छल! हम स्वीटी सँ बजैत छलौं- स्वीटी लोकक सामने एतेक नहि हँसू-बाजू अपना सभ ! हमरा भय होइत अछि ककरो नजरि ने लागि जाय हमरा सभकें।

हमर मन तँ आशंका सँ प्रतिपल कँपैत रहैत छल ! खास कऽ पच्छिम दिस सँ जे बगीचा छल ओ तँ हरदम हमरा काल जकाँ लगैत छल ! पूब दच्छिणक कोठरी शुभ मानल जाइत छैक। तकरा हम बेडरूम बनेने छलौं! किन्तु, भरि भेरि राति पलंग पूब पच्छिम दच्छिण करैत रहैत छलहुँ। एक्को राति चैन सँ नहि सुति पौलहुँ, एकटा अव्यक्त छटपटी छल मोन मे!

एम्हर वर्माजीक प्रैक्टिस दिन दूना राति चौगुना चलि रहल छल ! पैसा तँ बरसि रहल छल- ई संतोष छल, पैसा संग मे तँ ई बड़ खुश नहि अछि तँ बड़ दुखी! हँ, हिनकर कारी कोटक भीतरका जेबमे गोटा लागल लाल चुनरीक रूमालमे लक्ष्मीक फोटो 3-4 सय टका हरदम हृदय सँ लागल रहैत छल। आ ई शांत, प्रसन्न!

संस्कृतिक दुनू पएर कें अपन माथ सँ लगाय हाइकोर्ट जाइत छलाह। कार मे ओ हुनक कोरा मे बैसि गेट सँ बाहर सड़क धरि जाइत छल आ फेर चिचियाबैत संस्कृति कें कार सँ लऽ अनैत छलहुँ ! हाइकोर्ट लऽ जेबा लेल तरह-तरहक लंच बाक्स कीनि अनलनि! चारि बजे जखन आपस अबैत छलाह तऽ तान्या यानी संस्कृति पापाक बदला दादाक कोरा मे चढ़ि जाइत छलीह !

हरदम बजैत छलाह- हमर जिनगीक बाट कतेक टेढ़-मेढ़ भऽ कऽ आब एहि मंजिल पर पहुँचल अछि- फेर एकटा नम्हर साँस लैत बाजल छलाह- वकालतक पाछू हम अपन बाल बच्चा कें पैघ होइत नहि देखलौं! बाल सुलभ हुनक चंचलता चपलता सँ वंचित रहि गेलहुँ ! अरूषी अदिति दुनूक जन्म सँ छठिहार धरि तऽ रहलहुँ- बादो मे दिल्ली - पटना लागले रहल ! किन्तु, अपना आँखिक समक्ष ओकरा सभकें बच्चा सँ आदमी बनैत नहि देखि सकलहुँ ! आब हमर इच्छा पूर्ण भऽ रहल अछि जे तान्या कें पल-पल अपना सामने पैघ होइत देखि रहल छी। बड़ रोमांचक लगैत अछि, कोना एकटा नेना आस्ते-आस्ते पैघ होइत अछि, मनुख बनैत अछि।

रातुक 2-3 बजे कहैत छलाह तान्या कें आनि दियऽ हमरा लग ! हमरा तामस उठैत छल - अर्धरात्रिमे बच्चा सूतल अछि आ ओकरा लऽ आनब तँ काँच नीन सँ उठत आ परेसान करय लागत- ओ नहि मानैत छलाह- गुड्डू स्वीटीक मध्य सूतल तान्या कें उठाय हिनका लग सुता दैत छलहुँ - आ ओहो केहेन बच्चा दादाक करेज सँ लागि सुति रहैत छलि।

भोरे भोर ओकरा नीक कपड़ा पहिराय ओसरा पर हिनकर आगू टेबुल पर स्वीटी बैसा दैत छल ! ओ हिनकर हाथ पकड़ि खूब उछलैत छल, फेर रेलिंग पकड़ि सड़क पर आबय जायबला कें देखि-देखि हँसैत छलि - ई कहैत छलाह - देख लो, देख ले, पैघ भेला पर देखबिही ने तँ दादी ठीक कऽ देतौ! - सभ हँसऽ लगैत छल। हमहु कहैत छलहुँ - हम तँ एखने सँ नहि देखऽ देब ! पैघ भऽ कऽ तँ बाते नहि सुनत- ई जिनगी पींकी पाहुनक देल 'एक्सटेन्सन' छी ! तें हुनके समर्पित छैक ई जिनगी - हम तँ चलि गेल रही, पुनर्जीवन देलनि हमरा- इ बात ओ हरदम बजैत छलाह।

अचक्के आइ पींकीक अएबाक खबर आयल पींकी असगरे आबि रहल छलीह अपन पापा सँ मिलवा लेल ! जन्मदिनक दिन पापा लग पहुँचि जेबा लेल। ओहि समय अमेरिका अफगानिस्तानक भयंकर लड़ाइ चलि रहल छल ! सभ बजैत छल- एखन किएक पींकी आबि रहल छैक ? मना कऽ दिऔक! जिनगी बचत तँ जनवरी मे आओत।

हम हिनका सँ कतेक बेर पुछलौं पींकी कें इमेल कऽ दियौक एखन नहि आबय ! मुदा, ई निर्मम जकाँ बजैत छलाह - अहाँ किएक रोकब ! ओकरा रोकबा लेल ओकर पति छैक, ओकर बच्चा सभ छैक। अहाँ बिहार मे बैसिकें स्थितिक जायजा लैत छी।

हम मोने मोन सोचैत रही-कोना ई अपन नन्हकी, छोटकी डाक्टर बेटी कें एहेन समय मे असगरे आबै लेल कहि रहल छथि- ?

हमरा की बुझल छल जे जीवनक 'एक्सटेंशन' देम' बाली बेटी कें आगू अपना आप कें नि:शेष कऽ देताह- !

वंदनाकें आनबा लेल हम सभ समय पर हवाई अड्डा पहुँचि गेलहुँ ! ओम्हर सँ समीता, पिन्टू सगुण सेहो पहुँचि गेल ! हवाईजहाज अएबा मे आधा घंटा बिलंब छल । पता नहि छह मासक तान्या कें की भऽ गेल छलैक, एतेक कानि रहल छल, जोर-जोर सँ अपन दादाक कोर मे जाइत छल आ कि फेर कानऽ लगैत छल ! हिनका कमजोरी लगैत छल ! तैयो तान्या कें कोर मे लेलनि आ ओ एकदम चुप भऽ कऽ कन्हा पर चिपकि गेलि आँखि-मुँह-नाक सभ नोर सँ भरल छल- बीच-बीच मे हिचकी लैत छल ।

हवाई जहाज आबि गेल, शत्रुघ्न सिन्हा निकलि चलि गेलाह, रूढ़ीजी मंत्री चलि गेलाह । कतेक काल बाद सजल धजल मुस्काइत डाक्टर बेटी आबि सभक पएर छुबि, अपन विशिष्ट हँसीक छटा विखराइत अपन पापा सँ लिपटि गेलीह ! पापा अपन बाँहि मे अपन जीवनदाता कें समेटने सभ सँ बेखबर अपन कार दिस बढ़ि गेलाह -

हम सभ हँसैत रहि गेलहुँ । साँझ मे सेन्टू अन्नू, आयुष, पिन्टू समीता सगुण सभ जन्मदिन पर पहुँचि गेलाह ! हँसी मजाक हाहा-हीहीक मध्य केक काटल गेल, खेनाइ-पीनाय होइत-होइत बारह बाजि गेल! सभ कें गेलाक बाद पींकी सभटा गिफ्ट खोलि खोलि देखऽ लगलीह ! पिन्टूक टीशर्ट हिनका बड़ पसिन्न पड़लैक । एकदम देह लागल भेलैक ।

सेंटूक देल गुलाबी रंगक कुरता - जेना फेर सँ जबान भऽ गेलाह- पींकी बाजल- पापा, मामाजी सभक सामने किएक नहि पहिरलहुँ ! कतेक प्रसन्न होइतथि ओ सभ! तों कहितऽ तखन ने ? अपने मोन सँ हम कोना पहिरतौं - फेर पींकी पाँच छह रंगक बुशर्ट आनलक-पापा एहि मे सँ एकटा अहाँ, एकटा गुड्डू पसन्द कऽ लियऽ फेर मामाजी सभकें देब ।

ई कनखिया कें गुड्डू कें देखि रहल छलाह जे ओ कोन पसिन्न करैत अछि! गुड्डू एकटा बदामी रंगक शर्ट दिस ताकि रहल छल- ई उनटा पुनटा कें देखलनि सभटा, फेर बदामी रंग बला लऽ लेलनि! गुड्डू हँसए लागल ! ओ जनैत छल जे पापा कपड़ाक शौकीन छथि जे हम पसिन्न करब वएह लेताह ।

फेर पलंग पर हम आ पींकी सुतलौं। पींकीक बगल मे 'कॉट' लगा ई अपने सुतलाह ! पड़ले पड़ले गप होअऽ लागल - पापा घर तँ बड़ सनगर अछि ।

हँ बेटा आब कहिया सुख करब- हम बाजलौं, पींकी, तीस अगस्त कें एहि घर मे एलौं ! सितम्बर सँ तँ घर मे क्लाइन्ट केर भीड़, आ पैसाक बरखा होइत रहल- किन्तु, चारि पाँच अक्टूबर कें ट्रान्सफरमर उड़ि गेल ! एकदम अन्हार इलाका भऽ गेल ! इन्भर्टर तीन चारि दिन चलल, ओहो फेल भऽ गेल ! जानिते छी तोहर पापा गरमी एकदम बर्दाश्त नहि करैत छथुन्ह ! जिद करऽ लगलाह हम छत पर सूतब - हम एकदम तैयार नहि भेलहुँ - प्रकृति बदलि रहल छल ! भोर मे ओस खसैत रहैत छल! ताहि लेल हमरा खूब दमसाइत रहथुन्ह ।

करू करू शिकाइत - मौका भेटल अहाँ कें। की करब डाक्टर छै - अहाँक जिद अहाँक स्वास्थ्यक संग संग जानबाक चाही - तखन कहलनि हम ओसारा पर सुतब - ओसारा पर तीन चारि दिन सुतलैथ तकर बाद जे खाँसी शुरू भेल तँ खत्म नहि भऽ रहल अछि ! मन्ना जी कें फोन केलौं दुई बजे राति मे । ओ कहलक डेरी फायलम देबा लेल !

दोसर दिन डाक्टर अग्रवाल सँ पुछलहुँ - ओ बाजल दवाई ठीक छैक, जँ चारि पाँच दिनमे ठीक नहि होयत तँ एहिठाम नेने आयब ।

चारि पाँच दिन मे ठीक नहि भेल ! हिनका कतेक कहलौं चलू अग्रवाल सँ देखा दैत छी ।

नहि हुनका दुइ सय टका फीस देबैक से हम दुइ सय टकाक फल नहि खा लेब - हम मन मे बुझैत छलौं जे टाकाक बात अलग छैक किन्तु अग्रवालक कम्पाउन्डर सभक व्यवहार एतेक उग्र, अशोभनीय होइत छल जे हिनका नीक नहि लगैत छलनि ! कतेक बेर मन होइत छल कम्पाउन्डर सभसँ कही - अहाँ सभ एना किएक बजैत छी - एहिठाम खाली हृदय रोगी अबैत छथि - एहि सँ तँ धड़कन आओर बढ़ि जेतैक - मुदा केओ की करितैक - एतेक नीक डाक्टर ओ छथि जे लोकक भीड़क अंत नहि होइ- आब तू जान बेटा तोहर पापा जानथि - कहैत कहैत हम आँखि मुनि लेलहुँ ।

मुदा, एहि दुनू बाप बेटीक आँखि मे नींद नहि, कथाक अन्त नहि, दादी सँ लऽ कऽ डुमराक एक-एक प्राणीक चर्च, मौसा मौसीक, पीसा-पीसीक सभक, परिवारक चर्च! बीच बीच मे हमरा असोकर्य होइत छल - पींकी सुति जो - तों सूत ने घोड़ा गदहा बेचि कें दूनू बाप बेटी खिखिया कें हँसि देलनि ।

पूजा पाठ, ज्ञान, ध्यान हम भोरे भोर कऽ लेलहुँ ! पाठ कय उठलौ तँ ई बाथरूम मे छलाह ! - हम पूजा करऽ जाइत छलौं तखने ई बाथरूम गेल छलाह - उठलहुँ ताबत बाथरूमे मे - हम बाहर सँ दरवाजा ठकठकाबए लगलौं - बजलाह - अबैत छी, अबैत छी भऽ गेल ।

तौलिया पहिरने बाहर आबि कपड़ा पहिरऽ लगलाह। सेंटूक देल गुलाबी कुरता आ पैजामा - हमरा हँसी छुटि गेल - ई कनखी मारि देलनि जे ई हरदम बदमाशी सँ करैत छलाह - पहिने बाजू अहाँ एतेक देर सँ बाथरूम मे की करैत रही।

पींकी आयल छैक ने - तेँ बाथरूम साफ करय लगलहुँ - ही ही ही हँसैत बजलाह - एतेक टा बाथरूम, एकदम नया, एतेक चमकैत तखन अहाँ ओकरा की साफ करैत छलहुँ - कनी देवाल सभ झाड़ऽ लागलहुँ- जलखै दियऽ ने हँसैत बजलाह। जलखै - पाठ नहि करबैक की ? काल्हि केने छलहुँ आ आइ? हम विस्मित भऽ गेलहुँ आइ धरि कहियो पाठ मे व्यतिक्रम नहि आयल छल चाहे स्वस्थ रही आ कि अस्वस्थ। आइ साँझ मे पाठ करब - दुनू तरहथ मलैत, हँसैत मासुमियत सँ बजलाह। हम चुप रहि गेलौं- दही चूड़ा, रातुक बड़ी सभ नाश्ता कराय देलहुँ - तावत पींकी, स्वीटी, गुड्डू सभ नहा धो तैयार भऽ गेल छलीह - वाह पापा हमरा छोड़ि जलखै करऽ लागलहुँ। तों सूतल छलह तँ हम की करितहुँ - पाहुन के फोन कय देलह जे हम पहुँचि गेलहुँ!

'आब जाइ छी पापा ! श्रीकृष्ण नगर जायब ओहिठाम सँ पिन्टू मामाक संग बैंक चलि जायब- पाउन्डक पैसा बनायब ने पापा। ठीक छै, ठीक छै - बुझि गेलियौ- ई पाँच सय टाका ले पहिने पाहुन कें, बच्चा सभ कें फोन कऽ दहीक तब पैसा बनाबैत रहिहें- बजैत ओ जेब सँ पाँच सय टाका निकालि बंदना के दऽ देलनि।

कनिक काल मे गुड्डू हाईकोर्ट जेबा लेल तैयार भऽ गेल ! बड़का बहस छल- पापा हाइकोर्ट नहि जेबैक की?

नहि बेटा, हम काल्हि जायब ! काल्हि पूजा छुट्टीक क्लोजिंग दिन छैक ! जयप्रकाश कें सेहो कहने छियैक - सभक आश रहैत छैक - बहस जहिना हेतह हमरा तुरंत फोन कऽ दीहक ?

गुड्डूक संग पींकी, स्वीटी तान्या सभ चलि गेल। हम दूनू गोटे सीरियल सभ देखि रहल छलहुँ ! एहि बीच मे करीब एक मास सँ हिनकर वजन आस्ते आस्ते घटि रहल छलैक ! डाक्टर अग्रवाल कें पुछलियैक तँ कहलक कोनो बात नहि - प्रोटीन बेसी खाथि।

पींकी सभक जेबाक बाद कनि-कनि काल पर शौच लेल जाइत छलाह ! शौच जाइत काल कुरता पैजामा खोलि कें तौलिया लपेटि तखन जाइत छलाह - फेर ओम्हर सँ आबि पैजामा कुरता पिन्हैत छलाह ! हमरा हुनकर धैर्य पर हँसी लगैत छल !

हिनक जीवनक मोटो छल - ड्रेस एन्ड एड्रेस मेक ए मैन - अपन पहिरब ओढ़ब सँ आ बाजब भुकब सँ मानवक व्यक्तित्व आ अस्तित्व बनैत अछि।

कतहुँ सँ फोन अबैत छल - खट सँ पूछैत छलाह गुड्डूक फोन छी की? यानी, मोक्किलक चिन्ता हिनका अपना चिन्ता सँ बेसी भऽ जाइत छल ! मोकिल बुझैत छल वकील साहब बहस करैत छथीन्ह किन्तु ई तँ संजीव सँ बहस करयबा लेल ओकरा ठाढ़ करैत छलाह !

दिन मे इंगलैंड सँ कौशलेन्द्रजीक फोन आयल - कतेक काल धरि दुनू ससुर जमाय बात करैत रहलाह अपन बीमारीक एक एक लक्षण, एक एक बात जे सद्यः विराजमान बेटी कें नहि कहि सकलाह, से सात समुद्र पार जमाय के कहि रहल छलाह।

कनिक काल मे फेर इ टायलेट गेलाह- कि फोनक घंटी बाजल- तौलिया सँ हाथ पोछैत बजलाह- गुड्डूक फोन छी की- ? हम कहलियैक आइ केस नहि पकड़ायल- उदास भऽ गेलाह-पता नहि क्लाइन्टक भाग्य मे की छैक ? हमरा नहि रहल गेल- तुरत बाजलौं - केस जीत गेल गुड्डू- बहुत देर तक बहस होइत रहल।

सैह तऽ हम सोचैत रही ! फेर आश्वस्त भऽ पलंग पर लेटि गेलाह - हऽ आब हम गुड्डू सँ निश्चिन्त भऽ गेलहुँ। आब ई वकालतक बाट पकड़ि लेलक, ओकर मर्म बुझि गेलैक।

पींकीक फोन आयल- की कय रहल छी ? हम बाजलौं- जल्दी आ मोन नहि लागि रहल अछि।

हनीमून मना- फेर अपन विशिष्ट हँसी।

हम हिनका बगल मे लेटि गेलहुँ- पींकी कहैत अछि हनीमून मनएबा लेल।

हम गाबय लागलौं हिनकर छाती मे मुड़ी ढुकाए - बार बार तोहे क्या समझाए पायल की झंकार- ई हमर माथ पर हाथ फेरैत गाबऽ लगलाह -

तेरे बिन साजन लागेना जीया हमार - हम भभाय कें हँसि देलहुँ।

आ तोहे सजनी ले चलूँ नदिया के पार - हमरा भरि पाँज पकड़ने रहलाह। तावत गुड्डू, पींकी, स्वीटी, तान्या सभ घर मे पहुँचि गेल।

बीच मे अपना, एक दिस तान्या एक दिस पिंकी- देखू तँ हमर डुमराक बेटी सभ कें एकरा समासँ सुन्दर के अछि ओहि दिन हम हुनका सँ कतेक विनती केने छलहुँ जे सभ बच्चा कें स्थान लगा देलहुँ आब अहाँ हमरो विदा कऽ दियऽ, तखन अपना जायब- घर मे मांगबा मे लाज होयत तँ पुरुख छी अहाँ बाहर जा कें खूब खा पी आयब, अपन मन मोताबिक- फेर मास दुइ मास बाद हमरा लग चलि आयब- हम स्वयं अहाँ कें एहि दुख भरल संसार मे नहि जीवऽ देब अपना बिना।

आँखिक सामने चिट्ठीक पन्ना सभ फड़फड़ा रहल अछि। मनोरंजन जी, नीरज। रेणु केदार शर्मा। हमर आँखि सागर बनैत रहल। पं० बलराम झाजीक सिखाओल गीत मोन पड़ि जाइत अछि, अब आँसू भी सूख गये हैं हँसी गयी है रूठ, पूजा करने के पहले ही गयी मूरती टूट। हाय अंगूठी सूनी हो गयी खोया आज नगीना। मेरी टूट गयी मन वीणा– तखन ई गीत हरमुनिया पर गबैत-गबैत आँखि नोरा जाइत छल–आइ सरिपों अन्तरक पानि सूखा गेल– आँखि मे आओत तँ कतँ सँ......हमर जीवन हुनके सँ शुरू भेल हुनके पर खत्म। हुनक स्मृतिक भाव सागर मे डुबि आइ भवसागर पार कऽ रहल छी। समस्त देह हड्डीक नहि वरण काठक कंकाल बनल बुझा पड़ैत अछि जे तीतल जारनि सन जरैत पजरैत मिझाइत रहैत अछि। हरदम बजैत रहैत छलाह अपना सभ जखन मरब संगे मरब। हम मचलि जाइत छलहुँ नहि हम पहिने मरब तब अहाँ अपन जाइत रहब। किन्तु वर्माजी आंगुर पर हमर आयु अपन आयु जोड़ि बजैत छलाह एतेक उमिर अहाँक होयत एतेक हमर बस संगे दुनू एतेक वयस मे मरि जायब। आ फेर हुलसैत बजैत छलाह– हँ रन्नो एकटा उपाय आर संभव अछि हमर बाल हृदय उत्कंठित भऽ जाइत छल कोना? एना करैत छी रन्नो जे एकटा हीरा कीनि लैत छी जखन बयस आओत अपना सभ ओकरा चाटि लेब।

हम उत्फुल्ल भऽ जाइत छलहुँ। बच्चे सँ जनैत छलहुँ जे हीरा चाटला सँ मृत्यु भऽ जाइत छैक – ठीके बजैत छी अहाँ मनवांछित मृत्यु अपना सभ पाबि लेब।

मुदा एहि मे एकटा दिक्कत अछि अर्द्धरात्रिक निस्तब्ध बेला मे हमर सभक योजना बनैत छल अनचीन्हार अनजान भविष्यक लेल मुदा दिक्कत की लगैत अछि– हमर प्रश्न पर– पहिने के चाटत हीरा कें– किएक हम पहिने चाटब– हम तपाक सँ बजैत छलहुँ ठीक छैक, अहाँ पहिने चाटब किन्तु बाद मे हमरा जीबाक इच्छा भऽ जायत आ हम नहि चाटब तखन – एकदम गंभीर चिन्तनक मुद्रा मे ई आबि जाइत छलाह। हम खिलखिलाकें हँसि दैत छलहुँ– तँ की हेतैक अहाँ जीविते रहब कोनो दिक्कत नहि होयत।'

रन्नो, अहाँक बिन हम एको पल जीवित रहिए नहि सकैत छी– हँ, एकटा आइडिया आर आयल अछि एकटा पैघ सन हीरा कीनि लेब आ फेर एके बेर एक दिस अहाँ मुँह में राखि लेब एक दिस हम – कतेक कल्पना छल हमरा सभक संग जीबाक संग मरबाक किन्तु, एक बात अवश्य छल जे हिनका मे जीबाक इच्छा प्रबल छल भनहि हम मृत्युक तत्क्षण वरण करबा लेल उत्सुक। वियाहक चालीस बियालिस वर्षक बादो हम हिनक प्रेमिका छलहुँ आ ई हमर प्रेमी। हमर अन्तर मे सदिखन एकटा नान्हिटा शेफाली जीबैत रहैत छली। नान्हि नेना सन चहकैत चुहकैत, हँसैत कनैत, गबैत नचैत। सामने वर्माजी काज करैत छलाह किन्तु हमर हृदय मे हरदम गीतक स्वर

झंकृत होइत छल– प्यार पर बस तो नहीं है ... वियाह सँ पहिनुका हिनकर छवि, नहि जानि कतेक जनम सँ छटपटाइत एहि जनम मे मेल भेल छल। जनम जनमक छटपटी मे प्रेमी वर्माजी हमर हृदय स्थल मे वएह मोहिनी मुस्कान लय हमरा संग सतत अठखेली करैत छलाह– न तूफां से खेलो न साहिल... सदिखन सभदिन हिनका समक्ष एके गीतक प्रार्थना करैत छलहुँ– मुझे प्यार की जिन्दगी देने वाले, कभी गम न देना खुशी देने वाले......हुनका सँ अलग हमर कोनो जीवन थीक हमर कोनो अस्तित्व अछि– ई ध्याने नहि अबैत छल। बाल बच्चा हमरा सभ कें वास्तविकता मे अनैत छल जे हम पति-पत्नी, माता-पिता आदि कतेको संबंधक जंजीर सँ बान्हल छी।

सरिपों, आगतक कोन बहाने कोन काज होइत छैक बुझा नहि पड़ैत छैक किन्तु जखन भविष्य मे अघटित घटित भऽ जाइछ तँ सभटा अतीत फरछा जाइत छैक। कारण, कार्य प्रकृतिक रहस्य– शिवपुरीक छोट छीन घर छोड़बाक बाद जखन हम सभ पटेल नगर रोड न. एक मे ओ नव निर्मित विशाल घर मे एलौं–स्वप्न लोक सन ओकरा सजयलौं–तखन की जनैत छलौं ई घर हमर सभटा सपना कें छाउर बना देत। हमर जीवन कें मरघट बना देत? हँसैत खेलैत जीवन पर सौंसे हिमालय खसा देत? मोस्किल सँ डेढ़ मास बीतल छल कि राजीवक फोन आयल–ममी, जयाक माँक देहावसान भऽ गेलैक। सुनतहि कलेजा मे तीर लागि गेल। जनैत छलौं जे ओ अस्पताल मे भरती छथि। किन्तु, ई नहि बुझल छल जे जीवन मृत्युक बीच पड़ल छथि। हम चुपचाप शबनम कें ई बात कहलौं। ओहिदिन समधीन नीलम जी अपन एमवेक सफलता पर हमरा सभकें होटल लऽ जेबा लेल छलीह। किन्तु, राजीवक देल समाचार सँ हम सभ हतप्रभ रहि गेलहुँ। जयाक माँ सुभद्रा जी सँ हिनकर आत्मीयता हद सँ बेसि ओहि बीच भऽ गेल छलैक। ओ हरदम बजैत छलीह– समधीजी कें सभ बाल बच्चा एतना सुन्दर किन्तु समधीजी सन एक्को नइ– ई तँ खुशी सँ फुलि जाइत छलाह। एक दुइ बेर समधीन पटना आयल छलीह, कतेक बेरहम सभ दिल्ली मे राजू ओतऽ आ कि हुनकर दूनू बेटा कुमार विजय, कुमार राजेश ओतऽ हुनका सँ भेंट केने छलहुँ सभ सँ बढ़ि कें हम सभ जमुहार सासाराम हुनकर घर गेल छलहुँ। बड़का कोठी राजमहल सन।

ठाम ठाम हुनकर फोटो पं. जवाहर लाल नेहरूक संग तँ, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संग लागल छल। डाँड़ मे कारतूसक पेटी आ हाथ मे रिवाल्वर सदिखन रहैत छल। सासाराम जमुहार सभटा कैमूर पर्वत तराई मे बैसल छल। उनचालिस वर्षक आयुमे ओ परलोक चलि गेलाह तहिया सँ सुभद्राजी ई वैधव्य जीवन कोना जीवैत रहलीह– एतेक असगर जीवन–हुनका सँ हमरा सभकें आत्मिक संबंध भऽ गेल छल। ई हरदम बजैत छलाह– आदमी लाख उछलि लियऽ, लाख अपना मोनक करबाक सोचथि होयत

वएह छैक जे उपरवला चाहैत अछि ।

नीलम जी कें सुभद्राजीक निधनक विषय मे ज्ञात भऽ गेल छलैक। हम सभ तीनू गोटे एकदम शान्त छलौं जे हिनका कान मे ई बात नहि जाइक। आ ई तँ तैयार भऽ कऽ होटल जेबा लेल बैसल । फेर हमही बाजलौं-हमरा होटल जेबाक मोन नहि करैत अछि। संजीव हाइकोर्ट सँ थाकल हारल आओत आ तखन भोज आ कि बसन्त विहार चलब- थाकि जायत ड्राइव करैत, हिनको ठीक लगलैक-पटेल नगर सँ ओतेक दूर ताहि मे संजीव ड्राइव करत, थाकि जायत।

हम हिनको मोन कें रखलहुँ- शबनम कहलक जे हम मम्मी कें कहि देने छियैक जे टेक होम फोन कऽ खेनाय मंगवा लेबा लेल। बस ई खुश भऽ गेलाह। हिनका होटल तोटल सँ कोनो मतलब नहि छल, बस नीक स्वादिष्ट भोजन टा भेटबाक चाही।

ई कहियो नान नीक सँ नहि खाइत छलाह किन्तु, ओहि दिन नान कतेक प्रेम सँ खेलनि बटर पनीर मसालाक संगे। भोजन हिनका सुस्वादु लागि रहल छलैक- हमरा आश्चर्य लागि रहल छल। दुइ दिन बाद राजीवक फोन आयल । हम सभ सासाराम जा रहल छी, मम्मीक कर्म लेल। घुरती पटना होइत दिल्ली घुरब। आब हमरा लागल हिनका सँ कोना नुकाबी। सभ केओ एहिठाम आओत, हिनका तँ पता लागि जेतैक। तखन हम अवसर ताकि, चैन सँ हिनक पएर लग बैसि बाजलौं-भगवान जे करैत छथिन नीके लेल- कतेक दिन सँ बेचारी असगरे जीवि रहल छलीह । की बाजैत छी- ककरा की भेलैक- हिनका हड़बड़ेबाक आदत रहैन्ह- हम ओहिना शांत स्वरे बजलहुँ- ओ इएह जयाक मायकें- कतेक नम्हर जिनगी ओ असगरे....।

ई एक क्षण लेल आँखि मुनि आराम कुरसी पर ओंगठि गेलाह-फेर पुछलाह कहिया भेलैक ? हम आराम सँ बाजलौं आब तँ राजीव सभ एबो करत ।

हिनका ज्ञात भेलैक तँ ईहो बाजय लगलाह जे राजीव कें कहि दिऔक समधीनक काज मे सभ किछु डुमराक प्रतिष्ठाक अनुसार करबा लेल-किन्तु भीतर भीतर हिनका की भेल भगवती जनैत हेथिन 12 अक्तूबर कें सुभद्राजी गेलीह । 18 अक्तूबर कें 'ललन' अपने पाछु लागल चलि गेलाह ।

एक दिस जया कें मातृ शोक दोसर दिस हिनकर पितृ शोक-छह दिनक भीतर दूदू टा शोक सहय पड़लैक ओहि लड़की कें। सभ कहैत रहल सासाराम सँ एक बेर कनिया कें घुमा कऽ लऽ आनथि किन्तु ओ तैयार नहि भेलीह हम मम्मीकें एहेन हालत मे छोड़ि नहि जायब- ओ माय चलि गेलीह किन्तु एहि मायकें हम नहि छोड़ब। एकबेर माँक चरचा नहि करैत छलीह।

साँसे घर तँ भरल छल-डुमरा ज़हिना खबर गेल छलैक- आठो भाइ, मोहन मास्टर, लक्ष्मण, पुरहित, शत्रुघ्न आदि कतेको गौंआ भरि गेल छलै घर मे। हिनक छोट बहीन रंभा आ राकेश, मनोज डब्लू सभ पन्द्रह दिन तक डेढ़ सय आदमी ओहि मे सूतल छल। की एहि लेल ओ घर नेने रहथि जे कोनो काज मे हुनकर प्रतिष्ठा मे आँच नहि आबैक- लेकिन हमर मोन मे मकान सँ भय समा गेल- राति-राति भरि लगैत छल जे केओ भयंकर जीव खिड़कीक दोग सँ ताकि रहल अछि जे आब ककरा लऽ जाय? आब ककर आओत। आ हम मानसिक रूप सँ विकलांग भेल जाइत छलहुँ- ककरा कहब- राजीव कें कहलौं हमरा एहि घर सँ पहिने निकालि दियऽ तखन अहाँ जायब ।

ओकर संगी राजेश भूषण पी.डब्ल्यू.डी.क एमडी ओ अपना सँ, अपन स्टाफ सभ सँ हमरा लेल मकान तकवा रहल छल। कतेक ठाम राजीव हमरा लऽ जाइत छल मकान देखेबा लेल- किन्तु कोनो मकान नीक नहि लगैत छल। जनैत छलौं हिनकर काज खतम होयतहि घर खाली भऽ जायत फेर एहि घर मे हम एक क्षण नहि रहि सकैत छी। लगैत छल जेना पहिलुक किरायदार कें अपन आहार बनएबा लेल केओ भयंकर जीव ओहि ठाम वास कऽ रहल अछि- मृत्यु भयंकर नहि होइत अछि किन्तु ओहि मकान मे किछ एहेन छल अवश्य जे हम जखने प्रवेश केलहुँ तखने जेना बुझि गेल छलहुँ ।

आ फेर हम हिनकर फोटो लग बैसि कानऽ लागलौं- आब हम की करी-अहीं कहू- हम कोना रहब-कोना जीअब- आ चमत्कार भऽ गेल। ई जेना हमरा प्रेरणा देलनि अहाँ योगेन्द्र मल्लिक जी सँ गप करु। हम कोठरी मे असगर छलौं- हिनकर फोटो लग दीया बरि रहल छल। लोग अबैत छलाह प्रणाम कय बाहर चलि जाइत छलाह। आ हम चौंकि गेलहुँ- मल्लिक जी? हिनकर फोटो दिस ताकलौं ओहिना मुस्काय रहल छलाह। मल्लिक जीकें फोन लगेलहुँ- साइत ओहि दिन समपीण्डन छल- जेँकि सभक घुरबाक टिकट कटल छल- तेँ हम एकदम बेकल छलौं किन्तु बच्चा सभ कें अपन व्यथा नहि बतएलौं-एखन सभ पिता सँ व्यथित छल फेर हमर दोसर समस्या- मका, राजीवकें कहि हम मकान बदलबा मे लागल छलहुँ। मल्लिक जी स्वयं फोन उठौलनि। सभ बात सुनि ओ बजलाह-हमरा पास दुदू टा मकान अछि अहाँ जखन चाही आबि मकान देखि लियऽ। चाभी हमरे पास अछि- तकर बाद तँ हम फोने पर माथ राखि फूटि फूटि कानऽ लागलौं-अहाँ कतऽ छी? कतऽ सँ आदेश दऽ रहल छी। ओहि दिन मल्लिक जी हमरा लेल भगवान भऽ गेलाह। भगवान तँ मनुक्खे मे वास करैत छथि।

मल्लिक जीक बगले मे डुप्लेक्स फ्लैट छल भक्तीश्वर झा जीक- सरिपों मकानक व्यक्तित्व होइत अछि। अरुषी अदिति सौंसे घर मे घुमि घुमि एतबे बजैत छलीह- एहि घर मे दादाजी रहितथि तँ हुनका कहियो किछु नहि होइतनि.....।

राज़ीव-जया दिल्ली चलि गेल, भावना पाहुन मुजफ्फरपुर आ बंदना कौशलेन्द्र जी मलंगवा- तरुणा विकास दिव्यकीर्ति दिल्ली- सभ विदा भऽ गेल। राजीव आश्रय पवन एपार्टमेंटक ओहि फ्लैट मे सत्यनारायण भगवनाक पूजा अपने सँ करवाय दिल्ली गेल छल। आ पूजा काल जे हम एहि फ्लैट मे अयलौं तँ वापस ओहि घर पटेल नगर नहि गेलहुँ। मनोज जी पाहुन आ संजीव दूनू गोटे मिलि कोना कोना दुइ दिन मे समान सभ अनलनि हम नइं जनैत छी। राजकुमार बाबू आ चंद्रकांता दुनू बेकति मनोज जी कें दरभंगा लऽ जेबा लेल आयल छलाह किन्तु मनोज जी हुनका सभ कें समझा देलनि हम मम्मी कें छोड़ि एखन नहि जायब। एकटा नेना जकाँ ओ हमरा समेटने रहैत छलाह। कौशलेन्द्र जीक देल नींदक गोटी सभ खुआबैत छलाह हम नींद मे चीकरऽ लगैत छलौं- हमरा एहि सभक किछु होस नइ छल- बस अपन आगू पाछू असगरपनक विशाल समुद्र देखैत छलौं- बंदना कौशलेन्द्रजी प्रीतू एनी सभ घुरि कें एलाह कनि दिन रहि चलि गेलाह। प्रकाश जी पाहुन आ भावना मुजफ्फरपुर सँ एलाह-सुप्रभा, प्रसून दूनू भाई बहीन भावना संजीवक संगे संग सौंसे घर कें सहियारऽ लगलाह आ सुपर्णा मनोज जी करीब दुइ मास रहि गेलाह। जाधरि हम संजीवक ऑफिस नहि बना देब हम नइं जायब। कमाईक जरिया गुड्डूक इएह अछि- आ मनोज जी ऑफिसक संगहि सौंसे घरक परदा आनि अपने सँ सिलवाऽ सौंसे घर कें सुन्दर बना देलनि- हरदम हमरा माँ अहाँ हमरा लग बैसू- ओ हमरा माँ कहैत छथि।

राजीव, भावना, बंदना तीनू भाई बहीन हमरा दीदीए कहैत छल किएक तँ श्रीकृष्ण नगरक परिवेश मे पलल छल। खास कए अंजू एहि तीनू भाइ बहीनीक बड़ देखभाल करैत छलीह। हमरा बड़ दुख होएत छल जे माँ रहितो हमर बच्चा हमरा दीदी कहैत अछि। हमर माँ बजैत छलीह- की हेतैक नीके तँ छौ रास्ता विरस्ता सभ बुझतैक जे तोहर भाइ बहीन छीयैक...।

आ पहिल बेर सुपर्णा हमरा माँ बजलीह आ फेर मनोज जी हमरा माँ कहऽ लगलाह- मनोज जीक पूरा परिवार माँ बजैत अछि ।

जे छटपटी मे हम जीबी रहल छी अहाँ नहि जीवि सकितहुँ, किन्तु, अहुँ लग तऽ एकटा सशक्त आधार छल जीबाक - कानून, कानून आ कानून । ओहि दिन गुड्डू हाइकोर्ट चलि गेल छल ! स्वीटी सूतल छलीह । हम पलंग पर एक कोन मे बैसल छलौं । रोज जकाँ संस्कृति पलंगक दोसर कोन पर खेलि रहल छलि। टेप मे अहाँक गाना चलि रहल छल - लेकिन तेरा ख्याल जगाए तो क्या करूँ .... आ

कि हम अचक्के हिचुकि हिचुकि कानऽ लागलहुँ । तान्या घुरि कें हमरा दिस तकलीह- फेर ठेहुनिया दैत हमरा पकड़ि ठाढ़ भऽ गेलीह- आ अपन हाथ सँ हमर नोर पोछऽ लगलीह- हम एकदम शांत भऽ गेलहुँ - ई तान्या कोना भऽ सकैत छैक अवस्य अहाँ छी - अवश्य अही छी ।

कालि्ह तान्या हमर कोर मे खेलि रहल छलि ! केकरो पदचाप अपना दिस अबैत सुनाइ पड़ल - हम आँखि झुकौने ताकैत रहलौं - अरे ई तँ अहाँ आबि रहल छी - घबड़ाय दृष्टि उठेलौं संजीव छलाह ।

हमरा टोकैत रही जे अहाँ बताहि जकाँ रहऽ लगलहुँ ! सरिपों, 99 ई० से आसपास हेवाक बाद हम अपन सुधि बिसरि गेल छलहुँ ! हमर एकेटा ध्यान रहैत छल- हमर अहिबात- कखनो हम बजैत छलहुँ-

'मुझे पागल ही रहने दो कि पागल ही अच्छे हैं इन्हीं बिगड़े दिमागो मे घने खुशियों के लच्छे हैं !'

जहिना हमर पापा खाइत काल अपन कपड़ा पर अन्न खसा लैत रहथि - वएह हिस्सक हमरो छल - आइयो अछि - लेकिन अहाँ टोकैत नहि छी पहिलुक जकाँ- सलीका न जीने का आया न पीने का- चाह पीबैत छी, साड़ी पर खसा लैत छी, पानि पीबैत छी आँचर तीताय लैत छी अवढंग जकाँ।

ओहि दिन अचक्के अहाँक पैतावा निकालि लेलहुँ- बड़ जाड़ लागि रहल छल- राति मे जखन सुतय गेलहुँ तऽ मोजा पहिरऽ लगलौं ! हमरा होइत छल जे ओ धुआएल राखल अछि ! किन्तु, ई तँ जहिना अहाँ खोलने छलहुँ ओहिना पड़ल छल। अहाँ जूता मे रूइया राखि पहिरैत छलहुँ ! एकर उपाय अहीं निकालने रही जे मोजे मे रूइया सरिया कऽ बैसाय देब जे रोज रोजक झंझट सँ मुक्ति भेटि जायत - आ हमरा दिस देखि हँसि देलहुँ अपन एहि आविष्कार पर, विजयी मुद्रा मे ।

हम ओहि रूइया कें हाथ मे राखि, पैताबा कें हाथ मे राखि कानऽ लगलहुँ- अहाँक स्निग्ध देह-गंध सँ ओ ओहिना तीतल भीजल छल! अहाँ कहियो हमर आँखि मे नोर नहि देखऽ चाहलौं ! हरदम बजैत छलहुँ- रनिया, केओ अहाँक विरूद्ध किछु बजैत अछि, हमरा एकदम नीक नहि लगैत अछि, अपन संताने किएक नहि हो ।

हमर कोन गलतीक सजा देलहुँ -अहाँ बिनु किछु सहल नहि जाइत अछि, किछु कयल नहि जायत अछि - कोन पथ चली, कोन मंजिल चुनी, कोन दीया जराबी तिमिर तम मे - नहि जनैत रही हमर कविताक वेदना एक दिन साकार भऽ जायत ।

वियाहक बाद सँ अंत धरि एहेन कोनो राति नहि बीतल जाहि राति अहाँ सुतैत बेर दुइटा गीत हमरा नहि सुनावी- मेरा प्यार वो है जो मरकर भी तुझको जुदा अपनी बाँहों से होने न देगा- फेर लोरी गाबी चंदन का पलना रेशम की डोरी..... सोजा तू ऐसी मेरी सजनिया । राति एक बजे बिछान पर अबैथ कि दुइ बजे हम अर्द्धनिद्रा मे ई गुनगुनी सुनैत रही ।

ने तँ हम सीता बनि सकलहुँ ने अहाँ राम - अहाँ धरती मे समा गेलहुँ, हम पाथर बनि यंत्रवत जीवी रहल छी -

राति तीति-भीजि अलसाय गेल छल आ हम जलविहीन मीन जकाँ छटपटा रहल छलहुँ । पलंग हँसोथि रहल छलहुँ एकदम खाली केओ नहि। एतेक डरपोक छलौं जे कहियो असगर नहि सुतैत रही। संजीवकें होइत छल मम्मीकें डर लगैत हेतैक मुदा हम असगर छी । कहाँ- अहाँ तँ हमर माथ लग बैसल स्नेहसँ सांत्वना दऽ रहल छी । अहाँक ओ डायलाग-कोन एहेन अभागल क्षण होयत जाहिमे हमरा संग अहाँ नहि रहैत छी- मोन पुलक सँ भरि उठल- अतीतक इन्द्रधनुषी रंग हमरा पन्द्रह-सोलह सालक किशोरी बना गेल, लागल एखने तँ हमर वियाह भेल छल आ ....।

रोम रोममे कम्प रूकल छल

(प्रीतसँ परिणय धरि)

तू बता दे कि तुझे प्यार करूँ या न करूँ ....''

हम कानऽ लगलहुँ। साइत, नोरक धार आँखिक बान्ह कें तोड़ि छितरा गेल छल कपोलक धरा पर। समस्त परिवार गायक कें घेरि झूमि रहल छल आ ओहि मे हम आँगनक कोन मे, इजोरिया कें नांघि अन्हारक बाँहि मे नुकायल रही। अपन हृदय-स्पन्दन कें दुनू हाथ सँ दबौने एहि गीत कें आत्मसात कऽ रहल छलहुँ - जेना एक-एक शब्द दर्दक अतल घाटी सँ निकलि हमर अन्तरमे अथक बेचैनी भरि रहल होअय । ओ हमरा सँ एकटा प्रश्न कऽ रहल छल - अनगिन प्रश्नक मध्य अहम प्रश्न-

'तू बता दे कि तुझे प्यार करूँ या न करूँ ......।

ई 1958 क नवम्बर या दिसम्बरक गप छल। शीतकालीन रात्रि मे समस्त संसार ज्योत्स्ना सँ नहायल शिशु जकाँ स्तब्ध मौन-ओकर स्वरक बांसुरी सँ एक दिस मधुमास आबि गेल छल तँ दोसर दिस साओन । भादो एके संग गढ़ल अनगढ़ल सोच-कल्पना-कामना- निस्तब्ध रात्रि-स्तब्ध मोन, गीतक स्वर लहरी हमर अन्तरक तारकें झंकृत कऽ उठल ।

मुदा 14-15 बरीसक लड़कीक संग उत्तरे की रहैत छैक ? माता पिताक भक्त, धर्म-भीरू जे प्रेम शब्दक अर्थ एतबे बुझैत छल '- सभ सँ प्रेम करू' 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। आइ अपनहि मोनक अराल जाल मे फँसि तरफड़ा रहल - किछु कत्तौ नहि छल। जिनगी अपन गति मे चलि रहल छल कि अचक्के घर मे हमर विवाहक चर्च होअय लागल।

एखन एखन तँ युवावस्थाक देहरी पर पएर रखने छलहुँ। पापा नोकरी सँ त्याग पत्र दय पटना आबि गेलाह। पटना एहेन शहर मे हमरा सभक कोनो कर्म पर आंगुर नहि उठैक ककरो, ई पापाक सख्त हिदायत छल आ हमर सभक संस्कार। बेटी सभक कारण पापाक प्रतिष्ठाक कखनो हनन नहि होइ- एकर उपाय हम हरदम खोजैत रहैत छलहुँ- आ लड़का सभक खराब दृष्टि सँ बचबा लेल हमरा एकटा उपाय सुझि गेल। जहिना कोनो लड़का आँखि पड़ि जाय कि हम खट्ट दऽ थूक फेकि दैत छलौं। ओहि

समयक लड़को सभ सभ्य होइत छल। ओ फेर नजरि उठाय नहि तकैत छल

हम सभ गोलकपुर मे रहैत छलहुँ, पूराक पूरा विश्वविद्यालयक घेराबंदी मे। सामने इंजीनियिरिंग कालेजं, फेर पटना सायंस कालेज, जीडीएस, दोसर दिस लॉ कॉलेज, रानीघाट रामानुजम होस्टल आदि विस्तृत एरिया। सड़कक एकदम कांत मे हमर सभक घर छल। विशाल अहाता, कारी लोहाक बंद गेट, गेट पर नीमक विशाल गाछ लहराइत।

ओहि दिन नहा धोऽ हम कपड़ा पसारए लेल छत पर गेलहुँ कि देखलौं दुई टा लड़का रिक्शा सँऽ जा रहल छल। दूनू कारी प्रिंस कोट एहिरने एकटा सुन्दर गौर वर्णक, दोसर श्यामल किशोर। दुनू हमरा दिस टकटकी लगा देखि रहल छल। हम बिनु किछु सोचने समझने तुरंत अपन अस्त्रक प्रयोग कय थूक फेकि देलहुँ। ई हम अपन रक्षा कवच बनेने छलौं। हम फेर देखलहुँ तँ रिक्शा आगू बढ़ि गेल छल किन्तु, ओ दुनू गोटे पाछाँ घुरि ओहिना ताकि रहल छल। हम फेर थूक फेकि देलहुँ। अपना आप पर तामस उठल-किएक लड़का सभ एहि तरहे लड़की सभकें घूरैत अछि-लगैत अछि आँखि सँ देहक एक्सरे निकालि लेत। बदनाम किएक लड़कीए होइत अछि- इएह सभ सोचैत नीचा उतरलौं कि माँ झटकल एलीह - रजनी तों छत पर छलही ?

हँ किएक ? कपड़ा पसारैत रही- बाप रे बाप- माँ बजलीह - लड़का जाइत छल एहि दने - कोन लड़का माँ - हम अकचका गेलहुँ - मोन मे सोचलौं दिन राति तँ लड़के जाइत रहैत अछि एहि बाटे।

आर के? वएह ललन- कोनो लड़का संग ऊपरे देखैत जाइत छल।

हमरा तँ डर सँ शोणित सुखा गेल- एहि लेल नहि जे ओ देखि लेलक, एहि लेल जे हम दू-दू बेर ओकरा देखि थूक फेकि देलहुँ।

हम चुपचाप भयभीत कपोती सन कोठरीक एक कोन मे दुबकि गेलहुँ- हमर मंगलमय स्वप्न छल जकर नाम हम भगवानक नाम संग जोड़ि राखने छलहुँ, आइ हुनके - छी छी हम की कऽ देलहुँ ? कोन अनर्थ भऽ गेल हमरा सँ। ई कोन रक्षा कवच छल जाहि सँ हम स्वयं अपनाकें बदनाम कऽ लेलहुँ - माँ, पापा तँ दूर हम अपन भाइयो बहीन लग अपन एहि रक्षा- कवचक चर्चा नहि केने छलहुँ।

चरचराइत, टूटैत काठ जकाँ, समयक वेग मे, परिस्थितिक चक्र मे किछु एना हम फँसि गेल छलहुँ जे हमर सुन्दर सपना टूटल तँ नहि किन्तु, भगजोगनी जकाँ कहियो-कहियो अन्हार मे भुकभुका जाइत छल। कतऽ पटना अबैत काल एकटा स्वर्ण किरण आसक हृदय मे चमकैत छल - पटना जाहि ठाम ओ अछि - 'तुझे ढूँढ ही

लेंगे कहीं न कहीं...... मुदा, पटनाक विशाल जनजीवनक स्थिति परिस्थितिक अजगरी चपेट मे बिसरि गेल छलहुँ सभ किछु। हँ हमर बाल मोन राम कृष्ण जकाँ भगवानक श्रेणी मे ओहि नामक पूजा करैत छल - आइ वएह भगवान साकार सम्मुख छलाह। पापा, माँ चीन्हि गेलैथ आ हम मूढ़ अपन भगवान कें नहि चीन्हि सकलौं-हुनक अवमानना कऽ बैसलौं- ककरा अपन हृदयक बात कहितहुँ - केओ तँ साथ नहि छल, संगी छल आँखिक नुनछाहा पानि।

परिस्थिति करोट लैत रहल। समयक सागर मे ज्वार-भाटा अबैत रहल जाइत रहल। अचक्के एक दिन हल्ला भेल लड़का आयल अछि, लड़का आयल अछि।

हम अकचका गेलहुँ- अँय हमर थूक फेकबाक बादो? किएक आएल अछि? ओहि समय मोती भाभी मगध महिला कॉलेज मे पढ़ैत छलीह। होस्टल नहि मिलबाक कारण डेरे पर रहैत छलीह। असल मे हमर एकटा पीसीक वियाह डुमरा परूहर भेल छलैक - लड़काक पित्ती सँ। तें सुन्दर भैया मोती भाभी लड़कोक भैया भाभी हमरो भैया भाभी। ओ मोती भाभी सँ मिलवा लेल आयल छलाह।

समस्त घर मे पावनि तिहारक उमंग पसरि गेलैक। पापा माँ सभ घेरि कें बैसल आ, हम घरक अन्हार कोना मे, बड़ दूर मे जाकऽ बैसि रहलौं। डराय गेल रही कहीं मोती भाभी कें हमर अक्षम्य असभ्य अपराधक विषय मे कहि नहि देथि। तावत कान मे संगीतक स्वर लहरि छटपटाय लागल-

'न तूफां से खेलो न साहिल से खेलो।'

मेरे पास आओ मेरे दिल से खेलो।

सुमधुर लहरि हमर हृदयक तार कें झनझना रहल छल- गीत खत्म भेल-थपड़ीक स्वर सुनाइ पड़ल-आ फेर जोड़ लगबैक आग्रह-मन की वीण मतवारी बाजे, आशा झूमे जीवन नाचे ....

हमर हारमोनियम पर ओकर आंगुर नाचि रहल छल - माँ सरस्वती जेना स्वर आ लय मे साकार भऽ गेल छलीह।

समयक सीमाक एकटा अपन महत्व होइत अछि ! वर्तमान जेना भविष्यक न्यों बनि जाइत छैक! वर्तमानक क्रियाकलाप, सुन्दर सुन्दर सपना एतेक आकर्षक, मनमोहक लागऽ लगैत छैक जे भविष्यक परिकल्पने गौण भऽ जाइत छैक! इएह हाल हमर छल! सदिखन कल्पना, सपना आ भावना हमर जिनगी बनि गेल छल। एकटा नवीन शक्तिक संचार होअऽ लागल हमरा मे -नित नव नवरूप मे हुनक छवि मोन प्राण कें आलोकित कऽ दैत छल!

सांझ मे आयल छल सुधीर बाबूक संग। मोती भाभीक कोठरी ओकर अड्डा बनि गेल छल- ओ पूर्णिमाक राति छल। सौंसे हाता मे उज्जर गुलाब विहँसि रहल छल। इजोरिया खंड-खंड मे छितरायल। नीमक ठाढ़ि बाँहि पसारि किछु कथा-कविता कहि रहल छल- ओकरा अबितहि जेना समस्त प्रकृति सजग भए जाइत छल - माँ लड़काकेँ देखितहि कतेक स्वप्न बेटी लेल सजाबऽ लगैत छलीह- पापा शांत रहैत छलाह। ओ एतबे कहैत छलाह - सपना नहि देखू- कर्तव्य करू- **'देयर इज मेनी ए स्लीप बिटवीन द कप एन्ड द लिप -'**

सभ भाइ बहीन चंचल भऽ जाइत छल - दीदीक वियाहक बात चलि रहल अछि। लड़का स्वयं एहिठाम आबि जाइत अछि । ओकरा सभ कें खुश हेबा लेल एतबे बहुत छल। आ हम ओहि इजोरिया साजल हाताक कोनक अन्हार मे पूर्ववत बैसि जाइत छलहुँ।

किन्तु, ओहि दिनक स्वर लहरी हमरा अशांत उद्भ्रांत कऽ देलक - गीतक लय- ओकर दर्द सँ हमर आँखि सागर बनैत रहल -

प्यार पर बस तो नहीं है मेरा लेकिन फिर भी

तू बता दे कि तुझे प्यार करूँ या न करूँ ....

हम अन्हार मे हिचुकि हिचुकि कानि रहल छलहुँ आ कि दोसर गानक स्वर-

तुझे क्या सुनाऊँ ऐ दिलरूबा, तेरे सामने मेरा हाल है,

तेरी एक निगाह की बात है, मेरी जिन्दगी का सवाल है।

स्वरक व्यथा भरल आरोह अवरोह सँ सभ केओ चौंकि गेल छल- भैया भाय, अत्तर भैया, राम स्वारथ भैया, सुन्दर भैया, माँ पापा सेहो ।

राति तीति भीजि अलसाय गेल तऽ सभ चलि गेल। एकरत्तीक मन्नाजी दौड़ल हमरा लग आयल- एक परदेशी दीदी का दिल ले गया मोटी मोटी अँखियो मे आँसू दे गया- गबैत हमर गरा सँ लटकि गेल।

हमरा अचरज होइत छल- अपन जाहि करनी पर, थूक फेकबाक कारण हम अपने नजरि मे छोट भऽ गेल रही- ओहि 'करनी' केँ ई बड़का बात मानि लेलनि। ओहि दिन रिक्शा पर हिनक अभिन्न मित्र बद्री बैसल छलाह ।

ई ओहि काल बद्री सँ कहलनि - बद्री ई जे थूक फेकि रहल अछि मल्लिक साहबक बेटी छी- अहाँ देखब हम एहि लड़की सँ वियाह करब। ई गप हमरा विवाहोपरान्त बद्री जी कहलनि।

आ हमर मोन तँ सदिखन ओहिना कतौ कोनो विचार मे भटकल रहैत छल। युवावस्था मे जखनहि पएर रखलहुँ ओकर छवि कें साकार पबैत छलहुँ। ओकर आएबाक पदचाप सँ नीमक ठाढ़ि पर गोधूलीक श्यामलता झूमऽ लगैत छल। हमर हृदय वीणाक तार झंकृत भऽ उठैत छल। ओहि झंकार मे हमर जीवनक रागिनी बेर-बेर ओकर गीतक आमंत्रण कें अपन आकुल मोन मे सहेजि लेबा लेल चाहैत छल। किन्तु, ऊपर सँ हम हरदम शान्त रहलहुँ- एकटा शांत शिलालेख सन ओहि गीतक आलेख नेने- की एकर परिणति विवाह थीक-?

मोन नहि पड़ैत अछि सत्तावनक जाड़ छल कि उनसठक जनवरी फरवरी-इन्टर युनिवर्सिटी डिबेट पटना कालेजक बी.ए. लेक्चर थियेटर मे होअऽ वला छल। ओहि समय बिहार मे मात्र दुइटा विश्वविद्यालय छल, पटना विश्वविद्यालय आ बिहार विश्वविद्यालय। पटना विश्वविद्यालय, जे आइयो अछि आ समस्त बिहार - बिहार विश्वविद्यालय छल। ओहि समय पटना विश्वविद्यालयक साख एशियाक उत्कृष्ट विश्वविद्यालय मे सँ छल। हम मगध महिला कालेजक प्रथम वर्ष मे नामांकन करौने छलौं। मगध महिला कालेज सँ ओहि डिबेट लेल इंटर सँ हमरा आ बी.ए. सँ निर्मला दीदीक चयन भेल छल। विषय छल **'इन द इवेनट ऑफ वार इन्डिया सुड बी न्यूट्रल आर नॉट'**-

घरक बगले मे पटना कालेज छल। पापा अस्वस्थ छलाह। हम मोती भाभी संग पटना कालेज गेलहुँ। जाड़ सँ थरथर काँपि रहल छलहुँ- पीअर रंगक ओवरकोट पहिरने दूनू हाथ जेब मे रखने, तखनो दाँत कड़कड़ा रहल छल। बी.ए. लेक्चर थियेटर पहुँचलहुँ जाहि ठाम सभ कालेज सँ चुनल प्रतिनिधि आबि गेल छल। थियेटर मे एक दिस घेरल काठक छोट सन स्टेज बनल छल। स्टेजक दहिना चारि टा बेंच आ डेस्क राखल छल जाहि पर हम बैसलौं । सभ महिला प्रतिनिधि आ भाभी हमरा संगे बैसल छलीह। स्टेजक सामने विशाल गैलरी छत धरि सटल। गैलरी मे सभ कालेजक विद्यार्थी खचाखच भरल छल। अचक्के भाभी बजलीह- हे देखू, गैलरी मे सभ सँ ऊपर ललन जी बैसल छथि, संग मे हुनक अभिन्न संगी चंद्रशेखर खाँ। हम स्तब्ध भऽ गेलहुँ कि स्टेज प्र सँ सभ प्रतियोगी सभक नामक उद्घोषणा शुरू भऽ गेल। मगध महिला कालेज सँ निर्मला दीदीक नामक संगे हमर नामक घोषणा भेल आ तखन आर नर्वस भऽ गेलहुँ जखन उद्घोषणा भेल पटना सायंस कालेज सँ फिजिक्स आनर्स तृतीय वर्षक छात्र ललन कुमार वर्मा भाग लेताह।

हमर हालत साँप छुछुन्नर सन भऽ गेल। हम भाभी सँ खाली एतबे बजैत छलहुँ- भाभी अहाँ हमरा किएक देखा देलहुँ, ताहि पर सँ भाग लेबऽ बला मे हुनक नाम- ओहि सर्द राति मे घाम पसीना सँ नहा गेल रही- बेर-बेर रूमाल सँ पसेना पोछि

रहल छलौं। हृदयक धड़कब एतेक तीव्र भऽ गेल- लगैत छल पूरा हाल सुनि रहल हो। तावत ओ नीचा उतरि उद्घोषकक कान मे किछु बाजि बाहर चलि गेल। हम बुझि नहि पबैत रही जे भऽ की रहल छैक। उद्घोषक स्वर फेर कान मे पड़ल- कोनो कारणवश पटना सायंस कालेजक छात्र ललन कुमार वर्मा हिस्सा नहि लऽ सकताह। हुनका स्थान पर केओ आन छात्रक नाम बाजलक।

हमर तँ जान मे जान आयल। अपना पर लाजो आयल - छी हमरा कारण केओ- डिबेट आरंभ भऽ गेल छल, एहि बीच मे हम स्वयं कें प्रकृतस्थ कऽ सभक प्याइंट नोट करऽ लगलहुँ। लड़का चलि गेल तँ फेर नहि आयल। आब हमर संपूर्ण ध्यान हमर लक्ष्य पर छल। हमर पारी आयल- हमर आत्मविश्वास घुरि गेल छल, हम धारा प्रवाह बजैत रहलौं- पापाक सिखाओल अंग्रेजी झरना जकां झहरैत रहल।

अपन मंद मुस्की संग चन्द्रशेखर जी निर्निमेष हमरा ताकि रहल छलाह- इ हम अनुभूत कऽ रहल छलहुँ।

परिणामक उद्घोषणा भेल। प्रथम स्थान पर सायंस कालेज छल, द्वितीय पर हम छलौं। पुरस्कार अपन अपन कालेज सँ प्राप्त केनाय छल। विश्वास नहि होयत छल जे हमरा पुरस्कार भेटल छल - किन्तु पापाक बेटी छलहुँ ने - प्रतिष्ठा बाँचि गेल, खुशी खुशी भाभीक संग थियेटर सँ बाहर अएलौं- "कांग्रेच्यूलेशन्स" कहैत केम्हर दन सँ आबि ओ भाभी सँ गप करय लागल - हम एकदम चौंकि गेलहुँ तँ ओ बाहर ठाढ़ भय हमर डिबेट सुनि रहल छल।

रातिक दस सँ बेसी बाजि रहल छल। जाड़क इजोरिया, पटना कालेजक विशाल हाता मे झूमैत वृक्षक पांत सभ सँ छनि छनि हमर सभक देह पर खसैत सड़क पर पसरल छल। जाड़क राति ओहिना निस्तब्ध रहैत अछि, दस बजे लगैत अछि जेना कतेक राति बीत गेल। हम आ मोती भाभी असगर छलहुँ तँ भाभी ओकरा सँ गप करैत रहलीह। ओकर बगल मे खाँ साहब, पाछू हम- भाभी चुटकी लऽ रहल छलीह आ हम ओहि इजोरिया राति मे आर अन्हार दिस जेबाक प्रयास कऽ रहल छलौं, मुदा एको शब्द ओ हमर विषय मे कोनो चर्च नहि केलक। भाभीक चुटकी कें अनठाबैत गेल- ई हमरा बड़ नीक लागल छल। इंजीनियिरिंग कालेजक सीमा पर हमरा सभकें पहुंचाय वापस भऽ गेल। ओहि समय ओ लोअर रोडक मंडल लाज मे रहऽ लागल छल।

पता नहि बाल्यकाले सँ हमरा लाल रंग किएक एतेक पसन्द होइत छल। हमर तोसक, तकिया, चद्दरक संग संग सलवार सूट सभ लाल-लाल। केश छोट छोट छल किन्तु ओकरा मे नकली केस लगाकऽ जुट्टी गुहि ओकरा दोहराय दुनू कान लग लाल

लाल फीताक फूल बना लैत छलौं। बाते बात मे भाभी ओकरा कहने छलीह- हम तँ हिनकर नामे अनुरागमयी राखि देने छी- ताहि पर ओ एतबे फुसफुसाय कें बाजल छल- **'लाली मेरे लाल की जित देखौं तित लाल-लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल।'**

हम सिहरि गेल छलहुँ। जेना हमर समस्त जीवनक पुरस्कार हमरा भेंटि गेल छल। जीवन बितयबा लेल एतबे यथेष्ठ छल।

मंडल लाजक मालिकक बेटी राधा मगध महिला मे पढ़ैत छलीह। लॉ कालेज दिस सँ छात्र सभ कें लय बस हमरा बैसबैत छल। फेर महेन्द्रू, सिटी होयत, मुसल्लहपुर हाट सँ लोअर रोड मे मंडल लाज लग बस रूकि राधा कें लऽ कऽ मगध महिला दिस जाइत छल। हमरा नहि बुझल छल जे मंडल लाजक ठीक सड़कक कात वला कोठरी मे लड़का रहैत अछि। जखन राधाक लेल बस रूकैत छल तँ ओहि कोठरी सँ पांच छह लड़का बस दिस टकटकी लगा दैत छल- हम कहियो ध्यानो नहि दैत छलहुँ अपन मोनक संसार मे, कल्पना लोक मे डूबल रहैत छलहुँ, चिन्तन मनन मे। हमरा नहि बुझल छल जे माथ मे उगायल फीताक फूल हमर पहिचान बनि गेल अछि- हेबा- लाल फूल वाली- लड़का स्वयं सामने नहि रहैत छल जे कहीं चिन्हि नहि ली। आ हम एहि सभ सँ नितान्त अनभिज्ञ। हँ, पाछाँ जनलौं, आँखिक काजर आ फीताक फूलक कारण ओ सभ बजैत छल- नैन कुटारी, यहाँ फुलवारी'

किन्तु, राधा कें एबा मे देर होयबाक कारण एक दिन अकच्छ भऽ गेलहुँ हम सभ। हमर दृष्टि अनायास लॉज दिस उठि गेल तँ देखैत छी ओहि छात्र सभक बीच लड्डू मामा सेहो ठाढ़ छलाह। लड्डू मामाक ज्येष्ठ भाइ विपिन मामाक वियाह लड़काक छोट बहीन मीना सँ भेल छल। तें लड़का मोती भाभी सँ भेंट करबा लेल कहियो विपिन मामाक संग तँ कहियो सुधीर मामा यानी लड्डू मामाक संग हमरा ओतऽ अबैत छल। बाद मे चन्द्रशेखर जी ओकर लिखल हमरा एकटा कविता देलनि।

"मेरे मानस की मेरी अल्हड़ सुकुमारी

मन मयूर है थिरक उठा, लखकर तेरी लट श्याम घटा......"

एक दिन पापा माँ सँ चुपचाप कहलनि- माँ हमरा सँ चुपचाप- मुखियाजी आबि रहल छथि डुमरा सँ- ओ सभ रजनी कें देखथीन। के कहलक अहाँ कें - माँ पुछने छलीह लड्डू बाबू कहलनि! भऽ सकैत अछि सिनेमा हाल मे देखथि-

तन मोन भय सँ काँपि रहल छल। मुखियाजीक रूआब, अहं सभ मोन पड़ऽ लागल। कालेज गेलहुँ- आबि गेलहुँ - किछु नहि भेल, केओ नहि आयल- सभ केओ बेर बेर पुछैत छल- आ सभ निराश भऽ गेल, दोसर दिन कालेज गेलहुँ निश्चिंत भऽ कऽ।

मैच हो वा कि टेबुल टेनिस हमर सीनियर छलीह इला चतुर्वेदी-बड़ सुंदर, मोहक! रेडियो स्टेशन मे सेहो कार्यक्रम दैत छलीह-सभ खेल मे आगू। ओ हमरा बड़ मानैत छलीह। हम इलादीक आँखिक गहीराय मे भाव विभोर रहैत छलहुँ।

अंग्रेजीक प्रोफेसर अमला दी ककरो नहि छोड़ैत छलीह, फर्स्ट इयर आ थर्ड इयरक मध्य मैच भेल छल क्रिक्रेटक। रौद मे घामे पसेना नहायल हम आफिस मे फीस जमा करबा लेल चलि गेलहुँ। एक हाथ मे बैट छल एक मे बैग- फीस जमा करबाक अन्तिम दिन छल। आफीस मे हमर दृष्टि पड़ि गेल सुधीर मामा पर- मूमा अहाँ ? ओहो घबड़ा गेलाह- हकलाबैत बजलाह- राधाक फीस भरनाय छल तैं आयल छी- मामा राधा कें टयूशन पढ़बैत छलाह आ स्वयं पटना कालेज मे अंग्रेजी स्नातकक छात्र छलाह- कनि शांत होइत बजलाह- चलऽ बाहर बैसी, किछु गप अछि। अनठिया मनठिया हम देखि लेलहुँ बाहर मे रिक्शा पर केओ गांधी टोपी लगौने बैसल छलाह - मोने ज्वार उठल काल्हि हम साड़ी पहिरि सिंगार पटार कऽ आयल रही तखन एलाह नहि- आ एखन हम घामे पसीने नहायल छी तैं - एखन तऽ हमर क्लास छी मामा, घंटी बाजि गेल अछि- बजैत पाछूक दरवज्जा सँ भागि गेलहुँ आ लड्डू मामा देखते रहि गेलाह। हमर सभक क्लास कतबो पहिने खत्म होइत छल किन्तु बसक कारण चारि बजे तक रूकऽ पड़ैत छल! कालेजक एतेक पैघ हाता सभटा बस गेट लग लागल रहैत छल।

मगध महिला कालेजमे व्यक्तित्व विकास लेल नाना प्रकारक खेल छल। हम जेवलीन थ्रो, डिस्कस थ्रो आ डांडिया नाचमे हरदम हिस्सा लैत छलहुँ। वर्ल्ड युनिर्विसिटी सर्विस केर ज्वाइन्ट सेक्रेटरी, अन्सा, युनाइटेड नेशन स्टूडेन्ट्स एसोसियेशनक सदस्य रही! एकर सभक कार्यक्रम मे व्हीलर सिनेट हाल मे पीयर पाढ़िक उज्जर साड़ी, पीअर ब्लाउजक संग वॉलंटियर बनि अपन कर्तव्य करैत छलौं। एहि सभ कार्यक्रम मे भाग लैत हमरा मे बड़ आत्मविश्वास आबि गेल छल। पटना अबैत काल डराइत रहैत छलौं किन्तु पापाक देल आत्मविश्वासक दीया कहियो मिझाय नहि देलहुँ। पापाक प्रतिष्ठा पर आंगुर नहि उठय देलहुँ। हँ, मन मे एके भाव उठैत छल- कहीं एहि सभ मे ललन सँ भेंट भऽ जाय - किन्तु कहियो एहेन संयोग नहि लागल। ओहि बीच बी.एन. कालेज, पटना मे सेहो हम एकटा वाद विवाद प्रतियोगिता जीति के अएलौं! किन्तु ओतहु देखा नहि पड़ल ओ- इंटर मे सभ छात्रा एन.सी.सी. लऽ रहल छलीह - हमरो मोनमे ज्वार उठल- सहरसा मे हम स्काउटस मे छलहुँ - कतेक कठोर अनुशासन सिखाओल जाइत छल- तुम कौन हो? स्काउट। तुम क्या करोगे? परोपकार, देशोद्धार, चमत्कार-देश प्रेमक भावना जेना नस-नस मे प्रवाहित होइत छल। माँ सँ बजलहुँ एन.सी.सी. रखवा लेल-पापा स्पष्ट रूपे मना कऽ देने छलाह- ओ सभ

पुरान विचारधाराक छथि। पटना अबैत जाइत रहैत छथि, रजनी के पैंट शर्ट मे गांधी मैदान मे परेड करैत देखि लेताह तँ बात बिगड़ि जयइत!

मोने मन पापा पर तामस उठल छल- एखन तक तँ कतौ कोनो चर्च अछि नहि आ गप होइत अछि हुनक विचारधारा कें- मुदा प्रकटत: किछु नहि बजलौं उत्तर देबाक आदेश हमर सभक परंपरा संस्कार नहि देने छल हमरा सभ कें। ...... मुदा, चर्च भेल वियाहक। तँ मुखियाजी बेटा बला होइतो स्वयं पटना आबि गेलाह! लड्डू मामाक संग जखन हम कालेजक बाहर नहि निकललहुँ तँ सभ बुझैत छलाह जे मुखिया जी लड़की नहि देखि सकलनि- किन्तु दोसर दिन प्राते काल खबर आबि गेल जे मुखियाजी लड़की देखि लेलनि आ हुनका लड़की बड़ पसिन्न पड़लनि !

आश्चर्य लागल जे हम तँ बाहर निकलबे नहि केलहुँ तँ ओ हमरा देखलनि कोना-? पाछाँ पता लागल जे छुट्टी हेबाक काल ओ फेर कालेज आयल छलाह। बसक लगे एकटा ईटाक भट्ठा छल, ओकरे अऽढ़ सँ हमरा देखि रहल छलाह ! हम अपन दोस्त शारदाक संग आबि बस मे बैसि गेल रहौं।

दोसर दिन मुखिया जी बासा पर एलाह पापाक निमंत्रण पर, संगे लड्डू मामा आ चन्द्रशेखर खाँ।

ओहि बीच मोती भाभी कें मगध महिला मे हॉस्टल भेटि गेल छलैक आ ओ घर सून कऽ चलि गेल छलीह! किन्तु, ओहि कोठरी मे भैया भाय यानी शिशिर कुमार वर्मा, रामस्वारथ भैया आबि गेल रहथि। घरक सभसँ अन्हार कोन मे चुपचाप हम बैसल रही आ मुखियाजीक स्वागत सत्कारक उछाह घर मे छल! बेटाक बाप स्वयं आबनि ई अपना आप मे उदाहरण भऽ गेल- किन्तु दुइए दिन बाद लड़का फेर भैया भाय सँ मिलबा लेल पहुँचि गेल खाँ साहबक संगे। सभ केओ परिणाम जानबा लेल उत्सुक छलाह। मुखियाजीक की निर्णय भेल?

21 फरवरी '59 क साँझ छल- समस्त वातावरण गंभीर छल! खाँ साहब सँ पापाकें ज्ञात भेलैक जे आपस मे किछु बहस भेल छलैक- ओहि बोझिल वातावरण मे भैया भायक आग्रह पर हिनक गीतक लहरि समस्त प्रांगण कें उदास कऽ देलकैक- 'तू प्यार का सागर है तेरे एक बून्द के प्यासे हम। लौटा जो दिया तू ने चले जायेंगे जहाँ से हम'- स्वरक वेदना सँ समस्त घर स्तब्ध भऽ गेल- फेर दोसर गीत- 'आँसू भरी है ये जीवन की राहें - कोई उनसे कह दे हमें भूल जाएँ'.......स्वरक एहि दर्द पर हमर हृदय कानि रहल छल। अन्हौर मे बैसल नोरक बाढ़ि समस्त सीमा रेखा तोड़ि देने छल- कोना ओकर हृदयक व्यथा कें हम दूर करी ? हमरा आदान प्रदानक कोनो साधन नहि छल। बस एकटा गीत- गीत इएह साधन छल सेहो एकतरफा- हम कोना

पोखरि मे! गुलाब जल आ यादव जी संग छल तँ डर कथीक? पोखरिक बीच मे एकटा कारी खटखट मोट गोल लकड़ी बाँस जकाँ गाड़ल छल- ओकरा सभ जाठि कहैत छल! पोखरि मे जलपरी जकाँ सभ नहा रहल छल- सभ केओ मे जाठि छुबि लेबाक स्पर्धा मे युवक युवती सभ छल- ब्लाउज विहीन, साड़ी तीतल भीजल, सभक देहयष्टि उजागर भऽ रहल छल। पानि सँ तीतल केशराशि मुँह कान पर छिड़िआयल ई सम्मोहक सौंदर्य- किन्तु, सभसँ बेसी आश्चर्य तऽ ई छल जे कोनो पुरुखक आँखि मे वासना नहि, लोलुपता नहि। सरिपों, की गामक प्राकृतिक सौंदर्यक तन मोन एहिने होइत छैक?

यादव जी हेलि हेलि जाठि लग जाइत छल अबैत छल, गुलाब जल डरपोक्की जकाँ घुट्ठी भरि पानि मे बैसल छलीह- हमरो मोन मे जाठि छुबाक इच्छा करौट लेलक आ हम करौट भऽ गेलहुँ ।

हम नहि जानैत छलहुँ हेलनाइ ककरा कहैत छैक- हम तँ पानि मे बुलैत बुलैत, डेगा डेगी दैत जाठि लग जेबा लेल चाहलहुँ- मुदा ई की? दुइ डेग आगू बढ़लहुँ नहि कि हमर पएर सतह सँ उखड़ि गेल- हम भारहीन भऽ खड़िका सदृश्य पानि मे बहऽ लागलहुँ, उभ-चुभ करऽ लगलहुँ। सभ बच्चा सभ खुश भऽ गेल छल जे हम हेलि रहल छी। मुदा, हेलनाइ तँ दूर, कहियो कोनो पोखरि वा कि नदी मे प्रवेशो नहि केने रही, हम औना रहल छलहुँ - पानि पीने जा रहल छलहुँ- तकर बाद हमरा किछु मोन नहि रहल। पोखरिक कात मे दतमैन करैत अनार पीसीक दृष्टि हमरा पर पड़ल। ओ बुझि गेलीह - तुरत पानि मे फानि हेलिकें हमरा अपना पीठ पर लादि बहार अनलीह। उनटा लेटाय पेट सँ पानि निकाललीह ।

अंगना मे जखन खबरि पहुँचल तऽ पीसी माँ आ लालदाय असगर मे हमरा खूब डांटलक, संगहि यादव जी कें बेसी - तों किएक लऽ गेलीह पोखरि मे नहयबा लेल? एखन किछु भऽ जेतियैक तऽ हम लालभाय कें की जबाब दितहुँ। हमर जिम्मेदारी छी रजनी -फेर तँ जतेक मुँह ओतेक गप - घरक कोन मे बैसल टटघरक अन्हार मे हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ, पीसी माँक डाँट, लालदाय केर उपदेश ।

पानि सँ पैर उखड़ि जेबाक आदंक हमर दिल दिमाग सँ नहि जा रहल छल- ओहि समयक अनुभूति एखन धरि हमरा अपन चपेट मे नेने छल जे हमर सभ उमंग कें खत्म कऽ देलक - वियाहक रंग मे भंग..... सुन्दर भैयाक बिलौकी मांगऽ लेल हम सभ परूहर गाम होइत डुमरा गेलहुँ। पापा वियाह मे पहिरबा लेल सभ बहीन कें यानी हम, लालदाय, शशि बहीन, प्रेमजल, संगीत गुलाब जल सभकें लाल रंगक सिल्क साड़ी देने रहथीन! आ सभ केओ सिल्क साड़ीक लालिमा मे उषाकालक सिनुरिया आकास जकाँ धरतीक हरीतिमामे इन्द्रधनुष सन उगल छलहुँ- ओहि समयक

अपन मेकअप छल। लहंगा चोली, सलवार सूट सभक प्रचलन नहि छल, खास खास अवसर पर, वियाह दान, भ्रातृद्वितीया, दीयाबाती सभ मे छोट सँ छोट छौंड़ियो सभ साड़ी पहिरि अँइठैत रहैत छलीह ।

बिलौकी मांगवाक अनुभव हमर जिनगीक पहिल अनुभव छल -सुन्दर भैयाक माथ पर बिधकरीक आँचर छल- विचित्र मस्ती छल - ग्राम्य सुषमाक सरोवर मे नहा रहल छलहुँ- सभटा रीति रिवाज परंपरा ई सभ देखबाक, उन्मुक्त चिड़ै जकाँ खेत-खरिहान मे उड़वाक एकटा बड़का अवसर भेटल छल हमरा ।

परूहर आ डुमराक मध्य खाली खेत, मोइन नहर सभ छल- तीन दिस सँ नम्हर नम्हर ओसारा घर आ बड़का अंगना । एहि अंगना मे जेबा लेल बड़का दलान पार करय पड़ल, तकर बाद पक्का नहरा बला बड़का इनार, चारूकात थलकमल, तग्गड़, वेला, जूही, रजनीगंधा आदिक वृक्ष लताक सुगन्धक बाद अंगना मे प्रवेश करबाक दरबज्जा छल। फूल पत्ती क्रोटनक गाछ सभ एतेक सघन छल जे अनचीन्हार कें बड़ खोजला पर अंगनाक द्वार भेटतैक!

हवेलीक दक्षिण मुनहर छल, ओहिठाम विशाल गोदाम घर, हवेलीक उत्तर करीब आधा पौने किलोमीटर पर परूहर छल बीच मे खेत पथारक हरहरी, छोट छोट नदी, आमक गाछी, ब्रह्मक स्थान, हवेलीक पूब जतऽ धरि दृष्टि जाइत छल खेते खेत- सूरज ओहि खेतेक उपर उगैत छल - हवेलीक पच्छिम डुमरा गाम आ ओहि सँ सटल कोसी नदी- जाहि मे सूरज अस्त। तखन कोसी पर बाँध बान्हवाक प्रक्रिया चलि रहल छल आ ओहि बाँध मे हमहु सभ श्रमदान केने छलौं, माथ पर छीटा मे माटि उगहि उगहि देने छलहुँ- बीरपुर सँ डुमेरा, नौहट्टा, चंद्रायण होइत। कोसी नदीक कछेर पर जतेक जमीन छल सभ मुखियाजीक ।

विलौकी मांगबा लेल जे स्त्रीगण छलीह वएह पीसी माँ सभकें हवेलीक चौहद्दी समझा रहल छलीह - हम बुझि गेलहुँ - सहरसा मे जिनक नकल उतारि हम नाटक करैत छलहुँ वएह बू बाबू, टू बाबू, मू बाबूकें हवेली ई थीक।

किन्तु, हमरा ओहि नाटक सँ कोनो तारतम्य नहि बैसि रहल छल। प्रकृतिक कोर मे बसल डुमरा गाम कतेक निश्छल, कतेक निर्मल- हवेलीक स्त्रीगण सभ घोघ तानि हमरा सभकें टुकटुक ताकि रहल छलीह। प्रायः हम सभ कुमारि कन्या एके रंगक लाल नुआ मे लटपटायल छलौं- मल्लिक साहबक बेटी कोन छी - हवेलीक एकटा स्त्री बिलौकी दैत पुछलीह- हमरा दिस आंगुर उठि गेल, हम अनेरे मुड़ी झुकाय लेलहुँ । यानी आफिसरक बेटी हेवाक ओहदा ओहू ठाम हमरा भेटि रहल छल- किन्तु, हमरा कहियो एकर दंभ, वा घमण्ड नहि रहल! हम तँ एतबे बुझैत रही-हम अपन पापाक बेटी छी जिनक आत्मा सँ हमर आत्माक निर्माण भेल आ माँक रक्तमाँस

सँ हमर एहि तनक संरचना – ओ हमरा लेल भगवान छलाह – हुनक आदेश हमरा लेल ईश्वरक आदेश छल ।

सुन्दर भैया कें जहिया मोती भाभी सँ सिद्धान्त भेल छल, भैया भरि पाँज हमरा पकड़ने नाचि गेल छलाह – आइ हम बड़ खुश छी रजनी – बड़ खुश – तखन हुनक खुशीक अंदाज हमरा ओतेक नहि भेल छल मुदा बाद मे ज्ञान भेल तँ सोचैत छलहुँ, मुस्काइत छलहुँ – नीलम बहीनक घी ढारी मुखिया जी दूनू बेकति केने छलाह ।

हम बगल मे ठाढ़ सभटा विधि व्यवहार देखैत छलहुँ– तखन लड़काक नामो नहि सुनने रही– तेँ ओहि दिस धियानो नहि जाइत छल – ओहिना दस टा कथाक चर्च होइत रहैत छल! एक बेर पटोरी सँ कथा आयल तँ गुलाबजल कहलनि– जनैत छी गुलाबजल ओ लड़का बजैत अछि – रजनी? सुनैत छी बड़ चंचल अछि – आ– हमर जी जरि गेल छल – हम चंचल छी तँ ओकरा की – हम अपन पापाक बेटी छी। दीदी की सोचि रहल छी– छोटका मन्ना जी आगू मे ठाढ़ हँसि रहल छल। तंद्रा टूटि गेल मुखिया जी संतुष्ट भऽ गाम चलि गेल छलाह। संतुष्ट एहि लेल जे एकर बादे लड़काक छोट बहीन मीनाक पत्र आयल छल – मेरी होने वाली प्यारी प्यारी भाभी, प्रणाम! बाबूजी से ज्ञात हुआ कि आप मृगनयिनी हैं – पिकबयनी हैं – बहुत ही सुन्दर हैं, हम सब आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं .... कतेक तरहक उपमा सँ संबोधित कय मीना हमरा पत्र लिखने छलीह– घर मे सभ पत्र पढ़लक – सभ देखलक – सभ एतबे बात बजैत छल– रजनीक भाग्य देखू–घर बैसल लड़काक पिता स्वयं आबि कथा ठीक कऽ गेलाह ।

गरमीक छुट्टी मे वियाहक बात भेल छल सेहो बड़गाम सँ ! पापाक विवाहक बाद हमरे ब्याह होइतैक खानदान मे तेँ गामे सँ ब्याह करबाक बात भेल।

गरमीक छुट्टी मे सभ केओ गाम जेबा लेल उत्सुक छलौं – आ 19 मई '59 केँ हम पटना सँ गाम लेल विदा भऽ गेलहुँ। सहरसा होइत हम सभ 20 ता0 कें मधेपुरा पहुँचलहुँ। बड़का माँ, बाबूजी सभ सँ विचार विमर्श कय हम सभ 25 मई के सुपौल पहुँचलहुँ दीदीया लग ! पापा अपन बहीनी सभक सलाह बिन कोनो निर्णय नहि लैत छलाह! पापाक पाँचो बहीनक स्थान हमर सभक घर मे बड़ महत्वपूर्ण छल। हमर माँ साँच अर्थ मे पापाक अनुगामिनी छलीह –। कहियो पापाक कोनो काज मे टोका नहि दैत छलीह। हँ कतहु किछु अनसोहाँत बुझा पड़ैत छल तँ चुपचाप असगर मे पापा कें बुझबैत छलीह!

हमरा सभकें सुपौल पहुँचिते चारू दिस हलचल मचि गेल – एखने तँ रजनी गेल छलीह परीक्षा दऽ कऽ – लगले वियाहो ठीक भऽ गेलैक, सेहो मुखिया जीक बेटा सँ......। सुपौल सँ मधेपुरा होइत 30 मई कें बड़गाम पहुँचि गेलहुँ। हमर सभक गोसाई ज्वालामुखी छलीह – कतबो दूर पापा नौकरी करैत छलाह, कहियो गोसाँय कें

अनादर नहि केलनि, कहियो हुनका नहि विसरलाह। कोनो पावनि तिहार हो पापा अंचरी झाँपि, फूल पात सभक पाइ प्राणरखन पुरहित कें पठवैत छलाह। हमरा एखनो मोन अछि माँ ब्रह्म बेला मे उठैत छलीह तँ पापा सभ सँ पहिने माँक गीत सुनैत छलाह–

'बिमल विभूति बूढ़ बरद बहनमा से लंबे लंबे लट लटकावे बाबा बासुकी'

राति मे सुतैत काल माँ सँ गोसाँय गीत – छतिया नहि तोरा दरजौ ज्वालामुखी मन नहि हृदय अकुलाय । तोहरो सेवक माँ हे संकट पड़ल अछि तहू नहि होय'छ सहाय..... आस्ते आस्ते मधुर लय मे गाओल माँक गीत सभ पापाक प्रेरणे स्रोत नहि वरन ऊर्जा स्रोत रहैत छल! रोज राति के पापा भगवती पर अपना कें सौंपि चैनक नीन्न सूतैत छलाह आ रोज प्रातःकाल भोला बाबाक अराधना कय कर्म क्षेत्र मे जुटि जायत छलाह !

गाम मे छोटी दादी रहैत छलीह – गोर धप्प धप्प, छोट छीन, चन्न चन्न बजैत ओतेक टाक हवेली कें मुखर केने रहैत छलीह! अपन दादा दादी कें तऽ हम सभ देखने नहि छलौं। दादाजी बाबू योगनारायण मल्लिक तँ बड़ पहिने काल कवलित भऽ गेल छलाह किन्तु, दादी सत्यभामा देवी बहुत बाद गेलीह – सुनैत छी दादी अप्रतिम सुन्दरताक रानी छलीह! बड़का बड़का आफिसर भेंट करऽ अबैक तँ हिन्दी जानितो मैथिली मे सभ सँ गप करैत छलीह ! मातृभाषा मैथिली लेल हुनका अभिमान छल!

गाम मे एक बेर महामारी पसरि गेल छल! लोक सभ भागि गेल मुदा दादी गाम नहि छोड़लीह! सभ पीड़ित कें घर घर घुमि सेवा करैत रहलीह। एहि जिद्दक क्रम मे हैजा सँ ग्रस्त भऽ मधेपुरा एलीह आ हमर पैघ बहीन मंजू एक दुई मासक छल – दुनू गोटेक मृत्यु एके संग भऽ गेल! पापाक चाचा छलाह – बाबू नरेन्द्र मल्लिक। हम सभ जहिया हुनका सँ देखने छी विशाल भारी भरकम शरीरक मालिक ताहु सँ विशाल हुनक हृदय छल! दादी विद्यावती मल्लिक साइत मिथिलाक प्रथम महिला ग्रेजुएट छलीह जे कालांतर मे डिस्ट्रिक्ट इन्सपेक्ट्रेस ऑफ स्कूल्स भऽ कऽ रिटायर भेलीह! बाल बच्चा नहि भेलाक कारण अपन छोट बहीन सँ ददाजीक विवाह स्वयं करा देलीह जिनका हम सभ छोटी दादी कहैत छलहुँ।

हमरा सभकें गाम एला सँ समस्त गाम मे उत्साह आ उमंगक ज्वार आबि गेलैक – पापा भाय जी, प्राणरखन पुरहित जी सभ गोटेक संग डुमरा गेलाह आ 12 जून कें ओम्हर सँ हमर सिद्धान्त केने चलि अयलाह! तखन प्राणरखन पुरहित माँ कें गदगद भऽ कहने छलाह – रानी बहुरिया रजनी अहाँक राज करत राज – एतेक संपत्तिक मालकिनी हैत अपन समय मे – बापरे बाप हमर सभक जीप मूंगे पर सँ जाइत छल । एतेक मूंग आ मूंगक भुसेड़ हम सभ कहियो नहि देखने छलहुँ– लक्ष्मी बेटी छी अहाँकें ।

घोघक तर सँ नोरायल आँखि नेने माँ मोने मोन बिहुंसैत छलीह – बेटीक भविष्य लेल आश्वस्त होइत रहलीह।

हमरा बाल्यकाले सँ उपन्यास पढ़बाक हिस्सक छल। पटनाक सोडाफाउन्टेन होटल, एलफिन्सटन आ रीजेन्ट सिनेमाक मध्य आकासक नीचा बड़का हाता मे अवस्थित छल! गेट लग बेला मोगराक माला लय बेचैत रहैत छल – प्रत्येक वयस्क युवती, बाला, माला कीनि अपन अपन केस मे, खोपा मे खोंसि लैत छलीह – मसालदोसा, इडलीक ओहि विख्यात होटल मे छोट सन पुस्तकक एकटा दोकान सेहो छल! – हमर किशोर मोन मे एकटा दाबल-दुबल इच्छा अवश्य नुकायल छल – हमर वियाह ओहि घर मे हो जकरा एकटा पुस्तकक दोकान हो, मसालदोसा केर होटल आ एकटा सिनेमा हाल हो – बस हम तँ भरि जिनगी चैनक बँसुरी बजबैत रहब खुशीक झूला पर झूलैत रहब – ई सभ छोट छोट खुशी, छोट छोट उमंग छल वास्तविकता सँ बड़ दूर।

सिद्धान्त कऽ घुरलाक बाद पापा कहलनि बेटा हम तोहर वियाह एहेन घर मे तँ नहि कऽ सकलहुँ' जाहि ठाम तोहर इच्छाक सभ चीज हो – किन्तु एहेन घर मे अवश्य कयलौं जकरा तीनू चीज खरीदबाक क्षमता छैक! – पापा हमर बातक खियाल एखन धरि मोन मे रखने छलाह जखन कि ''हुनक'' स्वर माधुरी मे हेरायल हमर मोनक लक्ष्य ''हिनकर' सिवाय किछु नहि रहल!

3 जुलाई कें विवाहक दिन आबि गेल! गाम मे अन्न, धान सभ किछु छल, किन्तु विवाह करबा लेल पाइ नहि छल! अपन सर संबंधी सभ मुँह मोड़ि लेलनि! ककरो कोनो उत्साह नहि, प्रसन्नता नहि। पापा पटना आबि अपन कार बेचि देलनि। हमरा जखन ज्ञात भेल जे कार बेचि कें हमर वियाह भऽ रहल अछि तँ हम फूटि फूटि कें कानल छलहुँ। पापा हमरा सांत्वना दैत कहलनि – बेटा ई कार तँ हमरा आइ नहि काल्हि तँ बेचनाइए छल! जहिया सँ पुरना कार बेचि ई खरीदने छलहुँ तहिये सँ जिनगी मे विघ्न बाधा अबैत रहल। आइ अपन अभाग्य खत्म कऽ सौभाग्यक पथ पर डेग रखने छी हम। मोन हमर खिन्न भऽ गेल छल – पापा ककरा लेल की नहि केलनि, कहियो अपन खराब समय लेल पाइ जमा कऽ नहि राखलनि! एतेक धरि जे बड़का भैया यानी वैद्यनाथ वर्मा कें पापा उच्च शिक्षा लेल अमेरीका पठौलनि – ई कहि जे एतबा पैसा तू कमाय कें वापस करिहऽ जाहिसँ परिवारक दोसर सदस्य अमेरीका जाय। फेर ओ कमा कें वापस करत तँ तेसर– ई क्रम बनल रहत तँ एहि परिवारक प्रत्येक सदस्य सहज रूप सँ उच्च शिक्षा लेल अमेरीका चलि जायत! – कतेक सुन्दर योजना पापाक छल– कतेक उद्देश्यपूर्ण– सबहक स्वप्न साकार भऽ सकितैक–!

बड़का भैया चलि गेलाह, पाछाँ सँ लालभाय आ भाभी कें बजा लेलनि। हँऽ एतबा अवश्य केलनि जे पापा हमरो हुनका सभक संग पठएबा लेल कागज पत्तर बनबाय लेलनि! ओहि समय हम छह सात बरीसक होयब ! हमर नानाजी डिस्ट्रीक्ट इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल छलाह। ओ एना हमर जेबाक काल पहुँचि गेलाह कलकत्ता आ हमरा जहाज पर सँ उतारि लेलनि! ओ तमसाय गेलाह एतेक छोट बच्चा कें अहाँ विदेश पठा रहल छी, अपन संस्कृति संस्कार तँ बिसरिए जायत संगे माइयो बाप कें नहि चीन्हत – माँक नोर आ नानाक जिद्दक आगू पापा हारि गेलाह – हम एक कात मे ठाढ़ रहि गेलहुँ – भैया भाभी पानिक जहाज सँ चलि गेलाह।

हम मैट्रिकक तैयारी करैत छलौं। खा पी कें जखन घर शान्त भऽ जाइत छल तँ हम छत पर जा कऽ पढ़ैत छलहुँ। बगल मे डा. रामजी पाण्डेयक घर छल। हुनको छत पर कोनो लड़का पढ़ैत रहैत छल। एहि कारण हम झिरझिरी बला चहरदीवारी पर चद्दर दऽ कें पढ़ैत छलहुँ। ओ हरदम टकटकी लगौने देखैत रहैत छल जाहि कारण हमरा तामस उठि जाइत छल। घरक अशान्त वातावरण मे पढ़ि नहि सकैत छलहुँ तें पापा कहैत छलाह एकाग्रचित भऽ छत पर पढ़ू। एक दुपहरिया पटिया पर बैसि पढ़ि रहल छलौं कि कागजक एकटा पैघ गोला ओहि छत पर सँ हमर सामने धम्म सँ खसि पड़ल। हम बदहवास भऽ गेलहुँ। जिनगी मे कहियो एहेन क्षण नहि आयल छल– हम फुटि-फुटि कानऽ लागलहुँ। तावत कोनो काज सँ दीपक छत पर आयल आ हमरा कनैत देखि उनटे पएर नीचा चलि गेलीह। देखैत देखैत पापा माँ सभ छत पर आबि गेलाह– की भेल रजनी किएक कानि रहल छी। हम हिचकइत आंगुर उठाय ओहि कागजक गोला कें देखेलहुँ– हमरा लगैत छल जेना ओ कोनो सांप थीक जे हमरा ससरि के डँसि लेत– पापा ओहि कागज कें पढ़लनि– हमर जीवनक ओ पहिल प्रेम पत्र छल जे बिन पढ़ल रहि गेल। फेर तँ पापा डाक्टर साहब ओतऽ जाकऽ तामसे की बात कयलनि नहि जानि मुदा ओ लड़का फेर कहियो नहि देखाइ पड़ल।

भागलपुर होइत पापाक पोस्टिंग सहरसा भऽ गेल छल। अपन लोक सँ घर पहिनहि सँ भरल रहैत छल किन्तु एहिठाम अपन गाम घर, अपन सर संबंधी, पापाक गाम बड़गाम, माँक गाम बिहरा करीब करीब सभ पीसी अगल बगल। एकटा लहरि उठैत छल मल्लिक साहबक जमातक। अपन परिवारक अफसर बेटा अपने गाम लग पोस्टिंग हो तँ कतेक गौरवान्वित समाज भऽ जाइत छैक – ई अनुभूत केलहुँ हम सभ।

हजारीबाग सँ चौथा पास कयलाक उपरान्त हम कहियो स्कूलक मुंह नहि देखने रही। पापाक बदली भागलपुर भऽ गेल। नाम लिखेबाक उपक्रम चलैते छल कि पापाक बदली तुरंत सहरसा भऽ गेल। तखन हम मात्र 12–13 बरसक छलहुँ।

आब हमर नाम स्कूल मे लिखेबाक बात छल। मनोहर स्कूल, तत्कालीन जिला स्कूलक प्रिंसिपल छलाह श्री नारायण ठाकुर। ओ पापा कें सलाह देलथिन–किएक नहि रजनीक नामांकन आठवां मे कऽ ली। पता नहि तखन पापाक मोन मे की विचार आएल? ओ सोचलनि कियेक नहि प्राइवेटे सँ मैट्रिकक परीक्षा दिआ दी? पता नहि कखन बदली कतऽ भऽ जाय?

पापा हमरा स्वयं पढ़ौनाय शुरु केलनि। 'आफिस सँ, फोन पर फ्री इंडिया रीडर्स बुक फोर केर प्रश्न उत्तर लिखबथि । घर आबि के हमरा सँ कंठस्थ सुनथि। जें कि हिन्दी अंग्रेज़ी हमर बाल्यकाले सँ पापाक कारण मजबूत छल, प्राय: सभ विषय मे मन लागैत छल गणित छोड़ि। जखन ज्ञात भेल जे गणित आवश्यक नहि अछि हमर उत्साह मे पाँखि लागि गेल। एवरी डे सांइसक न्यूटन, आर्कमिडिज आदिक जतेक सिद्धान्त छल सभटा रटि गेलहुँ, जे आइ धरि हमर स्मृति कक्ष मे अक्षुण्ण अछि। ओहि बीच मे ढेर जगह सँ हमर आबय लागल - फलाँक लड़का, फलाँक लड़का। मल्लिक खानदानक सभ सँ पैघ बेटी हेबाक कारण आकि आफीसरक बेटी हेबा कारण सभक मुँह पर हमर वियाहेक चर्चा। पापाक दृष्टि मे अपना आप के सभ सँ 'अप्पन' सिद्ध साबित करबाक कतेक मनोहरं चेष्टा छल ।

एहि सभ संबंधीक मध्य डाक्टर चाचाक नाम बेसी आयल छल। सभ केओ सहरसा मे हुनका बैद्य जी कहैत छलाह। हम सभ हुनका डाक्टर चाचा। हुनक छोट भाई मनीजर चाचाकें तँ हम जेना सभ सँ दुलारू बेटी छलहुँ- ओ हमरा बिटिया कहैत छलाह ।

बैद्य जी होमियोपैथीक डाक्टर छलाह। हुनक हाथ मे जादू छल। जकरा छुबि दैत छलाह ओ ठीक भऽ जाइत छल। छोट छोट कागजक पुड़िया हुनक अस्त्र-शस्त्र छल रोग भगेबाक। गोर, सुदर्शन चेहरा, उज्जर दाढ़ी, वात्सल्य सँ भरल आँखि आ भव्य व्यक्तित्व। हुनक घरक आगू अमीर, गरीब, एसडीओ, कलक्टर, संतरी सँ मंत्री धरिक भीड़ कतऽ कतऽ सँ आबि जमा रहैत छल ओहि चमत्कारी जादुई पुड़िया लेल। डाक्टर चाचा रामेश्वर बाबू आ मनीजर चाचा कुशेश्वर वर्मा छलाह। मनीजर चाचाक बेटी मुक्तामणि बहीनीक संगे हमर अन्यतम संगिनी छलीह। दूनू भाय कें पापा बड़ आदर सम्मान दैत छलाह। एक दिन बाते बात मे डाक्टर चाचा पापा सँ बजलाह-हमर पितिऔत बहीन कादम्बरी अछि जकर वियाह डुमराक मुखिया बाबू सूर्यनारायण लाल दास सँ भेल छैक। कायस्थ मे एतेक जमीन हेवाक कारण लोक हुनका भूमिहार कहैत छैक। हुनकर बेटा ललन बड़ सुन्दर आ मेधावी अछि। पटना सायंस कालेज मे फिजिक्स आनर्स मे पढ़ि रहल छथि - जें कि लड़का कें विदेश जेबाक छैक तें ओ सभ विवाह करबा लेल उत्सुक छथि। एक बेर रजनी लेल सोचि लहक। पापा माँ सँ

कहलनि, पीसी माँ, दीदीया, नीकी दीदी सभ लग चर्चा केलनि – घर मे बसात बहय लागल। 'ललन' नामक - कोनो लड़काक चर्च होइत छल हमर वियाहक लेल तँ हमरा तामस उठि जाइत छल। ई कोन तरीका छैक। कतौ कहाँ वियाह कय हमरा परिवार सँ बाहर भगएबा लेल सभ केओ माँ पापा कें जिद्द कऽ रहल छथि - एकदम क्षुब्ध हम भऽ जाइत छलहुँ।

खास कऽ एहि बीच एक घटना आओर भऽ गेल छल। सुन्दर भैयाक वियाह भेल तँ नव कनिया मोती भाभी द्विरागमनक बाद सहरसा एलीह। समस्त घर मे एकटा कनिया बहुरिया टाइपक चीज - नम्हर घोघ मे नुकायल चान, गोरनार कोमल काया, पातर पातर हाथ मे जगमगाइत लाहक चूड़ी, हरदम मोटा जकाँ लाजे कठौत भेल रहैत छलीह । बेटी सभक घर मे एकटा कनिया तँ एलीह - जेना समस्त परिवार मे फूलक बरखा भऽ रहल हो। दूई अढ़ाइ बरखक शरद गोल मटोल, गुदगर सन - हम सभ ओकरा बजबैत छलौं - सेन्टू, सेन मेन टू टू मोती भाभी अपन एहि छोट छिन देओर कें राय साहब कहैत छलीह।

ओहि समय कनियाक संग ओकर भाइ जाइत छल। भाभीक संग सत्यप्रकाश आयल छलाह - सुपौल सँ भाभीक संग एलाह - भाभीए जकाँ गोर धप्प धप्प, पैघ दाढी, दाढ़ीक भीतर रूक्ष चेहरा - तँ इएह छी सत्यप्रकाश जकरा सँ हमर वियाहक चर्च सेहो उठैत छल । हमर मन उदास भऽ गेल छल, चेहराक कठोरता देखि। ओहि काल मे परिवार मे जे रसगर संबंध सभ होइत छल ओहि मे हँसी मजाक सभ किछु चलैत छल, एकटा परंपरा जकाँ - आ केओ एकरा खराब नहि मानैत छल।

भाभीक भाइ कें जलखै आदि करेबाक उपरान्त लालदाय, प्रेमजल सभ बहीन पान मे रोशनाइक गोटी चूरि कँ राखि देलक। हमरा सँ बाजल - रजनी, भाभीक भाइ कें पान दय आ।

हम नहि तँ छोट छलौं नहि तँ पैघ, किछु बुझैत नहि रही। पानक तश्तरी लऽ हुनका लग गेलहुँ। ओ बिन किछु बाजने पान उठाय निर्दोष भावें खा लेलनि। हुनक मोनमे कनिको शंका नहि छल जे बहीनीक ननदि सभ हमरा ठकि सकैत अछि।

पान, चिबवैत देरी कि हुनक मुँह कारी भऽ गेलनि - अपन सफलता पर खुश भऽ हम नेना जकाँ थपड़ी पारऽ लागलहुँ- केओ बाजल - ऐना दिऔक ने पाहुन कें- हम जल्दी सँ मोती भाभीक साँठक बक्सा सँ ऐना निकालि हुनक हाथ मे दऽ देलहुँ- सभ भाइ बहीनींक हँसी ठहाका सँ ओ त्रस्त भऽ गेलाह - तामसे माहुर ओ ऐना लऽ कऽ देवार पर जोर सँ फेकि देलनि। काँच टुटि टुटि सौंसे घर मे झहरि गेल। पहिने तँ हम बुझिए नहि सकलौं की भेलैक - मुदा तुरंते हम थपड़ी पाड़ि हँसय लगलहुँ अपने बहीनक ऐना तोड़ि देलहुँ ।

तामसे लाल लाल कठोर चेहरा आ सेहो दाढ़ीक भीतर – हमर आँखि सँ नहि जायत छल – हम माँ लग जाके स्थिर सँ बाजल छलहुँ– माँ एहेन तमसाहा सँ हमर वियाह नहि करब । माँ बड़ दुलार सँ हँसल छलीह, पीसी माँ मनमोहक अन्दाज मे मुस्की दऽ रहल छलीह।

बाल्यवस्था आ युवावस्थाक मध्यक देहरि हम पार कऽ रहल छलहुँ। तन मोन मे होइत प्रक्रिया कें बुझि नहि पबैत छलहुँ । चंचल मदमस्त हँसी मे कतौ किछु अनचिन्हार परिवर्तन भऽ रहल छल। आँखि कहियो फूलक पंखुरी दिस तकैत तँ कहियो बरसैत बून्न कें मुट्ठी मे बान्हि लेबाक छटपटी तँ कहियो हवाक झोंक मे उड़ि कें अकास छुइबाक आकांक्षा – विचित्र वयस होइत अछि ई। की नीक की अधलाह – तन मोन स्वयं संकेत दऽ दैत छैक। हँ, एक नाम छल जे सुनतहि हमर हृदयक तार झंकृत भऽ जाइत छल। केहेन वयस होइत अछि ईहो? हम अल्हड़ बाला जकाँ हँसि दैत छलहुँ– हत्त तेरेकी – ई कोन नवीन कम्पन भऽ रहल अछि? जहिना ककरो मुँह सँ ओ नाम निकलैत छल कि हमर समस्त तन मे एकटा सिहरन, एकटा गुदगुदी जकाँ होमय लगैत छल, बिजली दौड़ऽ लगैत छल। अनघ्रात कली जकाँ स्वयं मे मस्त रहयबाली – स्वयं मे संतुष्ट नहि जानि कोन एहेन वंशीक स्वर हमरा राधा बनाय एहि मर्त्य लोक मे घीचि अनलक! नहि जानि पाताल मे समायल सीता कें रामक दारुण व्यथा – सीते सीतेक स्वर पुनः एहि भुवन लोक मे उतारि गेल । बुझि नहि पाबिं रहल छलहुँ जे ई की भऽ रहल अछि हमरा? मनक लहरि पर वृंदाक गान– दुनियाक छल प्रपंच सँ अनजान। 'ललन' इएह नाम छल जे सुनतहि – देह वीण काँपऽ लगैत छल हमर। खिलखिला उठैत छल रोम रोम, जेना कली सँ पराग झहरि रहल हो। किएक हमर मोन एतेक व्याकुल भऽ जाइत छल ई नाम सुनतहि? एकटा छटपटी होअऽ लगैत छल। किएक लगैत छल केओ दूर सँ हमरा बजा रहल अछि – आ हमर आँखि सँ असहाय जकाँ नोर निकलि पड़ैत छल – **'तुम न जाने किस जहाँ मे खो गए ......'** ई गीत कखनो सुनैत छलहुँ तँ एकटा अव्यक्त बेचैनी सँ व्यथित भऽ जाइत छलहुँ। पापा कहैत छलाह – **'रजनी, ड्यूटी इज ग्रेटर दैन सेन्टीमेन्ट'** ।

भरि घर 'ललन' 'ललन' एहि नामक चर्च छल। सौंसे घर एहि नामसँ सुरभिमय भऽ उठल छल। सभ भाइ बहीन हमरा कचकचाबैत रहैत छल। खास कऽ नूनू भाय, नारायण जी, भाय जी, प्रकाश भैया, अत्तर भैया सभ हमर मजाक उड़ाबथि, हम तमसा कऽ भागि जाइत छलहुँ, हमर हृदय मे सतरंगी सपना करौट लियऽ लगैत छल। जेंकि ने तँ हम हुनका देखने छलहुँ आ ने फोटो देखने छलहुँ तें अपन मोनक शान्ति लेल भगवान रामक प्रतिमाक समक्ष ओहि अनचिन्हार अनदेखल 'ललन' के स्थापित कऽ मोनेमोन पूजा शुरू कऽ देलहुँ। नवम्बर दिसम्बरक मास होयत। हम अंगना मे रौद मे पटिया पर पड़ल छलहुँ– मोने मोन सोचैत रही – एखन जँ ओ आबि जाथि। फेर अपनहि उत्तरो दैत छलहुँ – एखन ओ कोना आयत? ओ पटना मे हम सहरसा मे– कतेक मूर्ख हम छी। किछु सँ किछु सोचैत रहैत छी – अपन अल्हड़ता पर हँसी आबि गेल।

दीदी दीदी – दीपक हमरा झकझोरि रहल छल – अहाँ घरक भीतर जाउ जल्दी, माँ बाजि रहल अछि।

'किएक? हम किएक भीतर जायब – दीदी, पहिने अहाँ भीतर जाउ ने – ओ आयल अछि।

हम जेना सिहरि उठलहुँ – ओ के? ललन – दीपक हड़बड़ाय रहल छलीह, ओ तँ पटना मे अछि– एहिठाम कोना?

हम उठि भीतर कोठरी मे चलि गेलहुँ – किछु नहि फुरा रहल छल – ओ कोना आबि गेल – हम तँ ओहिना सोचैत रही जे 'एखन जे ओ आबि जाय' – कोना आबि गेल – किएक आबि गेल। कतेको प्रश्न मोन मानस कें उद्वेलित कऽ रहल छल– टैगोरक कविता मोन पड़ि गेल – तोमार पदचाप आमि सुनिते .... ई की छल– की पूर्व राग एकरे कहैत छैक – इएह थीक पुरबिल प्रेम? मुदा, ककरो सँ किछु पुछि नहि सकलौं। हवाक झोंक सन मधुगंधी बसात सन ओ आयल – ओ चलि गेल। हम एक झलकी धरि नहि देखि सकलहुँ। कहियो ओ सोचि सकत जे ककरो नान्हि टा हृदयक सिंहासन पर ओ कोना विराजमान भऽ गेल अछि?

पाछां गुलाब, गुलाब जल, प्रेम जल, संगीत सभ सँ ज्ञात भेल जे लड़का छुट्टी मे डुमरा जाइत अछि तँ पहिने सहरसा मे अपन मामा बैद्यजी ओतऽ रूकैत अछि– ब्रेकजर्नी, फेर तीन चारि दिन बाद डुमरा जाइत अछि। छुट्टी मे आयल छल – डाक्टर चाचा कोनो बहाने कामेश्वर काका–कामो काका संग हुनका हमरा ओतऽ पठा देलथिन जाहि सँ माँ पापा सभ लड़का देखि लैथ – आ समस्त परिवार देखलक, माँ पापा बड़ पसन्द केलनि ओहि लड़का कें – किन्तु हमर अभाग हम नहि देखि सकलहुँ– बस हमरा लेल वएह एकटा नाम 'ललन' चिन्हार रहल – **'मेरी आरजू ने कर ली तेरे नाम से सगाई ....'**

हँसी अबैत अछि, जखन एहि नामक चर्च परिवार मे नहि भेल छल तखन प्रकाश भैया, अत्तर भैया, नूनू भैया सभ हम सभ बहीन कें बुचाय बाबू, टुनाय बाबू, मुनाय बाबूक किस्सा कहि कहि हमरा सभकें ड्रामा खेलबा लेल कहैत छलाह। अरूण बनैत छलीह बू बाबू, हम टू बाबू आ लल्ली मू बाबू – वय अनुरूप क्रम पर हमर सभक रोल होइत छल। अथाह संपत्ति हेबाक कारण हिनकर सभक जीवन शैली पर समाज मे तरह–तरह क कथा पिहानी उड़ल छलैक।

पापा एहि सभ बात सँ अनभिज्ञ छलाह जे हम सभ अपना सँ पैघक नकल कऽ नाटक करैत रहैत छी। अफसर पापाक पैघ बेटी हेबाक कारण हमरा समस्त परिवार बड़ मोजर दैत छल। हमर रोब दाब छल। पापाक कान मे हमर सभक बू बाबू, टू बाबू, मू बाबू बनबाक नाटकक भनक पड़ि जेतियैक तऽ सभ पर बज्जर खसि पड़ितैक। हँ, सहरसा मे एकटा भाषा आओर भेटल – गुलाब बात बात मे हाथ नचाय कहथीन-बज्जर खस्सौ गे .... गे माइ एहेन अजगुत। सरिपों हमरा बड़ अजगुत लगैत छल। अपना सँ पैघक उपहास नाटकक माध्यमे ई अनुशासन पापा नहि सीखौने छलाह हमरा – किन्तु, एहि नाटक मे हमर कोनो दोख नहि छल – सभटा पैघ भाइ बहीन सभ मिलि हमरा सभकेँ नाटक करबा लेल उकसाबैत रहैत छलाह। आ स्वयं रस लऽ लऽ केँ नाटक देखैत छलाह। हमर वयस मात्र बारह बरीसक छल। हम की जनैत छलहुँ जे टू बाबूक रोल निबाहैत निबाहैत हम एक दिन स्वयं टुनाई बाबूक पुत्रवधू बनि जायब! भविष्यक गर्भ मे ककरा लेल की नुकायल अछि के जनैत अछि?

सत्तावन ई. क गप छल – मुक्ति यानी कुसुम मैट्रिकक परीक्षा दऽ रहल छलीह। पापा अनुभव प्राप्ति लेल हमरो मैट्रिक परीक्षा मे बैसबा लेल कहलनि। मनोहर हाइ स्कूल सेंटर छल। कुसुम रोज कामो काकाक संग अबैत छलीह आ हमरा जाइत काल पापा अपने सँ कार सँ लऽ जाइत छलाह आ घुरैत काल चपरासी आबि लऽ जाइत छल। बगले मे पापाकेँ क्वार्टर भेटल छल–गौरीशंकर राइस मिल लग।

कुसुम अपन भाइ ललनक बड़ दुलारू छलीह ओ अंतधरि रहलीह। ओ हरदम हुनकर प्रशंसा हमरा लग करैत रहैत छलीह। भैया एतेक सुन्दर छथि, एतेक नीक छथि– गीत गबैत छथि तँ सभ झूमऽ लगैत छथि।

अपन हृदयक गप हुनका हम नहि कहैत छलौं। भय होयत छल, जँ व्यक्त कऽ देब तँ सभ सपना खंड-खंड भऽ जायत। सभ बात हवा मे कपूर जकाँ उड़ि जायत। मोन मे बसल स्वप्निल संसार उपहासक पात्र बनि जायत।

ओहि दिन अंग्रेजीक परीक्षा छल। खत्म भेला पर हम आ कुसुम बहरेलौं – बाहर कामो काका कुसुमकेँ बनगाम रोड लऽ जेबा लेल ठाढ़ छलाह आ हमर चपरासी हमरा। कामो काका पुछऽ लगलाह – केहेन भेलह परीक्षा तोहर रजनी?

हम ठुनकइत बाजलहुँ– ठीके भेल छैक किन्तु ग्रामर मे पाँच अंकक प्रश्न गलत भऽ गेल। बस? कोनो बात नहि।

तावत कुसुम हमरा केहुनी मारैत बजलीह – फुसफुसाइत – बगल मे हमर भैया छथि कतेक सुन्दर छथि देखि लैह।

हम एकदम अकचका गेलहुँ, लाजे कठौत। हमरा आइयो स्मरण अछि – हम उज्जर उज्जर सलवार सूट दुपट्टा मे छलहुँ। सलवारक ऊपर सँ मोजा चढ़ेने छलहुँ। ताहि पर कारी बूट पहिरने छलहुँ। पापाक बेटा हेबाक कारण हमर केस कान तक तऽ नहि किन्तु कान सँ कनिए नीचा धरि कटल छल – आखिर ओहि जमानाक अफसरक बेटी छलहुँ। रोब-दाब सँ भरल। हँ, सहरसा छल तेँ सलवार सूट। नहि तऽ सभ दिन पैंट शर्ट आ स्कर्ट मे रहैत छलहुँ।

कुसुमक बात सुनतहि हमर बकार बन्न भऽ गेल। कतेक बात कका पुछलाह, मुँह सँ खाली हूँ, हँ निकलैत छल। परीक्षा खतम हएबाक भीड़ मे हम धियानो नहि देलहुँ जे ककाक बगल मे केओ आओरो छथि। हमर धियान, हमर पूजा सभ किछु हमर सामने छल किन्तु हमर दृष्टि उठि नहि रहल छल। पार्वतीक सामने साक्षात् शिव। कुसुम हमरा चुपचाप चुट्टी काटि हुनका देखबा लेल कहि रहल छलीह– कैम्पस सँ बाहर आबि जखन ठाढ़ भेलहुँ विदा होयबाक लेल तखन निमिष मात्र लेल हमर दृष्टि उठल, मिलल आ झुकि गेल।

मुस्काइत चेहरा, स्वप्निल आँखि, औंठिया केसक एकटा लट ललाट पर खसल जेना भौंरा मकरंद पान कऽ रहल हो– श्वेत धोती कुरता मे आवेष्टित।

कुसुम पश्चिम दिस चलि गेलीह। हम चपरासी संग पूब दिस।

राति भरि नीन्न नहि आयल ओ मोहक दृष्टि, मुस्काइत चेहरा, सुदर्शन व्यक्तित्व– इएह पहिचान छल ओहि अनचीन्हार व्यक्तिक, चीन्हार नामक।

जनैत छलहुँ दोसर दिन परीक्षा मे कुसुम अवश्य पुछतीह – केहेन लागलऽ हमर भैया? ठीके ओ पुछलीह आ उत्तर हम पहिनहि सोचि के राखने छलहुँ– केहन लगताह– एकदम देहाती। धोती कुरता – छी: छी: – हम तँ सूट-बूट टाइ छोड़ि किछु सोचिते नहि छी – हम बाजलौं।

क्षण मात्र लेल कुसुम कनेक उदास भेलीह मुदा तुरंते बाजलीह– सूट-बूटक तों की बात करैत छहक कुसुम? पटना मे तँ ओ भरि दिन सूटे बूट मे रहैत छथि – हे कुसुम ओ सुतबो करैत छथि तँ फुलपैंटे मे –कुसुमो बेदरा छलीह हम तँ आओरो बेदरा। हमरा सभ लेल इएह बेदरमता आदर्श छल। ओना हमर बात सुनि ओ कनिक उदास भऽ गेल छलीह, कनिक निराश – परीक्षाक बाद हमरा समझाबैत रहलीह – हमर भैया कतेक सौखीन छथि, हरदम सेंट इत्र मे डूबल – कतेक कोमल कतेक स्नेही।

कुसुमक गप्प सँ बुझलहुँ जे डाक्टर चाचा आ कामो काकाक ई योजना छल जे लड़का केँ कोनो बहाने लड़की देखा देल जाय। जा धरि लड़की किछु बुझतीह

कुसुम बजलीह- ओ तऽ गाम चलि गेलाह- खाली लड़की देखयबा लेल हुनका रोकल गेल छलैक।

हमरा देखि हुनकर की प्रतिक्रिया भेल ई हम चाहितो कुसुम सँ नहि पुछि सकलहुँ। दर्पण मे जखन अपन परछाही देखैत छलहुँ तँ अन्तरक उदासी पलकक कोर पर थरथरा जाइत छल।

अचक्के परिवार मे प्रबल प्रभंजन आयल जकर वेग मे तिनका समान उड़ैत हम सभ पटना पहुँचि गेल छलहुँ । पटना अबैत काल लल्लू काका ट्रेन पर माँक कान मे फुसफुसाय रहल छलाह - ई कथा नहि छोड़ब। लड़का सुन्नर अछि, होनहार अछि- पटना जाइत छी तँ की होयत, अहाँ पटना सँ टुनाई बाबू सभ सँ सम्पर्क राखब। आ फेर हम सभ तँ छीहे। फेर माँ फुसफुसाय लगलीह - एतेक आराम मे, सुख मे रजनीक जन्म भेल छैक। कोना रहत गृहस्थ घर मे, गामक मोट रहन सहन मे। हमर मोन नहि मानैत अछि ।

माँ आ ककाक खुसुर फुसुर हमर कान मे पड़ि रहल छल, मुदा, परिस्थितिक झंझाबात मे हमर उड़ैत मोन क्षत विक्षत भऽ धरती पर खसि पड़ल छल- बड़ सोचि रहल छह हृदय। हमर धियान टूटल। मीना जकरा सँ हृदय लगौने छलहुँ से आबि हमर ध्यान तोड़ि देलक। की बात थीक? वियाहक गुदगुदी भऽ रहल छह ?

संपूर्ण गाम मे उत्साह छल जे डिप्टी साहबक बेटीक वियाह थीक टुनाई बाबू मुखिया जीक बेटा सँ! गामक कोना-कोना मे अनघोल मचल छल! ब्राह्मण आ कायस्थक एहि विशाल बस्ती मे जातिपातिक नामो निसान नहि छल। एक जुलाइ कें हमरा कासा लागल। मटिकोर लेल धारक कात भगवतीक मन्दिर गेलहुँ! लगैत छल जेना साक्षात भगवती-मंगलमयी मुद्रा मे हमरा आशीष दऽ रहल छथि - सुनू सीय सत्य असीस हमारी.... धारक बहैत निर्मल जल ताहि पर हवाक वेग पर किलोल करैत छोट छोट उर्मि जेना हमर हृदयके अनगिन खुशी कें साकार कऽ रहल छल।

पीसी माँ, दीदीया, बड़का माँ बाबूजी, लालदाय शशि बहीन सभ पहुँचि गेलाह! अंगनाक एक कोन मे ढेकी मे स्त्रीगण चाउर लेल धान कुटि रहल छली तँ दोसर कोन मे उखरि समाठ सँ चूड़ा! जाँत पर लगनीक संग-संग दालि दररल जा रहल छल तँ बड़ी लेल बेसन पिसा रहल छल- कखनो गोसाँइक गीत- कखनो कुमारि तँ कखनो झूमरि पर रागक आरोह अवरोह लहालोट होइत छल ! लाल पीअर धोती-नुआ अंगना मे सूखि रहल छल तँ नौआ-नौआइनक चाल, कुम्हैनक अहिबात पुरहरि-मटकूरी कऽ ढेर संग वातावरण उत्साहित छल! गामक सभ छौंड़ा-छौंड़ी मड़बा सजएबा मे संलग्न, रंग-विरंगी साड़ी सभ टांगल जा रहल छल तँ कागजक

रंग-विरंगी माला तैयार भऽ रहल छल। सभ एक दोसरा सँ हँसी मजाक कऽ राति-राति भरि पेट्रोमैक्सक इज्जोत मे काज कऽ रहल छलाह! ताहि पर सँ अषाढ़क ताप-लगैत छल जेना दिनकर भगवान सभ कें खाली तप्त होयबाक, दग्ध होयबाक आशीर्वाद दऽ रहल छथि- अंगनाक कोनो कोन सँ गीतक स्वर उठैत छल- जेठ अषाढ़क रौद मताउन धीया मोरा जेती मुरझाय।

वियाहक, दूइ दिन मध्य दुइ टा अचरजक गप्प भऽ गेल। हमर सभक हवेलीक पाछाँ बड़का बाड़ी छल जाहि मे आम, लताम करुणा आदिक नाना प्रकारक गाछ बीरीछ लता गुल्म भरल छल! एकटा आमक गाछ छल दुधम्मा जकरा खाली दूधे सँ पटायल जाइत छल। कतबो गरम दूध मे आम गारि देल जाइत छल लेकिन दूध फाटैत नहि छल-

ओहि बाड़ी मे अजगर दम्पत्ति रहैत छल जे मल्लिक खानदानक सौभाग्य चिन्ह मानल जाइत छल! अति वृद्ध होयबाक कारण एकटाक मृत्यु भऽ गेल छलैक आ एकटा जीवित छल- सभ कहैत छल जे वियाह सँ एक राति पहिने ओ सौंसे हवेलीक कोठरी सभ मे घुमि जाइत अछि आ बाड़ी मे चलि जाइत अछि! नित्य कर्म लेल हमरा सभकें बाड़ीए जाय पड़ैत छल किन्तु हमरा सभ कें राति बिराति कहियो कोनो भय वा डर नहि भेल।

दोसर अचरज तँ एहेन भेल जे सरिपों हम सभ डरि गेल छलौं! वियाहक दिन कनि कनि बून्न पड़ि रहल छल कि अचक्के हरहरा साँपक पतौड़ पर पतौड़ अंगना मे खसि पड़ल बून्नक संगे संग - हम सभ देखि रहल छलौं जे आकाश सँ हरिहर पत्ताक दोना सभ खसऽ लागल जे खसितहि साँप बनि छिरिआइ गेल - जे जतय छल ओतहि ठाढ़ भऽ गेल - धबौली वाला आ जगदीश बाजऽ लागल - डरा नहि तों सभ निचिन सँ रह। किछु नहि होयत। ई सभ शुभ संकेत थीक- सभ गौंआ शांत छल।

कनिए काल मे सभटा साँप लाइन मे लागि अंगना सँ बाहर जाय बला नाली सँ ससरि ससरि निकलि गेल - विचित्र रोमांचक दृश्य छल - हम सभ ने तेँ कहियो एतेक साँप एके ठाम देखने रही ने तेँ साँप मे एतेक अनुशासन। पापा-माँ परिवारक सभ सदस्य सम्मोहित भऽ ठाढ़ छलाह - भगवानक वरदान थीक, भोला बाबाक आशीर्वाद - रजनी कें आशीर्वाद देबाक लेल सभ भऽ रहल छैक।

बड़गाम जएबा सँ पहिने पटना मे भगवती स्थान प्रणाम करबा लेल गेल छलौं! बसन्त पंचमीक दिन छल। हमर माथ मे संगी साथीक लगाओल अबीर लागल छल! भगवती कें प्रणाम करबाक बाद पुजारी जी कें प्रणाम केलहुँ तँ बड़ प्रेमसँ माथ पर हाथ राखि आशीष देलनि- सदा सुहागिन रहू - माँ हड़बड़ाय गेलीह - पंडितजी एखन एकर वियाह नहि भेल छैक ।

पंडित जी हँसय लगलाह – कोनो बात नहि, नहि भेल छैक तँ जल्दीए भऽ जेतैक– तखन भगवती कें हम एतबे कहने छलहुँ– माँ जँ विवाह हो तँ हिनके सँ नहि तें कहियो नहि– भगवती हमर सभक अभिभावक छलीह। आ तकर ठीक पाँच मास बादे हमर वियाह भऽ रहल छल – ई शिवशक्तिक आशीर्वाद तँ छल–

एम्हर हमर माथ मे अलग सँ तीन–चारि टा ग्रामीण महिला लागल रहैत छलीह – एकोटा ढील केस मे रहि जेतैक तँ ओकरो सिन्दुर दान भऽ जेतैक। फेर ओ कहियो केस सँ नहि बहरायत– विचित्र–विचित्र गप्प–कासाक संग अलग सँ सेहो हमरा उबटन लगाओल जाइत छल जे रंग साफ भऽ जाय! बाल्यकाले सँ हमरा मे हीन भावना छल जे हम गोर नहि छी! माँ सँ खूब चौल करैत छलहुँ जेना अल्लू उसनि छीलि देल जाइत अछि तहिना अहाँ किएक ने हमर जनमक बाद हमरा छीलि देलहुँ – माँ हँसैत रहैत छलीह आ हम झुझुआइ जाइत छलहुँ।

जखन पापा भागलपुर मे पोस्टेड छलाह तखन **'माया'** पत्रिका मे एकटा विज्ञापन निकलल छल, ''छह मास मे एँड़ी धरि केस भऽ जायत आ श्यामल सँ श्यामल त्वचा गोर सेहो भऽ जायत केसर तेल सँ '' केसक लेल अलकपरी आ रंगक लेल केसर। हमरा तँ जेना अनमोल खजाना भेटि गेल छल– केसो नम्हर भऽ जायत रंग सेहो गोर नार – हम पापा कें विज्ञापन देखेलहुँ। पहिने तँ पापा हमर श्यामल रंगक खूब प्रशंसा करऽ लगलाह पाछाँ हमरा कननमुँह देखि तुरंत '' ''व्यवस्थापिका, अलकपरी नया कटरा, इलाहाबाद' कें तेल पठएबा लेल पत्र देलन्हि।

आ हम एहि अमूल्य धन कें नुका कें राखैत छलहुँ कोनो बहीनीक दृष्टि नहि पड़ि जाय। छह मास बीति गेल, पापाक बदली सहरसा भऽ गेल ! हमर केस एँड़ी धरि तँ दूर डाँड़ोधरि नहि पहुँचल। हँ सघन अवश्य भऽ गेल छल। रंग कतेक गोर भऽ गेल ई नहि बुझलहुँ आइ सभटा मोन पड़ि रहल छल– बड़गाम मे सभक घर मे अन्न धन परिपूर्ण छल आ हृदय मे गामक पंडित, विद्वान, गवैया पहलवान आदिक अभिमान छल। सभ सँ पैघ बात जे सुदूर अतीत सँ बड़गाँव 'ब' अक्षर सँ प्रारम्भ होमऽवाला बारह गाम मे अग्रगण्य रहल। कहल जाइत अछि जे हमर परदादा बाबू नयनमणि मल्लिक बनैली महाराजक मैनेजर छलाह। किछु मोन नञि अछि साइत कोनो बात पर कहल गेल– जे नयनमणि मल्लिकक सिर काटि कें आनत तिनका कतेक हजार टाका ईनाम मे देल जायत। परदादा जाहि घर मे सुतैत रहथीन देवार पर तलवार सभ टांगल रहैत छल। पापाक ममहर छल धरहरा संत मेंही दास हमर सभक बाबा लगैत छलाह। कुप्पा घाट मे पापा यदा–कदा हुनका सँ भेंट करबा लेल जायत छलाह। हमहूँ भेंट करबा लेल गेल छलहुँ कुप्पा घाट। गाम मे खिस्सा सुनैत छलहुँ जे डकैत गाम मे डकैती करबा लेल अबैत छल तँ पहिने गामक मुखिया कें पत्र लिखि सूचित करैत

छल। बड़गाम मे चिट्ठी आएल तँ गाम सँ बाहर गाछी मे ओकर सभक खएबा–पीबाक इंतजाम होइत छल। ओ सभ नून देल कोनो चीज नहि खाइत छल। बड़गाँव वासी दही मे नोन दऽ पौरि देलक। ओ सभ चूड़ा दही चीनी खेलक– दही मे नोन खाय बाजल– आब हम सभ एहिगाम मे डकैती नहि करब। नोन खा नेने छी सरियत देबय पड़त। तहिया सँ गाम मे डकैती नहि भेल।

हमर सभक घर कें हवेली कहल जाइत छल। दलान बड़का बरण्डा, एक दिस एकटा छोट छीन कोठरी जे कालांतर मे गेस्ट रूमक संगे पोस्ट आफिस, लाइब्रेरी बनैत गेल। आगू मे बड़का विस्तृत कम्पाउण्ड। पापा कहैत छलाह जखन हम 4–5 बरीसक छलहुँ तँ एक बेर गाम गेल रही– हम अचक्के घर सँ गायब भऽ गेल छलहुँ। चारू दिस खोज होमऽ लागल–रजी कतऽ गेल आ तखन सभ हमरा खोजि अनलक, हम मानिक बाबा, जे हमर घरक मैनेजर नौकर सभ किछु छलाह– हुनका संग मडुआक रोटी आ नोन खाइत छलहुँ। गंगेश पंडितजी हमरा डँटैत अनलनि– लोक की कहतैक डिप्टी साहेबक बेटी मडुआ रोटी खाइत छैक– किन्तु, पापाक आत्मा मे तँ बड़गाम बसैत छल– कहलनि की हेतैक खेलकैक तँ? ई हमर पापाक हृदय छल जाहि मे प्रतिबिंबित होइत गामक लोक सभ। बड़गाम एकटा एहेन पावन पवित्र तीर्थ स्थल अछि जाहि ठाम खाली मानव रहैत अछि–मानवता सँ ओतप्रोत। ने केओ ब्राह्मण आ ने केओ कायस्थ। समस्त गाम एकट्ठा दिआद जकाँ अछि। चन्दा झाक बड़गाम– वाचस्पति मिश्रक बड़गाम। सरस्वतीक असीम कृपा सँ बड़गाम मे विद्याक देवी जन जन मे साकार छथि। कल–कल छल–छल स्फटिक सन स्वच्छ धारक कात मे बसल ई गाम– जाहिठाम कात मे भगवतीक मन्दिर– आस्था विश्वास बटैत–हम एहि गामक बेटी छी। ई हमरा लेल सौभाग्य आ गौरव केर बात थीक। ओहिनो कर्ण कायस्थक आफिसरक मध्य बाबू ब्रजेश्वर मल्लिकक नाम सभ जाति आदरसँ लैत छथि। पापा ककरा ने नौकरी दियौलनि ककरा लेल की नै कयलनि। एहिना इंजीनियर बाबू हरिवंश लालदासक नाम लोक आदरसँ लैत अछि जे कतेक गोटेंकें ओ नोकरी दियौलनि।

पापाकें गाममे लोक डिप्टी साहब कहैत छल। पापा हमरा सभ कें कहियो अपन गाम नहि बिसरऽ देलन्हि। चूँकि पापाक वियाहक बाद ओहि खानदान मे ज्येष्ठ हेवाक नाते हमरे वियाह भेल छल। ओहि समय हम अपन गामकें प्रेम–भाव एक दोसराक प्रति देखने छलहुँ। हमर वियाहक लेल समस्त गाम उन्मादित छल। हम सभ पटना मे रहैत छलहुँ मात्र हमर वियाहक कारण पापा गाम आयल छलाह – बरियाती सभ जखन वियाहक बाद विदा भऽ गेलाह तँ हर्षोल्लास मे डूबल समस्त गाम जेना वेदीक धुइयाँ सँ मातल सुति रहल– कहल जाइत छैक जेहेन मरजाद हमर विवाह मे

भेल छल ओहेन कत्तौ नहि देखल गेल छल। बिहारक प्रसिद्ध मच्छर बैंड पार्टी मुजफ्फरपुर सँ बरियाती अनने छल, संगे पं. रघु झा कें। एम्हर सँ हमर गुरु पं. बलराम झा रहथि आ बड़गामक विशिष्ट विद्वान लोकनि! शास्त्रीय संगीत दुनू दिस सँ चलैत रहल, संगे हास-परिहास, सवालक जवाब- राति भरि लोक मर्यादक आनन्द नेने छल-

8 जुलाई कें हमर चतुर्थी छल - हमर कोहबर नव नवेली कनियाँ। मोती भाभी लिखने छलीह ! ओ कोहबर ओहि भग्न देवार पर आइयो अपन अनुपम छटाक संग भाभीक (डा० मोती वर्मा) अनुपम कौशल आ हमर सभक मिलनक मूक गाथा बाजि रहल अछि!

वियाहक तीन दिन बीति गेल- हमर सभक मिलन नञि भेल। अंत मे चतुर्थीक राति भेंट तखन भेल जखन रात्रिक एक दुइ बजैत होयत। हमरा केओ कोहबर घर मे धकेलि बाहर सँ जिंजीर चढ़ा देलक। हम घोघ घाघ मे मोटरी बनल बैसल छलहुँ- लैंपक इजोत एक कोने कें भरि रहल छल। आस्ते सँ उठि केवाड़ भीतर सँ बंद कऽ लेलनि। आ हमर सामने नीचे मे बिछान छल ओहि पर पेटकुनिया दय सुति गेलाह। हम बैसल छलहुँ- ई आस्ते सँ सुतले सुतल हमर घोघ कनिए हँटाए देलनि आ फेर हमरा देखि गीत गेनाए शुरु केलनि- **'सखी यह साधों की रात नहीं सोने की, प्रतीक्षा करते इस रजनी की वज्र कठिन सम दिन बीते...'** ई गाबि रहल छलाह प्रेम विभोर भऽ हम लाज सँ मरल जाइत छलौं जे बाहर बरंडा मे संदूक पर भाई जी सूतल छथि- सुनैत हेताह- छी छी- की कहताह- नहि तँ हिनका सँ बाजि सकैत छलहुँ आ नहि तँ स्वर लहरी कें बाहर जएबा सँ रोकि सकैत छलहुँ- गीत कम्पित होइत रहल- हमर मुँह उठौलनि कि बाहर सँ खट-खट केओ केबाड़ खोलबा लेल कहलक- भिनसर भऽ गेल छल- घर मे सभकें उठबा सँ पहिने हमरा निकलि जएबाक छल। हम छटपटा कें उठलहुँ। केबाड़ि खोलि बाहर निकलि गेलहुँ- गायक महोदयक मुँह अपने सन रहि गेल- वियाह सँ पहिनहि सँ गबैत रहलाह आइयो गबिते समय बीति गेल ।

ओ समय छल जखन मिथिला मे वियाह सँ भारी विध होइत छल- चतुर्थीक उपरान्त फेर हमर दनही सेहो भेल- गामक शस्य श्यामल अषाढ़ी धरा-आकासक मध्य सभ विध मनोहारी लगैत छल।

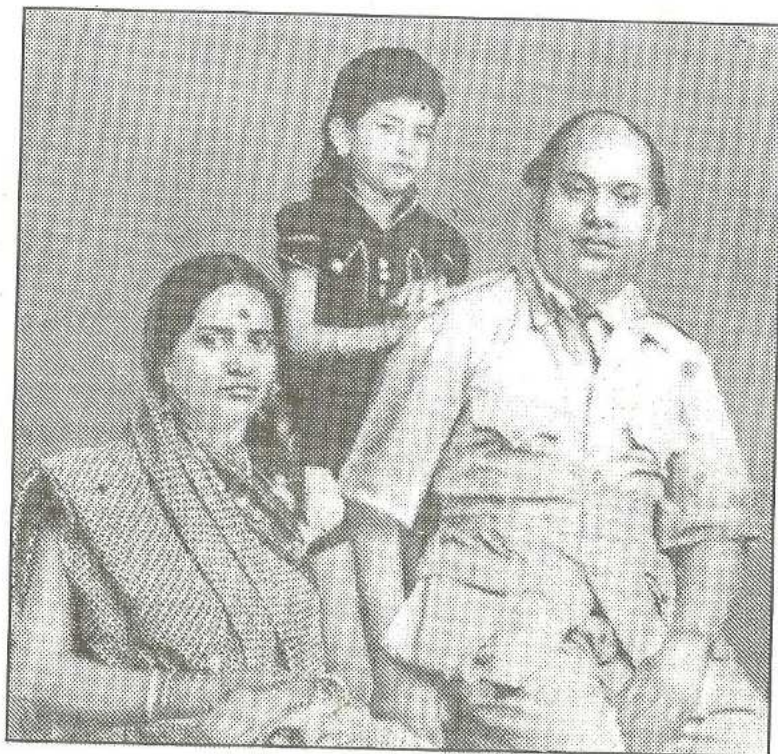
दनहीक प्राते हम सभ गाम सँ विदा भऽ गेलहुँ। एकटा ट्रक, एकटा जीप-बर सँ लऽ कऽ समस्त सराती। गामं उखड़ि गेल अबैत काल। वर कें विदा कयल गेल। खरिहानक देवार पर हम चित्ती कौड़ी साटलहुँ- बरक कुरताक पीठ पर रंगल तरहथक

थाप देलहुँ- सभटा मुड़ी निघुरौने। विधकरी भरि पाँज पकड़ने हाथ उठवाय सभटा विध करबैत छलीह .... वियाह सँ चतुर्थी धरि नोन नहि खेने छलहुँ- ई रिवाज छल। हम वास्तव मे कमजोरी सँ लुंज-पुंज भऽ गेल छलहुँ। वियाहक राति मड़वो पर जे बैसलहुँ तँ विधकरीक देह पर औंघाइते रहलहुँ। सिन्दुरदान होइत-होइत भोर भऽ गेल छल......।

जखन हम सभ मधेपुरा पहुँचय पर छलहुँ कि बीच मैदान मे जीप खराब भऽ गेल। जीप मे ई रहबे करथि, माँ पापा सभ सेहो। ट्रको रोकि देल गेल, संग जाय लेल। लालदाय, शशि बहीन- सभ केओ एकटा झुण्ड बनाय मैदान मे एक कात ठाढ़ भऽ- पाहुन एकटा गीत सुना दियऽ- एहि मे समय बीत जायत- जीपो ठीक भऽ जायत- हिनका तँ मोनक बात भऽ गेलैक- शुरु भऽ गेलाह- **''गोरी तेरे नैना है जादू भरे, भोले भाले मद के प्याले.....''** हम तँ लाज सँ लालदायक पाछू नुका गेल रही-ई हमरा दिस ताकि-ताकि हाव भावक संग मस्ती मे गाबि रहल छलाह- फेर मधेपुरा मे बड़का माँ बाबूजी सँ भेंट कऽ ओ अपन खवास अगहनाक संग डुमरा चलि गेलाह- बड़गाम मे हमर कोहबर घरक कोन मे एकटा प्राचीन तिजोरी राखल छल जकर चाभी छोटकी दादीक आंचरक खूँट मे बान्हल रहैत छल! पापाक विवाहक बाद हमर विवाह भेल छल तँ दादी ओ तिजोरी खोललीह! पापा परिवारक प्रत्येक सदस्य कें बजौलनि अपन वंशक धरोहरिक अनुपम कलाकृति सभकें देखबा लेल।

पहिने तँ चानीक समानक भरमार निकलल! कोनो चीज मलिन नहि छल, लगैत छल जेना एखने कीनल गेल हो! चानीक बड़का पनबट्टा, छोटका पनबट्टा बड़का माँछ, छोटका माँछ, छोट-छोट छिपली, बाटी, छल्ला, हँसुली हाथक पएरक कंगना पाजेब, कानक- की की नहि छल।

कतेक प्रकारक सोनाक जेवर जात - कानक झुमका, गलाक चन्द्रहार, की नहि छल किन्तु हमर दृष्टि तँ कोनो वस्तु पर नहि छल- इन नैनन मे श्याम बसे- फेर संदूक खोलल गेल। विचित्र विचित्र बरतन, बड़का बड़का परात, छप्पन प्रकारक व्यंजन लेल छप्पन प्रकारक कटोरी आदि- एहि सभ मे छप्पन प्रकारक भोजन जमाइ कें खुओल जाइत छल- सभक आँखि जगमगाय गेल छल आ पापा सभक चेहरा कें गर्व भरल दृष्टि सँ पढ़ि रहल छलाह- देखू ई सभ थीक हमर पुरखाक निसानी -। कतेक सपना अतीतक चैनल बदलि-बदलि अबैत अछि।



पिता स्व० ब्रजेश्वर मल्लिक आ माता स्वर्गीया अन्नपूर्णा मल्लिक संग बालिका शेफालिका उर्फ रजनी

नैहराक मुँह आब देखबै कहिया

केकरो चिन्तन सभसँ पैघ समाधि थीक! मानवक समस्त इन्द्रिय एके बिन्दु पर केन्द्रित भऽ जाइत छैक- चालीस आदमीक परिवार मे हम प्रथम पुतौह छलहुँ! ओहि समय पटना सँ सहरसा लेल कोनो ट्रेन नहि छल। हम महेन्द्रू घाट मे स्टीमर पर बैसैत छलहुँ आ गंगाक पार पहलेजा घाट उतरैत छलहुँ ! ओतऽ सँ घाट वाली गाड़ी सँ सहरसा जाइत छलहुँ ! ओहि ट्रेन कें घटही गाड़ी कहल जाइत छल-

द्विरागमन कराबय काका जी क संग मोहन जी आ रमण जी दूनू भाइ आएल छलाह! ओहि समय दुनू भाइक बयस करीब 7 साल एवं 5 साल होयत! एहि घटही गाड़ी मे हमरा दूनू गोटे लेल फर्स्ट क्लासक डिब्बा रिजर्व छल आर सभ केओ सेकेण्ड क्लास मे! रातुक अंधकार मे फर्स्ट क्लास मे मात्र हम दूनू गोटे छलहुँ - असगर हिनका साथ डरो होइत छल आ खराबो लगैत छल -की सोचताह कका जी सभ? छोट-छोट दुनूटा दीअर हुनको सभ कें बजाय लियऽ ने, नीक लागत -हम हिनका कहलहुँ। ई हमरा बड़ प्रेम सँ बुझेलनि- देखू, ई डिब्बा ककाजी स्वयं रिजर्व करेने छथि! अहाँ हुनका सामने कतेक देर घोघ तानतौं - एतेक नम्हर यात्रा -ठीके बजैत छलाह! स्टीमर पर तीन चारि घंटा घोघ तनने, मुड़ी निघुरौने डाँड़ टुटि गेल छल। एखन कम सँ कम स्वतंत्र भऽ गप्प तँ कऽ रहल छी। हृदयक अन्तरतम मे सासुरक भय समाओल छल। पूरा हल्ला छल- पढ़ल लिखल कनियाँ आबि रहल अछि- यानी ओहि समय मैट्रिक पास कें पढ़ल लिखल मानल जाइत छलैक! पता नञि कोना हुनका सभकें खुश करब- फेर संस्कार जागल- की हेतैक अपन मोन कें मारि हुनकर सभक मन मे समेबाक कोशिश करब- आब हमर मोने की- पतिक प्यार, हुनकर समस्त परिवारक प्यार-आँखि मे नाचऽ लागल माँ पापाक नोर भरल आँखि। जखन बियाह होइत छल तँ गामे मे हमर संगी हृदय सीखबैत छलीह जे सासुर जाय लागबऽ तँ जोर जोर सँ कानीहऽ-गे माँ, गे माइ, गे तोरा बिना कोना रहबौ गे माइ।

आ एहि तरह कतेक फकड़ा कागजक एकटा पन्ना मे लिखि हमर बाकस मे राखि देने छलीह! हमरा हँसी आबि गेल छल- हम आइ धरि ककरो सासुर जाइत नञि देखने छलहुँ जे जानितहुँ कोना कानल जाइत छैक- की वियाहक एकटा बिध इहो छल? किन्तु, द्विरागमन सँ तीन-चारि दिन पहिने सँ घर मे सभ कननाइ शुरू कऽ

देने छल। साँठ मे नुआ आंगी राखैत- कतऽ जा रहल अछि रजनी- कोना रहत ओहि देहात मे- हम जा रहल छी ई दुख कम, मुदा ओहि देहात मे मोट रहन-सहन मे हम रहब तँ कोना- हमरो आँखि मे सदिखन नोर रहैत छल- एकटा उदासी जेना अन्तरतम कें जकड़ि नेने छल, मुदा जखन दुरागमनक बेर आएल, भोरे सँ सभ कानि रहल छल! महंथ मामा हमरा पकड़ि हिचकि-हिचकि कानय लगलाह! हमहूँ जोर जोर सँ कानैत छलहुँ- तावत हमर पापा अयलाह - कनैत बजलाह- रजनी नहि कानह बेटा! तखन तँ हम पागल भऽ गेलहुँ। पापा कें भरि पाँज पकड़ि कए चिकरऽ लगलहुँ पापा-माँ-पापा- फेर माँ गे माँ- सभ के पकड़ि चिकरि रहल छलहुँ ! हम नहि जनैत छलहुँ जे हम कोना कानि रहल छलहुँ- ओहि काल मे हरिमोहन झा चाचा जी एवं चाची सभ छलीह- रत्ना कनैत छलीह जे हिनकर चालि कें देवानन्दक चालि कहैत विहुसैत रहैत छलीह- संगे छोटकी रमा- कहियो अपन बहीन सँ कम नहि बुझने छलहुँ हम रत्ना रमाकें- सभ कनैत बजैत छल- गाड़ी मे कनैत रहलहुँ, स्टीमर पर कनैत रहलहुँ, ट्रेनो मे हिचकी लैत रहलहुँ- आखिर हम जा कतऽ रहल छी, कोन गाम मे, कोन गृहस्थ घर मे, अनचीन्हार लोक, अनजान परिवेश खाली पति टा जानल पहिचानल- हम तँ गाम ठीक सँ देखनइयों नञि छलहुँ कहियो। अपने वियाह मे बड़गाम मे एतेक दिन रहलहुँ किन्तु, ओहि ठाम तँ हम गामक बेटी रही अल्हड़, चंचल-स्वतंत्र चिड़ै जकाँ- मुदा की डुमरा मे? परदाक पाछू, घोघ मध्य तर - मोने मोन पापा माँ जकाँ हमरो छह पाँच होइत रहल- आस्था अनास्थाक मध्य डोलैत रहल मोन- की हम सासुर मे सभक हृदय जीति सकब? कतेको प्रकारक प्रश्न उठैत छल-वियाह भेनाइ कोनो पैघ बात नहि थीक। वियाह दूइ व्यक्तिक मिलन नहि वरण दूइ परिवारक मिलन होइत अछि खास कऽ बेटी सभ लेल-अपन नैहर कें बिसरि सासुरक प्रत्येक सदस्यक संग एक तान, एक साँस भऽ गेनाइ ओकर सार्थकता होइत अछि। एतवे कम आयु मे पापा, माँ, नानी आ हमर साहित्य संसार ढेरो शिक्षा हमरा दऽ देने छल! मार्ग कठिन छल, आगि सँ घेरल कंटकाकीर्ण किन्तु भविष्यक प्रति आशान्वित अवश्य छलहुँ। एतेक आत्मविश्वास हमर पापा हमरा मे भरि देने छलाह जे हम जे ठानि लैत छलहुँ ओ अवश्य पूरा करैत छलहुँ। जे ओहिठाम सभ देहाती छथि तँ हमहूँ देहातिन बनि जायब! जहिना ओ सभ रहैत हेताह हमहूँ ओहिना रहब मुदा अपन सासु ससुर सभकें अवश्य खुश राखब! नानी बजैत छलीह- गे मुन्नी, तोरा अगर केओ दबारतौ बाजतौ तँ उलटि कें जबाब नहि दीहें। केकरो बाजबा सँ देह मे भूर नहि भऽ जाइत छैक। सीखबाक कोशिश करिहें जे कोन बात पर बजलाह। ओ गलती नहि दोहराबिहें- धी मारी पुतौह लियऽ तरास- यानी बेटी के कोनो बात पर बाजथीन मारथीन तँ बुझिलीहे तोरा कहियो एहेन कोनो काज नहि केनाय छौक। तखन मोनमे ज्वार उठल छल- एहेन कोन चीज अछि जकर त्याग हम नहि कऽ सकैत छी! यदि

हमर कनिक समर्पण सँ परिवार खुश भऽ जाय तँ ओ कनिक समर्पण हम लाख-लाख बेर करय चाहब। पापा माँक नोर पोछने रही- कहियो अहाँ सभक माथ नहि झुकऽ देब पापा।

हम सभ सहरसा स्टेशन पर उतरि गेलहुँ! प्लेटफार्म पर नीचा मे एकटा चद्दर बिछाय देल गेल ओहि पर हमरा बैसा देल गेल! घोघ तनने मुड़ी निघरौने चुकुमाली हम बैसल रहलहुँ- इएह सहरसा अछि जाहि ठाम हम मजिस्ट्रेटक बेटी रही - इएह सहरसा थीक जाहि ठाम मल्लिक साहबक ग्रुप सड़क पर ऐंठकऽ चलैत छल! जाहि ठाम मनोहर सकूल सँ हम परीक्षा दैत रही-सलवार सूट आ सलवारक उपर सँ पैताबा आ बूट- बाब कट केश- आइ एहि स्टेशन पर हम कनिया बनल बैसल छी - चारू कात छौंड़ा सभक झुण्ड एम्हर सँ ओम्हर घुमैत छल-रे घोघ तर केहेन चेहरा होयत - मोन होइत छल घोघ नहि उठैक-केओ चीन्हार देखत तँ कहत- अरे ई तँ मल्लिक साहबक बेटी रजनी छी- जरूर पिहकारी मारि हँसि देत- देखू भनता देखू - बड़का माँ, नीकी दीदी, भाइजी, संगीत सभ आबि गेलाह हमरा सँ भेंट करय! हुनका सभ कें बुझल छलैक हम आबि रहल छी - दोसर जे ओहि काल कनियाक संग ओकर भाइ जाइत छल किन्तु मन्ना सेंटू बड़ छोट छल। एतेक दूर जेवाक कल्पने नहि कऽ सकैत छल! तें सहरसा सँ भाइ जी हमर संग भऽ गेलाह - एके संग बड़का माँ सभकें देखि रूदनक आवेग जे रुकल छल ओ बड़ वेग सँ फुटि पड़ल! सभ केओ कानऽ लागल मुदा सभ हमरा बाजऽ लागल- मोन खराब भऽ जेतौक कतेक दूर सँ आएल छें, एखन आओर कतेक दूर जेनाय छौक! भाईजी एक कोना मे ठाढ़ नोर पोछि रहल छलाह! दुनू दीअर हमर स्टेशन पर कका जी संग घुमि-घुमि किछु कीनि रहल छलाह!-

सुपौलक ट्रेन आबि गेल- फेर फर्स्ट क्लास मे टिकट छल लेकिन एहि बेर हमर दुनू दीअर हमर संगे छलाह, भाईजी सेहो! ककाजी आ खबास दोसर डिब्बा मे चढ़ि गेलाह। आँखि एको बेर नहि सुखैत छल- कनैत कनैत हिचकी बन्हि गेल-

ताहि पर सँ पापाक उपदेश- बेटा कोनो परिवारक पृष्ठभूमि ओहि घरक पुतौहु होइत छैक! बेटी आन घर चलि जाइत अछि किन्तु अपन सासुरक मान मर्यादा, प्रतिष्ठा, नेकनामी सभटाक उत्तरदायित्व पुतौहु पर रहैत छैक- पीढ़ी दर पीढ़ी- एक दुइटा बातक गिरह बान्हि लियऽ। सासुर मे सभकें सभ सँ जोड़बाक प्रयत्न करब, तोड़बाक नहि। भीतरक आगि कें बाहर नहि लऽ आनब -क्रोध करब तँ सभ भस्म भऽ जायत! बाहरक आगि कें बाहरियो आदमी कें नहि बतायब आ नैहरक बात लऽ अपन घर मे कलह नहि मचायब- नानी बजलीह- सभ पैघ कें खुआ पीआ तखन जाँति कें तखन अहाँ खायब मुन्नी- अहाँ संग सभटा छोट छोट दीअर ननदि संग खेबा

लेल बैसि जायत।

ताहि पर माँ परिहास सँ बाजल छलीह- ककरो नाक बहैत रहतौ, ककरो आँखि मे काँची- हम नानीक मुँह ताकऽ लगलहुँ- जी ओकाय लागल छल - नानी बजलीह- कोनो बात ने मुन्नी, अहाँ खाय सँ पहिने सभक मुँह कान पोछि देबैक। अपन बकस सँ एस्नो पाउडर निकालि हुनका सभ कें तैयार।

रञ्जी की सोचि रहल छी तंद्रा टुटि गेल- माथ पर सँ खसा ले- भाइजी बाजि रहल छलाह - एहिठाम केओ नहि छथि- हम जय विजयदिस ताकलौं - दुनू दीअर बाल सुलभ मुस्कान सँ हमर काजर भरल आँखिक नोर कें ताकि रहल छलाह-

भाइजी - ई कोन नियम छैक, एक जमीन पर रोपल फल फूल कें पन्द्रह सोलह बरीस बाद उखाड़ि कें दोसर जमीन पर रोपि देल जाइछ आ ओकरा फलवा फुलवाक लोक आस करैत अछि।

हँऽ बहीन -ओहि गाछ कें लोकक प्यार दुलारक खाद भेटैत छैक जाहि सँ ओ लहलहा उठैत अछि।

चुपचाप भाइ जी दिस तकैत रहलहुँ- बाल्यकाले सँ उपदेश सुनबाक हिस्सक भऽ गेल छल - आ वियाहक बाद तँ नैहरक प्रत्येक प्राणी सँ.........

ट्रेन सुपौल पहुँचि गेल। आब ओहि ठाम सँ बैलगाड़ी सँ डुमरा- स्टीमर, घटही ट्रेन, सुपौलवाली ट्रेन आ फेर बैलगाड़ी कहियो नहि चढ़ने छलहुँ बैलगाड़ी पर-

कतेक कष्टदायक यात्रा छल ओहि समय! गाम सँ पाँच टा बैलगाड़ी आएल छल- एकटा बैलगाड़ी मे लाल पीअर ओहार लागल छल सुन्नर सन। ओकर भीतर हमरा बैसाओल नञि गेल अपितु ठेलि देल गेल- ओह। की जमाना छल! किछु बाजि नहि सकैत छलहुँ। सभटा गाड़ीमान डुमरेक छल! सभसँ आगूक बैलगाड़ी पर ककाजी आ जय विजय बैसल छलाह- ओहि पर ई अपने आ भाइजी- ओना दूनू सार-बहनोइ बेसी पएरे पएर जा रहल छलाह। बीच मे तीनटा बैलगाड़ी हमर समान सँ भरल छल, सातटा बक्सा, पैर्त-तैर्त सनेस बाड़ी आदि-आदि।

बैलगाड़ी चलिते हमर माथ घूमऽ लागल-हम ओहारक अऽढ़ मे पड़ि रहलहुँ-बीच बीच मे कखनो ई, कखनो भाइजी हमर हाल पुछि लैत छलाह। देखिते देखिते साँझ भऽ गेल! आ इजोरियाक आँचर चारू कात पसरि गेल। हम सुतले सुतल ओहार कनेक-कनेक हँटाइ देखि रहल छलहुँ - सघन गाछीक मध्य सँ इजोरियाक आँचर चीरैत बैलगाड़ी सभ भागि रहल छल। शांत, निस्तब्ध सुनसान कारी कारी पैघ पैघ गाछ कखनो दैत्य सन लागैत छल कखनो भूत सन। नानीक खिस्सा मोन पड़ैत

छल बहरामसब चोट्टा एहि मे नुकायल होयत- कोनो गाछ पर चूड़ीन बैसल हाथ नमराय देत- भीतरे भीतर काँपि जाइत छलहुँ- बरदक गऽर मे बान्हल घंटीक मधुर ध्वनि, गाड़ीमान सभक स्वर- हा हा- हें हें, अआह- हो होक विचित्र ध्वनि मौन कें मुखर कऽ दैत छल- ठीक छी ने- गाड़ीमान सँ नुका गाड़ीक पाछाँ सँ हिनकर स्वर आएल- हम सभ कतए छी- एखन तँ सुखपुरक गाछी मे छी- डर नहि लगैत अछि- हम किछु नहि बाजलहुँ- बाजिए के की करितहुँ! अपना कें एकदम शिथिल कऽ देने छलहुँ - खाली मोन मे एक दिस पटनाक चित्र, सभ भाइ बहीन पापा माँक दुलारू हम छलहुँ- दोसर दिस पापा नानीक उपदेस-

ठीक सँ तैयार भऽ जाउ, गामक सीमान पर आबि गेल छी - हम हड़बड़ाय उठि गेलहुँ - सहरसा नहि हम तँ सासुर जा रहल छी - हिनकर मंद स्वर हमर चेतना कें सजग कऽ देलक। पापा कहैत छलाह विद्यार्थी कें अध्ययन, मनन आ चिन्तन करबाक चाही। तखन सभ प्रश्नक उत्तर ओकर दिमाग पर लिखा जाइत छैक! पहिने पढ़ू तकर बाद ओकरा मोने मोन स्मृति मे अनैत रहू, तखन चिन्तन करू - आइ बएह स्कूल बला 'फार्मूला' पापाक उपदेशक चिन्तन कऽ रहल छलहुँ - करीब सात घंटा मे एगारह बजे राति मे डुमरा पहुँचलहुँ - सौंसे देह बाँसक फट्टी सभक चोट सँ अकड़ि गेल छल-

सौंसे गाम हवेली मे जमा भऽ गेल छल, कनियाँ आबि गेल, कनियाँ आबि गेल।

आब परिछन लेल बैलगाड़ी पर कतेक देर धरि बैसल रहलहुँ-

परीछ कें गोसाँय कें प्रणाम कराय हमरा दूनू गोटे के कोहबर घर आनल गेल!

पहिने तँ बैलगाड़ीए पर सँ थारी सँ चिन्नी हरदि लऽ कऽ सभकें बँटइत रहलहुँ- सभ बजैत रहल कनियाँ मीठ कनियाँ मीठ! फेर कोहबर घर मे कतेक विध भेल! गुन्ना- मुन्ना बाँटल गेल! खीरक थार आनल गेल। हमरा खीर बड़ पसन्द छल- ताहि पर मोट मोट छाली- नारियल किसमिस सभ सँ झाँपल तोपल -

बड़ प्रेम सँ ननदि सभ बजलीह- भाभी, खाउ ने- एतेक दूर सँ आइल छी- हमहुँ सभ खायब-

मुदा, नानीक उपदेश हमर समक्ष ठाढ़ छल - कतबो कहतौ पहिल राति खीर नइ खाहिहें नहि तँ कहतैक कनियां पेटू अछि! तें भायजी सुपौल स्टेशन पर खुआ देने छलाह - हम घोघ तर सँ नहि नहि मुड़ी डोलबैत रहलौं- हे देखियौ यै संगी, कनियां के माय बाप सिखा देने छैक - देखियौ -

सासु सभ बाजि रहल छलीह - कतेक देर धरि पेट्रोमेक्स, लालटेन, डिबिया

मे बेर बेर मुँह हमर उघारि देखओल जाइत रहल। विचित्र छल ओहि परिवारक परंपरा। भोरे चारि बजे उठि ई दलान पर चलि जाइत रहथि जे केओ कनियाँक कोठरी सँ हुनका निकलैत देखि नहि लैथ। राति एगारह बारह बजे जखन सभ सूतऽ जाथि तँ हल्ला हो माँ काकीक - ललनी कतऽ छैक, ललनी कतऽ छैक - बजाबू ओकरा - तखन दलान पर कोनो बेंच पर सूतल हिनका आनल जाइत छल। हम एतेक डरपोक छलहुँ जे अनहार होइत डिबियाक इजोत मे हमरा भय होमय लगैत छल! सभ ननदि दीअर साँझे बेरहट खाय कें सुति जाइत रहथि! यानी सौंसे गाम सूति जाइत छल खाली भनसा घर मे खन-खन, टन-टन स्वर होइत रहैत छल - हिनका जखन कहैत छल अहाँ एना किएक करैत छी - हमरा बड़ डर लगैत अछि - की करबैक रनिया - एहि घरक, एहि समाजक इएह नियम छैक, परंपरा छैक, हम की करी। हमर मोन की नहि छटपट करैत अछि! अहाँके एक झलक देखवा लेल सदिखन उताहुल रहैत छी! लेकिन अहीं बाजू।

हम की बाजितौं? वियाहक नौ मास बाद हमर दुरागमन भेल छल! एहि नौ मास मे हिनका बाबूजीक कठोर आदेश छल जे बेर बेर अहाँ सासुर नहि जायब! मान घटे जहाँ नित्तह जाइ - पटना मे एक डेढ़ किलोमीटरक अन्तराल पर रहैत मासं मे एक या दूइ बेर आबैत रहथि - आदेश बूझी कि परंपरा - निर्वाह तँ केनाइ अछि। चारू दिस नानीक उपदेश हमरा ताकत दैत छल!

दुरागमन सँ भड़फोरि धरि कोहबर घर मे मोटा बनल बैसल रहैत छलौं। नानी कहने छलीह दुरागमन मे कोनो सासु सँ गप्प नहि करिहैक! किछु दिन बाद छोटकी ननदि वा कि दीअर सँ गप्प करब। दोसर बेर सासुर जायब तखन सासु सभ सँ गप्प करब! मुदा, हम तँ पहिलुके बेर मे दुइ मास डुमरा मे रहि गेलहुँ। कतेक बेर माँ काकी सभ हमरा बजएबाक प्रयास केलन्हि मुदा निरर्थक! नानीक उपदेश आ पापाक प्रतिष्ठा पढ़ल लिखल मैट्रिक पास कनियाँ सभटा दाव पर लागल छल! कोना बाजितौं?

चारि दिन बाद भड़फोड़ी भेल, सौंसे गाम, परूहरक सभ बूढ़ पुरान, नवतुरिया सभकेँ हकार छल। सभ उमड़ि गेल! भड़फोड़ी लेल नैहर सँ संतोला रंग केर जार्जेटक नुआ पूरा काज कएल छल। वएह नुआ पिन्हायल गेल! आब हम युवती वृद्धा एकेक कऽ केँ सभक पएर कठौत मे धोइत छलहुँ। अपन एतेक कीमती नुआक आँचर सँ हुनकर सभक पएर पोछैत छलौं! तेल सँ दूइ बेर पएर जाँति फेर गोड़ लागि लैत छलहुँ! एतेक काज घोघक तर सँ! धन्य नानी जे पहिनहि सँ एतेक दिमाग मे दऽ देने छलीह! फेर बाम हाथ सँ माछ बनवए कहल गेल। बिध छल, छुआ देल गेल! फेर ठाँव करय कहल गेल गोबर सँ बीच आंगन मे - सभटा नानीक सिखाओल -

कनिकटा कमलक फूल बनेलहुँ कि मीना हाथ सँ छीन लेलीह-हम कऽ दैत छी, अहाँ छोड़ि दियौ भाभी! आएल-गेल सभक मुँह सँ अपन बड़ाइ सुनैत छलौं! सासु सभक हृदय गुमान सँ भरल छलैक! बड़काक बेटी छियैक ने - तकर बाद सभ कोठी, बखारी कें हमर हाथ सँ छुआएल गेल - साँझ के कनियं हाथक किछु खेनाइ छल! ओहि काल मे यदि खस्सीक मासु। खएबाक मोन होइत छल तँ खस्सी दलान पर मारल जाइत छल। कम सँ आइ-दस किलो मासु होइत छल! आ वएह भेल - अंदाज दस किलो मासु छल - बड़का लोहिया मे राखल - लकड़ीक चूल्हि पजरि रहल छल।

पापा माँ सभ किछु सीखे ने छलथि। नहि सीखने छलौं तँ भानस करब! कहियो माँ हमरा आगि लग नहि जाइ देलक! हँ जखन भोजन तैयार भऽ जाय तखन सभ आदमी कें अपने सँ परसि खुअेनाइ अंइठ थारी अपने सँ उठा केँ अननाय, धो कें राखनाय- ई सभ काज मे हमरा बड़ मोनो लगैत छल, उत्साहो छल।

हँ, माँ केँ बनबैत देखैत रहैत छलौं ओहिनो लड़की मे जन्मजात गुण होइत छैक जे सभ तरहक परीक्षा मे पास होइछ..........।

अंगनाक कोन कोन सँ मुक्त कंठ सँ हमर बड़ाइ भऽ रहल छल! काकी सभ स्त्रीगण पुरुषवर्ग कें भरि दिनक हाल, लोक सभक कयल प्रशंसा, हमर लाज धाख- बिस्तार सँ करैतं छलीह - संगी, नरमावाली कहने छलीह ने मधुश्रावणीक खिस्सा-

मोन पड़ि गेल अपन मधुश्रवणीक खिस्सा। एतेक भार डुमरा सँ काकाजी लऽ कऽ आयल रहथि जे घर मे राखबाक जगह नहि छल! ओतबे भार बड़गाम पठाओल गेल छलैक - लालदादा लालदादी लग, ओतबे मधेपुरा बाबूजी केँ!

पापा मधुश्रावणीक दिन तीन सय आदमी केँ नोतने रहथि। हलवाइ बैसल छल - किन्तु, ओतेक आदमी कें हम असगर हाथ सँ परसि परसि खुअयलहुँ, पात उठा उठा फेकैत रही- थारी धोइ धोइ राखैत रही- भारक संग आयल नरमाबाली सभटा देखैत छलीह- डुमरा मे हमर प्रशंसाक पुल बान्हि देने छलीह। आइ काकी नरमाबालीकें स्मरण कऽ रहल छलीह- हमर मोन हर्षित छल- काश माँ-पापा अपन बेटीक ई सभ प्रशंसा अपने सँ सुनतयथ - हुनकर बालिका वधू सन बेटी आइ कतेक खुश अछि जाहिठाम प्रशंसा भेटैत छैक ताहिठाम उत्साह आओर बढ़ैत छैक।

एहि चारि दिन मे भड़फोड़ी सँ पहिने हम कोहबर घर सँ परिवारक समस्त कार्य कलाप केँ देखैत रहैत छलहुँ, बुझैत रहैत छलहुँ- हम कखन की सभ कऽ सकैत छी- आ भड़फोड़ीक प्रात नानीक उपदेश - हम अन्हारे मे हिनका उठौलहुँ

– भनसा घर कोबराघरक बगले मे छल मुदा हमरा ततेक डर लगैत छल जे असगरे ओहि मे कोना जयतहुँ। डिबिया लऽ कऽ ई ठाढ़ छलाह! काकी रोज बरतन बासन धोइत छलीह– बस हम पहिलुक काज बासन सँ शुरू केलहुँ – भनसा घर जाइत काल पाँजेबक घंटी सभ रूनूर झुनूर बाजय लागल – ई डिबिया राखि चलि गेलाह – हम जागले छी कहि ई भानस दिसक खिड़की खोलि देलनि! हमरा सभकेँ भनसे घर मे गौसाँय रहैत छथि ! गोसाँय के प्रणाम केलहुँ – हे भैरव, भैरवी, माँ विषहरा, माँ गंगे, दसो देवान, सभ देवी देवता सभ संतन। फेर अपन नैहरक गोसाँय जय माँ ज्वालामुखी बगुलामुखी कें स्मरण कऽ चिनबार पर चढ़लहुँ – लोहिया, करछुल, ढकना, सरबा रही सभ भरल पड़ल छल, लोहाक बरतन सँ लऽ कऽ काठक बरतन सभ भरल छल – घैलाक पानि बड़का लोहिया मे ढारि देलहुँ आ फेर झींगाक सुखलाहा झम्मा सँ एक एक टा बरतन कें आस्ते आस्ते धो रहल छलहुँ कि तावत किम्हर दन सँ काकी आबि गेलीह – कनियां! कनियां! ई की कऽ रहल छी अहाँ! अहाँक पांजेबक आवाज सुनतहि हमर नीन टुटि गेल! हम काकी के प्रणाम केलहुँ! ओ हमरा चिनबार पर सँ उठा देलनि! हमरा पकड़ि कें अंगना मे तुलसी चौरा लग गोड़ लगबऽ लेल लऽ गेलीह। फेर हमरा पकड़ने सभ सासु कें, दीदीया जी-हिनकर पीसी सभकें गोड़ लगौलीह! हम घोघ तनने मुड़ी झुकौने यंत्र जकाँ समटा करैत रहलहुँ! तकर बाद तँ काकी हमर भोरका काजक बखान सौंसे परिवार, आयल गेल गौंआ सभ लग करऽ लगलीह!

हम जखन नहाबय लऽ जाय लागलहुँ तँ काकी हमरा चट्टी आनि कें देलीह– कनियाँ पहिरि लियऽ काँट-कूस गड़ि जायत पएर मे– हम घोघ तर सँ छोटकी ननदि बच्ची कें कहलहँ – अहीठाम कोदू नहि पहिरै छथि तेँ हमहूँ नहि पिन्हब– आ हम गाम मे चट्टी पहिरनाइए छोड़ि देलहुँ।

ओहि समय भोर मे फारिग हेवा लेल कोनो शौचालय नहि बनल छल– एकटा छल जे जर्जर स्थिति मे कखनों खसि सकैत छल! घरक पछुआर मे बड़ पैघ बाड़ी छल! चारू दिस बड़का छहरदेवारी सँ घेरल ! ओहि बाड़ीक अन्त मे कनि दूर टाट आ बोरा सँ घेर देल गेल छल! एक दिस खुनल माटिक ढेर छल – दोसर दिस, बैसू आ शौचक बाद माटि खसा दिऔक पएर सँ! मुदा, हमरा एकदम हिस्सक एकर नहि छल। माँ काकी। छोड़ि सभ केओ गाछी बादबोन जाइत छल! हमर स्थिति दयनीय भऽ गेल छल! तखन हम देखलहुँ जे कोइ नहि अछि – दुइटा ईंटा आनि राखि लैथज ओहि पर बैसलहुँ! फेर ईंटा हटा दैत छलहुँ जे केओ देखि नहि। कनियां एना करैत अछि! पढ़ल लिखल केओ नहि हमरा बुझि लनि तकर ध्यान रहैत छल ! केओ

आबि नहि जाय एकर लेल बच्ची बाड़ीक मुँह पर ठाढ़ रहैत छलीह आ नहि तेँ एकटा ललका चद्दर टाट पर राखि दैत छलीह – हे जाधरि ई चद्दर एहि ठाम रहत बुझि लेब जे केओ गेल छैक – कोइ ओम्हर नंहि जाएब – ई हिदायत दैत छलीह सभ कें–

स्कूल जएबा सँ पहिने सभ छोटकी ननदि बच्ची, अरूण सभक केश बान्हैत छलहुँ रिबन लगा कें चोटी बनवैत छलहुँ फेर पाउडर एस्नो, टिकली सँ सजा दैत छलहुँ। जय कें शर्ट बदलि, केश थकरि पाउडर सभ लगबैत छलहुँ। विजय कें पैंट शर्ट पहिराबैत छलहुँ! अजय कें पैंट पहिराय दैत छलहुँ ओ तुरते खोलि दैत छलाह आ ओहिना अपन मस्ती मे गीत गबैत रहैत छलाह – **'मै दीवाना मस्ताना मुश्किल भेद मेरा पा जाना'** – फेर हम मीना रेणु छोटकी बच्ची सभक केश बान्हि पाउडर सभ लगबैत छलौं – फेर काकी सभ चारू सासु कें!

सभकें जलखै देनाइ, खेनाइ परसनाय ई सभ हमर कार्यक्रम छल! अपना सँ पैघ केओ अबखीन तँ हम ठाढ़ भऽ जाइत छलहुँ, घोघ तानि कें।

किछु किछु बात एखनो मोन पड़ैत अछि तँ हँसी आबि जाइत अछि – दोसर दिन भोरे हम एहि बैरी पाजेब कें उतारि, चुपचाप भनसाघर मे सभटा बरतन सभकें धोइ माँजि राखि देलहुँ! चिनबार पर एकटा दुचुल्हिया छल, आ एकटा चूल्हि अलग सँ छल! नूड़गोबरक बालटी आनि चिनबार नीपनाइ शुरू केलहँ । सड़ल गोबरक महक सँ हमर माथ झनझनाइ गेल पर हम तँ हारि मानऽबला मे सँ नहि छलहुँ। जी कड़ा कऽ साँस रोकि चिनबार नीपैत रहलहुँ ताबत काकी आबि गेलीह – हे देखू कनियाँ के – हमरा होइत छल कनियाँ भनसे मे हेतीह – छोड़ि दियौक कनियां, एना नहि नीपल जाइत छैक– उठू हाथ धो लियऽ – पातर पातर, लाल लाल लहठी सँ भरल हमर गट्टा, मेंहदी लागल हाथ सँ गोबरक महक हाथ सँ जा नहि रहल छल –कतबो साबुन लगा रहल छलहुँ मुदा गंध खत्मे नहि होइत छल! सोचैत रही आब हम एहि सँ खायब तँ कोना खायब– एकर बाद हम चिनबारपर नीपलाहाक निसान धियान सँ देखऽ लागलहुँ ओ सुखि के धनुष जकाँ भऽ गेल छल सुन्दर मनोरम। तखन कोहबर घर मे असगर मे पानि सँ अभ्यास करय लागलहुँ जे कोना नीपल जाइत अछि – आ तुरत बुझि गेलहुँ नीपबाक कला – फेर तँ हमर दिनचर्या बनि गेल। गोसाँय कें प्रणाम कऽ बरतन मांजनाय, चीनबार नीपना। फेर काकी आबि जाइत छलीह। हुनका प्रणाम कऽ, तुलसी कें प्रणाम कऽ सभ गुरुजन कें प्रणाम करैत छलहुँ ! अंगना एतेक नमहर छल जे काकी आधा अंगना बहारैत छलीह आ आधा गुलबिया कि अवधी। हम काकीक हाथ सँ जबरदस्ती बाढ़ैन लऽ लैत छलहुँ। कहियो सफल भऽ जाइत छलहुँ तँ कहियो असफल! बड़का बाबूजी, बाबूजी, काकाजीकेँ गोड़ लागनाइ तेँ दूर सामने

जएबाक मनाही छल! पता नहि ई 'कर्फ्यू' किंएक? किन्तु, हम तोड़ि देलहुँ एहि कर्फ्यू कें। नहि नहि, कनि ढील दऽ देलहुँ! काकी थारी परसैत छलीह आ नौकर सभ उठा उठा मालिक सभक आगू मे दैत छल! हमरा संस्कार नेनपने सँ सीखाओल गेल छल -अपना सँ खुआबय लेल - मोन नहि मानैत छल! जहाँ बाबूजी सभकें नहा कऽ एबाक बेर होइत छल, हम बड़ प्रेम सँ ठाँव कऽ, पीढ़ी राखि, लोटा माँजि पानि राखि दैतं छलहुँ । गुलबिया सभकें हाथ सँ थारी लय अपने सँ हुनकर आगू मे राखैत छलहुँ। आ पायाक अढ़ मे ठाढ़ भऽ जाइत छलहुँ-की परसन लेताह - आ ई बात नैहर मे बाबूजी सिखौने रहथि- ककरो खुआबैत काल ठाढ़ रहऽ! देखैत रहऽ जे थारी मे की खतम भऽ रहल छैक, दोड़ि कें ओ चीज आनि दहक! लेवाक़ मोन नहि हेतैक तँ अपने मना कऽ देथुन! कहियो ई नहि पूछी जे भात नेने आबी आ कि तीमन नेने आबी - आ इएह काज दऽ रहल छल। एक हाथक घोघ तर सँ सभ काज करैक आदत भऽ गेल छल ! भानस मे जिनकर पार रहैत छल हुनकर चाडर धो दैत छलहुँ, दालि धो दैत छलहुँ! कहियो कहियो तरकारी सेहो काटि दैत छलहुँ! बड़का परिवार छल! तरकारी अवधी काटैत छलीह - किएक तँ दस-बारह किलो तरकारी प्रत्येक साँझ ऊठैत छल! दूइ तीन गोटे हाँसू लऽ कऽ बैसैत छल जे झट दऽ भऽ जाय! सभ केओ हमरा घेरने रहैत छल! सभकें लागैत छल ई कोन प्राणी घर मे आबि गेल। सभ घरक तक्खा पर माटि जमल ताहि पर किछु किछु पड़ल रहैत छल! सभटा.झाड़ि पोछि अखबार बिछाय सभ समान कें सैंति कें, सजा कें राखि दैत छलहुँ! जखन कि घर मे एक-एक लोक पर एक एकटा खबास खबासिनी छल! सभ केओ नहा कें इनार पर कपड़ा छोड़ि दैत छल। बेरियां मे धोबिन अबैत छलीह - सभ कपड़ा मोइन लऽ जाकऽ साफ कऽ, सुखाय, सभक कोठरी मे दऽ अबैत छलीह! हम अपन कपड़ा स्वयं खीचैत छलहुँ आ ओहि काल जे कपड़ा इनार पर रहैत छल सभटा साफ कऽ दैत छलहुँ! केकरो दृष्टि पड़ि जाइत छल तँ कनियां ई की कऽ रहल छी - हद कऽ देलहुँ अहाँ - आ काकी, लालकाकी, नबकी काकी सभ केओ सभ सँ इएह बात - कतेक सहमिलु छै कनियां! एकौरत्ती पढ़ल लिखल लगैत अछि? अन्हारे मे चलि जाइत अछि बासन धोअऽ लेल। की बुझैत छी - बड़काक बेटी छी। मीना बड़ प्रेम सँ हमर पएर रंगैत छलीह, कतेक चित्रकारी सँ -साँझ होइत सभ बच्चा सभ अंगना मे जमा भऽ जाइत छल, खेल धूपि कें अबैत छल! हम सभ के अंगने मे एक लाइन सँ जलखै दैत छलहुँ दही, चूड़ा, आम वा केरा आ ओकर छिलका पर अंचार दऽ दैत छलहुँ! सभ हिलसि कें खाइत छल! सभ सँ नीक लगैत छल जयन्त, सुनील, अशोक - चारि पाँच बरिसक हेथीन - हम तीनू बच्चा कें सेहो पाती मे बैसा दैत छलहुँ - हमरा दिस टकटकी लगौने तीनू बच्चा दही चूड़ा खा लैत छल ! कहियो अपने तँ

कहियो हम खुआ दैत छलहुँ! नबकी काकी हुलसैत सभके देखबैत छलीह - हे देखू कोना कनियाँक बात मानि तीनू टा खा रहल अछि! फेर मीना जिनका हम रागिनी कहैत छलहुँ सँ लऽ कऽ रेणु, छोटकी बुच्ची, बच्ची कें चाँदनी, कमलिनी, कुमुदनी हमर देल नाम छल - सभ केओ जलखै करैत छलीह। भानस नौ - दस बजे राति मे बनैत छल मुदा कोनो बच्चा खयबा लेल नहि उठैत छल! हम एक माली तेल लऽ कऽ जाइत छलहुँ आ सभ दीअर ननदि कें एक लाइन सँ पएर आ तरबा मे मालिश कऽ दैत छलहुँ। जे भानस मे छलथीन्ह हुनका छोड़ि सभ सासु कें तेल मालिश करैत छलहुँ! किन्तु, माँ नहि करवैत छलीह - नहि नहि कनियां छोड़ि दियऽ। अहाँ संगी कें करू हमरा नहि! अहाँ अपनाकें हुनके पुतौहु बुझू! ओ ललनीक बड़ केने छथीन्ह - तें हम काकी लग जाइत छलौं! फेर नबकी काकी, लालकाकी, दीदीया जी। सौंसे इलाकाक लोक, परोपट्टाक लोक मुखियाजीक पुतौहु कें देखऽ अबैत जाइत रहैत छल।

पन्द्रह दिन रहि ई अपने पटना चलि गेलाह! भड़फोड़ीक प्राते भाइजी चलि गेल छलाह! जाइत बेर हमरा सँ भेंट नहि कएलनि - कहबे नहि कएलन्हि जे जा रहल छथि! एक तें हमर घोघ तरक जीवन-दोसर हमर एकान्त समर्पण सासुरक प्रति देखि हुनका अपन चंचल बहीनीक दुर्दशा बुझा पड़ैत छल आ हमरा लेल उमंगक विजयी भाव -हिनकर जयबाक बाद हमर जीवन एकदम रूटीनी भऽ गेल! हमर विदागीक दिन नहि होइत छल - हम साइत चैतया बैशाख मे आएल छलहुँ-अषाढ़ मे बिदागीक दिन भेल छल! ठीक सँ मोन नइ पड़ैत छैक किन्तु, गीत गाओनी सभ गबैत छलीह-**'चैत बैसाखक रउद मताउन धीया मोरा जेतीह कुम्हलाय ! ....'** ओहि राति असगर सूतल छलहुँ कोहबर घर मे। संग मे बच्ची सुतलीह। किन्तु, हुनका सब कें साँझे सूतबाक हिस्सक छलैक। हमर आँखि मे नीन्न नहि छल । कतऽ सँ कतऽ जिनगी आबि गेल। अपन जीवनक बीताओल क्षण सभ एक धारावाहिक जकाँ आँखिक समक्ष नाचऽ लागल।

पापाक छलहुँ हम बेटी बतहिया

पापा कहैत छलाह 'विथ द सिलवर स्पून इन माइ माउथ' हमर जनम भेल छल एकटा राजकुमारी जकाँ, गुलाम देश के 9 अगस्त, 'शहीद दिवस', 'भारत छोड़ो' सभक नाराक मध्य 1943 मे। तखन पापा भागलपुर मे मैजिस्ट्रेट छलाह। बंगाली टोला मे गंगाक कात शरत चंद्रक घरक बगल मे रहैत छलाह जाहि ठाम हमर जनम भेल छल। यानी एके संग हमर हृदय मे अव्यवस्थाक प्रति विद्रोह, समाजक कुरीति सभ लेल आगिक चिनगशी संगे संवेदना भावना सँ भरल कोमल मोनक अतिशयताक बीजारोपण भऽ गेल जेना। देश प्रेमक उत्कट, भीषण लहरिक संग माता आ मातृभूमि लेल समर्पणक भाव जहिया सँ चेत आयल हम एकरा अनुभूत करैत रहलहुँ। माँ बजैत छलीह हम 7-8 मासक होयब तखन पापाक बदली राजमहल भऽ गेलैक। गंगाक कात पापाक क्वार्टर छल। हम गंगा के देखि पहिलुक शब्द माँक बदला 'गं गं' बाजल छलहुँ गंगा दिस आंगुर सँ संकेत करैत। पापाक बदली साहेबगंज भेल आ चलचित्र जकाँ नहि तँ टीवी चैनल जकाँ भुकभुकाइत आइयो हमर स्मृति कक्ष मे अबैत अछि एकटा राजकुमारीक जीवन।

बड़का घर छल प्रथम तल पर, नीचा मे मिठाइ सभक दोकान। भीम सिंह चपरासी आ विष्णु देव दुनूक स्मृति अबैत रहैत अछि। भीम सिंहक कान्ह पर चढ़ि हम नीचा सँ पेड़ा कीनवा लेल जाइत छलहुँ एकदम भोर, अन्हरगरे। जाहि कोठरी मे हम सुतैत छलहुँ, बड़का हाल छल, ओकर चारू कात अलमारी, तक्खा, केवाड़क उपर तक्खा-आ सभ पर राखल भाँति भाँति कें फल, बुइयाम सब मे अखरोट, किसमिस, मुनक्का, छोहारा, मोदक सभ कतेक प्रकारक चीज भरल रहैत छल हमरा लेल मुदा, हम किछु नहि खाइत छलहुँ। खाली सोडा वाटर, लेमनेड पीबैत छलहुँ। पीसी माँ कहैत छलीह जे हम नौ बरस धरि अन्न नहि खेने छलहुँ। घर मे दीदीया, पीसी माँ, नानाजी, नानी, मौसी, मौसा, भैया, सुनन्दा मौसी, लालदाय, साधना लल्ली-सभ मोन अछि।

घरक उपर मे बड़का छत छल, वएह छल हमर सभक बानरी सेनाक रंगमंच जाहि ठाम कतवो उत्पात करी-नीचा आवाज नहि जाइत छल।

ओहि छत पर हम सभ जोड़ी बना बना करिया झुम्मरि खेलैत छलहुँ-करिया

झुम्मरि खेलैत छी-लीख पटापट मारैत छी- हमर जोड़ी रहैत छल लल्ली दीदीयाक बेटी पुष्प प्रभा! हमरा दूनू गोटे मे कहियो झगड़ा नइ होइत छल। आ दुनू गोटे हाथ पकड़ि एतेक घुमइत छलहुँ जे घुरमी लागि जाइत छल, केओ एम्हर खसय, केओ ओम्हर-

घोघो रानी, घोघो रानी कितना पानी-ईहो खेल हमर सभक प्रिय छल। लाल दाय, शशि बहिन सभ अट्टा गोटी खेलैत छलीह किन्तु हमर सभक नान्हि हाथ मे गोटी अँटिते नहि छल। हमर सभक खेल औका बौका, अटकन मटकन सभ रहैत छल-

पापाक बड़का गाड़ी जकरा पर छतक बदला खाकी रंगक कपड़ाक ओहार बान्हल छल-जखन मोन हो टांगि लियऽ जखन मोन हो हँटा दियऽ-आ सभ भाइ बहीन कें पापा हवा खुआबय लेल कहियो काल लऽ जाइत छलाह। पापा सभदिन गाड़ी स्वयं ड्राइव करैत रहथि कहियो बिना कार कें हुनका नहि देखलहुँ, नहि तँ कहियो ड्राइवर देखलहुँ-

हमर आ लाल दायकें नाम ओहिठाम अंग्रेज़ी स्कूल मे लिखा देल गेल छल। हमरा स्कूलोक किछु मोन नहि अछि। हमरा संग पढ़ैत रवि आ ओकर बहीन मीनाक छोड़ि कए। हम तीनू पक्का दोस्त छलहुँ। हुनकर पिता गिरिवार बाबू सेहो मैजिस्ट्रेट छलाह। दुनू परिवार संगे टूर पर जाइत छलहुँ। पापा माँक संग हम जाइत छलहुँ। कतेक बेर हम आ रवि जिनगी भरि संग रहबाक किरिया खेने छलहुँ। जकर साक्षी मीना रहैत छलीह आ माँ पापा, चाचा, चाची सेहो सभ हँसैत छल- हमहूँ सभ उछलि-उछलि बजैत छलहुँ। अबोध बाल्यावस्था केर ई सभ गप 48'-49' ई. कऽ छी। तकर बाद तँ दुमका चलि एलहुँ आ स्थानक संग-संग सभटा संगी साथी सभ दिन लेल छुटि गेल।

हमरा तँ ओतेक स्मरण नहि अछि मुदा पीसी माँ बजैत छलीह जखन लाल भाय आफिस जाइत रहथीन आ कि टूर पर तुरत खोज होय रजनी कतऽ अछि! तखन दादा कहथीन - कतऽ गेलऽ हे दहीक छाँछ -?

दादाक स्मरण सेहो अछि-पापाक पित्ती बाबू नरेन्द्र मल्लिक केर विधवा वृद्धा बहीन छलीह जिनका सभ दादा कहैत छल- हमरा मोन अछि जे हमर नाम सभ छमनकरनी रखने छल! 'क्षेमकरी' एकटा पंछी जकर यात्रा शुभ होइत अछि! घर मे सभ कें हिस्सक बनि गेल छल छमनकरनी कतऽ गेल! हमरा बड़ तामस उठैत छल। पापा बिनु हमर मुँह देखने कत्तौ नहि जाइत छलाह। हम जतऽ रही खोजि कें आनल जाइत छल- नानाजी भंडार घर मे सूतैत छलाह! मसल्लाक झपना रहित पैघ पैघ डिब्बा कें अपन गमछा सँ झाँपि ओहि मे फानैत फुनैत मूस कें पकड़ि हमरा बजवैत

छलाह - मुन्नी, देख मूस पकड़ने छियौक। एकटा नम्हर डोरी नेने आ - फेर हम नानाजीक संग मिलि ओहि चंचल मूसक नांगरि मे डोरी बन्हैत छलहुँ। आगू-आगू मूस भागय-पाछाँ पाछाँ थपड़ी पारैत हम आ नानाजी। आजुक मूस सभक फुरती देखि सोचैत छी कोना बन्हाइत होयत मूस ओहि काल? कोना संभव छल? कदाचित ओहि जमाना मे मूसो मानव प्रेम आ ओकर शांत प्रकृति सँ परिचित होइत हएत! एहि चित्रक बाद नानाजीक कोनो स्मृति नहि अछि।

एहिना मोन पड़ि गेल भूप दादाकेँ। ओ पापाक चाची यानी हमर दादी विद्यावती मल्लिक जीक भाई छलथीन! जतबे विशाल श्यामल शरीर - ओतबे विशाल हृदय आ उन्मुक्त हँसि-हुनक निश्छल हृदयक परिचायक छल! ओ हमरा सभ भाइ बहीनी, सुनंदा मौसी सभकें अपन चारू दिस बैसा लैत छलाह - चल खिस्सा सुनबैत छियौ -

एकटा रहलीस अटुआ, एकटा रहलीस बटुआ एकटा रहलीस दादा जी

अटुआ कहलीस चलू नहावे, बटुआ कहलीस चलू नहावे, दादाजी कहलीस चलू नहावे अटुआ नहैलक, बटुआ नहैलक दादाजी गेल धस्सि -एकटांग अटुआ धइलस, एकटांग बटुआ धइलस दादाजी गेलै निकैस। अटुआ कहलीस चली माछ मारे बटुआ कहलीस चली माछ मारे दादाजी कहलीस चली माछ मरे

अटुआ मारलक रेहू बटुआमारलक कतला, ददा जी मारलक पोठी अटुआ रान्हलक, बटुआ रान्हलक दादाजीक माछ गेल जरि/ एक माछ अटुआ देलक, एक माछ बटुआ देलक दादाजीक पेट गेल भरि ....

हो - हो - हो - दादाजीक हँसी। हम सभ बानर सेना खूब थपड़ी पारी।

ग्रामोफोन पर गीत बजैत छल - अब तेरे सिवा कौन मेरा कृष्ण कन्हैया, -यहाँ बदला वफा का -

देखैत रही सभ केओ आँखि मुनि कऽ झूमि रहल अछि! बस हम आ लल्ली आँखि बंद कऽ मुड़ी घुमबैत छलौं - सभ केओ हँसि दैत छल तँ खिसिया जाइत छलौं-

सभ एना करैत छथि - हम केलहुँ तँ की।

मोन पड़ैत अछि ग्रामोफोन सँ बजैत गीत - भारत की एक सन्नारी की हम कथा सुनाते हैं, मिथिला की राजदुलारी की हम व्यथा सुनाते हैं।

तखन लालदायक मुँह सँ, पीसी माँ सँ राम कथा सुनैत छलहुँ - करेजा मे हूक सन उठैत छल मिथिला की राजदुलारी हमहुँ सभ तँ छी। की?

जहिया सँ हमरा होस आयल बुढ़िया दाइ कें अपना घर मे देखलौं! साहिबगंजक घटना मोन पड़ैत अछि -बड़का डेकची मे भात बनैत छल! दाइ खेनाइ बनवैत छलीह! माँ तरकारी तीमन काटि सभ ओरिआन कऽ दैत छलीह। नोकर मे जगदीश छल। चपरासी मे भीम सिंह - माँ तरकारी काटि रहल छलीह, दाइ माँड़ पसाबऽ लेल डेकची उठा रहल छलीह।

माँ बाजि उठलीह - हमरा उठऽ दियऽ तब डेकची उठाएब।

अहाँ बैसल रहू मालकिनी, किछु नहि होयत आ बाजिते ओकर हाथ सँ डकची छुटि गेल - माँक सौंसे देह पर माँड़ आ भात गरम गरम खसि पड़ल। माँ आहत पशु सन छटपटा रहल छलीह - तुरत अस्पताल लऽ गेलाह पापा।

कतेक दिन तक घर मे लगैत छल जेना ककरो किछु भऽ गेल! किछु-किछु चित्र अबैत रहैत अछि- दादाक तामस ओहि दिन दाइ पर जे उठल छल - मुदा, पापा शांते रहलाह - किएक तँ पापाक क्रोधाग्नि पर हमर माँ जल नहि वरण शीतल जल रहलीह अन्तकाल धरि।

हम सभ तीन बहीनक बाद प्रकाशक जन्म भेल छल! नीक सँ मोन नहि अछि किन्तु प्रकाशक चेहरा एखनो स्पष्ट भऽ कऽ आगू आबि जाइत अछि! साहेबगंज मे ओकर जनम भेल छल! ओकर छठिहार फागुन मे पड़ल छल ! कतेक आदमी पार्टी मे आयल रहथि! ड्राइंग रूम मे अबीर गुलालक ढेर छिरिआयल छल! हमरा सभ कें तीन तीन टा ड्रेस भेटल छल! लाल लाल साटनक नीकर मे प्रकाश अपन काजर भरल आँखि सँ विहुँसि बिहुँसि पएर पटकैत-जेना आँखि मे नाचि जाइत अछि! आ फेर घर मे एकटा भूचाल आएल! सभ खुशी खत्म! दीदीया, पीसी माँ प्रकाश कें लऽ कऽ कतौ गेलीह आ बिना प्रकाश कें चलि एलीह। हम नहि बुझैत छनहु की भऽ रहल छैक? दीदीया पीसी माँ कें दाँती लागि रहल छल! माँ कोन मे कानि रहल छलीह! पापा जोर जोर सँ आंगन मे टहलि रहल छलाह! लालदाय हमरा कोरा मे लऽ नेने छल! हमरा सुतेबाक उपकम करैत छल! बस पटाक्षेप! प्रकाशक इजोत अनंतक इजोत मे समा गेल! पापाक बदली दुमका भऽ गेल! ओहि बीच नानाजी सेहो स्वर्गवासी भऽ गेलाह! नानी आ सुनन्दा मौसी पापाक संग रहऽ लगलीह! नानीक बेटा नहि छल मात्र तीन टा बेटी! ज्येष्ठ माँ छलीह!

दुमका मे हरेक रवि कें हम सभ बाबा बासुकीक दर्शन लेल जाइत छलहुँ! पापा शिवभक्त छलाह! एकदिन एकटा अजगुत घटना देखलहुँ! एकटा सद्यः परिणीता युवती बाबाक मन्दिरक देवाल पर माथ पटकि पटकि कानि रहल छलीह! पापा ज्ञात केलनि तेँ हमहूँ सुनलहुँ जे केओ आदमी एकरा केहुनी मारि देने छल ताहि पर ओ

बाला भोला बाबा लग गोहारि करऽ लगलीह - जे हमरा संग एना केलक तकर कहियो नीक नहि हो।

अचानक बड़ जोर सँ हल्ला भेल - सभ दौड़ि गेल! एक आदमी दतमनि तोड़वा लेल गाछ पर चढ़ल छल, पएर डगमगा गेल, गाछ पर सँ खसि पड़ल - बेहोश अछि - ओ युवती दौड़ि गेलीह - जरलाहा, भोला बाबा तोरा सजा दऽ देलखुन्ह। एहि हाथ करू, ओहिं हाथ पाउ।

सभ केओ हतप्रभ छल - एहिनो होइत अछि! बासुकी नाथ कें फौजदारी अदालत कहल जाइत अछि जे तुरत न्याय दैत छथि आ बैद्यनाथ बाबा कें दीवानी अदालत कहल जाइत अछि - सुनैत छथि मुदा देर सँ - किन्तु, ई सभ बुझबा मे हमरा समय लागल छल! ओहि क्रम मे एक दिन एकटा योगी भीख मांगऽ आएल। माँ गेलीह भीख देबा लेल - ओ माँ कें देखि कहलक - अहाँ कें एहि बेर बेटा होयत। ओकर नाम अहाँ कृष्ण राखब! ई सिक्का अहाँ नीक जकाँ राखि लियऽ! एक बरीस बाद हम आयब तखन अहाँ ओतऽ खायब! - हम माँक बगल मे ठाड़ छलहुँ! माँ नानी कें सभ बात कहलक ! फेर ओ सिक्का कें अपन बक्सा मे राखि देलक!

दुमका मे डॉली दीदी छलीह जे बंगाली छलीह। हुनका सँ हम नाच सीखैत छलहुँ! आमी पहाड़ी झोरना- नुपूर बाजे - करो स्नान नबो धारा जले एशो नीर पबनि - छाया बीथि तले - घटु भर चल चलानि भाई चटुकरे - हमर संग संग दीपक नचैत रहैत छलीह ! कहियो हम दीपक कें संग लऽ कऽ जाइत छलौं! हम खूब बंगला बजैत छलौं! पापा कें सन्थाली सिखेबा लेल मास्टर अबैत छल - हमरा एकेटा शब्द मोन अछि हिज्जू आ। हिज्जू यानी एम्हर आउ - हम सभ चपरासी कें कहैत छलौं - हिज्जू आ - ओ सभ खूब हँसैत छल! ओ सभ एतेक सहज सरल होइत रहय जे किछु बाजि दी हँसैत रहैत छल।

1956-57 मे पापाक बदली भागलपुर होइत सहरसा भऽ गेल। साहेबगंज, दुमका, हजारीबाग, भागलपुर आदि शहरक साँसक संगे आखिर हम सहरसा आबिए गेलहुँ - अप्पन लोकक मध्य, अपन समाजक मध्य, अपन गाम बड़गामक समीप।

पापाक तुरत तुरत बदली होयबाक कारण हमर सभक पढ़ाइ अवरूद्ध भऽ जाइत छल। कतौ स्थिरता नहि रहल! किन्तु, हजारीबाग मे चारि बरीस रहबाक कारण हम ओहिठाम स्कूलक जीवन जीलहुँ, भोगलहुँ आ खूब मस्ती कयलहुँ! पहिने तँ हजारीबागक माउन्ट कार्मेल स्कूल मे हमर नाम लिखायल गेल! कारी रंगक बस अबैत छल जाहि सँ जाइत अबैत छलहुँ! एकटा अनुशासित आ संयमित जीवन !! तखन हम सभ हरनगंज मोहल्ला मे रहैत छलहुँ ! भरि दिन स्कूल मे, साँझ मे मन्नाजी कें कोरा

मे लऽ फील्ड मे घुमाबैत छलहुँ ! हमर सभटा दोस्त खेलैत रहैत छल किन्तु, हम मन्नाजी कें खेलाबैत छलहुँ, ओकरे संग खेलितौ छलहुँ - तखन ओ एक डेढ़ बरिसक बौआ छल! हमरा बच्चे सँ बच्चा सभ सँ प्यार छल! अपन वयसक दोस्त हमरा केओ नहि छल! मामा, पीसी, पीसा सभ सँ भरल विशाल गृहस्थी मे माँ सतत् कार्यरत रहैत छलीह।

दुइ बरीस माउन्ट कार्मेल मे पढ़लाक उपरान्त चौथा मे हमर नामांकन मिशन स्कूल मे लिखा देल गेल! जेँकि हमर छोट बहीन दीपक कें नाम ओहि स्कूल मे लिखाओल गेल छल तेँ माँ पापाक विचार भेलैक दुनू बहीन एके स्कूल मे रहत, संगे जायत-आएत। तखन हम सभ आनन्द टाकीज सिनेमा हालक पाछु सूरज बाबूक मकान मे आबि गेल छलहुँ। अंजूक जन्म ओहि मकान मे भेल छल - बगल मे पावर हाउस रहो छल! ओहि समय जगदीश मामा, गंगेश पंडित जी जिनका हम सभ बाबा कहैत छलहुँ, सभ संगे रहैत छलाह ! - मिशन स्कूल हमरा नीक नहि लगैत छल - दीपक पर तामसो उठैत छल - किन्तु, तामस के एनाय वा कि कोनो बातक विरोध करब तँ हम सभ जानिते नहि छलहुँ!

ओहिठाम पं० रामसागर वाजपेयी जी सँ हम शास्त्रीय संगीत सिखनाइ शुरू केने छलहुँ प्राय: 1952 मे! संगीत शिक्षक बड़ नीक छलाह। नमहर नमहर औंठिया केश गरदनि धरि, नोकगर मोंछ, सुदर्शन गोर चेहरा, माथ पर लाल टीका - हरदम मुस्काइत - पापा हारमोनियम, तबला डुग्गी सभ आनि देने छलाह! बहुत राग रागिनी सीखलहुँ हुनका सँ, किन्तु, एकटा बातक हमरा बड़ अचरज होइत छल। हुनका संग रोजे एकटा तेरह चौदह बरीसक लड़का अबैत छल जे हुनका सँ सटि कें बैसल रहैत छल। मास्टरजी कखनो ओकर कमीजक भीतर तँ कखनो पैंटक भीतर अपन हाथ फेरैत रहैत छलाह! हमर बाल मन हुनक एहि व्यवहारक विश्लेषण नइ कऽ सकैत छल मुदा, हमरा संगीत सँ एतेक प्रेम छल जे हुनक एहि विचित्र आचरण पर साइते धियान जाइत छल -। राग भैरवी मे जे मीराक भजन ओ हमरा सीखौने छलाह आइयो कतै हरमुनिया देखैत छी तँ अपने आप आंगुर चलऽ लगैत अछि - मत जा, मत जा जोगी पाँव पड़ू मैं तोरे - हुनक सिखायल राग रागिनी आइयो मोन प्राण मे गूँजऽ लगैत अछि - कोयलिया बोले अमुवा,... एतनी अरज मेरो कहियो जाय हरि सों, दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी, पग घुंघरू बाँधि, नैनन नीर भरे .... एहेन कतेको गीत सीखैत सीखैत हमरा आब लगैत अछि जे तेँ हमर अन्तर मे उदासीक विस्तृत संसार बैसि गेल होयत - तेँ हम एतेक उदास भऽ गेलहुँ - सोचैत छी तँ एकटा चिर विरहिणी हमर अन्तर मे आकुल नाद करैत रहि गेल - बाल्यकाले सँ कल्पनाजीवी होयबाक कारण हम धरती सँ संगत नहि बैसा सकलहुँ! हमरा कोनो दोस्त नहि छल। बस दोस्तक नाम

पर पापाक विशाल लाइब्रेरी – शरद, बंकिम, प्रेमचंद, यशपाल अज्ञेय रचना आदिक – हमर अप्पन क्षण ओहि मे बीतैत छल! मानसिक तुष्टि भेटैत छल! ओहि काल कोनो ज्योतिषि घर पर आएल छलाह ! हम स्कूल सँ आबि बस्ता रखने छलहुँ तँ पापा अपना लग हमरा बजौलन्हि।

पापाक हम बड़ दुलारू बेटा छलहुँ – हमर हाथ ओहि ज्योतिषि जी कें देखऽ कहलनि! ओ हाथ देखतहि बाजि उठलाह – अरे, ई तँ बड़ पैघ कवयित्री हेतीह। हम नहि बुझि सकलहुँ। हम तँ उपन्यास आ कथाक गलीमे भटकैत रहैत छलहुँ। घर मे सभ हमरा चिढ़बऽ लागल – रजनी कबूतरी बनत – खास कय हमर स्नेहमयी माँ तँ हरदम–

सरिपों, हम सभ दिन पापाक बेटा बनल रहलहुँ। एक राति पापा हरिनंदन ठाकुर आइ.ए.एस., ओतऽ गेल छलथिन! माँ, कीमा बना रहल छलीह। परिवार तँ पैघ छल किन्तु मन्नाजी बड़ छोट आ चंचल छल! नहि जानि कोना ओ भनसा घर मे चलि गेल – कोना ओकर हाथ घी सँ भरल लोहिया मे चलि गेल – घर मे कोहराम मचि गेल। रातुक 9 बजैत छल। घरक मर्द सभ बाहर निकलल छल! सभ कान बाजऽ लागल! हम 9 बजे राति मे बिना केकरो कहने दौड़ि गेलहुँ ठाकुर चाचा ओतऽ। करीब एक डेढ़ किलोमीटर दूर हुनकर घर छल। हमरा एहेन डरपोक कें तखन कोनो डर नहि भऽ रहल छल! आँखि मे मन्नाजीक छटपटाइत चेहरा आ कान मे माँक हाक्रोश करैत स्वर – हम हफसइत पहुँचलहुँ। तुरत पापाक संग कार सँ घर आबि मन्ना कें लऽ हम आ पापा डाक्टर ओतऽ गेलहुँ! कतेक दिन धरि मन्नाजीक तरहथ घाह सँ कारी रहल।

आब अंजू सेहो डेगाडेगी देमय लागल छलीह! एतेक सुन्दर अंजू छलीह जेना कोनो परीक अवतार हो! हमर सभक घर आब मीठापुर तलाब लग चलि गेल! बड़का क्वार्टर पापा के भेटल छल! तीन अफसरक क्वार्टर आ तीनो मिलाय बड़का कम्पाउन्ड! फूलपत्ती लॉन सभ सँ सजल धजल! मिशन स्कूल जाइत काल रास्ता मे चन्दर बाबू नानाजीक घर भेटैत छल! हम, दीपक, लीलाबतीक संग स्कूल जाइत छलहुँ पैएरे! कहियो चपरासी सायकिल पर आगू पाछू बैसा दुनू बहीन के लऽ जाय, कहियो लीलावती संग! नाना जी एकदम अप्पन नाना जकाँ रहथि। पाँच टा बेटा हुनका छल! सभ सँ जेठ बेटा विनय मामा रहथि! हुनका बेटा भेल छल – मामी बड़ सुन्दर छलीह – स्वभावो बड़ मृदु – बच्चा जहिया सँ जन्म लेलक हम सभ स्कूल जाइत काल एक बेर घर मे हुलकी मारि लैत छलहुँ। घुरैत काल सेहो – हुनकर छोट बेटा छलाह सुबोध बाबू जिनका सभ बच्चा कहैत छलियानि! हाफ पैंट पहिरने गोर नार सुन्नर सन! मुदा, हमरा सभके देखिते भौंह चढ़ा लैत छलाह – ई सभ हरदम किएक

चलि अबैत अछि। नवजात शिशुक देखबाक तीव्र आकांक्षा हमरा सभ कें हुनक देहरि सौंपि लेल विवश कऽ दैत छल! मुदा हमरा सभकें मानैत सभ रहथि! बगले मे रमाकान्त चाचा रहैत छलाह –

स्कूल सँ घुरैत छलहुँ तँ अंजू गेट लग खेलैत भेटैत छल! बुढ़िया दाइ ओकरा खेलबैत रहैत छल । हमरा देखिते दी – दी बजैत हँसैत दौड़बाक उपक्रम करैत छल आ खसि पड़ैत छल। तखन हम अपन जीवनक पहिलुक कविता लिखने छलहुँ– प्राय: [illegible]क गप्प होयत जे 56मे बालक पत्रिका मे प्रकाशित भेल छल–

'अंजू एक सरल बाला है'.....

बच्चा सँ मोन आ हृदय पर कतेक तरहक प्रभाव पड़ैत रहल स्थितिक, परिस्थितिक। साहेबगंज सँ दुमका आ फेर हजारीबाग – मानसिक विकास हमर होइत रहल। स्कूल हम सभ नियमित रूप सँ जाइत छलहुँ। बड़ मोन लगैत छल – यदि घर सँ पहुँचैत छलहुँ तँ स्कूलक बड़का बिल्डिंग कें तीन चक्कर लगबऽ पड़ैत छल। किन्तु, गणितक शिक्षिका, आदिवासी आ कि क्रिश्चियन, कारी खट खट – ओकर हाथ मे पातर सन बाँसक छड़ी साँप जकाँ जीह लपलपाइत – कखन केकर तरहथी भेटल सटाक् – सटाक्।

हिसाब मे हम कमजोर छलहुँ, साहित्यक दुनिया मे घूमऽ वाली – कल्पना मे उड़यवाली जिनगीक यथार्थ बुझवाक प्रयत्नो नहि करैत छलहुँ! कतेक बेर हमर कोमल तरहथ ओकर छड़ीक शिकार बनल छल! आ हमर मन गणित सँ आओर दूर भागि जाइत छल – लीलावतीक पिता ग्रो मोर फूड आफीसर छलाह, परिवारक सदस्य जकाँ। दीपकक छुट्टी टिफिन मे एक बजे भऽ जाइत छल हमरा दुनू गोटेक चारि बजे। घर पहुँचैत पहुँचैत साढ़े चारि बाजि जाइत छल! हरनगंजक बाद आनन्द भवन सिनेमा हॉलक पाछू फेर मीठा तालाब दिस सरकारी क्वार्टर मे आबि गेल रही! सिनेमा हालक दरबान सँ हमरा सभकें दोस्ती भऽ गेल छल। ओ नेपाली दरबान भरि दिन स्टूल पर बैसल स्वेटर बुनैत छल आ ओकर कनियां फिल्मी हिरोइन जकाँ सिंगार पटार कऽ ओकर चारू कात मंड़रावैत रहैत छलीह! हमरा सभ जनानी जकाँ कहियो कोनो मरद कें स्वेटर बुनैत नहि देखने छलहुँ! अस्तु, हमरा लेल ई सभ कौतुकक विषय छल!

मिशन मे नामांकनक बाद ओ पहिलुक गर्मी छुट्टी छल! एक मास बाद स्कूल खुजल! हमरा सभकें स्कूल जयबाक छल! एतेक दीर्घकाल धरि अनुपस्थित रहबाक उपरान्त स्कूल जएबा मे भय होइत छल! गणित शिक्षिकाक लपलप करैत बेंत मोन पड़ि गेल! हमहू सभ तँ बच्चे छलहुँ! छुट्टीक अर्थ छल रवि व नहि तँ पापा जखन दूर पर कत्तौ जाइत छलाह तँ हमरा सभकें स्कूल सँ बजबा लैत छलाह!

लीलावतीक जी सेहो काँपि रहल छल। गणित शिक्षिका पुछतीह एतेक दिन सँ कतऽ छलहुँ तँ की उत्तर दितहुँ? दीपमालिका छोट छलीह, जे कहैत छलहुँ आज्ञाकारिणी जकाँ मनैत छलीह! आखिर हम लीलावती विचार कऽ निर्णय लेलहुँ आ हम सभ आनन्द भवन सिनेमा दिस चलि देलहुँ। ओहि नेपाली दरबान लग हम सभ स्वयं कें सुरक्षित बुझैत छलहुँ। हम सभ ओहि ठाम खेलैत रहैत छलहुँ! ठीक एक बजे दीपक कें घर पठा दैत छलहुँ। ओहि आस पास हम लीलावती रहैत छलहुँ आ थाकल हारल छुट्टीक बेर घर पहुँचैत छलहुँ! एतेक टाक परिवार मे ककरो ई पुछबाक फुरसत नहि रहैत छल कि आइ की सभ पढ़ाइ स्कूल मे भेल?

बस्ता राखितें भूख लागल – भूख लागल हल्ला करैत ड्रेस बदलवा लेल चलि जाइत छलहुँ। सभ केओ-हे जलखै दियौ रजनी के –आ सभ बहीन, नानी, मौसी, बाबा केर दयाक पात्र बनि जाइत रही – आ हुनका सभक सिनेहक आवेशक भोग भोगैत रही।

करीब करीब एक हफ्ता बीति गेल! ओहि नेपाली दरबानक वात्सल्यमय छत्रछाया मे हम सभ नाना प्रकारक खेल खेलैत अपन दिनचर्या जारी रखने छलहुँ! किन्तु, राति मे जखन बिछान पर जाइत छलहुँ एहि असत्य जीवन सँ अपना आप पर ग्लानि होइत छल ! मन होइत छल पापा कें सभ बात कहि दी – पापा हमर दोस्त छलाह – किन्तु, एतेक दिन बीतलाक उपरान्त साहस नहि होइत छल! एतेक पैघ असत्यक बोझक अवसाद हमर बाल मोन सहि नहि पाबि रहल छल! एकटा अव्यक्त बेकलता सदिखन, आखिर कहिया धरि –? आनन्द छल तँ गणित शिक्षिका सँ मुक्तिक!

मुदा, प्रत्येक भूठक अंत होइत अछि – असत्य असत्ये थीक – हमरो सभक कृत्यक पर्दाफाश भऽ गेल। क्रम चलिए रहल छल – दीपक सेहो एतेक चुप, एतेक आज्ञाकारिंणी अनुजा जे केकरो लग कहियो किछु नहि बजलीह। प्राय: ओकरो पढ़ाई सँ मुक्ति पाबि आनन्द अबैत होयत। एक दिन पापा कें रजरप्पा जयबाक प्रोग्राम बनि गेल! अचानक बनल टूरक प्रोग्राम छल! ओ तुरत गंगेश पंडित जी कें पठा देलन्हि हमरा सभ कें आनबा लेल! बुझल गप्प छल। स्कूल मे क्लास टीचर बजलीह – ओ सभ तँ गर्मी छुटीक बाद आइ धरि स्कूल नहि आएल अछि!

बाबाक माथ ठनकल– सौंसे घर कें चकविदोर लागि गेलैक। आखिर ई सभ रोज जाइत कतऽ अछि –? अर्दली चपरासी लग नहि बाजल गेल। जेम्स बांड जकाँ बाबा गली गली हमरा सभक खोज करऽ लगलाह! दिनक बारह बजैत छल! हम तीनू ओहि समय एक्कट दुकूट खेलैत छलहुँ। गोटी फेकि एक घर उछललहुँ कि यमदूत

जकाँ बाबा सामने ठाढ़ छलाह! – चेहरा पर विजयी मुस्कान हमरा सभकें रंगल हाथ पकड़ि लेबाक, सेन्ह मारैत चोर कें पकड़वाक उल्लास, कुटिल मुस्कान हमरा सभकें घर मे मारि खुआबैक, आ त्रिभंगी चेहरा नेने दुनू बहीन कें आगू पाछू – सायकिल पर बैसाय हिटलर जकाँ बाबा उड़ि गेलाह।

सौंसे घर हमरा सभकें देखि स्तब्ध छल! पापा घर मे बेचैन जकाँ एम्हर ओम्हर घूमि रहल छलाह, माँ भनसा घर मे पापाक क्रोध सँ भयभीत, मौसी, मामा, पीसी सँ भरल घर आ सभक चेहरा पर प्रश्नवाचक चिन्ह। हमरा प्रति जे आदर प्रेम सभक हृदय मे छल, धूमिल भऽ गेल छलैक! हम अपनहि दृष्टि मे छोट होमय लगलहुँ, मुदा, सत्यक सूरज हमर हृदयाकाश मे शनै: शनै: उदित होमय लागल।

कतऽ जाइत छलें – स्कूल किएक नहि जाइत रहें एतेक दिन सँ – पापाक क्रोध हुनक स्वरे सँ नहि वरण तनक रोम रोम सँ नि:सृत भऽ रहल छलैक।

पापा – हम मुड़ी निघुरौने स्थिर स्वर मे बजलहुँ – गर्मी छुट्टीक उपरान्त, एतेक दिन बाद स्कूल गेलहुँ किन्तु, गणित टीचरक डर सँ गेटे पर सँ घुरि गेलहुँ।

कथीक डर – पापाक क्रोध मे हवाक किछु नमी छल।

पपा, गणित टीचर बड़ मारैत अछि – हमरा सभके भेल जे गणित टीचर पूछत – एतेक दिन सँ अहाँ कतऽ रही – स्कूल किएक नहि अबैत छलहुँ – आ हम पुक्का पाड़ि कानऽ लागलहुँ।

साँचक आँच पापा पर पड़ल – तो हमरा कियेक नहि कहलऽ? अपन माँ कें कियेक नहि कहलऽ।

गलती भऽ गेल पापा – बिलखैत हम बजलहुँ – पापा हमरा गर सँ लगा लेलनि। – हमर बेटा अपन गलती मानि लेलीह – एहि सँ पैघ किछु नहि! बेटा, पैघ सँ पैघ गलती भऽ जाय जिनगी मे, मुदा झूठ कहियो नहि बाजब। जे झूठ बजैत अछि अपने दृष्टि मे हरदम खसल रहैत अछि! एक झूठ कें नुकाबऽ लेल कतेक झूठ बाजऽ पड़ैत छैक आदमी कें – ओहि समय पापाक बात हम कतेक बुझलहुँ ई तँ मोन नहि अछि, मुदा, पैघ हेवा पर हुनकर बात सभ समय समय पर सत्यक सूरज जकाँ चमकि बाट देखबैत रहल!

आ फेर पापा हमरा आ दीपक कें कार पर बैसाय स्कूल दिस विदा भेलाह! हमर हृदय तँ पीपरक पतबा सरीखे डोलि रहल छल भय सँ। गणित शिक्षिकाक श्यामवर्णी कठोर चेहरा, हाथ मे लपलपाइत भुजंग सन बेंतक स्मृति मोन कें हताश निराश बना रहल छल। मुदा, पापा हमरा सभकें लऽ कऽ सीधे प्रिंसपलक चैम्बर मे ढुकि गेलाह! ओ गोर नार उज्जर धप्प धप्प अंग्रेज मेम बड़ नीक, बड़ हँसमुख छलीह।

पापा हमर सभक सभ बात हुनका कहलनि, संगे गणित शिक्षिकाक कठोर व्यवहार सेहो! –ओ हँसैत रहलीह – आ हँसैते अंग्रेजक जमाना सँ हमर मजिस्ट्रेट पापा सँ बजलीह – मि० मल्लिक, कोनो नम्हर छुट्टी होइत छैक तँ – खुजबाक दिन बच्चा सभ केँ स्वयं स्कूल पहुँचएबाक चाही। ई सभ डर स्वयं समाप्त भऽ जायत।

हम दुनू बहीन बड़ खुश भऽगेलहुँ। केओ तँ हमर पापाक हुनक गलतीक अनुभूति कराय देलक –किन्तु पापा बड़ विनम्रता सँ बाजल छलाह – सौरी, ई हमर गलती छल, आब हम बुझि रहल छी –

आ पापाक इएह विनम्रता हमरा मे एतेक भरि गेल जे गलती तँ कात जाय, हमर गलती नहियो रहैत अछि तैयो हम हरदम माफी मांगबा लेल तत्पर रहैत छी चाहे ओ छोट हो वा पैघ।

फेर हम मिशन स्कूल मे पाछाँ मुड़ि नहि तकलहुँ। तेसर –चारिम दूनू कक्षा मे प्रथम अयलहुँ। रस्सी फानबा मे हजारीबाग कमिश्नरी मे फर्स्ट आयल छलहुँ। गणित शिक्षिका हमरे टा सँ नहि वरन सभ विद्यार्थी सँ विनम्र व्यवहार करऽ लगलीह – हाथक बेंत अलमारीक दोग मे बेजान पड़ल रहैत छल!

पापा बराबर टूर पर जाइत छलाह बेरमो, राँची, रामगढ़, बगोदर, कोडरमा आदि आदि –सभ ठाम डाकबंगला मे ठहरैत छलहुँ। ओहि समय बिजलीक पंखा नहि रहैत छल! कपड़ाक विशाल पंखा, मोटगर नम्हर छत पर लटकल रहैत छल ओकर डोरि देवार मे बनल छोट सन छिद्र सँ होइत बाहर ओसारा पर निकलैत छल ओसारा पर एकटा मजदूर बैसल डोरि हिलबैत रहैत छल, कमरा मे पंखा भुलइत हवा पसारैत रहैत छल –हमरा बड़ दया लगैत छल । ओकर हाथ सँ डोरि लऽ स्वयं झुलाबऽ चाहैत छलौं । ओ कऽल जोड़ि दयनीय स्वर एहिय मे छल–हमर नौकरी चलि जायत––।

एहिना हजारीबाग मे एकटा एहन समय आएल छल जे हम, दीपक, मधु तीनू बहीन ज्वरक चपेट मे पड़ि गेलहुँ – ओहि समय माँ सेहो अस्वस्थ भऽ गेलीह – शरद तखन माँकगर्भ मे छल! हम तीनू बहीन अस्पतालक जेनरल वार्ड मे एक लाइन सँ भरती छलहुँ! माँ ओहि अस्पतालक प्राइवेट वार्ड मे! रमाकांत चाचा हमरासभकें देखबा लेल हरदम आबथि – माँक कारण पापा के कम छुट्टी भेटैत छल – आफिस, माँ आ एक बेर हमरा सभकें, देखनाय! दीपक, मधु हरदम पुछैक माँ कतऽ अछि – किन्तु, माँक बीमारी हम जल्दी नहि बतौने छलहुँ – ओ सभ आओर चिन्तित भऽ जायत! सभसँ पैघ बात छल जे तीनू बहीन मे सँ ककरो ज्वर उतरि नहि रहल छल। पन्द्रह दिन बीति गेल – हमर भीतर माँ केँ देखबाक छटपटी छुटि रहल छल – की

करी – कोना देखी माँ कें – देह मे एक रत्ती शक्ति नहि छल। पन्द्रह दिन सँ हम सभ अस्पताल मे बेड पर रही! – तेँ ब्रेड आ फल सँ जे हमर मोन टूटल तँ आइ धरि स्वाद पर नहि आएल अछि।

अस्पताल मे रोजे हम सर्वेक्षण करैत छलहुँ जे कखन मौका लागत हम दौड़ि कऽ माँ कें देखि आएब – अप्पन माँ के – आँखि सँ दहो बहो नोर जाइत छल।

एक दिन दुपहरिया मे नर्स सब ओंघायल एम्हर ओम्हर छल – नीरव तप्त दुपहरिया – अस्पतालक बड़का हाल रौद मे जरि रहल छल! करीब सय डेग पर माँक प्राइवेट वार्ड छल।

एक बेर चारूकात ताकि हम ओहि सुनसान दुपहरिया मे बरंडा सँ उतरि मैदान पार करऽ लागलहुँ। चालि मे एतेक आत्मविश्वास-शक्ति आनलहुँ जे केओ नर्स डाक्टर ई नहि बुझैक जे मरीज जाय रहल अछि – किन्तु, माँकें ओसारा पर चढ़ैत भरभराय कें खसि पड़लहुँ! स्वर सुनतहि पापा सभ दौड़लाह। बेसुध अवस्था मे हमरा उठाय माँ लग लऽ गेलाह! हमर देह ज्वर सँ तप्त छल! किन्तु माँक करेज सँ लागि जेना हमर समस्त तन मन शीतल भऽ गेल छल।

आफीसर सभ फाइलक बीच कतबो मगज दौड़ाबैत रहथि, हुनक पत्नी आ बाल बच्चा कें बड़ मौज मस्ती रहैत छैक पावरक! मुदा ओहि काल बुहत कमे अधिकारी होइत हेताह जे अपन पावरक दुरूपयोग करैत होथि! ई ओहि समयक समाज छल जखन अर्दली, पीउन सभ आफीसरक बालो बच्चाक आगू माथ झुकौने आदर दैत छल।

हजारीबागक केनरी हिल हमर सभक सभसँ बेसी पसिन्न स्थान छल! ओहि समयक एस.डी.ओ. साहबक बेटा बेटी आ हम दीपक जखन मन होइत छल ड्रायवर लऽ कें पिकनिक पर जाइत छलहुँ – ओ बाल पिकनिक होइत छल। चिड़ै चुनमुनी जकाँ प्रकृतिक कोर मे उछलैत फुदकैत। केओ बाघक बोली बाजि डरबैत छल तँ केओ भालूक स्वर मे गुर्राइत छल। साँझ होइत सभ लोक ओहि ठाम सँ आबि जाइत छल किएक तँ निश्चित रूप सँऽ बाघ भालू आखेट लेल निर्बाध निकलैत छल!

सहरसा मे बदली भेलाक बाद हमर सभक सांस्कृतिक रंग रूप सेहो उजागर होमय लागल। सुपौल मे 26 जनवरीक मेला प्रत्येक साल लगैत छल ! एकर सांस्कृतिक समारोह सभ मे देश भरिक कलाकार सभ अबैत छल!

सिंहेश्वर स्थानक मेला आ गुलाबबागक मेला तँ राष्ट्रीय स्तर पर छल किन्तु, सुपौलक ई मेला, बीहरा, पंचगछियाक जन्माष्टमी मेला राज्य स्तरक मानल जाइत

छल! खास कऽ सुपौलक मेलाक संगीत सनक कार्यक्रम मे भाग लेबा लेल देशक मूर्धन्य संगीतकार कें बजाओल जाइत छल! पं० बलराम झा, हमर गुरूदेव पापा सँ आग्रह केलन्हि जे एहि मे भाग लेबा लेल शेफालिका कें आदेश दिऔक!

पापा समाज सुधारक, उदार विचारक परिपोषक छलाह आ सभ सँ पैघ बात जे हमरा मे अनन्य विश्वास हुनक छल! फेर भागलपुर मे जखन पापा लंच मे नहि अबैत छलाह तँ हम सायकिल सँ हुनकर लंच लऽ ऑफिस जाइत छलहुँ। किन्तु, आब ओहि महारथी सभक सोझां हमर गायन - केराक भालरि जकाँ जी काँपि रहल छल। हजार सँ ऊपर दर्शक-श्रोता छलाह - विशाल पंडालक विशाल मंच पर पण्डित जी स्वयं तबला बजा रहल छलाह। हम हरमोनियाँ पर राग यमन अलापि रहल छलहुँ - शंकर भोला नाथ भजोमन-एकटा नहि बच्चीक अंतर सँ गायन सँ बेसी आत्मविश्वास झहरि रहल छल आ ओहि दिग्गज सभक संग प्रतियोगिता मे तृतीय स्थान हमरा प्राप्त भेल छल। मेडल हमरा भेटल छल! हम बुझैत छी जे एहि मेडल मे साइत गायनक महत्व कम आ प्रकांड विद्वान संगीतज्ञक संग, ओहि कालक समाज मे, एकटा लड़की कें मंच पर गायब - ई बेसी महत्व रखने होयत! आ फेर जे सिलसिला आरंभ भेल तँ अंत कतऽ? ओहि समय मिथिलाक समाज मे प्राय: कुमारि बेटी मंच पर नहि अबैत छलीह। बीहरा गामक जन्माष्टमी मेला मे फेर हमर आ दीपकक नृत्य भेल! ओहि समय सहरसा जिला मे एकटा 'जलजला' आ जे मल्लिक साहबक बेटी सभ स्टेज प्रोग्राम दैत अछि! सभ ठाम सँ आमंत्रण आबय लागल।

मनोहर स्कूलक वार्षिक समारोह छल हम आ दीपक नागनृत्य कऽ पुरस्कार जीतलहुँ मन्ना जी कतऽ पाछू रहितेक - ओ 5-6 वर्ष के बच्चा छोट सन भाषण देलक - 'एशिया एकटा महादेश अछि जाहि मे एकटा देश भारत अछि। भारत मे कतेको राज्य अछि जाहिमे एक राज्य बिहार अछि। बिहार मे कतेको जिला अछि जाहि मे एकटा जिला थीक सहरसा,। सहरसा मे कतेको ग्राम अछि जाहि मे एक ग्रामक नाम थीक बड़गाम,। बड़गाम मे कतेको लोक छथि जाहिमे एकटा लोकक नाम थीक कृष्ण कुमार मल्लिक- जयहिन्द।'

सहरसा मे बड़ नाम भऽ गेल छल हमर। जेम्हर जाइत छलहुँ लोक प्रशंसा भरल दृष्टि सँ देखैत बजैत छल - देखऽ, इएह थीक मल्लिक साहबक बेटी - पापा सिनेमा अफसर सेहो छलाह। मुदा, हमरा सभ भाय बहीन कें फिल्म देखनाइ मना छल। ओहि समय दूइटा हॉल छल- कृष्णा टाकीज आ बनगाम रोड मे मोहन टाकीज। कहियो काल कोनो नीक फिल्म होइ तँ पापा हमरा लऽ जाइत छलाह अपना संगे। जाधरि पापा माँ नहि पहुँचैत छलाह फिल्म आरंभ नहि होइत छल। कृष्णा टाकीजक

ऊपर मे छोट सन बालकोनी छल जाहि मे दूटा सोफा राखल रहैत छल । हमरा सभ के बैसिते राजा महाराजा सन दूइटा पंखा चँवर जकाँ दूई गोटे होंकऽ लागैत छल। जाधरि फिल्म खतम नहि होइत छल ताधरि दुनू आदमी ओहिना ठाढ़ भऽ पंखा होंकैत रहैत छल। हमरा बड़ दया अबैत छल ओकरा सभ पर किन्तु, ओ सभ अपना कें बड़ गौरवान्वित बुझैत छल। ओहि समय सहरसा कॉलेज बस स्टैंड लग चलैत छल। आजुक सहरसा कालेजक स्थापना पापा अपना कार्यकाल मे करौने छलाह। संगहि को-एडुकेशन शुरु करौने छलाह, जाहि मे छात्रा मे सभ सँ पहिने हमरे घर सँ लालदाय, शशि बहीन, सरस्वती दी आदि सभ नामांकन करौलीह।

पहिने सहरसा मे कलक्टर छलाह भगत साहब? मिसेज भगत बड़ सुन्नरि, मृदुभाषिणी छलीह। हमरा बड़ मानैत छलीह। कहियो काल पार्टी सभ मे भेंट होइत रहैत छल। 26 जनवरीक कार्यक्रम पुलिस लाइन मे छल। सभ पदाधिकारीगण परिवारक संग आएल छलाह। जेँकि माँ अस्वस्थ छलीह तेँ पापाक संग खाली हमही गेल छलहुँ। सभ कार्यक्रम समाप्त भेलाक बाद 'म्यूजिकल चेयर' कार्यक्रम आरम्भ भेल। माँक स्थान पर आफीसर पत्नी सभक संग हमही भाग लेलौं । एस०पी० साहब स्वयं ग्रामोफोन बजा रहल छलाह। हुनक पत्नी सेहो बड़ हँसमुख, तेज तर्रार महिला छलीह। छँटइत - छँटइत अंत मे हम तीन गोटे मात्र बचि गेलहुँ। मिसेज भगत, मिसेज एस०पी० आ हम - दूइ टा कुरसी- कलक्टर साहबक पत्नी छँटि गेलीह। आब हम आ एस०पी० साहबक पत्नी। जहिना एस०पी० साहबक पत्नी कुरसी लग पहुँचलीह - एस०पी० साहब रिकार्ड पर सँ सुइया हँटाइ देलथिन - एहि किछ सेकेन्ड मे ओ आगू ससरि गेल छलीह आ पाछा सँ हम कुरसी पर बैसि रहलहुँ।

हम प्रथम भऽ गेलहुँ। हमर पापा गर्व भरल दृष्टि सँ चारू दिस ताकि रहल छलाह- कलक्टर साहब, एस०पी० साहब बधाइ दऽ रहल छलाह - पुरस्कार वितरण कलक्टर साहबक पत्नी केलीह - प्रथम पुरस्कार सुन्नर सन ब्यूटी बॉक्स। दोसर एस०पी० साहबक पत्नी कें देलनि, तेसर कलक्टर साहब स्वयं अपन पत्नी कें देलनि। सुन्नर सन पैकेट मे ऊन आ काँटा। भगत साहबक बाद श्रीवास्तव साहब कलक्टर भऽ कऽ सहरसा एलाह - हुनकर बेटी उषा हमरे सभक आयुक छल ।

मोन करोट लेलक। पटना पहुँचबाक क्रिया प्रक्रिया ध्यान मे आबि गेल .. .... भोरे भोर जहाज सँ पटना उतरि पापा हमरा सभकें लोअर रोडक कोनो होटल मे राखि अपने पीसा जी कें खोज करय चलि गेलाह जिनक भरोसे हमरा सभ कें पटना अनने छलाह! होटलक अंगना मे चूल्हा बनल छल, हम पन्द्रह दिनक बच्चा कें रखलहुँ तँ माँ कोहुना खिचड़ी बना देलीह! हम सभ भाइ बहीन कें खुआ देलहुँ। सेन्ट्र

बेर-बेर बाहर भागि जाइत छल किएक तँ हम सभ समान जकाँ ओसारा पर पड़ल छलहुँ, मन्ना जी कनिक बुझनुक भऽ गेल छल। ओ ऊँच बक्सा पर बैसि सभटा देखि रहल छल। पाछाँ सँ पीसा जी एलाह आ पापा पर बरसऽ लगलाह- ई कोन तरीका छैक सभ कें उठा कें लऽ अनने छह? हम की धर्मशाला खोलने छी? - माँ घोघ तानि कात भऽ गेल छलीह! लोक बाग आबि जा रहल छल! सभक उत्सुक दृष्टि हमरा सभ पर खसैत छल जे कोन परिवार थीक जे लबारिस समान जकाँ एहिठाम पड़ल अछि?

पीसा जी बजैत-भुकैत किम्हरो बिला गेलाह कि एकटा सुन्दर सुदर्शन व्यक्तित्वके स्वामी आबि माँक चरण स्पर्श केलक - भौजी, अहाँ सभ एतऽ की कऽ रहल छी ? अखन लाल भाय सँ भेंट भेल छल तऽ जानलहुँ।

आ लगले पाँच छह टा रिक्शा अनलनि। हमर सभक सामान रिक्शावलाक सहायता सँ स्वयं रिक्शा पर राखऽ लगलाह। सभ भाई बहीन भरि दिन मे थाकि कें झामर भऽ गेल छलहुँ - माँ पशोपेश मे छलि पापा नहि छथि की करी नहि करी -? तावत पापा आबि गेलाह आ हम सभ मुस्सलहपुर हाट आबि गेलहुँ हुनकर बड़का घर मे। भगवान कोनो मंदिर मस्जिद मे नहि रहैत छथि बल्कि आदमीक अन्तरे मे छथि। तखन तँ विनोद चाचा भगवान बनि आबि गेलाह हमरा सभकें नर्क सँ उबारि लेलनि। धराह संबंध सँ चाचा लगैत छलाह राक ओ स्वयं विद्यार्थी छलाह-आ हुनक बड़का घर विद्यार्थी सभक लॉज जकाँ छल। सभ विद्यार्थी यूथ फेस्टीवल लेल एक मासक हेतु दिल्ली गेल छल! यानी एक मासकें चैन हमरा सभ कें भेटल-

फेर तेँऽ एकटा नम्हर जीवन यात्रा रहल! पापाक संगे सभ भाइ बहीनीक जीवट भरल कथा। पापाक पोथी 'अमृतमय जीवन की ओर' प्रकाशित भऽ चुकल छल! कोनो कोनो आदमी द्वारा ओहि किताब कें ट्रेन मे, बस स्टैंड मे, बेचल जाइत छल आ ओकर पाइ सँ चाउर दालि कीनि हमर सभक गुजर बसर होइत छल! पापा सभ दिन लुटबैत रहि गेलाह! कहियो कोनो बैंक बैलेंस नहि अपना लेल!

देखिते देखिते एक मास बीति गेल। विनोद चाचा हमरा सभ कें साठि रूपैया मासिक गोलकपुर मे तीन कोठरी बड़का हाताक संग मकान दिआ दलन्हि। विशाल कारी गेट ओहि पर विशाल नीमक गाछ अपन नम्हर नम्हर बाँहि पसारि झूमैत रहैत छल! एकटा चौकी, एकटा छोट सन कुरसी, एकटा छोटका टेबुल चाचा देलन्हि। लोक कहैत छथि संबंधी - रिश्ता नाता - सहोदर भाइ बहीन - पीती पितिआइन ई सभ खाली कहबी थीक - जे दुख मे काज दैक वएह तँ सहोदर छथि वास्तविक

अर्थ। विनोद कका कोन सहोदर भाइ छलाह? जिनका हम सभ पहिने कहियो नहि देखने छलहुँ।

बड़गाम सँ पापाक विरासत मे भेटल एकटा टूटल सायकिल जकर दुनू पहिया अलग अलग छल! अपन कार छल ऑस्टिन जे पेट्रोलक अभाव मे घर मे शान बनि ठाढ़ रहैत छल! पापा दौड़ धूप करबा लेल ओहि सायकिल कें जोड़ि-जाड़ ठीक करा लेलनि! एकटा दबंग आ ईमानदार आफीसर रहबाक कारण पापाक अफसर दोस्तक विस्तृत संसार छल! चीफ सेक्रेटरी सँ लऽ कऽ सभ आइ०ए०एस० आफीसर पापा कें बड़ मानैत छलाह -! एक भोरे पापा सचिवालय लेल निकलैत छलाह सायकिल सँ, भरि दिन सभक आगू-पाछू करैत अपन अस्तित्वक लेल! साँझ कें थाकल हारल अबैत छलाह आ परिश्रान्त सन ओसाराक सीढ़ी पर बैसि जाइत छलाह! हमरा आ दीपक कें कहैत छलाह - कनि नाच करू दुनू बहीन।

आ फेर दुनू बहीन - आमी पहाड़ी झोरना रूनझुन नुपूर बाजाय - कोरो स्नान नबो धारा हमरा सभकें लगातार नृत्य करबा सँ पापाक तनाव खत्म होइत छल। फेर हमरा समीप बैसाय बजैत छलाह - बेटा जब संतान पैघ भऽ जाइत अछि तँ पिताक दोस्त भऽ जाइत अछि - तों हमर दोस्त भऽ गेलऽ! तोरा सभ कें एतेक कष्ट उठबैत देखि हमर हृदय कुहरैत रहैत अछि!

पापा, हम तँ अहाँ कें आ माँ के देखैत छी तँ लगैत अछि कोना अहाँ सभक दुख दूर करी - सीढ़ी पर बैसल पिता पुत्री एक दोसराक दुख कें ओढ़ैत रहैत छलौं आ सुखक सुखद रश्मिक स्वप्न जाल बुनइत रहैत छलहुँ।

एक दिन पापा कें घुरबा मे साँझ सँ राति भऽ गेल - राति बीतल जा रहल छल, पापा नहि अयलाह! सभ भाइ बहीन सुति गेल छल! हम आ माँ जागि रहल छलहुँ! ओसारा पर नानी सुतल छलीह आ बुढ़िया दाइ! बुढ़िया दाइ मधुक जन्म सँ हमरा सभ लग रहलीह। जवान सँ बूढ़ भऽ गेलीह। ओहो औंघाइत पुछैत छलीह - एलखिन डिप्टी साहब -? पहिलुक बेर अपना पर बेटी होयबाक आक्रोस भेल जे आइ बेटा रहितहुँ तें अड़ोस-पड़ोस सँ जाकए पुछितहुँ... दस बजे राति मे पापा एलाह सायकिल कें हाथ सँ ठेलैत ठालैत - दुनू केहुनी छिलल, ठेहुना लहुलहुआन। बेसी अन्हार भेलाक कारण पापा रास्ताक खाधि नहि देखि सकलाह आ ओहि मे खसि पड़लाह। सड़क एकदम सुनसान छल - ओहि समय डाकबंगला सँ लऽ कऽ सेक्रेटेरियट धरि एकदम जंगल सन रस्ता छल - बहुत देर सँ उठबाक प्रयास कऽ रहल छलाह कि केओ ओम्हर सँ जा रहल छल। पापाक कुहरब सुनि ओ खाधि सँ

पापा कें निकाललक – ओहिठाम सँ टूटल सायकिल कें गुड़काबैत गुड़काबैत गोलकपुर पहुँचलाह।

माँ जल्दी-जल्दी गरम पानि सँ पापाक घाह धोबय लगलीह आ हम भगवानक फोटो लग जाय हिचुकि हिचुकि कानऽ लगलहुँ – भगवान हमर पापा कें कथीक सजा दऽ रहल छी?

माँ अपन गृहस्थी बसेबाक पुनर्प्रयास मे लागल रहैत छलीह! कहियो अमृतमय जीवन की ओर बेचि कें तँ कहियो परबल मिठाइ पापा सँ नुकाय माँ बचकए। मैदाक परवल मिठाईयाँ बनवैत छलीह, ओहि मिठाई कें हमर नोकर गुन्नी गांधी घाट लग जाय बेचैत छल। आ ओहि पैसा सँ घर चलैत छल! कहियो भात दालि नहि होइत छल तँ माँ मूढ़ी मंगबैत छलीह! दरवज्जा बंद कऽ एकै बरतन मे सभ भाई बहीन पापा माँक संग मूढ़ी फाँकि पानि पीबी सुति जाइत छलहुँ।

नोकरी सँ रिजाइन करवाक पहिनहि सहरसे मे पापा लालदायक विवाह ठीक कएलन्हि भगवानपुर फैटकी निवासी श्री रमेश नारायण सँ। लालदायक विवाह सँ हमरा सभ बड़ खुश छलहुँ जेना अपन ज्येष्ठ बहीनक विवाह भऽ रहल हो। ओना पापाक संस्कृति मे पितिऔत, पिसिऔत, मसिऔत किछु नहि छल, सभ सहोदर भाइ बहीन। लालदायक वियाह जगन्नाथपुर मसूरिया सँ भऽ रहल छल। ई साइत सत्तावनक वर्ष होयत। सुन्दर भैया आ नीलम बहीनक वियाह मे पापा हमरा सभ बहीन कें लाल रंगक सिल्क साड़ी देने छलाह आ लालदायक वियाह मे हम सभ बहीन यानी शशि बहीन, अरुण, श्यामा, रामा, लल्ली सभ बहीन कें कारी साड़ी, सोनाक रंगक पाढ़ि आ बड़का आँचर जरी सँ काम कयल देने छलाह।

ओहि समय वियाह दान सभ मे छौंड़ी सभ नूए पहिरैत छल। लालदायक वियाह मे फेर पीसी माँ संग हम सभ वियाह सँ सात आठ दिन पहिने मसूरिया चलि गेलहुँ। आ जेना होइत छल माँ पापा वियाहक एक दिन पहिने अबैत छलाह। बरिआती विदा हेबाक उपरान्त चलि जाइत छलाह।

ओहि समय हम मैट्रिकक परीक्षा देने छलहुँ जेँकि हम चौथाक बाद मैट्रिक छलांग मारने छलहुँ तेँ अनुभव ग्रहण करबा लेल हमरा कुसुम आ भाइजीक संग मैट्रिकक परीक्षा मे बैसा देल गेल छल। गृह विज्ञानक परीक्षा हमर नीक नहि गेल छल। सभ विषय मे प्रथम श्रेणीक अंक आबि जाइत छल किन्तु गृह विज्ञानक थ्योरी मे कतबो जोड़ैत छलौं प्रथम श्रेणी नहि आबि रहल छल। पापाक केओ चमचा पापा सँ बाजल-गृह विज्ञानक कापी कतऽ गेल छैक से हमरा पता अछि। जहाँ हमरा रौल नम्बर दियऽ, हम ओकरा कहि देबैक। आ ओ हमर रौल लऽ कऽ गेल। ओहि विषय मे

द्वितीय श्रेणीक कोन कथा हम सीधे फेल कऽ गेलहुँ। लालदायक वियाह मे रिजल्ट निकलल छल। घर मे हल्ला भऽ गेल-नारायण जी पास कऽ गेल, कुसुम पास कऽ गेल, हमरा विषय मे केओ किछ नहि बजैत छल।

मात्र तेरह वर्षक आयु मे परीक्षा देने छलहुँ, हमरा जिनगीक कोनो अनुभव नहि छल। फेल पास किछु नहि बुझैत छलहुँ। जखन मनोहर स्कूल सँ फार्म भरैत छलहुँ तँ हेडमास्टर साहब पापा सँ कहलनि-एकर आयु बड़ कम लिखि रहल छी-एतेक घटा कें नहि लिखू।

ताहि पर पापा सँ पहिने छोटा भाय यानी मोहन जी कहऽ लगलाह-एकर जन्म 9 अगस्त 1943, भागलपुरक बंगाली टोला मे शरदचंद्रक घरक बगल मे, 10 बाजि कें पचास मिनट पर भेल छैक-ताहि हिसाब सँ तेरह बरीस दुइ मास एकर वयस भेलैक।

कनिटा आयु बढ़ा दिऔक-हेडमास्टर साहब कनि धकमकाइत बजलाह।

शेफालिका हमर पहिलुक संतान थीकीह। हम एकर आयु घटा-बढ़ा कें झूठक न्यों पर भविष्यक महल नहि ठाढ़ करब। पापा कें झूठ सँ बड़ घृणा छल। हमरा मोन पड़ि गेल हजारीबांगक ओ दिन-पापा कलकत्ता सँ बड़ सुन्दर काँचक शरबत सेट अनने छलाह। ओहि सेट कें शो पीस बनाय कँ सजायल गेल। एक दिन कोना ने कोना एकटा गिलास हमरा सँ टूटि गेल। सौंसे घर स्तब्ध भऽ गेल आब की होयत। सभटा पीसी डरि गेलीह आब गोपाल जी आफिस सँ आओत तँ की जबाब देब। नानी बाजऽ लगलीह-बड़ चंचल छैक मुन्नी। कहियो शांत भऽ चैन सँ नहि बैसैत अछि।

माँ बजलीह कोनो बात नहि छैक। हम कहि देबैक जे हमरा सँ टूटि गेल।

हम सभक बात सुनि रहल छलहुँ, संगे अपना आप पर तामस उठि रहल छल। प्रत्येक दिन पापा लंच मे घर अबैत छलाह।। ओहि दिन जहिना कारक अबाज सुनलौं, दौड़िकँ बाहर चलि गेलहुँ- पापा हमरा सँ एकटा गलती भऽ गेल-की भेल बेटा?

पापा, अहाँ जे शरबत सेट अनने छलहुँ तकर एकटा गिलास हमरा सँ टूटि गेल-आ पापाक हाथ पकड़ने-पकड़ने हम कानऽ लगलहुँ-पापा हमर माथ पर हाथ फेरैत बजलाह-बेटा, अहाँ साँच बाजि अपन गलती स्वीकार कऽ लेलहुँ एहि सँ बढ़ि किछु नहि भऽ सकैत अछि। अपन गलती खाली महाने व्यक्ति स्वीकार कऽ सकैत अछि- आ ओ एकटा घटना, पापाक एकटा बात हमर जिनगी बनि गेल।

वियाहक हबगब मे मैट्रिक पास होयबाक बधाइ सभ भायजीकँ दऽ रहल

छल। हमरा लेल सभक दृष्टि मे दयाक भाव छल। हम अपन संगी लल्ली यानी गुलाबजल सँ पुछलहुँ- गुलाबजल हमर रिजल्ट लेल केओ किछु नहि बाजि रहल छैक? गुलाबजल बजलीह-हमरा लगैत अछि अहाँ पास नहि केलहुँ तेँ केओ किछु नहि बजैत छैक।

तँ आब हमरा की करबाक चाही। हमरा तँ किछु समझ मे आबिते नहि अछि-गुलाबजलो तँ बेदरे छलीह, हमरा सँ छह मास छोट।

ओ बजलीह-हँ, गुलाबजल सभ केओ अहीं कें ताकि रहल अछि- आंगनक दोसर छोर पर एकटा छोट सन झोपड़ी छल अन्हार गुज्ज टाटक घर। ओहि मे एकटा चौकी पड़ल छल। ओहि ठाम हमरा लऽ जाकऽ बैसाय देलीह- अहाँ फेल कऽ गेल छी। अहाँ कें कानबाक चाही।

किन्तु, हमर आँखि मे नोर नहि आओत-हम कोना कानब?

एक काज करू गुलाबजल-लल्ली हमरा बुढ़िया जकाँ समझाबऽ लगलीह-कोठरी मे अन्हार छैक। केओ अहाँकें खोजैत एहिठाम आओत तँ मुड़ी लुधराय कें आँखि पर हाथ राखि 'ऊँ ऊँ' कऽ कानऽ लागब।

हम भयभीत भऽ गेलहुँ-बाप रे एहेन नाटक हमरा सँ नहि होयत- ओ हमरा भरोस देलीह-हम बाहर मे ठाढ़ रहब। केओ आबय लागत तँ हम अहाँकें कहि देब।

ओहि दिन पापा माँ सेहो आबऽ बला छलाह। हम क्षण गिनि रहल छलौं कखन पापा अओताह। ओहि अन्हार काल कोठरी मे सजा भोगैत कैदी जकाँ हम बैसल छलौं सभ केओ अहीं कें ताकि रहल अछि गुलाबजल शुसुर फुसुर बजैत कहलीह--हे गे! रजनी कतऽ छैक? देखलीह रजनीकें आ हम हाथ मे मुड़ी नुकाय ऊँ ऊँ कर' लगैत छलहुँ। क्रम चलैत रहल गुलाबजल संग दैत रहलीह आ हम दुखी हेबाक नाटक करैत रहलहुँ।

साँझ मे पापा माँ। हुनका अबितहि-हमर खोज शुरु भऽ गेल। ओहि दिन लालदायक कुमरम छल। पापाक एबाक नाम सुनतहि हम खुशी सँ उछलि गेलहुँ। किन्तु मोन डर सँ धड़कि रहल छल नहि पताह कखन धरि एहि काल कोठरी मे हमरा बैसऽ पड़त? फेल भऽ गेलहुँ तँ कोन एहेन गप भऽ गेल जकरा लेल हमरा कानऽ-बाजऽ पड़ि रहल अछि। गुलाबजल फेर बुझौलनि-एना होइत छैक। दुखी होमऽ पड़ैत छैक। फेल भेनाय कोनो नीक गप नहि थीक।

पापा माँ। अन्हार आर अन्हार भऽ गेल छल। डिबियाक बाती हमरे एलाह जकाँ देहरि पर काँपि रहल छल। की कऽ रहल छी रजनी? पापा हमर माथ पर हाथ

राखैत बजलाह- फेर तँ हम सरिपों कानऽ लागलहुँ- पापा, हमरा गुलाबजल कहलनि-अहाँ फेल भऽ गेल छी। अहाँकें दुखी हेबाक चाही-कानबाक चाही।

पापा ठहाका लगा हँसऽ लगलाह-ओ तेँ तों एहिठाम छें। हमर तेरह बरसक बेटा अनुभव प्राप्ति लेल परीक्षा देने छल ने कि पास हेबाक लेल।

एकर बाद तँ हम बिसरि गेलहुँ सभ किछ। वियाहक विध व्यवहार मे गुलाब, गुलाबजल, संगीत सभक संग उड़ऽ लगलहुँ।

ओतेक सूनसान रातिक निःशब्द बेला मे अतीतक स्मरण सँ अपने आप अधर विहुँसय लागल-फेल आ पास की अर्थ रखैत छल हमरा लेल।

मैट्रिक परीक्षाक सेन्टर दोसर बेर सुपौल पड़ल छल। हम सभ पटना मे आ परीक्षा तँ सहरसे मे छल- विलियम हाई स्कूल सहरसाक सेन्टर सुपौल हाई स्कूल भऽ गेल छल- सहरसा मे जखन छलहुँ तँ सुनैत रही जे कतहुँ सँ पास नहि करैत अछि ओ सुपौल सँ पास करैत अछि! सुपौल नीमतीता छी, नीमतीता- आइ धरि नीम तीताक अर्थ नहि बुझि सकलहुँ- किन्तु ओहि समय हमरा बड़ लाज लागल छल- मुदा सौंसे स्कूलक सेन्टर ओहिठाम छल तँ हम की छलहुँ।

सुपौल मे दीदीया रहैत छलीह हमर तेसर पीसी गुलाबजलक माँ! - बाल बच्चा सभ छोड़ि माँ तँ जा नहि सकैत छलीह किन्तु जाहिठाम दीदीया छलीह ओहिठाम माँक कोन आवश्यकता ? परीक्षा सँ किछु दिन पहिने पापा हमरा सुपौल छोड़ि एलाह - कोनो अज्ञात अदृश्य अभाग्य जेना हमरा गलबहियां देने चलल अबि रहल छल। प्रतिफल, मैट्रिक परीक्षाक मध्य हम बड़ जोर बीमार पड़ि गेल छलहुँ। 100-101 डिग्री ज्वर मे परीक्षा दैत छलहुँ। फर्स्ट सीटींग खतम होइत छल तँ एकटा सुइया हमरा पड़ैत छल आ संगे बार्ली आ बिस्कुट। अपन माँ-पापा सँ दूर स्नेहमयी दीदीया। हुनके लग रही। सभ केओ जखन चहकैत चुहकैत अपन अपन पेपरक बखान करैत छल रंग बिरंगी मुस्कानक इन्द्रधनुष छिटकबैत छल तखन हमर नियाति कम्पाउन्डरक आगाँ अपन अशक्त बाँहि पसारि दैत छल आ बार्लीक घोंट मे हमर इच्छा अपन पिआस बुझबैत छल।

दीदीयाक घर सँ बौआ काकाक घर लगे छल। बौआकाका रोज साँझ मे आबि हमर हाल-चाल पूछैत छलाह। तखन हम नहि जानैत छलौं, बौआ काका 'किसुन जी' एतेक पैघ साहित्यकार छथि। ओहि दिन समाज अध्ययनक परीक्षा। बुखार 102 डिग्री। रोज हम बेड पर सुतिए कऽ परीक्षा दैत छलहुँ। ओहि दिन हम कोना की लिखलहुँ से हमरा किछु मोन नहि छल। मुदा मोन बड़ उदास छल। दलान

पर बइसल सांझ कँ हम चुपचाप उदास, गुमसुम। ज्वर उतरि गेल छल- साइत ओ परीक्षाक बेर हमरा परिश्रान्ते टा करबा लेल आयल छल आ सरिपहुँ हमरा परिश्रान्त कऽ एकटा विजयी योद्धा जकाँ ओ चलि गेल। 'केहन मोन छह रजनी? की बात थीक बड़ उदास, बड़ गुमसुम छह। हमर माथ पर स्नेहक हाथ राखैत बौआकाका बजलाह! स्नेहक एहि सांत्वना मे तीति हम फूटि पड़लौं। हमर रूदन हमर स्वर बनि गेल ... वास्तव मे, परीक्षा हम ज्वर मे कोना कोना देने छलौं - आइछ तँ स्मरण होयद सर्वांग सिहरि उठैत अछि। पापाक पत्र पटना सँ आयल छल दीदीयाक नामे-रजनी बीमार एछि अहि बेर परीक्षा छोड़बा दिऔक- मुदा दीदीयाक जिद्द-मरि जेतैक तें मरि जेतैक मुदा परीक्षा हम नहि छोड़ऽ देबैक। तखन दीदीयाक जिद्द हमरा स्वयं असहज लगैत छल मुदा आइ ओहि स्वर्गवासिनी दीदीयाक लेल सेहो अपरिमित कृतज्ञता सँ भरल छी, जिनक जिद्दक प्रतिफल आइ हम हम छी! ओ दीदीयाक छत्र छाहरि मे हम परीक्षा दऽ रहल छलौं- की सोचैत छह बाजह- कनैत किएक छह- हमर पेपर आजुक नीक नहि गेल- हम बाजि उठल छलौं। हमर माथपर हाथ फेरैत बौआकाका बजलाह की हेतैक? पेपर नहि नीक गेलैक तँ, हम तोरा आशीर्वाद दैत छियऽ तोहर भविष्य बड़ उज्ज्वल छह- बड़ उज्ज्वल। हम तखन बौआकाकाक आंखि मे नहि ताकि सकलहुँ मुदा हुनक स्वरक एक एक कम्प सँ बुझाइत छल जेना ओ भविष्यक गर्भ सँ फुटैत आलोक रश्मि देखि रहल होथि आ हुनक ओहि दिनक बाजल ओ आशीर्वाद जेना हमरा आइ रजनी सँ शेफालिका बना देलक। मैट्रिक मे प्रथम श्रेणियों भेटल आ हम कथा पिहानीक संसार में अपन अस्तित्व कें मेटा स्वयं एकटा अनपढ़ल अनबुझल कथा बनि गेलहुँ। एहि बीच हम बालक, चन्दा मामा आदिमे बराबर छपिते रहैत छलौं।

जीवनक एकटा उदास दुपहरिया मे मन्द समीरण सन बौआ काकाक पत्र आयल छल संकल्प लेल रचना पठएबाक हेतु आ तखन जेना हर्षक नोर रोम रोम सँ छलकि उठल छल। मानव सभ जगह सँ ख्याति, यश, प्रतिष्ठाक पोटरी उठा अनैत अछि मुदा अपने घर मे, अपने परिवार मे ओकर परिचय सभ सँ अन्त मे होइत अछि तखन बौआकाकाक ओ पत्र अपन पहिचान- खुशीक सम्बल बनल छल।

मुदा संकल्पक भार अगुलका पीढ़ी पर सौंपि बौआकाका एहि असार-संसार सँ विदा भऽ गेलाह - बड़ दिन बाद केदार काननक पत्र आयल तखन लागल ओ केदार नहि मुदा बौआकाकाक सूक्ष्म अस्तित्वक प्रेरणा थीक ।

ललित बाबूक बेटी वीणा सेहो परीक्षा दैत छलीह हमरा संगे - जे पाछाँ हमर अभिन्न मित्र बनि गेलीह! कहियो कहियो वीणा अपन पिता ललित नारायण मिश्र जी

संग परीक्षा देमऽ अबैत छलीह तँ चाचा जी हमरो हाल चाल पुछथि आ पीठ ठोकि बाजथि - बहादुर लड़की छह तों जे जर बोखार मे परीक्षा दऽ रहल छह! वीणाक संगे हमरो घर पहुँचा दैत छलाह। गृह विज्ञानक प्रैक्टिकल परीक्षा मे वीणा कें परीक्षा खत्म हेबाक बाद ओकरा लऽ जेबा लेल एकटा अनिंद्य सुन्दरी किशोरी एलीह! हरिहर कचोर बनारसी साड़ी मे लाल पाढ़ि, कान गला मे झिलमिलाइत गहना-जेबर, हाथ मे लाल लाल लहठी भरल,- कोमल काया, आलता घोरल दूध सन रंग - माथ मे सिन्दुर चमकैत - हम अपलक निहारैत रहि गेल छलौं - स्वप्न सुन्दरी कें, के छी ई? परी देशक राजकुमारी ?

वीणा सँ पुछलहुँ - के थीकीह ई ?

हमर काकी छथीन, हमर छोट कका मृत्युंजय बाबूक पत्नी - वीणाक बात सुनि हमरा बड़ अचरज भेल छल - एतेक कम वयसक - एहेन ''प्यारी'' लड़की काकी कोना भऽ सकैत अछि? वीणा हमर परिचय करौलक- ई थीकीह हमर 'बेस्ट फ्रेंड' रजनी- आ फेर अंबिका हमर चाची नहि वरन सखी बनि गेलीह।

परीक्षा खत्म भेल आ हमर ज्वरो खत्म भऽ गेल। प्रैक्टिकल मे आठ दस दिन देर छल। दीदीया हमरा सभके लऽ कऽ सहरसा चलि एलीह ! डाक्टर चाचा लग ठहरल छलहुँ- आ फेर भेंट भऽ गेल कुसुम सँ! किन्तु, ताबत कुसुम केर वियाह माइनिंग इंजीनियर कौशल किशोर सँ भऽ गेल छल । आतुर भऽ कऽ कुसुम हमर हाल पुछैत छलीह- कहियो भेंट भेलह कि नहि हमर भैया सँ - कहियो देखबो केलहक? कतेक उत्सुक प्रश्न कुसुमक छल, मुदा, हम कोना कहितौं अपन छवि कें हम स्वयं समाप्त कऽ देने छी जतेक दिन कुसुम लग रहलहुँ खाली ओकर चर्च करैत रहलीह- हम ओकर भैयाक गप चुपचाप आत्मसात करैत रहलहुँ - हृदयक अनचीन्हार कोन मे किछु किछु होइत रहैत छल जकरा व्यक्त करबाक सामर्थ्य ने काल्हि छल हमरा आ ने आइ हमर लेखनी मे अछि।

परीक्षा खत्म भऽ गेल- हमर सभक संग एकटा लड़की नाम नहि स्मरण अछि परीक्षा दैत छलीह। ओ हरदम बंबई जाकऽ बरोइन बनहीक सपना देखैत छलीह- ओकर एकटा भाइयो छल। प्राय: हमरा सभक संग परीक्षा दैत छल किछु स्मरण नहि अछि। परीक्षा खत्म हेबाक बाद बासा पर आयल आ एकटा कागज हमर हाथ मे देलक जे एहि मे हम लिखने छी जे कापी कतऽ कतऽ जाँचबा लेल जायत। हमरा आश्चर्य लागल जे हम तँ नहि कहने छलौं अपनहि मोने। ओ कागज हम आ गुलाब जल कोठरी बंद कऽ डिबियाक इजोत मे पढ़ऽ लागलौं । किएक तँ कापीक बात अवैध थीक एतबा ज्ञान छल हमरा सभ कें। मुदा, जखन ओ कागज खोललौं तँ ओहि मे हमरा नामे

बड़का प्रेम पत्र छल। कोने प्रेम पत्र पढ़बाक ई प्रथम अवसर छल। दुनू किशोरीक मोन धक-धक करैत छल जेना हम सभ कोनो पाप कऽ रहल छी, कोनो अपराध! अंत मे कॉपी कतऽ कतऽ गेल छल तकर विवरण - मुँह मारू एहेन कापी कें गुलाबजल बड़बड़यलीह आ फेर डिबिया मे सौंसे प्रेम पत्र डाहि देलहुँ। तकर बादो भय छल । ओहि जरलाहा कागज कें माटि मे गुड़ि गुड़ि ओकर अस्तित्व खत्म करैत खिड़की सँ बाहर बाड़ी मे फेकि देलहुँ आ तकर बाद दूनू संगी एक दोसर सँ लिपटि खूब कानल छलहुँ-मुदा, डर होइत छल माटि मे गुड़ल प्रेमयत्रक कहीं गाछ ने भऽ जाय, जाहि मे फूलक बदला खाली हमरा नामक प्रेमपत्र फड़य लागैक, सिहरि जाइत छलौं।

परीक्षा खत्म हेबाक बाद पापा सुपौल आबि हमरा पटना लऽ गेलाह। एहि बीच पटनाक घर मे बड़ अन्तर आबि गेल छल। पापा के०के० एण्ड कम्पनीक लकड़ीक बोर्ड बाहर मे टाँगि देने छलाह। जीपीओक जेनरल पोस्ट मास्टर हमर नानाजी छलाह रामजी बाबू! ओ पापा कें खस सप्लाईक आर्डर दैत छलाह आ पापा के०के० एण्ड कम्पनीक नाम पर ओकर सप्लाई करैत छलाह। पूरा पटना, पूरा पटना कमिश्नरीक पोस्ट आफिस सभ मे- आब पापाक संग हमहूँ जाय लगलहुँ अपन गाड़ी सँ खस सप्लाई करबा लेल दानापुर, आरा- कहियो काल मन्ना जी सेहो संग मे जाइत छल ।

हमर रिजल्ट मैट्रिकक निकलल फर्स्ट डीवीजन सँ सेहो पास कऽ गेलहुँ। पापा माँक खुशीक अन्त नहि छल। हमर प्रथम संतान एतेक नीक रिजल्ट केलक-जेँकि हमर घर गोलकपुर मे छल तेँ मगध महिला कॉलेज मे हमर नामांकन आइ०ए० मे भेल जखन कि वीमेन्स कॉलेज मे सेहो हम चुना गेल छलौं-किन्तु दूर हेबाक कारणे कालेज मे बसक सुविधा नहि छल। पापाक परेशानी सभ सेहो कम भऽ गेल छल खसक सप्लाइक कारणे।

हमरा जहिया सँ स्मृति मे अबैत अछि जे पापा सभ भाइ बहीनी कें अनुशासनक संगे संस्कार देबा मे कोनो कसर नहि छोड़ैत छलाह! खास कऽ सभ सँ पैघ हेबाक कारण हमरा तँ सभ सँ बेसी उपदेश भेटल छल।

हम सभ कहियो माँ कें कोनो बात पर उलटि कें जबाब देने होयब मोन नहि छल। पापाक उपदेश- सब देब देवियाँ एक ओर,ऐ माँ मेरी तू एक ओर।

बाल्यकाल मे चपरासी नौकर के बीच रहितो हमर सभक कर्तव्य छल जे सभकें खेनाय परसि स्वयं खुआउ, अंइठ बासन उठाऽ कल पर राखि दिऔक। राति सभक ओछाओन केनाय, भोरे उठा कें रखनाय- माँ पापा नहबैत छलाह तँ पापाक लूंगी आ माँक साड़ी सभ साफ केनाय- खास कऽ माँक कपड़ा तँ अवश्य खीचैत

छलहुँ - किएक तऽ माँ भगवानो सँ पैघ छलीह। दिन मे कलउ खेबाक बाद बिछान पर पन्द्रहो मिनट लेल अवश्य पढ़ैत छलीह। ओहि समय माँक पैर जातैत छलहुँ। राति मे सुतैत काल माँ पापाक संगे घरक प्रत्येक बुजुर्ग सदस्यक पएर जातैत छलहुँ। अंत मे अपनो पएर धो बिछान पर जाकऽ रामचरितमानस प्रतिदिन तीन चारि पन्ना अर्थ सहित पढ़ैत छलहुँ। दहिना पन्नाक दोहा सँ आरंभ कऽ दहिने पन्नाक दोहा पर खत्म करैत छलहुँ। अपना सँ पैघ आबि जाय तँ उठि कें ठाढ़ भऽ जाइत छलहुँ। हँ, रोज साँझ मे समस्त परिवार मिलि भगवान कें आरती करैत छलहुँ। 'हे समस्त विश्व के पिता हमें प्रकाश दे' तकर बाद अपना सँ पैघ कें पएर छुबि प्रणाम करैत छलहुँ। प्रत्येक शनि कें कीर्तन होइत छल जाहि मे रामकृष्ण मामा आ जगदीश मामाक भजन सभक बड़ महत्व रहैत छल! मामा हरमुनिया पर गबैत छलाह। हम तबला पर संगत दैत छलहुँ। पापा तँ भावविभोर भऽ जाइत छलाह!

सहरसाक सुखमय जीवन मे जखन प्रबल प्रभंजनक वज्रपात हमर सभक परिवार पर भेल तँ खड़िका जकाँ मल्लिक साहबक जमात छिड़िआ गेल! कोना एकटा दोस्त दोसर दोस्तक पीठ मे छूरा मारैत अछि - ई भोगने छलहुँ, देखने छलहुँ हम सभ भाइ बहीन! एहि कारण पापा कें नौकरी सँ रिजाइन करऽ पड़लैक! जे अपन छलाह मिलि बैसलहि आन मे! हम सभ सहरसाक क्वार्टर छोड़ि किछु समान नीकी वीसीक बासा पर छोड़ि बाकी सभ समानक संग मधेपुरा चलि अयलहुँ। चयनिका तखन माँक पेट मे छलीह। मधेपुरा मे सेहो हमर सभक कष्टक अंत नहि छल। ओहि ठाम पहिनहि सँ पाँच छह भाइ बहीन छल। बाबूजी बड़का माँक परिवार पैघ भऽ गेल। मधु दूधक बिनु खाइत नहि छल। सभ बच्चाक अपन अपन हिस्सक छल! मुदा, सभ डेरायल, दबल दाबल - सभसँ पैघ खानदान मे नारायणजी भैया छलाह तकर बाद हमर स्थान छल - भाय जी हमरा सभकें एतेक मानैत छलाह जे कहियो नहि बुझलहुँ जे ओ हमर पितिऔत भाय छथि! लक्ष्मणो तँ एक मायक पेट सँ नहि जनमल छलाह - किन्तु राम बजने छलाह-'अस विचार जिय जागहुँ ताता, जगत न मिलहि सहोदर भ्राता' - सरिपहुँ संबंध - सहोदर ई सभ मोनक भाव थीक - हृदयक निधि थीक। हुनकर मित्र मंडली रमेन्द्र रवि भैया, शीतेन्द्र भैया सबहक बड़का ग्रुप छल जिनक स्नेह छाहरि मे जीनैत रही हम सभ। कनिको उदासी हमर चेहरा पर अबैत छल कि फट सँ समवेत स्वर मे सभ गाबय लागथि - **'रात भर का है मेहमा अंधेरा, किसके रोके रूका है सबेरा - आज गम, कल खुशी है यही जिन्दगी ....'**

पापा पटना मधेपुरा करैत छलाह अपन परिवारक भविष्यक खोज मे! बाबूजी सलाह देलन्हि - सभ बच्चा कें लऽ कऽ बड़गाम चलि जाउ! एतेक पैघ हवेली अछि

ओहि ठाम एतेक जगह जमीन अछि – केओ देखऽ बला नहि।

पापा किछु नहि बेजैत छलाह। पैघ भाईक समक्ष कहियो पापा मुँह नहि खोललनि – ओ पटना गेलाह आ ओहिठाम सँ किछु निश्चय कऽ आबि गेलाह। जीतियाक दिन छल, माँ ज़ीतिया बड़ प्रेम सँ, धूमधाम सँ करैत छलीह। किएक तँ पावनि तिहारि मे पापाक प्रेम आ सहयोग पूर्णतः रहैत छल। नव नव साड़ी, नव चूड़ी, पएर मे आलता, भरि देह जेबर जात। माँ सजि धजि अपन मोहक मुस्कान सँ सभ कें आह्लादित कऽ दैत छलीह। भोरे भोर स्वयं ओटघन करैत छलीह आ फेर पापाक संग हम सभ, बच्चा सभ – ओना ओटघनक बेर पापा बच्चे भऽ जाइत छलाह। – दही – चूड़ा, अम्मट, तरह तरहक मधुर, बड़ी, तरकारी एहि सभसँ ओटघन प्रियतर भऽ जाइत छल। फेर साँझ मे माँ डाला भरैत छलीह–पाँच प्रकारक फल, पकवान, मिठाइ, डोराडोरि, पान, सुपारी, सिन्दूरक गद्दी – पाँच प्रकारक पत्ता सँ जीअल, बाँस आदि क पात सँ डाला कें झाँपि दैत छलीह नवीन वस्त्र सँ। हम बच्चा सभ थपड़ी पाड़ैत छलौं–जीतीया पावनि बड़ भारी, धीया पुता कें ठोकि सुताबी, अपने खाय भरि थारी।

'.....ऊँच घर मंदरक अंदर रहन बारी ऊँचे घर मंदरक अंदर रहाती है। तीनी बेर खाती थी सो बीनी बेर खाती है विजन डोलाती सो वे विजन डोलाती है..'

एकटा अफसरक पत्नीक ई दुर्दशा छल! कोनो बच्चाक मुँह पर हँसी नहि। हरेक समस्याक समाधान पापा हमरा सँ पूछथि! देखतहि देखतहि हमरा मे बुजुर्गियत आबि गेल। फेर चयनिकाक जन्म भेल – पारिवारिक मानसिक तनाव सँ आक्रांत पापा पन्द्रह दिनक चयनीक संग समस्त परिवार लऽ कऽ पटना दिस विदा भऽ गेलाह। एकटा अनजान मंजिल। बीमार माँ, – सहरसा नीकी, दीदीक डेरा पर अयलहुँ– पटनाक घाट बाली गाड़ी साँझ कँ छल। दिन मे नीक जकाँ खेनाइ पीनाय भेल, नीकी दीदीक उत्साह – आशीर्वाद पापा कें भेटल– किन्तु, किछु एहेन अनसोहाँत घटना भऽ गेलैक जे हमरा सभ कें समय सँ कतेक पहिने स्टेशन आबि बैसऽ पड़ल! सहरसा स्टेशन पर हमरा सभकें विदा करबा लेल खाली डाक्टर चाचा आ लल्लू काका एलाह! लल्लू कका बटखर्चा नेने आयल छलाह– रोटी, उसनल आलू, नीमक, मरचाय पिऔज – कतेक पैघ संबल भेटल छल ई बटखर्चा देखि– जे काल्हि तक अप्पन होयबाक दंभ भरैत छलाह ओ सभ नितान्त अपरिचित भऽ गेलाह।

समयक सागर मे ज्वार भाटा अबैत रहल, जाइत रहल। जिनगीक सभ किछु परिवर्तित होइत गेल। हमर कोर मे राजीव, भावना, बंदना, आबि गेल। मोन पड़ैत अछि बड़का भैयाक पत्र जे अमेरिका सँ लिखने छलाह – रज्जी, अहाँक वियाह भऽ गेल। बहुत बहुत आशीष, प्यार अहाँ कें– हँ, एक बात, वियाह भऽ गेल, आब अहाँ फैमिली

प्लानिंगक विषय मे अवश्य सोचब। नहि हो तँ अहाँ लाल मामा (हमर पापा) सँ एहिं विषय मे जानि लेब। हम नहि बुझलहुँ फैमिली प्लानिंग माने की भेल। हम हिनका सँ पुछलहुँ तँ ई मुस्की मारैत बजलाह–अहाँक भैया लिखने छथि। नहि बूझू तँ पापा सँ पुछि लियऽ । जाउ ने पापा सँ पुछू आ तखन जे अेहलनि तँ हम लाज सँ मरि गेल छलहुँ। कारण जे ओहि अन्तर्देशीय में ओ पापा माँ सभकें पत्र लिखने छलाह। सभ केओ हमरा सँ पहिने पढ़ि नेने रहथि – हमरा होइत छल हम कोना ककरा मुँह देखाबी। ओहि ठाम हमरा एतबे ज्ञान छल जे सिन्दूर लगै सँ संतान होइत छैक ताहिठाम–छी: छी। बड़का भैया पर तामस उठल छल– एखनो स्मरण मे अबैत अछि तँ ठोर पर मुस्कीक चिड़ै बैसि जाइत अछि – आइ टीवी, कम्प्यूटर जनमल बच्चा कें वयस्क बना देलक। हमरा घर मे रेडियो छल किन्तु हम सभ सिनेमाक गाना नहि सुनि सकैत छलौं आ ने गयबाक आदेश छल। समाचार समाचार इएह रेडियो छल। जखन कृष्ण कुमार पैघ भेल तँ ओ रेडियो सँ सिनेमाक गीत लगा दैत छल तँ केओ किछु नहि कहैत छल....... हँ, फिल्मक नाम पर पापा नियमित रूप सँ हमरा सभ लेल फिल्म फेयर पत्रिका लैत छलाह– ई पढ़ऽ। एकर अंग्रेज़ी बड़ नीक अछि...

कोन कोन बाध बोन मे जिनगी भागि रहल छल ..... डुमराक एकान्त आ हमर सोच....



पति ललन कुमार वर्मा, ससुर आ सासुक संग– शेफालिका वर्मा

पराधीन सपनहु सुख नाही

......पिता अपन बेटा कें एस०डी०ओ० नहि तँ बी०डी०ओ० देखवा लेल चाहैत छलाह। ओहि जमाना मे, समाज मे, दरोगा आ बी०डी०ओ० क बड़ महत्व छल। हमरा मोन अछि जे हम डुमरा मे छलहुँ – इंदिरा गाँधी सहरसा आबयवाली छलीह- गाँआ सभक एक वर्ग मे तरंग उठल – चल रे चल। इंदिरा गाँधी आबि रहल छैक, देखबा लेल चल।

दोसरा-वर्ग झट सँ बाजल – कोन मार बी०डी०ओ० आबि रहल छैक जे लोक देखऽ जायत?

ओहि समय गामक बूढ़ पुरानक चरण स्पर्श कएला सँ आशीर्वाद दैत छलाह जे तोहर बेटा बी०डी०ओ० बनथि – दरोगा बनथि – लोक गदगद भऽ जाइत छल!

किन्तु, नहि जानि नोकरी नहि करबाक संस्कार हिनका कतऽ सँ आबि गेल छल- माइनिंगक नोकरी, इम्पीरियल टोबेको कम्पनीक नोकरी आदि कें लात मारि आखिर ई आबि गेलाह वकालत मे अपने मोने! पिता नाखुश छलाह बेटा मे ई संस्कार वकालतक कतऽ सँ आबि गेलैक! सभ दिन पटना सायंस कालेजक मेधावी छात्र रहलाह, सेहो फिजिक्स आनर्स मे – आ अचानक वकालतक निर्णय? खानदान मे दूर धरि केओ वकील नइं छल पूर्वज सँ लऽ कऽ आजुक पीढ़ी धरि। वर्मा जी पिताक कथन पर सहरसे मे वकालत शुरू केलनि। पटना हाईकोर्ट मे वकालत शुरू करबाक मोन मारि लेलनि पिता तर्क देने छलथिन – अहाँ घरक सभ सँ पैघ बेटा छी! एतेक जमीन जगहक देखरेखक उत्तरदायित्व तँ अहींक छी ने? यदि अहाँ एहिठाम प्रैक्टिस नहि करब तँ हमर सभक बाद सभ केओ एहि सम्पत्ति पर दावी करऽ लागत- अहाँ एहिठाम रहब तँ केओ आँखि उठाऽ कें नइ ताकत।

पिता खुश छलाह तँ वर्माजी सेहो खुश भऽ गेलाह – ओहि समय सहरसा, सुपौल, मधेपुरा एकटा जिला छल। आजुक सन खंड खंड भेल नहि! कलक्टर छल मुदा, डिस्ट्रीक्ट जज नहि छल! ताधरि जजो सहरसा नहि आएल छल! तीन बच्चाक माय हम बनि चुकल छलौं तैयो अबोध आ मासूम छलहुँ जिनगीक वास्तविकता कें बुझबा मे। हम गाम मे यानी डुमरा मे रहैत छलहुँ। हिनका रहबाक कोनो ठेकान नहि

छल तेँ ई अपन मामा यानी वैद्यजी ओतऽ रहैत छलाह - ओहि ठाम सँ वकालत शुरू केलनि!

शनिक साँझ गाम अबैत छलाह वर्माजी आ सोमक सूर्योदय मे सहरसा चलि जाइत छलाह। पिता कें कोनो मतलब नहि छल वकालत करथि रथि वा कि नहि करैथ, हुनका एतवे संतोष छल जे ओ पटना सँ चलि अयलाह अपन गाम घर लग ! सोमक भिनसरबे बड़का बाबूजीक स्वर आबैत - लाला जी, ओ लालाजी, घोड़ा तैयार अछि - उठू देर भऽ जायत...... ओहि ठाम बाबूजी बजैत छलाह- कोन हड़बड़ी छैक! जेतैक आराम सँ जेतैक - ओकरा कोन खेवाक जोगार केनाय छैक? एतेक सम्पत्ति अरजि देने छी जे पुश्त दर पुश्त बैसि कें खाइत रहत-

मुदा बेचैनी हमरो रहैत छल - 'ड्यूटी इज ड्यूटी' - हम नेनपने सँ सीखने छलहुँ। हमर पापा कहैत छलाह जाहि क्षेत्र मे रहू 'बी द बेस्ट' - सर्वोत्तम बनि। तेँ हमर मोने हरदम होइत छल जे वकालत करैत छथि तऽ ओहि मे हिनका अपना कें सर्वोत्तम सिद्ध केनाइ आंवश्यक! फेर ई घोड़ा सँ परसरमा स्टेशन जाइत छलाह आ ओहि ठाम सँ ट्रेन पकड़ि सहरसा।

हम परिवार मे स्वयं कें नीक पुतहु सिद्ध करवा लेल सेवा, समर्पण आ त्याग कें अपन आभूषण बना नेने रही ! शनि एवाक स्वप्न देखैत रही - जिनगी मंद गतिक रेडियो समाचार जकाँ चलैत छल किन्तु ओहि मे झंकार भरि दैत छल देअर ननदिक चौल, मस्ती, हँसी मजाक। एक दिन सुनलौं जे ओ शनि कें नहि आबि रहल छथि, हुनका माता निकलि गेल छैक! सगरो हल्ला भऽ गेल वकील साहब कें चेचक भऽ गेलैक, ओ वैद्यजी ओतऽ छथि।

ई नहि एलाह - नहि एलएला- कष्ट मे छथि - हवा रूकि गेल, गाछ बिरीछ जड़ि बनि गेल, फूल मौलाय लागल- आ हम ओहि श्रेणी मे आबि गेलहुँ जाहि ठाम पतिक विषय मे किछ पुछनाइ वर्जित छल। इ सभ लाज-धाखक गप छल जकरा परंपरा नियम मे बान्हल गेल छल। घरक सभ सदस्य तटस्थ छलाह-माँ, काकी, लालकाकी- एकटा समाचार आयल- ललनी कें माता भऽ गेलैक- आ फेर सभ अपन अपन काज मे लागि गेलाह- जेना किछु भेले नहि छैक- जे भऽ रहल छैक ओहि सँ कोनो मतलब हिनका सभकें नहि........ सभ केओ एकटा यंत्र सन, चेतना विहीन हृदयविहीन मशीन जकाँ- सरिपों, ओहि समय नारीक स्थिति गोदाम मे राखल अन्नक बोरा जकाँ छल।

हम छटपटा रहल छलहुँ - विकल छलहुँ अपन प्रियतम कें देखवा लेल। बड़का बाबूजी, बाबूजी, काकाजी ककरो कोनो व्याकुलता नहि ! दैनिक समाचार पत्र

मे छापल एकटा समाचार जकाँ पढ़ि एक कात राखि देल गेल एहि समाचार कें! फेर केओ सहरसा सँ आएल ललनजीक हालत बड़ खराब छैक। भगवतीक कृपा सँ आँखि बचि गेल छैक मुदा देह पर कोनो एहेन जगह नहि बॉचल छैक जाहि ठाम पैघ पैघ दाना नहि निकलल छैक।

तखन ककाजी बजलाह हम सहरसा जाकऽ ओकरा देखि अबैत छियैक। एकटा ककाजीए छलाह जे हमर हालत बुझैत रहथीन! आ हिनको मानैत बड़ रहथीन।

काज करैत काल जे कखनो सिल्कक नुआ हमर माथ पर सँ ससरि जाइत छल आ ककाजी सामने पड़ि जाइत छलाह कि हम घबराय कें दूनू तरहथी सँ मुँह झाँपि कोठरी मे ढुकि जाइत छलौं - कनियां बनबाक, आदत तँ कुमारि सँ छल नहि जे झट दऽ घोघ लऽ लितहुँ! आ ककाजी खूब हँसथीन - 'कनिया एना बच्चा जकाँ करैत छथीन से हमरा बड़ नीक लगैत अछि!' ओतेक टाक परिवार मे असगर पुतहु हम - एकटा खेलौने जकाँ छलहुँ जकरा सभ अपन अपन मोन सँ देखि खुश होइत छलाह। काकाजी सहरसा चलि गेलाह - हमरो मोन मे इच्छाक ज्वार उठैत छल सहरसा जाइ, दौड़ि हिनका लग पहुँचि जाइ - हमरा देखतहि हिनक ताप संताप तुरत खत्म भऽ जायत - ई जनैत रही। जखन जखन ई अस्वस्थ होइत छलाह हमर माथ कें अपन छाती सँ लगाय गीत गबैत छलाह- **'पास बैठो तबीयत बहल जायेगी, मौत भी आ गयी हो तो टल जायेगी'** -मुदा, जाहि ठाम पतिक चर्चो वर्जित छल, ओहिठाम हुनका लग जेवाक सोचियो नहि सकैत छलहुँ! के जाय देत हमरा आ संस्कार आदर्श मे पलल बढ़ल हम बाजियो कोना सकितौं जेबा लेल? **हम पंछी परबस भये बिके पराए हाथ** बेर बेर भैरव भैरवीक पीड़ी पर खसैत छलहुँ - शीतला मैयाक आगु आँचर पसारैत छलहुँ - जीविते आगि मे जरि रहल छलहुँ - मुदा समस्त परिवार अपन दैनन्दिन काज मे लिप्त - की माय के छाती मे ज्वार नहि उठैत हेतैक -? की काकीक तन मोन नहिं विकल हेतैक - मुदा ओ सभ अपन सीमा जानि गेल छलीह तेँ मीशीन भऽ गेल छलीह - ककाजी दोसर दिन घुरि गेलाह आ जानि कें हमरे कोठरी यानी कोहबर घरक सामने बरंडा पर बैसि गेलाह! ओहि कोठरीक नाम कोहबर घर छल। साइत मीनाक वियाह मे वएह कोठरी कोहबर घर रहल होयत - हमर कोठरी आ काकाजीक कोठरी दूनू एके ओसारा पर छल - तेँ यदा कदा ककाजी कें बेसी सोझा पड़ि जाइत छलहुँ।

माँ, काकी, लालकाकी, नबकी काकी सभ आबि घेरि लेलीह ककाजी कें, तखन बुझलहुँ जे यंत्रों मे जान होइत छैक - सभ उत्सुक - कोना छैक ललनी - सभ व्यग्र - बड़ जोर सँ माता आयल छैक ओकरा! छोटका मामा आ मामी दुनू

प्राणापण सँ ओकर सेवा कऽ रहल छथि! केराक पात पर ओकरा सुतायल जाइत छैक आ ताप एतेक जे क्षणे मे केराक पात जरि जाइत छैक तऽ दोसर पात लगा देल जाइत छैक एतेक बेचैनी ओकरा छैक। घोघक तर मे हमर आँखि सँ झर झर नोर बहि रहल छल - हमर प्रिये ई नोरक धार अहाँ धरि पहुँचि जाय आ अहाँक समस्त ताप कें शीतल कऽ दैक ....।

मुदा, चिन्ताक कोनो बात नहि - ककाजी बजलाह - तीन चारि दिन बाद निमाइन छैक। निमाइनक बाद ओ डुमरा आबि जाइत। बैलगाड़ी पठाय देब ओकरा अनबा लेल। सोचैत रही एखन हम माँ पापा कें पटना खबर कऽ दी हिनक बीमारी लेल तऽ समस्त परिवार दौड़ि कें चलि अबैत! किन्तु, ओहि समय फोन डुमरा तँ की सहरसो मे कतौ कतौ छल। चिट्ठी लिखतहुँ तँ पोस्ट आफिस दलाने पर छल - कही हमर चिट्ठीक जाँच पड़ताल होमऽ लगैक- कनियां लिखलक, केकरा लिखलक- की लिखलक- किएक तँ घर मे केकरो कतौ पत्र लिखवाक कोनो मौका साइब नहि भेटल हेतैक, एकदम जेलखाना जकाँ स्त्रीगणक स्थिति छल- सामंती जमींदारी मानसिकता- ऊँच ऊँच चहारदीवारी सँ घेरल बड़का अंगना-घर । नोकर चाकर धोबिन सभ सँ भरल पूरल स्त्रीगण कैद छलीह -

एतबे संतोष छल जे आब तीने दिनक गप अछि। कुसुम कली सन कोमल तन हुनक, ताप सँ जरि रहल छल आ हम -'प्रतीक्षा करैत एहि 'ललन' केर, वज्र कठिन सम दिन बीतय -'

लाल भाय आबि गेलाह - लाल भाय आबि गेलाह - सभ भाइ बहीन गामक छौंड़ा छौंड़ी हल्ला मचवैत पहुँचि गेल ! हमर छाती धड़कय लागल। दौड़ि कें भैरव भैरवीक पीढ़ी पर दहो बहो कानऽ लगलहुँ - आ ओहि काल हम घोघक प्रथा कें धन्यवाद देलहुँ जकर अऽढ़ मे तुषारपात सँ मौलायल हमर चेहरा आ नोरायल आँखिक बेचैनी केओ नहि बुझि सकैत छल! नहि तँ दस मुँह दस बात-'' ऐंह, बर ले जे करैत छैक - हमरो सभक बेटा छी, हमरो सभक भाइ छी''- सभ सँ दण्डित होइत रहितहुँ.....।

हमर सभ सँ छोट ननदि बच्ची बारह तेरह बरीसक हेतीह - हुनका सँ हम हृदयक बात कहियो कहियो कहैत छलहुँ! ओ हमरा बड़ मानैत छलीह। हिनक एवाक हल्ला खत्म भऽ गेल। सभ शांत भऽ गेल आ हम बाट तकैत रहि गेलहुँ। - गोसाँय कें गोड़ लगवा लेल तँ आंगन अओताह।

साँझ सँ राति भऽ गेल- अंगना नहि अयताह। हम बच्ची सँ जिनका हम कुमुदिनी नाम देने छलहुँ, पुछलहुँ- लाल भाय अंगना नहि एलाह ?

नहि भाभी - ओ तँ दलाने पर छथीन ! एखन हुनकर घाह सँ खैंइठी छुटि रहल छैक, केकरो लसँग लागि सकैत छैक - दलानेक कोठरी मे सुतल छथिन्ह।

हमरा लागल जे हम अचेत भऽ जायब। घंटो घंटा हम प्रतीक्षा मे छलहुँ जे अंगना एताह तँ घोघोतर सँ एक झलकि देखि तँ लेब हुनका - कुमुदिनी, हमरा अपन लालभाय सँ मिलाय दियऽ एक बेर। एक बेर कोनो प्रकारे कोनो तरीका सँ भेंट कराय दिय - हम ओहि किशोरीक हाथ पकड़ि कानऽ लागलहुँ।

भाभी - शांत भऽ जाउ - ओ हमर हाथ पकड़ने रहलीह - आइ आब भेंट नहि होयत। बाबूजी सभ कोठरीक ओसारा पर बैसल छथि। काल्हि साँझ हम भेंट कराय देब - कोनो ने कोने जुगुत लगवैत छी - काल्हि साँझ? सागरक किनार आबियो कें मानव पिआसल रहि जाइत छैक। तरास सँ हमर कंठ सुखि रहल छल सामने पानि छल मुदा हम परंपरा नियमक शृंखला मे बान्हल अपन रूग्न पतिक समीप नहि जा सकैत छी। ई कोन बंधन - कतऽ हमर विद्रोहिणी तेजस्विनी व्यक्तित्व समा गेल?

चारि पाँच बरखक राजू छल, फेर सूकू आ कोर मे पींकी-केओ पैघ नहि छल जिनका हिनका लग पठबितौं। चुपचाप राजू कें बुझयलौं-बेटा अहाँक पापा दलान पर छथि, जाकऽ भेंट कऽ आबु तँ जे ओ की करैत छथि? राजू हमर मोन बुझि जायत छल पापा-पापा चीकरैत दौड़ि गेल छल दलान दिस।

खबासिनी बीचे बाट मे ओकरा उठा कें लऽ अनलक- देखियौ यै मालिकिनी राजू लालभायक कोठरी मे जाइत छल । उठा कें लऽ अनने छी।

ठीक कयले-एतेक छोट बच्चा, एखन कोना ओकरा लग जायत! इएह तँ लसँग लागेक बेर छैक-नै यै संगी? - काकीक बात पर माँ मुड़ी डोलाय दैत छलीह।

राजू अवधीक बलिष्ठ भुजाक बंधन सँ निकलबा लेल कछमछ करैत छल- काकी बुझवैत छलीह-एखन पापा लग नइं जो रे।

हम जायब - हम जायब - पापा लग जायब - नेना मचलऽ लगैत छल। हेरे एखन मुखिया जी कें कहि देबौक तँ बुझिए जेबें।

आ दादाक नामे सँ राजू भयभीत भऽ जाइत छल। हमरा लग आबि कानऽ लगैत छल। हम पापा लग जायब - हम ओकरा कोना बुझवितौं, बस करेज सँ लगा कानऽ लगलहुँ - हमर नोर देखि राजू एकदम चुप भऽ जाइत छल -

हवेलीक तीन दिस सँ घर छल आ पूरब दिस सँ बड़का अंगना दस बारह फीट ऊँच छरदीवारी सँ घेरल! ओहि छरदीवारी सँ बहार जेवा लेल छोट छीन दरबाजा छल मजबूत केवाड़ लागल आ ओहि केवाड़ पर रजनीगंधाक सघन लत्ती।

पाँच-छह डेग पर इनार छल चारू कात पक्का नहरा सँ घेरल। ओहि सँ कने आगू गोठुला घर छल, गोइठा आ मनीजरा सँ भरल आ तकर बाद दलान शुरू भऽ जाइत छल। करीब एक डेढ़ कट्ठाक नम्हर चाकर दलानक परिसर - नीपल पोछल साफ - स्वच्छ! दलान पर चारिटा कोठरी छल! तीनटा खपड़ा कें छोट छोट कोठरी एक लाइन सँ आ ओसरा नम्हर पातर - अंत मे पक्काक एकटा कोठरी छल ऊँच ओसरा पर बनल जे पोस्ट आफीसक काज करैत छल। दलानक आगू सुन्नर सन मोइन छल ओकर आगू जतए धरि दृष्टि जाय, जतऽ धरती अकास मिलैत छल ओहि ठाम तक अपन जमीन छल, अपन पोखरि, अपन खेत पथार, पानि- पनिऔत माछ मखानक खान! ओहि ठाम पंचायत घर बगल मे पीपर केर बड़का विशाल वृक्ष! घरक दच्छिन अपन जमीन, बाम अपन जमीन - आ पाछां यानी पच्छिम दिस डुमरा गाम! गामक बाद कोसीक पूर्वी बाँध आ बांधक भीतर अपन जमीन।

इनारक दछिन मुनहर छल - आ पोस्ट आफीसक पाछां मुनहर दिस सँ बड़का गोदाम घर छल ठेक, कोठी सँ भरल जकरा मे प्रवेश करबाक मात्र काकी कें अधिकार छल, किएक तँ ओ घरक स्वामिनी छलीह, सभ सँ ज्येष्ठ! एकर अहंकारो हुनका छल से डाँड़ मे खोसल चाभीक पैघ गुच्छा लोक कें बुझा दैत छल।

मुनहर सँ गोदाम धरि बड़का अंगना जकाँ छल जाहि मे लारक टाल सभ भरल। ई छल दलानक पछुअैत भाग! अंगनाक दरवाजा सँ इनार आ गोठुला घर धरि ततेक फूल पात लागल छल जे खाली हरियरी देखा पड़ैत छल! जूही, बेला, तग्गड़ थलकमल, क्रोटन, रजनीगंधा आदिक सघन जंगलक मध्य पातर पगडंडी दलान आ अंगना अयबा जेबा लेल नुका जाइत छल!

बच्ची हिनका सँ भेंट करेबाक उपाय खोजलीह। साँझुक पहर दीयाबाती सँ पहिने दलान खाली भऽ जाइत छल। तीनो मालिक खेत, गाछी, बान्ह दिस वा कि गौआँ सभसँ भेट करबाक लेल कचहरी पर चलि जाइत छलाह आ स्त्रीगण साँझ बाती मे लागि जाइत छलीह......।

बच्ची बजलीह-भाभी अहाँ ओहि काल लाल भाय सँ मिलवा लेल दलान पर जायब। हम गोठुला घर मे ठाढ़ रहब। जहिना हम खोंखी करऽ लागब अहाँ बुझि जाएब जे केओ आबि रहल अछि।

अपन दशा पर हमरा नोर आबि गेल! जिनगी मे एहनो क्षण कहियो आयत- अपन पति सँ मिलवा पर प्रतिबंध, विवाहक बादे सँ प्रतिबंध, कारण जे हो - बच्ची ओहि क्षण हमरा लेल भगवान भऽ गेलीह। हुनका सँ पैघ तीन-तीन ननदि घर मे छलथीन मीना, रेणु, छोटकी बुच्ची - सभ केओ अपन अपन काज मे लागल रहैत

छलीह! नोकर-चाकर तक गायब - साँझ भेल, एकटा शांति व्याप्त भऽ गेल। मीना सभकें साँझ मे गाछी घुमबाक हिस्सक छल। सभ केओ गाछी चलि गेल छलीह।

हम हिनकर कोठरी मे गेलहुँ। कोन मे राखल डिबियाक मद्धिम इजोत हमरे जकाँ थर थर काँपि रहल छल। छोट सन चौकी पर एकटा कंकाल बनल वर्माजी पड़ल छलाह। हिनक चेहरा सँ लऽ कऽ समस्त देह पर कारी कारी दाग भरल छल! वीभत्स चेहरा लागि रहल छल - निश्चेष्ट, प्राणविहीन जकाँ पड़ल छलाह। निःशक्त-निर्बल।

हमरा देखि हिनकर तन मे कम्पन झेल। हम हिनकर बगल मे चौकी पर बैसि रहलौं - ई अपन हाथ हमर हाथ पर राखि देलनि - दूनू गोटे एक दोसराक हाथ पकड़ने रहलौं। हिनक आँखिसँ नोरक एकटा पातर धार निःसृत भऽ रहल छल। हमर आँखि मझधार बनल छल।

मौनक अपन भाषा होइत अछि - चुप्पीक सेहो अपन स्वर होइत अछि, अपन भाषा - ई हम तखने बुझलौं। ओ हमरा किछु नहि कहलनि - अपन घरक नियम कानून, सीमा रेखा हमरा सँ बेसी ओ बुझैत छलाह। बस हमर हाथ कें कसि कें पकड़ने रहलाह जेना हमर समस्त शक्तिक संचरण हुनक तन मे भऽ रहल हो! एकटा प्रेम, एकटा स्नेहक धार जेना एहि हाथ सँ ओहि हाथ मे समा रहल हो।

तावत बच्चीक खांसबाक स्वर आयल। बस एतबे बाजलौं - बड़ मुश्किल सँ बच्ची कें ठाढ़ कऽ चुपचाप आयल छी। अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू। काल्हि फेर आयब। फुसफुसाइत हम ओहि ठाम सँ चलि अयलहुँ!

राति भरि हिनक रूग्न तन आ मोन हमर मोन कें आहत करैत रहल। राति भरि सुति नहि सकलौं! भोर होयतहि दौड़ि गेलौं मुनहर दिस जाहि दिस हिनकर कोठरीक एकटा खिड़की खुजैत छल।

एखन पह फाटल छल। बाबूजी सभ गाछी चलि गेल छलाह। काकी सफाई मे लागल छलीह। सभ बच्चा सभ दीअर, ननदि सूतल। हमरा अवसर भेटि गेल छल।

जहिना खिड़की लग पहुँचलौं - चकोर नयन, खिड़की दिस टकटकी लगौने, ताकि रहल छलाह - जेना प्रतीक्षा छल ओ अवश्य एतीह - घोघक अढ़ सँ, वृक्षलताक झाड़ी मे नुकायल हमर नयन अश्रुपूरित भऽ गेल! हुनकर भाव भरल मुस्की मनुहार नेने, हमर अन्तर तक पैसि गेल छल। करेज कें जेना चीरने जा रहल हो। हम तुरत सम्हरि गेलहुँ। नोर पोछि निःशब्द खिलखिलाय लगलौं! हमरा बिहुँसैत देखि इहो बिहुँसऽ लगलाह। हम संकेत सँ बुझा देलहुँ। हमरा जखन अवसर भेटत एहि खिड़की लग चलि आयब ! किन्तु, साँझ मे तँऽ अवश्ये आयब।

आ हम बेबस तकैत प्रेमी पति सँ अलग भऽ अंगना चलि एलौं। कहीं एहि मिलन पर गुलबिया, अड़हुलियाक दृष्टि नहि पड़ि जाइक - फेर तँ व्यंग्योक्ति सँ जीवन दूभर-कनियां के लाजो नइं लगैत छैक! कोना लाल भाय लेल बेकल रहैत छैक। ओहि परिवार मे नौकर-चाकरक उक्तिक महत्व छल - आ ई उक्ति अंगना सँ दलान होइत गाम-गाम पहुँचि जयतैक आ बिना अर्थक बदनामी। पति लेल बेकल पत्नीक बदनामी। दिन मे आंगन सँ स्त्रीगण दलान पर नहि जा सकैत छलीह। हिनका जलखै, खेनाय, अगहना, गरभी लुखिया खुआबैत छल। बहीन सभक रूतवा राजकुमारी सँ कम नहि छल! केकरो अंगना कहियो नहि जाइत छलीह! हवेली सँ बाहर अपन खेत, बड़का मोइन, आमक गाछी इएह सभ हिनकर सभक साँझ मे घुमबाक जगह छल! उत्तरबरिया खिड़की सँ जँ केओ परूहर सँ अबैत स्त्रीगण कें देखि लैक कि घर मे हलचल मचि जाइ - जल्दी तैयार भऽ जो परूहर सँ सभ हवेलिए आबि रहल अछि! सभ ननदि सिल्क-बनारसी क्षण मे पहिरि, हमरो तैयार कऽ दैत छलीह। ठोर पर लिपिस्टिकक स्थान पर गुलाबक पंखुरी मलि लैत छलीह या नहि तँ सिन्नूर! एक मिनट मे सभक काया पलटि जाइत छल! अरूण कपड़ा एकदमे नहि पहिरैत छलीह आ नौ वर्षक छलीह - ओ सेहो फ्रौक पैंट पहिरि तैयार - हम सोचैत रही तैयार भेनाय नीक बात थीक, सिल्क बनारसीए किएक - ? मुदा, ओ सभ राजकुमारी छलीह - अधिकार - रूआबक दबदबा सँ भरल। सभ सँ पैघ वर्माजी अपने छलाह हिनकर बाद चारि बहीन लगातार तकर बाद तीन भाइ - मोहन, सुनील, अनिल जिनका हम नाम देने छलौं। - जय अजय आ छोटे। छोटे जे हमर बेटा राजू सँ छोट छलाह पैघक जनमल हेवाक कारण नाम नञि लऽ सकैत छलहुँ। ओहि समय मे दीअर, ननदिक नाम नहि लेल जाइत छल - कहबा लेल आठ भाइ बहीन छलाह मुदा ई छल तँ संयुक्त परिवार। बड़का बाबूजी काकी कें जखन कोनो संतान नहि बचि सकल तखन ओ दोसर विवाह केलन्हि। नवकी काकी जिनका सँ अशोक, बसन्त, नरेश आ अंबुज, पम्मी - पाँच भाई बहीन भेलीह! एकर बाद बाबूजी मुखिया जी, जिनक हम पुततहु रही। ककाजी के पाँच संतान हीराजी, रमणजी, पप्पुजी - अरूण, सुजाता। ई तँ दस भाई आ आठ बहीन छथि कतेक तँ हमर बाल बच्चा सँ छोट। अदभुत संयुक्त परिवार छल जाहिठाम सभ एके माय बापक संतान लगैत छलाह। वर्माजी सभ कें अपन सहोदर भाई बहीन बुझैत छलाह आ तें हम कहियो केकरो आन नहि बुझलौं!

हमरा माँ यानी अपन सासु संस्कार देलनि। अहाँ हमरा लग नहि रहू अहाँ अपन सभसँ पैघ सासु काकी लग रहू बेसी काल। हुनका संतान नहि छैक! ललनी कें अपन बेटा जकाँ पोसलीह अहाँ हुनके पुताहु छी सेह बुझू! माँक देल एहि गुरु

मंत्रक निर्वाह अपना जनैत हम जीवन पर्यन्त केलहुँ! काकी हमरा सँ बड़ खुश रहैत छलीह। घरक स्वामिनी तँ छलीहे, माँ लालकाकी नवकी काकी सेहो काकीक अधीन मे छलीह। जें कि चौका मे नोकर चाकर नहि जा सकैत छल तें भानसक भार एहि तीनो दिआदिनी पर छल! एहि पूर्णिमा सँ आगूक पूर्णिमा एक दिआदिनीक भानसक पार रहैत छल! यानी एक मासक - ताधरि दूनू दिआदिनी आराम करथि! केकरो पार मे केओ हुलकियो देबा लेल नहि जाइत छलीह चाहे कतबो पाहुन परक केकरो पार मे आबि जाय! हँ, नोकर दाइ कल जोड़ने ठाढ़ रहैत छल मदद करवा लेल! चिनबार चढ़बाक अनुमति नइ छल! बनल भानस ओ नइ छुबैत छल!

ओहि समय मोहन जी किछु बुझनुक भऽ गेल छलाह। ओहो हमरा बड़ मानैत छलाह। हम हुनका सँ चुपचाप पुछलौं - अहाँक लालभाय की कऽ रहल छथि -? ओ तँ सुतल सुतल रघुवीरा सँ गप कऽ रहल छथि। मोन मे चैन आयल ! गौआँ सभ तँ हुनका लग अछि - आ एहि तरहे चोरा नुक्की कऽ बच्चीक मदद सँ दुनू गोटे मिलैत रहलौं, दिन काटैत रहलौं! देखिते-देखिते ई पूर्ण स्वस्थ भऽ गेलाह! आंगन आबि गोसाँय के गोड़ लगलनि - रमन-चमन भऽ गेल। अंगना मे बहार आबि गेल। किन्तु, हमरा सँ भेंट नहि कऽ सकैत छलाह। कारण, जे दिन मे ओ हमरा सँ नहि मिलि सकैत छलाह। कखनो काल आँखि बचाय कोहबर घर मे घुसि हमरा प्यार कऽ तुरत भागि जाइत छलाह!

हिनकर चेहरा पैघ कारी दाग सभसँ भरि गेल छल! कारी रंगक भीतर गोर रंग नुका गेल छल! दुनू गोटे नियति स्वीकार कऽ लेलौं - आब इएह असल रंग थीक! बड़ कातर भऽ जाइत छलाह ई कखनो काल-पता नहि कोन सजा हमरा ईश्वर देलनि। हम हुनका संतोष दैत छलौं - चेहरा सँ की होइत छैक। मोनक सुन्दरता असली रंग थीक! आ मोने मोन शीतला माता कें गोहारैत रहैत छलौं! शीतला मैयाक कतेक व्रत केलहुँ। कतेक दीया नेसलौं ब्रहमक थान मे - आब वएह माँ अहाँ कें ठीक करतीह जे अहाँ कें स्वस्थ केने छथि देखतहि देखतहि दिनक पंछी उड़ि गेल आ ई वापस सहरसा चलि गेलाह। बस एतवे हमरा कहलनि - छोटकी मामी हमर एतेक सेवा केलनि जे जनम-जनम लेल हम हुनक ऋणी भऽ गेल छी!

आ कनी दिन बाद सुनबा मे आयल जे वर्माजी सहरसा मे अपन मकान भाड़ा पर लऽ नेने छथि जकर आधा हिस्सा मे कोनो लेबर इन्सपेक्टर रहैत छल! शनि रवि पहिने जकाँ गाम अबैत छलाह! हिनकर बड़ इच्छा छल जे हम सहरसा जा हिनका लग रही जाहि सँ खेवा पीवा मे दिक्कत नहि होइक! मुदा, मर्द तँ की कोनो स्त्रीगण तक एकर अनुमति हमरा नहि देलीह!

अपन गृहस्थी बसेवा लेल घर सँ एकटा टूटल सायकिल भेटल! एकटा तावा झड़ल-झूड़ल ओ एकटा छोट सन डेकची छोलनी करछुल! हमरा अनुमति, जेवाक नहि भेटल तँ भानस बनेवा लेल रबीदास कें पठाओल गेल!

नेनपने सँ माँ पापा हमरा संस्कार देने रहथि संगे केहनो परिस्थिति सँ लड़बाक हिम्मत। परिवारक कोनो स्थिति मे समझौता करबाक साहस। अपन घर-अपन सासुर मे सभक हृदय जीतवाक हौसला।

आइ सभटा काज आबि रहल छल! हम खुश छलहुँ - ननदि, दीअरक स्नेह मे मस्त छलौं। सोम सँ शुक्र धरि हिनक प्रतीक्षा। शनि रवि हिनक स्नेह सामीप्यक रंग मे रंगा जाइत छलौं, इएह तँ जीवन छल मधुगंधी बसात सन !

किन्तु, मधुगंधी बसात अचक्के रूकि गेल आ टायर जरवाक चिराइन महक हवा मे पसरऽ लागल - सुनामी सागरे नहि आदमीक जीवनो मे अबैत अछि ... ई भोगलहुँ।

बीहरा, पंचगछिया हमर ममहर थीक! गामक बगले मे बीहरा छल। महंथ मामाक वियाह छल! बीहरा सँ साड़ी कपड़ा, भार लऽ कऽ मुन्ना मामा बिदागरी लेल आयल छलाह। घर मे सभ केओ खुश भऽ गेलाह कनियांक पुछारि ममहरो सँ होइत छैक!

हम तँ जनैत छलहुँ नैहर सँ लऽ कऽ ममहर धरि केकर स्नेह हमरा नहि भेटल अछि? माँकें अपन भाइ नहि छथि ई हमरा सभ भाइ बहीनी कें तखन ज्ञात भेल जखन नानीक सम्पत्तिक बटवारा होमऽ लागल! माँ पापाकर व्यवहारक कारण हम सभ जगदीश मामा कें अपन मामा बुझैत छलहुँ! कहियो हमरा सभ कें माँ-पापा अपन आन - पितिऔत पिसिऔत मे भेद करबा लेल नहि सीखौलनि! आइ वएह शिक्षा सासुरक विशाल परिवार मे काज आबि रहल छल!

बीहरा-पठेबाक उत्साह सभ मे छल। बैलगाड़ी मे रंग बिरंगक नुआ, चद्दर सभक ओहार पड़ऽ लागल, मुखियाजीक पुतहु जा रहल अछि - कोनो मामूली गप नइं छल। भार दौर सजऽ लागल, नुआ कपड़ा सभ नौहट्टा सँ आनल गेल। एक दिस तँ सभक हृदय मे उत्साह, उछाह भरल छल दोसर दिस सभक मोन उदास छल। घरक हँसी खुशी जा रहल अछि! काकी सभ बाजथिन - आब के रमन चमन करत घर मे पैघ सँ छोट तक उदास। सौंसे गाम उदास छल। कनिया जा रहल छैक!

मामाजी सँ बाबूजी करार लऽ नेने छलाह - बियाहक तेसर दिन कनिया कें डुमरा पहुँचा देवा लेल - ई जिम्मेदारी अहाँक थिक -

मामा बड़ खुश छलाह हमरा लऽ जेबाक अनुमति हुनका भेटि गेल छलैक। इएह की कम भारी छल। बीहरा मे हुनकर विजय भऽ गेल। ओ तुरत बाबूजी कें आश्वस्त कऽ देलनि रजनी कें हम पहुँचाय देब।

किन्तु, के जनैत छल भविष्यक गर्भ मे की नुकायल अछि। कनेक कालक खुशी की जीवन भरिक दुख - आ कि प्रत्येक दुखक पाछा सुखक सूरज निश्चित रूप सँ उगैत अछि। मुदा, ताधरि मानवक धैर्यक परीक्षा ईश्वर लैत छथि!

महंथ मामाक वियाहक खुशीक संगे संग हमरा इहो खुशी छल माँ पापा पटना सँ अओताह मुदा, एहि सभ सँ बेसी खुशी छल मामा से ई जानि हमर प्रियतम सहरसा सँ वियाह मे आबि रहल छथि! बैलगाड़ीक ढकर-ढकर मे सपनाक संसार मे कल्पनाक महल बनौने चलल जाइत रही।

आ वीहरा मे माँ पापा, नानी सभ, मामा मामी सभक संगे हिनको संग खुलि कें ब्याहक सभ बिध विधान मे उन्मुक्त जीवन बितयलौं ! सभ हमरा दिस गर्व सँ देखय जे हम डुमराक पुतहु छी! हिनकर दादीक जखन मृत्यु भेल छल तँ सुनैत छी बाबूजी सभ परगन्ना नयोतनें रहथीन! ओहि मे बीहरा, पटोरी पचगछिया सँ सभ केओ बैलगाड़ी पर चढ़ि चढ़ि श्राद्धक भोज खेवा लेल डुमरा गेल रहथि! तखन मामा सभ बजैत छलाह जे लड़का नोन परसैत छल आ ने तँ पानि!

आइ ओहि घरक पुतहु हुनकर सभक समक्ष अपने रजनी थीकीह - ई गौरव हुनका सभ कें छलैक! नूनू मामा जिनका हम लड़ाईबला मामा कहैत छलौं - हमरा लग बड़ प्यार सँ बाल्यपनक दृश्य कें दोहराबैत छलाह - आबे तँ भिड़ तें बापक बेटी होइ तँ? आ जबरदस्ती हमरा गिराय बजैत छलाह - हरदी चूना बोल - हरदी चूना बोल - धोतीक लंगोट बनाय ओ ताल ठोकैत छलाह - सभ स्मृति मोन छल हमरो सँ ओ पराजित भऽ खसि पड़ैत छलाह। हमहुँ हुनकर हाथ पएर मोचाड़ि बजैत छलौं - हरदी चूना बाजू ....। एहि सभ ठहाका हँसीक फुलझड़ीक मध्य वियाह दान खत्म भऽ गेल। तीन दिन कोना मुठी सँ रेत जकां ससरि गेल - बुझवे नहि केलौं। मामा बजलाह आब रजनी कें हम डुमरा पहुँचाय देबैक समधि मुखियाजी करार नेने छथि। हिनका तँ स्वर्गक सम्पत्ति भेटल छलैक हमरा पाबि कें बजलाह- कोनो बात नहि शनि दिन हम गाम जाइते छी - पहुँचा देवैक अपने सँ। अहाँ सभ चिन्ता नहि करू। मामा सभ आश्वस्त भऽ गेलाह। जखन जमाइए यानी मुखियाजीक बेटे कहैत छथीन हम पहुँचा देबैक तखन कोन चिन्ता! माँ पापा सभक संग हम सभ सहरसा आबि गेलहुँ। अपन पतिक घर - हुनक गृहस्थी, हुनकर रहबा सहबाक ढंग देखि कोंढ़ फाटऽ लागल! एक चौकी पर पातर सन बिछान लागल छल। एकटा टेबुल, एक दुइटा

पुरान कुरसी छल! डंटी टूटल दुइटा कप राखल छल - बिछौन पर चारू कात कानूनक पोथी, फाइल कागज कलम पसरल छल - माँ पापाक सामने हम लजऽ गेलहुँ - एहेन घर आ एहेन अस्तव्यस्तता देखि! किन्तु माँ बजलीह - रजनी, बिन घरनी घर भूत के डेरा। असगर रहैत छथिन तँ घर एहिना रहत की ने? जेँकि माँ पापा कें रातुक गाड़ी सँ पटना जेवाक छल - ओ रूकि नहि सकलाह। ई हमर घर छल। सरिपों गृहस्थी चलेबा लेल बेटी कें सीखऽ नहि पड़ैत छैक? ओ तँ अपने आप चलऽ लगैत छैक। ककरो गृहस्थी बैलगाड़ी जकाँ ढकर-ढकर चलैत अछि तँ ककरो सुख चैनक झूला पर झुलैत। मुदा चलैत सभक गृहस्थी अछि! यदि संघर्ष अछि तँ शान्तियो अछि। रोज रोजक हलचल मे एकटा स्थिरता सेहो छैक! हम सभ बंदी छी भाग्यक हाथे - परिस्थिति, विवशताक बंदी छी- किन्तु, जीवन चलैत रहैछ।

तीन चारि दिन मे हम समस्त घरक काया पलटि देलहुँ! जएह छल ओकरे ठाम पर राखि दैत छलहुँ कलात्मक ढंग सँ! ई बड़ खुश रहैत छलाह। हिनका मे जेना हिम्मत आबि गेल, शक्ति आबि गेल छल! वर्माजी वकालत मे अपन विशिष्ट गुण, व्यक्तित्व, अन्तःप्रेरणा सँ शीर्ष मे ठाढ़ हेवाक सपना कें साकार करबा लेल जान प्राण सँ लागल छलाह। अपन कार्यक प्रति जे हुनकर समर्पण छल ओ वकालत समाज मे एकटा अदभुद चित्र उपस्थित करैत छलैक! वकालत मे जेना ओ हृदय आत्मा सँ जुड़ि गेल छलाह - किन्तु, हम भीतरे भीतर गाम जेवा लेल छटपट कऽ रहल छलौं। बाबूजीक प्रेम विश्वास मोन पड़ैत छल। दीअर, ननदि सभक चुहल आ संगे हुनक आकुलता लालभाभीक बाट जोहैत। हृदय मे आन्दोलन उठि जाइत छल तँ दोसर दिस पतिक मुस्कान, हुनक सहारा-शक्ति बनवाक अनुभूति विवश कऽ दैत छल हमरा!

शनि दिन पुछलौं - आइ कतेक बजए गाम जेबाक अछि - आइ नहि जा सकब! एकटा नबका क्लाइन्ट आबि रहल अछि। हम चौंकि गेल छलौं! बाबूजी की बजथिन? अहाँ हमरा बीहरा सँ नहि जाय देलहुँ जे स्वयं पहुँचा देब - आइ शनि थीक - तँ हम की करी - झुझुआवैत बजलाह - नया क्लाइन्ट छी - ओकरा कोना छोड़ि देब हम ? हम मनुहार करैत बजलौं - बेस, ठीक छैक शनि नइं तँ रवि कें हमरा छोड़ि आयब अहाँ, कोनो बात नै - हम हुनका भरोस देलहुँ। अहाँ गाम जेबा लेल एतेक किएक धड़फड़ा रहल छी? अहाँक घर ई छी कि गाम? हम जनैत छी ई हमर घर छी, हमर गृहस्थी छी मुदा, बाबूजी तमसा जेताह। बड़ भरोस छल हुनका हमरा बीहरा पठेवा काल - हम डरैत डरैत बाजलौं। किएक तमसौताह - बुझि नइं पबैत छी हम। हम अपन पत्नी कें अपना लग राखने छी, केओ आन कें नहि - हम चुप भऽ गेलहुँ हुनक उग्र स्वर सुनि।

मुदा, जखन कोनो मोक्किल नहि आयल तँ राति सुतैत काल हिनका सँ बजलौं - अहाँ कें तँ कोनो मोक्किल नहि आयल तँ अहाँ झूठ किएक बाजलौं।

बड़ भावुक भऽ बाजऽ लगलाह - रनिया, हम अहाँ बिनु जीवी नहि सकैत छी। असगर परिस्थिति सँ लड़बाक हमरा हिम्मत नहि रहल। अहाँक आयना दुइए चारि दिन भेल अछि लेकिन देखू हम कतेक मेहनत करऽ लागलौं। एखन हम अहाँ कें गाम पहुँचा देब फेर कहियो अहाँ कें भविष्य मे सहरसा आनि सकब ई भरोसा तँ एकदम्मे नहि अछि -

तखन हम देखलौं कतेक कमजोर भऽ गेल छथि ई! खेवा पीवाक कोनो ठीका व्यवस्था नई छल। उदास, रंगहीन जिनगी जीवी रहल छलाह! - जनैत छी राज, हमरा संग एकटा आर वकील ज्वाइन केलनि - दुनू मिलि एके दिन प्रैक्टिस शुरू केलौं। हुनकर पिता बड़ पैघ पार्टी देलखिन वकालत खाना मे, जज सँ हाकिम धरि सभ आयल रहथि ओहि मे ! ......

ओहि ठाम हमर माथ पर हाथ राखयवला तँ दूर हमरा उत्साहितो करऽ वला केओ नहि छल। अहूँ गाम मे छलहुँ - हम अपना आप कें कतेक दीन-हीन बुझैत छी।

हम जानैत रही, बुझैत रही हिनकर मोनक एक एक तार हमर मोनक तार सँ एकाकार छल। हँसैत हम बाजलौं - अहाँ तँ हरदम बजैत छलौं अहाँ हमरा सँ अलग कहाँ छी। प्रैक्टिस शुरू करवाक एक दिन पहिने अहाँ गाम जाय गोसाँय कें गोड़ लगने छलौं। सभ गुरुजन सँ आशीर्वाद नेने छलौं। मोन अछि हमरा की कहने छलौं। अहाँ कें हम छोड़ि कहाँ जाऽ रहल छी - तन एहिठाम अछि, मोन अहाँक नेने जा रहल छी। अहाँ तँ बजैत छलौं- कोन एहेन अभागल क्षण होयत जाहि मे अहाँ नहि रहब रन्नो तखन आइ किएक हमरा अलग बुझि रहल छी।

नहि रन्नो - परिस्थिति एतेक तरहक रंग देखेलक-वकालत शुरू केनाय एकटा बाद चेचक भऽ गेनाइ - चेहराक ई दाग - सभ मिलाय हम भीतर सँ टूटल बुझि रहल छी अपना कें -हिम्मतक कमी आबि गेल हमरा मे--सभ किछु ठीक भऽ जाइत । अहाँक प्रैक्टिसे अहाँक वकालतक पार्टी होयत ! अहाँ एतेक सुन्दर तरीका सँ बहस करू जे सभ चौंकि जाय जे ई लड़का, कतऽ सँ आबि गेल ! सभक दृष्टि खाली अहाँ पर रहैक! रहल दागक बात - बहुत कम भऽ गेल अछि पहिने सँ - एकदम ठीक भऽ जायत! बस अहाँ चिन्ता टा नहि करू !

हम फेर गामक चर्चा छोड़ि देलहुँ ! जनैत रही बाबूजी सभ चाहैत छथि हम गाम मे रही - शनि रवि ई गाम अबथि । दुइ ठाम गृहस्थी बसेबाक आवश्यकता की

छैक – आ जिनगीक सभ सँ पैघ भूल सहरसा मे वकालत आरंभ करबाक निर्णय भऽ गेल ! हम सासुरक प्रति एतेक प्रतिबद्ध छलौं जे अपन पतिक जीवन क्षेत्रक विषय मे किछु सोचबाक दिमाग हमरा नहि छल ! की नीक, की अधलाह – ई सलाहो देमऽ वाला क्यो नहि छल ! हम कतेक असगर भऽ गेल रही अपन जीवन मे ! भरल पूरल परिवार – सभ अपन – मुदा जहिया। जहिया जीवनक दुइ बाट लग ठाढ़ भेलहुँ केओ बाट देखावयवला नइं रहल –ओम्हर नहि –इम्हर जाउ – कोनो संकेत नइ। ई संकल्प लऽ लेलनि जे हम गाम। एको पाइ नहि लेब आ ने सँ अन्न लेब।

दुनू गोटे भगवानक नाम लऽ कोनो एक बाट पर चलि दैत छलौं– एक दोसराक हाथ पकड़ने नहि वरन तीन तीन टा बच्चा कोर मे आब लीली सेहो – गिरैत पड़ैत क्षत विक्षत, लहुलहुआन होइत – एक दोसराक नोर पोछैत, एक दोसराक दर्द बुझैत परिस्थितिक भंवर जाल मे उबडूब ।

ओहि समय सहरसा शहर नहि छल वरन – शहर सन छल ! भोर नहि भोर जकाँ सहरसा – यानी सभ रसक संग, यानी खुशीक संग आउ – सहरसा प्रत्येक शहरक अपन एकटा व्यक्तित्व होइत अछि! सहरसोक अपन व्यक्तित्व छल । मुदा ओहि समय सहरसाक मानसिकता एकटा गाम सन कि कसबा सन छल – संकीर्ण सोच एकटा।

हमर सभक घर गंगजला मे छल। स्टेशन सँ गंगजला धरि कोनो सड़क नइं छल ! एकटा एकपेरिया जकाँ उबड़ खाबड़ मैदानक मध्य भऽ कऽ छल जाहि बाटे स्टेशन सँ लऽ कऽ बाजार, सिनेमा सभ सँ घर अबैत जाइत छलौं हम सभ । रस्ते मे एकटा ईटाक भट्ठा छल जकरा लेल लोक कहैत छल साँझ होयतहि ओहिठाम भूत लोक वेद कें उठा उठा पटकऽ लगैत छैक ! कोनो रिक्सावाला साँझ की दिनक इजोत मे ओम्हर सँ एबाक साहस नहि करैत छल ! एहि मे कोनो संदेह नहि जे एकाध दशक पहिने पूरा गंगजला महल्ला श्मशान घाट छल ! पापा 55–56 ई0 मे एहिठाम पदस्थापित छलाह। क्वार्टर भेटल छल राय साहबक मिलक बगल मे– पीअर रंगक बड़का खपडैल। सरकारी आवास सभ मजिस्ट्रेट की जिलाधीशोक नहि बनल छल ! ओहि काल हम सभ देखने छलहुँ पूराक पूरा इलाका बॉस, झौआ, कनेर आकि ध तूरक जंगली गाछ–बीरीछ सँ भरल छल – एकटा सघन अरण्य सन प्रतीत होइत छल ! ओहि अरण्यक मध्य सँ मधेपुरा लेल ट्रेन जाइत छल। आब गंगजला आ सहरसाक विभाजन रेखा भऽ गेल सुपौल दिस जाइत रेलवे लाइन ! ओहि रेलवे लाइन सँ पूब गंगजला मोहल्ला आ पश्छिम नव सहरसाक नूतन निर्माण छल ! अस्पताल, गर्ल्स स्कूल, जिला स्कूल, कलक्टरी, आदि कालांतर मे न्यू कालोनीक नाम सँ प्रसिद्ध भेल! ओहि समय बाजारक सभ सँ पैघदोकान दहलानक मानल जाइत छल आ फेर

कपड़ा पट्टी, चूड़ीक दोकान मे इन्द्रपुरी आ चन्द्रलोक छल! आय जाहि ठाम विशाल बस स्टैंड आ प्रशान्त टाकीज अछि ओ पहिने श्मशान घाट छल। सिनेमा हाल छल मीरा टाकीज आ अशोक टाकीज ! खपड़ा आ एसबेस्टसक मीरा टाकीज छल झोपड़ी सन। एक दिन फिल्म देखैत छलौं तँ एकटा बड़ सुन्दर व्यक्तित्व। स्वामिनी स्त्री छलीह हालमे। सहरसामे एतेक शालीन महिला नहि देखने छलहुँ। पैघ घरक बेटी-बहूक गरिमा नेने। पाछाँ ज्ञात भेल जे मीरा टाकीजक मालकिनी, चन्द्रदेव सिंहक पत्नी छलीह । बादमे ई चन्द्रदेव बाबूक अभिन्न संगी आ मीरा टॉकीजक अधिवक्ता सेहो भऽ गेलाह।

जखन कखनो ई काज सँ थाकि जाइत छलाह तँ चूड़ीक दोकान धरि हम सभ घुमि कें चलि आबी ! घर मे ओहि समय तक मोहन जी, रमण जी, अशोक जी आबि गेल छलाह स्कूल मे पढ़बा लेल ! तखनो हमर घर मे एकटा रूटीन छल, अनुशासन छल – हम सभ संगे जलखै करैत रही । मोहन जी सभ लेल सामनेक मिठाइक दोकान सँ दही चूड़ा पेड़ाक उठौना बाबूजी सभ लगा देने छलाह! हम सभ राजू, पूजू, पींकी सभक लेल ई सभ नइं कऽ सकैत छलौं ! किन्तु, ओतेक छोट बच्चा सभ कहियो जिद्द नहि केलकजे हमहूँ दही पेड़ा खायब। ई सभ ईश्वरक कृपा छल, आदर्शवादी पिता लेल! .

ओहि समय सहरसाक समाज मे स्त्रीगण नहि एक बराबर बाहर निकलैत छलीह, सभक माथ पर आँचर रहैत छल ! कायस्थ टोली मे जगतपुर बसल छल जे हमर पीसीआ सासुर छल ! एहि कारण हम सभ गंगजला मे घर लेलौं जाहिठाम दूर दूर धरि हमर केओ सासुर बला नइं छलाह ! जखन हिनका संग बाहर कहियो जाइत छलौं तँ माथ पर आँचर राखि ! नेनपने सँ हमर आदत छल जे हम केश खुल्ले राखैत छलौं। आ कात मे एकटा फूल केस मे खोंसि लैत छलौं।

हमरा सँ पहिने गंगजला मे एकेटा बी0ए0 पास महिला छलीह जकर रोब छल, रूतबा छल ! जखन लोक सभ कें ज्ञात भेल हमरा विषय मे कि ओकिल साहबक पत्नी सेहो बी0ए0 आनर्स केने छथि – तखन तँ स्त्री पुरूष मे जिज्ञासा होअऽ लागल। मर्द लोकनिक दृष्टि लगैत छल देहक भीतर धरिक एक्सरे कऽ फोटो निकालि लेत ! आ स्त्रीगणक आवाजाही शुरू भऽ गेल – संगे फुसुर फुसुर– हे वकील साहब दुनू बेकति संगे खाइत छथि, संगे घुमैत छथि। जखन हम ई सभ सुनीतँ अकच्छ भऽ जाइत छलौं आ हिनका लग दहो बहो कानऽ लगैत छलौं।

ई सभ बात सुनि खूब हँसैत छलाह – रन्नो, अहाँ कें लोक अपन पतिए लागा कें चिढ़बैत छथि ने केकरो आन संग तँ नहि ? ई तँ खुशीक गप थीक जे पति-पत्नी मे कतेक प्रेम छैक !

ई छोट सन बात बुझि हमर नोर उल्लास मे परिवर्तित भऽ जाइत छल – साँचे तँ कोनो आन संग – बाप रे हम तँ मरिये जइतौं !

मुदा, एतबहि पर अंत नहि भेल, हमर घुमबाक बात डुमँरा धरि पहुँचि गेल! बाबूजी हमरा सभकें बिनु किछु कहने बड़का चिट्ठी हमर पापा कें उपराग सँ भरल पटना पठा देलखिन। अहाँक बेटी बाजार मे ललन जीक संग घुमैत अछि ! सहरसा मे ककरो पत्नी बजार नहि जाइत छैक ! सुनि-सुनि हमर माथ लाज सँ झुकि जाइत अछि। पापा उत्तर देलन्हि– 'हमर बेटी आगि मे रहय वा कि पानिमे, हमर बेटी दिसि केओ आंगुर उठायत, ओकर आंगुर गलि कें नष्ट नइं भऽ जायत तँ हम पिता हेवाक गर्व छोड़ि देब। तैयो हम बेटीक बाप छी, हमर बेटी सँ गलती कोनो होऽ तँ माथ झुकाय हम क्षमा मंगैत छी। दुनू पत्रक नकल हमरा पटना सँ सहरसा पठा देल गेल ! हमरा सभ स्तब्ध रहि गेलहुँ। कारण बुझि गेलहुँ – हमरा जे सहरसा मे रोकि लेलनि वर्माजी – सजा स्वरूपे अपन खौझाहटि बाबूजी हमर पापा पर उतारलनि। एक दिस पापाक विश्वास अपन बेटीक प्रति हमरा मे अप्रतिम साहस आ शौर्य भरि गेल, दोसर दिस पापा एहेन व्यक्तित्व बेटीक बाप हेवाक स्थिति कें कतेक विनम्रता सँ उजागर केलनि! इ तँ समाज छल हमर !

जाहि ठाम पापाक अखंड विश्वास हमरा पर, हिनक अंधविश्वास हमरा मे विद्युत तरंग भरि गेल, आत्मविश्वासक अखंड दीया हमर अन्तर्मन कें आलोकित करऽ लागल ओहि ठाम एहि पत्र चारक कारण एकटा ग्लानिक भावसँ हिनक हृदय क्षत विक्षत भऽ गेल !

ओहिनो हमर जनम 9 अगस्त कें क्रांतिकारी शहीद दिवस कें भेल छल ! हमर मोन मे विद्रोहक भाव उठैत छल – समाजक सड़ल गलल मान्यता परंपरा पर, किन्तु विद्रोह करब उद्दण्डताक परिचायक होयतैक ! अन्तर सँ चीत्कार उठैत छल किन्तु प्रकट नहि कऽ सकैत छलहुँ। सीमा सँ बाहर जेवाक अनुमति नहि छल !

तखन लेखनी अभिव्यक्तिक माध्यम बनल-दुख दर्द, छटपटी, विवशता नारीक। हम अपन रचनाक केनबास मे उतारवाक प्रयत्न करऽ लगलौं – इएह हमर चैन, छल हमर शांति, हमर लेखनक क्रांति काल हमर जीवनक संक्रान्ति काल।

ओहि रूढ़ीवादी सामंतवादी परिवारक बेटा होइत हिनका मे कतौ कोनो अहंकार नहि छल ! हिनका डुमराक राजकुमार कहल जाइत छल ! विद्यार्थी काल मे जखन छुट्टी सभ मे ई पटना सँ गाम अबैत छलाह तँ दूरे रहैत छलाह कि सौंसे गाम मे अनघोल मचि जाइत छल। ललनी आबि रहल अछि, लालभाय आबि रहल छथि–

काकी, नवकी काकी सभ ओसारा पर पटिया झाड़ि, कें बिछाबऽ लगैत छलीह, लालकाकी ओहि पर सँ चद्दर बिछा दैत छलीह। दाइ-नोकर सभ जलखै पानि लेल हल्ला मचौने – हे यै लालभाय की खेतैक? हे माछ आनलक की नहि – कने रघुबीर कें कहि अबियौक गोरपारावला– तुरंते माछ पठा देत ! लाल मोहम्मद छागर कऽ पलान पर ठाढ़ भऽ जाय।

हम हिनक विषय मे कखनो माँ सँ तँ कखनो मोहनजी सँ सुनि-सुनि खुश होइत रहैत छलौं। ई देखबा मे जतेक सुन्दर छलाह, तन आ मोन सँ ओतबे कोमल, मधुर किन्तु, भीतर सँ ओतवे शक्तिशाली छलाह तखन ने स्कूल काल सँ कोसीक निकालल धार कें दोस्त सभक संग करेंटक विपरीत दिशा मे हेलि कें विजयी भऽ जाइत छलाह। वर्माजी सातम-आठम वर्गसँ मनोहर स्कूल, सहरसामे पढ़ैत छलाह! ओहिठाम होस्टलमे रहैत छलाह ? हुनक होस्टल वार्डन अश्विनी बाबू छलाह जे हिनकर सभक जीवनमे अनुशासनक पाठ पढ़ौलनि-भोजनक काल विष्णुकें, सूर्यकें अर्पण करैत मंत्रोच्चारक संगे। एकटा नियम आ अनुशासनसँ भरल जीवन बनि गेल छल हिनकर। हिनका संगे सत्यप्रकाश, मदन आदि पढ़ैत छलाह। हिनका जूता नहि छलनि काकाजी गछलनि, यदि अहाँ मैट्रिकमे फर्स्ट डीवीजन आनब आ फलाँ लड़काकें बेसी अंक आनब तँ अहाँकें हम जूता कीनि देब। ओहि जूताक प्रलोभनमे ओ अपन मेहनतसँ प्रथम श्रेणी तँ अनबे केलनि संगे जे संबंधी छलनि। हुनका सँ बेसी अंको। तखन पहिल बेर जूता ई पहिरलनि– आ अपन जीवनक समस्त नीक गुणक श्रेय अश्विनीजीकें दैत छलाह।

स्काटलैंड मे जखन पींकी-पाहुन संग घुमैत छलौं तँ कतेक बेर पहाड़क मध्य लगैत छल जे आगू रस्ता बंद अछि – आब की होयत ? किन्तु जखन लग जाइत छलौं तँ अपने आप बाट भेटि जायत छल ! ओहिना अपन जिनगी मे हमरा सभकें कतेक बेर लागल जे आगू रस्ता तँ बंद अछि – औनाय जाइत छलौं किन्तु दुनू गोटे हिम्मतक संग आगू बढ़िते जाइत छलौं आ बाट भेटि जाइत छल ! अन्तर छल जे पहाड़क मध्य रास्ता बनल छल खाली दूर सँ आभास होइत छल बंद हेबाक, एकटा भ्रम – मुदा हमर सभक जिनगी मे तँ सरिपों रास्ता बंद छल – सहरसा मे ओकालति शुरू करवा सँ हमरा सभ लेल अन्हार – सघन अन्हार छोड़ि किछु नहि छल। किन्तु, साहस आ आत्मविश्वासक दीया पथ कें आलोकित कऽ दैत छल। सीढ़ी हुनका लेल आवश्यक अछि जकरा छत धरि पहुँचनाय अछि किन्तु जिनक दृष्टि आसमान पर अछि हुनका अपन बाट स्वयं बनबऽ पड़ैत छैक ! कतेक अशक्त भऽ गेल रही हम सभ सहरसा मे! कतेक अनुराग कतेक विरागक समुद्रक अवगाहन कऽ जतऽ ठाढ़ रही, ओतऽ सँ घुरि नहि सकैत छलौं ! कतबो विघ्न-बाधा आबैक पार तँ करबे करब।

मौन मूक ससरैत मेघक पाछा अदृश्य चान क्षण भरि लेल अपन झलक देखाय विलुप्त भऽ जाइत छल ओहिना हमर दिनचर्या आ अनुभवक अढ़ सँ कहियो कहियो बीतल छोट छीन घड़ी साकार भऽ स्मृति मे छटपटाय लगैत अछि।

एकटा परंपरा ओकालत मे होइत अछि जे प्रायः लोक कोनो वरीय अधिवक्ताक संगे वकालत शुरू करैत छथि – एहि लेल जूनियर आसिनीयरक उद्भावना भेल अछि। साँच तँ ई अछि एहि पेशा मे ओकालत आरंभ करबाक दिने सँ हुनक गिनती जूनियर सँ सीनीयर दिस बढ़ैत श्रेणी मे होम' लगैत अछि।

जखन वर्माजी ओकालत शुरू केने छलाह तँ ओहिठाम जजो नहि छल। किन्तु, लगले जिला एवं सत्र न्यायाधीश कें अनबाक व्यवस्था भऽ गेल छल ! ओहि समय पटना हाईकोर्टक मुख्य न्यायाधीश सम्मानीय सतीश चंद्र मिश्रा जी छलाह जे हमर पापाक घनिष्ठतम मित्र सँ पारिवारिक सदस्य सेहो छलाह ! जजशिपक उद्घाटन करबा लेल हुनके सहरसा एबाक छल !

पापाक समाद आयल जे हम सेहो हुनका संग सहरसा आबि रहल छी। आ मुख्य न्यायाधीश सेहो हमर घर एताह !

एक दिस संपूर्ण सहरसा जिला मे हलचल मचल छल जजशिपक उद्घाटन भऽ रहल छैक, सुपौल-मधेपुराक सभ अधिवक्तागणक जमघट भऽ रहल छल, दोसर दिस हमर घर मे बेचैनी छल जे कतऽ बैसायब, की सभ खुआयब हुनका सभकें ?– हमर सभक घर पर मुख्य न्यायाधीश एताह। ई विश्वास नहि होइत छल किन्तु पापा फुसि नहि बजैत छथि ई जनैत रही। दोसर चाचाजी हमरो बड़ मनैत छलाह – सामने मे बिजली विभागक एस0डी0ओ0 रहैत छलाह। हुनका ओतऽ सँ सोफासेट आ किछु कुरसी सभ मंगवाय लेलौं ! तखन घर मे किछु छल नहि मुदा हाथ मे कौशल छल घर सजेवाक! ग्लास सभ मे पानि भरि, फूल पत्ती, घास फूस सँ सुन्दर-सुन्दर गुलदस्ता तैयार कऽ ठाम ठाम राखि देलहुँ! सूखल ठारि आ सूखल पत्ता कें डिब्बा सभ मे आकर्षक ढंग सँ राखि देलहुँ – पोलाव-माछक संगे, अनेको व्यंजन बनेलौं संगे मखानक खीर आ प्रानि फल सिघाड़ा सेहो छीलि कें राखि देने छलौं !

स्टेशनक अंत मे पुरानी कचहरी, जेल आदि छल। तत्काल ओहि मे जिला एवं सत्र न्यायालयक व्यवस्था कयल गेल छलैक! बगले मे ऐतिहासिक डाकबंगला छल जाहि मे महात्मा गाँधी जी ठहरल छलाह – ओकरा जज साहबक आवास बनाओल गेल।

उद्घाटन समारोह सम्पन्न भऽ गेल। सम्मानीय दुर्गा प्रसाद प्रथम जिला एवं सत्र न्यायाधीश बनि पदभार ग्रहण केलन्हि। हमरा तँ बेतारक तार लागल छल यानी

सायकिल पर लोक सभ आबि तुरत तुरत खबरि दैत छल – आ देखतहि-देखतहि दुइटा एम्बेसेडर कार घरक आगू मे रूकि गेल ! मुख्य न्यायाधीशक संगे पापा सेहो उतरलाह- संगे बहुतो हाकिम हुकुम छलाह ! हम सभ हुनक चरण स्पर्श केलौं ! ओ ढेरो आशीर्वाद दैत बजलाह – की हाल छैक शेफालिका? लेखन अहाँ कें चलि रहल अछि ? समय नहि भेटैत छैक तैयो कहियो कहियो मिहिर उनटा पुनटा कें अहाँ के पढ़ि लैत छी। पुनः वर्मा जी सँ गप करऽ लगलाह – केहेन लगैत अछि वर्माजी ओकालत मे ? उत्तर पापा देलनि – केहेन की लगतैन ? बड़का। बड़का नोकरी छोड़ि वकालत मे आयल छथि ! – हिनकर पीठ थपथपाय आशीर्वाद देलनि – भोजन देखि दंग रहि गेलाह – हम किछु नहि खायब ! खाली कबइ माछ खायब – आ मखानक खीर ! जाइत काल सूटक दूनू जेब मे सोहल सिंघाड़ा भरि लेलनि – रस्ता मे खाइत जायब। हम तँ सबरी जकाँ हतशून्य छलौं। ईहो नहि बाजि सकलौं सभटा सिंघारा डिब्बा मे पैक कऽ दी ! हुनका संगे आयल लोक सभ भरि छाँक खेलनि ! जंगलक आगि जकाँ समस्त जिला मे ई बात पसरि गेल जे उद्घाटनक उपरान्त मुख्य न्यायाधीश एकटा जूनीयर वकील ललन वर्मा ओतऽ गेल रहथि – आ ओकालत मे पहिलुक ब्रेक हिनका एहिठाम सँ भेटल । ई अचानक अन्हार सँ इजोत मे आबि गेलाह। अचक्के हिनकर कद बड़ उँच भऽ गेल आ हृदय सँ हम सभ पापाक आभारी भऽ गेलहुँ। हम हिनका एतबे कहलौं – देखू, अहाँ उदास छलौं हम वकालत आरंभ करवाक पार्टी नहि देने रही। आइ अहाँक पार्टीयो भऽ गेल एकदम शानदार भोज।

फेर तँ हिनक वकालतक जिनगी जगमगाय उठल । हिनक वकालतक आरंभ अदम्य उत्साह सँ भेल। जूनियर ओकीलक जीवन बड़ विचित्र होइत अछि – पहिने साधना तखन सिद्धि। हिनक हाथ मे वृहस्पतिक स्थान अत्युच्च छल ! दुइ बरीस बीतैत-बीतैत मोक्किलक भीड़ लागऽ लगलैक। उषाक अरुणिमाक संगे ओसारा पर मोक्किलक भीड़ लागि जाइक आ राति जखन तीति भीजि कें अलसा जाइ ताधरि मोक्किल बैसले रहैत छल। हिनक लेखनी चलैत रहैत छल। ओहि समय हिनकर मोक्किल छलथिन्ह रामानुग्रह झा जी, अवकाश प्राप्त सदर अनुमंडल पदाधिकारी- बकुनियाक बबुआ मंडल जी, शिव नंदन मुखिया जी आदि आदि – टक्कर होइत छल विन्देश्वरी सिंह, श्रीकान्त मुख्तार, गोपाल लाल दास आदि बड़का-बड़का ओकिल सँ।

मोक्किल आ केस हिनकर दुनिया छल, ध्यान ज्ञान आ चिन्ता ! ई तँ साँच अछि जे कानूनक परीक्षा मे उतीर्ण भेला सँ क्यो औकिल नहि बनि जाइत अछि । प्रैक्टिसक कलाक ज्ञान होएब आवश्यक। नव 'एप्रोच' हेवाक चाही। हिनकर मस्तिष्क सतत नाना विचारक जाल सँ ओझरायल रहैत छल। कोनो मोकदमा लैत छलाह तँ जेना

ओ प्रेस्टिज केस भऽ जाइत छल । ओहि केसक पाछाँ दिन राति पुस्तकक अध्ययन। आ तखन एकटा दृढ़ आत्मविश्वासक संग कचहरी मे एकटा मनमोहक नवस्टाइल सँ बहस करैत छलाह। अपन बात कें रखवाक ढंग एतेक सुन्नर छलन्हि जे जज सँ हाकिम धरि हुनका समक्ष झुकि जाइत छलाह। आ केस पर केस जीतैत जाइत छलाह।

एखनो ओ दिन सभ मोन पड़ि जाइत अछि तँ जेना कविताक एक पंक्ति स्मृति मे नाचऽ लगैत अछि– "एक आँख मे हँसी सजी है, एक आँख मे पानी"। सरिपहुँ मानव-जीवन सुख-दुख, रौद-छाहरि, नोर-मुस्कान सँ भरल अछि। हिनका एकेटा शर्ट छल किन्तु ओकरा बड़ सुन्दर सँ धोय कें लोहा कय रखैत छलाह ! आयरन नहि छल कोयलाक चूल्हिपर लोटा गरम कऽ ओकरा सँ लोहा करैत छलाह! जूता झाड़बा लेल घर मे ब्रश नहि छल। हमरा सँ कहथि कोनो कपड़ा दियऽ जूता झाड़ब। तखन हम अपन ऑचर सँ जूता झाड़ऽ लागै छलौं । पहिने तँ ई तमसाय गेलाह पाछा हमर समर्पण, पूजा भाव देखि ओ चुप रहि जाइत छलाह। हम ओहि जूता कें कतबो कीमती साड़ी रहैत छल अपन ऑचर सँ पोछैत छलहुँ आ हिनकासँ नुकाय ऑचर कें माथ सँ लगा लैत छलहुँ । आ ई क्रम जिनगीक अन्तिम क्षण तक चलल। कतबो जूता ब्रश क्रीम सँ चमकैत रहैत छल मुदा ऑचर सँ पोछनाय हमर पूजा छल। मोन पड़ैत अछि जे राजीव छह सात बरीसक छल– ओकरा गंजी नहि छलै, हिनकर मोजा फाटि गेल छल। दस टाका दस्तखतक भेल छल। ई बाजलाह राजूकें गंजी आनि दिऔक, राजीव बाजल छल जे नहि पापाके मोजा आनि दिऔक– पापा कोर्ट जाइ छथिन! करेज सँ लगा नेने छलौं राजू कें अपना लेल तँ सभ जीवैत अछि जे दोसरा लेल जीवैत अछि ओ महान छथि– पापाक देल आदर्शक साकारप। दोसर दस टाका हिनका भेल छल जकरा सँ छोट सन लोहा करैबला हम सभ तीन टाका मे खरीदने छलहुँ आ ई लोहा पटना धरि हमर सभक संग देलक जावत पींकी अपन कमाय सँ एकटा विजलीबला लोहा नहि देलक। कोनो-कोनो दिन ऑखिक समक्ष भगजोगनी जकाँ दमकऽ लगैत अछि तँ एकटा विचित्र दर्द सँ हृदय भरि जाइत अछि। कोनो केस जीति अबैत छलाह तँ अपन हर्ष सँ हमर सर्वांग तीताय दैत छलाह – 'राज, आइ हम फलाँ डकैती केस जीति गेलहुँ । जूनियर सभ हमरा उठाय नाचऽ लागल ....। बड़का बड़का ओकिल सभ मे बहुत कम केओ एहि तरहक केस जीतल छथि राज, हम कतेक हर्षित छी, कतेक! आ हमर ठोर पर फुदकैत मुस्कीक चिड़ै अपन पंख पसारि हँसीक रूप लऽ लैत छल। पतिक सफलता मे हमर सफलता ! 'राज, हमरा जज साहब पीठ ठोकि कहलन्हि, अहाँक भविष्य स्वर्णिम अछि। हमर आशीर्वाद अछि अहाँ परिश्रम करू। अहाँ पैसाक पाछा नहि भागू, पैसे अहाँक पाछाँ भागत। राज, अहाँ मात्र पाँच बरख कष्ट काटू मात्र पाँच । जखन ई प्रैक्टिस शुरू केने छलाह तँ हमरा कहलनि

– अहाँ सँ एकटा गंभीर प्रश्न पुछि रहल छी – वकालत मे दुइ टा बाट अछि पैसा आ प्रतिष्ठा यदि हम इनकम टैक्स, सेल्स, टैक्स मे वकालत करब तँ पैसा सँ घर भरि जायत लेकिन हम कहियो ओकिल नहि बनि सकब। यदि हम सिविल, क्रिमिनल आदि मे वकालत करब तँ मेहनत बड़ अछि, पाइ कम – किन्तु, प्रतिष्ठा बहुत छैक । अहाँ हमरा जे कहब वएह हम करब – पैसा कि प्रतिष्ठा – हमरा क्षणो नहि लागल छल जवाब देबा मे – हमरा प्रतिष्ठा चाही जाहिठाम प्रतिष्ठा छैक देर सबेर पाइ आबि जाइत छैक किन्तु जाहिठाम पाइ छैक। हिनकर मोन हल्लुक भऽ गेल छलैक। उन्मुक्त भऽ वकालत शुरू केलनि।

हमर हृदय मे हुनकर सफलता सँ हर्षक नान्हि-नान्हि टा दीप जरि उठैत छल। सरिपहुँ हमरा कोनो दुख नहि छल, कोनो असंतोष नहि। पतिक कर्मठता आ यश सुनि-सुनि हमर हृदय जेना असंख्य उल्लसित तारागण सँ भरि जाइत छल........।

मुदा, असंतोष छल, जीवन मे जाहि चीज कें हम चाहलौं हमरा भेटल। फेर हमर जिनगी मे विकलताक दीप किएक जरि उठल ? बेचैनीक सागर कोना उमड़ि आएल ? सभ सँ बेसी आक्रोश उठैत अछि अपन पापा पर जे हमर नाम 'शेफाली' रखलन्हि। रौदक प्रखरता मे मुरझायल कली आ' रात्रिक शीतलता मे साँस लेनिहारि। हमरा पर नामेक असर पड़ि गेल। बातक कठोरता सँ हम मुरझा जाइत छी आ बातक शीतलता मे हम जी उठैत छी। ई कहैत छथि – 'अहॉ क्षणे मे मुरझाइत छी आ क्षणे मे प्रफुल्लित भऽ जाइत छी।' आ हम सोचैत छी जे बेरि-बेरि जीला-मरला सँ तँ नीक जे एके बेरि मरि जाय। बातक प्रचंड रौद मे हम कोना संयमक छत्ता लगाय चलैत छी से हमहीं जनैत छी। आ एहि कारण हम भीतरे भीतर टूटल जाइत छी। सरिपहुँ, ई बड़ विचित्र लगैछ जे अपन – आन केओ कोनो कठोर बात बाजि दीअय तँ जिनगी जीवाक इच्छा एकदम मरि जाइत छैक। ई जखन तमसा जाइत छलाह हमर कोनो अनारीपने सँ तँ हम मुरझाइत छलौं।

हमर ऑखिक समक्ष अतीतक एकटा क्षण अंगेठी लऽ उठैछ सरिपहुँ वियाहक बाद प्रत्येक कन्या कें आकाश गंगाक संगीत सुना पड़ैत छैक। दशो दिशा इन्द्रधनुषक सप्तवर्ण सँ आलोकित बुझा पड़ैत अछि। समस्त सृष्टि एकटा नन्दन कानन सन लगैत अछि .....अन्हार राति मे ताराक छाहरि आ रजनीगंधाक नीचा हम आ ई कतेको गप्प करैत छलौं – 'राज, लागैछ कखनो काल, जे विवाहक बेड़ी जाहि मानव लेल बनल ताहि मे अहाँ नहि छी ? अहाँक हृदयक विशाल उदधि निर्बन्ध आकास कें स्पर्श करक लेल आतुर-आतुर सन।

'ओ, अहॉ तँ कविते बनबऽ लगलहुँ ककरा सँ सीखलहुँ अहाँ ?'

'राज, अहाँ नहि बुझि सकैत छी, हम केकरा सँ सीखलौंह इ भाषा ? विश्वास होयत ई अहीं सँ सीखल भाषा छी राज ! लोकक दुख सँ स्वयं दुखित भऽ उठनाइ, आनक दर्द कें अपन दर्द बना कनैत रहनाइ, भीड़ मे रहितो असगर भऽ गेनाइ। सजल मेघमाला सँ मूक सँ भाषण अहाँक ....हमरा ओ दिनो मोन अछि, हम सभ पटना मे छलौं गाय कें जखन दोसर बाछी भेल छल तँ अहाँ कतेक हर्षित भेलहुँ। मुदा, जखन पहिलुक बाछी पहिने जकाँ दूधा पीवा लेल गेल तँ गाय ओकरा सींग मारि भगाय देलक आ अपन नव बाछी कें जी सँ चाटि-पुचकारि दुलार करय लागल। तखन अहाँक आँखि मे गाय कें प्रति रोष आ बाछीक प्रति सहानुभूति भऽ गेल छल। बाछीक दुख सँ दुखी अहाँ नोर झहरावैत छलौंह .... साँचे, हमरा ओ दिन स्मृति मे काँपि गेल जे गाय कें सींग मारैत देखि हम भयभीत कपोती जकाँ माँ सँ लिपटि गेल छलौं. .....। मुदा, जखन आकाश-गंगाक संगीत मूक भऽ जाइ, इन्द्रधनुषी रंग मलिन भऽ उठैत अछि आ धरतीक कैक्टस चारू दिस सँ घेरि तन मोन कें क्षत करऽ लगैत तँ सभ स्मृति शिथिल भऽ जाइत अछि । प्रैक्टिस शुरू केलाक किछु दिन बादक ओ घटना जेना एखन धरि सिनेमाक रील जकाँ आँखिक समक्ष नाचि उठैछ ......साँझ भेल जाइत छल। आकास मे लसकल प्रकाशक अंतिम खंडी विलीन हेवा लेल तत्पर। गर्मीक शस्य-शून्य आ जतेक दूर घरि दृष्टि जाइत छल ओहि ठाम तक पसरल मैलरंगक मैदान मे सूर्यास्तक दृश्य देखि लगैत छल आब हम किछु नहि देखी, आब किछु नहि चाही। मोन होइत छल एहि तरहे सुवर्ण रंजित निस्तब्धता आ विस्तीर्ण शांति मे डुबि, सभ किछु बिसरि आँखि मुनि ली। ककरो सँ कोनो प्रयोजन नहि। एहि जीवन-तरी कें सुख-दुखक सागरक तट पर लऽ जा कऽ शब्दहीन संध्याक समय कोनो कम्पहीन वटवृक्षक नीचाँ बान्हि दी। सूखल साल मे जेना दुपहरियाक आकास तपैत अछि तहिना हमर हृदय जरि रहल छल। अन्हार भऽ गेल आ हिनकर कतौ कोनो पता नहि। अन्हारक अबरखी खंडी सभ जेना बरफमे तह जकाँ हमर मानस कें घेरने जाइत छल। हिनकर एतेक दौड़-धूप, एतेक कठोर कर्म, शिथिल तन, शिथिल मोन- 'राज' - हमर कान्ह पर स्नेहक दूइटा थाप पड़ल। हम चेहा उठलौं - कखन गेल छलौं अहाँ ? सम्भव भोरेक पाँच बजैत छल। आ एखन कतेक बजैत अछि - 'एखन - घड़ी दिस तकैत ई बजलाह - जाह........घड़ी तँ बंद अछि ? बंद किएक भेल - जेना स्वयं सँ ई पुछलन्हि ? 'समय पर चाभी नहि देला सँ एहिना होयत - अर्थपूण स्वरे हम बजलौं - गाछ बीरीछ जे जल सँ नहि सींचल जाइत अछि ओ तँ मौला जाइत अछि। एहि बातक ध्यान मानव कें सदिखन रखवाक चाही ?' - कहैत द्रुत गति सँ हम ओहिठाम सँ जलखैक ओरिआओन करऽ चलि गेलहुँ। ई हतप्रभ ठाढ़। हिनको मोन नितान्त निराश छल। ओ कोनो सीनीयरक अन्दर कहियो नहि रहलाह। मुदा मुरली बाबूक टेबुल पर बैसैत छलाह कारण जे अपना वृद्धावस्थाक कारण कोर्ट जेवा सँ लाचार रहैत छलाह।

तँ ई हुनका लग जाइत छलाह। भरि दिन काज करबाक उपरान्तो मुवक्किल बिनु फीस देने चलि गेल छल।

हम मोमबत्ती आनि राखि देलहुँ। ई ओहि मोमबत्ती कें देखैत रहलाह - बाती डहैत जाइत छल, मोम गलल जाइत छल - जीवन चुकल जा रहल आ शक्ति घटल जा रहल छल ई नियतिक कोन उपहास ? ओ मोमबत्ती नहि जेना हिनक मोन छल जे संघर्षो मे सतत प्रज्जवलित रहबाक प्रेरणा रखैत छैक।

एम्हर हम सेहो ओ जरैत मोमबत्ती देखि रहल छलौं। बाती डहैत जाइत छल आ मोम गलैत जाइत छल। मोन बाती सदृश्य जरि रहल छल आ तन मोम जकाँ गलैत जाइत छल। ओ मोमबत्ती नहि छल मुदा कर्ममय जीवन मे अग्निशिखा जकाँ जरैत रहबाक अद्भुत प्रेरणा .....अकचका कें दूनू गोटे एकटा नम्हर साँस लेलहुँ। नहि-नहि साँसक एकटा घोंट पीलहुँ। दूनू गोटेक दृष्टि मिलल जेना आत्मा-आत्मा कें पकड़ि लेने हो, धरती आकास कें आलिंगित कऽ लेने हो ......जेठक तपैत धरती कें बरखाक एक बून्न नहियो भेटल तँ की सजल मेघ आकास पर नाचि ओकरा सजला बना देलक - 'अहाँक मोन मे जे होइछ हमरा कियेक ने कहैत छी ? हम बुझैत छी जे अहाँ कें कोठरीक अंधकार नहि चाही, खुजल आकासक इजोत चाही' - ई हमर कान मे गुनगुनाय देलन्हि - 'अहाँ कतेक सहनशील छी राज कतेक ....।

सरिपहुँ, जिनगी मे घटित होमय वाला कतेको बात हमर सभक ज्ञान मे नहि अबैत अछि। कोनो काज कयल नहि जाइत अछि मुदा भऽ जाइत अछि। आ जिनगी बिना हमर सभक इच्छा कें विचित्र ढंग सँ चलैत गेल। एक कें बाद एक विचित्र अनुभव। ओहि अनुभव सँ हम बड़ संत्रस्त भऽ उठल रही। खतरा सँ खेलनाइ पुरुषक प्रवृति अछि मुदा स्त्री कें अपन बच्चा कें पालन करबाक भार रहैत छैक। पतिक सेवा करबाक रहैत छैक। परिवारक भार रहैत छैक। लोक स्त्री कें कायर कहैत छैक। ओ किएक कायर अछि ? की केओ एहि बात पर धयान देलक ? स्वयं कष्ट सहवा मे, स्वयं मरि मिटवा मे स्त्री कहियो पाछाँ नहि रहल।

ओ कायर बनि गेलीह 'अपना' लेल जीवित रहबाक संदर्भ मे ! प्रत्येक स्त्री भावनामयी प्राणी थीक। प्रत्येक स्त्रीक बुद्धि ओकर भावनाक दासी रहैत छैक। बौद्धिक स्त्री सँ बढ़ि खतरनाक प्राणी केओ नहि। करुणा, समर्पण स्त्रींक गुण अछि। यदि स्त्री सँ करुणा, समर्पण तिरोहित भऽ जाय तँ सृष्टिक क्रम रूकि जाय.......

कोनो सधवा मरैछ तँ कतेक धूम-धाम सँ ओकर अरथी निकलैत अछि ? वियाहक बाद घर सँ कन्याक महफा नहि निकलैत अछि, मुदा ओकर इच्छा, कामनाक अरथी.........।

सरिपहुँ कखनहुँ काल भयानक कुंठा आ संत्रासक मध्य जेना एकटा प्रेरणा भेटैत अछि जे किछु अछि ओकरा स्वीकार करू। प्रसन्न भऽ भोगू जन्म अहाँक बस मे नहि अछि तँ मृत्यु सेहो अहाँक बस मे नहि अछि। पापा बजैत छथि – 'सभ किछु तँ स्वयं मानवक अंतर मे अछि ओ बाहर कत सँ भेटत ? सूर्यक प्रकाश तँ सर्वत्र अछि मुदा मानव ओकरा अपन आँखि सँ ग्रहण करैत अछि.............।

एक दिन भोरे भोर ई बड़ चिन्तित छलाह। घर मे एको टाका नहि छल। इजोतक एक कौर लेल ई तरसि गेल छलाह। कतेक काल धरि हिनक मोनक पानि उधियाइत रहल। दाढ़ी बनबैत काल आगू टाँगल ऐना मे हिनका किछु नहि सुझैत छलैक। उधिआकऽ सुखि गेल पानि जकाँ हिनका अपन समक्ष किछु नहि सुझैत छलैक। मोन मे सुखायल पानिक एकटा गरम पपड़ी जकाँ जमि गेल। सोचक सागर मे डूबल ई ...... 'पापा, पापा चीनीया बादाम कीनि दिय' – सुखायल पानिक पपड़ी जेना केओ चीर देलक। छह बरखक राजू आ चारि वर्षीया सुकू हिनकर पएर सँ लटपटायल।

'चीनीया बादाम – चीनीया बादाम। पढ़नाइ लिखनाइ किछु नहि। भरि दिन खाली ई खायब, ओ खायब। पैघ भऽ कऽ हरवाहा, चरवाहा बनत। एहेन बदमाश नेना सभ हम कत्तौ नहि देखने रहीं ....।

दूनू नेना हतप्रभ। दुनूक मुँह पर सँ मुस्कीक चिड़ै फुर्र दऽ उड़ि गेल। मुदा रेकर्ड प्लेयर जकाँ ई बजिते रहलाह। रेकर्ड पर सँ हम सूइया उठा देलहुँ .... 'चीनीया बादाम माँगबे केलक तँ कोन अनर्थ केलक। सौंसे टोलक नेना सभ खा रहल अछि। पैसा नहि छल, प्रेम सँ बुझा दितियैक।'

'हँ, हँ, किएक ने बुझबैत छी ? सभटा बच्चा कें तँ अहाँ बहसा कें राखि देने छी। जेहने हमर पत्नी, तेहने हमर नेना सभ, तेहने हमर भाग्य।' हिनकर हृदय जेना हरियर नोटक अभाव मे उधिआइल पानि जकाँ भरि गेल छल। हम स्तब्ध जे कागज क एहि हरियर नोट मे एतेक शक्ति अछि जे मानव कें हँसाइयो दैत अछि, कनाइयो दैत अछि ! यदि पुरूषक संग कागजक हरियरी बेसी अछि तँ ओ अपन धीया-पूता कें गर लगा बाजत – 'ई तँ हमर हीरा मोती अछि।' अपन मोहक दृष्टि सँ घर-दुआर कें सजाय नन्दक कानन जकाँ विहुँसाय देत। मुदा जखन ओकर जेब खाली रहैत छैक तँ ओकर मोन क्षुब्ध भऽ जाइत छैक। चिड़चिड़ा भऽ जाइत छैक – हम सोचक जाल बुनैत रहलौं।

सहनशील-सहनशील ई कोन शब्द थीक जे स्त्री कें अपना दिस घींचि लैत अछि – नहि-नहि हमही मूर्ख छी मूर्ख जे एहि शब्द-जाल मे ओझरा जाइत छी।

'ओकिल साहेब छथि' – तावत बाहर सँ स्वर आबि सभक कान मे खसि पड़ल।

'पापा, मोहरिर साहेब बजबैत छथि'..... ई अनमन सन उठि बाहर गेलाह .... 'की बात छी ?'

'ओ चन्द्रायण वाला मोक्किल काल्हि फीस हमरा देने छल। हम अहाँ कें नहि दऽ सकलहुँ – 125 टाका निकालि हिनका हाथ मे रामेश्वर मोहर्रिर दऽ देलकन्हि। एकटा चमक आबि हमरो मुँह पोछि चलि गेल मुदा हम अनमन रहलौं।

'राज-राज – फीस भेटि गेल – बाँहि मे सुकू के उछालैत ई बजलाह – 'राजू बेटा, देखहक तँ सड़क पर बदाम वाला छैक ? बजाबहक तँ, चीनीया बादाम वला चलि गेल की ?

छोटकी सुकू हुनकर हाथ सँ माछ जकाँ पिछड़ि गेल – 'हम वलफ खेबै, हम वलफ खेबै।'

'राज एकटा बरफ अहूँ खाउ' – प्यार सँ, लाड़ सँ ई बजलाह।

'नहि नहि हम नहि खायब' – हमर घाह हरियरे छल।

'अहाँ भागवंत छी राज' – हमर ठोर पर फाटल दूध सन हँसी आबि गेल। हँसी उदास छल। गोधुली बेलाक लाल-लाल प्रकाश मे दूर सँ आएल वंशीक स्वर मानव चित्त कें कने काल लेल उदास कऽ दैत अछि तहिना हमर एहि हँसी सँ ओ क्षण भरि लेल उदास भऽ उठलाह – पुनः हमर दुनू बाँहि झकझोरैत बजलाह – 'हँ-हँ, सत्ते अहाँ भागवन्त छी। तें हमर नाह आब डूबत तब डूबत कि उबरि जाइत अछि। अहाँ कें हम कतेक गंजन करैत छी, कतैक डाँटैत छी – मुदा अहाँ कतेक सहनशील छी, कतेक सहनशीलऽ .... आ सहनशीलताक एहि शब्द जाल मे हम पिघलैत रहलौंह – पिघलैत रहलौंह ....।

सहरसाक जीवनक कतेक रंग छल हमर। एक दिस हमर देओर हीरेन्द्र जीक अलग झुण्ड छल। सुभाष धनेश्वर, फुलेश्वर सभक मित्र मंडली कॉलेजक बाद हमरा ओतऽ अबैत छल। सभ केओ भौजी-भौजी कऽ हमरा घेरने रहैत छल– हा-हा ही-ही जलखै-पानि सभ होयत रहैत छल। तावत ई अपना कोर्ट सँ आबि जाथि। हमर लगक झुण्ड देखि अपन कोठरी मे चलि जाथि। हिनका कपड़ा बदलबा लेल दैत छलौं– जलखै दैत छलहुँ कि तावत ओम्हर सँ हीराजी सभ चीकरऽ लगैत छलाह-भाभी भाभी– हम संकेत करइत छलहुँ-शांत रहू हिनकर मोकिल सभ अछि-बाहर चलि जेताह तखन आयब। कतेक बेर हिनकर कोनो संगी कोर्ट सँ आबैक तँ एकबेर ई बजाबथि, एकबेर हीराजीक झुण्ड। ई प्रायः रोज रोजक गप छल। ओहि बीच कोनो

एकटा हिन्दी पत्रिका मे हमर कथा निकलल छल 'दर्द की बाँहों में झूलती शाम'। - किछु एहने शीर्षक छल, ओ कथा सहरसाक युवा वर्ग मे तहलका मचा देने छल। सभ हमरा खोजैत-खास कऽ सुभाषक हृदय पर एतेक असर एकर पड़ल छल जे कोनो बात भेल छल तँ हमर आँखि सँ नोर हाथ मे राखल गिलासक पानि मे खसि पड़ल- सुभाष झट्ट दऽ हाथ सँ गिलास लऽ सभटा पानि पीवि गेल-भाभी, अहाँक सभटा दुख दर्द हम स्वयं लऽ रहल छी- मोन पड़ैत अछि तँ सोचैत छी कतऽ अछि सुभाष एखन? साइत कत्तौ डिप्टी मजिस्ट्रेट अछि- तीस पैंतीस बरीस भऽ गेल होयत भेंट भेना। एकबेर हम राति मे सपना मे मनोज कुमार कें देखि लेलौं। हीरेन्द्र सँ कहलौं प्रकाश जी हम आइ सपना मे मनोज कुमार कें सीढ़ी पर सिगरेट पीबैत देखने छी। ओहि समय मनोज कुमार हमरा बड़ नीक हीरो लगैत छल।

दोसर दिन साँझ मे मोटका मोटका किताब लऽ हीरेन्द्रक ग्रुप पहुँचल। किताब देखि घबड़ा गेलहुँ- की बात थीक- परीक्षाक तैयारी करैक अछि की? नहि नहि भाभी- अहाँ राति जे मनोज कुमार कें सपना मे देखने छी ओहि लेल ई सभ आयल अछि साइकोलोजीक पुस्तक लऽ कऽ। आब अहाँ विस्तार सँ बाजू तँ की-की देखलहुँ।

हम लाज सँ मरि गेल छलहुँ। सभ हमरा कचकचा रहल छलाह । एक बेर हमरा कायस्थ टोली मे ककरो ओतऽ जेबाक छल। केओ संग जायबला नहि छल। हिनका कहला पर हीरेन्द्र संग भेलाह जेबा लेल। तखन ओ बीएससीक छात्र छलाह। हमरा एखनो मोन अछि हम मैरून रंगक साड़ी पहिरि तैयार भऽ हीराजीक संग गेलहुँ। रस्ता सहरसा कालेज भऽ कऽ छल। ओ एक बेर हमरा दिस ताकि फेर दृष्टि झुका लेलनि-पता नइं की सोचलनि? जहिना सहरसा कालेज भऽ कऽ जाय लागलौं ओहिना रस्ता भरि कतेको विद्यार्थी बधाई हीराजी, बधाई भाभीजी। अरे हीरना मिठाइयो नहि खुअएले, बजेबो नहि केले। हम किछ नहि बुझि सकलौं। भाभी तँ हम रहबे करी। मुदा, हीराजीक मुँह एकदम लाल छल आ गरदनि लटकौने छलाह। घर अबिते हमरा डाँटय लगलाह-अहाँ हमरा संग एतेक तैयार भऽ कऽ नहि निकलु। सभ केओ अहाँकें हमर कनिया बुझि रहल छल- कनन मुँह भऽ बजलाह- आब हम बुझलहुँ- खूब हँसी लागल छल। ओ बड़बड़ाइत रहलैथ, हम हँसइत रहलहुँ.....

एम्हर जय, विजय, संजय यानी मोहन जी, रमण जी, अशोक जी हमर जिनगीक दोसर ध्रुव छलाह । ओहि समय हिनकर वकालत मे एकटा सुन्दर लहरि सन आबि गेलाह विन्देश्वरी यादव हिनक जूनियर भऽ कऽ। काज करबाक ऊर्जा आर बढ़ि गेलैक। कोर्ट सँ अबैत छलाह आ फेर एगारह बारह बजे राति धरि दुनू गोटे

मोक्किल सँ घिरायल रहैत छलाह। रोजक रूटीन भऽ गेल। एम्हर ओ मोक्किल सँ घिरल एम्हर हम दीअर सभ सँ।

बाबूजी हिनका राजदूत मोटर सायकिल कीनि देलथिन। मुदा, ई एतेक कम स्पीड मे मोटर सायकिल चलबैत छलाह जे हमरा बड़ अकच्छ लागय। स्कूल पएरे जाइत लड़की सभ आगू भऽ जाइत छल- हम बाजलहुँ- कतेक खराब लगैत छैक-सभ अहाँ पर हँसैत हेतीह। एह, हँसत किएक? हम तँ आस्ते सँ एहि लेल चलबैत छी जे स्कूली लड़की सभक चालि देखी-किन्तु हिनका मोटर सायकिल सँ कोर्ट जेनाय नीक नइ लगैत छल। एम्हर मोहन जी कनिक अन्हार होइतहि हमरा मोटर सायकिल पर बैसाय उड़ि जाइत छलाह। कहियो एस. एन. पी. वर्मा ओतऽ तँ कहियो ओहिना कलक्टरी दिसक चक्कर लगा चलि अबैत रही। शारदा हिनकर अभिन्न मित्र छलाह- शारदा दुनू बेकति हँसय लागथि बुझि गेलहुँ, ललन काज करैत होयत आ मोहन जी भाभी कें लऽ उड़ि गेल।

हम जल्दी घुरबा लेल बेकल भऽ जाइत छलहुँ। ई सभटा जनैत रहैत छलाह। रोज राति मे हिनका भरि दिनक गप कहैत रहौं खाली एकेटा बात नहि बजैत रही जे मोहन जी एतेक स्पीड मे गाड़ी चलबैत छथि।

एकबेर बाबूजी सहरसा आयल छलाह। कत्तौ घुमबा लेल निकलल रहथि। मोहन जी कहलनि चलू भाभी एक चक्कर लगा अबैत छी- हम पहिने तँ नहि-नहि कहलौं, पाछा परिकल मोन चलि देलहुँ।

जहिना कलक्टरी लग पहुँचलौं ओम्हर सँ रिक्शा पर बाबूजी काग्रेस आफिस दिस सँ आबि रहल छलाह। अन्हारो मे हुनकर गांधी टोपी दूर सँ झलकि रहल छल। जय, बाबूजी अबैत छथि। सुनैत देरी कि मोहन जी सौके स्पीड मे गाड़ी भगाय घर पहुँचा देलनि। हमर जी डर सँ धकधक कऽ रहल छल- मोहनजीक गाड़ीक ओ स्पीड कोना बचि गेलहुँ- एम्हर बाबूजी ओम्हर साक्षात् एक्सीडेंट-मृत्यु...।

आ तकर बाद कान पकड़लहुँ, घुरि कें मोहनजी संग की, ककरो संग मोटर सायकिल पर नहि बैसलहुँ। ई बाबूजी कें मोटर सायकिल वापस कऽ देलनि

सहरसा मे एकटा एहेन समय छल जे हम मोहनजी आ ई अपने-तीनू गोटे खाली डायलॉगे मे बात करैत छलहुँ। हिनकर डायलॉग कहियो-कहियो एतेक सशक्त होइत छल जे भोतिआयल पथिक कें बाट भेटि जाय-हिनक सभ डायलॉग हम लिखि लैत छलहुँ। हमर डायलॉग मोहन जी लिखैत छलाह- रुकू रुकू भाभी, एखन नहि बाजू। हमरा कलम आनऽ दियऽ तखन बाजब। हँसीक फौआरा छुटि जाइत छल। हमर तीनू गोटेक डायलॉग नोट करबाक हिस्सक बंदना कें छल। हम सभ कहियो ओहि

डायलॉग सभक अर्थक निषेधता कें गंभीरता सँ नहि लेलहुँ। ओहिमे कहियो गंभीर बात तँ कहियो हल्लुक मजाक नुकायल रहैत छल। ओ एकटा समय छल- विपरीत परिस्थिति, प्रतिकूल मनःस्थितिक मध्यो हँसी मजाक, हास परिहास चलैत रहैत छल। किन्तु, ओहि डायलॉग सभ मे हम जिनगी जीवऽ लागलहुँ, यथार्थ सँ मोन भगैत रहल। डायलॉगक बाद, सिनेमाक गीते मे हम सभ एक दोसरा कें जबाब दैत छलहुँ। एहि मे बंदना सेहो शामिल भऽ जायत छलीह। जखन ई असगरे बरंडा पर काज करैत रहैत छलाह, अर्द्ध रात्रि भऽ जाइत छल तँ हम एक कोनटा मे नुकाकें गबैत छलहुँ- लग जा गले से फिर ये हँसी रात हो न हो..... आकि टेबुल कुरसी सँ उठि जाइत छलाह। गबैत हँसैत-हाय इन प्यार मे डूबी हुयी आँखों की कसम.... आदमी क्या है फरिश्तों के बहक जाये कदम'- हम धरतीक प्राणी कहाँ रहैत छलहुँ- आओर आकास मे चलि जाइत छलहुँ- ओ हमरा प्यार सँ बेसी शब्दक फूल सँ सजवैत रहैत छलाह- हमर हाथ पकड़ि कखनो बजैत छलाह इ कलम पकड़य बला आंगुर छी- आखरक फूल कागज पर छिड़िअबैत रहू-अहाँ कतेक कोमल छी स्वयं नहि जनैत छी- सरिपों, हमरा शारीरिक कष्टक कनिको ज्ञान नहि रहैत छल किन्तु मानसिक रूप सँ आहत होयबा सँ ओ पलपल हमरा बचेवाक चेष्टा करैत छलाह। मोन पड़ि जाइत अछि अपन दिवंगत नारायण भाइजीक कथन–

''रजनी ! तों बर्डसवर्थक कविताक साकार रूप छह-'ए वायलेट वाय अ मौसी स्टोन, हाफ हिड्डन फ्रॉम द आइ, फेयर एज़ अ स्टार, व्हेन बनली वन इज साइनिंग इन द स्काय .... हमर चेहरा पर उदास मुस्कीक चिड़ै चुपचाप आबि बैसि जाइत छल ! जेना कोनो भाग्यहीना शाहजादी सुनसान उजाड़ किला मे असगर रहि गेल, कोनो भटकल आत्मा जकर बात, जकर भाषा क्यो नहि बुझि सकल .....

रजनी, एक मनुष्य सभकें प्रसन्न नहि राखि सकैत अछि । भाई जी बजैत छलाह। हम देखि लेलौं एक आदमी सभकें खुश नहि राखि सकैत अछि। सभकें खुश रखवाक प्रयास मे हम आइ धरि स्वयं खुश नहि रहि सकलौं। अपन चारू कात पसरल कतेको चेहर कोन झूठ- कोन साँच ई चिन्हवा मे हमर अबोध अन्तर आइ धरि ध खा खाइत रहल ।

एक बेर भाइजी अचक्के 9 अगस्त कें सहरसा आयल छलाह। घरमे एतेक धूम धड़ाका, भोज भात देखि भाइजी पुछलथिन्ह- ''आइ की बात छैक ?'' हम कनिक मुस्कुरा कऽ बजलहुँ- अहाँ एतय आइ आयल छी, एहि सँ बढ़ि की बात हेतैक ? रात्रि 8 बजे सभ लोक 'प्रेजेन्टस' लऽ कऽ आबय लागल तँ भाइजी चौंकलाह, आओर जेना भक्क दऽ हुनक मस्तिष्क मे कोनो झटका लगलन्हि- ''अरे, आइ तऽ 9 अगस्त अछि किने...'' ओ दौड़लाह बजार दिसि - कनिये काल मे घुरि

हमरा पर बाजऽ लगलाह - ''रजनी! तों हमरा एक्को बेरि नहि कहलह । हम तँ भरि दिन गप्प मे एहेन डूबल रही जे हमर मोन सँ तारीख एकदम्मे उतरि गेल छल ।'' जखन सभ चलि गेलैक तँ भाइजी हमर हाथ मे एकटा पोथी देलन्हि -- 'तट का बन्धन'- विष्णु प्रभाकर। हमर समक्ष क्षण भरि लेल एकटा दिन सिहरि गेल । भाइजी प्रथम बेरि हमर सासुर आएल छलाह । हमरा लेल साठि टाकाक साड़ी लऽ कऽ ! हम हुनका सँग झगड़ा करऽ लगलहुँ जे ''साड़ी लऽ हम की करब ? एकर बदला अहाँ साठिटा 'पाकेट बुक्स' नेने अबितहुँ !'' - आओर भाइजी बड़ जोर सँ हँसलाह ....'' रज्जी ! तों हमर अन्तर्मनक विह्वल धाराक तट छह । प्रत्येक नाहक निर्बलता तट थिकैक । प्रत्येक उर्मिक निर्बलता तट थिकैक । जकरा प्रति मोह सदिखन रहबे करत...'' हम प्रफुल्लित पन्ना उनटैलहुँ- 'बहिन, की बाजी? मौन की गहींर कें स्वर देत नहि ?'' आ भाई तटक बंधन बोड़ि असमये काल-कवलित भऽ भेलाह.....।

समय भगैत रहल अतीतकें बिसरेबाक क्रममे हम बेर-बेर अतीतमे चलि जाइत छी-

वकालत आरम्भ करबाक दुइ तीन बरीस बाद संजीवक जन्म भेल छल। जे कि चारू बच्चा पटना मे भेल छल तँ हिनकर दोस्त सब कहलन्हि एहि बेर भाभी कें एहिठाम रहऽ दिऔक । अहाँ भोजक डर सँ नैहर पठा रहल छीयेक हमरो मोनमे भेल हमर पति सहरसा मे वकालत कऽ रहल छथि। नीक बेजाय गृहस्थी चलिए रहल छल तँ हम किएक नैहर जायब। हमरो मोन मे होइत छल– मोहन जी तीनू भाइ घर पर छलाहे ओहि समय सुधीर बाबू सिंहेश्वर मे बीडीओ छलाह । शिवजीक परम भक्त। हुनका किछु कानूनी अड़चन छल तँ ओहि समय सेहो घरे पर रहैत छलाह।

करीब दस दिन पहिने होरी बीतल छल । पावनि तिहार मनएबाक हिनका बड़ सऽख रहैत छल । अग्रवाल साहब बिजली एस.डी.ओ. हिनकर दोस्त छलाह। होरी मे दुनू गोटे मिलि पुआ, खजूर, नीमकी आ माँस बनाय लेलहुँ। सभ केओ गाम चलि गेल रहथि- घरमे हम दुनू गोटे छलहुँ। अचक्के सभ स्त्रीगणक टोली होरी खेलय पहुँचि गेल । आ हम चूल्हि लग सँ उठि अंगना मे आबि गेलहुँ। फेर तँ रंग अबीरक रसधार सँ बातावरण धरि सिक्त भऽ गेल। रंग अबीर मे नहायल स्त्रीगण पकवान सभ खाइत रहलीह आ मिसेज अग्रवाल ठिठिआइत बजलीह - अहाँक रंग छूटबो ने कि अहाँ कें बच्चा भऽ जायत । हम भयभीत भऽ बजलहुँ-एना नहि बाजू एखन हमरा आठम मास चलि रहल अछि– हुजूम चलि गेल। पाँच-छह दिन बाद हमर मोन खराब भऽ गेल। ई अपना कचहरीमे आ हम लगातार स्रावित होइत जल मे नहायल छलहुँ। श्यामा पांडे तुरंत अस्पताल लऽ जेबाक सलाह देलथिन । दिन सँ साँझ भऽ गेल छल- ई हमरा अस्पताल लऽ जा रहल छलाह । कोर मे लीली छल आ पींकी ताहि सँ जेठ

राजू, सूकू घर मे केओ महिला नहि। किरासन तेल नहि छल आ हमरा अचक्के अस्पताल जाय पड़ल । लीली कानि रहल छलीह। रबीदास सभकें सम्हारने छल । डाक्टर देखतहि बाजल जे बड़ पानि निकलि गेल छैक। तुरंत ऑपरेशन होयबाक चाही, नहि तँ बच्चा नहि बचतैक । ई घबड़ा गेल छलाह- नहि, नहि हम ऑपरेशन नहि करायब।

ओहि समय समस्त सहरसा जीरो पावरक इजोत मे रहैत छल । पावर हाउस कें एहि सँ बेसी सप्लाइ करबाक ताकत नहि छल । प्रशासनिक वर्ग लेल अलग सँ इन्तजाम रहैत छल । सुनैत छलहुँ जे ककरो एमरजेन्सी ऑपरेशन होइत छल तँ टार्चक इजोत मे । जतेक मुँह ततेक बात । हँ, एक बात छल जे मीना कें सेहो एक मास पहिने हमरे लग बच्चा भेल छलै । ओहि समय अस्पतालक रंग रूप देखने छलहुँ। जेँकि नार्मल भेल छल तँ हमरा सभकें सभ ठीके लागल। ओहि नेना रणजीतक छठिहार बड़ धूमधाम सँ केने छलहुँ। चालीस पचास आदमी पोलाव-मीटक भोज खएने रहथि। उत्साह छल जे किछु तँ काम एलहुँ अपन ननदि केर ।

किन्तु अपना बेर मे, संजीवक जनम काल विधि वाम भऽ गेल । दस बजे रात्रि मे नीन्न सँ आँखि मलैत डाक्टर मेहता धोती कुरता पिन्हने पहुँचि बजलाह- ऑपरेशन तुरत करबाक छैक। ई तैयार नहि भऽ रहल छलाह फार्म पर दस्तखत करबाक लेल, ई खाली कानि रहल छलाह। तखन सुधीर बाबू बजलाह- अहाँ दस्तखत करू ललन जी। भौजी कें किछु हेतैक तँ हम सिंहेश्वर बाबाक कपाड़ फोड़ि देबैक। ओ भोलाबाबाक अनन्य भक्त छलाह । हमरा आपरेशन थियेटर लऽ जाय लागल तँ ई हाथ हमर छोडिते नहि छलाह। हाथ पकड़ने-पकड़ने थियेटरक भीतर चलि एलाह । सभ केओ हिनका हमरा सँ अलग करबा लेल घींच रहल छलाह। हिनकर नोरक अंत नहि छल- जेना कोनो अबोध शिशु अपन माय कें आगिक ध धरा मे जयबा सँ कानि रहल हो। अंत मे सभ केओ हुनका हमरा सँ हाथ छोड़ाय जबर्दस्ती लऽ गेलाह। एतेक देर हम धैर्य रखने छलहुँ किन्तु जखन ओ जाय लगलाह हम आपरेशन टेबुले पर सँ हाथ नमराय हुनक पएर छुबलहुँ आ एतबे बजलहुँ हमरा किछु भऽ जायत तँ अहाँ अवश्य दोसर विवाह कऽ लेब। हमर आँखि सँ पहिल बेर दूइ बुन्न खसि पड़ल। सुनतहि देरी ओ फेर वापस भय हमरा भरि पाँज पकड़ैत बेदरा जकाँ भोकारि पाड़ि कानय लगलाह आ फेर हमरा बेहोश करबाक प्रक्रिया शुरू भेल। हमर आँखि मे हिनकर चेहरा, अस्पताल अबैत काल दूइ बरसक सुपरणाक चीकरब रबीदासक कोर मे किरासनक अभाव मे मिझाइत लैंपक इजोत-सभटा नाचि रहल छल संगे राजीव, भावना, बंदनाक चेहरा- हम सभटा गोसाँय पर छोड़ि मोने मोन भैरव-भैरवीक गोहारि करऽ लागलहुँ आ संजीवक जन्म भेल - भोरे जखन हमरा होस

आएल तँ सभ कहैत अछि जे पहिलुक प्रश्न हम इएह पूछलहुँ- बच्चा बचि गेल की? आ फेर हम बचि गेलहुँ की - आ तकर बाद सुइया दय फेर अचेत कऽ देल गेल। किन्तु जनमक बाद एकटा बड़ विचित्र बात भेल । हम पेयिंग वार्ड मे भरती छलहुँ। छह दिन मे छठिहार अस्पताले मे भेल । बड़का बाबूजी, काकाजी, काकी सभ छठिहार मे गाम सँ आएल छलाह । डाक्टर नर्स कें सिंघाड़ा रसगुल्ला आदि सभ बाँटल गेल । बड़का बाबूजी तीनू भाय कें धोती देलनि । ई अपने सँ सभ वस्तुजात कीनि कें अनलनि । काकी कें नुआ- सभ केओ प्रसन्न छल । ओहि घर मे बेटाक बड़ महत्व छल । आ वर्माजी कें बेटा सँ बेसी हमरा बचि जयबाक खुशी छल । ओहि समय बृजेन्द्र सिन्हाजी सेल्स टैक्स सुपरिन्टेन्डेन्ट रहथि । संबंध सभ तँ अपन जगह छल किन्तु ओ हमर सभक अभिन्न मित्र। सुख मे तँ सभ संग दैत अछि किन्तु ओ हमर सभक दुखक साझीदार रहथि । दुख मेटएबाक प्रयत्न करैत रहथि । छठिहार मे पूरा परिवार ओ छलाह। किन्तु छठिहारक भोर हमरा अचक्के बड़ जोर सँ बुखार आबि गेल । 105- 106 डिग्री धरि ज्वर चढ़ि जाइत छल । हमरा सूइया पड़य लागल किन्तु बुखार उतरबाक नाम नहि लैत छल । सांझ होयतहि हमर माथ लग जेना भाइजी आबि जाथि आ हमरा हाथ तीरैत बाजथि- चल रुज्जी, चलऽ। हम भयभीत भऽ बजैत छलहुँ नहि भाइजी हम नहि जायब, हम नहि जायब । प्राय: रोज राति मे ई होइत रहैत छल । हम डर सँ किनको नहि कहलहुँ। हिनका तक नहि बजलहुँ। भय होइत छल जे बाजि देब तँ भायजी बिगड़ि जेताह । किन्तु एहि सभ क्रम मे हमर बोखार उतरि नहि रहल छल आ हम एकदम कमजोर भेल चलल जाइत छलहुँ। बच्चा उपेक्षित भऽ गेल । ओकरा देह मे खाली बाढैनक काठी सन दुइटा हाथ, दुइटा पएर छल ताहि पर भतरोइयां सँ भरल चाम लटकल । काकी राति दिन ओकरा अपन करेजा सँ लगाय, तेल मे डुबा कँ राखने रहैत छलीह । ई अपस्यांत हमरा पाछाँ जे हमरा भेल की जा रहल अछि।

अंत मे हारि कें हिनका हम कहलहुँ- हे यौ! रोज सांझ मे भाइजी हमरा लऽ जयबाक लेल अबैत छथि - सभ बात जनिते ई एकदम घबड़ा गेलाह । हम हिनका मना कऽ देलहुँ केकरो ई बात सभ नहि कहियौक। बातक बतंगड़ भऽ जायत। किन्तु, ई चुपचाप वृजेन्द्रजी सँ सभ बात कहि देलनि । वृजेन्द्रजी तँ बड़ धीर गंभीर व्यक्ति छलाह । ओ हिनका धैर्य बन्हौलनि- अहाँ चिन्ता नहि करू, शेफालिकाजी कें किछु नहि हेतैक - आ फेर ओहि सांझ वृजेन्द्रजी हनुमानजीक फोटो हमर सीरमा मे टाँगि देलथि। अगरबत्ती देखाय हमर माथा पर हाथ राखि 108 बेर गायत्री मंत्र पढ़लनि । आश्चर्य भऽ गेल। ओहि दिन सँ हम एकदम ठीक होमऽ लागल। बोखार उतरि गेल, राति मे नीन्न नीक सँ होमऽ लगलहुँ । मानसिक रूप सँ हम स्वस्थ होम' लागलहुँ।

15 दिन अस्पताल मे रहि घर चलि अयलहुँ। ओहि समय वृजेन्द्र जी बुश कम्पनीक एकटा ट्रांजिस्टर भेंट देने रहथि जे हमरा। माँन बहलाबैत रहत गीत सुना सुना किन्तु फेर दोसर झंझट-आपरेशनक टांका सभ मे पीज भऽ गेल । कतेक दवाइ चलल, सुइया पड़ल किन्तु टाँका सुखि नहि रहल छल । एम्हर घर अयलाक बाद मोहल्लाक स्त्रीगण बच्चा देखऽ आबैत छलीह आ बच्चा देखि हमर मुँहे पर सभ बजैत छलीह- ई बच्चा की बचत ?

जखन ई कचहरी सँ अबैत छलाह तँ हम कानऽ लगैत छलहुँ- सभ कहैत अछि ई बच्चा की बचत? ई दमसा जाइत छलाह- किएक केओ हमर घर अबैत अछि ? किएक एहेन बात बजैत अछि- एम्हर हमर टाँकाक ई हाल? चारि बच्चा पटना मे भेल, किछु नहि बुझलहुँ- एहि पाँचम मे हमर दुर्गंजन भऽ गेल सहरसा मे। तखन वैद्यजी डाक्टर चाचा जे वियाहक बाद हमर ममिया ससुर भऽ गेल छलाह, कनियां केँ हम आब अपन दवाइ देबैक - हुनका मोन मे छलैक जे ओ कोना हमरा छुबताह? किन्तु हमर स्थिति देखि ओ हमर घाहक टाँका सभ दाबि दाबि देखलनि आ तकर बाद मात्र एकटा पुड़िया खाइत देरी कि पेट सँ पीजक धार निकलऽ लागल आ फेर ठीक भऽ गेल। एम्हर तेल मे रूइया डुबाय काकी ओहि पर बच्चा केँ सुतबैत छलीह दोसर रूइया तेल मे डुबाय देह पर राखैत छलीह। एहि तरहेँ संजीव पालल पोसल गेल। जखन डेढ दूइ बरिसक भेल तँ एक दिन कोनो बात पर हमर हाथ मे एक मुक्का मारलक- हमरा लागल जे कोनो लोहा सँ हमरा मारने होऽ हाथमे दर्द होमय लागल किन्तु, लोहा नहि ओकर हाथ छल- आ फेर खुशी सँ हम ओकरा भरि पाँज पकड़ि लेलहुँ जे ओ हमर पिल्लू बेटा लौह पुरूष भेल जा रहल अछि आ काकी केँ पएर छुबि लेलहुँ- ई हमर बेटा केँ बचा लेलखिन.... यादिक रेतकण सघन भऽ जाइत अछि... छोटकी बेटी तरुणाक जन्मक समय आएल । सोचैत छलहुँ एहि बेर पटना चलि जायब, सहरसा नहि रहब । किन्तु हमर भाभी डा० मोती वर्माक बदली सहरसा अस्पताल भऽ गेल छलैक । तेँ फेर सहरसे रहि गेलहुँ । ओहू काल कष्ट भेल छल किन्तु भाभीक कारण बड़ भरोस छल ।

किन्तु, हमर सभक अपन स्थिति बड़ विचित्र छल । जाहि मकान मे हम सभ छलहुँ ओकरा मकान मालिक बेचि देने छल आ हमरा सभ केँ अविलम्ब मकान छोड़बा लेल कहल गेल । हिनकर मॉक्किल बुचन यादव अपन फूसक घर मे हमरा सभ केँ रहबाक आमंत्रण देलक जे नगरपालिकाक बगल मे छल । बुचन जी किराया लेल नहि तैयार रहथि किन्तु हम सभ नहि मानलहुँ आ पचीस टाका किराया पर ओहि मकान मे चलि अयलहुँ। एकटा छोट सन बरंडा, चौकी रखबाक योग्य एकटा कोठरी, दोसरकोठरी कनिके पैघ जाहि मे भानसो करब छल। घरक दर देवार, छत, केबाड़

सभटा टाटक बनल छल । ताहि पर सँ तरुणा पेट मे। ई केहेन परीक्षा भगवान लऽ रहल छलाह हरिश्चन्द्र महाराजक, डुमरा नरेशक।

हम सभ कोर्स मे सत्य हरिश्चन्द्र नाटक पढ़ने छलहुँ । ओहि पुस्तक सँ हमरा एतेक प्रेरणा भेटल छल कि हमर अन्तर मे खाली हिम्मते हिम्मत छल, ताकते ताकत। अपन पति केँ कहियो हीन भावना सँ ग्रस्त नहि होमऽ देलहुँ । एतेक प्रतिभाशाली वकील केँ कोन कोन अन्हार सुरंग सँ गुजरऽ पड़ल। घर मे टूटल तावा आ टेढ मेढ कठौत देखि हीराजी हरदम बजैत छलाह - एहि घर सँ कहियो नहि जइहें पिया टूटी तवा और फूटी कठौती - हमर नाम साहित्यक क्षेत्र मे, हिनकर नाम वकालतक क्षेत्र मे एतेक भऽ गेल छल जे हमरा सभ ककरो परवाह नहि केलहुँ। हम सभ प्रतिष्ठा मे जीवैत रही नहि कि देखेबा मे - एहेन नहि छल जे हम नैहर सँ दरिद्र छलहुँ, एहेन नहि छल जे ई गरीब घरक बेटा रहथि बस हिनकर सिद्धान्त आ आदर्श.....।

ओहि टाटबला घर मे राजीव, भावना, बंदना, सुपर्णा आ दुइ बरीसक संजीवक संगहि मोहनजी, रमणजी, अशोकजी, बड़का बाबूजी, आ हम दुनू गोटे कोना रहैत छलहुँ ई सभ आइ सोचैत छी तँ देह सिहरऽ लगैत अछि । ताहि पर ओहि घरक पाछाँ बड़का बँसबीट्टी छल। लोक कहैत छल एहि मे भूत रहैत छैक । एक दिन एतेक जोर सँ बिहारि बसात उठल जे टाटक देवार सभ हिलऽ लागल। संजीव सूतल छल टाटक देवार सँ सटि केँ ।.वएह देवार अचानक खसय लागल। सभ केओ मिलि ओहि टाटकेँ पकड़ि लेलनि 'संघेशक्ति' आ हम डर सँ बच्चा केँ निकालि लेलहुँ। आ जाधरि बिहारि थमल नहि ताधरि सभ भाय मिलि टाट पकड़ने रहि गेलाह।

किछु एहेन अपरिहार्य कारण भऽ गेल जे हमरा फेर सीजेरियन मे जाय पड़ल। ऑपरेशनक तारीख निश्चित भेल आ पटना डुमरा मधेपुरा सभ ठाम खबरि कयल गेल। डा० डी० एन० सिंह आ मोती भाभी मिलि हमर ऑपरेशन केलनि आ तरुणाक जन्म भेल । हम हिनका सँ कहैत रही हमर सांस आब टुटि जाय वा हम मृत्युक कोर मे चलि जाय जीअब तखनो बाल बच्चा केँ भाग्य तँ नहि दऽ सकब ओकरा सभकेँ, किएक तँ ओ उपरवाला लिखने रहैत छैक। विवाहक ठीक बाद हमरा छाती मे कन्ड्रोमाक आपरेशन डा० मुखोपाध्याय केने छलाह। तकर बाद संजीवक बेर आ फेर तरुणा बेर।

गाम सँ माँ आएल छलीह, काकी सेहो । मधेपुरा सँ बड़का माँ, खूखू सभ, पटना सँ पापा आएल छलाह। माँ बड़ जोर बीमार छलीह। ऑपरेशनक तारीख निश्चित भेल तऽ वर्माजीकेँ छटपटी छल- घर मे एकटा पाइ नहि छल । वर्माजी जोगाड़ मे लागल छलाह । काल्हि ऑपरेशन, आइ पाइक जोगाड़- जेना एके बेर विपत्ति नहि आबि जायत छैक- तहिना हम सभ चक्रबातमे घिरल छलहुँ । ओहि समय लैंड मॉर्गेज

बैंकक सेहो वकील ई छलाह । जखन लैंड मॉर्गेज पदाधिकारी कें ई बात ज्ञात भेल तँ तुरन्त हुनका डेढ दुइ सय फाइल देलखिन राति भरि मे एहि सभ पर विचार दऽ दिऔक हम भोरे पाइ दऽ देब ।

अपन सुन्दर ड्राफ्टिंगक कारण कतेको विभागक सरकारी अधिवक्ता छलाह जखनकि चारिए पाँच बरिस भेल छल प्रैक्टिस आरम्भ करबाक । आ हिनकर हस्तलिपि? जतबा सुन्दर आ कोमल ई अपने छलाह ओतबहि सुन्दर हुनक हस्तलिपि आ पढ़ैत काल ओहि आखर सभ सँ जेना कोमलता उजागर होइत रहैत छल । एम्हर हम अस्पताल मे भरती ओम्हर ओ घर मे डिबियाक इजोत मे' 'ओपीनियन' लिखि रहल छलाह– हम हिनक प्रगति मे कहियो बाधक नहि रहलहुँ- कहियो मुँह नहि मलीन केलहुँ । हिनका हतास निराश हम देखऽ नहि चाहैत छलहुँ । ओहि काल हमर सभक एकटा आओर अभिन्न मित्र छलाह कृषि विभाग मे कार्यरत कामेश्वर बाबू। ओ हमर सभक दुख मे समर्पितहि नहि रहलाह, अपना पर सेहो हमर सभक दुख ओढ़इत रहलाह। तरुणाक छठिहार तक सभ केओ रुकल छलाह । अस्पतालक लगे मे हुनकर क्वार्टर छल। छठिहारक भोजक ओरिआओन हुनके ओतऽ भेल छल- माछ भातक । कामेश्वर बाबूक पत्नी हमर सहोदर बहीन सँ बढि कें छलीह । सभ कें नुआ पहिराओल गेल। मोती भाभी कें खास कऽ एखनो ओ आसमानी रंगक मूँगा कोटा साड़ी हमरा आँखि मे बसल अछि- टाँका कटवा धरि हमरा अस्पताले मे रहबाक छल। भोर-साँझ मोती भाभी जखन राउण्ड मे अबैत छलीह तँ हुनक मधुर मुस्कान सँ हमर मोन-अंगना इजोत सँ भरि जाइत छल। ओ सीजेरियन साधारण नहि छल –सीजेरियन, एपेंडिक्स, टयूबर्लाइजेशन आपरेशन एके संग भेल । एपेण्डिक्स फाटय फाटय पर छल- केओ बाजल जे एकटा पेशेन्ट के ई तीनू ऑपरेशन एके बेर भेल छलैक जे पटना जा कऽ मरि गेलीह । किन्तु मोती भाभीक उत्साह सँ हम ठीक होइत गेलहुँ । जखन सुपर्णाक जन्म भेल छल तखन मोती भाभी पी.एम.सी.एच. मे छलीह। बंदना बेर मे पीएमसीएच में डा० विजय मामा छलाह ओहि ठाम। राजीव आ भावना घरे पर भेल छल। सभ सँ बड़का समस्या तखन उठि गेल जे आब हम टाटक घर मे जायब तँ इन्फेक्शन भऽ जायत – हम कतऽ जायब अस्पताल सँ? हम सभ पाइ नहि दोस्ती बड़ अरजने छलहुँ तें हिनक प्रशासन अधिकारी दोस्त सभ डिस्ट्रिक्ट बोर्डक डाकबंगला मे एकटा कोठरीक इन्तजाम कऽ देलनि आ हम अस्पताल सँ सीधे डाक बंगला आबि गेलहुँ । अमलतास गुलमोहर आदि वृक्षक बीच बनल ई डाक बंगला कहियो कलक्टरक निवास स्थान छल । कहियो हम सभ ओहिठाम पार्टी मे उषा, गीता, गायत्री सभक संग नचैत छलहुँ 'आना मेरी जान संडे के संडे.... ओहि समय पापा सीनीयर डिप्टी कलक्टर छलाह सहरसा मे- व्यतीत वर्तमान बनि ऑखि

मे उतरि जाइत छल आ हम पुलकित भऽ उठैत छलहुँ। श्रीवास्तव जी, कलक्टर साहब, भगत साहब कतेक पार्टी होइत छल कतेक अबैत जाइत छलहुँ..... हमर घर दुइठाम भऽ गेल- टाट वाला घर आ डाकबंगला। ई भोरे उठि घर जाइत छलाह, कचहरी लेल तैयार भऽ हमरा लग अबैत छलाह- फेर कचहरी, फेर साँझ कचहरी सँ सीधे हमरा लग फेर घर फेर खा पी कें राति हमरा लग। सभ केओ घर खोजबा मे लागल छलाह। ओहि समय राजीव केर मातृभक्ति ओहि आठ नौ बरसक बच्चाक मोने एके खियाल छल कोना अपन माँक सेवा कऽ सकी, कोना पापाक भार हल्लुक कऽ सकी। भरि दिन ई कचहरी मे, हम ओहि डाकबंगला मे असगर । तपैत रौद मे राजू बेरिया दुपहरिया हमरा लेल कखनो बजार सँ दबाइ अनैत छल कखनो घर सँ खेनाइ । बैसाखक जरैत दुपहरिया मे बदहवास रहैत छल ओ । ओम्हर भावना वंदना, सुपर्णा अपना दादी संग घर कें सम्हारैत छलीह । प्रत्येक साँझ सभ केओ हमरा सँ भेंट करऽ डाकबंगला अबैत छलीह । डाकबंगलाक हरीतिया देखि सभ भाय बहीन मुग्ध रहैत छलीह। संजीब तीन बरीसक छल आ प्रायः हमरे लग डाकबंगला मे रहैत छल ।

राजीव कत्तहु सँ अबैत छल तँ पहिने गुड़िया कँ दुलार करैत छल, ओकर गाल छुबि बजैत छल मम्मी, बड़ सुन्दर छैक ई । गुड्डी कनैत छल तँ ओकरा नीक नहि लगैत छल – गुड़ियां कें नहि कनाउ मम्मी फेर गुड्डू कें कऽ कऽ अमलतास गुलमोहरक लाल पीअर फूलक मध्य खेलेबा लेल चलि जाइत छल । एतेक कम आयुमे राजू कतेक जिम्मेदार आ समझदार भऽ गेल छल। हमरा गौरव भऽ उठैत छल ओकरा पर, हमर बेटा छी ।

आ एक दिन राजू कतऽ कतऽ सँ हमरा लेल दबाइ खोजि कें अनलक बैसाखक जरैत रौद मे घामे पसीने नहायल अबितहि अचेत भऽ दोसर पलंग पर खसि पड़ल। देखैत छी तँ बोखार सँ देह जरि रहल छल। हम कानऽ लगलहुँ-भगवान कोन परीक्षा लऽ रहल छी? आब की करब हम! जेना जरैत तवा पर छटपटा रहल छलहुँ जाधरि ई कचहरी सँ अबितथि ताधरि हम बताहि जकाँ एक बेर बच्चा कें एक बेर गुड्डू कें फेर राजू कें देखैत छलहुँ। बच्चा कनैत छल तँ ओहि अचेतो अवस्था मे बजैत छल- मम्मी बच्चा कें देखियौक । कानि रहल छैक । ओकरा नहि कनाउ । जखन ई कचहरी सँ अएलाह तँ राजू कें देखतहि हिनक दिमाग खराब भऽ गेल। ओकरा सौंसँ देह मे बड़का बड़का दाना निकलि गेल छलैक – एकरा तँ चेचक भऽ गेल छैक ?

हमर आँखि नोरा गेल किन्तु, हिनका सँ नोर नुका लेलहुँ – आ ओहि समय दिनेश झाजीक घर हमरा सभ कें भेटि गेल । जाहिमे, बाद मे गुडिया सेंटर चलऽ

लागल छल । हम सभ केओ तुरन्त एक ठाम ओहि घर में चलि अयलहुँ । हमर आपरेशन कें मुश्किल सँ 13-14 दिन भेल होयत- दस बारह दिनक गुड्डी, चेचक सँ छटपटाइत राजू पापा, मन्नाजी, अम्मी, बड़का माँ खूखू सभ छठिहारक बाद चलि गेल छलाह । किन्तु वृजेन्द्र बाबू तखनो सेल्सटैक्स ऑफिसर सहरसे मे छलाह - जे हमर सभक जिनगीकें एकटा नव मोड़, नव आयाम देलन्हि अपन दोस्ती सँ- ए फ्रेंड इन नीड इज ए फ्रेंड इन डीड - सही अर्थ मे चरितार्थ कएलन्हि।

कखनहुँ गुड्डी कें देखैत छलहुँ, कखनो गुड्डू कें दुलराबैत छलहुँ आ तकर बाद राजू कें निरंतर पंखा होकैत रहैत छलहुँ। ओहि समय हमर नोकर परूहरक चन्द्रेश्वर छल जे नोकर नहि बेटा समान छल। सभ चलि गेल किन्तु ओ हमर सभक कष्ट कें अपना पर लऽ लेलक। गुड्डूक जिम्मेदारी सँ बोझिल छलहुँ। पंखा होंकैत होकैत हमर गट्टा मे मोच पड़ि गेल आ ओहि राति हिनका खोंखी होमय लागल। विक्स लगबऽ लागलहुँ हाथ मे ताकते नहि मुदा हिनका नहि बुझऽ देलहुँ। गट्टाक दर्द सँ हम बेचैन छलहुँ किन्तु कोहुना कोहुना विक्स लगाय देलहुँ। बच्चा कें तेल नहि लगा सकलहुँ। भरि राति कछमछ करैत बच्चा छाती सँ लागल रहल।

वृजेन्द्रजी भोरे अएलाह आ बिनु किछु पुछने हमर स्थिति जानि गेलाह । ओ बिनु किछु बजने एकटा टेबुल फैन उषा कम्पनीक राजीव कें नाम सँ उपहार पठा देलनि आब राजूक संग संग हमरो चैन भेटल- के छल ई आदमी ने तँ तीन मे ने तेरह मे किन्तु हमर सभक दुख कें अनुभूत कऽ भरिसक निवारण करबा लेल प्रतिपल तत्पर । आइयो ओ पंखा हमर घरक बीतल दिनक सुखद स्मृति बनल अछि।

दिनेश झाजीक ओहि मकान मे हम सभ मुश्किल सँ एक मास रहलहुँ। एतेक पैघ आधुनिक ढंग सँ बनाओल किन्तु पता नहि किएक ओ मकान रास नहि अबैत छल। तखन हिनकर सभक दोस्तक माध्यम सँ एकटा बड़का अंगना, बड़का बरंडा हातावला घर गंगजले मे भेटि गेल । राताराती ओहि मकान मे ताला लगायल गेल आ भिनसरे मकान मे हम सभ चलि अएलौं। कतेक बात ध्यान मे अबैत रहैत अछि-एक बेरक घटना मोन पड़ैत अछि। सहरसा मे जखन हमरा लग मोहन जी, अशोक जी रहैत छलाह, हीरेन्द्र जी रहैत छलाह कौशल लाज मे खाइत छलाह हमरे लऽग तखन नेकिर मे रबीदास छल- एक दिन घर बहारैत-बहारैत रबीदास बाजल- ओ तीनू टा तमसायल अछि- जलखै नहि करब-

किएक नहि करथिन। हमर प्रश्न पर ओ बाजल हम जानैत छी कनियां ओ सभ नहि खायत- हम जाइत छी पूछवा लेल किएक बिगड़ल छथि।

की करबै पूछि कें कनियां। सभटा एक पर एक बदमास सभ अछि। किछु

तँ किछु बजैत रहैत अछि। छोड़ू ने मुदा, हम कोना छोड़ि सकैत छलहुँ। अपन दीअर सभ सँ हमरा एतेक स्नेह छल जे हुनकर सभ कँ उदासो देखबा लेल नहि चाहैत छलहुँ। तखन हमरा दिमाग मे आयल ठीके आइ भोरे सँ तीनू चुपचाप गुमसुम बैसल छलाह। हम तँ हिनका कचहरी पठएबा मे, बच्चा सभकें स्कूल भेजबा मे लागल छलहुँ। भोरुका पहर एहिना चमरचोंच मे बीति जाइत छल। हमरा देखतहि तीनू गोटे पाँडव सन मुड़ी निघुराय लेलनि- हम सोझे सोझ बजलहुँ-अहाँ सभ जलखै किएक नहि केलहुँ एखन धरि?

राति मे माछ बनल छल- कबइ माछक बच्चा कोचरी माछ। आधा किलो माछ छल। राजीव, भावना, बंदना सूति गेल छल तँ तीन टा कोचरी माछ एकटा कप मे राखि देने छलहुँ भोरे उठत तँ भात संग खुआ देबैक। स्कूल जएबा काल तीनू भाइ बहीनकें हम भात माछ खुआ देलहुँ-कोचरीक माछकमुड़ी अंगूठाक नह बराबर ओ सभ नहि खेलक। हमरा माछ सँ एतेक प्रेम छल जे ओकरा दुरि नहि होमऽ देलहुँ आ ओहि भात मे माछक मुड़ी कें मिलाय खाय लेलहुँ। मोहनजी सभ लेल बुझल छल जे पढ़ि रहल छथि। किएक तँ हुनका सभकें जलखै देबाक भार रबिदास कें रहैत छल।

हम बुझइत छलहुँ जे अहाँ सभ जलखै कऽ पढ़ाइ मे लागल छी। ओ सभ किछु नहि बजलाह। मुड़ी निघुरौने रहलाह। हम फेर आस्ते सँ बजलहुँ- हमरा तँ रबिदास कहलक जे अहाँ सभ तमसायल छी। जलखै नहि कऽ रहल छी... आ हम सभ बात कहि देलहुँ।

हमर बात सूनितहि तीनू एक दोसराक मुँह देखऽ लगलाह- आखिर ओहो सभ तँ बेदरे छलाह- भाभी, रबिया एना बाजल।

हम अबैत छलहुँ एखन अहाँ सभ कें कहबा लेल। ओ मना करैत छलाह- अहाँ कथी लेल कहबै कनियां। किन्तु, हमरा कोना रहल जाइत?

तखन जय बजलाह-भाभी, रबिया हमरा सभ सँ कहलक कतेक चालाक छैक, कनियां तों सभ बुझैत छए? तोरा सभकें छोड़ि माछ खाय लेलकौ। ककरो कहलकौ?

हम तँ सकदम्म भऽ गेलहुँ। एहनो केओ बाजि सकैत छैक-तखन हम कोचरीक मुड़ीक खिस्सा कहलहुँ।

ओ सभ लजा गेलाह। हँसय लगला आ तखन तीनू भाय जलखै करय लागलाह हम सभ हँसि-हँसि गप्प करैत रहलहुँ आ तखन हम सभ दीअर भाभी सप्पत खा लेलहुँ जे केओ हमरा सभक विषय मे एक दोसरा सँ शिकायत करत हम सभ

मोन मेँ राखि गिरह नहि बान्हब बल्कि आपस मे सभ बात बाजि स्पष्ट कऽ लेब जाहि सँ शिकाइत कर बलाक मुँह अपन सन भऽ जाय हमर सभ सँ पैघ अवगुण अछि केओ यदि जोर सँ डाँटि व्यंग्य कऽ कें बजैत अछि तँ हमर हृदय क्षत-विक्षत भऽ जाइत अछि। हमरा पाइ नहि चाही बस प्रेम आदर सँ भरल मीठ बोली–

एहिना एकबेर हम कापी जाँचैत छलहुँ सहरसा कालेजमे अन्तिम दिन पैसा लेबऽ काल काउन्टर पर बड़ भीड़ भऽ गेल। सभ महिला प्राध्यापिका सभसँ पाछामे एक कोनमे ठाढ़ छलीह। कखन भीड़ छँटत ? हमरा ओतेक समय नहि छल। ओहि भीड़कें चीरैत, ठेलैत हम आगू बढ़ि गेलहुँ काउन्टर लग। तखन देखा देखी एक दुइटा लेक्चरर हमर पाछाँ-पाछाँ आबि गेलीह। स्वभावतः हम सभ पहिने पेमेन्ट लऽ चलि एलहुँ। आब ओ जमाना नहि रहल जे केओ छुबि देत तँ स्त्री मलिन भऽ जायत। छुअऽवला किएक ने मलिन होयत ? किछु एहने भाव अपन कथा इंद्रधनुष अखंडमे दरसेवाक चेष्टा केने छलहुँ।

चारू बेटीक स्कूली जीवन मे- लड़का सभक परेशानी-फोन अबैत छल तँ हम भावना, बंदना बनि बात करैत छलहुँ। बेटी सभ खूब हँसैत छलीह- आखिर हमर मम्मी पटना वीमेन्स कॉलेजक पढ़ल अछि की।

एक दिन बंदना, तरुणा..... नाचि रहल छलीह- कने हँसयौ ने भौजी नेहोरा करैत छी-भैया जे एतेक बाजय, किछु नहि बजैत छी- हम जे कबदाइ दैत छी, रुसि रहैत छी- बगलक लॉज सँ लड़का सभ ठाढ़ भऽ खिड़की सँ देखि रहल छल- हम तुरंत ओहिठाम आबि कें कहलहुँ एहिठाम आबि देखू खिड़की सँ किएक देखैत छी। सभटा छौड़ा भागि गेल- बेटी सभ हमर सभक दोस्त छलीह।

जखन बीए करवाक उपरान्त भावना पटना वीमेन्स कॉलेज सँ विश्वविद्यालय गेलीह तँ हम एतबे बाजल छलहुँ जे बेटा अपना पसन्द सँ वियाह करब तँ हमरा सभकें कानो उज्र नहि होयत खोली मूल गोत्र देखि प्रेम करत भावना हँसि हँसि सभसँ बजैत छलीह- मम्मी हमर बाजल छलीह मूत गोंतँ देखि प्यार करब- सुपर्णाक व्यक्तित्व मे एतेक अनुशासन संयम छल जे ककरो किछु बाजवा मे भय होइत छल। सिनेमा देखऽ जाइत छलीह तँ टकुआ सन सेफ्टीपीन कें सीधा खोलि दैत छलीह आ निकलैत काल ओहि भीड़ मे अगल बगल घुमबैत निकलैत छलीह जे केओ भीड़ मे लग आयत तँ पिन गड़ि जायत, भागि जायत।

तरुणा आ संजीव यानी गुड्डी आ गुड्डू जखन चलैत छल तँ गंगजला चौक पर सभ बजैत छल- हे देखू गुड्डू गुड्डी जाय रहल छल। दुनू भाइ बहीन खौंझा

जाइत छल। मम्मी-हमरा बड़ तामस उठैत अछि, जे देखैत अछि बजैत अछि–वैह देखू गुड्डू गुड्डी।

राजीव मनोहर स्कूल मे पढ़ैत छल जाहिठाम हिनकर दोस्त चन्द्रेश्वर खाँ विज्ञान शिक्षक छलाह। ओ आचार्य रजनीशक शिष्य छलाह। छात्र सभकें प्रश्न बनवऽ दऽ दैत छलाह आ स्वयं समाधि मे लीन। सभ छात्र कक्षा सँ बाहर निकलि लताम गाछ पर खेल खेलि फेर कक्षा मे आबि जाइत छल। ओ समाधिये मे रहैत छलाह। किन्तु, जखन पढ़बैत छलाह तँ विज्ञानक अद्‌भुत ज्ञान हुनका छल। छात्र सभ मोहित सम्मोहित भऽ जाइत छल।

जखन रिजल्ट निकलैत छल तँ फलाँ मैजिस्ट्रेटक बेटा फर्स्ट, फलांक बेटा सेकेण्ड, फलाँक बेटा थर्ड- तखन राजीवक चेहरा पर दृष्टि पड़ैत छल तँ शिक्षक सभ आपस मे बजैत छल जे आहि रौबा! ललनजीक बेटा कें कहाँ किछु देलियैक- कोनो बात नहि चतुर्थ स्थान ओकरा दऽ दैत छी- आ राजीव खुशी खुशी घर आबि बजैत छल-हमरा क्लास मे फोर्थ पोजीशन आएल। हम सभ एक दिस खुश होइत छलहुँ दोसर दिस दुखी। बेटा अहाँकें प्रथम स्थान अनबाक चाही।

एक बेर एकटा कवि सम्मेलन मे जिला स्कूलक प्राचार्य डॉ. जयदेव सँ भेंट भेल। बाते बात मे ओ पूछलाह-अहाँक बेटा कतऽ पढ़ैत छथि- सभ बात जानि ओ कहलनि राजीव कें लऽ कऽ जिला स्कूल माबय लेल- ओ राजीव सँ दुइ-चारि टा प्रश्न पुछलाह, ओ नीक सँ उत्तर नहि दऽ सकल। तैयो ओ विद्वान प्राचार्य राजीवक नामांकन जिला स्कूल मे कऽ लेलनि।

आ फेर जे राजीवक गाड़ी आगू बढ़ल तँ सभ भाइ बहीनीक आदर्श, लक्ष्य बनि गेल।

नीक बेजाए सभ हम सभ सहलहुँ। खंड खंड जीवन लेल बाट खोजैत रहलहुँ। इच्छा कामनाक आकास कें कल्पनाक धरती कहियो भेटि जाइत छल आ कहिया लगैत छल किनारो हमरा सँ छूटल जा रहल अछि। लगैत छल हमर प्राप्य हमर समीप आबि गेल, एकटा झटका लगैत छल एकदम दूर भऽ जाइत छल। स्वप्निल आँखि मे मरचाय केर धुँइयाँ भरि जाइत छल। कहियो परिवेशक घुटन, कहियो लोकक व्यंग्योक्ति, कहियो परिवारिक बाधा तँ कखनो अपन आनक ओझराहटि। सभटा बाट बंद भऽ जाइत छल, सभटा इच्छा दम तोड़य लगैत छल मुदा हम कहियो हिम्मत नहि हारलहुँ। एक दोसराक हाथ मे हाथ देने, हृदय मे बेचैनी नेने दूनू बेकति आगू बढ़ैत रहलहुँ। हमर सभक जीवनक मूल मंत्र छल-जे आगू बढ़ैछ ओ पाछू नहि ताकैत अछि, जे पाछू तकैत अछि ओ आगू नहि बढ़ैत अछि.. कतेक-कतेक राति हिनका

तकिया मे मुँह गाड़ने कनैत देखने छी-अपन आदर्श सिद्धांतक रक्षार्थ हिनका.बड़ अपमान, अवज्ञा सहऽ पड़ैत रहैक अपन छोट-पैघ सभ सँ। ओ स्नेह, प्यार, आदरक भूखल छलाह किन्तु.... तें हम अपन सभ बाल बच्चाकें एतबे बजैत छलहुँ जे अहाँ सभ हमरा किछु बाजब तँ बाजब-पापा कें बहुत प्रेम दियौक, बहुत सम्मान दियौक आ बाल बच्चा निमाहलक– एतबे नहि चारो जमाय मे हिनकरे गुण सभ छलैन्ह त्याग, समर्पण, निस्पृहता केर।

वकालतक असली रूप देखि कहियो कहियो मोन घबड़ा जाइत छल। सभ व्यक्ति भौतिकवादी भऽ गेल छथि। सभटा रिस्ता नाता अर्थ पर आधारित होइत अछि। वकालत जहिना आरंभ करैत अछि बेटा कि ओ कमबऽ बला पूत भऽ जायत अछि। सरिपों, यदि केओ वकालत आरंभ करैत अछि तँ सभ सँ पहिने ओकर माता पिता कँ वकालतक सूक्ष्मता जनबाक चाही जे एहि पेशा मे पहिने मेहनत बाद मे पैसा अबैत छैक-आ अबैत छैक तँ घर भरि जाइत छैक। जखन वकील जवान होइत अछि तँ ओकरा पेंशन प्राप्ति जकाँ कहियो काल पैसा भेटैत छैक आ जखन अवकाश ग्रहण करबाक समय अबैत अछि तखन वकील आ वकीलक पत्नी जवान होइत अछि।

तें तँ राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू आदि कतेको महापुरुष वकालत कएलन्हि हुनका घर परिवारक सहयोग भेटलैक-चिन्ता रहित भऽ अपन पेशा मे लागि नाम कमौलनि। वकालत पेशा तँ आरिक धार पर चलब थीक बशर्ते एहि मे दलाली नहि अबैक। खास कय वर्माजी बड़का-बड़का नौकरी छोड़ि तीन तीन बच्चाक जन्मक उपरांत एहि पेशा कें अपनौलन्हि। आ समस्त परिवार कें अपना बूता पर रखबाक संकल्प, घर सँ किछु नहि लेबाक सिद्धांत, आदर्श सभ सँ एक दिएहि तँ वर्माजी यश आ प्रतिष्ठाक शिखर पर पहुँचि गेलाह दोसर दिस डुमरा नरेशक कोमल मोन कोमल तन आगि मे जरैत रहल हमहीं टा नहि हुनक सभ संतान हिनक आदर्शक रक्षा लेल समर्पित छल। की-की नहि सहय पड़ल हमरा। बगल मे साबुनक फैक्ट्री छल- साबुनक फेनक बड़का नाला बहैत छल, बाल्टी-बाल्टी फेन रबिदास अनैत छल तखन ओहि सँ कपड़ा साफ करैत छलहुँ।

बाबूजी (अपन पित्तीक ललितेश्वर मल्लिककें) श्राद्ध मे मधेपुरा गेल छलहुँ तँ ओहिठाम विदाइ मे हिनका एक जोड़ धोती भेटल छल। हम पुरान साटन साड़ीक पाढ़ि निकालि राति राति भरि डिबियाक इजोत मे ओहि धोतीक किनारी पर साटैत छलहुँ। राति मे एहि कारण जे एक तँ बच्चा सभ सुति जाइत छल दोसर जे दिन मे केओ न केओ अबिते रहैत छल। लोक नहि बुझैक जे हम धोती मे पाढ़ि सीबि रहल छी। कतेक बेर वएह साड़ी पहिरि हम मंच पर कविता पढ़ने छी किन्तु ककरो बुझय नहि देलहुँ। ई हमर पतिक, हमर डुमरा खानदानक प्रतिष्ठाक प्रश्न छल। गाम

जाइत छलहुँ तँ माँ हिनका बजैत छलीह-हे रे ललनी, अपना लग कनिया कँ राखै छही तँ नुआ किएक नहि दैत छही। हाथ मे एके ही टा चूड़ी छैक-चूड़ियो नहि दैत छी-

ई चुपचाप मुस्काइत रहैत छलाह। हमरा हिनका पर बड़ दया अबैत छल-की भीतरे भीतर सोचैत हेताह-हमरा मोन मे होइत छल बाजी-हमर चूड़ी-सिन्दूर सभ तँ इएह छथि-मेरा गहना बलम तू है तो से सज के डोलूँ....... बच्चा सभ हमर छिड़िआइल छल-डुमरा पटना खन मधेपुरा।

रमेश झाक देल नौकरी हम ठुकराय देलहुँ आ ओहि नौकरी लेल हम छटपट कऽ रहल छलहुँ। विशाल परिवार, ऊपर सँ बच्चा सभक खर्च बढ़िते जाइत छल। कहियो टेलीफोन बिलक तगादा तँ कहियो बिजलीक बिल। हारि कें हम एल आइ सी एजेन्ट बनि गेलहुँ। दोस्ती तँ बड़ अरजने छलहुँ तें घर बैसले सभक पत्नीक एल आइ सी करेनाय शुरु कऽ देलहुँ। एक बेर लखपति एजेन्टक सम्मानो हमरा कमिश्नरक हाथे भेटल छल।

राजीव, भावना, बंदना सभटा दिल्ली विश्वविद्यालय आ पटना वीमेन्स कॉलेज मे पढ़य लागल। चारि रुपया मीटर सँ छह रुपया मीटरक कपड़ा एस एफ सी गोदाम सँ कीनैत छलहुँ। सभ बहीनक कपड़ा कहियो सूकू घरे मे मशीन पर सीवैत छलीह तँ कहियो हम। हमहूँ अपन नैहर मे अपन बहीन सभक आ अपन कपड़ा घरे मे सीबैत छलहुँ। बाद मे दीपक, मधु सीबऽ लगलीह।

छह रुपैया मीटर बला कपड़ाक जखन राजू लेल सफारी जुबली टेलर सीने छल तँ ओ जखन राजीव पहि-रलक तँ हमरा लागल-अँय, हमर बेटा एतेक सुन्दर एतेक स्मार्ट अछि।

हमर बाल बच्चाक मोन मे कहियो हीन भावना नहि आएल। ओ सभ अपन पापा सँ प्रेम करैत छल। राजीव आइ.ए. कए कँ जखन दिल्ली विश्वविद्यालय जाइत छल तँ पहिल बेर हमरा ध्यान मे आएल हमर बेटा एतेक टा भऽ गेल आ नहि तँ अन्डरवीयर आ नहि कोनो गमछी तौलिया आय धरि ओकरा देने छी। ओ कहियो नहि मांगलक। भावना, बंदना कहियो नहि बजलीह जे पटना वीमेन्स कॉलेज मे स्नो पौडर सेहो लऽ जायब। बच्चा सभ अपन माता पिताकें आदर्श मानैत छल-हुनकर दर्द बुझैत छल। एक बेर गाम सँ छोटकी भावना हमरा सभकें पुत्र लिखने छलीह-.... मम्मी. .... एहिठाम सभ बजैत अछि जे रेणुक बच्चा सभकें देखी एक सँ एक कपड़ा छैक। तोहर सभक माय बाप तोरा सभ कें किएक नहि नीक कपड़ा दैत छौक- मम्मी तों एहि सभ बातक दुख नहि करिहें- हम अपन मम्मी-पापाक दर्द बुझैत छी..... आइयो ई सभ मोन पड़ैत अछि तँ आँखि नोरा जाइत अछि। आइ सभ किछु अछि किन्तु

हमर बच्चा सभक बचपन नहि अछि। आइ सभ सुखी जिनगी जीवि रहल छथि किन्तु, अपन पिताक आदर्श सिद्धांतक रक्षा लेल बच्चा सभक त्याग अपना आप मे अनमोल अछि। एतेक पैघ घरक बेटी-एतेक पैघ जमींदार घरक पुतहु- अपन नैहर मे ककरो किछु बुझऽ नहि देलहुँ- जखन राजीव दिल्ली मे पढ़वाक जिद्द केने छल तँ हमरा सभकेँ साहस नहि होइत छल। ओ पटना कॉलेज सँ प्रथम श्रेणी मे आइ.ए. केलक आ बी.ए. मे दिल्ली जयबाक ओकर इच्छा-हमरा सभकेँ आर्थिक स्थिति ओहेन नहि छल एकटा नवीन बोझ माथ पर लऽ लेबाक। तावत दिल्ली विश्वविद्यालय मे नामांकन लेल आवेदन दऽ देने छल। शरद तखन दिल्ली मे एम.ए. क छात्र छल। आ एकर सेंट स्टीफेन्स आ हिन्दू कॉलेज दुनूठाम नाम लिखेबाक पत्र आबि गेल। हमरा सभकेँ किछु नहि फुरैत छल। तखन राजीव मोहन जी जिनका बच्चा सभ डैडी कहैत छथि-सँ बजलाह-अहाँ पापा केँ मना लियऽ डैडी। हम दिल्लीमे पढ़ऽ चाहैत छी-

एक दिस बेटाक स्वर्णिम भविष्य दोसर दिस हमर सभक........!

तखन जय बजलाह-लालभाय अहाँ जाय दिऔक राजूकेँ दिल्ली पढ़बा लेल। हम सेहो एकरा पढ़ायब। आखिर हमहूँ तँ आब किछु ने किछु बनबे करब।

....तखन हम सभ साहस केलौं किन्तु फेर प्रश्न उठल स्टीफेंस कि हिन्दू? हम सभ तँ अनाड़ी छलहुँ शरद केँ फोन खटखटाओल गेल। शरद बाजल-दीदी स्टीफेंसक संस्कृति नहि ठीक छैक। हिन्दू बेसी नीक छैक राजीव लेल। आ तखन राजू स्टीफेंस आ हिन्दूक फेर मे नहि पड़ि धड़ाक सँ हिन्दू मे नाम लिखा लेलक। आ हमरा सभकेँ लागल हमर सभक कलेजा कटि कतेक दूर चलि गेल-दिल्ली दूर अछि जनैत छलहुँ, कहियो नहि हम सभ पहुँचि सकब। राजू जाइत काल हाथ मे एकटा कविता पकड़ा देलक-

माँक ममता आ छाहरि सँ दूर
जा रहल छी हम, मुदा, हमर आत्मा नहि

जखन वकालत शुरु केने छलाह तखन सुनैत छलहुँ जे वकील सभ चारि आना पर दस्तखत कऽ दैत छैक। एतेक धरि जे एकटा पानक खिल्लियों पर बहस करबा लेल तैयार। किन्तु, ई शुरुए सँ अपन फीस एक सय सँ बेसी रखलनि- एकेटा केस आओत, हम ओहि पर मेहनत करब- हँ ई दोसर बात छल जखन चारू दिस सँ मोकिल हारि जाय तखन हिनका लग पहुँचैत छल-कोनो उपाय छैक ओकिल साहब।

आ ओहि सड़ल गलल मृत केस मे मेहनतक आक्सीजन दऽ ओकरा जीवित कऽ दैत छलाह। देखतहि देखतहि कानूनक संसार मे ततेक व्यस्त भऽ गेलाह जे हमरा

लेल हिनका छुट्टिए नहि छल। घर मे रहितो घर मे नहि रहैत छलाह। सौंसे के सौंसे कानून जानि लेबाक जुनून छल हिनका मे।

कखनो कोनो काज पड़ैत छल, बच्चा सभकेँ कहैत छलहुँ एकरत्ती पापाकेँ दलान पर सँ बजा दियऽ। आबि तमसाकऽ बजैत छलाह-की बात छी? किएक बजेलहुँ? राजू, सूकू ओहिठाम जाकऽबजैत अछि- मम्मी बजा रहल छथि। हमरा बड़ खराब लगैत अछि। मोक्किल सभ की कहत? अहाँ कोर्ट सँ आबि भूखले मोकिल लग बैसल छलहुँ तँ हम की करी? कोना बजाबी? अहाँ खिड़कीक पाछू सँ चूड़ी खनखनाय देबैक हम चलि आयब। उदास मोन हिनकर बात पर मुस्काय लगैत छला।

ओना ई हमरा काजर आ बिन्दीक बिन देखऽ नहि चाहैत छलाह। हिनकर कोनो दोस्तक सामने काजर बिन्दीक बिन आबि जाइत छलहुँ तँ ई भौंहे चढ़ा आंगुर सँ काजर-बिन्दी लेल संकेत करैत छलाह। हम ओहिना घुरि जाइत छलहुँ आ काजर बिन्दी लगा केँ आबि जाइत छलहुँ। एक बेर दुइ दिन सँ गप नहि भेल छल। खाइत बेर पीढ़ा पर बैसि हमर बात पर हूँ-हूँ करैत छलाह-फेर चलि जाइत छलाह। तखन हम हुनक फाइल पर एकटा चिट लिखि केँ राखि देलहुँ-

ये कैसी जुबांबंदी है तेरी महफिल मे,
यहाँ तो बात करने को तरसती है जुबां मेरी

एक बेर घर मे चाउर, दालि, अल्लू सभ खतम भऽ गेल छल। हिनका सँ बजलहुँ-अनमन भऽ बजलाह-जहिना चलैत छैक चलऽ दिऔक। ई सुनि हमरा करेजा पर सन्न सँ तीर लागि गेल-अपन बच्चा सभकेँ तँ हम भूखलो सुताय देब। किन्तु, मोहन जी, रमण जी, अशोक जी की खेथिन?

ई शांत स्वरे कहऽ लगलाह-रनियां, अहाँ एखन धरि अपना केँ हमरा सँ अलग बुझैत छी। अहाँ केँ डाँटैत छी तँ बुझू हम अपना आप केँ डांटि रहल छी। अहाँ के कालेज दरमाहा 200 रु. भेटल। अहाँ हमरा लेल जूता कीनि लेलहुँ। हम किछु नहि बजलहुँ। बच्चा सभ तँ दूर हम दशमी लेल अहाँ लेल एकटा साड़ी धरि नहि कीनि सकलहुँ। अहाँ कतेकोबेर दुर्गाजीक समक्ष पूजा करू किन्तु हम बुझैत छी अहाँ हमरा अपना सँ पृथक बुझैत छी। जाहि दिन अहाँ बुझि जायब हमर अहाँक मान-सम्मान, यश अपयश एक अछि, ओहि दिन अहाँक पूजा सफल भऽ जायत।

नहि जानि किएक हम टाका पैसाक मामलामे अपना केँ हिनका सँ अलग बुझैत छलहुँ। हमरा मोन मे सदिखन होइत छल हमरा घर चलेबाक ढंग नहि अछि। गृहस्थी मे हम एकदम अनफिट छी-दोख हिनकर नहि छल, दोख हमरो नहि छल। दोख परिवेशक छल।

हम बाल्यकाल सँ देखैत छलहुँ जे पापा दरमाहा अनैत छलाह आ सभटा माँक हाथ मे राखि दैत छलाह-फेर पापा माँक पाछू-पाछू-हे कतेक बांचल अछि-हमरा टाकाक आवश्यकता अछि-आ एम्हर बाबूजी सभ टाका-पैसा अपना संग रखैत छलाह आ माँ बाबूजीक पाछाँ पाछाँ एक-एक टाका लेल बेहाल रहैत छलीह।

जखन पापा भागलपुर आ सहरसा मे पोस्टेड छलाह तँ सभटा दरमाहा माँक हाथ मे दैत छलाह। माँ हमर हाथ मे चाभी आ दरमाहा दऽ बकस मे राखि देबा लेल कहैत छलीह। ओ एकटा पीयर छीट बला बाकस छल जकर ऊपर सँ गोल गोल गुंबद सन बनल छल। ओहि मे हरदम ताला लागल रहैत छल। हम मासक अंत मे पापाक छटपटी देखने छलहुँ। माँ सँ मंगैत छलाह तँ माँ मुँह लटका लैत छलीह। पापा बजैत छलाह-रजनी, अपने सँ देखहक तँ कहीं बकसा मे टाका किछु भेटि जाय। माँ तामेसँ चाभी हमरा आगू फेकि दैत छलीह। हमहूँ तँ बेदरे छलहुँ। बकसा खोलि एक-एक टा साड़ी कँ झाड़ि झाड़ि देखैत छलहुँ-एक दूइ टा नमरी भेटिए जायत छल। माँ कहैत छलीह-शनि दिन जनमल सेंटू आ सोमक जनमल रजनी छी किन्तु, एकरा शनिक दृष्टि अछि। हम खुश भऽ जाइत छलहुँ, किएक तँ पापा खुश भऽ जाइत छलाह। सेन्टू टुक टुक शनिक दृष्टि सँ तकैत! माँ पापाक ई नोक झोंक प्रत्येक बेर मासक अंत मे होइत छल। आब हम की करितहुँ जहिना माँ राखय दैत छलीह हम चुपचाप तीन चारि नमरी निकालि बक्सा मे अखबारक तर मे राखि दैत छलहुँ। आ फेर वएह क्रम।

जखन मासक अन्त मे पेपरक भीतर सँ टाका निकालि पापाकेँ दैत छलहुँ तँ माँ चकित विस्मित-हम माँक कान मे बजैत छलहुँ माँ अहाँ हमरा दरमाहा राखऽ दैत छलहुँ-मासक अन्तक खटपटी अहाँक पापाक मोन पड़ि जाइत छल। बस हम एक दुइटा नोट ओहि सँ निकालि अहाँक बक्सा मे पेपरक तर सँ राखि दऽ दैत छलहुँ। माँ हमरा गऽर सँ लगाय लेने छलीह। कतेक बेर पापा केँ आवश्यकता नहि पड़ैक तँ ओ टाका ओहिना पेपरक नीचा पड़ल रहि जायत छल। एक बेर सहरसा मे फेरी वाला आएल छल-सभ केओ साड़ी देखि रहल छल। माँ केँ एकटा पन्द्रह रुपया वाला सूती साड़ी पसिन्न पड़ि गेलैक। किन्तु, मासक अन्त छल। माँ किछु नहि बजलीह। हम माँ केँ बक्सा सँ दूइटा दस टकही निकालि हाथ मे दऽ देने छलहुँ-माँक खुशी हमर खुशी छल।

एम्हर डुमरा मे माँ हरदम बाबूजी सँ पैसा मंगैत छलीह। कहियो बाबूजी दऽ दैत छलाह किन्तु, एक एक पाइक हिसाब मंगैत छलाह। घर मे तँ सभ किछु अइछे तँ अहाँ पाइ लऽ कऽ की करब? स्वामिनी काकी छलीह जिनका हाथ मे भंडारक चाभीक संगे तेल साबुनक पाइ सेहो देल जाइत छल। किन्तु, माँक आठ बच्चा छल

जकर आवश्यकता किछु ने किछु होइते रहैत छल। बाबूजी नौहट्टा सँ अबैत छलाह तँ खूँटी पर अपन कुरता टांगि दलान पर चलि जायत छलाह। हुनका जयबाक बादे माँ झट्ट दऽ कुरताक जेब मे हाथ दय किछु पाइ छोड़ि सभटा टाका निकालि लैत छलीह।

हम घोघ तर सँ सभटा तमाशा देखैत रहैत छलहुँ। कहियो बाबूजीकेँ पता चलि जाय- अहाँ जेबी सँ पैसो निकालने छी की? माँ स्पष्ट नकारि दैत छलीह। किन्तु, आइयो ओ घटना मोन पड़ैत अछि तँ असगरो मे हँसी लागि जायत अछि।

माँ वैष्णव छलीह। माछ-मासु..... खेनाय तँ दूर, छूबो नहि करैत छलीह। बाबूजी माँक पैसा निकालबाक हिस्सक छोड़ेबाक उपाय खोजि नेने छलाह। बाबूजी नौहट्टा सँ आबि खूँटी पर कुरता टाँगि नित्यक भाँति दलान पर चलि गेलाह।

बाबूजीक दलान पर गेलाक बाद माँ जहिना कुरताक जेबी मे हाथ देलीह कि माँक हाथ मे मुरगीक अंडा आबि गेल। पहिने तँ ओ हतप्रभ भऽ गेलीह ई की ठीक? पाछाँ जोर जोर सँ 'छी:छी:' कहि चीकऽय लगलीह-हम दौड़लहुँ-की भेलैक-माँ? अहाँ अपन बाबूजीक करम देखू, कुर्ता मे अंडा रखने छथि। हे। भगवान आब हम की करी? माँ टेबुल पर ओ अंडा राखि बाम हाथ सँ दहिन हाथ पकड़ि देह सँ अलग केने छलीह। हुनका छटपटी लागल रहैक कोना हाथ केँ काटि फेंकि दी?

हम कतेक बेर साबुन सँ साफ कय देलहुँ ओहि हाथ के-कतेक बेर छाउर सँ, माटि सँ किन्तु, माँ केँ चैन नहि भेटि रहल छलैक। अंत मे हम हुनकर हाथ के गंगा जल सँ साफ कऽ देलहुँ तखन जाकऽ किछु चैन भेटलैक। काकी माँ सँ पूछय लगलीह-मुखिया जी एना कोना केलनि संगी? पूरा घर मे हलचल छल। केओ नहि जनैत छल जे माँ बाबूजीक जेब सँ पाइ निकालैत छलीह। माँ बेचारी की करथि-मंगला कुजड़ा कहियो फल फलिहारी लऽ कऽ तँ कहियो मिठाइ लऽ कऽ आनि जाइत छल। बच्चा सभक जी ललचि जाइत छल। काकी कीनियो दैत छलीह तँ पन्द्रह बीस बच्चा मे पूरा नहि होइत छल। हमरो छोट छोट नेना छल-आ तेँ माँ एना करैत छलीह। कहियो अपना पर नहि खर्च केलीह। कोनो माँ अपना पर नहि खर्च करैत अछि। ओहि दिन बाबूजी खुब मुस्की मारैत रहलाह। माँ बैसि केँ कोसैत रहलीह।

आ हम एहि दूइ परिवेश केँ देखने छलहुँ, भोगने छलहुँ-दरमाहा आ गृहस्थ परिवार। वकालत मे तँ दुनू मे सँ किछु नहि। वकीलक दिमागक काज होइत अछि,

जान मालक रक्षा-दुनूक भार। तखन कतेक गोटे एहेन होइत अछि जे फीस देबाक काल हुनका लगैत छन्हि जे या तँ उपकार कऽ रहल छी ओकिल पर या खैरात बाँटि रहल छी। लोकक दिमाग मे ई बात नहि अबैत अछि जे ओकिल चाहो जलखै जे हुनका करबैत छथि ओ ओहि फीस सँ। किन्तु, वर्माजी कें एहि सभ सँ कोनो मलाल नहि रहैत छलन्हि। किन्तु, केसक संग कहियो अन्याय नहि करैत छलाह। अपनो जेबी सँ पाइ लगा ओ केस लड़ैत छलाह।

दुनू परिवेश कें भोगैत हम अपन बाट निकालने छलहुँ। जखन ई कोर्ट सँ अबैत छलाह तँ करिया कोट खुट्टी मे टाँगि दैत छलाह-डुमरा मोन पड़ि आबैक-ई जहिना मोक्किल लग जाथि हम आस्ते सँ हिनकर जेबी सभकेँ देखैत रही। उपरका जेबी मे दू तीन टा नमरी रहैत छल तँ हम एकटा नमरी निचलका जेबी मे राखि दैत छलहुँ जे ई खोजबो करता तँ हमर नाम नहि लगैक। फेर दोसर दिन कोर्ट सँ अबैत छलाह तँ फेर नमरी मे वृद्धि देखि हम निचलका जेबीक नमरी निकालि लैत छलहुँ। ऊपर सँ एकटा नमरी फेर निचलका जेबी मे कागज सभक बीच राखि दैत छलहुँ। ई क्रम हमर चलैत रहैत छल। दू मास तीन मास मे एक बेर पकड़ाइत छलहुँ तँ निर्दोष भावे कहि दैत छलहुँ काज छल तँ निकालि लेलहुँ-ओ किछु नहि बजैत छलाह। किन्तु, हमरा अपना मोन मे अपराध बोध होइत छल। की करितहुँ घरक खर्चक अलावे बाल बच्चाक अतिरिक्त खर्च कागज पेंसिल फालतू-फालतू रहैत छल। दोसर एकटा आओर रस्ता हम जनैत छलहुँ-हिनकर हिस्सक छल, कतबो व्यस्त रहथि, कतबो धड़फड़ी रहैक किन्तु, कोर्ट जाइत काल हमरा प्यार कऽ कऽ जाइत छलाह आ जीवन पर्यन्त नहि एकरा बिसरलाह। ओहि समय जखन प्यार करैत छलाह तँ हम बजैत छलहुँ हमरा पाँच टाका देब तकर बाद। इ हिनकर आदत भऽ गेल आ जाइत काल दुलार करबाक बाद पाँच टाका हमर दऽ दैथ। एहि लेल ओ पहिने सँ पाँच टाका भजा कें जेब मे रखैत छलाह। एहि पाँच टाका सँ हम बच्चाक खर्चक संग संग घरोक खर्च चलबैत छलहुँ। ओहो जनैत छलाह। ओहि समय डेढ़ रुपैया मन कोयला, एक रुपैया मे डेढ़ किलो दूध, एक रुपैया मे सवा किलो कबइ माछ, अढ़ाइ रुपैया किलो कडु तेल, अढ़ाय रुपैया किलो मासु भेटैत छल। पाँच टाकाक अमोल छल। हमरा मोन नहि अछि जे हम कहियो अपना पर एक पाइ खर्च केने होयब।

परिस्थिति हमरा सभकें कतेक नाच नचौलक। बच्ची अपन छोटकी ननदिकें हम कतेक मानैत छलहुँ- विधि वाम आ कि प्रतिकूल समयक कारण हमरा सभकें हुनक वियाह सहरसा सँ करय पड़ल। वियाह अखिल सँ भऽ रहल छलैक- अपन बेटीक वियाहक प्रथम अनुभव हमरा सभकें भेल छल। वएह उत्साह, वएह उमंग

ताहूमे बरियाती हमर नैहरक। मोनमे लालसा छल जे अपन नैहरो कें हम देखा दी- आ बड़ धूम-धामसँ वियाह भेल छल। सौंसे सहरसाबला उत्साह संग सहयोग देलक वकील साहबक बहीनक विवाह थीक- एकटा तृप्तिक साँस नेने छलहुँ बर बरिआती विदा होयबाक बाद.... बच्ची ननदि हमर बेटी बनि गेल छलीह आ हमर नैहरक सभसँ पैघ पुतोहु। हमर जीवन धारे बदलि गेल छल। एकबेर जगदीश मामा आ मामी हमरा सँ पुछने छलाह- बुच्ची, अहूँ तँ गबैत छलहुँ! हरमुनियाँ बजबैत छलहुँ......हम हँसैत बजलहुँ- मामी, जखन द्विरागमनक बाद हम नैहर एलहुँ तँ देखैत छी तानपुराखंड-खंड भऽ गेल छल, तबला डुग्गी फुटि गेल छल आ हमर हरमुनियाँ गरदासँ भरल कोनमे फेकल छल। तखने मामी हम अपन भविष्य बुझि गेलहुँ।

ताहिपर ई बजलाह- तानपुरा, तबला, हरमुनियाँ सभटाक खुन्डी मिलि चुल्हि बनि गेल। हिनका परिवार आ परिवारक लेल चूल्हि पर खटर पटर केनाय छोड़ि किछु नहि नीक लगैत छैक।

हिनकर बात सुनि मामी उदास भऽ गेलीह-एतेक प्रेमसँ रानीकें गाना बजाना सीखा रहल छी, नहि जानि की भविष्य ओकर होयत- किशोर भीजल स्वरमे बाजल- दीदी, जे बहीन बाल्यकाल सँ बीस बाइस बरिस धरि संग रहैत अछि ओ कोना दोसर घरमे चलि जाइत अछि- मोन कोनादन भऽ जाइत अछि।

मोन कोनादन हमरो भऽ गेल छल- स्त्रीक नियति थीक--जोगने छलहुँ आ भोगि रहल छलौं किन्तु, आब समय बदलि गेल, स्थिति परिस्थिति सभ बदलि गेल. ...एकटा नम्हर साँस छाती मे औनाय लागल.....

सभ सँ पैघ बात छल जे हमरा दुनू गोटे मे जिद्द नहि छल। जिद्द-अंहकार कें जन्म दैत अछि। वियाहक बाद हम स्वयं कें हुनकर विचार व्यवहार खानपानक अनुरूप बनयबाक प्रयास करैत रहलहुँ। हुनका पर अपन इच्छा अनिच्छाक दबाव नहि देलहुँ। हमरा माछ-मांसु केर झोर नीक लगैत छल तँ हिनका माँछ-मासु। हमरा दालिक पानि तँ हिनका दालि। ई कहैत छलाह हमरा अहाँ मे कोनो खर्च नहि अछि। अहाँ झोर खायब हम माछ माँसु। हमरा ब्रेड बटर, परौठा, पूड़ी जलखै मे नीक लगैत छल हिनका चूड़ा भूजल। हिनका अदौरी तिलौरी, कंचूक कचौरी सभ नीक लगैत छल आ हम तीमन मे एकटा तीमन खाइत छलहुँ आलूक दम, गरम मसाला आ घी सँ छौंकल।

हम सब भोर मे टहलैत छलहुँ रेलवे लाइन दिस, तँ हम बजैत छलहुँ-अपना सभकें खान-पान एहि रेलक पटरी जकाँ अछि-कहियो नहि मिलत। ई बजैत छलाह-कतौ इहो पटरी एक दोसर सँ मिलैत अछि ओम्हरका पटरी एम्हर चलि अबैत छैक- एम्हरका ओम्हर चलि जाइत अछि-आ ठीके आब हमरा बड़ी तिलौरी दनौरी

सभ नीक लगैत अछि। ओ सेहो हमर पसिन्नक चीज ग्रहण करय लगलाह। हम जनैत छी नीक जकाँ जनैत छी, पत्नी कें शुरु मे झुकि पतिक अनुरूप बनि जयबासँ कालान्तरमे पति सेहो पत्नीक अनुरूप बनि जाइत छैक। स्त्री मे सहनशीलता आ समर्पण सभ सँ पैघ गुण होइत अछि। यानी पतिक हृदय पर राज कऽ सकैत अछि।

जखन हमर वियाह, भेल छल नेल पॉलिश धरि हमरा नहि लगबऽ आबैत छल। नहक बाहर सँ सेहो रंगि लैत छलहुँ-अफगान स्नो आ पाउडर लगबैत छलहुँ। ई नेल पॉलिश लगाकऽ हमरा सीखौलनि-पाउडर गला सँ चेहरा 'धरि लगाउ, खाली चेहरा पर नहि-केश कोना थकरी-कतेक स्टाइल सँ कोना फीटींग सँ ब्लौज रहबाक चाही-हम तँ किछु बुझैत नहि छलहुँ। बस एकटा अल्हड़ मस्त कल्पना जीवी-भावना मे डूबल रमल। पटना मार्केट आ हथुआ मार्केट सँ आठ आना मे औंठी, एकटाका मे कानक, दूइटाका मे गलाक न्यूनतम दाम मे भेटैत छल। ई डिजाइन डिजाइन केर कान गलाकें कीनि अनैत छलाह। मेरे महबूबक साधनाक गलाक तीन टाका मे कीनने छलाह-आ हमरा नीक सँ सजाय गोलकपुर सँ पटना मार्केट, कहियो काल तँ पएरे गांधी मैदान धरि लऽ जाइत छलाह, घुमबा लेल नहि एलफिन्सटन सँ लाउडस्पीकर पर गाना सुनबा लेल। ओहि समय फिल्म खतम भेलाक बाद लाउडस्पीकर पर जोर सँ गीत दैत छल। ई कोनो गीत सुनि कहि दैत छलाह कोन संगीतकारक संगीत अछि एहि मे। कहियो काल चलैत कोनो दोकानक दोग मे झट सँ नुका जाथि। हमरा अचरज हो-पटना सांइस कॉलेजक प्राचार्य दोजाक पीअर कचोर कार अबैत देखि सभ विद्यार्थी नुका जायत छलाह। पता नहि कोना ओ प्राचार्य चीन्हि जयतनि। हिनकर कैवेंडिश होस्टलक दोस्त जयवल्लभ प्र. सिन्हा तुलानाथ चौधरी सभ एहि बातक पुष्टि करैत छलाह- बाप रे बाप- ओ प्रिंसिपल अपन कालेजक एकेक टा विद्यार्थी कें चीन्हैत अछि। मजाल छलैक जे पटना सायंस कॉलेज ग्राउंड मे एकोटा कागजक टुकड़ा खसल रहितैक। कॉलेज मे एतेक अनुशासन छल जे हम सभ कोनो बदमाशी मे देखार नहि भऽ सकैत छलहुँ- हमरा हँसी लागि जाइत छल।

विचित्र जिनगी हमर सभक रहल। वियाहक बाद जखन माइनिंगक जियोफिजिक्स मे समस्त देश मे हिनका दशम स्थान प्राप्त भेल छल तँ बाबूजीक पत्र - हमर बेटा बड़ कोमल अछि खानक नौकरी नहि करत ! बाबूजीक बात काटबाक साहस ककरो नहि छल ! वियाह सँ पहिने मर्फी कम्पीटीशन मे फिल्म मे गीत गयबा लेल महेन्द्र कपूर, सुमन कल्याणपुर आदिक संग हिनक चयन सेहो भेल छल - किन्तु नीक परिवारक बेटा फिल्म मे नहि जाइत अछि - कहि बाबूजी रोकि देलन्हि ! न्यूक्लियर-फिजिक्स पढ़बा लेल हिनका विदेश जयबाक छल तें हड़बड़ाय कें हमर सभक

वियाह भेल किन्तु, जहिना ज्ञात भेल जे हमरा छोड़ि कें जेताह तें विदेश जयबा सँ हम रोकि देलहुँ। कारण, जे ओहि समय हम हिन्दीमे एकटा कथा 'सुहाग का शव' पढ़ने छलहुँ- बड़ चर्चित कथा छल, समस्त समाज केर अन्तर काँपि गेल छल-लेखकक नाम एखन स्मरण नहि आबि रहल अछि- ओहि स्थितिमे हमर मोनक हाल ? एतबे नहि, ओहि समय कृष्ण वल्लभ सहाय बिहारक मुख्यमंत्री छलाह आ हमर सभक परिवारक सशक्त सदस्य सेहो ! हमर बाल्यकाल मे बहुत समय हजारीबाग मे हुनके सभक संग बीतल छल! हुनका जखन जखन अवसर भेटैक, श्रीकृष्ण नगर आबि जाइत छलाह! इम्पीरियल टोबैको कम्पनी कलकत्ता मे एडमिनिस्ट्रिटिव पदक लेल ई आवेदन देने छलाह। के.बी. सहाय कें कलकता, जयबाक छल! वर्माजी कें अपना संग प्लेन सँ लऽ गेलाह आ कलकत्ताक मुख्यमंत्री पी.सी. सेन सँ हिनकर परिचय करौलन्हि- 'हमर जमाइ छथि ललन वर्माजी।

आ देखतहि हिनक नियुक्ति कलकत्ता मे भऽ गेल। ई ज्वाइन करबाक एक मास बाद पटना एलऽ हमरा कलकता ल। जयबा लेल। ई बड़ खुश छलाह- हमहूँ। सिर्फ एक दिन जिनगीक अर्थ बदलि दैत अछि ! हम छोट छीन राजू सूकू कें लऽ कऽ हवाक पंख लगाय, कल्पनाक संसार सजा कलकत्ता चलि गेलहुँ ! सुनन्दा मौसी ओतऽ ठहरलौं।

इंपीरियल टोबैकोक ओ भव्य इमारत देखि आँखि चकित-विस्मित छल। संयोग छल जे ओहि बीच आफिस मे कोनो पार्टी छल जकरा मे पत्नीक संग सभकें निमंत्रण छल। आ हमरा लागल छल जेना इन्द्रलोक मे आबि गेलहुँ। कान्ह धरि काटल सीटल बॉबकेस, आंगुर भरि पातर स्लीवलेस ब्लौज, लिपिस्टिक सँ पोतल ठोर, सभक पत्नी दोसर दोसरक पतिक संग फ्लोर पर नाचि रहल छलीह - जे हमरा पाछाँ बुझबा मे आयल! एक सँ एक सुन्दरी बाला सभ स्कर्ट आदि आधुनिक वेशभूषा मे एम्हर सँ ओम्हर आबि जा रहल छलीह ! हमर जिज्ञासा देखि ई समाधान केलन्हि-ऑफिसक सेक्रेटरी सभ थिकीह- एतेक सुन्दरी सभ-? हँ, जे सौंदर्य प्रतियोगिता मे भाग लैत छथि बेसीतर हुनके सभकें एहिठाम राखल जाइत छैक।

हमर बालमोन ओहिठामक वातावरण देखि मौलाय गेल छल। ई हमरा पढ़ैत कहलनि - की भेल -? अहूँ एहिना सिगरेट, शराब पीअब की -? परिहास मे नेना जकाँ मचलैत बजलाह - हँ, पीअब तँ की हेतैक -? हम स्पष्ट शब्द मे मना कऽ देने छलहुँ जे हमरा ई नौकरी पसन्द नहि अछि ! तखन ई शान्त स्वरें बजने छलाह-रन्नो, अहाँ कें लगैत अछि हम कहियो सिगरेटो - शराबो पीबि सकैत छी -? हम जनैत छलहुँ, विश्वासो छल हिनका पर किन्तु बजलहुँ- इनारक चारू कात पक्का

नहरा बनाओल जाइत छैक मुदा, घैल राखैत राखैत ओहि पक्को पर निसान पड़ि जायत छैक- आखिर एहेन वातावरण मे अहाँ कहिया धरि अपना कें बचा सकब?

ओहि ठाम सँ घुरलाक बाद हमर मोन अशान्त भऽ गेल छल - ई बजलाह—सोचि लियऽ रन्नो ! हमरा लेल अहाँक खुशी सँ बढ़ि किछु नहि। एहि कारण हम अहाँ कें कलकत्ता अनने छी। कलकत्ता मे क्वार्टर भेटत, पाइ भेटत। हँ, एकेटा दिक्कत अछि जे मास मे 15-20 दिन हमरा टूर पर रहय पड़त - सेक्रेटरी सेहो संग जेतीह - जाइयो सकैत छथि, नहियो जा सकैत छथि। ई हमरा कोना बुझल रहत - मजाक मे हँसैत बजलाह, मुदा हम भीतर सँ डरि गेल छलहुँ। आखिर भरि जिनगी हमरा एहने माहौल मे रहऽ पड़त।

अरे अहाँ गहना जेबर सँ लदल रहब, पैसा सँ खेलैत रहब - बीचे मे हम बात काटि देने छलहुँ - हँ हँ, सजल धजल हम अहाँक बाट ताकैत रहब आ अहाँ सेक्रेटरी संग - मस्ती मारैत रहब- हम कानऽ लागल छलहुँ। तखन ई गंभीर भऽ गेलाह- रनिया, अहाँ कें हमरा पर विश्वास नहि अछि -? माँक बात मोन पाडू तँ-

आ माँक बात सिनेमाक रील जकाँ आँखिक आगू घुमि गेल छल–

वियाहक एक मास बाद हम सभ बड़गाम सँ मधेपुरा, पटोरी होइत पटना पहुँचल छलहुँ। वर्माजी पहिनहि पटना आबि गेल छलाह अपन होस्टल मे! ओहि बीच हिनकर प्रोग्राम पटना सायंस कालेजमे छल। 'ड्रेमेटिक सोसायटीक मेम्बर रहलाक कारण संगीत-कला क्षेत्र मे बड़ नाम छल हिनकर ! हिनकर गीतक कार्यक्रम सेहो छल ! ई घर पर आबि हमरा सभकें प्रोग्राम मे अएबा लेल कहलनि- ओहि समय हम सभ गोलकपुर मे पटना सायंस कालेजक बगले मे रहैत छलहुँ! पापा बहुत अस्वस्थ छलाह तें माँ नहि गेलीह। हम दीपक मधु आ मन्नाजीक संग प्रोग्राम मे गेलहुँ। जमाय वाली बात छल। माँ पापाक जोर छल प्रोग्राम मे जयबा लेल आ मरदक नाम पर मन्नाजी घमंड मे फुलैत हमरा सभक संग जयबाक लेल तत्पर !

जखन हम सभ पहुँचलहुँ, प्रोग्राम आरंभ भऽ चुकल छल। हिनकर गाना चलि रहल छल - 'आँखो मे बसाऊँ तुझे दिल मे बसाऊँ' एकटा सुन्दर सन लड़की हिनकर आगू मचलि मचलि गाबि रहल छलीह - 'जा जा रे छलिया तेरी बातो मे न आऊँ......'

हॉल खचाखच भरल छल - दुनू गोटे स्टेज पर चान सूखज जकाँ चमकि रहल छलाह! मुदा, गीतक बोल सुनतहि हमर करेज मे जेना सहस्त्र तीर लागल- अन्तर

मे जेना फोका फोका भऽ गेल - एखन तँ मास भरि पहिने वियाह भेल छल। हमरा लेल एक सँ एक गीत गबैत छलाह आ एखन वएह लड़का आन लड़की कें - 'आँखो मे बसाऊँ ....

हम उनटे पएर वापस आबि गेलहुँ। दीपक मधु मन्ना सभ चकित- पहुनाक गाना नहि सुनब दीदी ? मुदा हम भगैत कनैत घर चलि एलहुँ। माँ विस्मित छलीह- तुरत गेल छलीह, तुरंत घुरि गेलीह - की भेलै - हमर धैर्यक बान्ह टुटि गेल। हम हिचकि हिचकि कानऽ लगलहुँ - ओ कोनो आन लड़की कें गाबि गाबि.......।

पहिने तँ माँ बड़ तमसा गेलीह हमरा पर - पाछाँ ओ हँसऽ लगलीह आ हमरा समझाबऽ लगलीह - देख रजनी, जाहि लड़का सँ तोहर वियाह भेल छौक ओ पटना विश्वविद्यालयमे गाना बजाना, खेल कूद सभ चीज मे अपन नाम कमौने अछि। पाहुन अपन प्रोग्राम दऽ रहल छलाह नहि कि कोनो लड़की कें फुसला रहल छलाह - छी छी - अहाँ अपना पतिक विषय मे एहेन बात सोचबो कोना केलहुँ-? फेर कतेक देर धरि माँ समझाबैत रहलीह - बेटा। पति-पत्नीक संबंध प्रेमक विश्वासक होयत छैक! जतऽ खाली प्रेमे रहैत छैक ओहिठाम विश्वासक सर्वथा अभाव रहैत छैक किन्तु, जाहिठाम विश्वास छैक, प्रेम स्वयं चलि अबैत छैक- फेर माँ अपन एकटा संबंधी लेल कहऽ लगलीह - पति पर सन्देह करैत करैत ओ अपन जीवन नर्क बना लेलीह। सदिखन गृहकलह सँ लोक परेशान रहैत छल। ओम्हर किएक ताकलहुँ तँ दाय के की कहलहुँ- अड़ोस पड़ोस सँ लऽ कऽ कामवाली धरि कें नहि छोड़ैत छलीह! निरीह पति बेचारा सभ उलहन सुनैत रहैत छलाह । ओकरा मे कोनो दुर्गुण नहि छल जे ओकरा लगितैक।

दीपक मधु सभ सुतबा लेल चलि गेल छल। राति भीजैत जाइत छल - हमर नोर सुखा गेल छल! माँ बैसले छलीह - आ हमहूँ मोने मोन पछता रहल छलहुँ किएक घुरि कें चलि अयलहुँ ? ओ की सोचताह - की इएह हमर प्यार छल -? प्रेम मे विश्वास नहि छल - मोन होइत छल केओ हमरा फेर लऽ जइतय - मुदा आब की कऽ सकैत छलहुँ - अछताइत पछताइत रहलहुँ एकटा ग्लानि भावक संगे - तावत केबाड़ ठकठकाबैक स्वर आएल। हम जहिना तहिना बैसल रहि गेलहुँ। माँ दरवज्जा खोललीह - ई झुकि कें माँक चरण-स्पर्श केलनि। हिनका हाथ मे तीनटा कप, तीनटा सर्टिफिकेट छल। माँक हाथ मे सभटा दैत बाजलनि- माँ हम डुएट मे, गजल मे, भजन मे, तीनू मे प्रथम आयल छी - माँ बहुत प्रेम सँ हुनका आशीर्वाद देलन्हि आ मुस्काइत ओहिठाम सँ चलि गेलीह !

लालटेनक इजोत मे हम माथ झुकौने कोनो अपराधी जकाँ बैसल छलहुँ – अहाँक किएक नहि अयलहुँ राज ? पूरा हाल मे हमर दृष्टि खाली अहाँकेँ खोजि रहल छल। हम गाबि रहल छलहुँ किन्तु हमर तन मे जान नहि छल – प्राणहीन सन गाबि रहल छलहुँ! तखन लागल अहाँ तँ हमर अन्तर मे बैसि हमरा प्रेरणा दऽ रहल छी। हम बुझैत छलहुँ जे पापा बीमार छथि अहाँ ककरा संग अबितहुँ ? – ई हमर बगल मे बैसि धाराप्रंवाह बाजि रहल छलाह कि हम अचक्के फुटि-फुटि कानऽ लगलहुँ–की भेल रन्नो की भेल –? ई हड़बड़ाय गेलाह – तखन हम कनैत-कनैत सभ बात हिनका कहलियन्हि !

पहिने तँ ई आश्चर्य सँ भरि गेलाह – साइत केहेन लड़की छैक – पाछाँ बड़ जोर सँ ठहाका लगौलनि– बड़ नेना छी एखन धरि अहाँ आ हमरा अपन बाँहि मे समेटने बजलाह – ''आँखों मे बसाऊँ'' एहि डुएट पर प्रथम पुरस्कार भेटल, रग-रग मे तेरी याद सताए, गजल पर , ''भोली भाली राधिका'' एहि भजन पर प्रथम पुरस्कार इएह तीनू कप भेटल अछि। अहाँ की की सोचैत रहलहुँ– राति भरि पाश्चातापक नोर सँ नहायल रहलहुँ आ ई अपन दोस्त सभ पी कमल, कुमुद सिंह, कुमुद अखौरी, विमला, तारकेश्वर, ओमप्रकाश, मोहन दूबे सभक परिचय हमरा दैत रहलाह आ कतेको गीत हमर कान मे गबैत रहलाह – किन्तु, ओहि राति हम माँक बातक गिरह बान्हि नेने रही आ किरिया खा लेलहुँ स्वयं पर सन्देह करब तँ करब, हिनका पर कहियो शंका नहि करब – आ फेर माँक वएह बात आइ ई स्मरण करा देलनि। तकर बाद हम किछु नहि कहलहुँ– ने नकारि सकलहुँ आ ने तँ स्वीकार कऽ सकलहुँ– चुप रहि गेलहुँ मौन–मूक। पता नहि हिनका मोनमे की भेलैक की नहि, हमरा पटना पहुँचाबऽ अयलाह तँ फेर वापस कलकता नहि गेलाह।

नहि जानि किएक हमर मोनक एतेक खियाल ई रखलनि जखन कि नीक वा बेजाय किछु निर्णय लेबाक योग्यता आ कि परिपक्वता हमरा मे नहि छल !

मानवक भाग्य रेखा केओ नहि जनैत अछि– कोन कोन बाट सँ चलत ! कहाँ तँ न्यूक्लियर फिजिक्स पढ़वा लेल हड़बड़ाय के हमर वियाह भेल अमेरिका जयबाक लेल, फेर माइनिंग, फेर इंपीरियल टोबैको कम्पनी, फेर पटना सायंस कालेजक प्रोफेसर बनवाक सभ आस पर तुषारपात भऽ गेल। कानून पढ़ब, वकालत करब ! साइत हिनक स्वतंत्र मानसिकता हिनका आइ.ए.एस परीक्षा मे वा बी.पी.एस.सी. मे बैस नहि देलक!

पटनो मे छात्र जीवन मे हम अपन नैहर श्रीकृष्ण नगर मे रहैत छलहुँ आ ई मुस्सलहपुरक कोनो लाज मे ! कारण जे बाबूजीक सख्त हिदायत हमर पापा लग

आयल छल जावत ललनजीक परीक्षा नहि हेतैक दुनू पति पत्नी के भेंट नहि होमऽ देबैक। हिनका बाबूजी पत्र लिखलनि– पत्नी अहींक थिकीह आ अहींक रहतीह ! एखन अहाँ सासुर नहि जायब। ओहीनो अहाँ जानि लियऽ– मान घटय जहाँ नित्य: जाइ।

हम दुनू गोटे भेंट करबा लेल छटपटाइत छलहुँ – कोना भेंट होयत ? वियाहक बाद एक शहर मे रहितो हम सभ दूर भऽ गेलहुँ, मजबूर भऽ गेलहुँ ! ककरा कहितहुँ हम सभ एक दोसराक बाधा नहि वरन् एक दोसराक प्रेरणा थिकहुँ।

हम तखन आइ.ए. द्वितीय वर्ष मे छलहुँ ई बी.एस-सी मे ! हम भोरे 9 बजे बस सँ मगध महिला कालेज जाइत छलहुँ आ साँझ मे 4 बजे बस सँ घर अबैत छलहुँ। एक दिन हम कालेज मे बस सँ उतरैत छलहुँ कि हिनका पर दृष्टि पड़ल। ई कालेज गेटक पास ठाढ़ छलाह ! सद्य: ब्याहता हम लाल लाल साड़ी मे, लाल लाल लहठी सँ सजल हिनका अपन कालेज मे देखि लाज सँ आओर लाल भऽ गेल छलहुँ। मीना खन्ना, सुमन तिवारी, माधुरी मिश्रा, स्वर्णरेखा सभ हमरा चिढ़ाबऽ लागल जेना हम पति नहि प्रेमी सँ नुका कऽ मिलि रहल छलहुँ!

क्लास छोड़ि हम हिनका संग हिनकर होस्टल जाइत छलहुँ, फेर बी.एन. कॉलेजक सामने भारत काफी हाउस मे मसाल दोसा खाइत छलहुँ आ ठीक तीन बजे हमरा कालेज पहुँचा दैत छलाह ! चारि बजे बस सँ घर घुरि जाइत छहुँ। फेर तँ हिस्सक लागि गेल – प्राय: प्रत्येक दिन ई अपना क्लास छोड़ि हमरो छोड़ाय – हमरा लऽ कऽ कहियो कॉफी हाउस तँ कहियो सोडा फौन्टेन मे समय बीतबैत छलाह। ओहि समय 'प्रौक्सीक जमाना छल, दुनू गोटेक संगी क्लास मे 'प्रौक्सी' कऽ दैत छल तेँ एटेन्डेन्स कम नहि होइक।

बान्ह जतेक कसि कें बान्हल जाइत छैक प्रतिरोधक वेग ओतवे तीव्र होइत छैक ! बात किछु नहि होइत छल बस एक दोसरा कें प्रेरित प्रोत्साहित करैत समस्याक निदान। आखिर हम कहिया धरि सभ सँ नुका कें मिलैत रहब ? माँ, पापा, भाइ, बहीन बाबूजी सभ सँ नुका कें विद्यार्थी जीवनमे वियाह होयबाक दण्ड छल की ? मुदा, हमर सभक कोन गलती ?

ई बजैत छलाह– राज ! अहाँ पाँच बरीस कष्ट काटू। फेर देखब हम अहाँकेँ कतेक सुख दैत छी– ओ भावुक भऽ उठैत छलाह – हमहूँ भावुक भऽ जाइत छलहुँ– कष्ट कहाँ अछि हमरा? अहाँक प्रेम तँ हमर जीवन मे रंग तरंग भरि देने अछि।

एहि क्रम मे रोज रोजक अनुपस्थिति सँ किछु एटेन्डेन्स कम भऽ गेल तँ ई कोनो डाक्टर सँ मेडिकल सर्टिफिकेट आनि चुपचाप दऽ देलनि– हम सेंट अप भऽ

गेलहुँ। मुदा केओ किछु नहि जानि सकल ! किन्तु, आइ.ए. मे जखन किछु अंक सँ हमर प्रथम श्रेणी छुटि गेल तँ अपने नजर मे हम छोट भऽ गेल छलहुँ। कारण तँ जनिते छलहुँ- ओहि समय बिहार मे मात्र दूइए टा विश्वविद्यालय छल— पटना वि.वि. आ बिहार वि.वि.।

आब हम बड़ खुश भऽ गेल छलहुँ जे वियाह भऽ गेल आइ.ए. पास कएलहुँ। आब पढ़बा सँ मुक्ति भेटत ! आब आगू नहि पढ़ब ! सासुरो तँ गाम मे छल, रूढ़ीवादी छलाह ओ लोकनि। कहियो आगु नहि पढ़ऽ देताह ! हिनको कहलहुँ- हऽ हऽ आब. .....। ई तमसा गेलाह- ''अहाँ कोना बजैत छी एना! पापा कतेक सपना अहाँ लेल देखि रहल छथि? अहाँ बजैत छी नहि पढ़ब— हम स्तब्ध भऽ गेलहुँ हिनक तामस पर ! ओना तामसो हिनका बड़ छल ! जतवा प्यार करैत छलाह ओतवे दमसाइतो छलाह। वियाहक दुइए तीन मास बाद कोनो बात पर हमरा डँटलनि तँ हम हतप्रभ भऽ गेल छलहुँ। आइ धरि पापा हमर कहयो डाँटलनि नहि, माँ कहियो तमसेलीह नहि – आ ई आदमी जकरा सँ वियाह भेल मात्र तीन चारि मास भेल छल हमरा डाँटि रहल अछि कोन अधिकार सँ आखिर-? हम कनैत-कनैत कोठरी सँ बाहर आबि गेलहुँ। अंगना मे बड़का लतामक गाछ छल। हम एतेक डरपोक्की छलहुँ जे राति मे असगरे घरक एहि कोन सँ ओहि कोन धरि नहि जाइत छलहुँ। किन्तु ओहि क्षण हम दुख आ तामस सँ एतेक विक्षुब्ध छलहुँ जे डर भय सभ पड़ा गेल छल । पापा बाथरूम जएबाक लेल निकललाह आ आधा राति मे हमरा कनैत देखि घुरि के माँ कें कहलनि। माँ हड़बड़ा कें पूछऽ आएल- की बात छैक रजनी? तों किएक कानि रहल छे?

हम कनिते कनिते बजलहुँ – आइ धरि अहाँ पापा कहियो हमरा डांटने छी किन्तु, काल्हि वियाह भेल। आइ ओ हमरा डाँटि रहल छथि –

माँ बुझि गेलीह – बेटा पति पत्नी मे एहिना होइत छैक। होइत छैक तँ अहाँ आ पापा मे कहाँ होइत छैक ? हम आइ घरि पापा कें अहाँ पर दमसाबैत नहि देखने छी।

अहाँ की बुझब रजनी। पापा हमरा प्रायः रोज डाँटैत छथि किन्तु हम ककरो बुझऽ नहि दैत छियैक। पति पत्नीक बात ककरो बुझबाको नहि चाही। हम नीक जकाँ बुझैत छलहुँ माँ झूठ बाजि रहल छलीह – माँ पापा पर तमसा सकैत छलीह किन्तु, पापा जे दुनिया जहान कें डँटैत छलाह मुदा माँ के डंटनाय तँ दूर एकटा कठोर शब्दो नहि बजैत छलाह।

गाम सँ बाबूजीक चिट्ठी आएल – अहाँक परीक्षाफल देखि हम सभ गौरवान्वित भेलहुँ। आशा अछि अपन पिताक संरक्षण मे एहिना आगू बढ़ैत रहब।...ई

खुशी सँ उछलि गेलाह। पापा उत्साहित भऽ गेलाह आ शेफाली मौलाय गेलीह – आह! फेर पढ़ऽ पड़त – वियाह होयबाक उपरान्तो पढ़बा सँ मुक्ति नहि – हम पटना वीमेन्स कालेज मे हिन्दी आनर्स मे आबि गेलहुँ। ताधरि पापाक अपन मकान 90 नम्बर श्रीकृष्ण नगर मे भऽ गेल छल। कॉलेज नजदीक भऽ गेल ! आइ.ए. रिजल्ट निकलैत निकलैत राजीव हमर कोर मे आबि गेल छल। गोलकपुरमे ओकर छठिहार मे पापा करीब तीन सय आदमीक भोज केने छलाह !

गोलकपुरक हाता मे उज्जर गुलाबक फूल झुण्ड झुण्ड मे खिलैत छल। राजीव ओहि गुलाबक फूल सन सुन्नर आ कोमल छल गुलाब सन उज्जर। औंठिया केस जेना भगवान स्वयं कंघी कऽ सीटि कें पठौने होथि ! माँ पापाक नजर बचाय हम सभ राजूक बगल मे गुलाबक एकटा फूल राखि दैत छलहुँ– राजू सुन्नर कि गुलाब ? ओकर रेशमी गाल कें स्पर्श करैत रहैत छलहुँ, सिहरैत रहैत छलहुँ। जहाँ किनको अएबाक आहटि अबैत छल हम सभ दूर हटि जाइत छलहुँ। ओहि कालक समाज मे बेटा वा बेटी केओ अपन संतान कें अपन माता पिता आकि बुजुर्ग सभक सामने कोर मे नहि लऽ सकैत छल। केओ लैत छल तँ कहऽ बलाक मुँह नहि बन्न होइत छल— केहेन कलयुग छैक! लाज धाख किछु नहि छैक – लड़की सभ गर्भवती होइत छलीह तँ माय-बापक समक्ष नहि तँ वए-वए कय रद्द करैत छली आ नहि तँ अपन पैघा पेट लऽ कऽ सभक सामने जाइत छलीह। एकरा निर्लज्जता बूझल जाइत छल –

वीमेन्स कालेज मे हमर सभक मस्तियो कम नहि छल! सभ ऑनर्सक क्लास तखन पटना कालेज मे होइत छल 9.40 सँ। हम सभ 9 बजे धरि कॉलेज पहुँचि जाइत छलहुँ। फेर ओहि ठाम सँ करिया पिक अप पर सभ गाय भैंस जकाँ लदि पटना कॉलेज जाइत छलहुँ- रात्रि मनीषा कल्याणी, आशा, वायलेट सभक संग रास्ता भरि गीत गबैत चल ले चल खटारा खीच के – पटना कालेज पहुँचैत छलहुँ! ओहि समय पटना मे जनसंख्या बड़ कम छल ! सड़क खालीए रहैत छल ! पटना कालेज मे हम सभ बस सँ उतरि हिन्दी विभाग दिसि जाइत छलहुँ ! नीचा मे बी0ए0 लेक्चर थियेटर आ अंग्रेजी विभाग छल ऊपर हिन्दी विभाग ! वीमेन्स कॉलेज सँ मात्र हम आ कल्याणी छलहुँ किन्तु मगध महिला कॉलेज सँ हमर पुरान संगी सभ अबैत छलीह सुमन तिवारी, मनोरमा, माधुरी, चन्द्रकान्ता.... बस सँ विभाग जयबाक रास्ता मे दुनू दिस सँ छात्र सभ बैसल रहैत छल आ एक सँ एक सिनेमा गीतक कमेंट दैत रहैत छल! हमर केश खुजल राखबाक हिस्सक छल तें ओ सभ गबैत छल – विखरा कें जुल्फें चमन मे न आना ....'' हमहू सभ मस्त चालि सँ बिना ककरो देखने धप-धप

करैत विभाग दिस चलि जाइत छलहुँ ! एक बरीस नलिन विलोचन शर्मा अध्यक्ष रहलाह। दोसर बरीस शिवनंदन प्र. जी ! केसरी कुमार, अनन्त लाल चौधरी, वचनदेव कुमार, राम तवक्या शर्मा सभक क्लासक विश्लेषण आ आलोचि हम सभ करैत छलहुँ ! किन्तु एहि सभक मध्य जखन चौधरी जीक क्लास होइत छल तँ हम सभ उपर सँ हुलकैत रहैत छलहुँ कखन अनंत बाबू एताह ! कोनो छात्र हल्ला करैत आबि गेलाह - आबि गेला हम सभ चौंकि जाइत छलहुँ - ओ अपन मोहिनी मुस्कान सँ रिक्शा सँ उतरि ओहिना मुस्काइत रिक्शा बला कें पैसा दैत गप करैत छलाह ! सुन्दर सन ध ोती, कुरता, बंडी- धोतीयो कुरता मे मोहिनी मुस्कानक चद्दरि ओढ़ने ककरो व्यक्तित्व एतेक सुन्दर लगैत अछि- ई पहिलुक बेर हम छात्रा सभ अनुभूत केने छलहुँ - ततबे शालीन हुनक पढ़एबाक अन्दाज छल। दोसर दिसि जहिना वचनदेव कुमार रस पढ़बऽ लगैत छलाह हम सभ सरस व्याख्यानक मध्य विरस भऽ जाइत छलहुँ.....।

ओहि समय भाइजीक अंग्रेजी आनर्सक क्लास नीचा मे होइत छल। सायंस कालेज बगले मे छल ! पति पत्नीक मिलन पर प्रतिबंध एखनो बाबूजी लगौने छलाह! कहियो कहियो ई तारकेश्वर, मोहन दूबे, ओमप्रकाश आदिक संग क्षण भरि लेल हमरा सँ भेंट करबा लेल अबैत छलाह, फेर चलि जाइत छलाह। एक दिन ई भायजीक संग ठाढ़ छलाह बस लग ! हम क्लास कऽ घुरलहुँ तँ हिनका देखि चौंकि गेलहुँ ! कतेक रूग्न शक्तिहीन ई लगैत छलाह। हम जनैत छलहुँ जे घर एतेक दूर भऽ गेल छल आ ताहि पर हिनक परीक्षा ! मगध महिला बला 9 सँ चारिक समय किछु नहि रहल ! बस दस पन्द्रह मिनट लेल हम सभ एक दोसरा कें देखैत छलहुँ। बात सँ बेसी आँखि सँ गप करैत छलहुँ आ बस चलि दैत छलहुँ। नुका-नुका कें मिलनाय हमर सभक नियति बनि गेल छल।

मोन पड़ि जाइत अछि जखन एक बेर हम डुमरा मे छलहुँ। बड़ दिन भऽ गेल पापाक प्रार्थना पत्र बेर-बेर बिदागरी लेल अबैत छल किन्तु बाबू छलाह जे तकर बाद तँ हम मोन मे सोचि लेलहुँ जाधरि बाबूजी स्वयं जाय लेल नहि कहताह, हम नहि जायब ! हिनकर पत्र बाबूजीक नाम सँ अबैत छल। हमर बिदागरीक पैरवी मे! मुदा, हम बाबूजी कें ओ पत्र सभ नहि दैत छलहुँ ! हमर किशोर मन मे एहि बातक भान छल जे माँ पापा कें दुःख हेतैक ताहि सँ हमर किछु नहि बिगड़त किन्तु, बाबूजी माँ बिगड़ि जेताह तँ हमर जीवनक खुशी समाप्त भऽ जायत - हमर एहेन जीव जे हम ओहि स्थिति मे जीवि नहि सकब ! हमरा अपन कर्तव्यक भान छल । हम घरक काज मे, सभक सेवा मे अपना कें उत्सर्ग कऽ देने छलहुँ। गाम मे सभ हमरा सँ खुश छलाह ! छोट सनक जय बाबूक गीत सुनैत रहैत छलहुँ - दिल के झरोखे मे तुमको... मत हो मेरी जाँ उदास' - आ हम खिलखिला हँसि दैत छलहुँ - हम कहाँ छी

उदास आ जय लजा जाइत छलाह। मुनहर दिस लारक टाल पर बेरिया मे सभ ननदि दीअरक संग तासक महफिल जमैत छल ! जय जिद्द कऽ दैत छलाह हमर पार्टनर भाभी रहतीह ! तखन ट्वेन्टी नाइनक खेल शुरू भऽ जाइत छल! अपन नैहर मे कहियो ताश नहि खेलने छलहुँ। हँ, ताशक महल बनयवा मे हमरा बड़ मजा अबैत छल ! महल खसय नहि एहि लेल बड़ एकाग्रताक आवश्यकता छल ! ओ एकाग्रताक कमी हमरा मे नहि छल ! हिनका सभक सिखाओल पर खेलैत छलहुँ आ एकोटा चालि गलती भऽ जाइत छल हमर तँ हारि जाइत छलहुँ । हारि जयबाक बाद जे जय कें तामस उठैत छल हमरा पर.....

बच्ची हुनका दमसाबैत छलीह -, हेरे तों हारऽ लगैत छी तँ एना चीकरऽ किएक लगैत छी? एक आदमीकें तें हारनाइये छैक ने - दोसर दिन हम बच्चीक पार्टनर बनबा लेल चाहैत छलहुँ तँ फेर जयक जिद्द। नहि भाभी हमर पार्टनर रहतीह। इजोरिया राति मे बाबूजी हमरा सभकें नाह पर बाध-बोन घुमबाक व्यवस्था कऽ दैत छलाह। गामक लोक बेरहट खा कऽ साँझे सुति जाइत छलह। सुलेमना कें नाह खेबा लेल बजाओल जाइत छल। सभ दीअर ननदि राजू सूकू सभक संग कतेक राति धरि झिलेहर खेलैत छलहुँ - जयक गीत वातावरण कें संगीतमय बना दैत छल ! कखनो बच्ची नाह खेबऽ लगैत छलीह तँ कखनो छोटकू लग्गी लऽ लैत छलीह ! हमरा लगैत छल जेना कोनो स्वप्नलोक मे विचरि रहल छी। संयुक्त परिवारक अपन मजा होइत छैक। जिनगी हमर चलि रहल छल- संगीतमय, प्रेममय- कखनो उदास होइत छलहुँ तँ माँ बजैत छलीह- हम जनैत छी, अहाँ ललनी बिनु उदास छी मुदा हम की कऽ सकैत छी ! अहाँ अपने जिद्द लगा बैसलहुँ- ससुर पुतु मे जिद्द - 'सासु लिबिर लिबिर ननदि मरचाइ कतऽ गेलहुँ हे बर मिठाइ- हम कतऽ सँ मिठाइ देब ? माँ चिढ़बैत छलीह। हम लजा जाइत छलहुँ, बात तँ साँचे छल । एक दिन बान्ह दिस सँ कनबाक स्वर सुना पड़ल। माँ बजलीह- लगैत अछि विद्या आबि रहल अछि - काकी बजलीह - हँ यै संगी ओकरे अबाज थीक - समस्त आंगन कान पाथि देलक ई स्वर केम्हर सँ अबैत अछि - कोम्हर जाइत अछि। आस्ते आस्ते स्वर लग अबैत गेल - यै मामी सब यै मामी सब - विद्या हमर एकमात्र पिसिऔत ननदि छलीह आ जगतपुर सँ आबि रहल छलीह! एहि स्वर कें समीप अबैत अबैत यानी बैलगाड़ी कें नजदीक अबैत करीब घंटा भरि लागि गेलैक! तावत विद्या कनैत रहलीह - यै मामी सभ यै मामी सभ- गामक सीमान्त सँ सभ स्त्रीगण चुप करबैत हवेली धरि हुनका ओगरने पहुँचल।

ओहि समय ई रेवाज छल जे बेटी जखन नैहर अबैत अछि, तँ सीमाने पर

सँ चिकरि चिकरि कानऽ लगैत छलीह। कानबक स्वर सुनतहि सभ बुझऽ लगैत छल ककरो बेटी घर आबि रहल छथि ! ई सभ कहियो देखने नहि छलहुँ। हमरा बड़ विचित्र लगैत छल ! नैहर आबै मे बेटी कें खुश हेबाक चाही तँ कानऽ किएक लगैत छैक? हम तँ कहियो नहि कानब ! किन्तु, हम स्वयं अनुभूत कयले छलहुँ – दुरागमनक बाद जखन पटना गेलहुँ तँ महेन्द्रूघाट पर जहाज सँ उतरैत देरी कि हमर आँखि भरि आयल छल ! आ फेर पटना मार्केट, पटना कालेज सभ देखैत देखैत मोने नहि हृदयो भरि गेल छल । आ गोलकपुरक अपन गेट पर लहराइत नीमक विशाल गाछ जकर ठारि – पात हेवा मे भूमि भूमि हमर अभिनंदन करैत भेटल छल – नोर आँखिक सीमा तोड़ि अपने आप कपोलक धरा कें सिंचित करऽ लागल। माँ पापा सभकें देखतहि हम हिचकि हिचकि कानऽ लगलहुँ। हम सोचितो छलहुँ – हम कानि किएक रहल छी? हमरा तँ खुश होयबाक चाही। तखन बुझलहुँ जे लोक खुशी आ आह्लाद मे सेहो कनैत अछि एहिना संयुक्त परिवारक अपन मजा होइत छैक ! सभ एक दोसराक खुशी मे शामिल तँ एक दोसराक दुख आ चिन्ताक भागीदार ! हमर हिस्सा मे अलग सँ एकटा काज छल माछ–माँसु बनौनाय ! दस बारह किलो कवइ माँछ रोज रोज बड़का मोइन सँ अबैत छल। ओ हमरा बनबऽ पड़ैत छल। मुनहर दिस मछही चुल्ही छल जाहि सुनसान मे हमरा माछ बनबऽ पड़ैत छल ! दिन मे तँ ठीक छल किन्तु जखन राति मे माँछ अबैत छल हमर करेजा काँपि जाइत छल। आब अन्हार सुनसान मे असगर बैसि दस बारह किलो माछ तरैत रहू ! छोटकी कटोरी मे भरि कय तेल, थारी मे हरैद आ नोन दऽ देल जाइत छल – लियऽ रानी बहुरिया माँछ कऽर लगा लियऽ। ओहि ठाम माँछ तरल नहि जाइत छल वरन् कइर लगायल जाइत छल – घोघ तर बैसल रानीबहुरिया काँच पाकल जारनि सँ चूल्हा पजारि पजारि अकच्छ भऽ जाइत छलीह ! घोघ प्रथा कखनो काल बड़ नीक बुझाइत छल – घोघक तर चेहराक भाव केंओ नहि पढ़ि सकैत छल ! ओहि अन्हारो मे हमर माथ सँ आँचर कि घोघ नहि हँटैत छल नहि तँ भोर होइते अवधि बाजि दितैक– कनियाँक माथ उघार छल। डिबियाक मद्धिम इजोत मे नम्हर सन अपने परछाही देखि डरि जाइत छलहुँ। ताहि पर गाम मे भूत प्रेत डाइनि जोगिनक चर्च – देओर–ननदि सभकें साँझे सुतबाक हिस्सक छल! रमबतिया आ कि सदाइन माछ निकाबै लेल बड़ राति कें अबैत छल तकर बाद हमरा बजायल जाइत छल – हँ हम कखनो अवधी कें तँ कखनो गुलाब दाइ कें फुसलाय कें बैसा लैत छलहुँ – ओना माँछ देखि हमर मुँह सँ कखनो काल बहराय जाइत छल – बाप रे, एतेक माछ तँ हमरा सभ मे पार्टी मे मंगायल जाइत छैक।

कहियो ककाजी हमर बात सुनि लैथि तँ खूब हँसथि ! ओहिनो ककाजी हमरा सँ बड़ खुश रहैत छलाह ! सभ कें जाकऽ कहथिन कनिया बजैत छलीह जे हमरा ओइय पार्टी मे एतेक माछ बनैत अछि !

एहि सभक मध्य एक बर्ष बीति गेल ! हिनकर कानूनक प्रथम वर्षक परीक्षा खतम भऽ गेलनि ! अचानक घर मे हल्ला भऽ गेलैक से मधेपुरा सँ बाबूजी हमर विदागरी लेल आयल छथि । घर मे हलचल मचि गेल बड़का समधि अपने विदागरी लेल आएल छथि – हम माँ सँ स्पष्ट कहि देलहुँ जाधरि बाबूजी अपन मोन सँ नहि विदा करताह हम पटना नहि जायब।

माँ बजलीह – एहनो होइत छैक कनियाँ बड़का समधि अपने आयल छथि हुनका खाली हाथ कोना घुरायल जेतनि ?

किन्तु हमहूँ स्वाभिमानी छलहुँ – केओ आवथि माँ, जा बाबूजी नहि चाहथिन हम नहि जायब ! बाबूजी विदागरी लेल साड़ी कपड़ा सभ नौहट्टा सँ स्वयं अनने छलाह– सभ बात जानि हमरा सुनाय माँ सँ बजलाह – समधि आयल छथिन ! प्रतिष्ठाक प्रश्न थीक ! यदि हम नहि चाहितहुँ तँ कोना कपड़ा–लत्ता अपने सँ कीनि अनितहुँ ? बाबूजी नारियल फल जकाँ छलाह– उपरसँ कठोर, भीतरसँ वात्सल्यक गंगोत्री ? ओहि बीच हमर एकटा कविता आर्यावर्त्त मे छपल छल 'जिन्दगी से शिकायत करुँ तो नहीं, किस खुशीमे रहूँ कुछ कहो तो जरा......' एहि कविताक एक–एक पंक्तिक उत्तर बाबूजी हमरा कवितेमे पठौने छलाह– पटनामे सभ केंओ कविता पढ़लक। सभभावविह्वल भऽ गेल छल। एहि कविताकें फ्रेम लगा देवार पर हमर भाइ–बहीन सभ टाँगि देने छल–

जिन्दगी खुशी की है शिकायत नहीं कौन कहता नहीं तू करो या मरो
तू युगल है कमल जैसी कोमल मेरी न इसके अलावे है कोइ अभी
व्योम जैसी इच्छा जो तेरी रही चाँद को चूम लेना है दुष्कर नहीं
पथ जो बन चुका है न छोड़ो उसे पर मंजिल वही जो भावे जिसे
तम न फट सके कोई दीपक जले बिना 'सूर्य' रोशन के न ये चले
धैर्य का ही सहारा तू रखो सदा, अपनी सारी व्यथा से हो जुदा
काल के क्रूर आघात न कुछ कर सके स्वप्न की वह घड़ी आज आ ही गयी।
पाँव आगे रुके, जल्द ले आसरा, कोई चुपचान रह के न विलमे जरा
तट तेरी समझ में है दूर नहीं पर छोड़ा उसे तू, मैं डट के खड़ा
जान जाते हुए भी न आशा मिटे अपने पथ पर बहुत चल चुके

न तो तेरी दशा से दूर मेरी दशा दिन बीतने पर ही तो आती निसा
मैं कहता वही जो कही तुमने जब इतनी बीत गयी तो थोड़ी और भी
चान्द सा सारथी तो क्यों बावली बनी देख दशा ऐसी है जो रात रानी बनी
तेरे बढ़ते कदम से सभी खुश हैं कौन ऐसा अभागा जो पीछे रहे
बस अब न कभी क्षुब्ध अपनी बता फल लगने पर ही झुकती लता

–सूर्य नारायण लाल दास
डुमरा

मुदा हम ओहि कविता कें अपन माथ सँ लगा कतेक काल धरि कनैत रहलहुँ– बाबूजी डुमरामे आर्यावर्त्त मंगबैत छलाह– हमर कविता बाबूजीक हृदयक तार झंकृत कऽ देलक। हमर कविता सफल भऽ गेल। दुनियाक कोनो श्वसुर अपन तुतोहूकें कविताक उत्तर कवितामे दऽ ओकर मोनकें परितोषैत हेतैक, हम नहि जनैत छी। किन्तु, हम अपनाकें संसारक सभसँ भागबैंत प्राणी बुझैत छलहुँ– एहि सभ लेल हम अपन सभ खुशी मारि परिवारक मोनक खुशीमे लगा देने छलौं।

एहिना हमर दोसर कविताक उत्तर हमरा पटना पठौने रहथि–

एकटा भावात्मक संबंध कविता सँ कविताक अपूर्व छल–

मेरी पुत्री घर का चिराग ले मिटा हृदय का कार दाग। जिसके पिता– 'सूर्य' 'ब्रजेश्वर' 'प्रिये' 'ललन' जिसके जीवन धार, 'अन्नपूर्णा' गोदी मे पलकर 'कादम्बरी' करे शुभ प्यार वह क्यों सूखे दूब की नाइ प्यार सांर क्यों हो तिल तार....

फूल खिले न मुरझाए ले आयी तू अपराजिता......।
बन तेजस्विनी आज तू दे रहा आशीष सूर्य पिता–

–सूर्यनारायण दास

राग की विराग की

मिथिला मिहिरमे पढ़ैत छलहुँ जीवी तँ की की नहि देखी–

–सरिपों की सभ नहि देखऽ पड़ैत छैक मानवकें एहि जिनगी मे! सदिखन लगैत रहैत छैक आब की देखब, आर की देखब? आ देखलौं चौरासी मे मानवक भूल सँ कोसी तटबंध टूटल– सत्तासी ई० मे भगवानक भूल सँ सहरसा डुबि रहल छल? सहरसा शहर जकरा कतेक संज्ञा सँ अभिसिक्त कयल जाइत छल। सहरसा यानी रसक संग, सहर्षा–खुशीक संग आगू, सदिखन सभक स्वागत करबा लेल तत्पर। आय वएह सहरसा अपन प्रत्येक रसकें भंग कऽ करुण रस आ वीभत्स रस सँ भरि गेल। कारुण रस रसक राजा थीक मुदा, करुणा जखन भय आ वीभत्सक समरूप भऽ जाइत छैक तँ करुणाक स्वधर्म विलुप्त भऽ जायत छैक।' 84ई० मे बांध टूटल छल तँ सत्तासी मे आकासक बान्ह आ 84ई०क ध्यान आबऽ लगैत अछि–

चारि बजि रहल छल ! गेटक लग हम ठाढ़ छी – इत्रक फुहार सन बरसाक झड़ी हमर मोन कें सिमरक फूल जकाँ उड़ा–उड़ा रहल छल ! दूर पश्चिम सँ प्रो० डॉ० मनोरंजन जी एवं नवल जी ठेहुना भरि पानि मे छपर छपर करैत आबि रहल छलाह सांझ हेवा पर छल। विचित्र दृश्य! आकासक ई अल्हड़पने थीक ने ? जीवाक ढंग, काज करबाक ढंग आकास नहि जानलक तें तँ कहियो अतिवृष्टि, कहियो अनावृष्टि ! वर्मा जी कें यदि आकाश साकार भेटितैक तँ ओ निश्चित कहतनि– अहाँ कें 'कामन सेन्स' नहि अछि ! कखन की करबाक चाही तकर ढंग नहि!

मैथिली साहित्य परिषद् दिसि सँ कवि सम्मेलन अछि सहरसा कालेज मे– मनोरंजन जीक बात सुनि चौंकि उठैत छी । कवि साँचे पागल होइत अछि बिन मौसम बरसात जकाँ कखनहुँ बरसवा लेल तत्पर ! मुदा, बात मनोरंजन जीक अछि जे एकटा भायक सभ अधिकार स्वतः लऽ नेने छथि ! ...... राति जखन कवि सम्मेलन सँ घुरैत छी तँ श्याम बाबू, हमर भाय, सरकारी अधिवक्ता पानि मे भीजल तीतल पहुँचलाह– कतऽ सुतल छी तों सभ ? किछु सुनि रहल छी ? प्रचार भऽ रहल छैक कोशी बाँध टूटि गेलैक– सहरसावासी सुरक्षाक व्यवस्था कऽ लियऽ–जी धक्क सँ उठल– बाँध टूटि गेल– एखनहि, तँ एकतीस अगस्त कें 8 बजे दिन मे कटनिया लग हम सभ बैसल छलौं– समस्त सहरसा जिला कतेक बरीस पाछा चलि गेल छल। सगरो हल्ला

छल इंजीनियर आ ठेकेदारक झगड़ा मे बाँध टुटि गेल। चौयसी सँ सत्तासी ई० भरि सहरसा जिलाक दयनीय स्थितिक वर्णन नहि भऽ सकैछ। ओह एकटा कालापानीक सजा भोगयवाला कैदीक मनःस्थिति भऽ गेल छल- जे साओन भादो पर विद्यापति सँ लऽ कऽ आन कवि सभक लेखनी अबिराम चलैत रहल से एतेक भयंकर आ वीभत्स ? इएह युगक मान्यता थीक छने छन बदलैत रहैत अछि ! वर्माजीक लगाओल बेला आ गुलाब बाग मे एकटा श्मशानक उदासी पसरल- सभ मुरझायल, सभ मौलायल- वर्षाक पानि सँ ई तांडव भऽ सकैत छैक? ड्रेनेजक अभाव ? ड्रेनेज मे दुइ करोड़ रूपैया लागत - नहि नौ मन तेल होयत नहि राधा नाचत! थोड़बो थोड़बो कएकें प्रत्येक साल काज होइत रहितैक तँ आइ सहरसाक ई दुर्दशा नहि होयतैक ! स्मृति मे आबि जाइत अछि सहरसाक जिलाधीश कृष्णनक गप्प ! हम तखन नगर आयुक्त छलहुँ ! गपे गप मे वर्माजी पुछलनि- कलक्टर साहब- क्या यहाँ म्युनिसिपल कारपोरेशन नहीं हो सकता है ? ताहि पर ओहि मद्रासी जिलाधीशक मार्मिक मीमांसा सुनि स्तब्ध रहि गेल छलहुँ हम सभ - हर जगह दो ग्रुप होता है! एक ग्रुप कहता है मैं इसे जिला बना दूँगा, दूसरा ग्रुप कहता है मैं इसे कमिश्नरी बना दुँगा । स्वभावतः उस स्थान का विकास हो जाता है ! पर आपके यहाँ, वर्माजी सहरसामे यदि एक ग्रुप कहता है मैं इसे जिला बना दूँगा तो दूसरा ग्रुप कहता है बनाओ तो कैसे बनाते हो ?

....की सभ सोचैत रहैत छी रन्नो? हम अहाँ के हँसैत मुस्काइत देखऽ चाहैत छी मुदा अहाँ छी कि महमूद जकाँ-'ख्यालों में ख्यालों मे....................................

हमर अधर पर हँसी नाचि गेल– अहाँक मोक्किल सभ चलि गेल की- मोक्किल जायत?........हा-हा-हा। भरि दिन खटाओत, अपन काज करायत- हम तँ अहाँकें देखवा लेल बीच बीच मे चलि अबैत छी–

हम बुझैत छलौं जे ई फुसि बाजि रहल छथि- साँचो भऽ सकैत छल। ओ बाथरूम जाइत छथि, फेर भनसा घर मे डिब्बा-डिब्बी खोजैत छथि, फेर फ्रिज खोलि देखैत छथि, कत्तौ किछु भेटि जाय फाँकबा लेल !

सभटा खत्म भऽ गेल की ? किछु नइं अछि मिक्सचरो नहि अछि– मोन मे होइत अछि बाजि दी- अहाँ भरि दिन फाँकैत रहैत छी तँ बाँचत कतऽ स? मुदा, वेद वाक्य जकाँ रोज रोज एके वाक्य कें दोहराबै सँ कोन फायदा? कहियो रूष्ट भऽ जाइत छलाह। कहियो लजा कें हँसैत ओहिठाम सँ चलि जाइत छलाह। मौसमक मिजाज लोग जानि सकैत छल किन्तु वर्माजीक हृदयक थाह नहि।

की सोचि रहल छी- हिनक प्रश्न। 'किछु नइं!' टीवी पर गीत दैत छल- 'तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है......लिखू रन्नो लिखू- सभटा बात लिखि दिऔक-

की लिखि हम ?- एकटा भरल पूरल जमींदार परिवारक पुतहु अपन पतिक आदर्श आ सिद्धान्तक रक्षा करवा लेल- अपना आपकें, अपन बच्चा सभकें उत्सर्ग कऽ देलक? की लिखि ब्रिटिश कालक एकटा अफसरक दुलारि बेटी पतिक सिद्धान्तक रक्षा करबा मे अपनहि सँ विराग भेटल? की एहि सभकें लिखि दी? की एकरा कागजक पन्ना पर पुनर्जीवित कऽ दी? भोगल व्यथा कें, बीतल जिनगीक घाह कें खंइठी छोड़ा भावी पीढ़ी कें सुपुर्द कऽ दी?- हम रूसि रहल छलौं।

हमर माथ पर स्नेहिल हाथ रखैत ई बजलाह- सभ लिखि दिऔक रन्नो, सभ। अहाँक जिनगी एकटा एहेन खुलल पोथी रहल जकरा पढ़यवला आँखि नहि भेटल, बुझय वला बुद्धि नहि। उतारि दिऔक कागजक पन्ना पर। समय आओत, पढ़यवला, बुझयवला अपन पात्रताक अनुरूप एकरा बुझत, जानत– आइ सोचैत छी-की पंचानन, शरदिन्दु सभक उदय अचक्के हमरा जीवनमे एहि लेल भऽ गेल जे समय आओत, पढ़यवला बुझयवला.....।

ऋषि मुनिक केश-राशि जकाँ जिनगी कहियो-कहियो ओझरा जाइत अछि। कहियो अपनहि हाथ सँ अपना कें जंजीर मे बान्हि लेनाइ नीक लगैत छल-आइ कारक अगिला सीट मे बान्हि देल जाइत अछि तँ अकच्छ लगैत अछि। कारो मे बैसबाक नियम होइत अछि-कतेक नियम मानव बना देने अछि तैयो कीड़ा-मकोड़ा जकाँ आदमी रोज मरि रहल अछि। जतेक नियम बनैत अछि ओतवे टूटितो अछि। हम कहियो नियमक उल्लंघन नहि केने छी- लाल बत्तीक आगू कल जोड़ने ठाढ़ रहैत छी आब तँ हरिहर बत्ती देखा दियऽ- आ जहिना हरिहर बत्ती भुक्क दऽ बरि उठैत अछि हमर भावनाक आंधी ओतवे वेग सँ भगैत अछि किन्तु, मंजिल धरि पहुँचैत पहुँचैत लालबत्ती भक्क दऽ बरि जाइत अछि। सागरक कात ठाढ़ भऽ लहर कें छुबि नहि सकैत छी– सुनामीक आशंका भयंकरता-जाहिठाम मरण-पर्व नहि वरन् जीविते मृत्युक महक पसरैत रहैत अछि- किन्तु, मृत्युक महक जखन हमर डुमरा परिवार मे पसरल तँ बिखरि गेल खड़िका-खड़िका जकाँ संयुक्त परिवार–

तीन ठाम भानस भऽ गेल बाबूजीक ओसारा पर एक दिस बाबूजीक चूल्हि पर भानस हम आ बच्ची कऽ रहल छलहुँ, दोसर दिस बड़का बाबूजीक चूल्हि पर नबकी काकी, काकी छलीह। काकाजीक चूल्हि हुनक अपन घरक ओसारा पर छल।

हम आ बच्ची तरुआ सोहाड़ी बनबैत छलहुँ बीच बीच मे नबकी काकी कें मदद सेहो करैत छलहुँ- तावत बड़का बाबूजी अपन कोठरी सँ निकलि चिलम भरि हमरा सुनाकें बजलाह-काल्हि हमरा सहरसा जेबाक अछि लालाजी लग।

आ दलान पर चलि गेलाह। हुनका गेना मुश्किल सँ दस पन्द्रह मिनट भेल

हेतैक कि दलान पर बड़ जोर सँ अनघोल मचि गेलैक-हमरा सभकेँ भेल डकैत तँ नहि आबि गेल-तावत लुखिया गोरपारा बला छाती पीटइत पहुँचल बापरे बाप डकैती भऽ गेल-अन्हेर भऽ गेल- बड़का मालिक दलान पर खसि पड़लैथ-

एक आदमीक गेला सँ दुइ दुइ स्त्रीकेँ एके संग चूड़ी फोड़ैत देखलौं-कोना स्त्री केँ बान्हि देल जाइत अछि पुरुषक जीवन संग। एकटा लता जकाँ गाछ सँ लटपटाइत रहैत अछि स्त्री-कत्तौ चाहल कत्तौ अनचाहल...दुनू स्थितिक फल एके होइत छैक। नबकी काकी-काकी दूनू हाक्रोश कऽ रहल छलीह।।

अपन जिनगी मे पहिलुक बेर मृत्यु देखने छलहुँ-राति भरि हुनकर पएर लग बैसल नाड़ी ससारैत रहलहुँ एहि फुसि आस मे कहीं बड़का बाबूजी उठि केँ बैसि जाथि।- किन्तु, देह हाथ पएर चेरा भऽ गेल ....माथ एतेक भारी जे हिलि नहि सकैत छल। सहरसा हिनका समाद पठाओल गेल छल।

एखने तँ बड़का बाबूजी किछु अवस्थ भऽ कऽ गेल छलाह सहरसा। हम सभ हुनकर सेवा करबा मे कोनो कसर नहि छोड़लहुँ । डाक्टर, वैद्य, दवाइ सभटा बन्दोबस्त केने छलहुँ-बड़का बाबूजी काकी सँ कहैत छलाह-देखू लालाजी भागीरथ बेटा छी खानदान मे नाम कमाओत सभक उद्धार करत.....।

भोर मे करीब 9-10 बजे ई पहुँचल छलाह। जखन पोखरि लग आराम सँ पहुँचलाह कि केओ गामक लोग बाजि देलकैक-सुनतहि ओ पोखरि पर हाक्रोश करऽ लगलाह। दुइ गोटे हुनको टाँगि केँ अनलक। विचित्र अनुभूति। सभ केओ अपन अपन पावनि तिहारक पुण्य बड़का बाबूजी केँ दऽ रहल छलाह। हमहूँ सभटा रवि, सभटा एकादशी बड़का बाबूजी केँ समर्पित कऽ देलहुँ।

मृत्युक संग ई हमर पहिलुक अनुभव छल जकरा हम हृदयक अन्तर सँ अनुभूत केने छलहुँ-घरक एकमात्र पुतहु-सभटा काज सम्पन्न करैत रहलहुँ हमहु एकादशा धरि नोन नहि खेलहुँ- हुनक ज्येष्ठ बालक अशोक तखन दस बारह बरीसक हेताह तेँ कर्त्ताक सभटा काज हमही करैत रही-चौगामा भोज भेल छल। प्राय: तेरह-चौदह गाम नोतल जाइत अछि-हमरा मोन अछि एतेक बड़का भोजकेँ श्राद्ध लेल बड़ी हम आ बच्ची मिलि केँ छानने छलहुँ- एक चूल्हि पर बच्ची, दोसर चूल्हि पर घोघ तानने हम-तखन जुनून छल-हमर घर छी-की नहि हम कऽ सकैत छी- मोन पड़ैत अछि बड़का बाबूजीक प्राण जहिना खत्म भेल छल बच्ची पएर सँ मारि-मारि अलग भेल चूल्हि केँ तोड़ि देने छलीह, आवेश आ दुख सँ थरथर कँपइत बच्ची।

किन्तु, आ फेर काकाजी गेलाह। ओहि दिन गाम मे केओ मर्द नहि छल। तामस सँ खबसि नीपर चीकड़ैत छलाह आ खसि पड़लाह- बस समाप्त। तीनू भाइक

अन्तिम कड़ी बाबूजी छलाह। अन्त काल अबैत बाबूजी केँ की भऽ गेलैक जे खाली ललनी ललनी बजैत छलाह। तावत बाबूजी हिनका सँ बे हमरा सँ गप करऽ लायल छलाह। आइयो गामक ओ साँझ आँखि मे नाचि जाइत अछि- एतेक पैघ दलान मे साँझुक अन्हार मे बाबूजी, कुरसी पर असगर बैसल छलाह। अंगना मे क्रिकेट मैचक कामेन्ट्री रेडियो पर भऽ रहल छल। परिवारक प्रत्येक सदस्य, गौंआ सभ अंगना मे भरल-कमेन्ट्री सुनैत। घीना बला आबि कहलक हमरा-मालिक अहाँ केँ आ राजू मालिक केँ दलान पर बजा रहल छथीन। हम दुनू माइ बेटा दलान पर गेलहुँ। हम घोघ तानि बाबूजीक पाछा ठाढ़ भऽ गेलहुँ, राजू बाबूजीक एक दिस, दोसरा दिस माँ सेहो आबि गेल छलीह।

अहाँ सभ देखू, आंगन मे क्रिकेट मैच चलि रहल अछि। नौकर-चाकर घर परिवार सभ रेडियो केँ घेरने अछि। एखन यदि हमरा डकैत मारियो देत तँ ककरो पता नहि चलत। राजू, हमरा अनिलक चिन्ता अछि। ओकरा तों कोनो तरहें लायक बना देबही तँ- हम सभ चुपचाप सुनैत छलहुँ । बाबूजी बजैत रहलाह-कनियां, ई जमीनक रक्षा आब अहीं कऽ सकैत छी। ललनजी केँ वकालत सँ छुट्टिये नहि भेटैत छैक। हम एखन किछु कागज सभ जमीनक दऽ दैत छी। किछु कागज सभ हम रवि दिन अपना संगे सहरसा नेने आयब। तकर बाद कतेक देर धरि बाबूजी सभ ठामक जमीनक गप, खेतीक गप करैत रहलाह, राजू सँ सभ बात कहि रहल छलाह।। हम पाछाँ सँ हूँऽ हूँऽ करैत छलहुँ। बाबूजीक वेदना पीड़ित स्वर आइयो हमर कान मे गुँजि रहल अछि।

सभ भाइ बहीन दिल्ली पटना सँ आयल छल। गर्मीक छुट्टीमे राति भरि हिनका नींद नहि भेल छल। राति भरि कछमछ कछमछ करैत रहलाह। चारि बजे भिनसरे हिनका नींद आयल। अचानक केओ दरवाजा खट खट केलक। एतेक हल्लुक खट खट सँ हम भयभीत भऽ गेलहुँ। आस्ते सँ दरवाजा खोललहुँ तँ गामक कालेश्वर ठाढ़ छल। उदास चेहरा सँ एकटा चिट्ठी हमरा देलक। हम ई चिट्ठी पढ़ि रहल छलहुँ कि पंचवटी चौक सँ गीतक स्वर आयल-तुम बिन जीयत बहुत दिन बीते आ फेर तुरते लाउडस्पीकर सँ अबाज आयल-हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ-आ हमरा लागल जेना दशरथ रामक वियोग मे दम तोड़ि रहल होथि। बाबूजीकेँ कहीं किछु भऽ तँ... चिट्ठी मे लिखल छल-बाबूजीक हालत बड़ खराब अछि। अहाँ सपरिवार गाम चलि आउ। एस.पी. साहबक गाड़ी सँ गाम पहुँचलहुँ। सूर्य अस्त भऽ चुकल छल। जाहि सूर्य नारायण लालदास सँ बसातो धरि पुछि केँ बहैत छल ओ सूर्य असहाय, निढाल, रौद मे, आंगन मे तुलसी चौरा लग पड़ल छलाह। जखन सौंसें देश

मे सूर्योदय होयबला छल तखन हमर घरक सूर्य अस्त भऽ गेल। बाबूजी एना अचानक गेलाह कि ओ स्वयं नहि बुझि सकलाह जे हम जा रहल छी।

एकटा शून्यता हमर सभक जिनगी मे उतरि गेल। इएह गाम घर छी जाहिठाम एकादशी उद्यापन, तुलसी उद्यापन, मोहनजीक वियाह, अष्टजामक कीर्त्तन कतेको उत्सव भेल छल। मई 79 कें हम दूनू गोटे गुरु मंत्र नेने छलहुँ। हम गाम अबइत छलहुँ बाबूजी भारमुक्त भऽ जाइत छलाह। बाबूजीक टका-पैसा कपड़ा-लत्ता.... हिनकर गरदनि मे उत्तरी छल, चुपचाप रहैत छलाह। एक बून्न आँखि मे नोर नहि, खाली एतबे बजैत छलाह-कहियो बाबूजी सँ दृष्टि उठाय हम गप नहि केलौं आइ वएह बाबूजी कें, एहि हाथ सँ-आँखि अड़हुल सन रक्तिम भऽ जाइत छल। चारू भाइक साझा हिस्सा सँ बाबूजीक श्राद्ध कर्म सम्पन्न भेल छल–

एक मास बाद सहरसा अयलौं। आ जखन सहरसा बासा पर पहुँचलहुँ बाबूजीक फोटो आगूमे टांगल छल-अचानक ई चिकरि चिकरि कानऽ लगवाह। हिनकर कनबाक स्वर सँ अड़ोसी-पड़ोसी सभ बुझि गेलं जे वकील साहब आबि गेलाह।

ओहि दिन ई बिना खेने पीने घंटो कनइत रहलाह। फेर तँ कतेक दिन धरि लोक अबैत रहल- जाइत रहल।

एक दिन रामानाथ झा वकील साहब एलाह अहाँ की व्यवस्था केलहुँ गाममे कोना सभसँ पैघ अहीं छी। ई बजलाह-मोहन जी सभटा समहारिं लेत।

ओ बुजुर्ग व्यक्ति बड़ धीर गंभीर स्वर मे बजलाह-अहाँ एखने अपन जमीनक व्यवस्था चारि ठाम कऽ दिऔक नहि तँ पाछा दिक्कत भऽ जायत।

नहि सर, एना नहि होयत। हमर भाइ सभ बेटा जकाँ अछि हमरा लेल।- हिनकर विश्वास मजगूत छल।–देखू, अहाँ एहि भ्रम मे नहि रहू। हम दुनिया देखने छी। चारि ठाम करबा देवैक भनहि अहाँक हिस्साक वएह सभ देखरेख करताह-रखताह। जलकरक हिसाब किताब मे अहाँ सँ कहताह- एहि बेर अहाँक हिस्सा हम राखि लैत छी किछु दिक्कत अछि।- तखन गाम सँ अहाँक अस्तित्व कहियो नहि खतम होयत। साँच तँ ई छल जे परिवारिक दृष्टि सँ हम दूनू गोटे व्यवहार कुशल नहि छलहुँ। घोर अतिवाद कारणो हम सभ एतेक मानसिक कष्ट उठेने छलहुँ विश्वासक।

जखन ककरो व्यवहार सँ ई दुखित होइत छलाह तँ हम एतबे बजैत छलौं जे सभ तँ अहाँ सँ छोटे छथि ? परिवार मे मान की अपमान की ? मान अपमान तँ समाज सँ होइत अछि, अड़ोस-पड़ोस सँ होइत अछि– मुदा, जोड़बाक क्रम मे हम स्वयं टूटल जा रहल छलौं। बाल्यकाल मे नेना खेलैत अछि, खसैत अछि बालु झाड़ि

ठाढ़ भऽ जायत अछि, ई हुनक खेल थीक। युवावस्था मे केओ धक्का मारि खसा दैत अछि तँ हँसीक वस्तु भऽ जाइत छैक किन्तु, वएह बात एक आयुक बाद चोट पहुँचाबऽ बला बात भऽ जाइत अछि। घातक नहि अघात तँ पहुँचाइए दैत छैक।

अपन हिस्साक चर्च कहियो वर्मा जी नहि केने छलाह– कहियो हुनका सभ सँ हिसाब नइ मंगलनि– बस घी कतऽ खसल तँ दालि मे। सभ तँ एक्के माँक पेट सँ आयल छलाह। नबो भाइक पढ़ाई लिखाई चलैत छल– नीक जकाँ चलैत छल– ओना हिनकर बड़ इच्छा छल जे सभटा सम्पत्ति कें एकटा ट्रस्ट जकाँ बना दी- तकरा सुचारू रूप सँ चलेबाक भार मोहनजी पर दऽ दी। एकरा लेल हुनका मासिक दरमाहा भेटत आ संगे अपन हिस्साक सभटा भेटबे करत। हिनकर मोन मे छल जे धान गहूमक खेती परंपरा सँ आबि रहल अछि- किछ 'मनी क्राप्स' यानी जाहि सँ पाइ होयत से खेती करब! पन्द्रह सय एकड़ जमीन मामूली गप नहि छल ताहिमे नब्बे एकड़ खाली पनिऔत, माछ मखानक खेती-बकुनिया, परताहा सँ लऽ कऽ छत्तीस-सैंतीस गाममे कामत छल हिनकर सभक।

चाहैत छलाह हरदि, बाँस, लाल मरचाई एहि सभक खेती दिस ध्यान दीं। फेर मखानाक एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट लेल दिल्ली मे राजीव गप केलक- सभ करैक बाद किनको सहयोग नहि भेटल हिनका! दिसम्बरक भयंकर हृदयघात हिनकर दोसर एटैक छल–

तखन पटना आबि जाय पड़लैक। राजनीति आ बिजनेस, वकालतक उपरान्त ई दू टा हुनक प्रिय क्षेत्र छल। हरदम कहैत रहथि एकटा केओ समर्पित व्यक्ति हमरा भेटि जाय तँ हम लीख कें लाख बनाय लेब! एक सँ एक योजना छल हुनका संग जकरा सभ "घूर लगक गप" कहि हँसी मे उड़ा दैत छल!

किन्तु, जखन मोन पड़ैत अछि तँ सभ बात मोन पड़ि जाइत अछि हमर छाती मे दर्द होमऽ लगैत अछि तँ हिनका कोना नहि छाती मे आस्ते आस्ते घाह भेल हेतैक....

बदलैत ऋतु सभ जकाँ सभटा घटना किस्त-किस्त मे एक दोसरा कें ठेलैत आगू एबाक प्रयास करऽ लगैत अछि....एक बेर गुंजेश्वर साह मोहन जी सँ कहने छल– देखू मोहन जी, अहाँ दुइ बात केर जिनगी मे महत्व देब तँ देखब अहाँ कतेक ऊँचाइ पर रहब- एकटा तँ अपन माँ दोसर अहाँक ई भाभी छथि। माँ तँ माँ होइत अछि किन्तु, ककरो भौजाइयो एतेक प्रशंसा अपन दीयर सभकें कऽ सकैत छैक हम पहिलुक बेर हिनके सँ जानलौं- अहाँक परोक्षो मे एतेक प्रशंसा करैत छथि।

मोन पड़ैत अछि एक बेर मोहनजी रमणजीकें गाममे जौन्डिस भऽ गेल

छलैक। गंभीर अवस्था छल। तखन 85ई० 29 जनवरीकें राजीव गाम सँ सहरसा आनलनि। ओहिनो रमणजी भागलपुर सँ विक्षिप्त जकाँ भागि गाम पहुँचल छलाह। बड़ जोर बीमार! कचहरी मे हिनका ज्ञात भेल? अपन कोट आ गाउन मोहरिर साहब सँ घर पठा ओ स्वयं ओम्हरे सं गाम चलि गेलनि। राता राती खटिया पर टांगि सहरसा अनने छ्लाह। रमणजीक स्थिति एहेन छल जे एक तँ खाली बेहोशी मे प्रलाप करैत छलाह दोसर मलमूत्र सभटा बिछाने पर ? लालकाकी हुनकर स्थिति सँ हरदम कनिते रहैत छलीह- लग बैसनाइ तँ दूर घरो नहि घुसैत छलीह- दस-पन्द्रह दिन धरि रमणजी बेहोश रहललाह- सहरसाक डाक्टर श्याम सुन्दर यादव, रहमान सभ आबि देखैत छलाह- हुनक मलमूत्र सभटा हम साफ करैत छलौं। जखन ठीक भेलाह तँ डा० यादव रहमान हमरा दिसि संकेत करैत बजललाह- एहि लेडीकें देखैत छी- एहेन लेडी केओ हमर सभक परिवार मे नहि अछि। इ अहाँक भौजी थीकीह अहाँ हिनका माँ सँ बढ़िकें बुझब। आइ खाली हिनके सेवा सँ अहाँ बचलौं।

हमर आँखि सँ झरझर नोर-ई तँ हमर कर्त्तव्य छल? एहिना रमणजीक पैरक आपरेशन पीएमसीएच मे भेल छल तखन हमर वियाहे भेल छल किन्तु भरि भरि राति काकी संग अस्पतालमे बीतबैत छलहुँ।

एकबेर मोहनजीकें छाती मे दरद उठल। तुरत सहरसा अस्पतालमे भरती केलौं। राति भरि हुनकर पएर लग हम बैसल रहलौं आ ई बरंडा पर कुत्ता सभक संग सूतल- हिनका अपना परिवार लेल, भाई बहीनी लेल एकटा जुनून छल- की करी की नहि करी- किन्तु....।

हम सभ पटना सँ प्रत्येक गर्मी छुट्टीमे सहरसा गाम जाइत छलौं। राजीव दिल्ली सँ सपरिवार अबैत छल फेर संगे सहरसा जाइत छल? ओहि पर 98 ई०क गप थीक? संजीव शबनम सेहो छल। गामक राजनीति दुइ पाट मे बँटि गेल छल- छोट-छोट गुट बनि वातावरणे बदलि देने छल। लक्ष्मण जेल मे छल आ किछ जायबलामे छल? सभ भाइ आयल छलाह- ई पन्द्रह बीस-दिन रूकि सभकें बेल रौलनि- किन्तु एहि सभ क्रममे हिनका ज्ञात भेल जे जमीनक बंटवारा सभ अपना अपना मोने कऽ नेने छथि आ चारि ठामक बदला तीने ठाम हिस्सा लगा देने छैक। तखन जे हिनका आघात लागल बाद मे घातक बनि गेल, हृदयक रक्तवाहिनी नली सभ मे मेघ भरि जाम कऽ देलक- फेर घुरिकें सहरसा नहि गेलाह-

आ फेर ओहि अथाह सम्पत्ति सँ बाबूजीक श्राद्धक संग संग सभ भाइक वियाह दान पढ़ाइ लिखाइ सभ होइत रहल- ई खुश रहैत छलाह हमर हिस्सा परिवार मे काज तँ आबि रहल अछि- बाबूजी कहने छलाह- सहरसा मे वकालत करबा लेल-घरक ज्येष्ठ बेटा अहाँ छी- अहाँ नहि देखब तँ के देखत ई सम्पत्ति कें? हँ,

ई देखैत रहलाह- भोगलाह नहि। जनक कें लोक नहि देखने छैक किन्तु ई सरिपों जनक छलाह, देह अछैत विदेह- एतबे बजैत छलाह-हमर हिस्सा माँ लेत- हँ, हिनक प्रतिष्ठाक कारण परोपट्टा मे केओ ओहि जमीन सभ दिस आँखि उठा नहि तकलक- हिनक अन्तिम बरखी, पाँचम बरखी छल। राजीव बड़ पहिने सँ कहैत छल पापाक कोनो बरखी गाम सँ नहि भेल अछि, अन्तिम गाम सँ करब। फेर प्रकाशजी, कौशलेन्द्र जी सभ गाम सँ करबा लेल उत्सुक छलनि। किन्तु, अपन हाथ मे मनुष्य कें किछु नहि रहैत छैक- बाद मे तरुणा गर्भवती भऽ गेलीह- कत्तौ जेबा सँ असमर्थ- फेर राजीव दिल्ली-पटना सोचिते रहि गेल कि अचानक माँ स्वर्गवासी भऽ गेलीह। हम सहरसाक रास्ते मे छलहुँ- तखने खबरि आयल- हम आ संजीव ट्रेन सँ उतरैते-गाम चलि गेलहुँ टैक्सी सँ। माँक अन्तिम यात्रा कें प्रणाम केलहुँ- अन्तिम आधार चलि गेलीह। अनिल जी, सुनील जी कहऽ लगलनि- भाभी, आब अहीं पैघ भऽ गेलीऐक- आ हमरा सौंसे आंगन खाली खाली लगैत छल- एखने तँ माँ सँ भेंट कऽ कें गेल छलहुँ। विडियो केमरा सँ माँक सभटा भाषण रेकार्ड केने छलहुँ- माँ हिनकर नेनाक खिस्सा सँ, पहिल बेर जे पटना सायंस कालेज मे गीत मे प्रथम पुरस्कारक कप लऽ माँ लग गाम आयल छलाह- सभटा सुनाबऽ लगलीह। माँ कोन गीत पर हिनका प्राइज भेटल छल- माँ अपन बेटाक स्मरण कऽ झुर्रायल चेहरा, भर्रायल स्वर सँ गीत गाबय लगलीह-तेरे द्वारे खड़ा भगवान भगत वर दे रे जोगी।

हाथ मे विडीयो केमरा थरथराय लागल आँखि मे नोर छलछला गेल। माँक क्रिया कर्म जहिया छल तकर चारि दिन बादे हिनकर अन्तिम बरखी पड़ैत छल- यानी माय अपन बेटा कें अपना लग खींचि गाम लऽ अनलीह। हिनकर काज गामे सँ भेल।

बड़ धूमधाम सँ माँक चौगामा भोज भेल जे परंपरा छल घरक- फेर बाबूजीक श्राद्ध जकाँ पुनरावृत्ति- चारो भाइक साझा सम्पत्ति सँ श्राद्ध संपीडन सभ भेल। माँक तीनू बेटी मीना, छोटकू संगे अंबुज बाल बच्चाक संग आयल छलीह- नैहर मे भाइ सँ भतीजा धरि आस रहैत छैक बेटी सभ कें। किन्तु, हिनकर बरखी सँ पहिनहि सभ वापस चलि गेलीह- सभकें अपन अपन विवशता छल।

आ फेर हिनकर बरखी चारि दिन बाद। राजीव-संजीव एक पाइ, एकटा अन्नक दाना तक पापाक हिस्सा सँ नहि लेलनि। हम कतेक समझेलौं-बेटा एहि जगह जमीनमे पापाक हिस्सा छैक पापाक सम्पत्ति किछु तँ हिनकर काज मे लगाउ। किन्तु एकेठाम राजीव बाजल पापाक असल सम्पति हम सभ बाल बच्चा छी। हम सभ पापाक बरखी करब। पापा हमरा सभकें सक्षम बना गेलनि। पापा कहियो अपन पुरखाक सम्पत्ति लेल हमरा सभकें भरोस नहि देलनि। सभ दिन हुनक मेहनत, लगनक बखान कऽ हमरा सभकें उत्साहित करैत छलाह। आ फेर की टेन्ट, की हलवाइ, की

तरकारी की आटा, घी तेल सभ किछ दुनू बेटा कीनि कीनि पापाक बरखी बड़ मनोयोग सँ कयलक। पानि तँ एहेन पड़ैत छल जे लगैत छल आन दिन इन्द्र भगवान कें समय भेटत बरसवाक कि नहि- ओहि मे बरदी घर मे दुनू बेटा, जया लगातार कर्म मे बैसल-हमर भीतर बड़ साहस भरि गेल। हम हिनका अन्तरिक्ष मे नमन केलौं। सरिपों अहाँ सम्पत्ति अरजि नेने छी-सभ बाल बच्चा अहाँक लेल बेहाल। तरुणा फोन केलक मम्मी पापाक अन्तिम बरखी छी- आब देखब अहाँ पापा हमरा लग जनम लेताह- बच्चा सभ कें ई सम्पत्ति नहि प्रेम आ त्यागक असीम भंडार बना देने छलाह आ तहिना जया, अरुषि, अदिति संस्कृति गामक संस्कार मे रमल उछलि उछलि काज करैत छलीह।

स्मृति मे आबि जाइत अछि '78 इ. क चुनाव। साइत 10 जुन कें मुखियाक चुनाव छल। पहिल वोट बाबूजीकें हमही देने छलहुँ-हाथ भरि सँ उपर घोघ तनने हम बूथ पर गेल छलहुँ- ओहि समय गामक समाज? सौंसे गाम की, अपन की आन, की डुमरा की परूहर-दर-दिआद सभ एक मत भऽ एहि चुनाव कार्य मे लागल छला। बड़का सँ बड़का विरोधी धरि बाबूजी लेल अपन जान प्राण लगा देने छलाह। काकाजी, हीरेन्द्रजी, रमण जी, अशोक जी- मोहन बाबू आ हुनक दोस्त चीनी बाबू सभ केओ बेहाल छलाह। हम यंत्र बनि कें रहि गेल छलहुँ। चारि दिन सँ एक सय सँ उपर कार्यकर्त्ता सभक खेनायक व्यवस्था, चाह पानिक व्यवस्था- सभटा हमरे माथ पर छल- आ जखन बाबूजी चुनाव जीति गेलाह अंगना दलान अबीर गुलाल सँ नहा गेल। लोक मदमस्त भऽ जेठ मे फागुन मना रहल छल। की वसुधेव कुटुम्बकमक परिकल्पना एहि सँ बाहर हेतैक-'

रामायण कालसँ महाभारत काल आँखिमे नाच जाइत अछि-किन्तु अपवादोक कमी नहि छैक। डॉ० राजीव रंजन आ रतन जी सरिपों राम लक्ष्मणक जोड़ी जानि पड़ैत छल। अर्जुन चौधरी, वृषेश लाल आदिक परिवारक प्रेम आँखिमे नाचऽ लगैत अछि।

भाइ भैयारी भैंसक सींग जखने जनमल तखने भिन्न सुनैत छलहुँ तँ लगैत छल के एहि तरहक फकड़ा बनौने अछि आ कतेक स्थिति परिस्थितिमे ई सभ साकार देखैत रहलहुँ। किन्तु ओहि दिन जखन अमृतसर सँ देखऽ गेलहुँ पाकिस्तान आ हिन्दुस्तानक सीमा रेखा- बगहा बॉर्डर। अमृतसर सँ प्रायः 24 किलोमीटर दूर साइत लाहौर सँ सँ से हो ओतवे दूर। विचित्र रोमांचकारी आ आहलादकारी दृश्य छल।

सांझुक पाँच बजैत छल। दुइटा फाटक बनल-हमर आगू भारतक गेट छल जाहि पर अशोक स्तम्भ अंकित। पाछाँ भारतक तिरंगा लहराइत। लगभग चारि फीटक अन्तराल पर पाकिस्तानक फाटक चान तारा अंकित आ पाछाँ पाकिस्तानक झंडा फहरा

रहल छल। पाकिस्तान दिस सेहो ढेरो नवयुवक नवयुवती भरल छल। एकटा सेना अधिकारी सँ पुछैत छी-ओ लोक के छथि-जहिना अहाँ अमृतसर सँ आयल छै ओहिना ओ सभ लाहौर सँ आयले छथि-

हिन्दुस्तान पाकिस्तानक फाटकक एहि दिस पोस्टर टँगल स्टैट बैंक ऑफ इंडिया-ओहि दिस स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान। एकटा सिहरनसँ अंग काँपि रहल छल।

पन्द्रह सए कोस' सड़क-ए-आजम-पूर्वी बंगालक सोनार गाम सँ आरंभ भऽ कऽ आगरा, दिल्ली, अमृतसर, लाहौर होइत सिन्धु नदी पर समाप्त होमयवला शेरशाह सूरीक बनाओल ग्रैंड ट्रंक रोड कहियो भाइ-भाइक बटवारा जकाँ विभाजित भऽ जायत-की शेरशाह कहियो सोचने होयत? आधा सड़क भाइ पाकिस्तानक हिस्सामे, आधा भाइ हिन्दुस्तानक।

अपन जीवनक ई ऐतिहासिक घटना, ई अभूतपूर्व क्षण हमही नहि ओहिठाम ठाढ़ पचासो भारतीय आ पचासो मुसलमान आत्माक संग भोगलक। एकटा प्रेम-धार शेरशाह सूरी रोड पर एम्हर सँ ओम्हर, ओम्हर सँ एम्हर प्रवाहित भऽ रहल छल। एकरा पर के प्रतिबन्ध लगा सकैत छल। एकटा अपूर्व उत्साह आ बिछोहक दर्द आइ धरि ओहि मुसलमान भाय-बहीन सभकें हाथ पकड़ि अपना दिस घीचि लेबा लेल छटपटा रहल अछि।

एतेक प्रेम सौहार्द्र रहितो भाइ-भाइक बटवारा ओहि सड़कक सम्पत्तिक संग भऽ गेल छल-

स्मृतिक मेघ घिरि जाइत अछि, घनघोर कारी-कारी मेघ जखन हिनका पहिलुक एटैक भेल छल। 1988 ई० दिसम्बर मे। पटना सँ डुमरा धरि समस्त परिवार उमड़ि गेल छल ! भावना सभक ख्याल राखैत छलीह सुपर्णा आ तरूणाक संगे ! राजीव संजीव घर सँ बाहरक काज लेल सदिकाल दौड़ैत रहैत छलाह। गैसक चूल्हा हमरा नहि छल - कोयला आ कुन्नी पर भानस बनैत छल। ओहि समय सिलेंडर लेल गैस गोदाम पर बम फटइत छल ! हम बाजैत छलहुँ या तँ दुइ नम्बरक पाइ हो वा कि हीरो बेटा, तखनहि गैस लऽ सकैत छी ! हमरा सभकें दुनू मे सँ किछु नहि छल। किन्तु, ओहि संक्राति काल मे सिलेंडर वला अपने सँ गैस आ चूल्हा घर पर पहुँचाय देलक जकर मूल्य हम बाद मे देने रही !

हम सभ सहरसाक ऋणी छी - ओहि ठामक जनता केर, ओहिठामक वकील कें, ओहि कालक सभटा छोट-मोट पदाधिकारीगण केर जे हमर ओहि संघर्ष काल मे अपन सहयोग, शुभकामना आ प्रार्थना सँ, आदर आ सम्मान सँ वर्माजी कें नव-जीवन देलनि - की हम कहियो बिसरि सकैत छी ई सभ ?

3 फरवरी' 85 केँ पटना मे डाक्टर सभक सलाह सँ हिनका लऽ कऽ हम सभ पटना मद्रास ट्रेन सँ अपोलो हॉस्पिटल मद्रास लेल विदा भेल छलहुँ संग जेँकि चौआलिस घंटाक यात्रा छल हिनका संग एक डाक्टरक रहनाइ आवश्यक छल ! आ हमर डाक्टर भाइ मन्ना जी (डॉ॰ कृष्ण कुमार), पत्नी चाँद आ श्वेता रिक्का अपन अस्पताल सँ छुट्टी लऽ एकटा अनिश्चित भविष्यक यात्रा पर छल आशाक किरण संग । हमर ममतामयी माय कतबो जिद्द केला पर नहि स्कलीह आ ओ एहि दुर्गम यात्रा– ओकरा लेल दुर्गमे छल– पापाक संग चलि एलीह । गुड्डू-गुड्डी दुनू बेटा-बेटी संग मे छल । राजीव दिल्ली गेल छल । टाका पैसाक इंतजाम शरद अन्नू तँ सहरसा सँ पटना, मद्रास तक टाका पैसा अपन आदमीक संग सभ तरहक मदति कयलनि।

पटना मद्रासक यात्राक विचित्र अनुभव भऽ रहल छल ! रेलवे लाइनक दुनूकात वन विभाग द्वारा नीक-नीक वृक्ष लगाओल गेल छल। ओहनो स्थितिमे हिनकर राजनीतिक मोन मीमांसा करऽ लागल– देखू एहि नीक वृक्षक रक्षा करबा लेल चारू दिससँ बबूरक गाछ लगा देल गेल अछि किन्तु फल की भेल? नीक वृक्ष गायब भऽ गेल आ बबूर झमरि कें लहरा रहल अछि, इएह हाल आजुक राजनीति केर अछि। प्रेम आ युद्धमे कोनो चीज अनुचित नहि एकरे चरितार्थ करबा लेल नीक नीक राजनीतिज्ञ कोनो तरहे चुनाव जीतबा लेल अपन चारू कात असमाजिक तत्व आ अपराधीक भीड़ जमा कऽ लेलक, नतीजा नीक राजनीतिक नीक वृक्ष जकाँ बिला गेलाह। बबूर जकाँ फलि-फुलि रहल छथि असमाजिक तत्व। सरिपों बड़ विचित्र लगैत छल जे समाज मे अव्यवस्था पसारय बला आइ देश मे व्यवस्था कायम करबा लेल बड़का-बड़का ओहदा पर छथि। किछु लोक डर सँ वोट नहि दैत छथि। एकटा बात तँ प्रत्यक्ष अनुभूत केलौं जे हमर सभक ऋषि मुनि अर्द्धनारीश्वरक परिकल्पना कोना केने हेताह। उत्तर भारतक कोमल, धवल, उर्बरा माटि जेना नारीक रूप नेने होअय आ दक्षिण भारतक कठोर, कारी पाथरसँ भरल माटि पुरुषक प्रतीक छल। निश्चित रूपसँ प्राचीन मनीषी सभ समस्त देशकें एकटा तागमे गुंथि अर्द्धनारीश्वरक कल्पना केने हेताह आ समस्त देशकें भगवान मानने हेताह ।.... हमहु सभ अपोलो अस्पताल कें भगवान बुझि अपना कें सौंपि देने छलहुँ। डॉ. सत्यमूर्ति हिनका देखि रहल छलाह, संगे माँक चेक-अप सेहो भऽ रहल छल। सत्यमूर्ति हिनके जकाँ गंभीर, मितभाषी, शान्त बोली आ रामचंद्रनक ठहाका सँ माँक बीमारी आधा खत्म। माँक मुस्की एखनो मोन पड़ैत अछि। तँ कल्पने सँ दुख दर्द खत्म भऽ जाइत अछि पापाक आँखिक ममत्व खोजपूर्ण दृष्टि-रजनी कें कोनो चीजक दुख तँ नहि अछि– आ इएह भाव तँ दूनू गोटे के अस्वस्थ अवस्थो मे मद्रास खींचि अनलक। हम आ कृष्ण कुमार चुपचाप गप करैत

छलहुँ– हिनका डाक्टरो गंभीर भेटि गेल– किन्तु, ओ गंभीर नहि बड़ विचारवान आ विद्वान डॉक्टर छल। हिनकर एनजियोग्राफी केलक। 66 नं. बेड पर आइ सी यूमे ई रक्तहीन, पीतमुख शांत चुपचाप पड़ल छलाह। निर्वाक्, निर्वात् टकटकी लगौने हमरा भावहीन सन देखैत रहलाह-फेर हाथ पकड़ि अपन ठोर सँ, अपन माथ सँ लगा लेलनि। कतेक काल धरि दूनू गोटे चुप रहलहुँ। फेर एकदम कमजोर स्वर मे बजलाह-अहाँकें कोनो सुख नहि दऽ सकलौं, सोचैत रहलहुँ, खूब सुख देब, आब देब, आब किन्तु किछु नहि कऽ सकलौं।

हमर अहाँक साथ बनल रहय, एहिना हाथ मे हाथ देने रही एतबे टा सुख लेल हम दुनियाक सब दुख सहबा लेल तैयार छी। डॉ. सत्यमूर्ति सँ बाजलौं हिनका जल्दी ठीक कऽ दिऔक– हमर समस्त परिवार मानसिक रूप सँ बीमार भऽ गेल अछि। हँसि कें डॉक्टर बाजल *"मैं हूँ ना"*– हिनकर सौंसँ देह मे तरह तरहक मशीन लागल छल– ओहि समय एकटा भव्य व्यक्तित्व स्वामी डॉ. पीपी रेड्डी अपोलोक चेयरमेन आबि हिनका देखने छल। मुदा, मद्रासक संपूर्ण व्यवस्था श्री शोभाकान्त लाल दास केने छलाह नितान्त अपरिचित हमरा लेल रहितो अत्यन्त परिचित भऽ गेलाह हुनक पुत्र प्रदीप उलझन प्रदीप का माता सभ जे ना एकटा परिवार मे बन्हि गेल छलौं। एतवे नहि समस्ते बिहार लेल ओ बिहार भवन बनवा देलनि जाहि ठाम यू॰ पी॰ सँ बिहार तक समकेँ ठहान भेटैत छैक–

मद्रासक अपोलो अस्पताल मे जखन एकान्त भेटय हिनकर 'नर्वस' चेहरा देखि हम हँसैत हिनकर हाथ पकड़ि आस्ते सँ गुनगुनाबऽ लगैत छलहुँ– *'अभी तो ये पहली मंजिल है, तुम तो अभी सेँ घबड़ा गए– मेरा क्या होगा सोचो तो जरा'*– आ कालीजीक फोटो दिस हमर नजरि उठि गेल जे मद्रास अबैत काल शिप्रा हमरा देने छल– दीदी पीसाजी कें किछु नहि हेतैक। बस तू कालीजी कें सुमिरैत रह आ घुरैत काल कलकत्ता बाटे दक्षिणेश्वर काली माताक दर्शन करैत पटना सहरसा जइहे।

हम एक बेर अपन चेहरा छोट नहि करैत छी किन्तु भीतरे भीतर बड़ ग्लानि होइत छल जे हम हिनकर संग रहैत हिनक बीमारी कें नहि बुझि सकलौं। मोन मे ज्वार उठैत अछि– कोइ लौटा दे मेरे बीते हुए दिन-कि हिनका हम अस्वस्थ हेवाक अवसरे नहि दी–

देश सँ दूर—शूल आ फूल

आइ जे विचार अछि, भावना उठैत अछि ओ काल्हि नहि दोहरायल जायत। नदीक धार जकाँ लहरि पर लहरि उठैत छैक। एकटा लहरि उठि दोसर मे विलीन भऽ जाइत अछि। ओ लहरि पुनः नहि उठैत अछि– बीतल क्षण कें केओ बदलि नहि सकैत अछि। बाजल बातकें आपस नहि कऽ सकैत अछि। आइ जे भेल ओ काल्हि नहि होइत। एखन जे अछि क्षण मे खत्म भऽ जायत'। ओहिना नदीक व्यक्तित्व सेहो होइत अछि, ओ परिवर्तित नहि होइत अछि। गंगा गंगा, यमुना यमुना, जे अपन अछि अपने रहैत अछि। बाबूजीक शब्दे काठक बोखलइया काठे लगैत अछि। जे बीतल बात कें गिरह बान्हि राखैत अछि ओ ओहिना असगर ठाढ़ रहि जायत अछि। पल पल बदलैत जिनगीक मे केकरो फुरसत छैक जे सोची काल्हि की भेल छल? लीवरपुर, ब्राड ग्रीन अस्पतालक मे बायपास ऑपरेशन सँ पहिने ई प्रत्येक दिन गीता पढ़ैत छलाह। हमरा कहैत छलाह अहूँ गीता पढ़ू– मुदा, हम कहैत रही हमर मनःस्थिति एखन गीता पढ़बाक योग्य नहि अछि। हमर गीता, रामायण सभ तँ अहीं थीकहुँ– तखन ओ हमरा किछु बात बुझा नहि देलनि, लिखा देलनि एकर पालन अहाँ करैत रहब–

(1) कोनो तरहक वाद विवाद, बहस मे नहि पड़ब। यदि बहस होअय लागय तँ चुप भऽ जाउ आ नहि तँ सभक संग मुस्काइत रहू।

(2) कोनो हालत मे झूठ नहि बाजब। यदि कोनो कल्याण लेल झूठ बाजऽ' पड़ैक तँ बड़ सोचि विचार कें बाजब।

(3) मोन मे उत्तम एवं सात्विक विचार कें स्थान देब जाहि सँ अंतरिक्ष सँ ओहि तरहक विचार खींचि खींचि अहाँ दिस अबैत रहत।

(4) यदि कोनो कुविचार मोन मे आबि जाय अपना प्रति या ककरो प्रति ओकरा तत्काल ओहिठाम सँ हटा देब जेना विषक एकटा बून्न समस्त भोजन कें बिगाड़ि प्राण घातक बना दैत छैक ओहिना कुविचार समस्त मानस.. क्षेत्र कें दूषित कऽ दैत छैक। हम सभटा सुनैत छलहुँ किन्तु जनैत छलहुँ जे हम ककरो नीक सोचि किछु बाजैत छी तँ ओ ओकरा सँ अर्थक अनर्थ निकालि लैत अछि आ तखन विनोद बिहारी श्यामबिहारीक प्रश्न हमर समस्त हृदय प्रदेश मे भयंकर हिलकोर मारऽ लगैत अछि अहाँ अपन गृहस्थीमे सफल छी कि असफल ?

एक दिन हम नीला रंगक फूल बला सलवार सूट पिन्हने छलहुँ। वार्डक प्रत्येक स्टाफ, पेशेन्ट सभ एके संग बड़ाइ करऽ लागल– ओ ब्लू स्काइ विथ स्टार्स आन योर बडी– ओना हम जे साड़ी कपड़ा पहिरैत छलहुँ सभक आँखि मे प्रशंसा भाव रहैत छल। कारण जे हम असगर भारतीय पेशेन्ट छलहुँ सीटीसी मे। नर्स हिनकर चार्ट पढ़ि बाजल 'ओ अहाँ साठि बरसक छी? हम तँ अहाँकेँ चालीसक बुझैत रही– अहाँक पत्नी कें अहाँ सँ तीन चारि बरिस छोट– अपन प्रशंसा सुनि ई नेना जकाँ हँसऽ लगैत छलाह। ओम्हर बंदना आ केपी हिनका पाछाँ अपना कें विस्मृत कऽ देने छलाह।

राबर्ट ओयेन कोटेज सँ हिनकर वार्ड मात्र चालीस पचास मीटर होयत। सूर्योदय 4.40 बजे भोर मे होइत छल आ सूर्यास्त 10.40 बजे राति मे होइत छल तेँ लोक कहैत छैक अंग्रेजक देश मे कहियो सूरज अस्त नहि होइत छल। ओहि दिन 4 बजे भोर सँ खिड़की मे ठाढ़ भऽ प्रकृतिक रूप देखि रहल छलहुँ– सन्न-सन्न निर्मम पुरवा– चीड़ गाछ कें हिलाय-हिलाय अपस्यांत कऽ रहल छल ।

सामने अस्पतालक विशाल बिल्डिंगक प्रथम तल पर ई भरती छलाह आ छोट सनक काटेजक प्रथम तलक खिड़की पर ठाढ़ हम–जनैत रही ईहो जागल हेताह– हमरा बिन ई नहि रहि सकैत छथि–किन्तु के जनैत छल जतेक कोमल ई हमरा बना देने छलाह ओतवे कठजीव भऽ कऽ हमरा जीवऽ पड़त।

हिनक बायपास आपरेशन सँ पहिने 7 मइ कें मास्को सँ सुपर्णा पहुँचि गेल। ओकरा देखतहि हुनकर चेहरा पर हँसी आबि गेल–आ बंदना कौशलेन्द्र जी कनिक चैनक साँस लेलनि। किन्तु, ओहि दिनक कार्डिएक एरेस्ट क विषय मे जखन डा. विजय कें कौशलेन्द्र जी सभ घटना कहि रहल छलाह तँ हुनक दुनू आँखि सँ नोर खसि रहल छल। हमरा अबितहि नोर पीवि गेलाह। मम्मी, पाछुक पन्ना नहि उनटाउ–

बैसिलडन सँ सत्यप्रकाश जी सपरिवार हिनका देखबा लेल आयल छलाह। सांइ बाबा आ भजनक कैसेँट अनने छलाह–माइ हे केकरी नजरिया कन्हैया के लागल रेऽ की–हमर दूनू गोटेक दृष्टि मिलल, दुनू गोटे मोने मोन काँपि गेल छलहुँ।

सत्यप्रकाशजीक एला सँ घरक वातावरण बदलि गेल। दूनू दोस्तक ठहाका बीच बीच मे पींकीक हँसीक छौंक–सभ बीमारी बिसरा देलक। इंगलैंडक ओ भयावह दिन एखनो सोन पढ़ि जाय अछि ते सिहरि उठैत छी ।

एक दिन पाहुन, बंदना अस्पताल मे हिनका लग छलाह। हम घर मे असगर छलहुँ। हमरा मोन मे आयल कोनो तरकारी बनाकेँ राखि दैत छी। थाकल ठेहिआयल दूनू गोटे आयत–हम बैगन पकावऽ लगलहुँ। ऊपर मे गैस चूल्हा छल तकर नीचा ग्रील, तकर नीचा ओवन छल। हमरा ग्रील ओवन किछु नहि चलबऽ अबैत छल। कोना की कएल जाइत छल। पींकी कें देखने छलहुँ करैत–ओहिना ग्रील मे बैगन दऽ कऽ स्वीच

आन कऽ देलहुँ। अचानक ग्रील सँ धधरा फेकऽ लागल। बगल मे नल छल हम गिलास गिलास पानि फेकऽ लगलहुँ–हमरा ध्यानं सँ उतरि गेल छल जे बिजलीक आगि मे पानि नहि देबाक चाही। बड़ जोर धधरा उठि गेल, हम पानि पर पानि ढारने जाइत छलहुँ कि अचानक धधरा मिझा गेल।

हमर जान मे जान आयल। घरक खिड़की केवाड़ खोलि हम खूब कानऽ लगलहुँ– किएक तँ रोज पेपर मे पढ़ैत छलहुँ फलाँ घर मे आगि लागि गेल सौंसँ घर छाउर भऽ गेल–लकड़ीक घर होइत छल। ई घटना हमरा भीतर सँ हिला देलक। आइ की होइबैक?

लीवरपुल अस्पताल मे हिनकर बगल मे एकटा पेशेन्ट मिस्टर बिल छल जिनका देखतहि हम डरि गेल छलहुँ। किन्तु, सुपर्णा सभटा भय खत्म कऽ देलीह–मम्मी, हमरा तँ ई नानाजी जकाँ लगैत छथि। तखन हम दोसर दिन भोरे वार्ड मे एलौं तँ हुनका गुड मार्निंग बाजलौं। ओ हँसि हँसि अपन हाल अंग्रेज़ी मे सुनबऽ लगलनि। हमर सोफा दिस सँ हुनको बेडक सोफा छल। बीच मे सुन्दर परदा झुलैत रहैत छल। एक बेर ओ परदा हटा हमरा सभ लग मुट्ठी बंद केने एलनि। हमर आगू मुट्ठी बढ़बैत बजलाह– 'टेक फाइव पान्ड'– देखलौं तँ टॉफी छल। हमरा हँसी लागि गेल।

मिस्टर बिल सुपर्णा सँ कहऽ लगलाह–अहाँक मम्मी बड़ हँसैत छथि, हम गॉड सँ प्रे करैत छी जे ओ एहिना हँसैत रहनि– फेर हमरा बजलाह–कलर आफ योर सारी इज वेरी ब्यूटीफूल। एक जमाना मे मि. बिल लाखपति छलाह। भारत मे एक बरीस रहल छलाह। हिनकर पूरा नाम छल बिल केलब्रिक, लीवरपुल मे रोज माउन्ट रोड मे हिनकर घर छल। अस्सी सँ उपर वयस। पेस मेकर लागल छल वएह देखेबा लेल आयल छलाह।

ओहि वार्ड मे सफाइ करबा लेल भोरे भोर सुन्दर सन एकटा प्रौढ़ा स्त्री अबैत छलीह। एकटा सोफा बड़ सुन्दर छल, बेड खाली छल। हम ओहि स्त्री सँ प्रार्थना केलौं ओ सोफा हमर सोफा सँ बदलि देबा लेल। ओ हँसैत बजलीह– व्हाय नाट? द मोस्ट ब्यूटीफुल सोफा आफ दिस वार्ड फार द मोस्ट हैन्डसम परसन आफ दिस वार्ड लैलन।

सभ पेशेन्ट हँसय लागल छल। डा. नेवले हिनकर एनजियोग्राफी केने छल। पाहुन सँ पूछी तँ एतबे बजैत छलाह–मम्मी पापा एटमबम पर बैसल छथि। हुनकर बायपास भेनाइ बड़ आवश्यक छैक। मद्रास मे डा. सत्यमूर्त्ति दास बरसक समय देने छल, तखन दस बरस सुनि संतोषभेल लेकिन ठीक दस बरीस बाद आइ–?

अंतमे निर्णय भेल जे मि. फ्रेबी हिनक आपरेशन करत। जखन आपरेशन थियेटर मे हिनका लऽ जाय लगलैक स्ट्रेचर पर सँ सभ पेशेन्ट कें कल जोड़ि

बजलाह– आइ एम ए स्लेट, डाक्टर्स विल राइट अपोन मी– आ हँसैत हँसैत आपरेशन थियेटर मे चलि गेलाह। हिनकर बायपास मे करीब सात आठ घंटा लागल छल। हिनकर हृदय मे घाह एन्यूरिज्म भऽ गेल छल– जे हमरा पाछाँ पाहुन पींकी बुझौलनि–राजीव दिल्ली सँ आयल छल अप रेखानक उपरान्त–

हवा पानि चान तारा सभ हमर प्रार्थना सुनलनि– दुखः सुख, स्वस्थ–अस्वस्थ नुक्का चोरीक मध्य डाक्टर हिनका देश जेबाक अनुमति दऽ देलक।। दुइटा डाक्टरक संरक्षण मे–एकटा तँ डाक्टर कौशलेन्द्र कर्ण स्वयं छलाह दोसर डा. मधु झथगड़ी छलै–

दिल्ली एयरपोर्ट पर सभ भरल छल– अपोलोक एम्बुलेन्स लागल छल–तरुणा विकास, मधु शंकर बाबू पाहुन, राजीव सभ भरल छल– हिनकर चेहरा पर मुस्की आयल चैनक किन्तु, हिनका लऽ कऽ गाड़ी अपोलो अस्पताल चलि गेल। हिनका संग तरुणा चलि गेलीह। पाछाँ सँ हम सभ गाडी सँ अस्पताल पहुँचलौं।। ओहिठाम कहलक तुरत पचास हजार रुपया जमा कऽ दियऽ। राजीवक संग बीस हजार छल। जमा केलक पाछु सभटा देल गेल। शंकर बाबू सभ व्यक्ति केर खेनाय–रहबाक व्यवस्था केने छलाह। फरीदाबाद सँ समधि चन्द्रभानु जी सेहो पहुँचि गेल छलाह।

ओहि समय दिल्ली अपोलोक एकटा डाक्टर हमरा पुछने छलाह–अहाँकें इंगलैंडक अस्पताल मे एहिठामक अस्पताल मे की अन्तर लागल–हम बाजलौं–डाक्टर साहब इंगलैंड मे पेशेन्ट भगवान छथि डाक्टर ओकर दासो दास। एहिठाम डाक्टर भगवान छथि आ पेशेन्ट ओकर दासो दास।डाक्टर साहब, डाक्टर साहब, बजैत पाछाँ–पाछाँ....।

आदमी सांचे मुसाफिर थीक जनम आ गमनक जग मे फँसल मुदा, हम जीविते एम्हर–ओम्हर पतवार विहीन नाह जकाँ हवा मे डोलि रहल छलौं। लंदनक ओहि ब्रिटिश एयरवेजक हवाइ जहाज पर अशोथकित सन बैसल छलहुँ। मोन एखन धरि स्थिर नहि भेल छल कि हम सरिपों रूस जा रहल छी अपन बेटी जमाइ लग।

हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन सँ फ्लाइट पकड़ने छलहुँ। समान सभ एक डेढ़ घंटा पहिने चलि गेल छल। हीथ्रो कैफे मे चाह पीबा लेल केपी आग्रह केलन्हि – समय छल! गपे गप मे कतेक समय बीति गेल! अनिल जी कहऽ लगलाह मम्मी अहाँ चेक इनक सूचनाक भरोसे नहि रहू।

हमरो मोनमे भय समा गेल छल अनजान जगह असगरे जाइ छी – चेक इन मे नम्हर लाइन लागल छल – किन्तु "फ्लाइटक खबरि आबि गेल छल ! हम लेट छलहुँ – जल्दी जल्दी औपचारिकता निभा हम पुछैत पुछैत एकतरीन वर्गक प्लेन दिस विदा भेलौ ! एकटा सुरंग भऽ कऽ दौड़ि रहल छलहुँ नितांत असगर, कतौ केओ नहि–

जनैत छलहुँ हीथ्रो एयरपोर्ट विश्वक सभसँ पैघ एयरपोर्ट अछि। जमीन पर चलयवाला एस्केलेटर लागल छल आ हम ओहि पर दौड़ि रहल छलहुँ, फ्लाइट छुटि नहि जाय! देह हाथ सुन्न भऽ गेल छल, दौड़ैत दौड़ैत हँफसि गेलहुँ मुदा ओ घुमावदार सुरंग आ एस्केलेटर पर करीब एक डेढ़ किलोमीटर हम दौड़ल होयब तखन 23 नं० गेट आयल– काउन्टर पर अफ्रीकी लेडी छल–पुछलहुँ एकतरीनबर्गक गेट–ओ स्वीकारात्मक मुड़ी डोला देलक !

जानमे जान आयल – सभ केओ लाइन लगा बस मे जा रहल छल – हमहू लाइन मे लागि गेलहुँ – एकटा लेडी सँ पुछलहुँ अंग्रेजी मे – अहाँ एकतरीन वर्ग जाइत छी।

ओ आँखि फाड़ि ताकऽ लागल हमरा – आब हम फेर घबड़ा गेलहुँ ठीक जा रहल छी ने हम – कोनो आन जगह तँ नहि जाइ छी – बस मे आन पैसेंजर सँ पुछलहुँ एकतरीन वर्ग जाइ छी – कोइ कोनो ठामक नाम बाजैत छल कोयइ कोनो – हम साड़ी पिन्हने छलहुँ एकदम अजनबी सन। हुनका बीच रहि – बस जा रहल छल आ हम घबड़ा गेलहुँ। कोनो यात्री अंग्रेजी नहि बुझैत छल – हमर दिमाग खराब छल। अंत मे हमरा चेतना आयल जे ब्रिटिश एयरवेज थीक आ बस लन्दनक थीक – ई अवश्य बुझैत होयत अंग्रेजी – भागलौं ओहि बस कन्डक्टर लग – की हम एकतरीनवर्गक बस मे छी – हमर टिकट देखलक – बस ड्राइवर, लेडी कन्डक्टर सभ हमरा शांत केलक अहाँ एकदम ठीक छी – तखन धुकधुकी शांत भेल ! आराम सँ प्लेन मे बैसलौं – वर्माजीक संग प्लेन मे जाइत छलहुँ तँ खिड़की लग बैसैत छलौं वायुमंडलक रहश्य जानवा लेल, किन्तु असगर हम काते मे बैसैत छी जाहिठाम सँ निकलवा मे दिक्कत नहि हो !

हमरा लागल आब हम अपन मंजिल पर ठीक जकाँ पहुँचि गेल छी ! सीट पर माथ राखि सोचैत रहलहुँ – आँखि नोरा गेल छल, हम कतऽ कतऽ भटकि रहल छी। अनचिन्हार जगह,अनचिन्हार बाट! कोल्ड ड्रींक्स आ नाश्ता लऽ कऽ ठाढ़ छलीह सुन्दरी प्रौढ़ा। चवनिया मुस्कीक संग।

समस्त हवाइ जहाज मे केओ अंग्रेजी नहि जनैत छल – एयर होस्टेस की जनैत छल की नहि किन्तु जखन खेनाइ लऽ कऽ अयलीह तँ हम एकेटा बात कहलौं–भेजीटेरियन?

ओ खानाक पैकेट राखि देलक ! हम पैकेट नहि खोललौं – कोल्ड ड्रींक्स कप पर कप पीबैत रहलहुँ – वंदना संग मे काजू देने छलीह – वएह काजू बीच बीच मे खाइत छलहुँ – कनिक काल मे पैकेट खोललौ तँ एकटा साँप जकाँ चकती मारने लिज लिज सन किछु छल झोर मे डूबल – मोन घिना गेल – पैकेट बंद कऽ राखि

देलहुँ। मैगजीन पढ़ऽ लगलहुँ तँ चश्मा पहिरलौं–अचानक पैकेट पर दृष्टि पड़ल तँ ऊपर मे लिखल छल – फ्रेश बीफ मेटेरियल्स – बाप रे हमर तँ प्राण सुखि गेल। भाग्य छल जे हम ओहि थारीक एखन धरि कानो सामग्री नहि छुने रही। जी हौड़ऽ लागल, जेना रद्द भऽ जाइतक केकरा कही की कही? अनचिन्हार लोक अनजान भाषा। सोचलौं जो एयरहोस्टेस आयत तँ खूब दमसायब ओकरा। तामस मे बीपी हाइ भऽ गेल छल । किन्तु भोजन परसबाक ततेक नम्हर लाइन मे छलीह जे ओकरा घुरैत घुरैत हमर तामस शान्त भऽ गेल। हमर भाषा तँ नहि ओ बुझत। आ नहि कोनो यात्रिए बुझत– ठंढा पीबी पीबी हम समय बीतेबाक प्रयास करैत रहलहुँ किन्तु, समय की बीतैत छल घड़ीक सूइया उनटा घुमऽ लागल। आँखिक आगू पहिल हवाइ यात्रा वर्माजीक संग नाचऽ लागल। कतेक सुखद छल ओ यात्रा? पति-पत्नी नहि प्रेमी प्रेमिका बनि उड़ि रहल छलहुँ।

स्कैन्डेनेभियन एयरलाइन्सक प्लेन मे सभटा विदेशीए छल हमरा सभकेँ छोड़ि कऽ। शराबक बहार छल, कोकक बदला सभक आगू तरह तरहक बाइनक बोतल, छोट छोट गिलास – प्रागक पिल्वान बीयर,कोपेनहेगेनक डेनीस बीयर – हमरा सभ लेल इएह आनंदमय छल जे एतेक नजदीक सँ ई सभ देखवाक अवसर हमरा सभकेँ कहियो नहि भेटल छल। हमर आगू वाला सीट पर दुइटा युवक युवती छल जे शराब पीबैत पीबैत एक दोसरा के आलिंगन मे बद्ध आ दूनूक ठोर एना सटल जेना क्वीक फिक्स लगा देने हो, विदेशक दृश्य हवाइ जहाजे मे भेटल – हमरा सभ कें छोड़ि केओ एकरा सभके देखै बला नहि छल – चारू दिस इएह हाल छल।

– हम चौंकि बाहर देखलौं जवान सूरज खिड़की सँ हुलकी मारि हमरा टाटा बाय बाय कऽ रहल छल, भारत मे साँझ होअऽ पर छल। सूरज हमरा सभक संगे किएक लोक कहैत अछि सूर्य अस्त भऽ गेल। सरिपहुँ सूर्यास्तक कोनो अवधारणा नहि छैक। सूरज एहेन शक्तिशाली देवता कें हम समयक सीमा मे बान्हि अस्त कऽ दैत छी – सूरज तँ अस्त होइते नहि छैक कहियो, पृथ्वी चलैत अछि आकि सूर्य चलैत हो मुदा सूर्य अस्त होइत नहि देखलौं – कोपेनहेगेनक कारी कारी समुद्र धरती आकाश अन्हारे अन्हार लगैत छल किछु घंटा ट्रांजिट मे रहि दोसर प्लेन सँ मैनचेस्टर उतरल छलहुँ।

ओहि दिन टेम्स नदी मे फेरी पर बैसल हम आ वर्माजी अपन बेटी जमाय डा० के० पी०, डा० वन्दनाक संग लंदनक इतिहास जनवा मे व्यस्त छलहुँ, अभूतपूर्व रोमांच भऽ रहल छल– इ टेम्स नदी थीक – सेन नदी पेरिसक अन्तरात्मा थीक, बल्तावा प्रागक आत्मा ओहिना टेम्स नदी लंदनक संस्कृति संस्कारक इतिहास! टेम्स नदीक दुनू किनार पर लंदन शहर अवस्थित अछि। जेना लंदनक हृदय टेम्स नदी हो जकरा संग सजल तरल लंदनक इतिहास सुरक्षित छल।

विक्टोरिया एम्बान्कमेट पर टेम्सक संग संग कतेक दूर धरि चलैत रहलहुँ, सुनैत रहलहुँ। लगैत छल जेना हम कतेक बेर एहिठाम आबि घुमल छी- बचपन सँ टेम्सक विषय मे पढ़ैत, टीवी पर चित्र विचित्र देखैत जेना सभटा आत्मसात कऽ लेने छलहुँ। हल्लुक हल्लुक हवाक संगे बरखाक फुहार मोन प्राणे नहि तन के सेहो तीताय रहल छल आ हम रोमन शेर सभक प्रस्तर प्रतिमा केँ हँसोथि हँसोथि प्राचीन युग मे चलि जाइत मोन के बेर बेर वर्तमान मे अनैत छलहुँ । अनिल जी संगे छलाह हमर मोन केँ पकड़ैत चलैत छलाह अमिल जी– !

नदीक दोसर दिस दक्षिणी तट छलैक। साउथ बैंक नाम सँ मोँन पड़ि जायत अछि जे कतौ पढ़ने छलहुँ शेक्सपीयर एहि बाटे ग्लोब थियेटर जाइत छलाह आ एहि वेस्टमींसटर ब्रिज पर वर्ड्स्वर्थ कविता लिखने छलाह जकरा हम पाठ्य पुस्तक मे कतेक बेर कंठस्थ करैत छलहुँ - आइ ओहि ब्रिज पर ठाढ़ हम सभ बनाना स्क्वैश पीबैत छलहुँ..... बगल मे पार्लियामेंट हाउस, बिगबेनक विशाल भव्य टावर। वेस्टमिंस्टर ब्रिज सँ हम सभ फेरी पर लंदन ब्रिज दिस गेलौ- लंदन ब्रिज, लंदन ब्रिज फौलिंग डाउन ..... नेना सभक मुँह सँ पोयम सुनैत छलहुँ - वएह लंदन ब्रिज हम साकार देखलौं ....।

कहियो स्वप्नो मे नहि सोचैत रही जे हम सभ विदेश जायब। छह संतान कें उच्च आ नीक शिक्षा प्रदान करवा लेल हम दुनू गोटे जवानी मे अपन खुशी कें वृद्ध बना नेने छलहुँ । वर्माजी हरदम कहथि पाइ नहि अछि तँ की, छह ठाम हमर बैंक बैलेंस अछि। आइ वएह बच्चा सभ हमरा सभ लेल अनमोल भऽ गेलैक। हमरा संग छह संतान सँ भरल घरौंदा छल जकरा हम सभ विशाल साम्राज्य मे परिणत कयलौं। प्रेम आ विश्वासक नींव पर बनाओल एहि साम्राज्यक सम्मुख विश्वक समस्त संपति हमरा सभ लेल नगण्य छ सोचैत छी अपार संपति नीक आ कि सुन्दर सुसंस्कृत संतान?

अचक्के फेरी पर सभ अंग्रेज चिकरऽ लागल छल। लुक लुक - या या हो हाय......... खुशी आ उन्मादक स्वर सँ टेम्सक हृदय मे हिलकोर होअऽ लागल। वंदना बजलीह - मम्मी आइ पन्द्रह बरिस सँ लंदन ब्रिज नहि खुलल अछि आइ अचानक खुजि रहल अछि। कतेक अंग्रेजो ब्रिज खुजैत नहि देखने अछि ।

इस्टरक तीन दिनक छुट्टी ओहि समय इंगलैंड मे छल, तेँ टेम्स मे फेरीक आ फेरी पर अंग्रेज परी सभ अपन अपन गंधर्वक बाँहि मे झुलि रहल छलीह आ खुशी आ उन्माद सँ एक दोसरा केँ लिपटौने चुम्बनक मदिरा मे मस्त।

आगू मे ब्रिजक विशालकाय पंख अपन बाँहि पसारि हमर सभक स्वागत सत्कार लेल तत्पर। हमर सभक उल्लासक सीमा नहि छल - ऊपर ब्रिज आ नीचा

सँ हमर सभक स्टीमर आगू बढ़ैत - अनिल जी, प्रीतू, एनी सभक आँखि मे यूरेका यूरेकाक भाव छल - चिड़ैं जकाँ सभ एक दोसराक खुशी देख चहचहाय रहल छल. ... कतेक भाग्यवान हम सभ छलहुँ - सभ अंग्रेजक दृष्टि हमरा सभ पर छल - अय परदेशीगण ! आइ अहाँक सभाक एबाक खुशी सँ हमर लंदन ब्रिज खुजि गेल - एहेन की बात छैक अहाँ मे - ?

इतिहास सँ प्रतीत होइत अछि जे फीनिक्स (एक प्रकारक पक्षी) सँ अपना आप कें चिन्हयवाली जाति अपन नाम फीनिशियन रखने छल। फीनिक्स पक्षी बेर बेर अपनहि छाउर सँ जनम लैत अछि। ई फीनिशियन सूरजक पूजा करैत छथि। हिनक उद्गमक जानकारी इतिहासो कें नहि बुझल छल किन्तु हिनक संबंध सपर आ हिन्दुस्तान सँ मानल जाइत अछि। सूर्यक एकटा नाम ओन सेहो अछि एहि कारण फीनिशियन यूरोपक धरतीक नाम राखलक एल ओन डोन यानी सूरजक शहर जे आइ लंदन (LONDON) भऽ गोल।

इजराइलक कबीला जखन बिखऽ लागल तँ किछु लोक फीनिशियन सँ मिलि गेल। इंगलैंड शब्दक जड़ि हिब्रू भाषा मे अछि। जोजफ कबीलाक चिन्ह बरद छैक, हिब्रूमे बरद कें ऐंगल कहल जाइत छैक, एहि कारण एकर नाम ऐंगेल लैंड पड़ल जे आब इंगलैंड भऽ गेल। ओहि इंगलैंडक धरती पर हम सभ ठाढ़ छलहुँ।

ओहिठाम डाक्टर मे कन्सलटेट आ जी०पीक भूमिका अहम् छैक। जेनरल प्रैक्टिसनर जकर व्यवस्था सरकार करैत अछि। हिनका मरीज सँ फीस नहि माँगऽ पड़ैत अछि। जी0पीक अन्दर मे जतेक मरीज रहैत छथि सभक रजिस्ट्रेशन रेकर्ड सरकार कें पठवैत छथि। सरकार हुनका आफिस लेल क्वार्टर स्टाफ, नर्स, मशीन सभ दैत छैक। ओहिठाम बिहारक कतेको डाक्टर सँ भेंट भेल। डा० ए०के०वर्मा जीपी पटना हाइकोर्टक वरीय अधिवक्ता स्व० ब्रजकिशोर प्रसाद जीक जमाय एकटा बड़ पैध हस्तीक रूप मे जानल जाइत छथि। ले मे डा० बाय एन० दास, न्यूकास्ल मे डा० रामकुमार, रंजना, लिस्टर मे डा० मिथिलेश लाल, डॉ० अनीता कंठ, लंदन मे डा० ए० के० झा, डॉ० चन्द्रशेखर रेड्डी, डॉ० ममता, बेसिलडन मे डा० सत्यप्रकाश लाल दास, आर कतेको भारतीय, नेपाली डाक्टर सभ सँ हमरा सभकें भेंट भेल - सभ खुश छथि। हम सभ काज करैत छी तकर रिवार्ड हमरा सभकेँ भेटैत अछि - किछु माँगबाक आवश्यकता नहि पड़ैत अछि।

सोचैत छी अपन देशक व्यवस्था? एहिठामक नीक गुण केँ किएक नहि अपनाबैत अछि ? लूटपाट, बलात्कार सन अपराध ओहू ठाम अछि मुदा सुव्यवस्थाक अन्तर्गत एकर सभक कोनो मोजर नै। वर्माजी बजैत छथि-इंगलैंड बिहारो सँ छोट स्थान अछि। एकर जनसंख्या सेहो आधा बिहारक- तखन भारतक कोन कथा - ? मुदा,

मोन मे ई तर्क नहि बैसैत अछि- मनुष्य यदि चाहे, सरकार चाहे तँ की नहि कऽ सकैत अछि ?...

बारहो मास सरदी – तन मोन के कटैत हवा तीक्ष्ण क्रटार सन – हवा मे उड़ैत सिमरक फूल जकाँ बरखाक फूही एतेक स्वेटर आ उनी कपड़ा पहिरवाक उपरान्तो रक्त मज्जा हड्डी तक के भेदन करैत सर्द हवा-आब बुझैत छी कतेक तीव्र वेदना सँ आहत भऽ शेक्सपीयर लिखने हेताह – ब्लो ब्लो दाउ विन्टर विन्ड फॉर दाउ आर्ट नौट सो अनकाइन्ड एज मैन्स इन्ग्रेटिटयूड.....।

अंग्रेज हमरा लोकनि पर शासन कयलक तँ आइ हिन्दू मुस्लिम मिलि अप्रत्यक्ष रूप सँ हुनक शोषण शासन कऽ रहल छथि। साइत अंग्रेजक अपेक्षा हिनके जनसंख्या हमरा बेसी लागल– साउथ हॉल मे! इंगलैंड मे हम बैसल नहि रहलहुँ– ओहू ठाम हम बैसल-बैसल अन्तर्राष्ट्रीय मैथिल महिला संगठनक स्थापनाक योजना बनेने छलहुँ जकर अध्यक्ष सावित्री वर्मा (अमेरिका), उपाध्यक्ष मीना झा (लंदन) मणिदास (लंदन), लीला झा (यू.के.) महासचिव, डा. वी. के. झा (कावेन्ट्री) अनिता लाल (लिस्टर) सहसचिव मे सुपर्णा कुमार (मास्को) जमुना आचार्या (लंदन) रम्मी (बैसिलडन) काउंसँलर मे जस्सी (लंदन) सदस्या मे रानी (अमेरिका) सरिता (अमेरीका), लीला दास (अमेरीका) सत्यभामा देवी (नेपाल) बबीता आदि कें लऽ कऽ प्रारूप तैयार केने छलहुँ। कतेक गोटेसँ फोने पर सहमति लेलौं– किन्तु, एकर कार्यान्वयन भेला सँ पहिने वर्मा जी अस्वस्थ भऽ गेलाह। जहिया जहिया हम सौभाग्यक देहरी पर पएर राखऽ चाहलौं दुर्भाग्य सोझा आबि कारी बिलाय जकाँ रस्ता काटि देलक।

हृदय भरि आयल छल एकटा ओ यात्रा छल आ एकटा ई यात्रा सुखद यात्राक दुखद कड़ी अपन मोनक संसारक संग...... ठंडा पीबी पीबी हम समय बीतबैत रहलहुँ । चाह, कॉफी, बिस्कुट - एक बजे दिन मे लंदन सँ चलल रही आ रूसक चारि बजे भोरे एकतरीन वर्ग पहुँचलौं – एकदम अन्हार मे। पानि पड़ि रहल छल टीपीर टीपीर – वृष्टि पोरे टीपीर टीपीर – पानि मे भीजैत तीतैत हम सभ प्लेन सँ उतरि एयरपोर्ट पहुचलौं।

बाहर निकललौं। मनोज जी ठाढ़ छलाह – एकटा अद्‌भुद आनंद सँ दुनूक तन मोन सराबोर भऽ गेल। एकतरीनवर्ग कें रूसक तीन राजधानी मे सँ एकटा राजधानी मानल जाइत छैक । उराल पर्वत शृंखला सँ घिरल आइसेट नदीक तीर पर बसल एकतरीनबर्ग सिटीक विस्तार देखि कलकत्ताक चौरंगी, एसप्लेनेडक एरिया मोन पड़ि जाइत छल ! हँ जनसंख्या तँ किछु कतौ नहि छल अपना देशक तुलना मे! शनि रवि कें एहिठाम सेहो वीक एन्ड कहल जाइत छैक जाहि दिन सभ केओ अमीर गरीब

अपन अपन घर सँ निकलि लेनिन स्ट्रीटक रमणीक स्थल यानी एकतरीन बर्गक हृदय स्थल पर जमा भऽ मौज मस्ती करैत छल ! लेनिन स्ट्रीट मे बीच चौराहा पर लेनिनक विशाल प्रतिमा स्थापित छल। एक दिस वास्तुकलाक अपूर्व छटा छिटकि रहल छल तँ दोसर दिस छोट-छोट फव्वारा सँ सजल पार्क, नदीक जलधार बोटिंग आदिक रमणीक मनोहर शोभा बिखरल छल । शनि दिन जेना मेला लागि जाइत छल सड़क पर- एकतरीन बर्ग सीटी लगभग 280 बरीस पुरान शहर छल जे पीटर द ग्रेट बनौने छल ! रूसक अन्तिम जार निकोलाइ ओकर पत्नी बाल बच्चा सभक हत्या कऽ बालसेविक्स रूसक पहिलुक राष्ट्रपति भेल छल ! बोरिस येल्तसिनक लालन पालन, पढ़ाइ लिखाइ एतेक तक जे हिनक राजनीतिक कार्यक शुभारंभ सेहो एकतरीनबर्ग सँ भेल छलैक ! जाहिठाम जारक हत्या भेल छल ओहिठाम बहुत पैघ आ सुन्दर चर्च बनि गेल छल जकर चोटी पर पीअर धातुक सोन सन चमकैत गुंबदक अद्भुद छटा छल ! ओसलमार्स मे हेवी इंजीनिरिंग फैक्टरी छल !

समस्त सीटी मे बड़ चाकर-चाकर सड़क छल आ ओहि पर ट्राम चलैत हरदम कलकता मोन पड़ि जाइत छल ! किन्तु ओतेक पैघ नगर मे मात्र सात आठ घर भारतीय छल! जेना इंगलैंड मे गली गली मे हिन्दू मुसलमान भेटि जाइत छल एहि ठाम दूर दूर धरि एकटा कौओ बजार मे अपना देसकोसक नहि भेटल ! पहिलुक दिन मनोजजीक टोयटा सँ नगर भ्रमण लेल हम सभ निकललौं – हम साड़ी पहिरने छलहुँ- बाट मे पाहुन बजलाह माँ साड़ी पहिरने छथि आब केना कतौ जायब घुमबा लेल। सुपर्णा कें बजलाह-सलवार सूट पहिरा दितियनि माँ के।

एकतरीनबर्गक सभसँ पैघ आकर्षण छल ओहिठामक मेट्रो रेल – जो प्रोस्पेट, कास्मोनेवतोव, उरालमाथ, मैशीपोस्ट्रोटल, उरालस्क्या, आदि कतेको स्टेशन सँ जुड़ल छल! उरालस्क्या स्टेशन सभसँ गहीर मे छल। साइत 42 मीटर भीतर ई सभ स्टेशन बड़का औद्योगिक स्थानक छल ! स्टेशनक देवार पर बनल कलाकृति, ओहिठामक सांस्कृतिक ऐतिहासिक रंग योजन कें परिलक्षित करैत छल। उरालस्काश आ प्रोसेट कॉस्मोरेवटोव एकटा विशाल औद्योगिक स्थान अछि।

रोज राति मे मनोज जीक संग बजार जाइत रही खरीदारी लेल – कहियो सेन्टर आफ एकतरीनबर्ग जे विशाल शापिंग सेन्टर छल कहियो उराल मार्केट तँ कहियो थ्री फेजसेँन्टर –

पता नहि विदेश मे खरीदारी करबाक एकटा पागलपन सन अछि ! खाहेओ इंगलैंड हो वाकि स्काटलैंड हो वा कि रूस हो।

हँ, एकतरीनवर्गमे एकटा बात अनुभव केलौं जे ओहिठामक निवासी नहि तँ अंग्रेजी जनैत छथि, नहि हिन्दी यदि भोतिआय जाउ तँ एम्बेसीयोक रस्ता बतबऽ वला

कोइ नहि। किन्तु ओतेक आश्चर्य एहि लेल नहि लागल जे अपने देस कारेकल मे स्थानीय निवासी एतेक धरि जे दोकानदारो धरि नहि तँ केओ हिन्दी जनैत छल आ नहि तँ अंग्रेजी। खाली तमिल। तखन रूसक एकटा सिटीक कोन कथा–

रेस्तराँ सभ पैघ पैघ छल ट्रोकुस्रोव एम स्कैम, पिज्जा मारेटी – हम सभ कोसेलेन्को स्ट्रीट मे रेस्तराँ पिज्जा मोरेटी गेल छलहुँ। सुपर्णा संगे छलीह – परंपरागत इटालियन रेस्तराँ ओहिठाम कतेको प्रकारक पिज्जा भेटैत छल आ ओहिठामक आइसक्रीम आ काफी सेहो नामी छल – संगहि स्थानीय निवासीक पसन्दक सभ तरहक इटालियन व्यंजन, यूरोपियन वाइन।

रूस सेन्टर आफ एकतरीन बर्ग मे तँ कतेको सिनेमा हाल, ऑपेरा, रेस्तराँ बजार सँ भरल छल! ओहिठाम लिन्नी खेवा मे हमरा बड़ नीक लागल, संगहि बोर्स एक तरहक रशियन सलाद।

बजार जेबाक बहाने मनोजजी हमरा लऽ जाइत छलाह। रस्ता मे कत्तौ कात मे कार ठाढ़ कऽ हमरा गीताक उपदेश दैत छलाह–मम्मी, पापा कत्तौ नहि गेल छथि। ओ हमरा सभ मे छथि। अहाँ असगर कहाँ छी–गीताक कतेक श्लोकक अर्थ ओ हमरा समझाबैत छलाह– दुख आ वेदनाक मध्यो हम टुकुर टुकुर हुनकर मुँह ताकऽ लगैत छलहुँ– इएह मनोज जी छथि– जिनका हम सभ बच्चा बुझि लैत छलहुँ कतेको प्रसंग मे, एतेक गंभीरता?

रूस सँ विदा हेबाक काल हम हुनका पकड़ि कानि रहल छलहुँ आ ओ हमर पीठ पर सांत्वनाक हाथ रखने छलाह। तँ एयरपोर्टक एकटा ब्रिटिश अधिकारी हमरा पुछलक–ही इज योर हसबैंड? कनितो कनितो हँसी आबि गेल छल। स्त्री पुरुषकें संग देखि लोग एके अर्थ किएक लगबैत अछि– पति–पत्नी वा कि प्रेमी प्रेमिका। चाहे सहरसाक समाज हो चाहे रूसक समाज हो– की स्त्री पुरुषक बीच भाइ बहीन, माइ बेटा, भौजी दिअरक संबंध नहि भऽ सकैत छैक।

कारेकलमे हमरा अपन अस्तित्वक होश आयल छल? भावना प्रकाशजी सुप्रभा, प्रसून हमर जिनगीमे भेल अनग्र वज्रपातकें अपन प्यार, सेवा आ सम्मानसँ दूर करबाक प्रयास करैत रहलनि ? हिनका गेलाक बाद हम कहियो ऐनामे मुँह नहि देखने रही– अपने चेहरा हमरा देखल नहि जाइत छल– किन्तु, भावना साड़ी सभ कीनि, घर पर दरजी बजाय नापसँ आंगी सिआ– हमरा मे एकटा आत्मविश्वासक कोरामिन देमऽ लगलीह– आ ई सभ देखि बंदना–कौशलेन्द्र जी हमरा फेर इंगलैंड बजेबाक साहस केलन्हि ? हम जेवा लेल नहि चाहैत छलहुँ– ओतेक दूर–फेर हमरा कारण

हिनका सभ पर विपत्ति नहि आबि जायक कोनो किन्तु, जिद्द खास कऽ बच्चा सभक जिद्दक कारण हमर इंगलैंड एबाक किछु दिन बाद सँ जेना। हृदय मे एकटा नव सूरज जनम लेमऽ लागल।

कतेक घुमबैत छलाह हमरा! उदासीक अवसाद कें खत्म करवाक अथक प्रयास। न्यू कास्ल कास्ल घाटी, पहाड़ीक क्रोर मे बसल रमणीक सिटी छल। जिनगीक उतार चढ़ाव जकाँ सड़क ऊँच–नीच भऽ कऽ दौड़ैत छल, ओहि पर मोहल्ला सभ लगैत छल, चलि रहल होय– बंदना कौशलेन्द्रजीक संगे अंकिता अनुपमा सभ हमर पाछु खास कऽ अंकिता एक सेकेन्ड लेल हमारा उदास नहि देखऽ चाहैत छल– 'कोइ परेशानी कोइ मुश्किल हो हमसे कहो–' अनुपमाक आइएमललैन– कोना एकरा सभमे हमरासँ एतेक आकर्षण भऽ गेल छलैक– हम तँ ककरो किछु नहि देने छलहुँ– ककरो लेल किछु नहि केने छलहुँ–खास कय कौशलेन्द्र जी हमर सभक मान अपमान कें अपन मान अपमान बना लेने छलाह । जखन जखन समाजिक पारिवारिक सम्मान पर कुठाराघात होय बेटा बनि ठाड़ भऽ जाबत छलाक– बेटी सभक ब्याह दान से लऽ कऽ पहिलुक बेर जे कार लेलहु सभ मे अप्रत्यक्ष रूप सँ हाथ पकड़ने रहलाह हम सभ आय धरि मुँह खोलि किछ नहि मांगलौ नहि किछु कहलै। किन्तु, दिब मांगने कोना के पी बदना बुझि जायत छलै हमर सभकें कें आश्चर्य छल।

इगलैंड सँ एबाक बाद तेसर बरखी हरिद्वार मे भेल–पंडित पुरहितक नाम सँ हम सभ कतेक डरैत छलहुँ । किन्तु, हरिद्वार मे हमर सभक धारणा बदलि गेल! घाटे पर एकटा संस्था छल जे ब्राहमण भोजनक व्यवस्था कऽ देलक ! राजू जया गंगाजी मे गोदान केलक! बहुत पवित्रता सँ अपने हाथ सँ बच्चा सभ ब्राहमण कें खुऔलक! हरकी पैड़ी पर एकटा अभूतपूर्व दृश्य लागि रहत छल – हिनकर आत्मा हम नहि जनैत छी किएक तँ अपना सँ अलग हिनका एको क्षण लेल नहि बुझैत छी – हँ हमर मन कें चैन भेटि रहल छल – आँखि मे नोर नहि छल मुदा, अधर पर एकटा अव्यक्त शान्तिमय मुस्कान – जेना गंगाक लहरि लहरि सँ हिनक गान निःसृत भऽ रहल छल – मेरा प्यार वो है जो मरकर भी तुमको जुदा अपनी बाँहों सँ होने न देगा।

राजीवक मैट्रिकक परीक्षा चलि रहल छल तँ अशोक जी सेहो परीक्षा दऽ रहल छलाह। एक गोटेक सेन्टर जिला स्कूल छल एक गोटेक गर्ल्स हाइ स्कूल छल। अशोक अपन परीक्षा एक घंटा मे खत्म कऽ दौड़ि गेलाह राजूक सेन्टर पर। खिड़की लग ठाढ़ भऽ फुसफुसाइत–राजू, किछ चाही तोरा?

राजीव चौंकि गेल छल, अपन परीक्षा छोड़ि चाचाजी हमरा लग आबि गेलाह। नहि नहि हमरा सभटा पढ़ल अछि–ओ इशारा सँ समझा देलक। हमर सभक बगल मे प्रों० उपेन्द्र झा जी रहैत छलाह। हुनक पत्नी, दिलीपक माए हमर सभक नीक

संगिनी छलीह। दिलीप राजीव सँ एक क्लास सीनीयर छल। जखन दिलीप फर्स्ट डिविजन सँ मैट्रिक पास केलक तँ राजू बाजल-भगवान एके नम्बर कियेक नहि होय-हमरा दिलीप सँ बेसी नम्बर देब।

भगवान सुनैत छथिन। छोट छोट बात कें पूरा करबा मे भगवान कें कोनो परेशानी नहि छैक- तँ एक नम्बर भगवान सुनलथिन आ राजू कें दिलीप सँ मात्र एक नम्बर बेसी आयल। किन्तु, हमर बच्चा सभ मे प्रतियोगिताक भाव एहिठाम सँ आयल। भावना बाजलीह हम भैया सँ बेसी नम्बर-बंदना दीदी सँ, सुपर्णा बंदना सँ, संजीव सुपर्णा सँ आ तरुणा संजीव सँ-सभ भाइ बहीनी मे पढ़बाक होड़ मचि गेल छल आपसे मे कम्पीटीशन करय लागल। लोग हमर घर कें सरस्वतीक मंदिर कहय लागल।

18 मार्च 1982 कें हमरा मैट्रिक परीक्षा, गर्ल्स हाइ स्कूल सहरसा मे 'आबजर्बर' बनाओल गेल छल। बोर्ड दिस सँ तँ हम इएह सोचैत छलहुँ एकटा नितान्त घरेलू बनि रहबाक इच्छा करय बाली आइ सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक कोन कोन बाट सँ हमरा नियति लऽ जा रहल अछि। अपना कें समयक धार पर छोड़ि देने छलहुँ। कोनो बाट सँ लऽ जाय हमरा......बोर्ड परीक्षाक मेला पूर्ण यौवन पर छल। बीच बीच मे हम सभ कोठरी मे घुमि जाइत रही। हिन्दीक पत्र छल। प्रश्न छल-कामायनी किसने लिखा है-प्रेमचंद, प्रसाद, पंत, जैनेन्द्र। एकटा छात्रा जयशंकर प्रसाद लिखने छलीह। कनिक काल बाद हम फेर ओहि कोठरी मे घुमऽ गेलहुँ। ओ छात्रा जयशंकर प्रसाद काटि कें प्रेमचंद लिख देने छलीह। हम बुझि गेलहुँ ई चीटक कमाल थीक। हृदय सँ 'आह' निकलल-की अभिभावक एहने होइत छथि जिनका अपन बच्चाक ज्ञान पर भरोस नहि?

भावनाक मैट्रिकक परीक्षा मे राजू पुछइत रहल-सूकू, कोनो चीजक आवश्यकता छौक तोरा? नहि भैया, हमरा सभटा अबैत अछि। कतेक आत्मविश्वास सँ सूकू बजलीह गर्व सँ राजीवक सीना चाकर भऽ गेल छल। बहीनक नैतिक समर्थन मे परीक्षा लेल ओ पटना सँ अपन कॉलेज छोड़ि सहरसा आबि गेल छल। भोरे ओकरा सेन्टर पर छोड़ैत छल, साँझ कें आपस घर लऽ अनैत छल। किन्तु, गाड़ी कें पटरी पर देखि ओ आश्वस्त भऽ गेल। भावनाक रिजल्ट आयल तँ आर्ट्स मे कमिश्नरी मे भावना प्रथम आयल छलीह आ ओकर संगी कल्पना सायंस मे प्रथम आयल छलीह। स्कूलक देवाल सभ पर बधाइ भावना, बधाइ कल्पना लिखि देने छल लड़का सभ।

भावनाक आत्मविश्वास देखि राजीव वंदनाक परीक्षाक बेर नहि आयल। वंदना जखन सातवां आठवां मे छलीह तखने सँ डायरी सभ पर लिखैत छलीह। डॉ. वंदना, लंदन। आ अपन एहि आत्मशक्तिक कारण बंदना दूनू बेकति डाक्टर भऽ कऽ

इंग्लैंड मे छथि। बंदनाक परीक्षा काल हमर अपन घरक निर्माण भऽ रहल छल। ओकर सेंटर जिला स्कूल पड़ल छल। हम जन मजदूरक संग साइट पर जाइत छलहुँ ओम्हर सँ रेलवे लाइनक ओहिकात बंदना कें बैसा दैत छलहुँ जिला स्कूल मे आ फेर जन मजदूरक संग रहैत छलहुँ। टिफिनक बेर बंदना लेल भोजन लऽ क जाइत छलहुँ तँ बजैत छलीह-मम्मी जावत हम खायब तावत एकटा प्रश्न पढ़ि लेब। हम ओकर कमजोरी जनैत छलहुँ। दोसर दिन सिंघाड़ा लऽ कऽ गेलहुँ तँ ओ देखि हीं हीं हँसय लगलीह-सिंघाड़ा ओकर कमज़ोरी छल।

सुपर्णा मे छल हमरा सँ आगू केओ नहि रहय। एहि कारण ओ खाली अपन लक्ष्य दिस तकैत छलीह। किन्तु, ओकरा संग तँ आर आश्चर्य भऽ गेल। तीन दोतक ओकर ग्रुप छल, सुपर्णा, सोनी आ नीता जकरा स्कूलक सभ सँ मेधावी ग्रुपक मानल जाइत छल। परीक्षा मे तीनू दोस्त अलग अलग रूम मे बैसलीह। आ जखन रिजल्ट आयल तँ तीनू संगीकेँ बराबर अंक छल। सभक लेल अचरजक गप भऽ गेल।

संजीव पहला क्लास सँ सेंट पाल अकादेमी पटना मे पढ़ैत छल। राजीव पटना कालेज मे छल संजीव ओकर संग पटना सहरसा छुट्टी मे अवैत छल।

हमर जीवन मे संजीव कें लऽ कऽ बड़ पैघ दुर्घटना होइत होइत बचि गेल। एक डेढ़ बरीसक संजीव छल। डेगा डेगी दैत छल। माँ पापा सभ भाइ बहीन पटना सँ सहरसा आयल रहथि। हुनका सभक संग हमरो सभकें पटना जेबाक छल। हम सभ कोसी सँ विदा भेलहुँ आ बरौनी मे बड़ी लाइनक ट्रेन पकड़बाक छल। समस्तीपुर दानापुर ट्रेन मे सभ भाइ बहीन हम सभ चढ़ि गेलहुँ। तेरह चौदह गोटे हम सभ छलहुँ। ई नीचा मे टीटी सँ गप कऽ रहल छलाह। हम बुझैत छलहुँ जे गुड्डू अंजूक कोर मे अछि। किन्तु गुड्डू स्टेशने पर छुटि गेल। गाड़ी ससरय लागल तँ ई ट्रेन पर चढ़बाक उपक्रम मे छलाह कि केओ हिनक फूलपैंट पकड़ि बाजल पापा-पापा ई पाछाँ घुमि कें तकलाह तँ गुड्डू ठाढ़ कानि रहल छल- गाड़ी खुजि गेल छल ई बच्चा कें कोरा मे नेने दौड़ि कें ट्रेन पकड़लाह-डिब्बा मे चढ़िते तामस सँ हमरा पर चीकरऽ लगलाह बच्चा कतऽ अछि-

कतेक टाक अनर्थ होइत होइत बाचि गेल-एकरत्ती बच्चा कें हम कोना चीन्हतौं-कखनो लागैत छल गुड्डू पैघ भऽ कऽ बरौनी स्टेशन पर भीख माँगि रहल अछि-तँ कखनो लगैत छल केओ हाथ पएर काटि अपंग बनाय भीखमंगा बना देलक-कखनो लगैत छल बच्चा कहीं ट्रेनक नीचा आबि जइतैक-कतेक मास कतेक बरस धरि हमर मोन संयत नहि भेल छल। जखन-जखन बरौनी स्टेशन देखैत छी तँ

जी हदसि जायत अछि। ओना हम बचितौं कि नहि गाड़ी खुजबाक बाद जखने बुझतौं गुड्डू छुटि गेल तखनहि हम ट्रेन सँ गंगा मे कुदि जइतहुँ।

आ से संजीव कें सेंट पाल मे नाम लिखायब हमरा एकदम साहस नहि होइत छल। किन्तु, राजीवक बात छल-मम्मी तू किएक चिन्ता करैत छें। हम छी ने दूनू भाय संग जायब, संगे आयब-गुड्डू कें बजैत छलहुँ-पटना पहुँचि हमरा तुरंत एकटा चिट्ठी खसाय देब-ट्रेन पकड़बा लेल जखन रिक्शा पर बैसैत छल तँ संजीव एकटा कागज हमरा थम्हा दैत छल-मम्मी काल्हि भोर एकरा पढ़ि लीहें-ओकरा जेबाक बाद हम कागज पढ़ैत छलहुँ-आ० ... मम्मी, प्रणाम। हम नीक जकाँ पहुँचि गेलहुँ। अहाँ चिन्ता नहि करब। डाक सँ पठैतों तँ तीन चारिदिन लागि जाइत। ता अहाँ चिन्ता करैत रहितौं तें हम अहाँ कें लिखि देलहुँ जे हम ठीक सँ पहुँचलौं...।

हमर तँ आँखि साओन भादो भऽ जाइत छल। बच्चा सभकें कतेक ममता हमरा पर छैक। एक बेर सपना देखने रही जे संजीव असगरे पटना सँ आबि रहल अछि। सहरसा स्टेशन सँ गाड़ी आगू बढ़ि गेल, ओ ट्रेन पर सुतले अछि-आ हम नींद मे जोर जोर सँ गुड्डू गुड्डू चीकरय लागलहुँ। मध्य रात्रि मे हम पसेना-पसेना छलहुँ। ई कहि रहल छलाह-अहाँ किएक चिन्ता करैत छी। गुड्डू कें किछु नहि होयत। फेर ओ हाइ स्कूल मे सहरसा आबि गेल। ककरो सँ कम अंक नहि अनलक।

छोटकी तरुणा बड़ आइसक्रीम खाइत छल। ओकरा हम समझाबैत छलहुँ बेटा बरफ खेनाय नीक बात नहि थीक। फेर ओकरा हम अपन किरिया दऽ देलहुँ जे बरफ नहि खाय। ओ मानि गेलीह-नहि मम्मी हम कहियो बरफ नहि खायब। दोसर दिन फेर ओकर संगी सभ बाजल-चाची, आइ तरुणा फेर बरफ खेलक-रोजे खाइत अछि। तोरा हम किरिया देने छलियौ तखनहु तों बरफ खाय छें- हमरा तामस उठि जायत छल-

बड़ निर्दोष भावे बाजल-मम्मी, हम एक दूइ दिन खाय कें देखलियैक तँ तोरा किछु नहि भेलौक। फेर हम खाय लगलहुँ-किरिया तँ झूठे थीक ने।

मोने मोन हँसी आबि गेल। मोन पड़ि गेल संजीवो जखन बेदरा छल तँ एहि सभ तरहक बात करइत छल। सूकू बजलीह-अहाँ हमरा प्यार करू-हम ओकरा प्यार करैत बाजलौं-बेटा अहाँ जिनगी मे सभ ठाम शिखर पर रहू। संजीव देखि रहल छल। ओ बाजल-अहाँ हमरा कनिटा प्यार करू, कनिटा मारू... हम ओकरा प्यार करैत बाजलौं-हमर बेटा सभ संसारक सभ सँ पैघ आदमी बनत। अहाँ किरिया खाउ ने आइ सँ अहाँ खूब मोन सँ पढ़ब....।।

सूकू बाजल-ई तँ रोज अहाँक किरिया खाइत अछि। हम कहलौं-हम तँ रोज कनी कनी मरि रहल छी आ एक दिन अचक्के मरि जायब-कहैत हम मरबाक अभिनय करैत खसि पड़लौं। संजीव हमरा गुदगुदी लगाबऽ लागल, हम हँसैत उठि गेलहुँ। संजीव बाजल-जखन अहाँ मरब मम्मी तँ हम अहाँकें एहिना गुदगुदी लगा देब। अहाँ हँसैत उठि जायब।

हम हँसैते बाजलौं-भगवान किएक आदमी कें अचक्के मारि दैत छथि। फेर संजीव उत्तर देलक-जहिना हम सभ जेब मे बूट रखैत छी तहिना हमरा सभकें यमराज अपन जेब मे रखैत अछि। जखन ओकरा भूख लगैत अछि एक मुट्ठी बूट जकाँ फाँकि लैत छैक, आदमी मरि जाइत छैक।

एकटा छोट सन बेदराक मुँह सँ ई सभ गप सुनि हम स्तब्ध भऽ गेल छलहुँ। जखन ओ खेल धूपि अबैत छल आ कत्तौ कोनो ठेस लागि जाइत छल गुड्डू कें तँ हम तुरंत दवाय आनि ओकरा लगबऽ लगैत छलहुँ ओ छह सात वर्षक नेना हमर चेहरा कें अपन हाथ मे लऽ कविता पढ़य लगैत छल.......।

.......माँ, तूने मुझको पाल पोसकर इतना बड़ा बनाया / सुख दुख में तूने ही माँ छाती से चिपकाया / जब मैं खुश होता था, तू कितनी खुश हो जाती थी/जब मैं रोने लगता था, तू रोने लग जाती थी / जब चोट मुझे लग जाती है / तू कितना दुख पाती है / तेरे ऋण से ऋणी बना रोम रोम सारा / चैन नहीं जब तक न मिटा दूँ तेरे दुखका अँधियारा........ माँ तू कितनी भोली है।

जाधरि ओ कविता पूरा नहि बाजि दैत छल तावत हमर चेहरा नहि छोड़ैत छल। पता नहि ई कविता कतऽ पढ़लक, कतऽ, सीखलक-मुदा हमर आँखिक धार अनवरत रहैत छल- जखन हम "शेफालिका" अपन घरक निर्माण मे लागल छलहुँ तँ घर मे सभ भरल रहैक। केओ हमरा संग साइट पर जेबा लेल तैयार नहि। मकान हमरा नाम सँ बनि रहल छल तँ किएक केओ परेशान होइतय। तखन आठ-नौ बरसक संजीव, रौद मे भूखल पिआसल हमरा संग बैसल रहैत छल। खयबा लेल कहैत छलहुँ तँ बजैत छल अहाँ भूखल रहब मम्मी हम कोना खायब?

एक दिन साइट पर दूइ टा बकरीक बच्चा आपस मे झगड़ा कऽ रहल छल। हम बाजलौं-देखैत छी गुड्डू....ई, दुनू भाइ थीकैक आ कोना झगड़ा कऽ रहल अछि। मम्मी, हम कहियो भैया सँ झगड़ा नहि करब। जे एक भाइ दोसर भाइ लेल करैत अछि हम करब। हम भैयाक लेल जान देब। अमिताभ बच्चन आ मिथुन चक्रवर्तीक डायलॉग हमर दुनू बेटा कें रटल छल।

पींकी बजैत छलीह पापा, सभ बल्ब लगा कऽ पिताक नाम चमकाबैत अछि। हम सभ भाइ बहीन स्वयं बल्ब बनि अहाँक नाम कें चमकायब।

तखन हम अपन बच्चा सभ मे संस्कारक जनम घूँटी पिआबैत रहलहुँ। नीक नीक शिक्षा नीक नीक गुण सँ ई बच्चा सभ पैघ भऽ कऽ कहियो हमरो सभक आँखिक नोर पोछत। तखन हमरो सभ कें प्यार, आदर देमय बला केओ होयत। पिता आनक लेल जीबाक शिक्षा दैत छलाह, माताक कष्टमय जीवनक दर्द सँ ओ सभ छटपटाइत छल। हम अपन बच्चा सभ कें नाचि गाबि-लिख पढ़, पढ़ लिखा पढ़के अच्छा अच्छा राजा बेटा बन-मीठी मीठी बातों से बचना जरा, ऐ मालिक तेरे बंदे हम, नन्हा मुन्ना राही हूँ- इंसाफ की डगर पर आदि आदि कतेको गीत सँ ओकरा सभ मे संस्कार, अनुशासन आ प्रेमक महिमा भरैत छलहुँ।

वास्तव मे, दूध पिआ देला सँ केओ माय नहि बनि जाइत छैक। दूधक कर्ज भावना सँ नहि, पाइ सँ नहि वरन् कर्त्तव्य सँ उतारैत, अछि जाहिठाम भावना सन्निहित रहैत छैक। ओहि कर्त्तव्य भावनाक लेल माय कें दूधक संग संग संस्कार, प्यार, प्रेम आदरक पाठ पढ़ाबऽ पड़ैत छैक-दूधक संग घोंटाबऽ पड़ैत छैक। तखने माँक संग बेटो छटपटाइत अछि। माँक करेज मे दर्द उठैत छैक कि कत्तौ बेटा रहैक ओकर करेज मे वेदना आबि जाइत छैक। एहि अनुभूति कें हम भोगने छी।

एकरत्ती हमर मोन सहरसा मे खराब होइत छल कि चारू कात सँ बच्चा सभक फोन आबऽ लागैक। खास कऽ भावना कें तँ आश्चर्य छलैक जे हमरा खोखियो भऽ जाय तँ ओकर फोन आबि जाइक-मम्मी तों ठीक छीही ने?

एक दिन सर्वनारायण सिंह कालेज सँ क्लास लऽ आइल छबौं। थाकल छलहुँ, आँखि लागि गेल। लागल जे बंदना बड़ जोर सँ चिकरि उठल-मम्मीऽ हमर आँखि खुलि गेल। मोन बेचैन भऽ गेल। ओहि समय बंदना दरभंगा मेडिकल कालेज मे पढ़ैत छलीह। हम समय नोट कऽ लेलौं। दिनक बारह बजैत छल।

साँझ मे बंदनाकें फोन कयलौं-पीकू, तू ठीक छें ने? ओ प्रश्नक जबाब प्रश्न सँ देलक-किएक पुछैत छी? हम अपन सपना कहलौं। ओ कहलक हम बारह बजे दिन मे बस सँ जाइत छलहुँ बस मे नीक सँ चढ़बो नहि केलौं कि बस चलि देलक। बसक फाटक फटाक सँ कनपट्टी पर लागल हम जोर सँ चीकरि देलहुँ मम्मी- आब ठीक छह न बेटा? चोट दर्दो करैत छौक। मम्मी, हम तँ बिसरि गेलहुँ। तों सेहो बिसरि जो-

अपन यौवनक सभ बसन्त, राजीन उमंग कें अपन लध्य लेल समर्पित कऽ देने छल। बी.ए. करबाक बादे ओ इन्टरव्यू तक पहुँचि गेल। सभ पत्र मे नीक अंक

आयल इन्टरव्यू मे नीक अंक आयल। किन्तु, समाजशास्त्र मे एक पत्र मे 171 छल तँ दोसेर पत्र मे 71 छल। ओ बताह जकाँ करैत छल। नया नया कम्प्यूटरक इजाद भेल छल ओकर एतबे कहब छल जे कम्प्यूटर मे 171क। छुटि गेल 71 रहि गेल। ओ यूपीएससी मे रेफरेन्स देलक किन्तु किछु नहि फायदा। बहुत लोक रिट करबाक सलाह देलक-हम सभ हाइकोर्टक वकील ओतय दौड़ैत रहलहुँ-मुदा, एके जबाब-यूपीएससी जे निर्णय लैत अछि ओहि पर अटल रहैत अछि चाहे ओ सही हो वा गलत। ओ आइ धरि केस नहि हारल अछि। हारि जायत तँ जनताक विश्वास यूपीएसी पर सँ उठि जायत।

राजीव कें दिल्ली पठेबाक बाद एक बेर हम चैन सँ नहि सुतलहुँ। एक बेर सपना देखलौं जे अखबार आयल अछि मुख पृष्ठ पर लिखल अछि 'यूपीएससी रिजल्ट इनसाइड'। आ तकर बाद देखलौं जे राजू धरती पर-एक कोन मे अचेत पड़ल अछि।

आब तँ हमर नींद टुटि गेल, आँखि सँ अश्रुधार बहैत रहल, छाती मे दर्द, मोन मे छटपटी-राजू हमर बेटा, अहाँ कोना छी-अहाँ कें की भऽ गेल अछि? अहाँ तँ हमर सभक जान छी।

की भेल कोनो खराब सपना देखने छी की स्त्रो?– राजू हमर बच्चा बेहोश पड़ल अछि। हम की करी-आ सभटा सपना दोहरा देलहुँ- अहाँ हमर बच्चाकें बड़ दूर पठा देलहुँ महत्वाकांक्षा सँ भरि कें।

ई हँसि देलनि। महात्वाकांक्षी ओकरा हम बनएलौं? अरे हम तँ ओकरा डाक्टर बनवऽ चाहैत छलहुँ। ई बाट तँ स्वयं चुनलक आ बी.ए. करबाक बाद प्रथम बेर पीटी, मेन सभ मे आबि गेल। इन्टरव्यू चुकि गेल, कोनो बात नहि। ई ओकर दोसर प्रयास थीक। ओकर मेहनत फल देतैक ओकरा। हम तँ एतबे चाहैत छी हमर बच्चा सभ कोनो क्षेत्र मे रहैक तँ नम्बर वन बनि कें। सरिपों राजीव दिल्ली विश्वविद्यालय मे सीनीयर रीडरक संग एकाडमिक कानिसलक संग कतेक चीक सदस्य अछि अपन अखग आस्तित्व बनौने।

एक बेर घर मे नौकर नहि छल। बड़ परेशानी छल। तरुणा छोटकी कें एतेक काज करैत देखल नहि गेल। दादी कें प्रणाम करनाय छल। ओकरा संगे गोसांय कें सेहो प्रणाम छल-दिल्ली जेबाक समय आबि गेल छल ओकर।

मधुकर सँ मोटर साइकिल लऽ कऽ राजीव आ अनिल दुनू गोटे गाम चलि गेल। दस बजे राति मे घनघोर बरसा भऽ रहल छल। ओहि समय राजीव अनिल पहुँचल छल। मम्मी, सीरीयस एक्सीडेंट भऽ गेल। लंगड़ाय कऽ चलि रहल छल-

ओकर हाथ लहुलुआन छल। शोणित टपकि टपकि पक्का पर खसि रहल छल। खून देखतहि हम चीकरऽ लागलहुँ। अनिल जीक ठेहुना फूटि गेल छल। दूनू गोटे कें भरि देह छेछार आ चोट लागल छल। बगल मे डॉक्टर साहब रहैत छलाह। दौड़ि हुनका ओतऽ गेलहुँ। दरवाजा खटखटाइत रहलहुँ, केओ नहि खोललक। बड़ देर बाद खिड़की खोलि बजलाह-हम राति मे किछु नहि कऽ सकैत छी। कम्पाउन्डरों नहि अछि। अस्पताल लऽ जाउ।

दूनू पति पत्नी डॉक्टर छलाह, नीक पड़ोसी सेहो। किन्तु, हुनका मुँह सँ ई बात सुनि हम सन्न रहि गेलहुँ। किएक पढ़लाह इ सभ डाक्टरी? किएक ई संभ एहि पेशा कैं बदनाम करैत छथि जखन कि सेवा भावक प्रथम पाठ सीखैत छथि इ सभ।

फेर एकटा संबंधी डाक्टर कें फोन कयलौं तँ कहलनि रिक्शा कऽ आबि जाउ नहि तँ हम की कऽ सकैत छी। तखनहि मोन मे आयल हमर बंदना जँ डाक्टर बनि जायत तँ ओकरा कहब जतऽ अहाँक आवश्यकता होइत जानक चिन्ता छोड़ि जरुर ओकर उपचार मे चलि जायब। आइ बंदना, संगे जमाइ के पी सेहो राति बिरात पेशेन्ट लेल जान लगौने रहैत छथि। खाहे ओ शिवनगर हो आकि मलंगवा की इंगलैंड–

कखनहुँ काल सोचैत छी संबंधक निर्वाह अपन अहंकारक त्याग थीक । अहंकारक त्याग पूर्ण मानवक परिचय थीक जे समय आ स्थितिक गुलाम भऽ अलग-अलग तरीका सँ मानव-मन कें भ्रमित करैत अछि ? जाधरि हम सभ स्वभाव सँ 'फलेक्सेबल' लचीला नहि रहब ताधरि संबंध निभत कोना ? जिनगी जतेक छोट होइत अछि अहंकार ओतबे पैघ होइत अछि । जाधरि अहंकार खत्म होइत अछि ता मानवक आयु क्षीण भऽ जाइत अछि ? पाश्चाताप छोड़ि किछु नहि बांचैत छैक ! ओहि दिन लीली बाजल छलीह – पापा, हम सुनने छलहुँ, गुड्डू स्वीटी कें कहैत छल – मम्मी पापाक काज नहि छैक जे हमरा सभकें खुश राखथि। आब हमर सभक कर्त्तव्य बनि जाइत अछि जे हम सब कोना मम्मी पापाकें खुश राखी ? बाल्यकाल सँ पालि पोसि हमरा सभकें योग्य बनौलनि – आइयो वएह सोचथि जे छह भाइ बहीन कोना खुश रहत? ई हमरा सभ लेल लज्जाक बात होयत ।

सुनि कें हमर बदला हिनक आँखि नोरा गेलै छलैक? बेटा कें एतेक समझदारी छैक तँ पत्नी तँ ओकर अनुगामिनी हेबे करतीह ?

सरिपों, रिश्ता नाता एहेन कोमल वस्तु होइत अछि जे कोमल शब्दो सँ कखनों काल चोट लागि जाइत अछि।

विद्यावारिधि बनि गेल पी.एच-डी.

स्मृतिक घोघ सँ कनियां जकाँ हुलकी देबऽ लगैत अछि अतीत आ हम अतीतक घोघ उठबैत छी कि देखा पड़ैत अछि विद्यावारिधि दिनराजी डाक्टर सँ एम. ए., पी.एच-डी. धरिक एकटा अश्रान्त विकल यात्रा –

कोन घटना सँ जीवन मे कोन मोड़ आबि जाइत अछि, जेना जीवन चक्र उनटा घुमऽ लगैत अछि, कोनो घटना आगतक पूर्व पीठिका बनि जाइत अछि। ई केओ नहि जनैत अछि....

1977 क साँझ हम दरभंगा मे छलहुँ । डा० दिनराज शांडिल्य विद्यावारिधि क मानद उपाधि लेल दीक्षांत समारोह मे हमरा दरभंगा बजौने छलाह –। शांडिल्य जी लेल पता लागल जे ओ मैथिली विश्वविद्यापीठक कुलपति छथि ! हम मैथिली मे धारा प्रवाह लिखि रहल छलहुँ ! ओहि समय हमर कथा-कविताक बाढ़ि जकाँ आबि गेल छल । मुदा, हम मैथिली भाषा या साहित्यक पूब पच्छिम, उत्तर दक्षिण किछु नहि जनैत छलहुँ जे एहि भाषा मे कतऽ की अछि, कतऽ कोन राजनीति वा कि रणनीति – हमरा एहि सभ सँ प्रयोजने की छल – बस हमर लेखन आ मैथिली पत्र पत्रिका सभ।

दीक्षान्त समारोह दरभंगाक हनुमान मंदिर लग छल। बड़का शामियाना लागल, दरी जाजिम बिछल, माइक सभ लागल। लोक सभ आबि जा रहल छलाह ! हम वर्माजीक संग छलहुँ! हमरा सभक स्वागत बड़ आवेश सँ भेल ! मायानंद जी आदि साहित्यकार पर दृष्टि पड़ल तँ जान मे जान आयल जे ठीक स्थान पर छी हम किन्तु, कनिक काल उपरांत मायानंद जी कें नहि देखि अचरज भेल – ध्यानो नहि रहल ! भीड़ मे उमड़ल थपड़ीक स्वर तरंग पर विद्यावारिधिक उपाधि हम ग्रहण केलौं – सभक बधाइ आ आशीर्वादक संग सहरसा आपस आबि गेल छलहुँ –

हमर समस्त परिवार मे, एहि उपाधि सँ खुशीक लहरि दौड़ि गेल ! किछु साहित्यिक दोस्तगणक सलाहक अनुसार हम एहि खबर के मिहिर मे प्रकाशनार्थ पठा देलहुँ।

मिथिला मिहिरक सम्पादक छलाह सुधांशु शेखर चौधरी। प्रकाशित हेवाक तीन चारि बरिसक बाद पहिल बेर हमर भेंट भेल छल चौधरी जी सँ! साइत ई भेंट

हमरा लेल इतिहास बनि गेल। शुभ्र तन, शुभ्र बसनक संग संग पारदर्शी स्नेहशील व्यक्तित्व कतौ कोनो दुराव छिपाव नहि! जे भीतर छल वएह बाहर - क्रिस्टल सन साफ, निश्छल, निष्कलुष ! तखन तँ ओ मिहिरक माध्यम सँ कतेको साहित्यकार कें उजागर केलन्हि जाहि मे एकटा हमहूँ रही - '77 धरि सुधांशु जी बड़ वृद्ध भऽ गेल छलाह आ मिहिर - परिवार बदलि गेल छल ....।

विद्यावारिधिक खबर हम पत्र लिखि मिहिर कें पठा देलहुँ। एक पंक्तिक छोट सन पत्र ! किन्तु, हमर कोमल मन कें ओहि समय कतेक चोट लागल छल जखन मिहिरक फगुंआ अंक मे हमर पत्र कें जहिना छल ओहिने छापि देल गेल! एतबे नहि, हमरा होलीक उपाधि देल गेल 'दिनराजी डाक्टर'' ! ई हँसी, उपहास हमरा कतेक तीत लागल छल ई केओ सहृदये बुझि सकैत छथि - बलि पशु सन आहत भऽ छटपटा गेल छलहुँ - आखिर किएक एतेक तीत मजाक हमरा संग कयलक मिहिर परिवार? अपन समस्त लेखन हमरा फूसि लागऽ लागल आ मोन पड़ि गेल–73 वा 74 ई0 मे प्रथम बेर विद्यापति पर्व के अवसर पर हम मंच पर सँ कविता पाठ केने छलहुँ - पाठक उपरान्त केओ बजलाह - अहाँ कें हरिमोहन बाबू बजा रहल छथि .... हमर हाथ मे जेना खुशीक ताजमहल आबि गेल दस हजार श्रोता दर्शकक भीड़ मे हम हुनका कहियो नहि खोजि पाबितौं - हुनकर हम मुँह बोली दुलारू बेटी रही - हमर दुरागमन मे ओ आ काकी कतेक कानल रहथि हमरा आशीर्वाद दैत दैत ....। आबऽ आबऽ शेफालिका - हम हुनक चरण रज माथ पर राखलौं - दस वर्षक बाद भेंट भेल छल - ओ बड़ वृद्ध लगैत छलाह - तों मल्लिक जीक बेटी छह ने ? - हँ कका - आ तोहर ओ बड़की बहीनी कतऽ छह रजनी - ? हमर हृदय सँ एकटा निसाँस निकलल - तँ सरिपों ककाजी एतेक वृद्ध भऽ गेलाह - हुनकर पएर लग हम धरती पर बैसि गेलहुँ - कका जी हमही रजनी छी रजनी ! घर मे रजनी बाहर - अहाँ हमरा विसरि गेलहुँ - हमर बात मुँहे मे रहल। कका जी हमरा भरिपाँज पकड़ि लेलनि - अपूर्व स्नेहक निर्झरणी सँ सिक्त करैत बजलाह - तों रजनी छह - ? तों एतेक पैघ कवयित्री भऽ गेलह - ? हमर नयन सजल भऽ गेल, हृदय भरि आयल ! आनन्दक नोर जकरा लेल कोनो शब्द नहि, कोनो आखर नहि छल। जखन हमरा स्वर्णपदक देवाक निर्णय भेल छल तँ काकाजीक समस्त परिवार ओहि रानीघाट निवास मे हमरा हर्ष मे तीतेने छल ! राजमोहन जीक धर्मपत्नी हुलास सँ बजलीह - अहाँक कथा छोड़ि हम ककरो कथा नहि पढ़ैत छी ताहि लेल ई हरदम यानी राजमोहन जी हमरा चिढ़बैत छथि अहाँ खाली महिलाक कथा पढ़ैत छी - नजदीके मे ठाढ़ रत्ना रमाक गाल पर सिनेहक गुलाब खिलखिलाय रहल छल किन्तु राजमोहनजी? चाचीसँ एतेक सिनेह भेटैत छल मुदा, सौखे लागल

रहि गेल जे कहियो राजमोहनजी विश्वास आ सिनेहक संग हमर आगू हाथ पसारि कहितथि बहीन राखी ?–हमर पहिल कविता 'प्रवास प्रतीक्षा' मिहिरमे 61 ईस्वीमे प्रकाशित भेल। हमर नामक बगलमे ब्रैकेट मे (नवीन लेखनी) लिखल छल ? लगले दोसर कविता 'विस्मृत फुलडाली' दोसर मासमे छपि गेल जाहिमे नवीन लेखनी हँटि गेल। तखन हम पटना वीमेन्स कालेज मे बी.ए. हिन्दी सम्मानक छात्रा छलहुँ। फेर तँ हमरा कविताक नशा चढ़ि गेल, लगातार छपिते रहि गेलहुँ। जिनगीमे हमरा 'ब्रेक' हमरा 'मिहिर' देलक। प्रथम कथा 'झहरैत नोर बिसुकैत ठोर' वैदेहीमे साइत तिरसठ ई० मे छपल छल, लगले मिहिरमे 'हारल जुआरी' प्रकाशित भेल। हम कथा कविताक संसार मे जीवैत छलहुँ आ विशाल परिवारक काज यंत्रवत करैत रहैत छलहुँ। घर मे केओ नहि बुझैत छल जे मोने मन हम कतेक कविता बना रहल छी। काश! सभटा कागज पर उतारि सकतौं- कतेकोक भ्रूण हत्या भऽ गेल तँ कतेको जनमो लऽ लैत छल– हमर तन मनक एहेन संतुलन छल जे केओ ककरो पर हावी नहि होइत छल अपन-अपन बाट छल अपन अपन दिशा। एक बेर हम वीमेन्स कालेज सँ क्लास कऽ घर अयलौं तँ ज्ञात भेल जे घरक सभ केओ बगलमे पूजा मे गेल छथि? हमहु जल्दीसँ तैयार भऽ ओहिठाम चलि गेलहुँ। सत्यनारायण भगवानक कथा भऽ रहल छल? अचानक बीचे पूजामे एकटा कविता जनम लेमऽ लागल- हम छटपटाय लगलहुँ। एकटा नेनासँ कलम लऽ अपन तरहत्थीसँ लऽ कऽ सौंसे हाथमे कविता लिखि लेलौं- हमर मोनक कोमलवृन्तसँ अहाँ निज नेह-गेह निर्माण केलौं- हमर भावना कें वरि हमरे पर शर-संधाण केलौं- एहिना एक बेर रातिकें गाममे नाह पर दीअर ननदि संग झिलहरि खेलैत छलहुँ कि अचानक कविता जनम लेमऽ लागल। हम जयबाबू मोहनजी सँ चुपचाप कहलहुँ एक रत्ती नाह कात लगा दियऽ हम तुरत अबैत छी- दौड़ल अपन कोठरीमे गेलहुँ- चुपचाप कविता कागज पर उतारि देलहुँ- अपराध हमर माफ करब, हम छी अन्हारमे, कूल कतौ भेटि जायत चलइत मझधार। मे दोसर दिसि नीरजा रेणुक पत्रक पाती सभ स्मृति मे नाचऽ लगैत अछि - 'हम अहाँक कथा कविता पढ़वा लेल बौरायल रहैत छी - शुक्र करू जे अहाँ स्त्री छी नहि तँ हमर आंगन मे महाभारत मचि जैतैक'......... फुसि - फुसि सभटा फुसि मिथिला मिहिर मे प्रकाशित नीरजाक आलेखक किछु पांती आगूमे फड़फड़ करय लागल.....'कथा शिल्पक दृष्टिसँ श्रीमती शेफालिका वर्माक कथा पूर्णतः भावपूर्ण आ सशक्त होइत अछि– हिनक पचीसो कथा मिथिला मिहिर, अग्निपत्र तथा आखर आदि पत्रिकाक माध्यमसँ पाठकक समक्ष उपस्थित भऽ चुकल अछि। हिनक कथा मे नारी हृदयक कोमलता आ औदात्यक दिग्दर्शन सम्यक रूपमे होइत अछि जाहि मे रहैत छैक गतिशील सांसक लय तथा जीवनक आकर्षण बिन्दुक प्रति हृदयक अस्फुट मधुर आ गुंजायमान ध्वनि। ई युगयुग

सँ आबि रहल नारी सौंदर्यक ओहि रूपकें नहि स्वीकार करैत छथि जकर लक्ष्य विलासिताक प्रदर्शनमात्र होइत छैक। एकरा संगहि ई स्त्री पुरुषक पारस्परिक आकर्षणकें सेहो अस्वीकारैत नहि छथि वरन ओहि आकर्षणकें मर्यादाक सीमारेखामे आबद्ध रहब स्वस्थप्रद मानैत छथि।

''स्त्रीक रूप सँ आकर्षित भऽ पुरुष किछु कऽ देखेबाक....अपूर्व सुन्दरताक शृंगार करैत अछि-'' हिनक एकटा कथाक ई पंक्ति उच्छृंखल प्रणयक प्रति विरोध करैत अछि। एहि भौतिकवादी युगक व्यस्त जिनगी आ नारीक कोमल, भावुक हृदयक बीच होइत संघर्ष ई अनेक कथाक माध्यमसँ जेना 'नोरक उसांस' (मिथिलादूत कथा अंक), 'हरिहर कागजक एकटा मन:स्थिति' (सोना माटि) आदि कथाक माध्यमे बड़ रोचक आ मार्मिक ढ़ंगसँ व्यक्त केने छथि। हिनक कथामे निर्वैयक्तिकता (सेल्फ डिटेचमेंट) अंग्रेजीक लेखिका ज़ेन आस्टेन जकॉ रहैत अछि। हिनक प्रतिभा हिनका मैथिली अकादमी द्वारा म.म. उमेश मिश्र स्मृति स्वर्ण पदक देआय 1974क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिका घोषित करौलक। हिनक एकटा कथा संग्रह शीघ्रे पाठकक समुक्ष उपस्थित होयत। मैथिलीक पाठक वृन्द हिनकासँ बहुत किछु आस रखैत अछि... आ फेर आगू मे पन्ना फड़फड़ा जाइत छल मिहिरक - ''दिनराजी डाक्टर'' ओहियो सँ बेसी हमर पत्र कें यथावत् छापि देनाय।

किन्तु, प्रत्येक घटना पूर्व - पीठिका बनैत अछि आगत केर - प्रत्येक बुराइक पाछाँ अच्छाइक स्वर्णिम किरण नुकायल रहैत, अछि ! - आ आइ हम ऋणी छी 'मिहिर क' ओहि व्यंगक जे हमर जिनगी कें नव मोड़ देलक-1962 मे हम पटना विश्वविद्यालय सँ हिन्दी सम्मान क संग बी.ए. केने छलहुँ ! विश्वविद्यालय मे पन्द्रहम स्थान छल हमर ! बी.ए. आनर्स करबाक बाद पढ़ाइ छोड़ि देलहुँ ! एक तँ वर्माजी सहरसा मे वकालत आरंभ कऽ देने छलाह आ बच्चा सभ छोट छोट छल ! किन्तु, मिहिरक एहि फगुआ अंकक कारण वर्माजी हमरा हरदम उत्साहित करैत छलाह था उकसावैत छलाह- अहाँ एम०ए० करू, पीएच०डी० करू - डाक्टर बनि देखा दिऔक - की अहाँ मे डाक्टर बनबाक क्षमता नहि अछि ? - किन्तु, हमर मनोबल खसल छल कि अचक्के एक दिन चन्द्रभूषण हिनकर पिसिऔत भाइक बेटा सहरसा एलाह ! ओ अंग्रेजी सम्मान सँ बी०ए० केने छल आ एम०ए०क फार्म भरबा लेल छल ! हम एम.ए. ओहिनो अनठा देने छलहुँ। मोनमे होइत छल लोक कहत बर खाली बी.एस-सी आनर्स, बी० एल० छैक कनियां बरसँ बेसी पढ़ल एम.ए. पास। ओहि समयक ई समाज छल- आ हम समाजकें अपना लेल मानैत छलहुँ जे परिवारक मर्यादा भंग नहि हो आ तखन ई कतेक हमरा समझे लेन्हि- अहाँक धारणा बड़ गलत अछि? जखन हमही अहाँकें कहैत छी तँ आन सँ कोन काज ?

हिनकर जिद्द भऽ गेल अहूँ लाल संग एम0ए0 क फार्म भागलपुर विश्वविद्यालय सँ भरि दिऔक - ओहि समय लाल यानी चन्द्रभूषणक पिता जगदीश भैया भागलपुर मे इन्डस्ट्रीज एक्सटेंशन आफीसर छलाह! आब हम पटना विश्वविद्यालय सँ स्वतंत्र रूप सँ परीक्षा नहि दऽ सकैत छलहुँ - कानूने नहि छल। हमरा बी0ए0 केनाय अठारह बरस भऽ गेल छल ! अठारह बरसक अन्तराल - कोना हम तैयारी करब - कोना फेर सँ पढ़ाइ शुरू करब।

आ अंत मे लाल आ वर्माजी दुनू क जिद्दक आगू हम हारि मानि लेलौं आ फार्म भरि एम0ए0 क परीक्षा लेल तैयार भऽ गेलहुँ ! घर मे हलचल मचि गेल मम्मी परीक्षा दऽ रहल अछि - नहि तँ पढ़बाक समय आ नहि तँ कोनो अंकपत्र ठेकनायल छल - कहियो ईहो सभ काज देत - सोचने नहि छलहुँ - अल्हड़ बेफिक्र जीवन अपन संयुक्त परिवार लेल समर्पित छलहुँ आ तकर बाद कथा कविताक संसार - ओना हमर लिखबाक अंदाजो अलग छल - एक बेर जे कथा लिखबा लेल बैसैत छलहुँ से बिना खत्म केने उठैत नहि छलहुँ - कोनो बच्चा पानि मांगि दैक वा दीअर सभ जलखै, हम यंत्रवत काज कऽ दैत छलहुँ फेर बैसि जाइत छलहुँ लिखबा लेल । - आ फेर बिनु काट-छांट कें ओहिना पत्रिका मे पठा दैत छलहुँ ! प्रकाशित कापी अबैत छल, अड़ोस पड़ोस - चाची अहाँक कथा छपल हम पढ़ि कें घुरा देब - आ पत्रिका कतऽ चलि जाइत छल से हमरा ध्याने नहि रहैत छल।

एम0ए0क प्रोग्राम निकलि गेल छल। प्रत्येक पेपरक मध्य सात दिनक अंतराल छल। ओहि समय राजीव बी0ए0 मे दिल्ली वि0वि0 मे छल। भावना आइ0ए0 मे पटना वीमेन्स कालेज, मे बंदनाक मैट्रिकक परीक्षा छल - भरि दिन सभक काज कऽ राति मे 9.10 बजे सँ बंदनाक संग पढ़ाई शुरू करैत रही। एक दुई बजे राति तक दुनू माइ बेटी पढ़ैत छलहुँ - फेर पॉच बजे उठि दैनन्दिन काज ! तैयारी नहि भऽ सकबाक कारण हम एहि सात दिनक अंतराल मे पढ़ि परीक्षा देबाक सोचलौं! हिन्दी भाषा पर अधिकार हमरा नेनपने सँ छल तें हम तैयारो भेलहुँ परीक्षा लेल ! पापा कहैत छलाह - रजनी भाषा कें नचबैत अछि। ओहि काल भागलपुर विश्वविद्यालयक अध्ययक्ष छलाह डा0 शिवनंदन प्रसाद। 80 क नवम्बर मे हमर परीक्षा आरंभ भेल - वर्मा जी अपना संगे हमरा भागलपुर लऽ गेलाह परीक्षा दियाबऽ लेल ! ओहि समय शिवनंदन बाबू सँ भेंट भेल तँ ओ बजलाह ई अहाँक दुस्साहस थीक रजनी जे अहाँ सात दिनक तैयारी मे मास्टर डिग्रीक परीक्षा देब ?

हम तँ हतोत्साह भऽ गेल छलहुँ किन्तु हिनकर विश्वास हमर प्रतिभा पर अटूट छल - पहिल दिनक परीक्षा मे हम कने नर्वस छलहुँ । अठारह साल बाद आयुक एहि दौर मे हम परीक्षा हाल मे बैसल छलहुँ - हम अपन क्रमांक आदि

भरि रहल छलहुँ तँ हमर बगल मे वीक्षक आबि ठाढ़ भऽ गेलाह। हम ओहिना अनमन सन हुनका सँ पुछि बैसलौं - एहिठाम देवनागरीए भरल जायत ने - जेना हम स्वयं सँ पुछि रहल छलहुँ ओ वीक्षक जाइत जाइत ठमकि गेलाह - 'अंय की बाजलौं - हँ, देवनागरीए भरल जायत आ फेर ओ बड़बड़ाइत ओहि ठाम सँ चलि गेलाह - इहो नहि बुझल छैक आ चलि अबैत छथि परीक्षा देबा लेल एम.ए. क -

हमरा लेल हुनक कहल बात जहर भरल तीर छल जे सीधा हमर - कलेजाक पार भऽ गेल आ मन मानस कें आहत कऽ गेल ! प्रश्न पत्र बँटि चुकल छल किन्तु हम माथ पर हाथ नेने कखनो शिवनंदन बाबूक बात सोचि रहल छलहुँ तँ कखनो वीक्षक महोदयक उक्ति - आस्ते आस्ते हिनकर ध्यान, आशपूर्ण चेहरा आँखिक आगू नाचऽ लागल आ हमर डगमगाइत आत्मविश्वास पुनः घुरि गेल - करीब आधा घंटा बाद हम प्रशन पत्र देखलौं तँ मुड़ी उठेबाक मौका नहि भेटल ! हमर प्रिय विषय छल - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' - अबाध गति सँ हमर लेखनी चलि रहल छल जेना माँ सरस्वती हमर कलम मे बसि गेलीह - जहिना वार्निंग घंटी बाजल हम कापी ओहि सुदर्शन व्यक्तित्वक स्वामी सुन्दर वीक्षकक हाथ मे दैत बजलौं - अहाँ हमर कापी देखि लियऽ । एहि मे यदि कोमा, फुलस्टाप स्त्रीलिंग पुल्लिंग कोनो तरहक त्रुटि भेटि जायत तँ हम एम.ए.क परीक्षा देनाय छोड़ि देब।

ई छल हमर आत्मविश्वास - हम मिथिला विश्व विद्यालय सँ फार्म नहि भरने छलहुँ जे सभ शेफालिका वर्मा कें चिन्हैत रहथि! भागलपुर वि.वि. सँ एहि लेल फार्म भरलौं जे ओहि ठाम कमे लोग हमरा जानैत होत तें हम नुका कऽ परीक्षा दऽ रहल छलहुँ । हमरा लाज लगैत छल जे लोक जानत तँ कहत शेफालिका वर्मा एम. ए.क परीक्षा दऽ रहल छथि। योगानंद हीरा तखन भागलपुरमे छलाह- निरंतर संपर्क मे, उत्साहितो करैत छलाह- बेर-बेर पुछितो छलाह- कथी लेल एम.ए. कऽ रहल छी?

शुरूक परीक्षा मे तँ हम सहरसा जा आबि परीक्षा दैत छलहुँ, परीक्षा खत्म होइतहि वापस सहरसा जाइत छलहुँ ! सहरसा मे तँ बच्चा सभ, परिवार ओझरा जाइत छल हमरा बिन ! खास कऽ ई अपना हमरा बिनां नहि रहि सकैत छलाह - अजीब जिद्द छल हिनक ! किन्तु, बाद मे हमर देह हाथ टूट्य लागल बेर बेर सहरसा भागलपुर एनाय गेनाइ।

दुइ तीन पत्रक परीक्षाक बाद हम भागलपुरे रहऽ लागलहुँ। - पता नहि कोना सभकें पता लागि गेल हम भागलपुर मे छी आ रविकांत नीरज, ध्रुव गुप्ता सभ बासा पर खोज पुछारि करैत करैत पहुँचऽ लगलाह। हमर लाख मना करबाक बादो ओ सभ कथा-कविताक-गोष्ठी मे हमरा लऽ जाय लगलाह। हम भैंसुर दिआदिनीक कठोर

गार्जियनशिप मे रहैत छलहुँ। फूलभौजी बिगड़ि जाइत छलीह अहाँ परीक्षा देबऽ आयल छी कि कविता पढ़य- ओहि क्रममे कहलगाँव कालेजक प्राचार्य आ प्रसिद्ध इतिहासविद् डा० राधाकृष्ण चौधरी सँ भेंट भऽ गेल। ओ हमरा बासा पर बजौलनि। संबंध मे ओ हमर भैंसुर सेहो लगैत छलाह-समस्त परिवार हमरा प्रेम सँ घेरि लेलनि हम माथ पर सँ साड़ी रखने छलहुँ- अहाँ किएक परीक्षा दऽ रहल छी! नौकरीक आवश्यकता छल तँ अपन कालेज मे हम मैथिलीक व्याख्याता मे अहाँ कें राखि लितहुँ - अहाँक एतेक नाम भऽ गेल अछि जे कंओ अपन कालेज मे खुशी-खुशी अहाँ कें रखबा लेल गौरवक अनुभूति करत !

हम हुनका नहि कहि सकलौं जे रमेश झा सेहो अपन कालेज मे योगदान लेल कहने छलाह मुदा, हुनक आशीर्वाद, उक्ति सभ सुनि हम स्वयं कें बड़ भागवन्त बुझए लागलहुँ।

गंगेश गुंजन भागलपुर रेडियो स्टेशन मे पदस्थापित छलाह। ओ एक दिन पुछि देलनि जे अहाँ तँ हरदम हँसैत रहैत छी, कथा कविता किएक एतेक वेदनापूर्ण होइत अछि - हम फेर हँसि देने छलौ- हमरा लग उत्तरे की छल, किन्तु, हुनका ओतऽ प्रेमपूर्ण भोजन हम आ वर्माजी केलौ। ओ कहऽ लगलाह कोना मैथिलीक स्थान पर अँगिकाक आविर्भाव आस्ते आस्ते अंगेठी लऽ रहल अछि - एकटा चेतना अंगिका लेल जन मानस मे अवतरित भऽ रहल अछि!

एक दिन अनायास रविकांत कहलक - दीदी, हमर चाचाजी छथि एहिठाम हिन्दी विभाग मे प्रोफेसर ! ओ अहाँक कथा-कविताक बड़ पैघ प्रशंसक छथि । अहाँक विप्रलब्धाक कविता सभ पढ़ि हुनक आँखि नोरा जायत छैक। हम हुनका कहलियैन्ह जे अहाँ एहिठाम परीक्षा दऽ रहल छी। ओ अहाँ सं मिलबा लेल उत्सुक भऽ गेलाह । हम हुनका कहलियैन्ह परीक्षा खतम भऽ जेतैक तखन अहाँ सँ भेंट अवश्य कराय देब। हमरा हँसी आबि गेल, हम नीरज सँ पहिनहि कहने छलहुँ जे भाइ अहीं हमरा कवि गोष्ठी सभ सँ बचा सकैत छी।

भागलपुर मे जेँकि हमर जन्म भेल छल, फेर पापाक पोस्टिंग '55 मे भागलपुर मे भेल छल तें हमरा बड़ प्रेम छल एहि शहर सँ ! जखन परीक्षा देमऽ आयल छलहुँ तँ सभ सँ पहिने बंगाली टोला गेल छलहुँ - कतऽ शरतचंद्रक घर अछि जकर बगलक कोनो घर मे हमर जनम भेल होयत! तखन हमर छोट बहीन सारिकाक वियाहे भेल छल, पंकजजी कतौ बाहर गेल छलाह, हम वर्माजीक संग अचानक ओकर घर पर पहुँचि गेलहुँ - सुखद विस्मय आ उल्लास सँ सारिका उमंगित भऽ गेल छलीह ! पंकजजी सेहो आबि गेल छलाह- हम चारू गोटे आनन्द होटल मे

भोजन करबा लेल गेलहुँ। फेर शरतचंद्रक घरक बगल मे अपन जन्मस्थान खोजैत रहलहुँ – पापा माँ साथ मे रहितथि तँ बता दितथि ! गंगाक लहरि-लहरि सँ पुछैत रहलहुँ – बस शरदक घरक माटि माथ मे लगाय लेलौं-

वर्माजी हमरा सँ बेसी खुश छलाह – रनियाक जनम एहि पावन स्थल पर भेल अछि आजुक डा0 मानिक सरकार रोडक बगलक कोनो स्थान पर।

हमर परीक्षा खत्म भऽ गेल छल । हम मुक्त भऽ गेलहुँ वर्माजीक देल वचन सँ – परीक्षा देवाक बचनकेर बन्धन सँ – आखिर हिनकर जिद्दक कारण हम एम.ए.क परीक्षा दऽ देलहुँ – रिजल्ट जे हो ! ओना कतेको साहित्यकार हमरा कहैत छलाह जे एहिठाम सँ जे साहित्यकार एम.ए.क परीक्षा देने छथि हुनका 'थर्ड क्लास आयल छन्हि। एहि सभ बात सँ हम एकदम त्रस्त भऽ जाइत छलहुँ – लगैत छल जेना 'विद्यावारिधि' जकाँ ईहो प्रकाशित भऽ जायत 'शेफालिका वर्मा कें थर्ड क्लास भेटल' – आ अपना आप पर हँसी सेहो आबि जाइत छल – परीक्षा खतम भेलाक उपरान्त नीरज आयल – दीदी आइ अहाँ हमरा संग चाचाजी सँ भेंट करबा लेल चलू – हम आनन्दित छलहुँ मुक्तिक उत्साह भरल छल हमरा मे। रविकांत कें हम कहि देलौं आ अपराहन मे लालक संग बूढ़ानाथ स्थित प्रोफेसर साहबक आवास पर पहुँचलौं रविकांत नीरज पहिनहि सँ छल !

हम सभ ड्राइंग रूम मे बैसल छलहुँ प्रो० झा भीतर सँ निकललाह – शिष्टाचारवश हम उठि के ठाढ़ भऽ गेलहुँ – किन्तु ई की – ? ओ हमरा देखि रहल छलाह हम हुनका – कतऽ कतऽ सँ चलि अबैत छथि एम.ए.क परीक्षा देबा लेल . ... नीरज आ लाल हमरा दुनू गोटे कें हतबुद्धि जकाँ ताकि रहल छलाह प्रोफेसर साहब कल जोड़ने ओहिना लाजे काठ भेल छलाह – हम तुरत स्थिति कें हल्लुक कऽ देलहुँ। हँसैत बाजलौं – देखू, अपना सभक परिचय कतेक 'शानदार' रहल, एकदम जीवंत, यदि नीरज अपना सभक परिचय करितैक तँ कोनो महत्व नहि रहितैक तखन सुदर्शन व्यक्तित्वक स्वामी प्रोफेसर साहब सहज भेलाह – बड़ शांत, मधुर स्वर मे कहऽ लगलाह – जनैत छी, ओहि दिन हम अहाँ कें बाजि तँ देलहुँ तकर बाद स्वयं पर बड़ तामस उठैत रहल, किएक परीक्षा काल हम एना बाजि देलहुँ – संपूर्ण परीक्षा काल हम अहाँ कें देखिते रहि गेलहुँ, पछताइत रहलहुँ! किन्तु, जखन अहाँ कापी दऽ चलि गेलहुँ – हम परीक्षा देनाय छोड़ि देब'- तँ राति मे नीन नहि आयल, पता नहि के हेतीह? स्वतंत्र रूपे परीक्षा देबा लेल तँ कतेक तरहक लोग अबैत छथि!

आ फेर वस्तुस्थिति जानि नीरज आ लालक ठहाका, हमर सभक हँसी सँ बूढ़ानाथक घड़ी घंट बाजऽ लागल, गंगाक लहरि गुनगुनाबऽ लागल ।

एम.ए. रिजल्ट निकलल नहि कि हमरा सर्वनारायण सिंह, रामकुमार सिंह कॉलेज सँ हिन्दीक व्याख्याता लेल साक्षात्कारक पत्र आबि गेल। हम जनैत छलहुँ जे ई सभ हिनकें करस्तानी थीक। ओहि दिन दोकान पर रामबहादुर बाबू प्राचार्यकें देखा बजने छलाह हिनके कॉलेज मे अहाँकें बच्चा सभ कें पढ़ाबऽ पड़त- बात हँसी मजाक मे खत्म भऽ गेल छल। हँसीए हँसी मे हम आवेदन देने छलहुँ तकरे उत्तर मे इतिहासक व्याख्याता जनार्दन सिंह ई पत्र आयल छलाह वर्माजीक जिद्द, संगे कालेज गेलाह प्रो. अरुण सिंह आयल छलाह विशेषज्ञ बनि। समूचा गवर्निंग बाडी, महेन्द्र सिंह मस्ताना सभ भरल रहथि। अरुण सिंह बजलाह हम तँ हिनका सँ जूनियर छी-की पूछब? जयनारायण सिंह बजलाह-अहाँ हिनका सँ हिनकर नामक अर्थ पुछियौक-सभ केंओ कहऽ लगलाह हँ, हँ एकदम ठीक आ तखन हम अपन नामक परिचय देने छलहुँ- पहिने तँ शेफालिका संस्कृत शब्द थीक जकरा मैथिलीमे सिंगरहार, बंगाली मे सिउली, हिन्दीमे हरसिंगार, तमिल मे पगलामाल्ला मराठी मे प्राजक्ता आ अंग्रेजी मे निक्टेनथस कहल जाइत अछि। अंग्रेजीक एकटा विद्वान डा० जे.एच. क्लार्क कहने छथि–Nyctanthes (Shefalika) is a small tree of the jasmine family, having brilliant, highly fragrane flowers, white yellow, which do not expand till evening & which fall off about sunrise. Thus turing the day the plant loosed all its bightness & hence is called the sad tree (Arbor - tirstis) Nyctanthes means. Night flowering.

हमर नामक व्याख्या सुनि सभ केंओ आश्चर्यचकित भऽ गेल छलाह। जखन इन्टरव्यू दऽ कऽ वापस बासा पर लौं तँ माँ ओहिठाम छलीह। बिना सासु ससुरक आज्ञाकें हम कहियो नौकरी नहि करितौं भनहि ई कतबौ तमसाथि। जाहि गृहथिकें बनेवामे, सभक प्यारक प्राप्ति लेल हम कतेक सहलौं ओकरा फेर नष्ट केनाइ खत्म कहि हम साँसे नहि लऽ सकैत छलहुँ। लेकिन हिनको दुखी नहि कऽ सकैत छलहुँ।

बाबूजीक भय नइि छल। बाबूजी हमरा आब आगू बढ़ाबय चाहैत छलाह। मुदा माँ-? हम उपाय निकाललौं। माँक कमजोरी सभ जनैत छलहुँ- चुपचाप माँ लग बैसि गेलहुँ- माँ देखथुन ने हिनकर बेटा हमरा नोकरी करबा लेल कहैत छथि। अँय- माँ चौंकि गेलीह- नोकरी ? हँऽ माँ, कओलेज मे पढ़यबा लेल–से किएक ? माँ ओहिमे हमरा दरमाहा भेटतैक महीना महीना – हम माँक कमजोर नस पर हाथ राखलौं-

अँय, दरमाहा भेटत ? माँक चेहरा पर हँसी आबि गेलैक- तखन किएक ने करब नोकरी। ठीके तँ कहैत अछि ललनी- फेर हम ठुनकइत बाजलौं-

माँ ओहि मे खाली लड़के सभ पढ़ैत अछि- माँ फेर ठकमकयलीह- अँय

खाली लड़के ? माँ गुम्म भऽ गेलीह- हमहू गुम्म- छोड़थु ने माँ- की हेतैक दरमाहा तरमाहा- नइं नइं कनिया लड़का छैक तँ की हेतैक अहाँ केँ तँ पढ़ेनाइ अछि ने बुझबै राजू, मोहन जी सभकेँ पढ़ा रहल छी। हम अन्तिम पासा फेकलौं फेर ठुनकइत बजलौं माँ- बाबूजी बिगड़ि जेथीन-एह बाबूजी किएक बिगड़ताह ? हम छी ने ? फेर बाबूजी मानितो अहाँके कतेक छथि। बीतल बातकेँ नहि सोचू कनियां। अहाँके ललनी सहरसा लऽ अनलक बीहरा सँ तेँ ने तमसायल रहथि। आब तँ कनिया कनिया सभ बात मे बजैत छथि।

हमर मोन शांत भ' गेल-81मे कालेज मे योगदान देलहुँ सितम्बर मास मे-डेढ़ सय प्राध्यापक मध्य हम असगर प्राध्यापिका छलहुँ। सभ बजैत छल, हिन्दीक माथपर बिंदी लागि गेल। हमहूँ जबाब देने छलहुँ- बिन्दी सौभाग्यसूचक होइत अछि। हिन्दी विभागक संगे समस्त कालेजक सौभाग्य बढ़ि गेल। शहर जकाँ सहरसा मे साइत घूमकेतू जकाँ एकटा स्त्रीक उदय भेल- बी.ए. पास कवि सम्मेलनक कवयित्री, लाइफ इन्श्योरेंस-एजेंट, नगर आयुक्त, जेपी आंदोलनक नेत्री, आब कॉलेज मे प्राध्यापिका पहिने लोकक आँखि मे हमरा लेल संशय असंशयक, व्यंगक प्रश्न चिन्ह रहैत छल, आस्ते आस्ते लोकक दृष्टि मे हमरा लेल अपार स्नेह, श्रद्धा, सम्मान भरि गेल छल जकर हम ऋणी छी। ओना प्राध्यापिका होइत-होइत सहरसाक हवा पानि सभ बदलि गेल छल। सहरसामे रमेश झा महिला कालेज खुलि गेल छल। महिला सभ घरसँ बाहर आबि नोकरी करऽ लगलीह। रंग रूप परिवर्तित छल किन्तु सोच?-आब ई मोन पाड़य लगलनि- अहाँ अपन लक्ष्य बिसरि गेलहुँ- 'दिनराजी डाक्टर' अहाँ छी एखन धरि- किन्तु, आब तामस नहि उठैत छल- हँसी अबैत छल। पटना गेलहुँ- मोन मे पहिने सोचि नेने छलहुँ जे किनका अन्दर मे हमरा पीएचडी करबाक अछि। ई सेहो सहमत भऽ गेलाह। मोहिनी मुस्कान केँ गुरुजी बनेवाक निर्णय लऽ लेलौं आ डा. अनन्त लाल चौधरी, भाषा विज्ञान विशारद रहितहु हमर शोधक विषय वस्तुक ओ स्वागत कयलनि। मुदा, एके संशय प्रकट केने छलाह-अहाँ दुई टा महाकाव्य पर किएक कऽ रहल छी- कामायनी या उर्वशी मे सँ किएक ने कोनो एकटा पुस्तक शोध लेल लैत छी। किन्तु, अपन हृदयक आगिक आगु हम स्वयं विवश छलहुँ।

आ 'कामायनी और उर्वशी मे नारी चित्रणक' विषय वस्तुक प्रारूप तैयार कऽ 9 अगस्त' (अपन जन्मदिन) 83 कें पटना विश्वविद्यालय सँ शोध छात्राक रूपे पंजीकृत भऽ गेलहुँ। एम्हर कॉलेज, घर गृहस्थीक प्रपंच संगे संग शोधक खोजपूर्ण संसार आरंभ भऽ गेल। एहि काज मे विष्णु बंदनाक दोस्त शशिक भाइ साहित्यक विद्यार्थी हमर बड़ मदत कयलनि। '85 मे हम शोधपत्र विश्वविद्यालय मे जमा कऽ देने छलहुँ आ ' 87 फरवरी मे हमरा पीएचडी डिग्री भेटि गेल। हमर विशेषज्ञ छलाह

पं. विद्यानिवास मिश्र आ नागपुर सँ डा. तेज नारायण लाल। विद्यानिवास मिश्र जी बड़ सुन्दर विचार पुस्तक लेल पठौने छलाह आ एहि शोध ग्रंथक प्रकाशन विश्वविद्यालय सँ करबाक आग्रह केने छलाह।

डाक्टर भऽ गेलहुँ- वर्माजीक हाथ मे सौंसे आकास आबि गेल-किन्तु हमर मोनमे प्रश्न उठल छल-की डाक्टर भेलाक बाद हमर बुद्धि मे किछु वृद्धि भऽ गेल। की हम विद्वान् भऽ गेलहुँ वा कि ज्ञानवान? किछु नहि बुझैत छलहुँ- पीएचडी साक्षात्कार मे हमरा सँ कतेक प्रश्न पुछल गेल। हम उत्तर दैत रहलहुँ- हमर भीतर जे आगि बरि रहल छल नारीक स्थिति लऽ कऽ ओ बाहर निकलि रहल छल, सभ चकित विस्मित छलाह- एक्जामीनी इज बेटर दैन एक्जामीनर कहि सभ लजा देने छलाह हमरा। डा. शोभाकांत मिश्र ओतऽ हिन्दी विभाग आ संस्कृत विभाग सभ चाह जलखै कयलनि किन्तु विभाग मे हमर पाइ सँ एक कप चाह तक केओ नहि पीने छलाह- एतेक जल्दी पीएचडी डिग्री प्राप्त कऽ लेनाइ अपना आप मे सभ केओ एकटा नवीन उपलब्धि बुझैत छलाह।

हमरा मोन पड़ैत अछि पहिल दरमाहा-हमरा दुइ सय टाका भेटल छल। जयनारायण सिंह, चंद्रमा सिंह आ रामबहादुर सिंह तीनूक सामने हमरा दुइ सय टाका देल गेल छल '81 ई. क नवम्बर मास मे साइत- ई अहाँ कें दरमाहा नहि दऽ रहल छी, बल्कि रिक्शा भाड़ा दऽ रहल छी। ओहि समय गंगजला सँ सर्वनायाण सिंह कॉलेजक रिक्शा भाड़ा तीन चार चारि रुपैया छल। अपन नोकरीक कमाइक दुइ सय लय हम सीधे बजार चलि गेल छलहुँ। ओहि ठाम माँ लेल ब्लाउजक कपड़ा, बाबूजी आ मोहन जी लेल गंजी, हिनका लेल रूमाल- हम अपन पहिल दरमाहा ओहि दुइ सय टाका सँ परिवारक प्रत्येक सदस्य लेल छोट मोट किछु ने किछु चीज कीनि लेने छलहुँ। माँ, बाबूजी, दीअर, ननदि खुश तँ हम खुश- ई हमरा कहलनि राज, अहाँ अपना लेल किछु नहि लेलौं- हम हुलसैत बाजल छलहुँ- किएक ने, आजुक रिक्शा भाड़ा हम एहि पैसा सँ देलहुँ।

दरमाहा बढ़ैत गेल किन्तु हम कहियो हिनका नहि कहलौं, ई हमर दरमाहा छी। जनैत छी हमर अहाँक कयला सँ मर्दक अहं पर चोट पहुँचैत अछि- हम नौकरी करैत छलहुँ विभागाध्यक्ष भऽ कऽ किन्तु हिनका कचहरी विदा कऽ कॉलेज जाइत छलहुँ आ हिनका घुरबा सँ पहिने यानी चारि बजे सँ पहिने घर आबि जाइत छलहुँ। हमरा लेल बड़ संतोष आ खुशीक बात छल। ई बुझि नहि पबैत छलाह जे हम नौकरी करैत छी। हमरा घर पर हँसैत देखि हिनका सुखद आश्चर्य होइत छल।

कालेजक जीवन हमरा लेल नवजीवन भऽ गेल। राजपूतक कालेज मे हमरा एतेक मान सम्मान भेटल- जातिक कोनो अहंकार नहि छल, लगैत छल हम अपन

परिवार मे छी, सभटा भाइ बहीनी जकाँ। दर्शनशास्त्रक ... प्राध्यापक रामजी गुप्ता कहैत छलाह–मैडम, अहाँ जे पढ़वैत छियैक तँ अगल-बगल क्लासक छात्र सभ अहींक लेक्चर सुनय लगैत अछि, झूठ की बाजब–हमहू सभ सुनय लगैत छी।

हमरा हँसी लागि जाइत छल। हम बेसी तर पद्य खंड आ बीच मे इतिहास फेर ए.एन. कालेज पटनाक एम.ए. क्लास मे महादेवी वर्माक गीत पढ़बैत छलहुँ ई सभ विषय हमर प्रिय विषय छल जखन पढ़बैत छलहुँ प्रवाह मे बहि जाइत छलहुँ।

चन्द्र भूषण सेहो अंग्रेज़ी विभाग मे आबि गेल छल। ओ कहैत छल–चाची अहाँ बड़ पढ़वैत छी। लगातार 2-2, 3-3 क्लास रहैत अछि, थाकैत नहि छी की?

की करब पढ़ायब नहि तँ कोर्स कोना पूरा होयत। हम तरीका बतवैत छी–पहिने अहाँ दुइ सय लड़का कें उपस्थिति लियऽ- 20-25 मिनट बीति जायत - 15-20 मिनट पढ़ाउ आ अंत मे बाद मे जे छात्र आयल ओकर उपस्थिति लियऽ। आराम सँ पढ़ाउ, प्राण किएक दैत छी अहाँ।

ओकर गणित पर हँसी लागि जाइत छल। थाकि तँ हम ठीके जाइत छलहुँ किन्तु कालेज मे नहि घर जायत काल रिक्शा पर- हम कहियो उपस्थिति नहि लेलौं- पहिने पढ़ा दैत छलहुँ- अन्तिम दस पन्द्रह मिनट मे उपस्थिति लिखैत छलहुँ। हमरा अपन काजक प्रति संतोष रहैत छल। एक बेरक सेशनमे दीपक गुप्ता एक लड़का छल। क्लासक अन्त मे हम ओकरा सभकें गृहकार्य देलहुँ- 'महाविद्यालय का प्रथम दिन'- एहि सँ होइत छल जे जकर साहित्य नीक होइत छल ओकरा हम अलग छाँटि दैत छलहुँ- जकर भाषा अशुद्ध बेसी होयत छल ओकरा अलग। दुनू पर दुइ तरहसँ ध्यान दैत छलहुँ जाहिसँ कमजोर छात्र सेहो विद्वान बनि सकय- दीपक गुप्ता जखन निबंध हमरा अपन देलक तँ हमरा आश्चर्य लागि गेल–छह सात पृष्ठक ओहि निबंधमे खाली हमर बड़ाइ शब्दक सुन्दर-सुन्दर फूल सँ ओ हमरा सजौने छल हम चौंकि गेल छलहुँ। दुइ तीन दिनक क्लासमे कोनो छात्रक हृदय पर हमर एहि तरहक छाप........! पता नहि आइ दीपक कतऽ अछि- कत्तौ पत्रकार अछि ई जनैत छी- मुदा कतऽ।

एहिना एकदिन 26 जनवरीकें झंडोत्तोलन लेल हमर रिक्शा आ चंद्रमा सिंह जीक रिक्शा एक संग पहुँचल, रामबहादुर बाबू बजलाह- आबु-आबु लक्ष्मी आ सरस्वतीक सवारी एके संग कालेजमे आबि गेल- सभ केओ हँसय लागल छलाह-

हमरा सभक संग पीसी खाँ, गंगा बाउ, रामजी बाउ, परीक्षित सिंह, रणधीर सिंह, वीरेन्द्र सिंह, जनार्दन सिंह आदि कतेको प्राध्यापक छलाह। हरदम कालेजक विकास लेल हम सभ सोचैत छलहुँ। ताहि मे राम बहादुर सिंह, प्राचार्य दुबर पातर सौम्य सुन्दर जखन कालेज आबि जाइत छलाह तँ दूरे सँ हम सभ बुझि जाइत छलहुँ

प्रिंसिपल साहब आबि गेल छथि- पूरा कॉलेजक वातावरण अनुशासित, गाछ बीरीछ, फूल पात सभ अनुशासन मे ठाढ़- सभटा क्लास सुचारू रूप सँ चलैत- बड़ नीक लगैत छल' हम बाल्यकाले सँ अनुशासन प्रिय रहलहुँ। सर्वनारायण सिंह कालेज मे बीपीएससीक परीक्षा चलि रहल छलैक। जहिना हम कालेज पहुँचल छलहुँ कि प्रिंसिपल साहब, रामबहादुर सिंह बजलनि- आउ, आउ, अहींक चर्च होइत छल। बड़ आयु अछि अहाँक-ओहि दिन कालेज मे 'प्राचार्यक' साक्षात्कार छल। अरबिन्द सिंह कें प्राचार्य बनेबाक छल, जकर इंटरव्यू छल। औपचारिकताक लेल महेन्द्र मुनि, जयपुरियार साहब, चौधरी जी, सुल्तान साहब, अरुण सिंह आदि कतेको प्राध्यापकगण सहरसा कालेजसँ आयल छलाह।

हम महेन्द्रजी सँ कहलौं- मेरे आंगन मे भीड़ लगी, मैं किसको कितना प्यार करुँ- महेन्द्र मुनि तँ बड़ मस्त व्यक्ति- छुटतहि बजलाह- नहि नहि शेफालिका जी, अहाँकें तँ कहबाक चाही- मेरे अंगने मे तुम्हारा क्या काम है- समस्त वातावरण ठहाका सँ गुंजि गेल छल–बाद मे हमर विभाग मे विनोद पांडे रेणु सिंह, अमरसिंह, रमेश सिंह आदि।

एक बेरक सहरसाक होली मोन पड़ि जाइत अछि। भरि दिन पुआ पकमान बनबैत, टोल परोसऽसँ रंग खेलैत, दुपहरियासँ झुण्डकें झुण्ड लोग सभ अबीर लऽ कऽ आयब शुरू भऽ गेल। हिनकर संगी सभकें विदा करैत रातुक आठ बाजि गेल। ई बजलाह अपना सभ ककरो ओतऽ नहि गेल छी आब निकलू- कलक्टर साहब, एस. पी.साहब होइत जतऽ मोन होयत एक बेर घुमि लेब। जतेक धरि हमरा मोन अछि हम सभ सौंसे सहरसा पएरे घुमैत रही। कहियो रिक्शा पर नहि चढ़ने रही। मुट्ठी भरिकें तँ सहरसा छल। 76-77क गप्प होयत। हम सभ सुपौल वाली लाइन पार करैत पावर हाउस होइत कलक्टर साहब ओतऽ गेलौं? ओहिठाम पुआ पकमान आयल। किछु छुबो नहि केलौं। जतय जतय गेलहुँ, मोन भरल छल, किछु नहि खाय सकलौं। अंत मे जेलक डाक्टर महेश बाबू हमर सभक संगीयो छलाह, साहित्यकर्मो छलाह- हुनका ओतऽ गेलहुँ! हुनकर तँ दलान पर एकदम फगुआक छटा छितरायल छल? बड़ प्रेमपूर्वक ओहिठाम आदर सँ एक-एक गिलास पानिक शरबत पीलौं नीक लागल छल किन्तु गिलासक पेनीमे किछु बैसल छल बुकनी सनक। स्वादो विचित्र लागि गेल। नहि बुझि सकलौं केवड़ा, गुलाब जल कथीक शरबत छल–

रातुक दस बाजि गेल छल! हमसभ जयानंद झाजी ओतऽ एखन धरि नहि गेल छलहुँ। नया बजारक अन्तिम छोर पर हुनकर अंग्रेजी बंगलानुमा घर छल। हमर सभक दुनू परिवार अभिन्न छल। फेर ई बाजऽ लगलाह चलू एतेक दूर आबिए गेल

छी तँ घुमि आबी छी ? तखन सहरसामे एतेक आबादी नहि छल? सहरसा जेल सँ हवाइ अड्डा होइत नया बजारक अंत, नरियारक आरम्भ!

चन्द्रमाक धवल ज्योत्स्ना हमरा सभकें आमंत्रण दऽ रहल छल। घुमू-घुमू खूब घुमू- हम सभ जयानंदजीक घरक बाट धऽ लेलौं- जयानंदजीक कविता मोन पड़ैत रहल, मंच पर पढ़ने छलाह- एहि शहरमे एकटा कवयित्री रहैत छथि, जिनक अंग-अंग मे दर्द, तन मोनमे दर्द, पांती सभ मोन पड़ि दुनू गोटे हँसैत जाइत छलहुँ। ई की भऽ गेल- अचानक हम ठमकि गेलहुँ। हे यौ- ई की भऽ गेल यौ- ई पुछलाह की भेल, की भेल? देखू ने हमर पएर जमीन पर नहि पड़ि रहल अछि- हम भारहीन भऽ हवामे चलि रहल छी- एतेक सून-सान निस्तब्ध मैदान भूत-प्रेत तँ नहि लागि गेल? हम डर सँ थर-थर कांपि रहल छलहुँ- हमहूँ सभ एतेक निःसरर छी बिनु किछु बुझने-सुझने राति बिराति निकलि जाइत छी। ई किछु सोचि रहल छलाह- अचक्के बजलाह- अरे, लगैत अछि महेश बाबू भांगक शरबत पिआ देलनि। हमरो तँ अपन सभटा ठही लगैत अछि खत्म भऽ गेल। फेर दुनू गोटे हँसैत रहलहुँ- एक दोसराक हाथ पकड़ने झूमइत झामइत साढ़े दस बजे करीब जयानन्द जी ओतऽ पहुँचलौं। हुनक निराश मोन हमरा सभकें देखिते खिलि गेल। फेर तँ नुपूर, कुमुद हुनक माँ हम सभ खूब अबीर खेललौं। हम सभ मस्तीक रंगमे नहायल छलहुँ। फेर आबि गेल पुआ-पूड़ी मीट कतेक व्यंजन? हम सभ देखतहि कहऽ लगलहुँ नहि खा सकब? खेबाक प्रश्ने नहि उठैत छैक। किन्तु, दुनू बेकतिक एतेक आग्रह भेल- किछु तँ खाय पड़त। आजुक दिन हमर दोस्त ओना कोना जायत ? आश्चर्य भऽ गेल, हम दुनू गोटे जे खेनाइ गुरू केलौं तँ सभटा मीट पुआ खा लेलौं- कोना खा रहल छलहुँ बुझि नहि पबैत रही ? तखन ई सभटा गप जयानंदजी कें कहलनि। ओ बजलाह- जेल डाक्टर ओतऽ केर फाग नामी छैक। सभकें भांगक शरबत पिआबैत छथि। आ राति बारह बजे हवा मे उड़ैत अपन घर पहुँचि गेलहुँ। कतेक नीक सहरसा छल- बेदाग-बेरोकटोक-

समय दहिन बमि करोट लैत रहैत अछि ओहि दिन सहरसा सँ पटना अबैत छलहुँ- संग मे शंकर मिश्र, श्याम बाबू, बिन्देश्वरी बाबू सभ वकील रहथि। आरक्षणक लहरि देश मे सुनामी जकाँ उछलि रहल छल? रस्ता भरि एहि सभ पर चर्चा होइत रहल, जाति-पाति, ऊँच-नीच।

वर्मा जी तखन सहरसाक पी.पी. छलाह- कोनो कन्फरेंस मे सभ पटना अबैत रही। ट्रेन अबाध गतिसँ चलि रहल छल- ओहू सँ तीव्र गति सँ हिनकर सभक बहस ? अचानक वर्मा जी बाजि उठलाह- अँय शंकर जी, अहाँ सभ एते पूजा पाठ करैत छी मुदा कोनो भगवान जाति सँ ब्राह्मण तँ नहि छथि- सभ केओ हड़बड़ा गेलाह- तखन गिनती होअऽ लागल- राम, कृष्ण, विष्णु सभ राजपूत? ब्रह्माजीक पूजे नहि होइत

छैक? शिवजी तँ ब्राह्मण छथि- केओ बजलाह- शिवजी- ई तुरत बजलाह- शिवजी कोना, ओ तँ पक्का शिड्यूलडकास्ट छथि- अनुसूचित जनजाति- साँप गर मे, बाघक छाल, ठीक छैक, ठीक छैक- तोरे जातिक कोन भगवान छथुन्ह- खिसिया बऽ शंकर मिश्र बजलाह- बहिनदाइ देखैत छी ने, की सभ बजैत रहैत छथि- हम एकदम पक्ष नेने रही- हँ- एकदम ठीक बाजैत अछि शंकर-

ओ हमर छोट भाय सन छल- अँय ? हम की बजैत छी? हम साँचे बजैत छी- देखियौ कायस्थ भगवान छथि ने? एहि युग मे सभ सँ बेसी हुनकरे पूजा भऽ रहल अछि।

सभ केओ हिनका दिस उन्मुख भऽ गेलाह- अरे हनुमान जी- शुरूए मे तुलसी दास कहि देने छथि- आरती कीजे हनुमान लाला की- छथि ने लालाभाइ ?

आब तँ एकटा उन्मुक्त ठहाका सँ ट्रेनक डिब्बा विहुँसऽ लागल। छोटो बात कें वर्मा जी एतेक सुन्दर ढंगसँ, सहज सरल रूपसँ बजैत छलाह जे सभक मन मुग्ध भऽ जाइत छल।

इएह घेरने अछि विघ्न-बाधा हमरा, छोड़एबा लेल चाहैत छी छोड़एबा मे करेज मे तीर भोंकैत अछि। देस देस देस मे हमर घर अछि हम अपन ओहि घर कें खोजैत छी हम दूनू गोटे सहरसा छोड़बा लेल चाहैत छलहुँ सहरसा छल कि हमरा सभकें छोड़ि नहि रहल छल- एकेटा कारण छल-दूनू गोटे अपन अपन क्षेत्र मे दलगत राजनीति सँ ऊपर, निष्पक्ष आ निर्भीक छलहुँ- डर ओहिठाम होइत छैक जाहिठाम मोन मे छह पाँच हो- चाहे ओ नगर आयुक्तक पद हो कि सर्वनारायण सिंहक विभागाध्यक्ष हिन्दी विभागक पद हो वा कि लाइफ इन्श्योरेंसक एजेंट हो- आंगुर उठवऽ बलाक कमी नहि छल। किन्तु हमर सभक आपसी विश्वास आ निर्भीकता देखि अपने आप आंगुर खसि पड़ैत छल आ हमर सभक बड़का दोस्त बनि जाइत छल। साइ 22 मइ, 89 इ. क गप थीक- तन मोन एकदम थाकल सुन्न सन छल। लगले कलक्टर साहबक आवासीय कार्यालक गोपनीय शाखाक मीटींग मे गेल छलहुँ। संत लक्ष्मीनाथ गोसांइ संग्रहालय बनगाम, सहरसाक समुचित संचालन लेल एकटा समिति गठित कयल गेल छल जकर पदेन सदस्य जिलाधिकारी स्वयं छलाह। आ सदस्य मे सदर एस.डी.ओ, विभागाध्यक्ष पीजी इतिहास विभाग, भवेश मिश्रक संग हमरा सदस्य बना देल गेल छल-एतबे नहि एहि समिति गठनक प्रतिलिपि आयुक्त, सचिव, शिक्षा विभाग बिहार सरकार, निदेशक, पुरातत्वविभाग, पटना आदि कें पठा देल गेल छल- वर्मा जी एतेक कमजोर रहितो कोनो मीटींग कें छोड़बा लेल नहि कहैत छलाह।

हृदय जेना अनन्त स्मृतिक अगाध सागर बनि जाइत छैक। कतेक स्मृतिक मोती समुद्रक भूतल गहीराइ मे निमज्जित अछि। हम साइत अतीवजीवी छी जकर समस्त स्मृति हमर जीवन-तरी कें प्रतिक्षण उन्मादित करैत रहैत अछि।

अतीतक अक्षय कोष मे एतेक अमूल्य रत्न भरल अछि कि ओकरा सहेजि कें रखबाक हमर प्रकृतिगत विशेषता बनि गेल अछि बेटी सभक वियाहक बेर। नैहर सासुर समठाम एके अत्सुकता छल देखी बेटी सभक बियाह कोना करैत छथि समाज दहेज लो लुप छल–

गौरव समाजक भ गेलाह

एहेन नहि जे कर्ण कायस्थ मे सभ केओ दहेज लैत छथि किन्तु एखनो बड़का प्रतिशत एहेन छथि जे दहेज नहि लैत छथि हँ दहेज लेमऽ बलाक चर्च प्रत्येक ठाम होइत अछि नहि लेमऽ बलाकें केओ जनितो नहि अछि ? मिथिला मे ब्राह्मण आ कायस्थमे दहेज प्रथा नहि छल। 'दहेज' मात्र राजपूतक परंपरामे अबैत छल तखन तँ तुलसी जानकी विदाइ केर चर्चमे लिखलनि जे जनक अपन पुत्री सीताक द्विरागमन मे नाना प्रकारक समान देलनि ? कतेक घोड़ा कतेक हाथी–साँच पुछू तँ लगैत अछि एहिठाम सँ दहेज-प्रथाक जन्म भेल होयत। किन्तु जनक अपन पुत्रीकें सौख सेहन्ता सँ सभ सांठलनि। नहि कि दशरथ वा कि रामक माँग पर। हम तँ स्वयं क्रांतिकारी छी कतैक गोटे चित्रगुप्त सभामे बजैत छथि शेफालिका जी कें भाषण देवा लेल। कथी लेल कहबैक- हुनक भाषण मे दुइएटा विषय रहैत छैक दहेज आ मूल पांजि। हम सोचैत छी, हंसी लगैत अछि सरिपों, बाजिकें की होयत ? अर्जुन चौधरी कें एक बेर कोनो कार्यक्रम मे दहेज विरोधी पैम्पलेट सभ बटैत देखने छलहुँ। संगे कतेक जोड़ी के आदर्श विवाह करबा रहल छलाह- श्रद्धा भऽ गेल छल आइ मिथिला महानक संग स्वयं महान भऽ रहले छथि। यहाँ जोड़ एहिना गाय के मब की कार्क अक्षांकक वियाह में खूब दहेज देखैल छलीह? ई बजलाह दहेज मे जेबैक हम बरियाती नहि पायब आ नबकी काकीक उक्ति वियाह मे नूनू नहि जे थीन तंवियाह नहि होयत आ नीलूम गीत पर निर्धन कें बेटी भऽ सहक कतेक अपमान यौ अशोक किछु नहि ले लनि–फेर तै सावित्री नीना, रेखा प्रीति सभ हमर दिआदिनी बनि डुमराव आज चलबड लगलीह।

हमर सभक परिवार मे चारिटा एहेन महापुरुषक आविर्भाव भेल जे हुनका सभक विषय मे एकेक टा महाकाव्यक सृजन कऽ सकैत छी। साधारणतः मानव बाहर सँ किछु भीतर सँ किछु होइत अछि। समाज मे आदर्शताक डंका पीटैत छथि। किन्तु किछु लोक एहनो छथि जे अन्तः सलिला सरस्वती जकाँ चुपचाप निर्मल भावे प्रवाहित होइत रहैत छथि। नहि कोनो उपकारक भाव आ नहि तँ किछु अदभुत कऽ देखेबाक घमंड। इ व्यक्तित्व सभ छथि हमर चारु बेटीक श्वसुर यानी हमर समधि सभ आ कि समधीन सभ- समधीन एहि कारण जे यदि केकरो पत्नी दहेज लेबा लेल चाहैत छथि तँ कोनो पतिक मजाल नहि छैक जे ओ पत्नी विमुख भऽ कोनो कार्य कऽ सकैत। हमर चारु समधि समधिन क्रमशः राजेन्द्र बाबू-कमलाजी, मालीपुर, राजेन्द्र

बाबू- सत्यभामा जी मलंगवा, राजकुमार बाबू-चन्द्रकांता भलुआही, चन्द्रभूषण बाबू-कान्ता, फरीदाबाद इ सभ समाज मे एकटा आदर्श उपस्थित केने छथि किन्तु हिनका सभकें जानैबला बुझय बला केओ नहि। जे दहेज लैत छथि हुनक चर्च समाज मे खूब होइत छथि खिधांसे हो वाकि कटाक्षे- किन्तु नाम सभ जानि जाइत छथि। समाज मे एहेन कतेको व्यक्ति छथि जे दहेज नहि लैत छथि किन्तु हुनक कत्तौ चर्चा केओ नहि करैत छथि। हम दूनू बेकति योजना बनेने रही जे एहि तरहक परिवारक शोध कऽ हुनका सभ पर आलेख लिखबाक- किन्तु हिनक बीमारी हिनक असामयिक निधन सँ हम एहेन टुटि गेलहुँ जें किछु करबाक सामर्थ्य नहि रहल, योजना अधर मे रहि गेल तें हम आइ अपन समधि सभक माध्यमे ओहेन प्रत्येक आदर्श लोकक प्रति सात्विकताक नमन करैत छी- एहि मे कोनो शंका नहि जे अपन बेटी सभ सँ पहिने हमर सातो बहीन नहि आठो बहीन साधना सेहो ककरो वियाह दहेज लऽ कऽ नहि भेल आ नहि तँ कोनो सर समानक मांग। एहेन एहेन बहुत लोग हमर आगू-पाछू पसरल छथि जिनक चर्च हम अलग करब यदि हमर शोध पूर्ण भऽ जायत तँ। किन्तु एखन हम एहेन समस्त समाज के हार्दिक नमन करैत छी...... जे समाज कें एकटा स्वस्थ सुन्दर विचार धारा प्रदान केने छथि। कोनो राष्ट्र मात्र नदी पर्वत वन अरण्य सँ सुन्दर नहि बनैत अछि वरन राष्ट्र के सुन्दर बनेबा लेल स्वस्थ सुन्दर नागरिकक आवश्यकता होइत छैक जे परस्पर प्रेम सौहार्द्र आ संस्कारी वातावरण मे पलल-बढ़ल हो।

भावना जखन, पटना विश्वविद्यालय सँ इतिहास मे एम.ए. कऽ रहल छलीह तँ सभ दिस सँ एकर विवाहक दबाव पड़ए लागल। ओना जखन ओ मैट्रिक पास केने छलीह तखने ओकर दादाजी पोतीक विवाहक स्वप्न जाल बुनैत छलाह- हमरा सँ वर्माजी बजलाह- बाबूजी सूकूक विवाह लेल बड़ उताहुल- छथि - की करी ? घोघ तर सँ हँसैत हम बाजलौं- किएक जमाय आ पुतहुक सौख ककरा नहि होइत छैक।

लेकिन एकटा बात सोचैत छी- बड़ गंभीर स्वर छल हिनकर- अहाँ जे एतेक हँसैत छी तँ जमाय कोना आनब? अहाँ कनिक स्थिर गंभीर भऽ जायब तखन सोचब- हमरा आर हँसी लागि गेल- हे यौ, हम साठि बरीसक भऽ जायब तखनों एहिना हँसैत रहब। हमर बेटीक वियाह नहि होयत? किन्तु जे लड़का लेल बाबूजी उपन्यास देने छलाह, ओ स्वयं बाबूजीके नापसिन्न भ' गेल। फेर तँ सूकू पटना वीमेन्स कॉलेज होस्टल मे रहि बड़ उत्साह सँ अध्ययन मे लागि गेलीह।

ओहि समय हिनक दोस्त जयवल्लभ जी सहरसे मे पदस्थापित छलाह- ओ एक दिन बजलाह- अहाँ सूकू कथाक चर्च राजेन्द्रक बेटा सँ किएक नहि करैत छी। ओएनजीसी मे हुनक बेटा इंजीनियर अछि- राजेन्द्रजी सँ करीब दस बरीस सँ अलग छलहुँ हम सभ ओ पटना सँ मुजफ्फरपुर साराभाइ मे चलि गेल छलाह आ हम सभ

सहरसा आबि गेल छलहुँ। एकटा दीर्घ अन्तराल... जतेक हिनकर दोस्त सभ छलाह हम सभ सँ बड़ प्रगल्भ छलहुँ- किन्तु राजेन्द्रजी सँ हम बड़ धखाइत छलहुँ। हुनक गंभीर व्यक्तित्वक आगू सम्मान सँ हमर नजरि झुकि जाइत छल... जखन हम सभ पटना मे छलहुँ ओ सभ किदवइपुरी मे रहैत छलाह। प्रायः प्रत्येक दिन हमर पापा भोर भोर हुनका ओतऽ टहलैत पहुँचि जाइत छलाह- संगे हम आ वर्माजी। तखन हुनकर बेटा बसन्त बाबूक रवीन्द्र पाठशाला मे सेन्टूक संग स्कूल जाइत छल। ओहि स्कूलक सभ विद्यार्थीक काँख तर बोरा हाथ मे स्कूल बाक्स रहैत छल- आइ वएह बालक ओएनजीसी मे इंजीनियर अछि- अपना सूकू लेल- मोन मे तरंग उठ' लागल किन्तु हिनका मोन मे एकेटा बात छल जे यदि ओ एहि उपन्यास कें अस्वीकार कय देताह तँ- दोस्ती मे कुस्तीक भाव नहि आबि जाय। किन्तु, जयवल्लभ जीक दबाब सँ ई एकटा प्रार्थना पत्र राजेन्द्र जी कें भेजलैथ जकर जबाब राजेन्द्र जी एकटा पोस्टकार्ड सँ घुरती डाक सँ देलैथ... 'अहाँक पत्र सँ ज्ञात भेल जे अहाँक प्रकाशक ज़रूरत अछि तँ आइ सँ सूकू हमर बेटी भेल .... हमर छोट, बहीनक ब्याह तय भ' जायत तँ, हम अहाँकें सूचित करब... 'wait and watch'...हमरा सभकें जेना विश्वास नहि होयत छल एहिनो भ' सकैत अछि। आ तकर बाद कमला जी अपन ननदि सभक संग श्रीकृष्ण नगरमे सूकू कें देखि पसिन्न कय मुँह देखना सभ दऽ चलि एलीह। हम तँ सहरसा मे छलहुँ आ सूकू अपन नाना नानी लग पटना मे। तोड़' बला सँ संसार भरल अछि किन्तु जोड़' बला आंगुर पर गिनल जाइत अछि। कतेक गोटे कहलन्हि जे सूकू एम.ए.मे पढ़ैत अछि लड़का सँ पैघ होयत तँ कमलाजी कहलन्हि हम तँ ओहि परिवार कें बड़ पहिनेसँ जनैत छी। प्रकाशक जनमक बाद तँ ललन जी ब्याह भेल तकर बाद राजू आ तखन सूकू तँ प्रकाश सँ पैघ कोना होयत?

केओ बाजल लड़की कें दाढ़ी छैक तँ कमलाजी तपाक सँ बजलीह तँ की हेतैक दाढ़ी बनवबला हम प्रेजेन्ट कय देबैक- जतेक मुँह ततेक बात। किन्तु, सभसँ नीक बात एक बेटाक मायक लागल जखन हुनके घरक सभ सँ बुजुर्ग सदस्य बजलाह जे मुजफ्फरपुर मे जमीन कीनि कें दऽ दियौक ताहि पर कमलाजी मोहनजी कें इशारा सँ मना कय देलखिन बाद मे असगर मे मोहनजी सँ कहलन्हि-हमरा किछ नहि चाही- ताहि पर इ जमीन. इ तँ बाद मे हमर बेटा सभक बीच विष वृक्ष भ' जायत-

नमन करैक मोन होयत अछि एहेन एहेन नारी के माता कें.....

एकर बाद ओ तार दय हमरा दुनू गोटेकें मुजफ्फरपुर बजौलनि- हमर बेटा शिवसागर सँ आइल अछि? अहाँ सभ लड़का देखि लियऽ, हमर घर-दुआर रहन-सहन सभ देखि लियऽ। यदि अहाँक बेटी एहिमे रहि सकतीह तँ हमरा सभकें कोनो आपत्ति एहि मे नहि अछि हम एतवे बाजलौं ककरो बेटी सासु ससुरक हृदयमे

रहैत अछि- घर मे नहि। विशाल महल हो आ हृदय मे स्थाने नहि भेटतैक तँ ओ महल कोन काजक ? आ फेर दुइ जून 86 ई० कें भावनाक वियाह भऽ गेल ।

एहिना बंदना यानी पींकी दरभंगा मे मेडिकल कालेज की चतुर्थ वर्षक छात्रा छलीह, कृष्ण कुमार सेहो ओहिठाम रेजीडेन्ट सर्जन छलाह । एकदम अनजान अपरिचित गलंगवा सँ राजेन्द्र बाबू अपन भाई रूद्रपति बाबूरु आदि संग कृष्ण कुमार लग पहुँच लाह । हमर बेटा चेकोस्लोवाकिया सँ डाक्टरी पढ़ि आयल अछि आ काठमांडु मेडीकल कालेज मे प्राध्यापक छथि। हम सभ हुकरा लेल एकटा सुयोग्य लड़की हमरा ज्ञात भेल जे एहिठाम अहाँक भगिनी मेडिकल मे छथि।

बीचे मे बात काटैत कृष्ण कुमार पुछने छल-अहाँ लड़की देखने छी--ओ बजछाह देखने नहि छी-तँ अहाँ जाउ पहिने लड़की देखि लियऽ हम एकटा पत्र सहरसा सँ भेजने छलौं कह ओ पत्र हुनका सभकें दैत मन्ना जी बाजल –अहाँ कहबैक हम सहरसा सँ आमल छी अहाँक यम्मी ई पत्र देने छथि–

आ बंदनाक शिष्टाचार बाजवाक थालीनता देखि ओ सभ मुग्ध भऽ गेलाह आ लड़काक फोटोसंग उपन्यास सहरसा डाकसँ पढ़ा देलनि–

हम सभ अकचका गेल छलौं लड़काक फोटो देखि किन्तु, फोटो मे लड़काक सुन्दर व्यक्तित्व आ आकर्षक चेहरा देखि राजीव काठमांडु चलि गेल। मम्मी हम जाइत छी लड़का देखवा लेल पसिव होयत तँ अपन परिचय देवैक नहि तँ चुपचाप छुरि कें चलि आयब आ राजीव काठमांडु मेडिकल कालेज मे दिल्ली विश्वविद्यालय दिसि सँ नेपालमे डाक्टरक स्थिति पर शोध छात्र बनि पहुँचि गेल छल आ कौशलेन्द्र जीक लीन आचार विचार ओकर हरदव कें सिद्धान्तक जीति लेने छल– आ लड़काक पिता लग राजीव आ असीम मलगंवा पहुँचि गेल । बे दिनल आदि गेल। सिद्धांत समस्तीपुर मे भेल छल लगैत छल जेना शरद आ अन्नु क बेटीक सिद्धांत! लगले विवाहक दिन निश्चित भऽ गेल?

12 जुलाइ '89 मे वियाह भऽ गेल बंदना क साठि टा करीब बरियाती आयल छलाह। सभ बरियाती अनुशासित। चन्द्र देव बाबू होटल विजयाक हाल मे जनवासाक प्रबंध अपना सँ करौलनि। तखने हिनका पुनर्जीवन भेटल छल अपोलो मद्रास सँ आ लगले बेटीक वियाह। वियाहक लेल जे किछु पाइ रखने छलहुँ सभटा अस्पताल मे चलि गेल छल किन्तु, हौसला छल, समस्त सहरसाक जिम्मेदारी भऽ गेल छलैक। कलक्टर, कमिश्नर, एसपी, जज साहब सभ केओ वियाह मे एलनि आ ठाढ़ भऽ सभटा इंतजामो देखैत छलाह। पापा, माँ, मन्ना सेंटू, चाँद, अन्नु, पिन्टू, मधु शंकर बाबू सभ आयल छलाह।

ननदि सभ सेहो आगू पाछू अबैत जाइत रहलनि। बरिआती मात्र दुइ साँझ खेलक। मरजादक बेर जखन खाय लगलाह तँ हमरा समाद आयल जे बरिआतिक बुजुर्ग लोकनि बजा रहल छथि। कहैत छथि जा शेफालिका वर्मा नहि अओतीह ता भोजन नहि करब। आब तँ हमरा अबचंक भऽ गेल- करी तँ की करी- सौंसे सासुर हमर भरल अछि घर मे आ हम समधि सभ सँ, बेटीक माय भऽ भेंट करऽ जायब– किन्तु, जाय पड़ल श्रीमान सभापति लाल दास, प्रजापति लाल दास, रुद्रपति लाल दास आदि समधि सभ रहथि, हम माथ पर सँ नुआ नेने कल जोड़ने ठाढ़ भेलहुँ हम सभ आजनेक दर्शन लेल बैखत रही। तखन ओ सभ भोजन केनाय आरंभ कयलनि। बरिआती जखन वापस जाय लागल तँ सभटा युवक वृन्द मिलि सौंसे जनवासा कें साफ कय तखन जाइत गेलाह। ई अपना आप मे अपूर्व लागल छल।

बंदना सभ दिन बजैत छलीह-पापा हमरा सँ तेज डाक्टर आनब। वियाहक दूइ दिन बाद बजलीह पापा ई तँ प्रोफेसर जकाँ हमरा सँ मेडिकलक प्रश्न सभ पुछऽ लगलाह-एतेक तेज कियेक आनलौं। बड़ हँसी लागल छल–

वियाहेमे केओ बरिआती मे सँ बाजल छलाह- हम सभ तँ सहरसा जिला वियाह कऽ लैत छी मुदा सहरसा बला सभ बिनु टाकाक वियाह नहि करैत छथि– मोन लागल छल ई बात। सहरसा जिला छोट अछि। किछु लोकक कारण समस्त जिला बदनाम भऽ गेल अछि। मुदा, उत्तर भेटल छल। जखन पींकी कौशलेन्द्रजी संग लंदन जेवा लेल छलीह। घरक सभसँ पैघ पुतहु-बंदना समीता, बबीता दुइ ननदि आ एकटा देओर अनिलजी। समधीकें चिन्ता छल बेटा पुतहु विदेश जा रहल छथि-पिंकी अनुभूत केने छलीह अपन नीका काकाक चिन्ताकें। पति आ श्वसुरक संग ओ धनबाद चलि गेलीह जाहि ठाम हमर पापा छलाह कृष्ण कुमारक संग। पींकी बजने छलीह-नानाजी हम सभ पिन्टू मामाक संग समीता केर उपन्यास लऽ कऽ आयल छी। आ पापा ओहि साँझ सिद्धांत कऽ लेलनि। आठ दिन उपरान्त वियाहक दिन दऽ हुनका लोकनिक संगे पटना चलि अयलाह। आ समीता चलि अयलीह हमर नैहरक सभसँ छोट पुतहु बनि। दहेज लेनाय हमर सभक परिवार गोमांस बुझइत छल-हमर समधि सभक परिवारक संस्कार छल–सेहो इएह समिता, छोट बहीन बबीता, कौशलेन्द्रजीक छोट भाइ अनिल हिनकर सभक स्वभाव पारदर्शी सहज सरल भोन मे कत्तौ किछु नहि। फेर बंदना अपन दीअर अनिलजीक वियाह लेल बड़ चिन्तित छलीह- अनिल लंदन मे रहैत छलाह एक दिन जटाशंकर बाबू अपन दुइ बेटीक संग हमरा ओतऽ अचानक आबि गेलाह। हम अकचका गेलहुँ- किन्तु हुनक दुनू पुत्री पूनम आ नूतन वासन्ती हवाक झोंक सन हमरा आह्लादित कऽ देते। हमर दृष्टि दुनू पर सँ हँटैत नहि छल खासकऽ पूनमक हँसी देखि समीता स्मृतिमे आबि गेलीह- आ फेर अनिलजीक संग पूनमक विवाह भऽ

गेल। हमरा लगैत अछि जे अपन समाज मे एक सँ एक लड़की अछि किन्तु सम्पर्क सेतु नहि- ओहिना जमशेदपुरमे मंजूक बेटी सभ मोहिनी मिल्की हमरा अनमोल रतन लगैत छलीह किन्तु, बेटा बलाक मंहिमा अपरंपार।

जोड़ी तँ ऊपर सँ बनिकें अबैत अछि। कतेक ठाम कथा लागल छल राजीवक, एक ठाम तँ खाली वियाहक दिन स्थिर करबाक छल- किन्तु, भगवतीक मायाक समक्ष आदमीक कोनो जोर नहि। नहि जानि कोन स्वर्गिक क्षण मे अश्रु धारक मध्य एक दोसरासँ दृष्टि मिलल होयत, दूनूक आँखि एकाकार भेल होयत- संगे कोनो आश्चर्य जनक घटना घटित भऽ गेल होयत। आकाश मे, अंतरिक्ष मे, भूमंडल मे एकटा आभामय तरंग दिशा दिशा मे परिव्याप्त भऽ गेल होयत- आ लगैत अछि ठीक ओहि काल युग युगान्तक विजन रंगमंच पर एकटा अद्‌भुत चिरंतन लीलाक यवनिका उन्मुक्त भऽ राजीवक हाथ मे जयाकें सुपुर्द कऽ देने होयत। ई रहस्य प्रकृतिक के बुझि सकैत अछि? मानव तँ ओहि असीमक समक्ष एकटा अत्यन्त तुच्छ प्राणी थीक- हमरा सभक इच्छा अनिच्छाक जाहि ठाम कोनो मोल नहि। जया जखन बड़ छोट छलीह तखने पिताक मृत्यु भऽ गेल छल मात्र उनचास वर्षक आयुमे। हुनक पिता कुमार बलवंत सिंह गिद्धौर राजक राजकुमार छलाह। गिद्धौर मे कुमार दिग्विजय सिंह सभ रहैत छलाह। किन्तु ओ सेहो राजनीति मे आबि जेबाक कारण बेसीतर दिल्लीए रहय लगलाह।

जया हिनक कान्हु पर माथ राखि कनैत छलीह–अहाँक पिता नहि छथि हम अहाँक पिता भेलहुँ सहरसाक घर मे पहिल पुतहु डुमरा खानदानक अपन पीढ़ीक बड़की मालकिनी बनिजया आबि गेलीह ओहि समयक एकटा प्रसंग बिसरल नहि जाइत छला। प्राय: मिथिलाक मे पुतौह सांझ मे घर मे प्रवेश करैत छैक। जयाँकेर ट्रेन दुइ बजे दिने आबि गलैक? ओकरा कतइ रखी? एकटा शिव मंदिर मे वृद्ध पंडित छलाह हम हुनका पुछलौं कखन शुभ घड़ी होयत जे हम वधू प्रवेश करायब ओ बजलाह जखन अहाँक घर मे पुतौह पएर देता है तखने शुभ घड़ी।

हमर घरमे नियमित रूपसँ साँझुक बेर समस्त परिवार न यंत्रम् आ 'नमामी शमीशानक' प्रार्थना भगवानक आगू करैत छल ? प्रार्थनाक उपरान्त सभ केओ अपना सँ पैघ कें गोड़ लागैत छल। एक बेर हम सभ पटना गेल छलहुँ, बच्चा सभ सहरसे मे छल ? राजकुमार बाबू अपन भाइ कृष्ण कान्त बाबू संग सहरसामे हमर बासा पर गेलाह हमरा सभसँ भेंट करबा लेल? बच्चा सभ प्रार्थना कऽ रहल छल? ओ सभ ओसारा पर बैसल प्रार्थना सुनैत रलह ? प्रार्थनाक उपरान्त सभ भाइ बहीनी बाहर आबि हिनको सभक पएर छुलक। तकर बाद सुकू पींकी सभकें अपन परिचय देलनि आ चाह जलखै कऽ ओहिठाम सँ घुरल छलाह।

राजकुमार बाबू पटना विश्वविद्यालय मे हिनकासँ सिनीयर छलाह। तखन पटना वि.वि. मे कायस्थ लड़काक झुण्ड छल, हमर भैया शिशिर वर्मा, वीरेन्द्र वर्मा, नवीनानंद दास, फेर ई अपने, निर्भय बाबू, राजेन्द्र बाबू, राजकुमार बाबू, सुधीर बाबू, विपिन बिहारी आदि....।

ओहिना मगध महिला मे हमर सभक ग्रुप छल- चंद्रकांता (बाद मे राजकुमार बाबूक पत्नी भऽ गेलीह) इन्दु, चंद्रा, आदि..... सहरसा सँ एवाक बाद हमरा सभ सँ भेंट भेल तँ राजकुमारबा कहने छलाह- हम अहाँ ओतऽ गेल छलहुँ। अहाँक बेटी सभ बड़ संस्कारी अछि ? एखन हमर बेटा सभ छोट अछि- योग्य होयत तँ अहाँक कोनो ने कोनो बेटी कें हम अवश्य लऽ जायब। हम सभ एहि बात कें बिसरियो गेल छलहुँ। जखन बेगूसराय मे सदर एस.डी.ओ. छलाह तखन हुनका ओतऽ गेल छलहुँ। हम सभ पटना आबि गेलहुँ तँ ओ रेवेन्यू मे ज्वाइन्ट सेक्रेटरी छलाह बीच-बीच मे हमरा सभ सँ भेंट करवा लेल आनंदपुरी बासा पर आबि जाइत छलाह ? एक बेर किशोर बाजल जे राजकुमार बाबू अपन दोसर बेटाक विवाह करबा लेल चाहि रहल छथि ? लड़का मास्को मे अछि। हम सभ राजकुमार बाबू आ चंद्रकान्ताक बेटा जानि लड़काक विषय मे किछु जानबाक प्रयास नहि केलहुँ- नीक खानदान, संस्कारी माता पिताक बेटा संस्कारी हेवे करत आ सुपर्णा लेल तुरत उपन्यास पठा देलहुँ। जखन भावनाक कथा प्रकाश जी सँ लगैत छल तँ प्रकाश जी इएह कहने छलाह यदि माता-पिताक एको परसेन्ट गुण लड़कीमे हेतैक तँ लड़की संस्कारी हेवे करत- आइ हमहू पाहुनक जुमलाकें स्वीकारलौं- पत्र देखतहि राजकुमार बाबू स्वयं गामसँ पटना आबि गेलाह आ सुपर्णाक फोटो बायोडाटा लऽ गेलाह। देखतहि देखिते राजस्थान होटल मे 'इन्गेजमेट' भेल आ सिद्धान्त वियाह सभटा अगहन धरि सम्पन्न। उषाकिरण, रामचंद्र खां, शंकर टेकरीवाल, ब्रह्मानंद सिंह, अशोक सिंह, योगेन्द्र मल्लिक आदि कतेको व्यक्ति बरिआतिकें सम्हारि देने छलाह।

पटना मे वियाह करबाक हमर सभक प्रथम अनुभव छल। सहरसा मे अपन समाज छल, अपन आदमी सभ छल। ओहिठाम शरदक आदमी सभ सेहो आबि सम्हारि दैत छल। किन्तु, पटना मे हमर नहि तँ पापा छलाह नहि तँ माँ रहलीह। सभ सँ पैघ रिक्तता.... हिम्मतक अभाव तँ इएह छल। किन्तु, हमर दुनू समधीन कमलाजी एवं सत्यभामा जी- लगैत छल जेना हुनके बेटीक वियाह हो। कमलाजी भानसक यानी भनसियाक देखरेख, सभ कें खुओनाइ, की बनतैक, नहि बनतैक सभ भर अपनापर लऽ लेलीह। आ सत्यभामा जी वियाहक सभटा विध व्यवहार अपना पर। राजीव तँ सभ बहीनक बापे भऽ जाइत छल वियाह दान मे, जया भंडारी मे छलीह। संजीवक

चुनाव इंटरनेशनल ट्रेनिंग पर्यावरण अहमदाबाद मे भऽ गेल छल। 24 नवम्बंर 95 कें सुपर्णाक विवाह आ 25 नवम्बर के ओकरा अहमदाबाद मे योगदान करबाक छल। तखन ओ तरुमित्र मे कोआर्डिनेटर छल। 24 ता. कें वियाहक बाद 25कें भिनसर ओ 'फ्लाइट पकड़ि अहमदाबाद लेल विदा भऽ गेल छल, छह मासक इन्टरनेशनल ट्रेनिंग लेल। एहि वियाहक बाद हम सभ आब तरुणाक वियाह लेल साकांक्ष छलहुँ। एम्हर ओम्हर सँ नीक नीक घर सँ एतेक धरि जे कतेक लड़का स्वयं आगू आयल छल सुपर्णा बेर मे आ तरुणा बेर सेहो- एक बरीस बाद अचानक एकटा पत्र प्राप्त भेल.....

मान्यवर श्री वर्माजी,
आदरणीया श्रीमती डा० वर्मा जी,
प्रणाम ।

....वस्तुत: आपकी छोटी पुत्री आ0 तरूण। को हम अपनी बेटी-बहू बनाने की याचना चाहते हैं। मेरा सबसे छोटा बेटा चिरंजीव विकास दिव्यकीर्ति एम.ए. (हिन्दी) करके एम.फिल हुआ चाहता है। साथ ही उसने यू.पी.एस.सी. की सिविल सिर्वस परीक्षा (मुख्य) दे दी है । ट्रॉस्लेटर का डबल डिप्लोमा करने के फलस्वरूप वह प्राध्यापक/ हिन्दी अधिकारी/ आइ0एएस0 किसी भी क्षेत्र मे यथा समय समायोजित हो जाएगा । संयोगवश ये दोनों बच्चे एक दूसरे को चाहते हैं । हमे तो तरूणा सरीखी प्यारी मनमोहिनी बेटी की तलाश थी ही- घर बैठे बिठाए प्रभु ने हमारी झोली भर दी। अब आपके द्वार पर याचक हैं । आपका आशीष चाहिये इन दोनों बच्चों को। कृपया अच्छी तरह से जांच पड़ताल करके, सोच-विचार कर अनुकूल निष्कर्ष पर पहुँचियेगा- न बच्चे हताश हों, न हम उदास हों ।

विनीत-चन्द्रभानु आर्य
आर्य निकेतन
2223ए, सेक्टर तीन, फरीदाबाद

हम विनम्रतापूर्वक चाहते हैं आप कृपया इन्हें आशीर्वाद दें, हमारी प्रार्थना स्वीकार करें तथा किसी भी प्रकार की आशंका को अपने मन मे स्थान न दें । आपको यह रिश्ता करके कभी भी पछताना नहीं पड़ेगा - यह हमारा विनम्र वादा है.....

वांछित पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में.........

विनीत - चन्द्रभानु आर्य

पत्र फरीदबाद सँ आयल। हम सभ पत्र देखतहि चौंकि गेलहुँ...

मॉस्को सँ मनोज जी सुपर्णा आबि गेल छलाह। हुनका सभकें ओ पत्र पढ़ऽ देलहुँ। मनोज जी तुरत बजलाह- एहि मे सोचवाक की बात छैक पापा। बेटाक बाप स्वयं गुड़िया कें मांगि रहल छथि- अहाँकें परिवारक भय अछि ने पापा। हम दिल्ली जाइत छी हम आ लीली दूनू गोटे फरीदाबाद जाकऽ सभ किछु आँखि सँ देखि लेब, गमि लेब आश्वस्त भऽ जाइत छी तखन अहाँक खबर कऽदेब... लड़का बड़ नीक आ होनहार लगैत अछि।

आ मनोज जी लीली दूनू गोटे फरीदाबाद गेल छलाह आ हुनक घरक प्रेममय व्यवहार देखि ओ सभ भाव विह्वल भऽ गेलाह। बजलाह एहि सँ नीक परिवार भेटब मोस्किल। नहि कोनो आहे माहे, नहि तँ दुराव छिपाव, एकदम खुलल किताब सन हुनक परिवार अछि पापा, प्रेम सँ भरल।

आ मनोजजीक एहि उक्ति पर विकास दिव्यकीर्ति हमर परिवार मे चलि एलाह। दिल्ली मे जखन सिद्धांत भेल तँ राजीव केर पीतमपुरा बला छत पर चालीस पचास आदमी भोजन केने छलाह। चन्द्रभानु जीक पिता यानी लड़काक दादा सेहो आयल छलाह। हम हुनकर पएर छुबऽ गेलहुँ तँ ओ तुरत रोकि देलनि- हाँ हाँ ई की करैत छी। अहाँ देमऽ बला छी हम लेबऽ बला। हमरे अहाँक पएर छूबाक चाही। ओ वृद्ध हमर पएर दिस झुकलाह। हम छी: छी: करैत ओहिठाम सँ हटि गेल छलहुँ। ई महानता छल हुनकर परिवारक- हुनक समस्त परिवार विश्वास-शमा, विवेक-सुषमा संग विकासक मामा मामी फुआ-फूफा जेना सभक हृदय प्रेम आ एकताक धाग सँ बन्हायल छल।

दिल्लीमे कम्यूनिटी हॉल मे वियाह भेल- एतेक नीक व्यवस्था राजीव केने छल जे पहिलुक बेर हम ओहि वियाह मे बेटीक माइ, भऽ सजि धजि कें बैसल छलहुँ, बनारसी पहिरि। ओहि समय समाज मे बेटीक माय साधारणे साड़ी पहिरैत छलीह तै हमहुँ भावना वंदनाक वियाह जे सहरसाक समाज मे भेल छल- एकदम हल्लुक रंगक साड़ी पहिरने छलहुँ बिना कोनो सिंगारकें समय बदलैत ल। सुपर्णाक वियाह मे सिल्कक साड़ी पटनामे पहिरलौं तँ दिल्ली मे तरुणाक ब्याह मे बनारसी। लहटन चौधरी पटना सँ विवाह मे आयल छलाह- कृष्ण कुमार कन्यादान केने छल, प्रकाश जी पाहुन! शरद साँझ मे फ्लाइट सँ आबि गेल छलैक। एम्हर तँ मधु शंकर, शशि बहीन सभ आयल छलाह- डुमराक दीपक ललित....।

तरुणा कें वियाहक बाद चारि बजे प्रात: विदा कऽ हम सभ पीतमपुरा AP60 D मे वापस आबि गेलहुँ। ओहि एक कोठरी मे हम सभ 35-40 गोटे थाकल ठेहिआइल घोर नींद मे पड़ल छलहुँ- बिछान पर प्रकाश जी, ई अपने आर जे हो- नीचा मे भेड़िया धसान सभ छलहुँ- आ तखने लागल जे जगह ककरो घर मे नहि होइत छैक आदमीक दिल मे होइत छैक जाहिठाम कतेको आदमी समा जाय।

कुमरम मे ततेक नाच गान भेल छल खास कऽ ई हिजड़ा सभक संगे खूब नाच केने छलाह। साँझ मे तँ नगेन्द्र बाबू, जीजा जी, मधुशंकर, चाँद कृष्ण सपना वैद्यनाथ श्वेता, अंशु, भावना प्रकाश वर्मा सभ नचैत छल सभक संग ई नचैत रहलाह- कुमरमक........ भोज मे मिथिलाक दही, राजीवक पौड़ल, हिनकर जोड़न देल दिल्ली वलाक बीच नामी भऽ गेल- ओहि रातिक नृत्य संगीत, दही नामी भऽ गेल। खास कऽ विजया आ भूषण जी कें दही बड़ पसिन्न पड़ल छलैक।

वियाहक बाद पटना एला पर हमरा मोने घुरपेंच होअऽ लागल। किऽक नहि एहि बरस संजीवक वियाह सेहो तय कऽ दी। बेर बेर कार्ड, शमियाना, हलवाइ आदि करैत करैत टुटि गेल छलहुँ। संजीव सँ पुछलहुँ कत्तौ करबाक इच्छा छौक तोरा? ओ बाजल-नहि मम्मी जतऽ अहाँ ठीक करू। खाली एतबे ध्यान राखब जे सूकू दीदीक मोनक लड़की हो। जें कि ओकर पोस्टिंग तखन पटने मे छल। इलाहाबाद वा भुवनेश्वर ओकर बदली होअऽबला छल।

एहि बीच मे कतेक उपन्यास आयब आरंभ भऽ गेल। एक गोट परिचित एलनि आ बजलाह- हम पटना काज सँ आयल छलहुँ। एक बेर सोचलौं अहूँ सभ सँ भेंट घांट कऽ लीऽ। ढेर सेब लऽ कऽ आयल छलाह। जखन खा पी के जाय लगलाह तँ बजलाह गुड्डुक वियाहक बात चलत तँ हमरो बेटी लेल सोचब। हुनका गेला बाद हम हिनका एकदम्मे कहि देलहुँ ई कथा कहियो नहि होयत। ई चौंकि गेलाह-से अहाँ कोना बजैत छी। ई मधुरक बदला सेब लऽ कऽ आयल छलाह- सेब एतेक खट्टा अछि जे मधुर उपन्यास (संबंध) नहि भऽ सकत। हमरा माँ डुमरा मे कहने छलीह। ......ई हँसय लगलाह। ओहि बीच हमरा सभकें सहरसा जेबाक छल। अशोक एकटा लड़की बला ओतऽ लऽ गेल। लड़की सँ एके बात पुछलहुँ—अहाँ होम सायन्स किएक पढ़ैत छी? ओहि एक प्रश्न पर ओ हमरा चालीस मिनटक लेक्चर सुना देलीह- हम तँ चुपे रहि गेलहुँ- अशोक बाजल-दीदी अपने ए.एन. कॉलेज मे प्रोफेसर छथि। तँ ओ लड़की शांत भऽ गेलीह मुदा अपन उग्र भाषण पर पर नहि तँ ओकरा पाश्चाताप भेलैक नहि तँ लाज। स्नेहा मोहनजीक बेटी तखन हमर संगे रहैत छलीह- मम्मी, इ तँ अहीं कें जबाब दैत रहत हरदम।

आ हम आजुक लड़की सभक एहेन तेवर देखि डरि गेलहुँ। अनायास भेटल जया-एतेक पैघ घरानाक बेटी कहियो हमरा जबाब नहि देलक- हम कहियो अपन सासु कें जबाब नहि देलहुँ- आ एहेन लड़की हमर घर आओत, समस्त परिवार छिन्न भिन्न भऽ जायत। तावत ध्यान मे आयल 93 मे अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मे डा. घनाकर ठाकुर हमरा राँची बजौने छलाह ओहिठाम भाषण देलाक बाद हम मंच पर सँ उतरलौं तँ ई कहलनि देखु के आयल छथि- ज्ञात भेल भावनाक पितिया श्वसुर,

ब्रह्मचारी जी हुनक पत्नी नीलम जी हमर समारोहक नाम सुनि भेंट करवा लेल आयल गेल छलाह।

हुनक आग्रह पर वृजेन्द्र जी संग गेल छलहुँ हरमू मे ब्रह्मचारी जी ओतऽ। छोट छीन घर मुदा जेना बेटीबांलाक घर होयत छैक-खूब सुन्दर कलात्मक ढंग सँ सजल। पाँच बेटी दुइटा छोट छोट बेटा- ओहि मे बड़की बेटी शबनम हमर सभक आगू पाछू कऽ रहल छलीह। देखवा मे सुन्दर चंचल आठ या नौ क्लास मे पढ़ैत हेतीह। जे होय हमरा सभकें हुनक परिवार बड़ प्रेममय लागल ओहिनो प्रकाश जी सभ भाइ कें देखि जानि नेने छलहुँ जे मालीपुर मे सेवा भाव बड़ अछि। सभ बच्चा हमरा पाछु "पागल-' रहैत छल आ कि "दीवाना" बुझू। टुक टुक तकैत रहनाय कोनो बात मुँह सँ खसल नहि कि दौड़ि गेनाइ- ओहिना शबनम, डेजी, सोनी सुम्मी सहित विष्णु प्रिंस सभक हृदयमे प्रेम अपन खानदानेक अनुरूप। आबय लगलौं तँ शबनम बजलीह- मम्मी फेर आयब ने? हँऽ हँऽ ज़रूर आयब। हँऽ अहाँ तँ खाली बजैत छी, अबैत छी कहाँ-ठुनकइत ओ बाजल छलीह जे हमरा बड़ नीक लागल छल।

आइ अचक्के ब्रह्मचारी जीक ओ बेटी मोन पड़ि गेल। बद्री नारायण वर्मा ओतऽ फोन कऽ पुछलहुँ जे ब्रह्मचारी जीक बेटी कथी...। मे पढ़ैत अछि। ओ सभ कहलन्हि निस्तुकी तँ नहि बुझल अछि मुदा हेतीह मैट्रिक तैट्रिक मे। मोन उदास भऽ गेल। छह बच्चा कें पढ़बैत पढ़बैत थाकि गेल छलहुँ आब पढ़ल लिखल लड़की आनब। हम नहि पढ़ा सकब....

अचक्के दोसर दिन भोरे नीलम जीक फोन आबि गेल-समधीन शबनमक कथा कत्तौ देखियौक ने?

हम अकचकाइत बजलौं- अहाँक बेटी एतेक टाक भऽ गेल। ठीक छैक अहाँ फोटो बायोडाटा पठा दियऽ हम देखैत छी, कोनो लड़का नजर मे हएत तँ कहब- नीलम जी बजलीह- कोनो लड़का किएक समधीन अहाँ अपने लग राखि लियौने?

हमरा हँसी लागि गेल छल। भगवानक बनाओल ई टेलीपैथी कतऽ कोना काज करैत अछि- ककर भाग्य मे की छैक के बुझत हुनक महिमा? घनाकर जीक सम्मेलन हमरा लेल ऐतिहासिक बनि गेल।

आ ई वियाह भेल। हम सभ एतबे आग्रह केलौं जे पटना सँ विवाह करू ठहरबाक व्यवस्था हम कऽ देब। कारण राँची जेबा अयबामे दुइ दिन लागि जइतैक जे हिनका नीक नहि लगैत छल। हम सभ कहने छलहुँ जे हमर घर देखि लियऽ हमरा सभकें कोनो चीजक कमी नहि अछि खाली लड़की चाही- तखन अमिय झाजी हमरा सभकें उगना एपार्टमेट मे तीन चारि टा फ्लैट दऽ देलनि। एहि वियाह मे हम

अपन बच्चा सभ सँ शर्त केलौं चारू बेटी चारू जमाइ सभ समधि समधीन एथीन तखने वियाह होयत...। आ एहि वियाह मे बरिआती नाचल छल- इनकम टैक्स गोलंबर सँ सेंट स्टीफेन्स हाल जेबा मे डेढ़-दुइ घंटा लागि गेल। सभ बेटी जमाय राजीव जयाक संगे ई अपना कतेक नाचल छलाह- सभक जबरदस्ती पर हम दीपक मधु तीनू बहीन अन्नुक संगे शरद, असीम, शंकर बाबू, अमर बाबू, मुन्नू जी। सभ के नहि दीव्यंका, सोनी, एक्का। नाचल छलाह- सभ सं तँ नीक लागल छल तरुणा अपन श्वसुरक संग जे नाच केलीह- सभ पागल छल। खुशी आ उत्साहक उमंग- आब सोचैत छी ई सभ की छल- बुझैत दीयाक हुकहुकी! तखन के जनैत छल हमर सिंगार तीन चारि बरीस मे उजड़ि जायत। हमर जीवन तप्त रेतक शून्य मरुभूमि बनि जायत।

नहि जनलौं नीति नहि राजनीति

हमरा कोनो चीजक होश नहि छल । सहरसाक पर्दानवीप स्त्रीगण कें हम सड़क पर उतारि जूलूस धरना मे सक्रिय कऽ देलहुँ । की टेकरीवाल परिवार, दहलान परिवार, की व्यापारी वर्गक पत्नी, पुत्री सभ, की मंत्रीगणक पत्नी, पुत्री सभ, की ऑफीसर वर्गक पत्नी, पुत्री-संपूर्ण क्रांतिक आह्वान मे सभ बताह भऽ गेल छलीह । हमर सभक जेल भरो अभियान । जेल पर आमरण अनशन गफूर सरकार वापस जाओ आदि आंदोलन सँ तंग भऽ जिलाधीश कृष्णन वर्मा जी सँ कहने छलाह-वर्मा जी अपन पत्नी कें कहियौंक जेल भरो अभियन बंद करबा लेल - जेल मे कत्तै महिला कें राखबाक स्थान नहि बाँचल - आ स्त्रीगण छलीह जे पुलिसक गाड़ी पर जबरदस्ती बैसि रहल छलीह । कल्याणी गुप्ता ओकर बहीन- उमा देवी, निसा झा, निम्मी आदि केतेको नाम जे विस्मृत भऽ रहल अछि- कत्तौं धरना तँ कत्तौं भाषण सँ आगि बरसाबैत - सहरसाक माहौल पगलाय गेल छल- स्त्रीगण आगिक चितगी बनि छिटकि रहल छलीह । प्रशासनक नाक मे दम कऽ देने छलीह । जयप्रकाश नारायण हमरा कहने छलाह-बेटा, अहाँक ऑपरेशन भेल अछि। स्वास्थ्य नीक नहि रहैत अछि। अहाँ अपन लेखनी सँ क्रांति आनू। अहाँ एहेन रचना सभ लिखू जे परिवर्त्तरक आगि पसरि जाय - सहरसा सरकिट हाउस मे ओ आराम कुरसी पर आराम कऽ रहल छलाह - आ हम हुनक पएरक लग बैसल चुपचाप हुनक शान्त वाणी कें आत्मसात कऽ रहल छलहुँ- एकटा ज्योति स्फुल्लिंगक दाह झेलि रहल छलहुँ । किछु प्रतिवाद नहि कऽ सकलौं किन्तु चैन सँ बैसियो नहि सकलौं ।

ओहि समय वर्मा जी 'सर्चलाइट' अखबारक संवाददाता छलाह संगे जनसंघक जिलमंत्री सेहो । सक्रिय हम छलहुँ किन्तु लेखनी सँ आगि बरसाय रहल छलाह वर्मा जी । शंकर टेकरीवाल, जगदम्बी यादव, कैलाशपति मिश्रा, इन्दर सिंह नामधारी, जगबन्धु अधिकारी रामेन्द्र रवि आदि नेता सभक हमर घर मे कबै माछ आ रोटी पर भीड़ लागल रहैत छल । पन्द्रह अगस्त कें कार्यालय मे झंडा फहराबै लेल परमेश्वर कुमर कहलनि दिल्ली मे इन्दिरा गाँधी आ एहि ठाम शेफालिका वर्मा । मुदा, हम तैयार नहि भेलौं आ एकटा दीन हीन रिक्शाबला सँ झंडा फहराबऽ कहलौं - एहि देशक वास्तविक प्रतिनिधि।

ओहि समय नव जिलाधीश आबि गेलाह एस एन प्रसाद, कमिश्नर ईश्वरी प्रसाद, डी.आइ.जी. अंसारी जी, एस॰पी॰ शिवचंद्र झा, काडा कमिश्नर एच॰एन॰ सिन्हा, सचिव एन बी॰ सिन्हा- समृ से पारिवारिक रिश्ता भऽ गेल छल । खास कए ईश्वरी प्रसाद राखीबंद पैघ भाइक स्थान लऽ नेने छलाह ।

एक बेर हम आ वर्मा जी सांझ मे टहलैत-टहलैत कलक्टर साहब ओतऽ जाइत छलहुँ। पावर हाउस गुमटी लग एस॰पी॰ शिवचंद्र झा भेटलाह-हमरा सभकेँ देखि जीप रोकि हाल चाल पूछऽ लगलाह - दूइ मिनट गप कए ओ आगू बढ़ि गेलाह। हम सभ कलक्टर साहब ओतऽ पहुँचलौं - एम्हर ओम्हरक गप होइत रहल, चाह जलखैक संग मन्टूक आग्रह पर वर्मा जी अपन गीत सेहो सुनौलनि। जहिया कलक्टर साहब ओतौं जाइत छलऽ तँ हुनकर बेटी मन्टू हिनका सँ गीत अवश्य सुनैत छलीह। ओहिनो ओहि समय जे सरकारी कवि सम्मेलन होइत छल ओहिने हमरा सभकेँ साज आओर आवाजक उपाधि देल गेल छल । हमर हिन्दी कविता आ ओहि कविताकेँ स्वर दैत वर्मा जी।

फेर बगले मे ईश्वरी भैया सँ भेंट करैत हम सभ रात्रि करीब 8.00 बजे वापस आबि गेलहुँ । सभ बच्चा केँ खुआ पिआ अगला कार्यक्रमक योजना बनवऽ लागलहुँ । ओहि समय संयोग छल जे घर एकदम खाली छल । खाली बच्चा सभ आ चन्द्रेश्वर। चन्द्रेश्वर पर घर बच्चा सभक भार दयऽ हम निश्चिंत मोन सँ संपूर्ण क्रांति मे भाग लैत छलहुँ । अचानक राति केँ 11 बजेक लगभग ईश्वरी भैयाक फोन आएल। हम सभ अकचका गेलहुँ एतेक राति केँ - वर्मा जी ठीक छथि ने ? हम बाजलौं - हँऽ एकदम ठीक छथि - की बात थीक - अहाँ एखन तुरंत डी॰ आइ॰ जी॰ साहब सँ बात कऽ लियऽ- बाजि इश्वरी भैया फोन काटि देलनि ।

अंसारी जी केँ फोन लगौलहुँ - वर्मा साहब कँ अहाँ तुरंत घर सँ हँटाइ दियौक- हम घबड़ाय गेलहुँ।

हुनका पर मीसा लागि गेल छैक । एस॰पी॰ भोरे सँऽ वारंट लऽ कऽ घुमि रहल छैक।

हम बाजलौं एस॰पी॰ साहब तँ सांझ मे भेंट भेल छलाह । गाड़ी रोकि हमर सभक हाल चाल पूछि चलि गेलाह ।

आब डी.आइ.जी साहब अकचका गेलाह-ओकर तँ जेबी मे वारंट छल तखन वर्मा जी कँ एरेस्ट नहि केलक ? हम तँ ईश्वरी बाबू केँ कहने छलहुँ वर्मा साहब केँ आगाहऽ देबाक लेल मुदा कायस्थ होय बाक कारण ओ अहाँ सभ सँ कहबा मे

हिचकि रहल छलाह । तखन हम बाजलौं जे हम कहि दैत छी हुनका ! अंसारी सँ वर्माजीक कोन रिश्ता भऽ सकैत छैक।

आब हमर सभक हालत खराब भऽ गेल । हमर तँ जनमे नौ अगस्तक क्रांति मे भेल छल। हमरा किछु नहि लगैत छल किन्तु, फूल सन कोमल वर्मा जी पर जे खाली रिपोर्टिंग करैत छलाह - ओहि समय हमर सभक परिवार पर वज्रपात भऽ गेल छल । वर्मा जीक छोट बहीन रेणु, सुधीर बाबू मजिस्ट्रेटक पत्नी छलीह, हुनक अकाल मृत्यु भऽ गेल छल मात्र 30-35 वर्षक वयस मे ! वर्मा जी शोक संतप्त छलाहे आ ताहि पर सँ ई मीसा।

हिनकर टेबुल पर तखन श्यामबाबू छलाह । श्याम बाबू केँ बजाय राता राति हिनका शशि चाचाक घरक पछुआरक टूटल फूटल घर मे नुकाय केँ राखिदेलौं गेल। हम आ श्याम बाबू मिलि जतेक कागज पतर क्रांतिक छललौं नष्ट कऽ देलहुँ, कतेक केँ नुका देलहुँ- आइ धरि जकर अपसोस अछि - कतेक लोक पार्टी बदलि बदलि एहि सभ मे शामिल भऽ गेल। हम अपन बड़का हथियार सभकेँ नष्ट कयऽ देलहुँ जाहिमे जयप्रकाश नारायणक, कुमुदरंजन झा, नीतीश कुमार, लालू यादव, सुशील मोदी आदि कतेको छात्र नेता सभक चर्चा भरल छल । पटना मे पापा केँ फोन कऽ देलहुँ । मधेपुरा अखिल केँ फोन लगेलहुँ । बैसल-बैसल सभ योजना तैयार भऽ गेल - पल मे की सँ की भऽ जाइत छैक - एखनहि हम आ वर्मा जी क्रांतिक योजना बनवैत छलहुँ आ एखन हम श्याम बाबू दोसर तरहक योजना बनवऽ लगलहूँ-

जखन रेणुक मृत्यु भेल छल सुधीर बाबू पूर्णिया मे पदस्थापित छलाह। सुधीर बाबूक वियाह रेणुसँ भऽ गेल छल । हाले मे हम आ वर्मा जी पूर्णिया जा कऽ रेणु सँ भेंट केने छलहुँ । ओ ब्रेस्ट कैंसर सँ पीड़ित छलीह आ अपन लालभाय लेल पोलाव-मीट अपने हाथ सँ बनौने छलीह। बनवैत-बनवैत बीच-बीच मे कुहरय लगैत छलीह - रेणुक मृत्युक खबर सुनतहि वर्मा जी कँ हाइ बल्ड प्रेसरक रोग भऽ गेलैक जे कालांतर मे हृदय रोग बनि गेल ।

हम हिनका सँ भेंट करऽ नहि जाइत छलहुँ जे कहीं पुलिस हमर पाछा धय हिनका लग नहि पहुँचि जाय । दोसर दिन सांझुक पहर दीयाबातीक बेर अखिल आएल आ मोटर सायकिल सँ हिनका लऽ कऽ तीव्रगति सँ पोलिटेकनिक दिस सँ मधेपुरा लेल उड़ि गेल । ओहि ठाम बच्ची हिनका देखतहि रेणु लेल कानय लगलीह। अखिल तुरंत चुप करा देलक जे केओ नहि बुझय जे वर्मा जी आएल छथि । राति मे पूर्णिया भऽ कऽ पटना जायवाली बस मे हिनका बैसा देलक । बस मे अमरेन्द्र मिश्र सँ हिनका भेंट भऽ गेल । पूछऽ लगलाह -वकील साहब अहाँ कतऽ जाइत छी ?

ई बजलाह – हमर छोट बहीनक मृत्यु भऽ गेल अछि। ओहि मे राँची जाइत छी । रेणुक मृत्यु राँचीए मे भेल छल ।

देह हिनकर पटना जा रहल छल किन्तु मोन मे खाली रेणु-रेणुक स्मृति । भीतरे भीतर घुटि रहल छलाह-केओ संगीयो तँ नहि छल साथ मे – मुनहर राति मे पटना पहुँचलाह –सीधे शंकर टेकरीवाल ओतऽ चलि गेलाह । दरवाजा खटखटाबैक कनिक काल बाद केबाड़ खोललक – हिनका लऽ कऽ फेर पछुआर दिस चलि गेल। एकटा कोठरी मे अल्लू पिऔज सड़ल गंधक संग सहरसाक कतेको लोक नुकायल छलाह । अपन लोक केँ देखि हिनका संतोष भेलैक । सभटा फुसुर फुसुर गप कऽ रहल छलाह। एक दूइ दिन ओहिठाम रहि ई पापा ओतऽ श्री कृष्ण नगर चलि एलाह। हमहूँ पटना पहुँचि गेल छलहुँ। जगन्नाथ मिश्र मुख्य मंत्री छलाह आ बसन्त कुमार दूबे मुख्य सचिव । दूबे चाचाक स्नेह छाहरि मे हमूर सभक बाल्यकाले सँ जीवन बीतल छल । दूबे चाचा हिनका ओझा कहैत छलथिन । हिनका कतेक काल धरि दूबे चाचा समझावैत रहसथिन – ओझा, यदि अहाँ राजनीति मे जएबा लेल चाहैत छी तँ मीसा रहड दिऔक यदि ओकरलत बरख लेत चाहैत छी तँ हम मीसा हँटवाय दैत छी। ई सोचऽ लमलाह – मुदा, हम तुरन्त निर्णय ललौं–चाचा जी! वकालत प्रथम, वकालत अन्तिम – आओर किछु नहि । पैघ पैघ नौकरी छोड़ि ई वकालत मे आयल छथि–तखन हमर निर्णय मे हिनका अपन निर्णय देखाइ पड़लैक ।

राजनीति सँ हमरा सख्त घृणा भऽ गेल छल । कहियो केओ देश लेल नहि सोचलक । कतेक जानक आहुति दय, कतेक माँक कोर सून कऽ, कतेक सिनूर पोछा गेल तखन तँ ई आजादी हमरा सभ केँ भेटल आ आइ सभ अपनहि देश केँ नोचि नोचि खा रहल अछि । गरीब आओर गरीब, अमीर आओर अमीर भेल जा रहल अछि। ओहि समय एकटा खास जातिक वर्चस्व छल । एकटा चपरासियो तक, नौकरो तक अपना केँ मुख्यमंत्री सँ कम नहि बुझैत छल । मुख्यमंत्री तँ अपना जगहे ठीके छलाह, किन्तु प्रत्येक आदमी मे घमंड अहंकार एतेक भरि गेल जे प्रतिफल संपूर्ण क्रांतिक जन्म भेल छल । हमहूँ सभ तखन सत्ता परिवर्तन लेल आकुल भऽ गेल छलहुँ । किन्तु, तखनो, एक बात केँ नकारि नहि सकैत छलहुँ जे प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधीक व्यक्तित्वे टा नहि वरन हुनक स्वर पर, भाषण पर सभ मुग्ध भऽ जाइत छल । जहिना रेडियो सँ हुनक भाषण होमऽ लागैत छल, रस्ता चलैत बड़का सँ बड़का विरोधी रुकि केँ हुनक भाषण सुनऽ लगैत छल – ई छल सम्मोहन इंदिरा गाँधी मे। हमरा मोन अछि एक बेर इन्दिरा गाँधी सहरसा आएल छलीह । तखन तरुणा दूइ तीन बरीसक हेतीह। हल्ला ओ मचावए लगलीह-हम इन्दिरा गाँधी केँ देखब – हम खाली किताब मे देखने छी –हमहूँ देखब । वर्मा जी तँ हरदम अगिला पंक्ति प्रेस मे बैसैत छलाह।

तरुणा जखन देखि सभा सँ वापस अयलीह तँ जेना ठकमुड़ी लागि गेल छल ओकरा। इंदिरा गाँधीक एहेन सम्मोहन भेल ओहि नेना पर-इंदिरा गाँधी मुरुत छियैक-मुरूत छियेक –

दूबे चाचा हिनका पर सँ 'मीसा' हँटाय देलखिन । हम सभ सहरसा वापस आबि गेलहुँ । सहरसा पहुँचबाक दूइ तीन दिन बाद अचक्के भोरे भोरे सूरुजो नहि उगल छल– शिवचंद्र झा एस॰पी॰ साहेब खालिए पएरे काँट कूस वला मैदानक रस्ता सँ नुकाइत हमरा ओतऽ पहुँचलाह । जेँकि हमरा सभकेँ भोरे उठवाक हिस्सक छल तेँ बैसल छलहुँ तैयार भऽ कऽ। एस॰पी॰ साहब केँ देखतहि अकचका गेलहुँ–

वर्मा साहब, अहाँक एक बात कहबा लेल हम एहि अन्हार मे नुका केँ पैदल आएल छी जे अहाँ पर सँ मीसा तऽ हँटि गेल किन्तु अहाँक सामने सादा वेस मे पुलिस कर्मी सभ अहाँक गतिविधि पर दृष्टि रखबा लेल तैनात अछि। अस्तु, अहाँ संभरि केँ रहब । आ ओ जहिना आएल छलाह ओहिना चलि गेलाह। हमर दुनू गोटेक आँखि भरि गेल – ईश्वर हमर सभकेँ पैसाक अम्मार तँ नहि देलन्हि किन्तु, दोस्तीक भरमार देलन्हि एकटा एस पी॰ स्वयं आबि चुपचाप सतर्क कऽ जाय एहि सँ बेसी मानवताक की उदाहरण भऽ सकैत अछि ?

एहि स्वार्थी संसार सँ मोन विमुख भऽ गेल। इमान, धर्म, न्याय ई सभ निरीह व्यक्ति लेल अछि किन्तु जकर पाछू कोनो शक्तिशाली व्यक्तिक हाथ होइत छैक ओकरा कोनो चीजक आवश्यकता नहि। हमरा सभक लेल शक्तिशाली व्यक्ति ईश्वर छलाह जे कहिया की करताह केओ नहि जनैत छथि।

हमरा मोन पड़ैत अछि जखन हम सभ मद्रास गेल छलहुँ तँ ओहि समय माननीय जस्टिस प्रभाशंकर मिश्रा मद्रास हाइकोर्ट मे छलाह। हमरा सभ केँ भोर मे जलखै पर बजौ रहथि। जखन पहुँचलौं हुनका ओतऽ तँ ओ टहलि केँ घुरल रहथि। उज्जर हाफ पैंट, उज्जर शर्ट, उज्जर जूता मोजा मे हुनक सुदर्शन व्यक्तित्व गुलाब सन खिलि रहल छल। अपनत्व सँ भरल हुनक मुस्कान हमरा सभ मे कतेक शक्ति भरि देने छल जखन ओ कहलनि– शेफालिका जी, हरेक आदमीक भाग्यक रेख उपर वाला खींचि केँ रखने छथि। आदमी ओहि रेखा पर घुमैत रहैत अछि। मनुष्य कें अपना हाथ मे किछु नहि छैक बस सत्पथ पर चलैत रहू, कर्म करैत रहू.......।

राजनीति नहि तँ हमर केरियर रहल नहि तँ प्रकृति वा नहि तँ मनोवृत्ति। राजनीति हमरा पर ओहिना थोपलनि जेना बनारसी नुआ मे चेफरी। हम सभ सँ पहिने अपन पति केँ चाहलौं, फेर संतान, तखन परिवार। एहि तीन सँ छुट्टी भेटय तखन तँ

बाहरक सोची। सभ दिन सँ हमर सोच रहल जे स्त्री अपन घर कें नहि बनाय सकल ओ समाज कें कोना बनाओत?

रमेश झा जी अपना जमानाक कांग्रेसक दबंग मंत्री छलाह । हुनकर व्यक्तित्व मे एकटा रुतबा छल जे लोग पर अपन गरिमामय छाप छोड़ि दैत छल। एक भिनसर सूर्योदय सँ पहिने ई बाड़ी मे फूल रोपि रहल छलाह आ हम बगल मे ठाड़ छलहुँ। अचानक टहलैत-टहलैत रमेश झा जी आबि गेलाह। हम तुरंत भीतर चलि अयलौं। बाबूजीक डर भऽ गेल जखन कि ओ डुमरा मे छलाह, हम कोना मंत्रीजीक सोझा जइतहुँ ?

ओ वर्माजी सँ कहलनि-महिला महाविद्यालय खुजल अछि। शेफालिका यदि मैथिली पढ़ा दितथिन।

ई बजलाह-शेफालिका तँ नोकरी लेल तैयारे नहि छथि। ताहि पर ओ बजलाह-ठीक छैक ओ नौकरी नहि करथु किन्तु बचिया सभकें समाज सेवा बुझि कनेक समय दैथि।

हम तँ सभ दिन सँ स्त्रीक नोकरीक विरूद्ध छलहुँ वैतनिक हो वाकि अवैतनिक। दोसर जे हमर अपन छोट-छोट बच्चा छल। घर मे देओर सभ छलाह। गाम सँ बड़का बाबूजी, काकी, माँ-बाबूजी सभ अबैत जाइत रहैत छलाह। ओहिमे बाबूजीक लिखल ओ पत्र जे हमर पापा कें लिखने छलाह। कोनो प्रश्ने नहि उठैत छल एहि साहसिक डेग उठेबाक। मंत्री जी तँ दुखी भऽ गेलाह किन्तु ई तँ रूष्ट भऽ गेलाह।

मानव जे चाहैत अछि ओ सदिखन पूर्ण होइत छैक की? हमर सभक ''चाहनाइ'' कतेक असत्य अछि, कागजक नाह जकाँ इच्छा कामना सँ लदल-कनेक दूर चलि पानि मे डूबि जाइत अछि।

एकटा अन्हड़ उठल आ हम स्पष्ट अपन मृत्यु कें देखलौं। ओ हमर जीवनक ऐतिहासिक दिन छल जखन हम नगर आयुक्तक चुनाव जीतने छलहुँ।

हम राजनीतिज्ञ नहि छलहुँ, नेता नहि छलहुँ । हम तँ अपना आप मे हेरायल, अपन निर्दोष सपना मे डूबल किछु कथा-पिहानी लिखैत छलहुँ, अनचिन्हार सपना सँ मोनक कोन-कोना रंगइत छलहुँ।

किन्तु, वर्माजी पक्का राजनीतिक छलाह। कहैत छलाह हम 'किंग मेकर' छी। जखन ई वकालत आरंभ कएने छलाह तँ वकालत-खाना मे दूइ चीजक चलती छल-एक तँ बेसीतर वकील जनसंघी छलाह दोसर सुरापानक। हम एहि दूनू चीज सँ

हिनका बचवऽ चाहैत छलहुँ। सुरा सँ तँ बचा लेलहुँ जनसंघ सँ नहि। ओहि समय श्रीकान्त मुख्तार, गोपाल लाल दास, मुरली बाबू, रामकृष्ण मंडल, विन्देश्वरी सिंह आदि वरीय अधिवक्ता सभक चलती छल। हिनका सभ केओ मिलि जनसंघक जिला सचिव बना देलनि। ओहि समय सहरसा, सुपौल, मधेपुरा मिलि एक जिला छल। आ राजनीतिक पहिल चक्र ई हमरे पर अजमेलन्हि। नगर आयुक्तक चुनाव लेल हमरा सँ नुका-नुका गुप्त मंत्रणा होइत रहल। एक दिन कहलनि-आइ कचहरी चलू संगे, किछु काज छैक। हम संगे घुरि आयब। हमरा कचहरी जाएब अटपट लागल। फेर ई बजलाह-एकटा मैजिस्ट्रेट दोस्त हमर सभक संगी छलाह-अहाँ हुनकर चैम्बर मे कनि काल बैसब, हम काज कय चलि आएब। ककरो विश्वास हो वा कि नहि, किन्तु ई सत्य अछि जे हमरा एकोरत्ती एकर जानकारी नहि छल। किछु कागज सभ ऽल कए एलथि- अहाँ एहि पर जल्दी सए दस्तखत कय दिऔक। हम बिनु किछु पूछने झट दऽ दस्तखत कऽ देलहुँ जे कोहुना एहिठाम सँ मुक्ति भेटय।

एक घंटा धरि हिनकर कोनो अता पता नहि। एतेक ''गैर जबाब देह'' ई भऽ सकैत छथि।

अचक्के चैम्बरक बाहर भीड़ भऽ गेल-शेफालिका वर्मा जिन्दाबाद, जिन्दाबाद-शंकर टेकरी वाल, गुंजेश्वर शाह, श्याम शाह संगे कतेक मैजिस्ट्रेट सभ केओ हमरा बधाइ दऽ रहल छलाह-अहाँ नगर आयुक्तक चुनाव जीति गेलहुँ हमर सभक सीना चाकर भऽ गेल आइ- सब बाजि रहल छल।

हम हिनका खोजि रहल छलहुँ आ ई किंग मेकर एकटा कोर मे चुपचाप ठाढ़ टुकुर-टुकुर हमरा दिस तकैत मुस्की मारि रहल छलाह। तखन पी० पी० साहब काशीनाथ झानी हमरा आशीर्वाद दने छलाह-आब अहाँ पब्लिक लाइफ मे चलि आयल छी राजनीति काजरक कोठरी छी। अहाँ अपन परिवारक प्रतिष्ठा बचाय काज करब। हमर माँक पत्र आयल छल हमर बेटी कमिश्नर तँ भेल चाहे जेहि विभागक होय-सौंसे शहर हमरा जूलूसक सग घुमड पड़ले फूलकः माला सँ लदल ओ हम कहाँ छलहुँ हमर प्राणहीन तन चलि रहल छल-

वर्माजी जनसंघक जिला सचिव छलाह आ वकालतक प्रति समर्पित । एहि कारण पार्टीक मीटींगमे नहि जाय पबैत छलाह । लोग सभ टोकि दैत छल तँ हमरा बड़ अप्रिय लगैत छल । हम हरदम कहैत छलहुँ जे काज अहाँ नहि कऽ सकैत छी ओकर भार अहाँ किएक लैत छी-लोक सभ टोकैत रहैत अछि-हमरा नहि नीक लगैत अछि-

रनिया, वकालत सँ छुटीए नहि भेटैत छैक हम की ? विवश स्वर हुनक रहैत छल–किछ नहि त्याग पत्र दऽ दिऔक!–स्पष्ट उत्तर हमर छल वा कि निर्णय–वकालत करबाक मन करैत अछि कि पार्टीक काज–की बजैत छी रन्नो अहाँ–हमरा सँ वकालत छोड़ि दोसर काज नहि भऽ सकैत अछि–आ कनि दिन बाद ओ सचिव पद सँ त्याग पत्र दऽ देलनिथ!

किन्तु फेर हम साथ नहि देलहुँ जखन '74 क क्रांतिक उपरान्त हमरा चुनाव लड़बाक टिकट लेल कैलाशपति मिश्र पटना सँ फोन केलनि ! हम सभ दिन सँ अपन घर परिवार सँ बड़ प्रेम करैत छलहुँ । खास कऽ हिनका तँ हम जनैत रही जे ई बेस उताहुल छथि जे हम टिकट लेल 'हँ' कहि दी! किन्तु, हम जनैत छलहुँ जे ई कतेक कोमल छलाह, कतेक भावुक जे एकरत्ती नगरपालिकाक मीटींग देर धरि चलैत छल तँ हमरा कहैत छलाह – अहाँ चलि किएक नहि अबैत छी।

एहिना एक बेर हमरा कापी जाँचवा लेल दरभंगा जाय पड़ल प्रायः दस–ग्यारह दिन लेल। तखन कृष्ण कुमार दरभंगा मे डाक्टर छल- शरद समस्तीपुर रेलवे मे सीनीयर डी.ओ। दस दिन अलग रहनाइ हिनका पहाड़ लागऽ लगलैक। फोन केलनि अहाँ शनि दिन समस्तीपुर आउ, हम सहरसासँ अबैत छी। कृष्ण कुमार हमरा मोटर सायकिल सँ समस्तीपुर लऽ गेल। हमरा लाजो होयत छल जे सभ की कहत ई सभ एक दोसरा बिना कनियो दिन नहि रहि सकैत अछि.....।

मुदा, हम अपन स्वभाव नीक जकाँ जनैत छी, कोनो दायित्व हमरा देल जाइत अछि तँ हम ओकर निर्वाह मे अपना दिसि सँ कोनो कोताही नहि करैत छी! हम देखने रही पटना मे कोना निधि जी पापा लग बैसल रहैत छलाह – मल्लिक साहब, हमरा अपन मंत्री पत्नी सँ भेट करबाक समये नहि भेटैत अछि ! ततेक कारक भीड़ जमा अछि, लोकक लाइन लागल अछि –

एकटा पुरजी किएक नहि अपन नामक पठा दैत छी – पापा चुटकी लैत छलाह – हमरा पर एकर सभक बड़ असर पड़ैत छल ! हिनकर कहबा छल हम जखन कोर्ट सँ आबी तँ अहाँ जरूर हमर सामने रहू, तकर बाद अहाँ जतऽ जाउ ! आब इ। कोना संभव होइतैक।

कैलाशपति जी कहलनि – भाभीजी, विचार कऽ लियऽ, हम बारह बजे राति ने फोन करब ! ओहि समय, कलक्टर, कमिश्नर, काडा कमिश्नर, कांडा सेक्रेटरी सभ कायस्थ छलाह ! जंगलक आगि जकाँ बात पसरि गेल जे हमरा टिकट भेटि रहल अछि – सभ आफीसर घर मे बैसि गेलाह – 'मिसेज वर्मा हमरा सभक प्रतिनिधि केओ नहि अछि सरकार मे ! अहाँ जायब तँ हमरा सभकेँ शक्ति भेटत !

वर्माजी सभसँ बेसी आवेश आ आवेग मे – समझाउ, समझाउ हिनका – छोट छोट कारणसँ एतेक नीक अवसर छोड़ि रहल छथि ! ओहि समय सहरसा मे 'आँधी' सिनेमा चलैत छल ! श्याम बाबू शांत भऽ सुनैत रहैत छलाह – कखनो काल बाजथि – की हेतैक – जे हेतैक देखल जेतैक – हँ, बाजि दहीक – दबले स्वर बजैत छलाह कारण जे हिनकर स्वभाव ओ नीक जकाँ जनैत छलाह जे हमरा बिनु कतेक काल रहि सकैत छथि ! राजू हमर तरहथ देखि कहैत छल – एहिठाम सँ मम्मी प्लेन पर चढ़त आ फट दऽ हमरा सभकें छोड़ि उड़ि जायत .... ओहि बच्चाक बात सुनि- हिनका चुपचाप कोन मे लऽ जाय कें बुझाबी – अहाँ सोचू ई छह – छह बच्चाकें के देखत–? अहाँ कोना रहब – मजाक नहि ने थीक ई सभ – आ एक बात ईहो जानि लियऽ अहाँ हमर स्वभाव जनैत छी ! हम मरल जिनगी नहि जी सकैत छी ! एम.एल.ए., एम.पी जे बनब आ फेर मंत्री बनबा लेल प्राणापन लगा देब ! जाहि लाइन मे रहब आगू बढ़वा लेल जी जान सँ लागि जायब- तखन ? आ अहाँ नीक जकाँ जनैत छी जे राजनीति एहेन खेल अछि जाहि ठाम खाली शतरंज जकाँ चालि चलल जाइत अछि, चालि पर चालि, हमरा तँ शतरंज की लूडो, साँप सीढ़ी धरि खेलवा लेल नहि अबैत अछि।

अंत मे बारह बजे राति मे फोन आयल कैलाशजीक – सभ निराश भऽ गेलाह – ईहो उदास भऽ गेलाह – किन्तु, हमर मोन हल्लुक भऽ गेल। राजू खुश, श्याम बाबू खुश, तकर बाद सरकार बनवा-मिटवा मे जे घिनमाघीन भेल – तँ हमरा दुनू गोटे केँ राजनीति सँ विरक्ति भऽ गेल ! कैलाश जी, जगबन्धु जी सभक फोन अबैत रहैत छल मुदा हम स्पष्ट कहि देलहुँ एतेक अशोभनीय स्थिति मे हम सभ सक्रिय आ कि निष्क्रिय कोनो राजनीति मे नहि रहब ! हँ, सभ सँ व्यक्तिगत संबंध हमर सभक बनल रहत एतबा धरि विश्वास दिआबैत छी।

शेफालिका जी, सभ केओ इएह बाजत तँ कोना की करब – अधिकारी जी मायूस भऽ बजैत छलाह।

किन्तु, हमरा पास कोनो उत्तर नहि छल आ आइ धरि उत्तर नहि अछि ! पाछां सोचलौं, ठीक कयलौं जे हम राजनीति मे हिनकर बात नहि मानलौं। एहि ओकालतक पाछा ओ सभ किछु विस्मृत कऽ दैत छलाह ! हम कहियो कोनो शिकाइत हिनका लग नहि केलौं जे हमरा लेल अहाँकें समय नइं भेटैत अछि ! जनैत छलहुँ जखन अनन्त काल धरि कोनो यात्रा पर दुनू गोटे संग रहैछ तँ एक दोसराक गुण सँ प्रेरणा ग्रहण करैत आगू बढ़ैत अछि! आ खास कऽ जाहि पर हमर सभक स्वर्णिम भविष्य टिकल अछि –

ओहि दिन हमर मोन बड़ हल्लुक छल। लागल छल जेना सहरसाक आकास मे नित नव-नव क्षितिज खुलइत रहत- कोनो पार्टीक सरकार हो बिहार मे, बेसीतर मंत्री सहरसे जिलाक (सुपौल, मधेपुरा) रहैत छलाह। जहिना सहरसा जिलाक सड़क पर बैलगाड़ी चलैत छल ओहिना सहरसाक आकास मे हवाई जहाज उड़ैत छल। 19/10/1987 कें रेड क्रास समितिक मीटींग सँ आयल छलहुँ। जिलाधिकारी अरविन्द प्रसादक अध्यक्षता मे ई मीटींग भेल छल। जिला पदाधिकारीक अलावे अरुण अग्रवाल, डॉ. उपेन्द्र यादव, दिनेश झाजी, रसिक सोरेन, उप विकास आयुक्त, सुदेव चंद्र घोष, उप-समाहर्त्ता, भवेश मिश्र जी, डॉ. प्रेम नारायण झा- सभ केओ छलाह ओहि बैठक मे। सभक मोन मे उत्साह छल। रेडक्रास द्वारा नेत्रदान शिविर, बाल दिवस आदि कतेको कार्य क्रमक रूपरेखा तैयार भेल। सभ सदस्य हम सभ उत्साह मे छलहुँ। सभ केओ सहरसाकें बिहारकेर मानचित्रक संगे भारतक मानचित्र मे महत्व देवा लेल तत्पर छलहुँ- कोनो नीक काज विकासक होइत छल तँ हम सभ बड़ उत्साह सँ भाग लैत छलहुँ- ओहि समय अरविन्द प्रसाद जिला पदाधिकारी एहिसभ काज मे बड़ उत्साह रखैत छलाह। मोन पड़ि गेल महिला समिति दिस सँ हम सभ गर्ल्स हाइ स्कूल मे आनन्द मेलाक आयोजन केने छलहुँ। डिस्ट्रिक्ट जज अंबिका प्रसाद सँ ओहि आनंद मेलाक उद्घाटन करेने छलहुँ। ओहि मे हम चाटक दोकान लगेने छलहुँ। मेलाक संचालन हम स्वयं कऽ रहल छलहुँ आ दोकान पर भावना, बंदना, सुपर्णा छलीह। हम अपन 'शेरो शायरी' सँ, कविता सँ, हिन्दी मैथिली दुनू मे माइक पर सभ कें आनन्द मेला लेल आमंत्रण दऽ रहल छलहुँ, जेंकि अंबिका अध्यक्ष छलीह तें हुनका पर बेसी उत्तरदायित्व छल। बीच-बीच मे आबि अंबिका माइक थाम्हि लैत छलीह तँ हमं सभ दिसि घुमि निरीक्षण कऽ अबैत छलहुँ। पटनाक बाढ़ि पीड़ितक लेल हम सभ पैसा एकत्र कऽ रहल छलहुँ। पटना बला हरदम कहैत छलाह सहरसा रीलीफ खाइ बला क्षेत्र अछि, आइ पटना बला रीलीफक दाना दाना लेल मोहताज छला।

हम आ अंबिका मिलि महिला समितिक तहत कतेको विकासक कार्य सहरसा मे केने रही। दूनू गोटे हवा मे उड़ैत रही। ओ योजना तैयार करैत छलीह आ हम ओहि मे रंग भरि समिति द्वारा कार्यान्वयन। कहियो कहियो दुनू मे मतभेदो भ' जाइत छल- रूसियो जाइत छलहुँ मुदा कतेक देर? सभ सँ बेसी नीक लगैत छल जखन ओ फोन पर बजैत छली- हे गे छौंड़ी- हे गे छौंड़ी की करैत छेंह- आ हम उत्तर दैत छलहुँ- तों छौंड़ी, हमरा छोड़बीही नहि- आ दूनू गोटे खूब हँसैत छलहुँ- ओ कतेक नीक सँ बजैत छलीह- हे शेफालिका अपना सभ एक दोसराकँ छौंड़ी नहि कहब तँ आब के कहत? तें बाजि कें फेर जवान भऽ जाइत छी- हमहूँ बजैत छलहुँ-अंबिका, मोन सँ तँ अपना सभ जवाने छी, हँ केओ कहयबला नई अछि- एहि

सभ हँसी-ठट्ठा मे दिन बीतल जाइत छल। ई अपनहु कम विनोदी नइं छलाह। हमरा मे एकटा बड़ पैघ अवगुण छल- छल नइं एखनहु अछि जे हम फोन पर ककरो आवाज आइ धरि नहि चीन्हि सकलौं, अपनहु बाल बच्चाक नइं- एहि लेल हिनका सँ कतेक बेर डाँटो खाइत छलहुँ। कहियो काल अपन दोस्त एसएनपी वर्मा ओतऽ सँ फोन करथि- हेलो डार्लिंग क्या हो रहा है?

हम जहिना सुनि घबड़ाय कें फोन राखि दैत छलहुँ। फेर घंटी बजैत छल- हम कनिक काल बाद उठबैत छलहुँ- डार्लिंग तुम घबड़ा क्यों जाती- बात खत्म हेवा सँ पहिने हम फोन राखि घर मे एम्हर सँ ओम्हर चक्कर लगबैत रहैत छलहुँ। घर मे खाली चंद्रेश्वर नौकर हमर छल- हमरा परेशान देखि ओ पुछैत छल की बात छैक मालकिनी ककर फोन छल।

हम ओकरा कोना कहितहुँ जे छह बच्चाक माइ सँ कोना के फोन पर बात केलक? फेर घंटी बाजल चंद्रेश्वर झपटि के फोन उठेलक- मलकिनी, मालिकक फोन छी- जान मे जान आयल- मोन शांत भेल, हिनकर फोन आयल। की बात छैक? फोन चंद्रेश्वर किएक उठेलक- हम कनन मुँह सन बाजलौं- अहाँ जल्दी घर आबि जाउ। हमरा डर लागि रहल अछि- डर कथीक डर- एकटा फोन बेर-बेर अबैत अछि- ओ बजलाह- हेलो डार्लिंग....... अहाँ एखन धरि हमर आवाज नहि चीन्हि सकलौं रनिया-

आ तकर बाद तँ हुनकर आदते भऽ गेल छल मास दुइ मास मे एक बेर फोन पर।

एकटा छोट सन गुट महिला सभकें हम बना नेने छलहुँ- हम सभ जनैत छलहुँ जे के के अपन बेटा मे दहेज लेत? बीतल राति मे हम सभ अलकतरा सँ चुपचाप घरक देवार पर लिखि दैत छलहुँ आ नहि तँ कोनो अनठिया छौंड़ा कें पाइ दऽ ओहि घरक देवार पर लिखवा दैत छलहुँ। 'एहिठाम बेटा बिकइत अछि' दोसर दिन भोरे अनघोल मचि जाइत छल- एक दिन एकटा संबंधी बाजऽ लगलीह-हे गे रजनीया गे-ई तोरे काज हेतौ, हम बुझैत छी-हम एकदम अबोध बनि जाइत छलहुँ-कथी-कोन काज- किन्तु, फेर ई काज छोड़ि देलहुँ- नेहरू युवा समितिक सदस्य जोश जी बना देलनि तँ ओहि मे कतेको मीटींग मे हम दहेज विरोधी भाषण दैत छलहुँ। कॉलेजोमे क्लास लैत काल बच्चा सभकें दहेज पर शिक्षा दैत छलहुँ जे कतेक खराब बात छैक जे पढ़ि लिखि अहाँ सभ पत्नीक गुलाम बनि जाइत छी-बेटी बला अहाँ सभकें कीनि लैत अछि। कतेक लड़का हमर बात पर घर आबि किरिया खाइत छल- मैडम.... हम दहेज लऽ कें वियाह नइं करब-हमर मोने मे खुशीक लहरि

दौड़ि जाइत छल। ओहि मे एकटा अनिल मिश्रा छात्र छल, एकटा राजेश यादव छल। दूनू गोटे हमर परिवारक, हमर सभक आदर्शक परिपोषक बनि हमर सभक बेटा बनि गेल। प्रत्येक सुख-दुख मे साथ साथ रहल-

छात्र जीवनमे हम मगध महिला कॉलेज मे बेस्ट डिबेटर छलहुँ। फेर, हम नगर आयुक्त रूप मे नगरपालिकाक प्रत्येक समारोह मे भाषण दैत छलहुँ। एकबेर हिनकेर आइ.ए.एस. संगी बड़ ईमानदार निष्पक्ष चन्द्रमोहन झा जी कोनो समारोह मे मंत्री संग आयल छलाह। नगरपालिका दिस सँ स्वागत भाषण हम ओहि समारोह मे देलहुँ- आइयो ओ घटना मोन पड़ैत अछि तँ अपने आप हँसी लागि जाइत अछि।

समारोह खत्म भेलाक बाद हम सभ अपन घरक ओसारा पर बैसल छलहुँ कि अचानक.. एस.डी.ओ. साहब गाड़ी सँ उतरि हमरा सभ ओतऽ एलाह। हम सभ अकचका गेलहुँ- आइ धरि भेंट नहि। आइ किएक आयल छथि अचानक? आबि अहाँ बड़ सुन्दर भाषण देलहुँ। सोचलौं अहाँ कें धन्यवाद दऽ आबि- फेर बाते बात मे ओ पुछलनि- अहाँ ब्रजेश्वर मल्लिक जीक बेटी छी- हम अकचका गेलहुँ- सभ सँ पैघ बेटी अहीं छी हुन कर? हम आर अकचकाइत- हँ हमहीं छी- अहाँ कोना हमर पापा कें जनैत छी?– ओहि समय हम गोलकपुर मे रहैत छलहुँ, जखन अहाँ सभ गोलकपुर मे छलहुँ- हम तखन छात्र छलहुँ पटना विश्वविद्यालय मे डॉ. रामजी पाण्डेयक हम भतीजा छी।

बीस पचीस बरीस पहिलुक गप हमरा किछु स्मरण मे आओत कि ओहि सँ पहिनहि वर्माजी बाजि उठलाह-ओ चिट्ठी फेकयबला अहीं छलहुँ की?– एस. डी.ओ. साहब लजा गेलाह। हँऽ हम ही छी।

हमरा छत पर फेकल कागजक गोला मोन पड़ि गेल जे अनपढ़ल रहि गेल- तकर बाद तँ चाचा हमरा ओहिठाम सँ हँटा देलनि- हम हँसि देलहुँ- आ हम छत पर गेनाइ छोड़ि देलहुँ-

कतेक ठाम हम सभ ई खिस्सा बाजलौं, कतेक हँसी मजाक चलैत छल। फेर तँ ओ हमर सभक कम सुपर्णा, संजीव आ तरुणाक बेस्ट फ्रेंड भऽ गेलाह- खास कऽ हुनकर अपन कविता जे हरदम ओ गाबिकें सुनाबैत 'बहुत दिनों के बाद, तुम्हारी याद आयी है।' एकबेर कोनो सरकारी समारोह मे हम सभ नइं जा सकलौं तँ ढेरो मिठाई लऽ कऽ ओ बासा पर एलाह। हम आ वर्मा जी कतौ बाहर गेल छलहुँ। मिठाई देखतहि तीनू भाई बहीन बाजऽ लागल- नइं, नइं हम सभ मुद्दइ, मुद्दालह ककरो सँ मिठाई नहि लैत छी? मिठाई अहाँ लऽ जाउ। हुनका बड़ नीक लागल छल बच्चा सभक मुँह सँ यानी पीपीक बाल बच्चाक मुँह सँ ई बात सुनि।

ओ बच्चा सभकें बुझाबऽ लगलाह- ई मुद्दई मुद्दालहक मिठाई नहि थीक ई कोर्टक मिठाई थीक- दोस्तक थीक- किन्तु तीनू तैयार नइं भेल- ओ सभ नहि तँ कोर्ट बुझैत छल नहि तँ दोस्त।

पीपीक बच्चा सभक एहि बातक उदाहरण ओ सभ ठाम दैत रहलाह- हम सभ जखन भावनाक सासुर मुजफ्फरपुर गेल छलहुँ तँ हुनको ओतऽ गेल छलहुँ। हुनकर बेटी सभ हमर बेटी सभ नीमक पानि जकाँ घुलि मिलि गेल छल-

ओहि दिन शरद, अन्नू आयल छल तँ बाते बात मे बाजल जे रवीन्द्र के छैक? एक दिन हमर चैम्बर मे आयल छल... हम उताहुल सन बाजलौं-हँऽ हँऽ गिरिवर चाचाक बेटा छी।

हँ किछु एहने बाजल छल। ओ पुछैत छल रजनी कतऽ अछि आइ काल्हि? हम बाजलौं-पटने मे अछि ओ- हँऽ, अहाँक दीदीक पुरान प्रेमी छी- ई परिहास सँ हँसैत बजलाह- हँ, तें ओ कहैत छल जे ओकरा सँ हमर वियाहक बात चलैत छल- सेंटू हँसैत बाजल।

हमरा तामस उठि गेल। हम बाजलौं- जखन पापा साहेबगंज मे पोस्टेड रहथि तखन हम पाँच छह बरीसक छलहुँ ओहो छह सात बरीसक होयत, ओकर बहीन मीना हमर वयसक.. छल। गिरिवर चाचा सेहो ओहिठाम पोस्टेड छलाह। तखनहि हम तीनू गोटे बजैत छलहुँ जे हम सभ कहियो अलग नहि होयब। छोट छोट वयसक पैघ-पैघ सपना-

जखन हमरा सभ पटना एलौं तँ गिरिवर चाचा सेहो राजेन्द्र नगर मे रहैत छलाह। 9-10 बरीसक अन्तराल भऽ गेल छल-अचानक एकदिन गिरिवर चाचा आयल छलाह- पापा सँ चर्च केलनि हमर आ रविक लेल। रवि सेहो आयल छल- किन्तु, एहि बीच तँ हमर मोन मे, हृदय मे, मात्र 'ललन' 'ललन' क रंग छिड़िआय गेल छल। बाल्यकालक मात्र स्मृति छल, हृदयक भाव नइ। सेंटू अन्नू बाजऽ लागल बाप रे, बाप, हम ओकरा दीदीक पता नहि बतेवैक- ई खूब हँसि रहल छलाह- बताय दीहक, बताय दीहक-हमरो भेंट भेल अछि ओकरा सँ- मोन पड़ि आयल गिरिवर चाचा हमर वियाहक बाद हिनकर आ हमरा खेनाय पर बजेने रहथि। पापा माँ सेहो सँग मे रहथि। रवि सोझां नहि आयल। हम किछु नहि पुछलहुँ-मीना बजलीह भैया सँ भेंट नहि करब-जबाब वार्मा जी देलनि- हँऽ हँऽ किएक नहि? माँ पापा हमर सभक नेनपनाक दोस्तीक बात सभ बताय देने छलाह-एकटा कोठरीक अन्हार कोन मे ओ चुपचाप बैसल छल- हिनका देखतहि धड़फड़ाय गेल- बाहर चलू एहिठाम किएक बैसल छी- मीना ठिठिआय रहल छलीह। वर्मा जी बजलाह- बस ई हमर सभक

अन्तिम भेंट छल- कतऽ मीना अछि कतऽ रवि- किछु नहि जनैत छी- प्रत्येक व्यक्ति समयक धारमे बहि रहल अछि अपन संघर्ष, अपन समस्या, अपन तनाव..।

एहि बीच हिनका पीपीशिपमे बड़ संघर्ष करऽ पड़लैक...हमरा मोन अछि तखन डॉक्टर जगन्नाथ मिश्रक कोनो पत्र आयल छल जकर जबाब हम देने छलहुँ-. ...श्री वर्मा जीक नाम अपनेक पत्र देखलौं। एक दुइ पांती पढ़ि हम अपनेकँ लिखबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। हम सभ आब कोनो राजनीतिक पार्टी में नइं छी। अहाँ लिखने छी जे हमर बड़ इच्छा अछि कि हम अपन भावनाक साझीदार अहाँ सभ कें बनाबी. .. साँच बजैत छी हमरो सभ कें बड़ इच्छा अछि जे अपनेक रचनात्मक कार्य मे हम सभ भरिसक सहयोग दी। अपने जखन मुख्यमंत्री बनलौं। तँ हमरा सभ कें लागल अपने एहेन विचारवान पढ़ल लिखल व्यक्ति आइ एहि पद पर अछि, लोक कें अनंत संभावना अपने मे देखा पड़ऽ लगलै। वर्माजी कें पीपी जनता पार्टीक सरकार बनौलक आ जतेक इमानदारी, निष्पक्षता आ कर्मठताक संग एहि दायित्वक निर्वाह केलनि किन्तु, आइ अपने हुनका...... व्यक्तिगत रूप सँ हम सभ कहियो अपने कें हानि नई पहुँचेलौं- स्वयं हम श्रीमती अंबिका मिश्राक अध्यक्षता वाली महिला समिति केर महासचिव रहि सरकारक सहायोग मे कतेक कार्य केने छी- हम सभ पार्टी नइं गुणक पुजारी छी।....'

मोन आब नइं अछि आर की की लिखने छलहुँ किन्तु एक बात अवश्य छैक जे डॉक्टर साहब कहियो हमर बातक अनर्थ नइं लेलनि- हमरा सभक प्रति हुनकर मोन मे बड़ सम्मान छल- सर्वनारायण सिंह महाविद्यालय मे जखन ओ आयल छलाह तँ हमर भाषण सुनि ओ गदगद भऽ बजलाह-शेफालिकाजी बड़ सुन्दर बजैत छी अहाँ-हँ, शिक्षक सभ लेल जे डॉक्टर साहब केलनि ओ आय धरि क्यो नइं कऽ सकल।

हमर हुनकर नोक झोंक प्रायः मंच पर सेहो भऽ जाइत छल। एकबेर पटनाक कोनो सेमीनार मे ओ मंच पर दैनिक पत्र निकालबा लेल चंदा मांगलनि सभ सँ- देखतहि देखतहि सभ दिसि सँ भारी भरकम राशिक आश्वासन सभ भेटऽ लागल। तखन हम मंच पर कविता पढ़ने छलहुँ-दहेज पर-चुनाव-चंदाक बाढ़ि पर.....।

तँ, मायानंद जी कहलनि-शेफालिका भऽ गेलीह अड़हूलक फूल तँ किरण जी बजलाह आ बेटाक बाप लेल धतूरक फूल.... किन्तु, डॉक्टर साहब हिनक इमानदारी कें अनठिया नई सकलाह आ अपन मुख्यमंत्रीत्व काल मे दुइ टर्म हिनका पीपी रखने छलाह-

प्रथम बेर जखन पीपीक लेल हिनक नाम गेल छल तँ के ओ आबि हिनका चुपचाप कहलकैक-अहाँक नाम लिस्ट मे गेल अछि... ई अकचका गेलाह- एकदम

फूसि थीक। हमर नाम जाइए नहि सकैत अछि। जाहि पद पर हमर गुरुदेव रुद्रानंद पाठक, काशी नाथ झा रहलाह ओहि पद लेल हमर नाम....! जाहि दिन ललन वर्माक नाम जायत-ललन वर्मा पीपी बनिकें देखा देत- ई एकदम आवेश-आवेग मे बजलाह- ई बाजि तँ देलनि- चुपचाप पता केलनि तँ वास्तव मे हिनकर नाम कलक्टर आ डिस्ट्रिक्ट जज दुनू पठा देने छल। ई पहिने जा कऽ कलक्टर दीपक कुमार सँ भेंट केलनि- सर, हमर नाम हमरा सँ बिनु पुछने किएक भेजलौं। एहि मे पुछवाक कोन गप छल? हम सभ मेरिट लिस्टक आधार पर नाम पठेने छी।

ई फेर डिस्ट्रिक्ट जज बकर साहब लग वएह प्रश्न? उत्तरो वएह भेटलैक- मेरिट लिस्ट... आब हिनका अपन आवेश मोन पड़ि गेलैक- वर्माक नाम जायत तँ वर्मा बनि कें देखा देत... आब की करी-ई एकबेर टेकरीवाल जी सँ कैलाशपति मिश्र जी, जगबन्धु अधिकारी आकि अपन मंत्री सभ कें कहि देलखिन। ओहि समय विधि सचिव अंबिका प्रसाद रहथि जे सहरसा मे डिस्ट्रिक्ट जज छलाह संगे हमर पापाक संगी सेहो- अंबिका प्रसादजी लेल श्याम बाबू कहैत छलाह जखन ओ इजलास पर बैसैत छथि तँ लगैत छैक कोनो सिंह बैसल हो- निर्भीक, निड़र- सरिपों जज साहब निर्भीक छलाह। प्रत्येक रवि कें समस्त जज मंडलीक संग यानी एडीजे, सीजएम, आदि सभक संग पहुँचि जाइत छलाह- पापड़ हलुआ- चाह प्रायः इएह जलखै दैत छलहुँ- तीन चारि घंटा बैसि जाइत छलाह तँ शिष्टाचार सँ हम सभ बजैत रही आर नइं बैसब? हँसैत जबाब दैत छलाह- हलुआ, पापड़ पर आदमी कतेक देर बैसि सकैत अछि।

जेँकि ओ पापाक दोस्त छलाह तें हम सभ हुनका चाचाजी कहैत छलियैन्ह। ओ सेहो हमरा सभ कँ बेटी-जमाइ जकाँ मनैत छलाह। किन्तु, इजलास मे कोनो संबंध नइं। न्याय देबा मे निष्पक्ष छलाह। वर्माजी, हुनका सँ सेहो भेंट केलखिन- ओ तँ मात्र एकटा सरकारी यंत्र रहथि- कैबिनेट मे हुनकर कोनो भागीदारी नहि होइत छल। हँ, कैबिनेट मीटींगक सभ कार्यक्रमक एजेंडा हुनका लग रहैत छलैक- कतेक कैबिनेट बीति गेल-पीपी बला प्रसंगे नइं आयल।

ओहि समय हम बड़ अस्वस्थ रहैत छलहुँ-ई' 79 गप थीक। पेप्टिक अल्सरक कारण पेटक दर्द सँ पीड़ित तीन चारि मास सँ पटना मे हमर इलाज चलि रहल छल। प्रायः नवम्बरक मास होयत। ई सहरसा सँ आयल छलाह- अचानक एक दिन दुइ बजे सहरसासँ प्रकाशक फोन आयल-चाची, आइ तीन बजे दिन सँ कैबिनेटक विशेष मीटींग अछि। एहि मे चाचाक प्रसंग सेहो अछि।

हम दुनू गोटे घबड़ाय गेलहुँ। ई अचक्के बीचे मे-सभ मंत्री कें फोन केलौं- टेकरीवाल बाहर, कैलाशपति मिश्र, अधिकारी सभ पटना सँ बाहर छलाह- अशोक

सिंह आश्वस्त केने छल किन्तु तखन किनको पतो नहि छल। पापा सेहो हाइकोर्ट मे छलाह। हमरा सभक समक्ष दुर्गा सप्तशतीक पाठ छोड़ि किछु नइं छल–

ओहि दिन इंडिया जीति गेल, मैच खत्म भऽ गेल। घर मे चिकेन बनाओल गेल छल। आब हिनकर पारी छल– की हेतै। करीब 9 बजे राति मे अंबिका बाबूक फोन आयल–एकदम निराश स्वर सँ–आइयो नइ भऽ सकल–जखन हिनकर नाम विधि मंत्री संहरसाक पीपी लेल कहलक दोसर विभागक लोक अपन अपन आदमीक नाम कहय लागल। ताहि पर विधि मंत्री तमसा कें उठि गेलाह। हमर विभाग मे आन विभागक लोक किएक बाजत? आब आइयो नहि भेल। पता नइं की लिखल छैक। इंडिया जीतबाक सभ खुशी खत्म भऽ गेलैक। कोहुना कोहुना सभ भोजन केलनि। स्वादिष्ट भोजन जेना तीत अरेला करेला सन गरक नीचा नहि उतरि रहल छल ककरो।

तावत फोनक घंटी बाजल। हम ही उठैलौं– अमलेन्दु जीक फोन 'सर्च लाईट' आफिस सँ छल– बधाई प्रेम। ओ हमरा प्रेमे कहैत छलाह। कथीक बधाई हमर स्वर मे ताप आबिए नइं रहल छल– अरे भैया पीपी बनि गेलाह तकरे– हम उदासे स्वर मे बजलौं– कहाँ भेलैक आइ पाहुन? विधि मंत्री तँ.....बीचे मे हमर बात कटैत ओ बजलाह–प्रेम, पीपी बनि गेलाह भैया– हमर आगू मे भोरका अखबार छैक जाहि मे ई समाचार छपि रहल अछि– हमर तँ नोकरिए चलि जायत गलत देबै तँ–पापा हमरा हाथ सँ रीसीवर छीनि लेलनि–

सौंसे घर मे उल्लासक बरखा होभऽ लागल– तखन ज्ञात भेल जे विधि मंत्री तमसा कें उठि गेलाह तँ सभ बाजय लागल जे ओ जाहि नाम कें कहि रहल छथि वएह नाम राखि दिऔक– बेकार लेल हुनका तमसाय देलियैक–आ तखन वर्माजीक नाम सहरसाक पीपी मे आबि गेलैक। ई तँ भगवतीक महिमा छल जे अपन पुत्रक प्रतिष्ठा लेले कोन कोन खेल खेललीह, भगवती...।

मुदा, एहि पीपी शिपक ईमानदारी सँ कतेक गंज्जन भऽ गेल हमर सभक. .. जखन पीपी भेलाह तँ श्याम बाबू कहैत छलाह– लेने आब नमरी गिनैत रहिए– रोज रोज जे टाका भेटैत रहौ– आब सरकारी फीस पर नमरी देखनाय सपना भऽ जेतौक–सरिपों जखन सरकारी फीसो समय पर नहि भेटैत छल तँ भूखमरीक स्थिति तक आबि जाइत छल। पीपी हेवा सँ पहिने हिनकर आर्थिक स्थिति बड़ सुदृढ़ भऽ गेल छल। सहरसा जिला मे सभ सँ बेसी फीस ई अपने रखने रहथि– एकर प्रमाण छलाह पूर्णियाक वरीय अधिवक्ता श्रीधर बाबू। ओ हमरा दुनू गोटे कँ बेटा–पुतौह जकाँ मानैत छलाह– एकटा रिश्ता हिनक प्रतिष्ठा आ प्रतिभा सँ श्रीधर बाबू कें भऽगेल छलैक।

एक बेर ओ सहरसा हिनका विरुद्ध मे कोनो केस मे आयल छलाह– ठीक सँ मोन नहि अछि किन्तु तीन हजार रुपया प्रतिदिन मे हुनकर मोक्किल पूर्णिया सँ अनने छल– दुइ दिन बहस देखि दोसर बेर ओ छह हजार रु० प्रतिदिन एलाह– फेर डेट पड़ल– आ श्रीधर बाबू स्पष्ट अपन मोक्किल कें कहलनि– देखो– वह हमारा शिष्य है। उससे बहस करना है, केस गड़बड़ा जाएगा, फिर–मैं नौ हजार रुपया प्रतिदिन लूँगा– ई छल हिनक निष्ठा वकालतक प्रति, अपन मोक्किलक प्रति–पैसा तँ बरसैत छल हिनकर टेबुल पर– हम ओहि बीच श्रीधर बाबू कँ फोन सँ कहने छलहुँ डेरा पर आबय लेल तँ ओ बजलाह– 'जावत ई केस चलैत अछि तावत 'मुझे माफ कर दो बहू'।

हम सभ पूर्णिया जाइत छलहुँ–कोनो केस मे तँ श्रीधर बाबू ओतऽ जाइत छलहुँ तँ हिनका प्रायः डाँटथीन बहू बहुत कमजोर लग रही है,– तुम ध्यान नहीं देते हो इस पर? हमरा बड़ नीक लगैत छल– स्नेह आ प्रेमक मधुरता–वात्सल्यक गंगोत्री!!

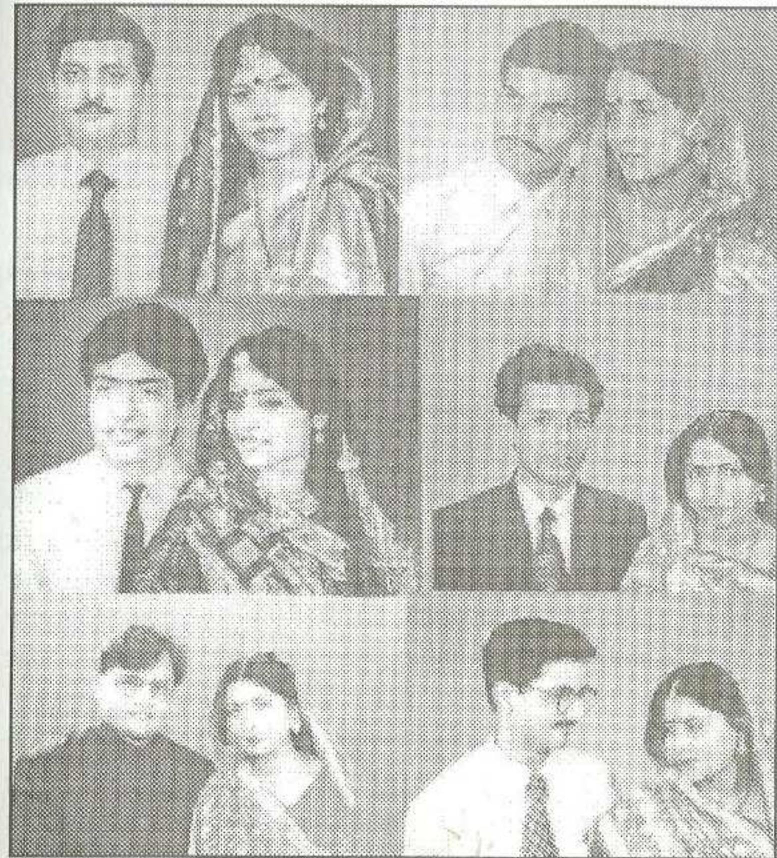
किन्तु, सरिपों पीपी हेबाक बाद स्थिति बदलि गेल। ई पहिलुक टर्म छल। अनुभवक कमी, केसक प्रति अनुराग, पैसाक प्रति विराग– सभटा हमरा झेलय पड़ल फेर सँ पुनरावृत्ति–बिल बनाउ जमा कय–कलक्टर डिस्ट्रिक्ट जजक दस्तखत होयत सरकार मे जायत, पैसा आओत तखन भेटत– एतेक नम्हर समय लगैत छल आ तखन ई बिल समय पर बनाय कें जमो नहि करैत छलाह। चारि पाँच छह मास बाद बिल बना कें जमा करैत छलाह। फल ई भेल जे हमरा कालेज जेबा लेल एकटा ढंग केर साड़ी नहि छल। तरुणा कें एकोटा एहेन कपड़ा नहि छल जे पहिरि कतौ जायत। स्कूल ड्रेस तीरी तीरी फाटि जाइत छल– बच्चा सभकें पटना–दिल्ली समय पर फीस भेजनाइ–हम कालेज मे छलहुँ किन्तु, हमरा दुई सय रुपैया महीना भेटैत छल जे रिक्शे मे उड़ि जाइत छल– ई देखैत सभ किछु छलाह– कखनो काल बड़ भावुक भऽ बजैत छलाह– हम टुटि गेल छी रत्नो– एकदम अन्हार मे छी–कत्तौ सँ किछु इजोत नहि भेटि रहल अछि– हम प्रायवेट प्रैक्टिक्स नहि कऽ सकैत छी–हिनक पीड़ामय स्वर हमरा हिलाय देने छल– जावत टर्म खत्म होयत हमर पुरनका क्लाइन्ट सभ आन लग चलि गेल होयत– किन्तु, हम हिनका समक्ष सभ दिन उत्साह आ प्रेरणाक इजोत लऽ कऽ ठाढ़ रहलहुँ आकाश दीप सन स्थिर–अहाँ देखू, कतेक नाम भऽ रहल अछि अहाँ कें? एतेक प्रतिष्ठा, की प्रतिष्ठाक समक्ष पैसा कोनो चीज थीक? पैसा तँ कमायल अछि अहाँ कें, आइ नइं काल्हि भेटबे करत– बस पदक निर्वाह एहिना करैत चलू– हम अपन आर्थिक स्थिति कहियो अपन कोनो बच्चा लग नहि बाजलौं जे अनेरे परेशान भऽ जायत–नाम एतबे हिनकर नहि भेल छल बल्कि सहरसाक जस्टिस एस.एन. झा

ओ अपन निरीक्षण कार्य लेल सहरसा आयल छलाह-तँ कचहरीए मे हिनक पीठ ठोकि कहलनि बड़ नाम अहाँक सुनने छी वर्माजी हमरा सभकेँ कोनो सम्पर्क पहिने सँ नहि छलआ ई घर पर भोजन लेल हुनका निमंत्रण दऽ देलखिन-ओ एलनि-तीन चारि घंटा बैसलाह- माछ भातक संगे ओ वर्माजी सँ गीत सुनलनि- फेर हमर कविता वर्मा जीक स्वर मे सुनलाह। तरुणा सँ खूब गप केलनि एहि सभ सँ प्रेरित भऽ कऽ दुइटा गीत ओ स्वयं गओलनि-जगमग दीप जले-ई हुनकर प्रिय गीत छल.....

आ तखन हिनका हम कहलौं पटना हाईकोर्टक जस्टिस एकटा अदना पीपीक घर आबथि- सौंसे सहरसा देखलक, एहि सँ बेसी प्रतिष्ठाक गप की होयत। किन्तु, तखनो हम हिनका सँ नुकाय मुख्यमंत्री डाक्टर साहब केँ पत्र लिखने रही-एकटा इमानदार पीपीक फीसो अहाँ सभ समय पर नहि दऽ सकैत छी- कतेक यंत्रणा सहऽ पड़ैत छैक जखन कि ओ मात्र एहि फीस पर निर्भर रहैत छैक।–

बलुआ बाजार मे संजय गांधी संग मेनका अबय बाली छलीह। डाक्टर साहब हमरा सभकेँ बलुआ बाजार एबा लेल नोत पठौलनि। अंबिकाक गाड़ी सँ हम आ वर्माजी, नीलम सिंह जे बाद मे पटना हाईकोर्टक जस्टिसो भेलाह, हुनक पत्नी, आ अंबिका सभ बलुआ बाजार गेल छलहुँ-संजय गांधी केँ ओहिठामक दही बड़ा नीक लागल छलैक-ओ खूब दही खेलक तँ मेनका टोकबो केलीह- भोजनक बाद हम सभ मिलि मेनका केँ शृंगार केलौं- चूड़ी, लहठी, सिन्दुर बिन्दीक संग मिथिला पेन्टिगक साड़ी-संजय केँ ओ सभ पाग पहिरेलनि।

ईं सभ अंबिका, मृत्युंजय बाबू-जगन्नाथ मिश्रा-वीणाक देल स्नेह संबल छल जाहि मे हम सभ उधियाबैत रहैत छलहुँ... जाहिठाम अंबिकाक सौंदर्य दीप्त भऽ लहलह बरैत छल ओहिठाम ओकर पुत्री पूनमक सौंदर्य चन्द्रमाक शीतलता नेने छल- भावना आ पूनम दूनू संगिनी छलीह आ बड़ विनम्र शालीन अपन खानदानक कोनो अहंकार पूनममे नहि छल। आ नहि तँ डाक्टर साहबक पत्नी वीणा मे। नहि तँ हुनक पुत्री संगीता मे ओहिना विजय मिश्रा सभ दिन हमरा अपन ज्येष्ठ बहीन वीणा जकाँ मानैत रहलाह ? चेतना समिति पँ विजयक अधार पर खेलैत आत्मीय मुस्कान सभ दिन चाचाजी ललित बाबूक स्मरण करा दैत छल।



1. डा० राजीव आ डा० जया वर्मा (पुत्र एवं पुत्रवधू), 2. डा० भावना आ श्री प्रकाश चन्द्र नवीन (बेटी-जमाय), 3. डा० वन्दना आ डा० कौशलेन्द्र कर्ण (बेटी-जमाय), 4. सुपर्णा आ श्री मनोज कुमार (बेटी-जमाय), 5. संजीव वर्मा आ शबनम वर्मा (पुत्र एवं पुत्रवधू), 6. डा० तरुणा आ डा० विकास दिव्यकीर्ति (बेटी-जमाय)

स्नेहसँ भरि गेल मोन प्राण हमर

लगैत अछि सोचबाक बीमारी हमरा भऽ गेल अछि । वर्तमानमे रहि नहि पबैत छी। अतीतक राह बाट पर भटकनाय, भविष्यक आशंका मे समस्त वर्तमान झरनाक पानि जकाँ आगु सँ बहि जाइत अछि आ हमर हाथ मे किछु नहि बचैत अछि -

मुदा, अतीतक प्रसाद लऽ कऽ मानव आगूक बाट चलि पबैत अछि बशर्ते प्रसाद सकारात्मक हो! बीतल काल्हि तँ इजोत थीक मुदा आबय बला काल्हि पूर्णतः अंधकार मे डूबल रहैत अछि- पता नहि काल्हि की होयत, केहेन होयत? हमरा एहि 'आस्ति नास्ति सँ वर्माजी हरदम विमुख करैत छलाह- अहाँ शेक्सपीयरक 'टूबी आर नाट टूबी' मे किएक फाँसल रहैत छी रन्नो? एहि भावक जाल मे ओझरा अहाँ जीबि नहि पायब ! सूरज कें देखू रनिया! सूरजक प्रेमिल रश्मि आस्ते आस्ते अंधकार कें मेटा ' काल्हि' के अनावृत करैत अछि । प्रत्येक लालिमाक संगे काल्हि अबैत अछि जे आइ मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि ! - तँ वर्मा जी कें हम सभ दिन अपन फ्रेंड फिलास्फर गाइड बुझैत रहलहुँ-राति मे कतेक अन्हार रहैत छैक - अहाँ मात्र एकटा दीया बारि दियौक, देखू अन्हार खत्म! एकटा छोट सन दीया अन्हार सँ लड़बाक शक्ति रखैत अछि- अहाँ किसक ने? खाली चाह हेबाक चाही, एकटा इच्छा एकटा संकल्प।

पतिक इमानदारीककारण पैसा प्रतिष्ठा मे सँ मात्र प्रतिष्ठा चुनबाक संकल्प सँ बैंक बैलेंस मे लक्ष्मीक कृपा नहि छल - बस, सांइ इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय, मे भी भूखा न रहुँ साधु न भूखा जाय - एतेक कृपा लक्ष्मी माताक रहलैक किन्तु, खराब दिनक वास्ते कतौ किछु संचित नहि छल ! केओ पुछैत छल तँ एकेटा जवाब हमरा छह टा बैंक बैलेंस अछि जाहि मे हमर समस्त जीवनक पूंजी संचित अछि - मुदा कोन बैंक मे कतेक संचित छल ई तँ भविष्यक गर्भ मे नुकायल छल। अहाँ रिटाइर्ड भऽ जायब तँ हमहु वकालत संजीव पर छोड़ि शान सँ जिनगी बितायब, छहो बच्चाक लग दू-दू मास रहब, बारह मास बीति जायत-आ ई क्रम चलैत रहत एक एक वरीस पर सभ लग दोहरायब- ककरो पर बोझो नहि रहब आ लाइफो इन्जवाय करब - ओ दिन कहियो नहि देखि सकलाह ! अपन रोपल बीयाक पुष्पण देखबाक सौभाग्य भगवती हुनका नहि देलखिन !

एक बेर दिल्ली मे राजीव सत्यवती कालेज मे हिन्दी विभागक प्राध्यापिका कुसुम माथुर सँ भेँट करौलनि ! दुइ बरिस पहिने हुनक एडवोकेट पतिक मृत्यु भऽ गेल छलैक ! राजीव कहैत छल-मम्मी, एकदम पापा जकाँ स्वभाव छल हुनक, धीरवीर शांत प्रशांत।

कुसुम कहऽ लगलीह - शान्त एतेक छलाह जे हमर सभक संयुक्त परिवार अछि ! दियर दिआदनि सेहो संग मे रहैत छथीन्ह, हमर सासु सेहो - माथुर जी कोर्ट जाइत छलाह, कपड़ा पहिरि कुसुम सँ आलपीन माथि- आल्पीन की करब ? कुसुम कें आश्चर्य लागल - अरे बटन टूटल अछि, आलपीन लगा लैत छी - एह! आलपीन लगा अहाँ कोर्ट जायब ? कतेक खराब बात छैक ! लोक देखत तऽ-लोकक बात छोड़ू ने ! उपर सँ करिया कोट रहैत अछि । नुका जायत - एम्हर दीअर हमर खूब जोर जोर सै चिकरि रहल छलाह अपन कनिया पर ! हम पुछलहुँ- की बात थीक? किएक दमसाय रहल छी।

. भाभी देखू ने, एकोटा कमीज मे बटने नहि अछि ! कोना पहिरब - हम अपन सासु सँ पुछलहुँ-माँ, दुनू तँ हिनके बेटा छथि तखन दुनू मे एतेक अन्तर किएक छैक ? आइ अहाँ सँ भेंट भेल दीदी तँ लगैत अछि मरूभूमि मे पानिक फुहार पड़ि गेल जेना ! हमरो आँखि मे हिनकर उज्जर कमीज मे आलपीन लागल - आँखि पनिआइ गेल छल - जनैत छी दीदी - भगवानो जनैत छथिन ककरा जरूरत छैक दुनिया मे - के जिम्मेदारी उठा सकैत अछि ?

हम हैं हिनका कहने छलहुँ - अहाँ सभ बाल बच्चा कें सेटल कऽ देलहुँ - हमरो जगह लगा दियऽ तखन जे करब - अहाँ बुझैत छी रनिया, अहाँ बिन हम एको क्षण रहि सकैत छी ? एक कप चाहो पीबाक मोन होइछ, पानियो पीबाक मन होइत अछि तँ अहीं कें हेरैत छी ! एहेन स्थिति मे हम।

आ हमरा लागल छल जे सभ सँ कठोर, सभ सँ पाथर ओ हमरे बुझलनि जे हम रहि सकैत छी ! हम हँसैत छी, बजैत छी, लिखैत छी, पढ़ैत छी एकर अर्थ की हम पाथर छी? हम जीवन जीवि सकैत छी ! मृत्यु कष्ट कर नहि अछि किन्तु जिनगी जीयब ?

हुनक हृदय मे घाह छल मुदा हमर सौंसे करेज मे जे घाह अछि जाहि सँ बुन्न-बुन्न प्रतिपल रक्त रिसैत रहैत अछि ! के देखलक एकरा? के बुझलक ?

मसूरीक रस्तामे जखन तरूणा चानी सन चमकैत प्लास्टिकक प्लेट मे पूड़ी, मटर पनीरक तरकारी, आलू कोबीक मासलेदार भुजिया, रंग बिरंगक अंचार परसौलन्हि तँ हृदय मे व्यथाक लहरि करोट पर करोट लेमऽ लागल - आइ वर्माजी रहितथि तँ

इ नाना प्रकारक व्यंजन देखि कतेक खुश होइतथि ? खाथि वा नहि खाथि मुदा खेवाक बड़ सौखीन। ताहि पर सँ नाना प्रकारक भोज्य पदार्थक चर्चक तँ आर सौखीन। भोर जखन जलखै करबा लेल बैसैत छलाह तँ शबनम सँ पूछैत रहथिन - दिन मे की बना रहल छी भोजन मे ? दिन मे खाइत काल पुछैत छलाह - साँझ मे की जलखै देब - शबनम हँसैत बजैत छलीह - चूड़ा भूजल सुनि संतुष्ट भऽ जाइत छलाह - कने बूट भूंजल कंसार वाला सेहो मंगा लेब - चूड़ा खाइत....... खाइत बड़ निर्दोष स्वरे पुछैत छलाह - राति की बनायब - ? हम सभ जोर सँ ठहाका लगबैत छलहुँ ! ई प्रतिदिनक बात छल ।

मुदा एतबे नहि राति सुतैत काल अचक्के पुछि दैत छलाह - सुनैत छी, भोरमे की बनायब जलखै मे - वएह खाकें तँ हाइकोर्ट चलि जाइत छी- कखनो हम तमसा जाइत छलहुँ, कखनो हँसि दैत छलहुँ आ कखनो काल एकदम अनठा कें सुति जाइत छलहुँ जेना हम सुति रहल छी ....।

संजीव नौकरी सँ त्यागपत्र दऽ जखन वकालत ज्वाइन केने छलाह तँ अपन बेटा कें अपन जूनियरक रूप मे पाबि स्वयं के ओ सशक्त अनुभव करऽ लगलाह। संजीव एकटा सुन्दर सन 'लंच बाक्स', पानि लेल सुन्दर वाटर पाट खरीदि अनलनि ! वर्मा जी हरदम बजैत छलाह - केशव श्रीवास्तव जी की-की सभ लंच मे अनैत छथि, नर्मदेश्वर जी प्रेम बाबू सुबोध बाबू अशोक बाबू सबहक चर्चा.....यानी सभ ओकिल सभक खानाक बखान घर मे करैत छलाह ! आ तखन इहो लंच लऽ जाय लगलाह ......दूबे चाचा, राजन,उग्रजी आ संजीव सभ केओ मिलि जुलि, बाँटि खाथि- आ तुष्ट भऽ कऽ प्रसन्न मोन सँ हाइकोर्ट सँ अबैत छलाह - संजीव नाबार्डक एकटा ब्रांचमे पटने मे कार्यरत छल। ओहि बीच ओकर लॉ केर रिजल्ट आबि गेल। ओ अपना पितासँ बाजल- पापा हम वकालत करब! ई चौंकि उठल छलाह- लगले संजीवक वियाह भेल छल। ई बाजलजलाह- वकालतक रास्ता बड़ कंटकाकीर्ण अछि। एखन अहाँ पत्नीक संग राजधानी सँ दिल्ली जाइत छी। अपना अहाँ प्लेनसँ बंबइ, गौहाटी जाइत छी मासे मास चेक सँ दरमाहा बैंक मे जाइत अछि- ई सभ किछु नहि भेटत। हँ, शुरू मे संघर्ष करब तँ बादमे फल देत। पहिने अहाँ अपन पत्नी सँ सलाह करू। हम तीन मास सोचबा लेल दैत छी नोकरी छोड़नाय मामूली बात नहि थीक। आजुक जमाना मे लोक नोकरी लेल बौआइत रहैत अछि।

तीन मास धरि बाप बेटामे एहि विषय पर कोनो गप नहि भेलैक। तीन मास बाद संजीव अपन पिता कें बाजल- पापा, हम बाल्यकालेसँ अहाँकें बहस करैत देखैत छलहुँ तँ हमरा बड़ इच्छा अछि- अहाँ शबनम कें भोजन देब, हमरा नहि देब- हम वकालत करब- मेहनत करब। पिता बुझि गेलाह जे गुलामी नहि कऽ सकबाक मानसिक स्थिति पिता जकाँ पुत्रो मे आबि गेल छैक।

एखनो कहियो काल संजीवक हाइकोर्ट सँ एबाक समय होइत अछि, हम जेना छटपटा जाइत छी। अरे, हिनका एबाक टाइम भऽ गेल। कहियो काल दौड़ल गेट लग जाइत छी, आब अबैत हेताह- प्रतीक्षा अन्तहीन प्रतीक्षा मे बदलि जाइत अछि।

कतेक ठाम हम सहज रहितो असहज भऽ जाइत छी आ ओहिठाम सभ लेल दुरुह भऽ जाइत छी-सुख तँ मानवक चारू कात छिड़िआइल रहैत अछि मुदा हमरा वेदनाक मोतीए चुनबा मे किएक आनन्द भेटैत अछि, किएक तोष भेटैत अछि एकर विश्लेषण के करत ? 'स्वयं' कें उपगृहीत करबा सँ पहिनहि 'स्वयं' कें हेराय नहि दी - ई आशंका कखनो काल एकटा विकल आ विश्रृंखल मानसिक स्थिति मे धकेलि दैत अछि हमरा। तखन अपन जिनगी मे भटकल मोतिआयल अनगिन चेहरा-मोहरा आ संवाद परिसंवादक बरियाती हमर चेतनाक तप्त धरातल पर बरखाक मेघ जकाँ झुकि जाइत अछि। एतेक लग, एतेक लग जे एकटा हल्लुक प्रयास सँ हम ओकरा छुबि सकैत छी। भावावेश मे हमर आंगुर स्वतः मेघ दिस उठैत अछि, मुदा, स्पर्शातुर आंगुर आ झुकल मेघक मध्य तखनो एकटा निर्मम दूरी रहिए जाइत अछि। किन्तु ई वेदना सभ दिन हमर शक्ति रहल, दुर्बलता नहि। "मे छिपाना जानता तो, जग मुझे साधु समझता, शत्रु आज बन गया, छल रहित व्यवहार मेरा - कखनो काल सोचै छी ठीके तँ भीड़क मध्य रहितो हम स्वयं कें कतेक असगर बुझैत छी। विमलेन्दु बाबू पाहुन हरदम इएह बात हमरा कहैतो छलाह- बचपने सँ लोग सभक संगत असंगत व्यवहार देखि देखि जेना मनक कोनो कोन से उदासी घर आंगन बसा लेलक। सोचैत छी दिमाग तँ एके रत्तीक होइत अछि ओहि मे कतेक प्रकारक चिन्ता, कतेक फिकिर भगवान भरि देने छथिन - किएक मानव के विवेकशील प्राणी बना देलनि जे हरदम अविवेकक छाहरि मे साँस लैत अछि?

ई धरती कोना सहैत अछि ई लाति मारि - ? तैयो एकर अन्तर सँ गाछ बीरीछ, फूल पात, लता, जल सभ निकलैत रहैत अछि। एतेक सहितो मानव कें सभ किछु प्रदान करैत रहैत अछि - श्रीकृष्ण नगर कें चित्र सभ आबऽ जाय लागल। एकटा भरल पुरल परिवार ओहि मे छल। दस बच्चाक प्रतिष्ठाक संग माँ-पापा अलंकृत छलाह। मल्लिक परिवारक प्रतिष्ठा सेहो स्वर्णपदक जकाँ हमरा सभक जीवन कें शोभित करैत छल। परिस्थितिक लहरि मे उड़ैत हम सहरसा सँ पटना आबि गेलहुँ। कतेक दिन धरि मा-पापाक वात्सल्यक छाहरि मे प्रमुदित होइत रहलहुँ। मन्ना जी सभ लीबीया चलि गेल, शरद दानापुर रेलवेक सीनीयर डीएओ सँ बदली भऽ पटना चलि आयल। पापा माँ दुनिया सँ चलि गेलाह। माँ-पापा हमरा सभ लेल लटाइ जकाँ छलाह। हम सभ स्वच्छन्द आकास मे उड़ैत रही। पापा लटाइ कसैत छलाह हम सभ जतऽ जे गुड्डी जकाँ आकास मे उड़ैत रही, देर-सबेर सभ आबि पापा माँक पएर पर खसैत

छलहुँ। आइ चलि गेलाह तँ हम सभ अपन अपन आकास मे कटल गुड्डी जकाँ उड़ि रहल छी। केओ समेटऽ बला नहि। 'मायका' 'भायका' मे बदलि गेल। किन्तु, ओहि असगरपनमे कहियो समीता अचानक आबि जाइत छलीह- पिन्टू आफिस जाइत छल, ई हाइ कोर्ट। समीता आबि हमर सौंसे घर दुआरि के साफ कऽ सजा दैत छलीह। कहियो पानि गरम कऽ हमर एड़ी मांजऽ लगैत छलीह। अपोलो सँ घुरबाक बाद हम हिनका लेल कबुला केने रही जे कष्टी बनि छठि मे पानि मे ठाढ़ होयब पाँच बरीस धरि। गंगा मे सभ सँ पहिने घुसैत छलहुँ सभ सँ अंत मे निकलैत छलहुँ। भूखल पिआसल भोरे भोर समीता तरकारी तीमन बनेने आनंदपुरी पहुँचि जाइत छलीह- हमर हृदय भरि जाइत छल- आखिर कौशलेन्द्रजीक बहीन छलीह अपने घरक बेटी

एकबेर सुपर्णा मास्को सँ अपन संगी प्रभात कें हमरा सँ भेट करबा लेल पटना भेजने छलीह। हम आ शबनम छलहुँ। ओ दुइ तीन घंटा बैसि कें हाहा, ही ही कऽ जाय लागल तँ हमरा सँ चुपचाप असगर मे पुछलक। अहाँक छोटकी बेटी थिकीह- ओकरा तरुणाक भ्रम छल। हम कहलौं-नहि ई तँ हमर छोटकी पुतहु थीकीह- एतेक जोर सँ प्रभात चिकरि उठल- अयँ अहाँक पुतौह छी। एतेक देर सँ हम माँ-बेटी बुझि रहल छलहुँ। हम तँ आइ धरि एहेन सासु पुतौह नहि देखने छी- नहि-नहि हम एखन नहि जायब, हम आर बैसब- हमर आ शबनमक हँसीक ठेकान नहि छल आ प्रभातक आश्चर्यक ठेकान नहि- कतेक बदनाम सासु पुतहुक संबंध कें कयल गेल अछि। हमरा तँ जखन दिल्लीमे रहैत छी सोसाइटी बला केओ नहि बुझैत छथि जे हम आ जया सासु पुतहु छी-ध्यान कतऽ कतऽ चलि जाइत अछि-

बाल्यकाले सँ सुनैत छलहुँ दिल्ली दूर अछि- ई मुहावरा छल जे परीक्षा मे प्रश्न अबैत छल- आ जखन पहिलुक बेर बेटा सँ मिलवा लेल दिल्ली गेल छलहुँ तँ ट्रेने पर पानि गिलासे गिलास कीनि कें पीबऽ पड़ल? तखन पानिक बोतलक चलन नहि छल। संग मे बंदना छलीह, सोचैत छलहुँ कोन शहर जा रहल छी जे पानि कीनउ पड़ैत अछि। मुदा, एहिसँ प्रवल हमर भाव-लोक छल जाहिठाम जंक्शन पर छितरायल रेलक पटरी सभकें देखि विस्मित होइत छलहुँ। ई पटरी सभ यदि ककरोसँ जोड़ैत अछि तँ ककरो सँ तोड़ितो अछि? एहि संसार मे जोड़ऽ बला कम मुदा तोड़य बला डेग-डेग पर भरल ! आइ ई रेलक पटरी हमरो अपन बेटा सँ जोड़बा लेल जा रहल छल? एहि तीन बरीसमे ओकर जिनगी कोना कोना बीतल सहरसा रहि ध्यान देबाक प्रश्ने नहि छल। बस इतिहास प्रतिष्ठा मे ओ प्रथम, द्वितीय स्थान संगे रेकर्ड ब्रेक करैत रहल- एतबे जनैत छलहुँ।

आ दिल्लीमे जीजाजी छलाह नागेन्द्र वर्मा जी, हमर बहीन स्वर्णप्रभाक पति छलाह बेटा गौतम, डॉ बेटी ममता, अमिता? जीजाजी मणिपद्मजीक छोट भाइ

छलाह- मणिपद्मजी कहने छलाह- शेफालिका, अहाँ ठूंठ गाछ तर ठाढ़ होयब तँ गाछ लहलहा जायत। ओहिना सहरसा मे सत्ताइस मार्च बेरासी ई० मे हमरा ओतऽ कोनो लालबाबा जी आयल छलाह जे हमर माथ देखतहि बाजि उठलाह- अहाँ ठूंठ गाछ तर ठाढ़ भऽ जायब तँ गाछ लहलहा जायत- अहाँ दुनू गोटे जनम जनम केर प्रेमी-प्रेमिका छी जकर मिलन एहि जनममे भेल अछि- कोनो एक जनम मे ई सप्तम कि अष्टम एडवर्ड छलाह अहाँक वियोग मे राजपाट त्यागि देलनि- हमरा तँ इतिहासक ज्ञान नहि छल किन्तु, हमरा बड़ नीक लागल छल केओ तँ पुष्टि केलक हमर दूनू गोटेक छटपटी केर। जहिना सीता पुष्प वाटिकामे राम लेल बेकल छलाह ओहिना हम हिनकर नामे सँ राग लगा बैसल छलहुँ। दिल्लीमे शिवकुमार शिप्रा, रवि, स्वीटीक संग ठहरल छलहुँ आ सभ राजीवक प्रशंसा मुक्त कंठ सँ कऽ रहल छल। हिमांशु सेहो छल- तखन लागल कतेक विशाल हृदयक लोक ई सभ छथि। आजुक जमाना मे केओ एक दोसराक प्रशंसा नहि करैत अछि जखन कि केकरो प्रशंसा करबामे मानवक जेबसँ एको पाइ नहि खर्च होइत अछि। कतेक कंजूस आ कि हृदय सँ दरिद्र होइत अछि मानव!

हिनकर कानूनक किताबक पन्ना सभक़ मध्य हम अपन माथक बिन्दी साटि दैत छलहुँ - हिनक दृष्टि पड़ैत छल तमसा जाइत छलाह - ई की कऽ दैत छीं अहाँ।

हम हँसि दैत छलहुँ - अरे जखन हम एहि दुनिया सँ चलि जायब तँ अहाँक दृष्टि एहि बिन्दी सभ पर पड़त तँ .....।

ई चुपचाप मुस्काइत एक नजर हमरा दिस ताकि काज करऽ लगैत छलाह-चान नुका जाइत अछि, चाँदनी पसरल रहैछ अपन उजासक संगे ! हृदय तँ पृथ्वी सन होइत अछि जाहि मे चान सूरज कोनो ने कोनो भाग मे प्रकाशित होइत रहैछ। आइ वएह चान सूरज बनि अहाँ हमर हृदय मे समाहित भऽ गेल छी - अहाँक सभटा बाल बच्चा अहाँक उपवनक विश्वक सुन्दरतम फूल अछि ... हम अहाँ पति-पत्नी नहि वरन् प्रेमी प्रेमिका छलहुँ दुनू एक्के संवेदनशीलता, भावुकता, कल्पनाक धरातल पर जीबैत। हम हृदय छलहुँ तँ अहाँ बुद्धि आ जखन सरिपों ओ बिन्दी लऽ चलि गेलाह तँ हम स्वयंकें बड़ अभागल बुझऽ लगलहुँ ! दुइयो मास नहि भेल होयत योगेन्द्र मल्लिकक बेटी सोमाक वियाह छल। दुनू गोटे आमने-सामने रहैत छलहुँ आश्रय पवन मे! हम वियाह दानक कोनो विध मे नहि गेलहुँ। कासा लगेबाक बेर शबनमकें पठा देलहुँ। माया हमरा जबरदस्ती लऽ गेलीह। हुनका ओतऽ गाम घरक बूढ़ पुरान सभ भरल छलीह। हम कात मे बैसि रहलहुँ मुदा, जखन ओ कासा हाथ मे दऽ सोमाकें लगाबऽ बजलीह तँ हम अकचका गेलहुँ। एहि पर मल्लिक जीक वृद्धा माय, माया आ मल्लिक जी सभ एके स्वर मे बाजऽ लगलाह- अहाँ किएक ने कासा लगायब?

शेफालिका वर्मा जकरा कसा लगौतीह ओ भागवंत होयत। हमरा आश्चर्य लागल बूढ़ पुरान सभ हमरा विध करऽ कहलीह– श्वेताक 'इंगैजमेट' मे चाँद अन्नू तंग कऽ देलीह दीदी ई पैघ छथीन्ह पहिने ई तिलक लगा देथुन! मनोज चुन्नूक विवाह मे, हजारीबाग मे हमर ननदि सभ भाभी अहाँ सभ सँ पैघ छी पहिने अहाँ कनियाक परीछन करू– एरिहना मंजूषाक विवाह, धनबाद मे सभ हमरा कासा लगेवा लेल– लागल युग बदलि रहल छैक! मान्यता बदलि रहल छैक।

जखन रोलीक विवाह पटना सँ भऽ रहल छलैक तँ पुण्यप्रभा, साधना, विमलेन्दु बाबू सभ बैसल छलाह केओ बाजल जे लड़काक पछिन के करत ? हम आ पुण्यप्रभा एके स्वरमे बाजलौं किएक माय करतैक आइ के ? असमये अखिलो स्वर्गवासी भऽ गेल छल आ तकर बाद रोलीक विवाह– पुण्या बजने छलीह– पतिकेँ चलि गेला सँ पत्नी असगर नहि होइत अछि– खाली देह नष्ट होइत अछि आत्मा तँ एके अछि– बड़ नीक लागल छल– सभ किछु तँ बदलि रहल छैक–नारी स्वयं केँ चीन्हि रहल छथि अपन शक्तिक भान भऽ रहल छैक ।

आइ योगेन्द्र मल्लिकक कारण हम अभिषेक मे नीक फ्लैट कीनि सकलहुँ– हमर भोन मोताबिक फ्लैट भेटि गेल– हिनकर मोनू मोताबिक हिनक चैम्बर संजीव लेल सजाय देलहुँ जकर सजावटक परिकल्पना हिनक मोने छल। कतेक सिनेह सँ हमरा सहेजि रखने जे कोनो तरहक चोट हमरा नहि लागय। जमाना देखि हिनका भय होइत छल जे कहीं अपन संतान सभ ने कोनो कठोर बचन हमरा कहि दैक, तेँ ओ पत्र सभ मे एकरा स्पष्ट करैत छलाह– हुनका भविष्यक आभास छल हुनक संरक्षण हमरा भेटत कि नहि–।

93 जनवरीक लिखल हुनकर एकटा पत्र– अहाँक मम्मी साहित्यकार छथि ओ हरदम भावपूर्ण भाषामे अहाँ सभकेँ पत्र लिखि दैत छथि जकरा जे पढ़ैत अछि अपन अपन दृष्टिकोण सँ अर्थ लगबैत छथि । अहाँक मम्मी जीविते छथि साहित्य मे। हमर आदर्श आ सिद्धान्तक रक्षा लेल जीवन मे एतेक कटु क्षण भोगने छथि हमहूँ हरदम हुनका डाँटैत रहलौं किन्तु अहुँ सभ हुनक हृदय केँ, मोन केँ पढ़बा मे सक्षम रहलहुँ.....। हमर मोनमे सदिखन एके भाव रहल जे हम बेटा बेटी मे कहियो फरक नहि केलौं। जाहि तरह सँ बेटा केँ सेटल देखबाक इच्छा रहल ताहि तरहे बेटी आ पुतहु केँ। अत: अहाँ सभ भाइ बहीनी यानी बेटा-बेटी सँ हमर इएह आग्रह रहत – अहाँ सभ आपसी सहयोग सँ आगू बढ़बाक प्रयास करू कोनो एहेन काज नहि करू जाहि मे भाइ बहीन मे केओ एक अपना केँ अपमानित महसूस करय। कोनो समस्याक समाधान सभ भाइ बहीन मिलि सोझराबू राजीव सभ सँ पैघ अछि अस्तु, पैघ हेबाक मर्यादा ओकरा भेटबाक चाही अहाँ सभक कोनो बात सँ हमरा ठेस लागय तँ लागय

किन्तु मम्मीक हृदय केँ कहियो ठेस नहि लागऽ देबैक । हम कोनो एहेन माँ कत्तौ नहि देखने छी जे अहाँ सभ मे सँ केकरो दुखी देखऽ लेल नहि चाहैत अछि ।

कतेक प्यार, कतेक ममता भरल अछि एक एक शब्द मे । कहियो बच्चा सभ सँ किछु नहि मंगलनि खाली दैते रहि गेलाह, खास कऽ प्यार आ विश्वास ।

समय भागि रहल छल– हमर साँस चलि रहल छल– निरर्थक– सहज सरल शेफालिका जे आय सँ अतीत छलीह मुदा, वर्तमान मे अवकाश प्राप्त अग्नि-शलाका! चेतना समिति सँ पत्र आयल जे 14 नवम्बर कें अहाँ केँ यात्री सम्मान' सँ सम्मानित कयल जायत। एहि वर्ष विद्यापतिपर्वक अवसर पर ! – दोसर पत्र कवि सम्मेलन लेल – राजीव, संजीव, स्वीटी, खुश मुदा हमरा लेल एहि सभ सम्मानक कोनो महत्व नहि छल ! कोनो व्यक्तिक प्रतिभा कोनो पुरस्कार वा कि सम्मान सँ नहि आंकल जाइत अछि – एहि सभ सँ 'बायोडाटा' मे चमक अबैत अछि नहि कि लेखन मे! पंचानन कहलनि, शरदिन्दु कहलनि आ एक दिन माइकपर आजादो बाजि देलनि हमरा उचित सम्मान नहि भेटि सकल– सबहक हृदय मे हमर वास अछि– एतेक पत्र सँ भरल हमर मंजूषा की ई सभ हमर सम्मान नहि थीक ? साहित्यधर्मीक हृदय मे हमरा लेल स्नेह भरल आदरक स्थान अछि आ एहि सँ बढ़ि हमरा कोन सम्मान चाही– कतेक छवि आँखिमे अबैत अछि जाइत अछि– कतेक लहरि उठैत अछि। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक पैंतालीसम अधिवेशन पटनाक श्रीकृष्ण मेमोरियल हालमे छल। संभवत: प्रयाग दिस सँ हमरा आमंत्रण भेटल छल आ पहिल बेर हमरा श्याम कृष्ण पाण्डेय सँ भेंट भेल छल चौहत्तर-पचहत्तर इस्वीसँ पत्र माध्यम सँ एतेक समीप हृदयक भऽ गेल छलाह आ साक्षात् देखलौं 14-15 मइ, 1993 इ० मे कतेक सुखद अनुभूति छल ओहि भेंट केर आ ओ नरेश मेहता सँ हमर परिचय करौलन्हि ताहिमे पहिने मैथिलीक उल्लेख तखन हिन्दीक संग हमरा विश्लेषित केने छलाह! नरेश मेहता अपन शुभ्र सात्विक वसन मे स्वयं कविता लगैत छलाह। कतेक देर धरि नरेश मेहता आ हुनक पत्नीसँ गप होइत रहल छल–जखन जस्टिस मृदुला लामिश्रा हमरा यात्री सम्मान देलनित तँ गौरव सँ भरि गेल छलहुँ एकटा नारीक हाथ सँ नारी केँ सम्मान ?

बारह तेरह बरिसक आयु सँ लिखल कविता सँ लऽ कऽ आइधरिक कथा-कविता हमरा सभटा नीक लगैत अछि-कोनो अधलाह नहि-किएक तँ अपन संतान कोन अभागल केँ खराब लगैत छैक? किन्तु, लोकक दृष्टि सँ, पाठकक दृष्टि सँ देखैत छी तँ सभटा व्यर्थ लगैत अछि– लिखैत रहैत छी, लिखैत रहैत छी–आंगुर श्लथ भऽ जाइत अछि–चारूकात ओझरायल ऊनक ढेर जकाँ लिखलाहा कागज सभ छिड़िआयल अछि–तरुणा केँ कहलौं हम मरि जायब तँ अहाँ कागज सभ केँ सम्हारि लेब–तरुणा हँसैत बजलीह–मम्मी, तोँ चिन्ता नहि कर–हम सभटा अपन नाम सँ छपा

लेब-हम मोने मोन हँसल छलहुँ जखन अहाँ ई छिरिआइल कागजक ढेर देखब तँ लागत कतेक निरर्थक प्रलाप सभ अछि ई सभ।

हम हिन्दी मे **किस्त किस्त जीवन** लिखनाइ आरंभ केने छलहुँ-इंगलैंडक न्यू कास्ल सीटीमे बंदनाक कंजरवेटरी (शीशाक घर) मे। पटना एलौं तँ रामानंद झा रमण जी सँ गपे गप मे कहलौं जे हम हिन्दी मे लिखि रहल छी। ओ बजलाह– ई तँ अहाँ नीक नहि कऽ रहल छी। मैथिलीक कर्ज अहाँ पर अछि- अहाँ पहिने मैथिली मे लिखू- राजीव सँ ई बात कहलौं– राजीव बाजल-ठीक कहैत छथुन्ह रमणजी मैथिलीए मे लिखबाक चाही-हिन्दी मे तँ बाद मे हमहूँ सभ अनुवाद करैत रहब। कतेको साल पहिने जीवकांत जी कहने छलाह- बांधवी, अहाँ अपन आत्मकथा लिखू- जीवकान्तजीकें हमरा सँ बड़ सिनेह छल। आ ओहि समय प्राय: हमर सभक भेंट कोनो ने कोनो मंच पर होइत रहैत छल–

आ तकर बाद राजीव-जया लग रोहिणी मे आरंभ केलौं लिखवा लेल तँ राति कें राति नहि बुझैत रही, दिन कें दिन नहि– खाली लिखनाइ। जया बजलीह मम्मी कें 'बेस्ट स्टूडेन्टक एवार्ड भेटबाक चाही। एहू उमर मे मम्मी एतेक लिखैत-पढ़ैत छथिन्ह।

ओहिठाम सँ फेर तरुणा विकास दिव्यकीर्तिक साहित्यिक वातावरण मे मुकर्जी नगर जाइत छलहुँ- फेर लिखनाइ आ लिखनाइ।

विकास जी जेँकि मिथिलाक नहि छथि किन्तु, हमरा कारण ओ मैथिली बाजब आ पढ़ब सीखि लेलनि। किस्त किस्त ओहू ठाम चलैत रहल। प्रमोद द्विवेदी बैसि अपन सलाह सँ साथ दैत रहलाह।

एक बेर दृष्टि मे कोनो कार्यक्रम छल सदभावना दिवसक जाहि मे गोविन्दाचार्य जी आबय बला छलाह। हम तखनो लिखि रहल छलहुँ तँ विकास जी तरुणा कें हमरा विषय मे किछु बजैत रहथीन जे हमर कान मे खसल। हम असगर मे तरुणा सँ पुछलहुँ– गुड़िया, पाहुन की बजैत छलथुन्ह हमरा विषय मे? मम्मी किछु नहि । ओ जे दृष्टि कें कोनो समारोह लेल देने छथिन से ओ आयोजक सभ खास कऽ राजकमल मिश्र हिनका कहैत रहैथ अहाँक मदर इन लॉ शेफालिका जी कें हम सभ एहि समारोहक मुख्य अतिथि बनवऽ चाहैत छी। से हिनका बड़ अचरज भेलैक जे ई सभ मम्मी कें कोना जनैत छैक। हिनका अजगुत लगैत छल तोहर नामक प्रस्तावना सँ।

ओहि बीच बंबइक स्पैरो सँ राजीव लग मोबाइल पर फोन आबि गेलैक जे हम सभ शेफालिकाजीक स्पैरो दिस सँ हुनक साक्षात्कार लेबऽ चाहैत छी। ओ पटना मे उपलब्ध हेतीह कि दिल्ली मे?

राजीव तुरंत बाजल जे एखन ओ दिल्ली मे छथि आ दिल्लीए रहतीह।

तखन डॉ. अनामिका अंग्रेजीक प्राध्यापिका आ बड़ पैघ साहित्यकार सत्यवती कालेज मे प्रधानाचार्य कक्ष मे हमर संपूर्ण जीवन कें दुइ घंटा टेप मे कैद करबाक प्रयास केलीह– स्पैरोक इएह उद्देश्य छैक जे कोना स्त्री अपन नियति सँ लड़ैत, सभ किछु सम्हारैत कोना आगू बढ़लीह-टेप मे सभटा रिकार्ड कयल जाइछ, फोटो सभ लेल जाइछ, तखनहि सत्यवती कालेज सँ हमरा आमंत्रण भेटल वीमेन्स डेवलपमेट कमिटीक समारोह मे मुख्य अतिथि बनवाक।

दिल्ली मे हम गतिमान छलहुँ। ओहिकाल एकटा प्रकाशक हमरा सँ अनुरोध केलन्हि जे मैथिली साहित्यिक इतिहास कें हिन्दी मे विभिन्न लेखकसँ लिखबा लेल। लेखक सँ लऽ कऽ संपादक धरि कें पारिश्रमिक देल जायत।

फेर हमरा जीवाक एकटा नव धारा भेटल, हमरा मे उत्साह जागल किन्तु ओकर समय-सीमा निर्धारित छल। एहि बीच 'मिथिला विभूति सँ सम्मानित करबा लेल दरभंगाक विद्यापति संस्थान बजा लेलक। हमरा अवसर भेटल। हम रामदेव जी ओतऽ जाकऽ एकरा विषय मे विस्तार सँ गप केलौं। बाट पयलौं– शंकर देव अपने सँ बैसि पूरा प्रारूप तैयार केलनि-चन्द्रेश सँ गप भेल। सभ ठाम सँ उत्साह भेटल-एकर बाद तँ गोविन्द जी, मौन जी, रामदेव जी, शंकर जी, देवशंकर नवीन, चन्द्रेश, अक्कू, रेणु, आदि आदिक सामग्री हमरा भेटऽ लागल। हमरा सन अनाड़ी कें रामदेव जीक उत्साह छल। गोविन्दजीक आशीर्वाद छल, हम समस्त शक्ति आ समय खर्च करइत रहलहुँ– किन्तु वांछित सामग्री समय पर भेटल नहि ताहि पर एकटा एहेन पत्र हमरा आबि गेल जे हमर समस्त उत्साह, समस्त आशा पर तुषार पात कऽ देलक आ सूर्यक प्रखर रौद मे शेफाली मुरझेबे टा नहि वरण भूलुँठित भऽ गेलीह– "अहाँक इतिहास योजना कें हम नहि बुझि सकलहुँ। एहि तरहक प्रयास हिन्दी मे कहियो डॉ. नगेन्द्र कयने छलाह आ हुनकर इतिहास आइ हिन्दी केर निकृष्टतम इतिहास कहबैत अछि। फराक-फराक व्यक्तिक लेख (गंभीर-अगंभीर) इतिहास कोना भऽ सकैए? जेएनयू मे हम इतिहास पढ़ने छी आ जाहि ढंग सँ पढ़ने छी तकर अनुपालन वैज्ञानिक आ आलोचनात्मक दृष्टिसँ करैत छी। हम अहाँक योजना मे सहयोग नहि कऽ सकब।

प्लेटो, अरस्तू आदिक आलोचना सिद्धांत हमहु पढ़ने छलहुँ, पढ़ाबैबला नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार आदि रहथि। हुनक देल आलोचना सिद्धांतक उपयोग कोनो भाषाक साहित्यालोचन मे बड़ कम देखल जाइत छैक। ओना हम मैथिली साहित्य आ मैथिली आलोचनाक गहन अध्ययन नहि केने छी तें किछु बाजब सूरज कें दीया देखेनाइ होइत। हिन्दी साहित्यक विशद अध्ययन छल। एहि इतिहासक कार्य भेटला पर हम एहि लेल उत्साहित भऽ गेलहुँ जे साहित्य अकादेमीक एकटा

कार्यक्रम मे कलकत्ता मे हमरा प्रभाकर माचवे कहने छलाह- शेफालिका जी, आइ बंगला साहित्य कें विश्व मे सभसँ समृद्ध साहित्य मानल जाइत अछि- कारण जे बंगला साहित्य मे नव आ पुरान सभ लेखक कें समान मंच भेटैत छैक, समान प्रोत्साहन। अहाँक मैथिली साहित्य मे एना नहि अछि- हुनके कथन स्मृति मे राखि हम अपन एहि योजना कें साकार करबा लेल चाहलौं। शंकर देव, धीरेन्द्र नाथ मिश्र, चन्द्रेश आदि सँ गपो केलौं। शंकर हमरा सँ कहलनि हमर हिन्दी नीक नहि अछि। हम बाजलौं- हमर मैथिली नीक नहि अछि- अहाँ हमर मैथिली सुधारब। हम अहाँक हिन्दी। खूब हँसल छलहुँ दुनू गोटे! सरिपो अपन मैथिली सँ हमरा कहियो तुष्टि नहि भेटल- सहरसा जिलाक मैथिली आ दरभंगा दूनू मिक्स भऽ कऽ अंग्रेजीक 'मिक्स' भऽ गेल। पता नहि किएक मैथिली भाषा लेल हरदम हमर मोनमे प्रश्न रहल- सहरसा पूर्णिया एक सन बजैत अछि- दरभंगा एक सन, समस्तीपुर एक सन। पहिने मुजफ्फरपुर आ भागलपुरो छल, जे वज्जिका, अंगिका बना लेलक। कहीं एहेन नहि होजे सहरसा अपन, समस्तीपुर अपन भाषाकें अलग नाम दऽ लिअय। किएक क्यो अपन चीज कें खराब कहत? फेर साहित्य मे नव आ पुरानक कोन बात-तुलसीक पात की पैघ कि छोट? सभकेँ अभिव्यक्तिक सामर्थ्य नहि होइत छैक आ जिनका भगवान ई सामर्थ्य देने छथि ओ तँ आम आदमी सँ निश्चित रूपे फराक छथि- तँ साहित्यक प्रति हुनक रुझान, हुनक मान, हुनक दृष्टिकोण जनवा मे कत्तौ किछु हर्ज नहि छैक- एक्के बातकें सभ अपन अपन दृष्टिकोण सँ देखैत अछि- जहिना बोध गया मे बुद्धक प्रतिमा कें चीनी अपन दृष्टि सँ, तिब्बती अपन, थाइलैंडबला अपन दृष्टि सँ बनौलक किन्तु बुद्ध तँ वएह छथि- हमर मोनक योजना छल- 'मैथिली साहित्य- एकटा दृष्टि' नाम सँ संग्रह छपाबय लेल-इएह हमरा आदेशो भेटल छल जाहि मे हम पुरानक संग संग वर्तमान पीढ़ीक लेखक सभक विचारकें सेहो समायोजन करितौं- एकत्रित विचारकें पं. गोविन्द झा, रामदेव झा आदिक सलाह सँ एकर पूर्णतादेतौं। किन्तु, हम मात्र एकटा बात सँ टुटि गेलहुँ। आब बुझैत छी हमरा टूटबाक नहि चाही- आइ वर्माजी रहितथि तँ हमरा कहियो टूटऽ नहि दितथि। विपरीत परिस्थिति मे हमरा ओ आर प्रज्ज्वलित हेबाक प्रोत्साहन दैत छलाह। पाछां जखन दिल्ली मे राजीव कें कहलौं ओ अपन बापे जकाँ हमरा बुझाबऽ लागल- 'हू किक्स द डेड डॉग'- नीक काज करबा मे कतेक तरहक बाधा अबैत अछि- कतेक तरहक लोग कतेक तरहक बात बजैत अछि- अहाँकें हतोत्साहित नहि हेबाक चाही। अहाँ तत्काल हमरा फोन सँ सभ बात कहितौं....।

किन्तु, समय बीति गेल- समय पर निर्णय नहि लऽ सकबाक, मात्र भावना मे रहबाक हिस्सक हमरा अस्तव्यस्त कऽ देलक-

अन्हारमे इजोत रहल

ई जे संसार अछि की इएह टा साँच अछि आकि कोनो आर अदृश्य जगत छैक, - छैक तँ कतऽ छैक, की छैक? कतऽ सँ उषाकालक लालिमा समय पर समस्त पृथ्वी पर अनुरागक बरखा करऽ लगैत अछि ? कत सँ - सुन्नर सुन्नर गाछ बीरीछ फूल पात-निकलि समस्त वायुमंडल कें मादक बना दैत छैक ?

फूल-पात सन आगू मे पसरल पंचानन जीक चिट्ठीक पन्ना सभ फड़फड़ा रहल अछि ।

आदरणीया,

अहाँ स्वस्थ-प्रसन्न होएब करब, ई अटूट विश्वास एहि ओजह सँ अछि जे मैथिली एखन अपना आकांक्षा अहाँ लग अवशेष रखनहि अछि, मैथिली कें कोनहुँ लेखिकाक 'आत्मकथा' सँ श्री सम्पन्न होएवाक पहिल अनुभूतिक प्रतीक्षा थिकैक आ मैथिल समाज कें एहन नारी रत्नक मूल्यांकन करब बाँकी अछि जकर योगदान परिवार, समाज आ राष्ट्र लेल एकहि काल-खण्ड मे पारस्परिक महत्ता रखैत अछि। पछिला मास जमशेदपुरक सेमिनार मे बमुश्किल दस मिनटक गप भेल आ ताहिसँ पहिने 1993मे राँचीक मैथिली सम्मेलन मे भेंट भेल छल आ एक बेर पटनाक मिथिला मिहिर कार्यालय मे कुशलक्षेम धरि । मुदा बौद्धिक स्तर पर, अहाँक कथा-कविताक पाठकीय स्तर पर, अहाँक समाज सेवाक प्रत्यक्षदर्शीक स्तर पर हम कम सँ कम साढ़े तीन दशक सँ अधिके अवधि सँ जुड़ल रहलहुँ अछि आ आगहुँ जुड़ल रही से इच्छा ते अछिये । 'मिहिर' अहाँकें कथा संसार मे प्रवेश करबाक अवसर देने छल । पछाति 'एकटा आकास' हमर पाठकीयता कें संपुष्ट कयने रहय। ओना मिहिरक पाठकीय मंच मे कैक हमर अभिमत अहाँक कथा प्रसंग छपल अछि से ने तँ 'कटिंग' अछि आ ने स्मरण। मुदा मोन अछि अगवे कथाक पात्रक संवेदनाक देखार होइत स्पर्श, अपन संस्कृति-परिवेशक सम्मानित करैत कथाकारक दृष्टि आ पछिला शताब्दीक सातम दशक धरि अपन कुंठा, वेदना आ शोषण कें खूँट मे बन्हैत मानसिकता ।

मोन पड़ैत अछि 1976 । कथा लेखिका गौरी मिश्रक सम्पादकत्व मे साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित कथा संग्रह पर उठल बबंडर आ मिहिरक 'विचार मंच' छल अखाड़ा। अहाँक कथा चयन कँ हमहूँ तार्किक निर्णय मानने रही ।

हमरा 1965-70 ई॰क सहरसा मोन पड़ैत अछि । जिला मुख्यालय रहितो एकदम गमैया वातावरण आ ताहि झांपल परिवेशक बीच सहरसा नगरपालिकाक आयुक्तक अहाँक दस वर्षीय समाज सेवा । आ, समाजक प्रति दायित्व पालनक व्यस्ततम अवधिमे तँ अहाँ मैथिलीक कथा ओ कविताक मूलाधार कें लेखिकाक स्तर पर बलिष्ठ बनौलहुँ । स्वराज्यक दू अढ़ाय दशकक उपरान्त जँ निष्पक्ष अनुशीलन होअय तँ कथा ओ काव्य दुनू विधा मे अहाँ छोड़ि क्यो नजरि नहि अवैत अछि । गौरी मिश्र, चित्रलेखा देवी, लीली रे आदि अगवे कथा लिखैत रहथि । जाहि नीरूजा रेणु कें साहित्य अकादेमी पछाति पुरस्कृत कयलकन्हि तनिक तँ जन्मो नहि भेल छल । कखनहुँ शरदिन्दु चौधरी, सम्पादक समय-सालक कहब (26.03.07/दूरभाष) सटीक लगैछ जे अहाँक योगदानक तटस्थ मूल्यांकन लेल काव्य कृति 'विप्रलब्धा' भावांजलि ' एकटा आकास (कथा संग्रह) नागफाँस (उपन्यास), 'यायावरी' (यात्रा वृतांत) 'स्मृति रेखा' (संस्मरण) क अतिरिक्त शीघ्र प्रकाश्य 'अर्थयुग, 'अनाम अनुभूति', 'रजनीगंधा', 'आ बान्ह टुटि गेलैक' अतिरिक्त कैक संग्रह मे स्थान पओने रचना, पत्रिका मे छिड़िआइल कथा कविता कें सेहो सोझा पथार लगबय पड़तैक।

1974 मे अहाँक 'स्मृति-रेखा' (संस्मरण) पोथी बहराएल । हम मैथिलीक संस्मरण विधा मे ओहि काल खण्ड मे लेखिका लोकनिक पोथी तकैत छियन्हि, आर कोन-कोन कृति अछि ? जेना कि पछिला खेप अहाँ कहलहुँ 'किस्त-किस्त मे शीघ्र अहाँक आत्मकथा प्रकाशित होमय जा रहल अछि । एकर प्रकाशन मैथिली कें नवीनतम उपलब्धि हैत। कोनहुँ लेखिकाक आत्मकथा पहिले-पहिल मैथिली देखि पाओत । अगिला खाढ़ी अहाँक संघर्ष, समर्पण आ दृष्टि सँ नव भूमिका थिर कऽ सकत।

1993 मे हमर प्रधान सम्पादकत्व मे हजारीबाग सँ पहिल टेवलायड मैथिली मासिक 'बागमती दामोदर टाइम्स' प्रकाशित होमय लगल । दोसरहि अंक मे मैथिलीक महादेवी : शेफालिका वर्मा अग्रलेख छपल। मौखिक आ लिखित विरोध भेल की गलत छपल छल ? हम मानैत छी महादेवी कोटिक गीतमयता अहाँक काव्य मे नहि अछि, बिम्ब आ प्रतीकक विशाल परिधि अहाँ नहि अर्जित कऽ सकलहुँ मुदा महादेवी तँ संवेदनात्मकता, हृद्‌यविह्वलता आ स्पर्शजन्यता लेल प्रसिद्धि पओलनि। अहाँक काव्य संसार तँ इएह अनुभूतिजन्यता कें प्लावित कयने अछि ।

मैथिली काव्य मंचक कवयित्रीक रूप मे अहाँ छोड़ि पर्याय के बनल ? अपन प्रान्ते नहि, अन्यत्रहुँ अहींने मैथिलीक प्रति आकर्षण जगौलहुँ ?

जतय धरि हमरा बूझल अछि, 'काउबेल्ट' क एहि पूर्वी भाग मे स्त्रिगणक सामान्य आयु 69 सँ 73 मानल गेल अछि । अपन जीवनक साढ़े छः दशक बीतैबतो मैथिली लेल अहाँक ऊर्जा, उत्साह आ निष्ठा देखि हमरा झुम्पा लाहिरी (''नेमसेकक - लेखिका) मोन पड़ैत छथि ।

बंगला लेखिका तसलीमा नसरीनक हेवनि मे एक साक्षात्कार पढ़लहुँ, यूरोपीयन देशक नागरिकता एही कारणे नहि लेलीह जे अपन भाषा बजनिहार क्यो नहि भेटैत छलन्हि, आन भाषा मे लिखवाक अन्तरात्मा अनुमति नहि दैत छन्हि । अहूँ आइ सहरसा छोड़ि पटना-दिल्ली रहय लागल हुँ । भगवती अहाँ कें हिन्दीयो मे यशस्वी बनवाक अर्हता प्रदान कयने थिकीह मुदा अहाँ आइयो तसलीमा बनल छी जकर प्रमाण अछि, शीघ्र प्रकाश्य किस्त-किस्त मे ।

मिथिला सभ दिन मीमांसाक भूमि रहल अछि । एतुका साहित्यवेत्ता, बुद्धिजीवी आ पाठकक मनन-चिन्तन मध्य अहाँक चारि दशकक मैथिली सेवा स्थायी परिचिति देतनि, साहित्यानुभूतिक नवीनता ।

सादर ।
पंचानन मिश्र
02.04.05

पंचानन जीक पत्र हमर आगू मे अछि-विश्वास नहि होइत अछि। आजुक शिथिल आत्मविश्वास जागि गेल । संदर्भ मे केओ हमरा लेल एतेक अपनत्वक गरिमा प्रदान करथि-हँ दुइ बरीस पहिने चन्द्रेश सँ भेंट भेल छल । हम एकटा वियाह मे दरभंगा गेल छलहुँ। होटल अरविन्द मे ठहरल छलहुँ.... चन्द्रेशक फोन न॰ कोनो पत्रिका सँ उतारि रखने छलहुँ। मोन नहि लगैत छल वियाह दानक भीड़ भड़क्का मे! बैसले-बैसल चंद्रेश कें फोन लगाय देलहुँ। चन्द्रेश तुरत होटल आबि गेलाह! हमरा बड़ नीक लागल छल। कतेक देर धरि कतेक बात कहैत रहलाह। हम अभिभूत सुनइत रहलहुँ। रामदेवजी कें फोन लगेलहुँ आबि गेलाह शंकर देव जी! अपन मित्र-पुत्रकें देखि मोन खुश भऽ गेल छल ?

आ शंकर देव जी सीधे हमर साक्षात्कार लेबऽ लगलाह-

हम साक्षात्कार देने छलहुँ एहि लेल नहि जे ओ छपत - वरन शंकरक सिनेह आदर देखि, किन्तु दोसर दिन जखन 'आज' मे छपि गेल तँ आश्चर्य लागल - कारण छल अपन नियति - अपन भाग्य पर हमरा कहियो विश्वास नहि भेल जे भेटैत अछि ओकरे वरदान बुझू इएह हमर जीवनक मूल मंत्र रहल। नेनपने सँ सोचैत छलहुँ- तेरे फूलों से भी प्यार तेरे काँटों से भी प्यार- जो भी देना चाहे दे दे करतार', ओ यात्री सम्मान रहय, मिथिला विभूति - स्वर्ण पदक जे किछु रहय हम ककरो अवमानना नहि केलौं किन्तु, अवज्ञा सहबाक हिस्सको नहि अछि - स्मृति रेखाक विमोचन साइत सतहत्तर ई॰ मे भेल छल पं॰ हरिमोहन झा जीक हाथ सँ - हुनक कहल किछु शब्द एखनो हमर डायरी मे अंकित अछि - ई पोथी पढ़ि कतेक ठाम हमर आँखि नोरा गेल। व्यथा वेदना सँ भरल पोथी हमरा शिवानी महादेवी सँ कतेक आगू लागल । लगैछ जेना सुदूर हिमालय सँ केओ अनवरत घंटी बजा रहल हो....।

हुनक समस्त भाषण, समस्त कार्यक्रम केँ टेप रिकार्डर मे रेकर्ड कयल गेल हम सुधाकान्त जी सँ कहने छलहुँ जे एहि रेकर्डिंगक एक कापी हमरो देब। ओहिठाम हमर साक्षात्कारक गप चलय लागल। चाचा जीक निवास टिकिया टोली मे हमरा बजाओल गेल – आकाशवाणी लेल हमर साक्षात्कार भऽ रहल छलैक । किन्तु ओ समस्त रेकर्डिंग विमोचन सँ लऽ साक्षात्कार धरिक फेंकि देल गेल कि की भेल– हम आइ धरि नहि जानलौं। साक्षात्कार लेमऽ बला पटनेक केओ साहित्यकार छलाह । नाम एकदम मोन नहि अछि – कथा कविताक आलोचना नीक-बेजाय मिहिर मे निकलैत रहैत छल किन्तु, कहियो बेजाय नहि लागल कारण जे ओहि सँ हमरा प्रेरणा भटैत छल। दोषक परिमार्जनक अवसर – किन्तु, एहि तरहक विनष्टि।

पंचानन जी सरिपों अपन व्यक्तित्व सँ लऽ कऽ लेखन धरि मे क्रिस्टल सन पारदर्शी छथि ! ओना हम की छी किछुनहि-कालक प्रखर धार सभ किछु बहा केँ लऽ जाइत अछि आ बाँचि जाइत अछि रेतकणक अपरिमित राशि सन स्मृति-स्मृतिक ओहि बालुका राशि केँ सहेजवा मे, संभारवामे व्यस्त रहि हम रीति जाइत छी ! मुदा, स्नेहिल स्मृति कहियो काल दछिनबरिया बसात जकाँ मोन प्राण केँ आह्लादित कऽ जाइत छैक 15 मार्च' 77 ई०क अपराह्न मे लिखल विनोद बिहारी लालक पत्रक किछु पाती सभ आँखिक आगू नाचऽ लगैत अछि –

''.....' रेत आ रेत कथाक नायिका एकटा मानमयी त्यागमयी आदर्श मैथिल ललनाक गंगा सन पवित्र रूप, ...भाभी, ...साँचे कहियो नहि बिसरि पायब भाभीक ओ निष्कलुष छवि.....ओहिना जेना 'कँपइत कालक ठहार' एखनो मानस पटल पर अंकित अछि.......ओह । कतेक भावनामयी छी अहाँ! लगैत अछि ईश्वर अहाँक मोन प्राणकेँ कोनो रेशम सन कोमल, सुकुमार, अबोध तारक ताना भरनी सँ बुनने होथि ......' एकटा निश्छल भाइक भाभीक प्रति ई उद्गार प्रस्तुत कथाक संदर्भमे केओ पाठक अपन एहि रूपक मत अहाँक प्रति सेहो प्रकटकऽ सकैत अछि बहिन। ई अहाँक भावप्रवण हृद्यक चमत्कार थीक अहाँक लेखन मे जीवंत अछि, प्रामाणिक आ प्रभावोत्पादक सेहो...।' आइ विनोद लिखि रहल छथि आ खूब लिखि रहल छथि आ हमर हृदय मे छथि।

15.05.66 केँ मधुबनी सँ रामदेव राय, प्रकोष्ठ सं० – 2, पूर्णेन्दु निकेतनक पत्र 'उदास राखी उदास अनुभूतिक' व्यथाक संदर्भ मे स्नेह सँ वंचित हमर हृदय बहीनक दुइ बुन्न नोर कण-एहि निर्जीव श्वेत पत्र पर देखि आकुल भऽ गेल अछि। निर्निमेष दृष्टिए कथाकेँ आद्योपान्त पढ़ि गेलहुँ । तकर बाद मोनमे एकटा शंका उठल, जनैत छी स्नेहक सशक्त भावोच्छवास मे शंकाक स्थान नहि लेकिन शंका..........। अस्तु, शंकाक निवारणार्थ ई पत्र पठा रहल छी – अपन श्रद्धा आ सिनेह पर एतेक विश्वास अवश्य अछि जे हमर अग्रजा हाथ मे राखी आ माथ पर अपन वरदहस्त देने

एहि अनुजक संशयतम केँ अवश्य नाश करतीह । हमर शंका की, भाइ-बहीनीक नाता मात्र सहोदर भेला सँ होइत अछि ? की भाइ बहीनीक रिश्ता मृत्योपरान्त टुटि जाइत अछि, की एकटा अभागल भाइ संसारक कोनो स्त्री सँ भाइ बहीनीक नाता नहि जोड़ि सकैत अछि ? यदि एहेन भऽ सकैत अछि तँ की एहि अभागल भाइ केँ अहाँ बहीनीक स्नेह दऽ सकैत छी...' आइ नहि जनैत छी रामदेव राय कतऽ छथि हमर हृदयमे स्नेह आ ममता सँ भरल वएह स्थान हुनका लेल अछि।

नाता हम जोड़ने छलहुँ, बहिनक स्नेह-सागर सँ ओकरा सिंचित सेहो केने छलहुँ, मुदा कालक घात-प्रतिघात मे आइ केँ कतऽ छथि किछु नहि बुझल अछि। मुदा आइयो जखन एहि पत्र पर दृष्टि पड़ैत अछि तँ हृद्य भरि जाइत अछि । भाय बहीनक प्यार एतेक निश्छल निर्मल होयत अछि तखने तँ' 78 ई० सँ अकाशवाणी छत्तरपुर सँ जगदीश किंजल्क बरोबरि भाइ बहीनक स्नेहिल रंग सँ रंगैत रहलाह।

राखीक रिश्ता सँ तँ हम दुनिया केँ बान्हि लेबऽ लेल सोचैत छलहुँ – ओहि अनदेखल भाइ, जे राखी मे साकर भऽ जाइत छल किन्तु आइ घरि हम हुनका नहि देखने छी । कादम्बिनी आ सारिका मे प्रकाशित रचना सभक माध्यमे हमरा सैकड़ो पत्र आयल – कतेक गोटे भाइ बनि गेलाह?

चित्रकूटधामक शिव प्रसाद सोनी तँ पत्रे पत्र मे राखीक काँच डोरि केँ अपन सिनेहक पक्का रंग सँ रंगि देने छलाह – दीदी, आपकी राखी आती है तो मेरी सारी बहनें जानती है कि मैं माथे से लगा कर सबसे पहले अपनी अनदेखी बहन की राखी कलाई पर बाँधता, हूँ फिर मेरी बहनें मुझे बाँधती है.....।

एतबे नहि शिव प्रसादक समस्त परिवारक दुख सुख सँ हमरा संबंध बनि गेल खास कऽ हुनकर पुत्र दीप चंद सोनी सँ जे बुआ जी कहि पत्र लिखैत लिखैत थकैत नहि छल – आइ कत्तौ उत्तर प्रदेश मे मजिस्ट्रेट होयत। एकटा पत्रक माध्यम सँ सभ साकार हमरा सामने भऽ जाइत छल –

डॉ० केदार नाथ लाभ केँ हम देखने नहि छलहुँ किन्तु ओ हमर पैघ भाइ बनि गेलाह विप्रलब्धा मे भूमिका लिखलाक बाद – .... गुलाबी रंगों वाली राखी एक बहन के स्निग्ध स्नेहानुराग की चटख लालिमा मे स्नात सिक्त राखी और उसे सहेजता संभालता सा पतल धागा ! एक निर्मल निश्छल अनाबिल स्नेह मे मन बँध गया......।

गाजियाबाद सँ प्रतिभा पाण्डेय जे हमर कथा सभक हिन्दी अनुवाद कऽ रहल छलीह – ओहि सभक प्रसंग मे लिखने छलीह –..... जो सजा दें स्वीकार करूँगी। वैसे मैंने दीदी बना लिया है आपको । इसलिए मन मे डर कम ही सजा तो मिलेगी पर कठोर नहीं ....।

ई होइत छैक बहीनीक प्रेम।

2 फरवरी' 80 कँ भागलपुर चंपानगर सँ लिखल प्रसून लतांतक पत्र '.... ... तुमने पत्र का उत्तर दिया । तुम्हारी पत्र से लगता है दीदी तुमने वास्तव मे संबंधों को टिकाउ बना रखा है...... तुम्हारी अस्वस्थता का समाचार चिंतित कर देता है..... तुम्हारा यह कहना है कि कष्ट नहीं हो तो इस कार्य को कर देंगे....... अरे दीदी, तब तुमने मुझे जाना ही कहाँ- औपचारिकता की स्थिति मे तुम अभी भी हो...... पत्र जल्दी-जल्दी लिखोगी, तो जल्दी सहयोग करूँगा तुम्हें....बीमारी मे परहेज करती हो न? परहेज करोगी तभी स्वस्थ भी हो सकोगी ......'

हमरा आइयो मोन अछि 66ई०क गप होयत । हम डुमरा मे छलहुँ । हृद्य मे कथा कविताक लहरि पर लहरि उठैत रहैत छल किन्तु परिवेशक प्रतिकूलताक कारण गाम मे किछु लिखि पढ़ि नहि पबैत छलहुँ । गाम मे बड़ जल्दी राति भऽ जाइत छल। गामक राति, निस्तब्धता आ अन्हारक भारी सीरक ओढ़ि सूतल गाम । छोट सन् डीबीयाक टेमी राति भरि थरथराइत अन्हार सँ लड़ैत रहैत छल- अन्हारक अमित साम्राज्य सँ लड़ैत - ओकरा सँ बगावत करैत डिबीयाक भुकभुकाइत टेमी ! मौन-मौन, गहन मौन - ओहि राति वर्मा जी सहरसा सँ एलाह आ रातिक ओहि मूक अन्हार मे हमरा हाथ मे एकटा पोस्ट कार्ड थमा देलथिन - 'गे तोहर एकटा करुण कथा प्राप्त भेल 'आ जींजीर बाजि उठल।' कथा अंक मे सभ सँ बेसी रूचल। मिथिलाक आदर्श एहि कथा मे भेटल हमरा .....फेर एहने प्रगतिशील कथाक हमरा प्रतीक्षा रहत । तू राबिना शा पुष्पक कथा सँ टेकनीक सीखहेँ । की हमर बात मानबीही ने ?......

मधुर, सहायक शिक्षक, तेतरी मुंगेर 8.7.66! के छथि मधुर कतऽ छथि सभ ?

डिबीयाक लौ जकाँ हमर आँखि मे नोरक बून्न थरथरा रहल छल । यानी हम मैथिली मे ठीक ठाक लिखि रहल छी। हमर मोनक आकास मे खाली टैगोर, शरद, अमृता प्रीतम, अज्ञेय, जैनेन्द्र सभ चमकैत रहैत छलाह । हुनक भावना सभ हमर हृदय केँ अपन बाहुपाश मे बान्हने रहैत छल । आब ओहि मे पुष्पक नाम सेहो सटि गेल । '..... मिहिर मे क्रिया प्रतिक्रिया हमर कथा पर छपैत छल किन्तु व्यक्तिगत रूप सँ सेहो हमरा पत्र आयब आरंभ भऽ गेल छल- सौंसे सहरसामे हल्ला छल जे वकील साहबक पत्नीक नाम सभसँ बेसी पत्र अबैत अछि- हमरा लेल शुभ-मुदा, समाज लेल ?

एहिना मोन अछि लक्ष्मण झा 'सागर'क पत्र राजेन्द्र छात्र निवास, शंभु चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता सँ 12.12.75 केँ आयल छल ...... सभ सँ पहिने, हमर हार्दिक साधु वाद स्वीकार करू 'निसांस कऽ सफल रचना पर । वाह ! जेहने प्लाटक गांभीर्य

ओहने भाषाक सुंदरता...... एहि सँ पूर्वो हम अहाँक रचना सभ सँ बड़ प्रभावित रहल छी । किछु दिन पूर्व हमहूँ मिहिर मे छपल रही किन्तु अहाँ लेल तँ अनचिन्हार छी - बस रचनाक माध्यम सँ अहाँ केँ देखैत छलहुँ ....। सागर। हमहूँ अहाँ सभक स्नेहके हृदय सँ सतत् अनुभूत करैत रहैत छी- कहियो मंच पर हम सभ रहैत हएब किन्तु, देखने नहि छी अहाँ केँ! आइ सागर मैथिलीक महान साहित्यकार छथि।

एहि पोथीक छपैत-छपैत 2007क विद्यापति पर्वक कवि सम्मेलन मे अचम्के, 'सागर' सँ भेंट भऽ गेल। साकार, साक्षात्। कतेक दिन बाद वीरेन्द्र मल्लिक, बुद्धिनाथ मिश्र सँ भेंट भेल छल। रामलोचन ठाकुर सेहो छलाह, अरविन्द ठाकुरकेँ सेहो पहिलुक बेर देखलहुँ..........।

किछु एहिना तँ पंचानन मिश्रक पत्र छल साइत' 70 ई०क '............ अहाँक कथा सभ एकटा अलग आकर्षण नेने रहैत अछि जे हमर हृद्य केँ स्पर्श कऽ लैत अछि अनुभूतिक स्तर पर सभ सँ अलग, सभ सँ फराक...........।

16.1.69 मे मिथिला दूतक रमादत्त झा जीक पत्र आयल छल - अगला मास दूतक तृतीय वर्षक प्रथम अंक - कथा अंकक रूप मे प्रकाशित होऽ जा रहल अछि । अहाँक कथा रचना पएबाक हार्दिक अभिलाषा अछि ....।

हम तँ जेना हवा मे डोलैत रहैत छलहुँ । सरिपों मैथिली हमरा एतेक सम्मान दऽ रहल अछि।

योगेन्द्र नाथ मल्लिक-पता नहि कोन जन्मक संबंध छल हमर माया आ मल्लिक जी सँ? कखनो काल मल्लिक जी बाजथि हम अहाँक भक्त छी आ यदि भक्तिक कोनो मूल्यांकन भऽ सकैत अछि तँ अहाँ हमरा अंक दियऽ फर्स्ट डिवीजन, सेकेन्ड डिवीजन पास-फेल हम कतऽ छी- हमर भक्ति कें अहाँ की मूल्यांकन करैत छी- सब सँ पैघ बात छैक जे ओ अपन उद्‌गार चुपचाप असगर मे नहि अपितु सम्पूर्ण समाजक समक्ष, परिवारक समक्ष व्यक्त करैत छलाह ।

हमरा मैथिलीक किछु एहनो साहित्यकार सभ सँ भेंट अछि जे असगर मे हमर कृतित्वक बड़ प्रशंसा करैत छलाह- किन्तु जहाँ लोकक समक्ष रहथि-'जैसे कोइ पहचान न हो'.....क भाव हुनक चेहरा पर आबि जाय किन्तु, हुनक हृदय जे हमरा लेल सौहार्द्रपूर्ण स्थान छल भनहि असगरे मे किएक ने।।

सहरसाक विशाल परिवार, हमर छोट-छोट नेना, चारि चारिटा दीअर, बड़का बाबू जी, काकी, घरो मे व्यस्त अधिवक्ता पति जिनका वकालत छोड़ि आ हमरा उत्साहित करबाक बाद किछु नहि अबैत छल। गामक नजदीक भेलाक कारण सदिखन 'अतिथि देवो भव' केँ स्वीकारैत, कनिया बनल, माथ पर सँ नुआ रखने सभक सेवा मे तत्पर रहैत छलहुँ- कखनो कोयला पर माथ फोड़ि, कखनो कुन्नी पर

किन्तु, ओहनो प्रतिकूल परिस्थिति मे हम जतेक लिखलौं आ लिखैत चलि गेलहुँ- फेर कहियो नहि लिखलौं - एकटा बच्चा कें स्कूल जेबाक छल तँ दोसर कें ड्रेस नहि भेटि रहल छैक - एकटा दीअर-जल्दी जलखै दिअ क्लास छुटि जायत तँ एम्हर दाढ़ी बनवऽवला कतऽ छैक - चार दिस सँ हमरा पर प्रहार - बड़का बाबूजी कें चाह पीबाक तलब तँ काकीक अनघोल - कनियां - की करैत छी - घिरनी नकाँ नचैत रहैत छलहुँ हम। एकदम घिरनी जकाँ जकरा न जान नहि होइत छैक मुदा, डोरिक सहारे नचैत रहैत अछि - नचैत रहैत अछि- हमरो जान हमर कथा, कविता मे अटकल रहैत छल जे कखन हम ओकरा जनम देब - ई सभ चित्र हमर कतेको कथा कविता मे अनायासे चलि आयल अछि सहज सरल रूपे । हम एक बैसार मे खत्म करैत छलौं एकटा कथा कें बिना कोनो कट्टमकुट्टी कें- ओहिना संपादक जी कें पठा दैत छलहुँ आ ओ निश्चित रूप सँ छपैत छल । लेखकीय प्रति अबैत छल - भाभीक कथा छैक, कनियाक कथा छैक - अड़ोस पड़ोस लँ जाइत छल पढ़बा लेल फेर कहियो नहि घुरबैत छल । हमरो कहाँ छुट्टी, कतऽ गेल हमर कथा ? आ तें आइ एक दर्जन सँ बेसी कथा हमरा भेटि नहि रहल अछि, सभ सँ नेहोरा करैत छी उपराबै लेल।

कोना लिखैत रही ई। आजुक सुख सुविधा पूर्ण समय मे नहि लिखि पएबाक वेदना निरंतर अछि। सोफाक बाँहि कें टेबुल बना लिखैत रही किन्तु सोफो तँ 72 मे कीनने छलहुँ - ई जखन कचहरी चलि जाइत छलाह तँ हिनकर टेबुल कें हम अपन उपयोग मे अनैत रही, जखन कि बेरिया मे सभ सुति जाय । कथाक जन्म देबाक प्रसव पीड़ा तँ कहियो एक दू दिन सँ तँ कहियो 3-4 घंटा सँ होइते रहैत छल किन्तु, अवसर भेटतहि एक सीटींग मे बैसि कथाकें जन्म दैत उठि जाइत छलहुँ। केओ नहि बुझैत छल कनियां लिखैत कखन छल - 'सासु ससुरक सामने टेबुल कुर्सी पर बैसबाक दुस्साहस करबाक कोनो प्रश्ने नहि छल। दीयरो सभक सामने कलम उठबितौं तँ होइत छल जे ओ ई नहि बुझैत जे भाभी जमबैत छथि । लिखबाक घमंड छैक। पता नहि कखन घरक कोन कोन मे बैसि लिखैत होयब- मिहिर, दूत, मिथिला दर्शन, वैदेही, सोना माटि, आखर अग्निपत्र, चिनगी अदि कतेको पत्रिका हमर छपल कथाक संग अबैत छल आ हाथे हाथ एम्हर सँ ओम्हर चलि जाइत छल- बस पाठक सभक पत्रक बाढ़ि अबैत छल आ ओहि पत्र सभकें हम दुलार करैत रही-प्यार करैत रही जे आइ धरि हमर आँखिक सामने अछि । किन्तु, हमर कथा सभ हमरा सँ बिछुड़ि गेल । जखन मेघनक कथा शेष देखलौं तँ बुझल जे दर्जन भरि सँ उपर कथा हमरा सँ बिछुड़ल अछि । संगे मेघनक प्रश्न मै० कथाक मूल्यांकनराक क्रम मे स्मृति रेखाक प्रकाशन वर्ष 1977 बतबैत एकरा कथा कोटि मे राखल गेल किन्तु मैथिली अकादेमी मे प्रकाशन काल 1966 ई० बताओल गेलआ संस्मरण, रेखाचित्र मे राखल गेलऽ जखन पं० गोविन्द झाक अनुसार प्रकाशिते नहि भेल अछि.........।

हमरा आइयो मोन पड़ैत अछि 78 ई०क 'कादम्बिनी' मे दुर्गा प्रसाद शुक्ल जी एवं शीला झुनझुनवालाक पत्र आयल छल - आपकी कविता कादम्बिनी मे प्रकाशित होती जा रही है। आग्रह है कि इससे पहले यह कविता कहीं भी प्रकाशित नहीं हो-' खुशी सँ हमर हृद्य मयूरी सन नाचि उठल छल । फेर तँ हम कादम्बिनी, सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, राष्ट्रभाषा संदेश, अपूर्वा, चारूमित्रा आदि सभ मे छपैत चलि गेलहुँ। हिन्दी मे लिखबाक उन्माद बढ़ि गेल । सारिका मे मैथिली कथा सभक अनुवाद सेहो छपल जे गोविन्द मिश्र जी कयने छलाह । खास कऽ राजेन्द्र अवस्थी हमरा बड़ प्रेरित कयने छलाह-गौरीशंकर राजहंस सेहो।

आ तकर बाद हमर विशाल पाठक वर्गक पत्र आयब आरंभ भेल तँ विश्वास नहि होयत छल जे ई हमही छी - केओ दीदी, केओ बहीनी, केओ पीसी केओ भाभी - हँ, एकाधटा एहनो पत्र आयल जाहिमे हमरा सँ पागलपनक हद्द धरि प्रेमक इजहार छल। घर मे सभ पढ़ैत छल मुदा वर्मा जी पढ़ि-पढ़ि हमरा उत्साहित-प्रेरित करैत छलाह। - आइ नहि जानि के कतऽ अछि, के कतऽ देखबाक बड़ मोन करैत अछि एहि अनचिन्हार अनदेखल अपन स्नेह बिन्दु सभ कें ! आ तें हम किछु गोटेक एकाध पत्र एहि मे देबाक प्रयास कऽ रहल छी । ई हुनका सभक प्रति हमर आदर आ स्नेहानुदान थीक ।

जिनगी मे व्यस्तता छल, परिस्थिति ओझरायल, परिवेश प्रतिकूल। बस सभक स्नेहिल पत्र हमर देय छल हुनका सभक प्रति जकरा हम प्यार-दुलार सँ कंगालिनक धन जकाँ सहेजि कें नुका कें रखने छलहुँ - बरिस में एक बेर पेटी खोलैत छलहुँ सभटा पत्र कें पढ़ैत छलहुँ - सभक प्रेम कें अनुभूत करैत छलहुँ । प्रेमक अभाव - लावण्यविहीने नहि मसान बना दैत अछि मानव कें श्रमिक बस्ती बाबू पुरबा कानपुर सँ सुनील कु० राहीक पत्र -'...... आपकी कविता 'प्रतीक्षा' पढ़ने का सुयोग प्राप्त हुआ। वस्तुत: आपकी अन्तहीन प्रतीक्षा नन्ही शेफाली की उत्कृष्ट मनोदशा है। आपने अपने आत्मकथ्य मे गार्हस्थ जीवन मे अलिप्तता और विषमताओं की ओर असम्पृकत के बारे मे कहा है - इसी ने बरबस मुझे आपसे संभाषण करने के लिए विवश किया - आपके अन्दर की नन्ही शेफाली कभी भी नहीं खो पायेगी क्योंकि उसको, अभिव्यक्ति जैसा सशक्त माध्यम मिल गया है......।।

ओहि समय 3.4.78 कें राधेश्याम मिश्रा जी (कमलजीत) एफ०ओ० कमर्सियल बैंक भदोही बनारस सँ खत आयल छल '....... आपकी कविता देखी । अच्छी लगी । बहुत नजदीक से छू गयी.... सारे अंक मे केवल एक ही कविता ऐसी लगी, जैसे मेरी बातें हो ....'

पुनः हाथरस, उ०प्र० सँ चमचा हाथरसीक खत आएल...... चमचे का शुद्ध

स्टेन लेस स्टील का प्रणाम ! आपकी रचना पढ़कर मन विभोर हो गया ..... आपने जिस परिप्रेक्ष्य मे रचना लिखी है वास्तव मे सराहनीय है......।।

डिंग्वस कोठी, अलोपी बाग, इलाहाबाद सँ ब्रजमोहन श्रीवास्तव हमर रचनाक प्रशंसा करैत अपन काव्य संकलन लेल कविता पठेबाक अनुरोध केलनि ।

एहिना एक बेर अरुण कुमार ठाकुर, चीफ बोर्डिंग हाउस, महेन्द्रू सँ लिखने छलाह जे 13 फरवरीक अंक मे श्रीमती शेफालिका वर्माक कथा बड़ नीक लागल। एहि सँ पूर्व हुनक कथा 'ओह' सेहो नीक लागल छल- पता नहि के छथि ई अरुण ठाकुर, कतऽ छथि आइ.....।

अष्टम कर्ण कायस्थ महासभा, मधुबनी (1990) जखन हमरा काव्य-प्रतिभा आ सामाजिक जागरण लेल सम्मानित केने छल....'अपनेक आदर्श, कृतित्व अनुकरणीय होयन' तँ हमरा बड़ कचमची छूटल छल- हमरा विश्वास नहि होइत छल जे एहनो भऽ सकैत अछि- सरिपों, हम एहि योग्य छी- किन्तु, सिनेह हमरा बड़ भेटल- एहिमे कोनो संदेह नहि आ जीवा लेल इएह सिनेह तँ संबल बनैत छैक-पटना मे राजदेव बाबू जगन्नाथ लाल कर्ण, विपिन वर्मा, अभिराम, बलराम, रामनंदन प्रसाद, विशारद जी आदिक उत्साह भेल ।

चम्पानगर, भागलपुर सँ विकास पांडेय जी, जे निशान्तक अध्यक्ष सेहो छलाह, भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघक मंत्री सेहो, बड़ स्नेह भरल भनुहार... भाइ नीरज ने और आपके खत से विश्वास जगा कि आप जैसी सशक्त लेखिका के मन में भी निशान्त के प्रति किसी न किसी अनुपात में जगह है। इसी समर्थन के बल पर निशान्त धारा के प्रतिकूल जूझता हुआ अपने महान् उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर बढ़ रहा है। चाहता हूँ आप भारतीय राष्ट्रीय लेखक संघ के संयोजन का भार स्वीकारकर सहरसा मे जिला शाखा खोल अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। निश्चय ही आपका ऐसा समर्थन हमारे लिए गौरव की बात होगी ....'आपकी सुविधानुसार आनंद शंकर माधवन जी के द्वारा इसका उद्घाटन समारोह भी सम्पन्न कराया जा सकता है।'....... आर कतेक भावप्रवण बात अपन एहि नम्हर पत्र मे विकास पांडेय जी लिखने छलाह। कतेक आशाक केन्द्र हम बनि गेलहुँ । 18.4.78 क पत्र बिहार प्रांतीय महिला शिविर सम्मेलन जकर उद्घाटन जयप्रकाश नारायण करऽ वला छलथि सुधा श्रीवास्तव एवं नूतनक बिहार महिला संघर्ष समिति सँ पत्र आयल छल । बिहार आन्दोलन मे आजादीक बाद दोसर खेप महिला सभक व्यापक हिस्सेदारी भेल । एहि कारण आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि सभ मोर्चा पर हमरा सभ कें अपन लड़ाइ सम्पूर्ण समाजक संदर्भ स्वयं लड़वाक अछि। एकरे ध्यान मे राखि 29 जुलाइ 78 सँ 2

अगस्त 78 धरि पटना मे बिहार प्रा॰ महिला शिविर सम्मेलनक आयोजन कयल जा रहल छल।

जेँकि हम 74क संपूर्ण क्रांतिक जयप्रकाश आन्दोलन मे सक्रिय छलहुँ आ पूरा सहरसा जिला कें दलमलित कऽ देने छलहुँ - एहि लेल हमरा पर एतेक भारी दवाब छल ।

कतेक पहिलुक बात जेना स्मृति मे आबि जाइत अछि-साल इस्वी किछ नहि मोन अछि, मोन अछि तँ अपन मोन जे उदास छल संध्या पूजा कऽ अपन घरक हाता मे कुर्सी पर चुपचाप बैसल छलहुँ । बच्चा सभ खेलऽ गेल छल। दीअर सभ एम्हर ओम्हर घुमैत । भीतर मे वर्मा जी कोनो केसक तैयारी मे लालटेन मे आँखि झोंकैत- बाहर मौनक चादर पसरल छल - हम असगर चुपचाप सांझुक आकास कें तकैत छलहुँ कि केओ दुइ गोटे आबि गेलाह । हम बुझलौं कोनो क्लाइन्ट छथि - उठि कँ भीतर जाय लगलहुँ कि ओ पुछलनि- शेफालिकाजी छथि की ?

हम ठामक ठामे रहि गेलौं - ओ दुनू गोटे छलाह श्याम बिहारी लाल जी आ विनोद बिहारी लाल जी - परिचय जनला पर मोन आबि गेल विनोदजीक चिटठी रेत आ रेत .. आ फेर कतेक देर धरि हम सभ गप करैत रहलौं । हुनका सभक मोनमे हमरा लेल ढेर जिज्ञासा छल, ढेर प्रश्न- किन्तु एकटा प्रश्न हमरा सितारक तार जकाँ झनझना देलक- किन्तु तार टूटल छल- स्वर नहि निकलि सकल - 'लोक कहैत छैक जे कवि लेखक प्रायः अपन गृहस्थ जीवन मे असफल रहैत छथि। खास कऽ लेखिका कवयित्री अहाँ सन संवेदनशील! गृहस्थी आ लेखन? अहाँ अपना विषय मे की सोचैत छी सफल वा असफल?

आ हम आइ धरि सोचि रहल छी, सोचिते रहल छी सफल-असफल । जखन गाम मे काकी, माँ सभक प्रशंसा मोन पड़ैत अछि तँ सफल लगैत छी, जखन घर मे अपन अस्तव्यस्त मोन देखैत छी तँ असफल लगैत छी - कल्पनाक दुनिया मे हरपल विचरनाइ हमर जिनगी छल । काम किछु करैत छलौं मोन कत्तौ रहैत छल सोचैत किछु छलौं । ई हरदम टोकैत रहैत छलाह। राज, अहाँ जखन कोनो काज करैत छी तँ ध्यान ओही ठाम राखू । अहाँ एक बेर मे सय बात सोचैत छी । ककरो पर विश्वास करैत छी तँ एतेक करैत छी कि जखन ओ विश्वास तोड़ि दैत अछि तँ अहाँ टुटि जाइत छी । अहाँ एना किएक करैत छी रन्नो ?

हम विस्मित भऽ जाइत छलहुँ- ई कोना एतेक समझैत रहैत छथि हमरा जखन कि हुनका काज सँ फुरसते नहि रहैत छल- अहाँ हमरा एना देखैत छी तँ तखने किएक नहि टोकि दैत छी ? किएक नहि टूट' सँ बचा लैत छी ।

नहि राज, हम चाहैत छी अहाँ स्वयं ठोकर खाउ स्वयं संम्हरि जाउ । हमरा

पर निर्भर नहि रहू । सुरक्षा नहि स्वरक्षाक आवश्यकता अछि अहाँ कें । जखन चुनु मध्यम मार्ग चुनू । ककरो सँ बेसी सटू नहि, ककरो सँ बेसी हटू नहि । झरनाक वेग कतेक तीव्र होइत अछि, नदीक बाढ़ि अपन किनार कें तोड़ैत भागैत अछि । एहेन नहि अहाँ एकटा शांत नदीक धार बनू जे नहि तँ बाढ़ि मे बहि जाय आ नहि तँ सूखाड़ मे अपन अस्तित्व खत्म कऽ दैक । हम पति नहि, प्रेमी नहि, अपन विधाता कें पओने छलहुँ जे हमरा सिरजलनि, रजनी सँ शेफालिका बनौलनि । पल पल हमरा जिनगीक तेज रौद सँ वेदनाक पीड़ा सँ बचबैत रहलाह – तखन तँ आरसी प्र0 सिंह लिखने छलाह– भरल पूरल परिवार, छह सन्तान कें जन्मदेनिहारि आ तें स्वास्थ्य सँ दुर्बल, पेशा सँ वकील पति कें सभ तरहें सुखी करइत, नगर आयुक्तक पदभार ग्रहण करइत. ... आ कोनो काव्य रचनाकें लेल समय निकालि लैत छथि ? गृहस्थीक जाहि मरूभूमि मे कतेक कवि–कवयित्रीक रस स्रोत सूखि गेल ताहि प्रपंच मे हुनक कवि हृदय कोना मात्र जीविते नहि सरसता एवं वचन विदग्धताक प्रचार–प्रसार कऽ रहल अछि से वास्तव मे अभिनंदनीय, बारंबार वन्दनीय अछि, तखन हमर एकटा रचना शेफालिका शीर्षक प्रकाशित भेल छलैक । आ लगले कवयित्रीक जन्म होइ छनि । पिता साहित्य प्रेमी। तें स्वाभाविके, जे अपन नवजात कन्या केर नाम हमर ओहि कविता पर शेफालिका राखि देलनि। एके संग ओ कविता आ ई कन्या दुनू सार्थक भऽ गेली । आ देखू सरस्वतीक कृपा । बालिका भऽ गेली कवयित्री, भावुकता सँ भरल ममता सँ ओत–प्रोत, आ हमर ओ कविता एकटा जीवंत काव्य प्रतिभा मे रूपान्तरित भऽ गेल अछि । ई केकर सौभाग्य...

(विप्रलब्धा सँ उद्धृत– 9.7.75)

कल्पनाक उड़ान मे डूबल रहनाइ हमरा बड़ नीक लगैत छल । शब्दक फूल सँ भावनाक माला गुहैत रही । इच्छा कामनाक बेनामी घरौंदा कें सपनाक खड़िका सभ सँ सजाय राखने छलौं अपन हृदय मे । हमर भीतर जे एकटा नान्हिटा शेफाली छलीह ओकर अपन अलग संसार छल । नित नव नव सपना सँ सजबैत जाहिठाम हमर मोन उन्मुक्त निर्बंध विचरैत छल । लगैत छल जेना आकास धारती पर उतरि हमर बगल मे बैसि गेल अछि। ताराक गहना सँ हमरा सजाय रहल अछि आ फेर रौदक एक खण्ड आबि हमर समस्त सपना कें तोड़ि दैत छल। हम दुखी भऽ रौद कें उपराग दऽ दैत छलहुँ आ फेर तारा सँ भरल आकासक कल्पना मे डुबि जाइत छलहुँ। ओहि समय ई हमर बगल मे बैसि गाबऽ लगैत छलाह– 'मेरा बस चले तो सितारे तो क्या तेरी मांग मैं मोतियों से सजा दूँ–' आ हमर कल्पना साकार भऽ जाइत छल । किन्तु पारिवारिक संसार, यथार्थक दुनिया सँ कल्पना जगत कें अलग करऽ पड़ैत छल । जीनाइ तँ ओहि संसार मे छल, पएर तँ धरतीए पर रसबाक छल।

स्मृति मे आबि जाइत अछि रामदेव झाजीक पत्रक किछु पंक्ति–"अहाँ सन

भावना–स्नाता, कल्पना शीला लेखिका आ कवयित्री मैथिलीक हेतु एक उपलब्धि छथि । आ एहि उपलब्धिक समस्त श्रेय हमर मित्र ललनजीक छनि ने हरद्वारक मन्दाकिनी कें हिन्दी प्रदेश सँ मोड़ि कऽ मैथिलीक आङन मे लऽ अनलनि । अहाँक पहिल रचना मिहिर मे पढ़ि परोक्ष परिचिता बान्धवीक रचना बुझि जे आनन्द भेल छल से आब यथावंत कहब संभव नहि, आशा अछि जे साहित्य साधनाक क्रम निरंतर चलैत रहत । अपेक्षा–उपेक्षाक कुहेस कुज्झटिका ओकरा झाँपत नहि.........।"

ओहिना जगदीश्वर झा, प्राचार्य सहरसा कालेजक पत्र देखि हमरा लागल जेना हमरा स्वर्ण पदक भेटि गेल हो–'सितम्बर 1967क मिहिरक कथा अंक । एक दूटा कथा पढ़लहुँ मुदा संतोष नहि भेल । अहाँक बारे मे सोचलौं अहाँ तँ कवयित्री छी, कथा मे कोनो खास विशेषता शायद नै होयत 'मुक्ति' कथा पढ़ैत पढ़ैत कखनहुँ चमत्कृत भऽ गेलहुँ। सिहरि उठलहुँ आ कखनहुँ आँखि मे नोरो आबि गेल–पढ़ैत गेलहुँ, बढ़ैत गेलहुँ–अपन गिरफ्त मे लेनऽ लागल तखने सिहरन आँखि मे नोर इत्यादि होमऽ लागल। अंततोगत्वा चमत्कृत भऽ गेलहुँ–मैथिली कथा साहित्यमे अहाँक विलक्षण प्रतिभा एवं शब्द विन्यास देखि हमरा विश्वास भऽ रहल अछि जे मैथिली साहित्यक रेणु बनु........। मायानंद मिश्र फोन पर सहरसा सँ बजलनि–तोहर नागफाँस उपन्यास पढ़लौ शेफाली, एतेक नीक अदभुद लागल। अंतअंत धरि रहस्यमय वाह–वाह, चाचाजी बड़ाइ करैत रहलाह हमर आँखि सागर बनैत रहल–मोन पड़ैत अछि, ओ कविसम्मेलन विहंगम जी कांग्रेस छोड सी एफ डी मे चलि गेलाह विहगम जकाँ एहि ठारि सँ ओहि ठारि पर उड़ि रहल छथि–आ तोहर कविता नहिए आयल–ओ कोना अ ओताह हम बाजलौं।

तँ कतेक ठहाका लागल छल–सरिपों मायानंदजीक संचालल पे एहन जादू छल जे दस दस हजार श्रोताकें कवि सम्मेलन मे राति राति भरि बैसा लैत छल–हम कहने छलौं नागफांस मे प्रूफक अशुद्धि छैक है। कथाक प्रवाहमे अशुद्धि दिसितँ ध्यानो नहि जाइत छैक–विद्यानाथ झा विदित सँ कतेक जमानाक बाद भेंट भेल छल–कोनो बात लेल हम क्षमा मांगलौं तँ कतेक सिनेह सँ बजलनि–बहिन कतहु भाइ सँ क्षमा मांगय आब तँ अहाँ मोटा गेल छी जहिया दूबर पातर छिम्मरि सन छलहुँ तहिए सँ हम अहाँकें अपन बहीन बुझैत छी।

सरिपों, हम तँ एहि भाव सागर मे साँस लैत छी शंभुप्रताप, संस्थापक, चन्दा झा मानवीय विकास शोध केन्द्र बड़गाम सँ–अहाँक अर्थयुग हमर प्यासल मोनकें अमृतक सरोवर भेटि गेल। 30 मार्चक कार्यक्रमक संचालन बड़गामक बेटी डा शेपालिका वर्मा करथि की बड़गामवासीक मनोरथपूर्ण हँ तैक.....उदयनारायण सिंह नाचिकेताक पत्र 82 मे गुजरात सँ आयल छल–मैथिली भाषाक आन्दोलन मे अपनेक गुरुत्वपूर्ण भूमिका स्मरण मे रखैत हम अपने सँ प्रार्थना करब जे अपन मूल्यवान अभिमत पठा हमरा

सभकें लाभान्वित कारी–डा० रत्न शंकर मिश्र, कुलपति, कानपुर विश्वविद्यालय 79 ई० मे लिखने छलाह राष्ट्रभाषा संदेश से हिन्दी की उदीयमान प्रतिभा शेफलिका वर्मा से परिचित होने का सौभाग्य मिला । वास्तव मे संपूर्ण देश मे एक सर्वमान्य संपर्क भाषा को स्थापित करना एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है–आदि कतेको प्रश्नक संग हमर आलेखक बड़ाइ केने छलाह–

विनोद्‌जीक प्रश्न, फेर शेखरक प्रश्न अहाँक तुलना लोक महादेवी वर्मा सँ करैत छथि। महादेवीक जीवन सँ हम सभ परिचित छी- अहाँ की बजैत छी- आदि कतेको प्रश्नक उत्तर ई दैत छलाह । हम समस्या छलौं तँ ई समाधान। ''कखनो काल अहाँ स्वयं प्रश्न स्वयं उत्तर बनि जाइत छी'' कतेक गोटे ईहो बजैत छलाह।

अंग्रेजी मे केओ कहने छथि जे बदनामीक सय दिन सँ नीक यश आ प्रसिद्धिक एक दिन होइत अछि । ई बात सही छैक किन्तु कहियो कहियो प्रसिद्धि दुखक कारणो बनि जाइत छैक । प्रसिद्ध व्यक्तिक चिन्हारक क्षेत्र पैघ भऽ जाइत छैक । समाज देश सँ रिश्ता नाता जुटऽ लगैत छैक। भेंट करउबलाक भीड़ सेहो भऽ जाइत छैक- लोकक दृष्टि ओकर प्रत्येक क्रिया कलाप पर रहऽ लगैत अछि। केकरो सँ भेंट करू नहि कि लोकक मोनमे शंका उठि जाइत छल किन्तु यदि सह संवेध पति या पत्नी हो तँ आंगुर उठबयबला के आंगुर अपने आप झुकि जाइत छल- मुदा हम कनिक काल लेल शरबिद्ध कपोती जकाँ तड़फड़ाय लगैत छलौं । हम तँ प्रसिद्ध छलौं, नहि जनैत छी किन्तु नगर आयुक्तक कारण आर बेसी चर्चित भऽ गेल छलौं। प्रत्येक कवि सम्मेलनक एकटा अंग हमहूँ रहैत छलौं – एक बेर माँ केर फोन पटना सँ आयल रजनी तो ठीक छह ने ? हम अकचका गेलौं – हँ किएक माँ, हम तँ एकदम ठीक छी । माँ पुछलीह आ पाहुन कतऽ छथुन्ह ? बगले मे ठाढ़ छथि- ले बात करा। माँ हिनका सँ गप कऽ हमरा बजलीह – जनैत छी रजनी एक गोटे दरभंगा सँ आयल रहथि कहलनि पूरा दरभंगा जिला मे हल्ला छैक जे शेफालिका वर्मा कें तलाक भऽ गेल छैक- आब तँ हम आ माँ दुनू गोटे फोने पर कानऽ लगलौं । के एहेन हल्ला उठेलक- पाछाँ जखन ई जनलनि तँ हमरा चिढबऽ लगलाह- हम बगल मे छी अहाँ कनैत छी- सरिपों हमर जीवन खुजल पुस्तक सन रहल अछि । ई हरदम कहैत छलाह एकबेर जे अपन आत्माक आवाज सुनि लैत अछि ओकरा लेल सभटा विपत्ति फूलक हार बनि जाउत अछि । गेटिस्बर्ग कतेक नीक बात कहने छथि- संसार मे केकरो लेल इर्ष्याक भाव नहि राखू सभक लेल उत्सर्ग भाव। हमहूँ आइ धरि कतेक तरहक विपत्ति, षड्‌यंत्र व्यंगयोक्ति सँ लड़ैत रहलौं। किन्तु बल हिनका सँ भेटैत छल ताकत हमर छलाह। केओ किछु बाजय अहाँ अपना कें सत्यक राह पर लऽ चलू । अहाँक पएर लहुलहुआन भऽ जायत। अहाँक मोन क्षत विक्षत भऽ जायत किएक तँ सत्यक मार्ग कंटकाकीर्ण अछि । अहाँ अपन आत्माक आलोक मे बढ़ैत चलू । लोकक उपेक्षा

अहाँ लेल प्यार अछि, लोकक घृणा अहाँ लेल प्रेम अछि । लोग गारि देत ओ अहाँ लेल फूल अछि । अपन दृष्टिकोण कें विकसित करू अहाँ कें अपने बाट भेटि जायत आ हिनकर कहल शब्द हमर जिनगी बनि गेल ।

एक दिस सुकरात, गालिब आदि रचनाकर्मीक गृहस्थजीवन दुखमय रहल ओहिठाम लारेंस, इलियट, हार्डी, सरोजनी नायडू आदिक गृहस्थ जीवन सुन्दर आ कलात्मक रहल अछि। वास्तव मे कवि या लेखक जतेक समर्पित अपन लेखन मे होइत छथि ओतबे यदि अपन गृहस्थी मे समर्पित रहथि तँ कत्तौ कोनो शंका रहि नहि जाय । हमरा तँ हमर पति नहि वरन हमर बच्चो सभ, हुनक जीवन साथियो सभ हमर भावना कें संवेदना कें बुझैत रहलाह एतेक धरि जे सौंसे परिवार मे हमर देओर मोहनजी हमर भावना कें हमर हृदय मे उठैत वेदनाक लहरि कें चीन्हि लैत छलाह।

किन्तु हमर जिनगी मे खूनक रिश्ता नाता सँ कम स्नेहक रिश्ता रिश्ता नहि रहल हम जकरा मानलौ हृदयक गहींराय सँ मानलौं समयक बटखरा सँ नहि जोखलौं । वास्तव मे रिश्ता आ जिनगी शतरंजक खेल नहि थीक जाहि ठाम अपन पक्ष देखि मानव बिसात बदलि लैत अछि ।

समय बितैत गेल आ हमर अपने कविता सभ जेना हमरा असमंजस मे दऽ देलक । हमर भाव शिशु सभ हमर मुँह जोहि रहल छल- अहाँ बाजू ने – साहित्य एकाडेमी द्वारा आयोजित पोएट्स वर्कशॉप मोन पड़ि जाइत अछि–अहाँ अपन कविता सभकें कान वाद मे रखैत छी प्रश्न झकझोरि देने छल हमरा–हम अपन भावशिशु कें किछु जबाव नहि दऽ सकलौं । पता नहि तकर बाद हम कवि सम्मेलनो सभ सँ विरक्त होमऽ लागलौं । 22.11.94 कें हटनी, घोघरडीहा सँ लिखल अजीत आजादक पत्र प्रश्न जेना मोन कें उद्‌भ्रान्त कऽ दैत अछि–

...17 नवम्बर कँ चेतना समिति द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक कुशल संचालन अपनेक द्वारा अत्यन्त सफल रहल... तथापि एक प्रश्न जे आइ कविता मंचक योग्य नहि रहल... ? सोच तँ ई अछि जे हम सभ एतेक लिखैत छी, पढ़ैत छी किन्तु लोक हमरा सुनबा लेल नहि चाहैत छथि.... वास्तव मे ई प्रश्न समाधान खोजि रहल अछि । हास्यक तरंग मे कविता हेराय गेलीह जेना।''

29 अप्रील 1984 कें मैथिली महासंघक सभा बनगाम मे संत लक्ष्मीनाथ गोसाँयक प्रांगण मे भेल छल । मनोरंजनजी हमरा अपना संगे बनगाम लऽ गेलाह । डा0 जगन्नाथ मिश्र मुख्य अतिथि छलाह। अचक्के मृत्युंजय बाबू माइक पर उद्‌घोषणा केलनि जे हम सहरसा जिला महिला समितिक महासचिव शेफालिका वर्माजी सँ आग्रह करब जे ओ दुइ शब्द बाजि 'कोसी कुसुमक एहि अंकक विमोचन कछि- हम अकचका गेलहुँ- तुरंत श्रोता सँ वक्ता भऽ गेलहुँ । दुइ हजार सँ उपर लोकक भीड़ छल आ हम बाजैत रहलौं...।

एहि मंच सँ किछु साल पहिने हमर सभक विशाल कवि सम्मेलन भेल छल। जकर अध्यक्षता मणिपद्मजी केने छलाह । हमर कविताक बेर आयल तँ मणिपद्मजी एना बजलाह जेना ओ कविता कऽ रहल होथि – हे शेफालिका, अहाँ आउ– झहरि जाउ, झहरि जाउ, झहरि जाउ...' हम स्वयं एतेक सम्मोहित भऽ गेलौं जे हमरा ध्याने नहि रहल जे हमरे कविता पढ़बाक अछि।

जखन पापाक पोस्टिंग सहरसा भेल छल तँ हम चौथा पास कयलाक बाद प्राइवेटसँ सीधे मैट्रिकक तैयारी कऽ रहल छलौं । उद्देश्य मैट्रिक छल मुदा बाद मे सातम आठम सभ क्लास छल जकर वैतरणी पार कऽ मैट्रिकक महा समुद्र मे मिलना छल। ओहि समय हमर कविता सभ बालक मे छपैत छल। भागलपुर मे लिखने छलौं बाल मोनक, बाल कविता । तखन पुस्तक भंडार पटना मे केओ दिनेश्वर लाल 'आनन्द' छलाह जे बालक मे प्रकाशित हमर कविता पर बधाइ पत्र पठौलनि। बालक मे पहेली भरि कें पठबैत छलौ तँ ओहि मे सेहो बड़ पुरस्कार जीतैत छलहुँ। पुरस्कार मे ढेर बाल कथा, बाल उपन्यास सभक संग्रह भेटैत छल । हम बड़ उत्साहित भऽ जाइत छलौं । बालकक बड़ नाम छल खास कऽ बिहार मे । जखन हमर कविता छपैत छल तँ सहरसाक लोक मे हलचल मचि जाइत छल। डिप्टी साहबक बेटीक कविता छपल अछि । कतेक सर संबंधी पापा लग हमर बड़ाइ करैत छलाह। पापा हमरा अपना लग बजाय सभ सँ भेंट करबैत छलाह। सभ केओ हमर पीठ ठोकैत छलाह। ओहि समय जन्मदिन मे हमरा शंकर टेकरीबाल पेन्टिंग बाक्स देलनि जकरा हम कतेक जतन सँ वियाहक बाद धरि रखने छलौं ।

जखन आनन्दजीक पत्र आयल तँ पता लागल जे ओ मिथिलेक छथि । लालदाय, शशि बहीन, श्यामा, रामा, अरूण लल्ली सभ बहीनक जमघट तँ घर मे सदिखन रहिते छल किन्तु, लालदाय, सभदिनसँ सभक सरदार रहलीह । हम सभ ओकरे इशारा पर नचैत छलौं । ककरो मजाल नहि छल जे ओकर बात कँ काटि दी। ओ हमरा बजलीह। रजनी, तो आनन्दजी कें जीजाजी संबोधन सँ पत्रक जबाब दही आ हुनकर पत्नी कें अपन बहीन बनाय लेब हम सभ । आ पत्रे पत्र मे 'जीजा सालीक रिश्ता हमर सभक बनि गेल ।

जीवन एकटा उपन्यास सन होइत अछि जाहि मे रंग विरंगी घटना घटैत रहैत अछि । एहि घटना सभ मे कोनो कोनो घटना एतेक मनोरंजक आ हृदय कें गुदगुदी लगबऽ बला होइत छैक जे मोन मानस मे एकटा अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि । हमर सभक पत्र व्यवहार ओहि 'जीजाजी' सँ करीब बरीस बीतऽ लागल । हम बालक मे छपइत रहलहुँ । एहि बीच हमर अबोध अन्तर 'ललन' नाम सँ सतरंगी सपना संग अलसइत रहल । नहि जानि कोना भावना करोट लैत रहल कि अचानक ओहि 'जीजाजीकय पत्र आयल–अहाँक कविता मे आब बाल सुलभ भावना नहि रहल ।

युवा मोनक उमंग आ वेदना सँ भरल अहाँक कविता भऽ गेल अछि । तखन हम अपन मोन कें जानलौं–अरे ई कोना भऽ गेल? की भऽ गेल? किन्तु सभ प्रश्नक उत्तर नहि होइत छैक । हजार प्रश्न ठाढ़ भऽ जाइत छैक उत्तर एकोटाक नहि भेटैत छैक । हमरो लग कोनो उत्तर नहि रहल । नहि तँ हम बालक आ नहि तँ हिन्दी पत्रिकाक योग्य हम रहल होयब । बस निर्जीव पन्ना कँ रंगइत रहलहुँ– 'रंग विरंगे फूल खिले हैं उमड़ रहा मदमस्त समीर। न जानूँ क्यों जीवन आशा बन बैठी आज गंभीर।

हमरा सभ कबूतरी–कबूतरी बजैत छल..... तखन हम कवयित्रीक अर्थों नहि बुझैत रही... सात-आठ बरखक बालिका खाली कल्पना लोकमे घुमैत छलीह.....।

जीवनक प्रथम मैथिली कविता–नहि–नहि कविताक पांती हजारीबागमे लिखने छलहुँ– लिखने नहि छलहुँ बनेने छलहुँ प्राय: 52 या 53 ई०क गप होयत–

पापा बड़ सोचैत छलाह माँकें बड़ दुख होइत छलै.... रजनी! तोरा रहैत पापा सोचथुन ई दुखक गप आ तोरा सभ लेल चैलेन्ज! आ तखन हम दीपक मिलि एकटा योजना तैयार केलौं, हम दुइ पाती बनैलौं गीतक– जहिना पापासोचऽ लगैथ कि हम दीपू मधु लयात्मक स्वरमे थपड़ी पारि गाबऽ लगैत छलहुँ– पापा सोचै छथिन दुइ पैसा भाय आ पापाक आगू तरहथी पसारि दैत छलहुँ....पप्पा वचनबद्ध छलाह...तखन दुइ पैसाक महत्व छल अपन बनाओल कविताक ई पातीसँ पापासँ बड़ पाइ हम तीनू बहीन कमयलौं पापाकें सोचवाक हिस्सक नहि छुटैत छल आ दिन मे 1–2 टाका तक कमाइ भऽ जायत छल पापक इएह हिस्सक हमरा मे कल्पना भावना बनि गेल। मोन करोट लेखक जखन हम स्वर्णपदक लेद्ध लेल इलाहाबाद भेल छली ।

इलाहाबादक दिसम्बरी जाड़– लोग बरफ जकाँ जमल जाय रहल छल । 9 बजे भोरे गाड़ी आयल छल हम सभ डा० राम कुमार वर्मा ओतऽ साकत गेलौं तँ ज्ञात भेल जे ओ प्रयाग स्टेशन लग अपना बेटी ओतऽ रहैत छथि, हुनक घर 'राज्य लक्ष्मी' पहुँचलौं तँ ओ ड्राइंग रूम मे बैसि अखबार पढ़ि रहल छलाह। हमरा सभकें देखतहि आह्लादित भऽ उठलाह – पापा माँ आ वर्माजी सँ परिचय भेल, कनिके काल मे ओ हमर सभक अपन नितान्त अप्पन भऽ गेलाह, पापा पुछलनि अहाँक कतेक बच्चा अछि। ओ हमर माथ पर आशीर्वादी हाथ दैत बजलाह बस एकटा 'शेफालिका। हम अकचका गेल छलौं की हुनको बेटी– हुनका एकेटा संतान 'राज्य लक्ष्मी' एखन 'साकेत छोड़ि ओ बेटी लग रहथि । बेटीक घर मे कोना रहताह (जखन कि बेटीक बियाहो नहि भेल छल) एहि कारण ओ चुपचाप सहज भऽ बेटीक गाड़ी मे पेट्रोल आदि भरबा दैत छलाह । एहिना बिहारक मुख्यमंत्री राम सुन्दर दास जखन ओ एनजीसी मे कार्यरत अपन भतीजी मीना अजीत ओतऽ छलाह तूँ ओकरा ओहि ठाम भोजन नहि कऽ भावना ओतऽ भोजन करैत छलाह ।

रामकुमार वर्मा हमरा हिन्दी दिवस पर मारिशस चलबाक आग्रह केलनि किन्तु हम वर्मा जीकें छोड़ि कत्तौ नहि जाय सकैत छलहुँ।

दोसर दिनक सम्मेलनक मुख्य अतिथि डा० राम कुमार वर्मा छलाह, उद्घाटन लेल महीयसी महादेवी वर्मा आवय लेल छलीह, मुदा अस्वस्थ हेवाक कारण हुनका बदला इलाहाबाद विश्व विद्यालयक भूतपूर्व कुलपति प्रख्यात साहित्यकार डॉ० बाबूराम सक्सेना अयलाह ।

हम मैथिलीक प्रख्यात आलोचक डा० जयकान्त मिश्राक बगलमे बैसल छलहुँ । कतेक बात ओ हमरा सँ केलन्हि - कतेक आशीर्वाद, जखन डा0 बाबूराम सक्सेना हमरा स्वर्ण पदक देमऽ लगलाह तँ हमर पापाक आँखिसँ नोर झहरऽ लागल छल। माँ उल्लसित छलीह, वर्माजी शांत-ओ देखि रहल छलाह पापा, माँ अपन बेटी कँ देखि कतेक खुशी आ गौरव सँ भरि रहल छलाह ।

डॉ० रामकुमार जी हमरा 'काव्य विनोदिनी' कऽ उपाधि प्रदान केलन्हि, जलखैक प्लेट सँ समोसा, एकटा मिठाइ उठाय रामकुमार वर्माजी हमर प्लेट मे दऽ देलनि- शेफाली ई हमर प्रसाद थीक।

प्रदर्शनी देखवा लेल सभ जाय लगलाह तँ जेना एकटा स्वर लहरायल शेफाली-शेफाली। अकचका खोजऽ लगलौं तँ पापा संकेत केलन्हि रामकुमारजी हमरा बजा रहल छलाह- एतेक पैघ सम्मान लेल ढेर ढेर बधाइ। बाबू राम सक्सेना बधाइ देलन्हि- जयकान्त जी बधाइ देलन्हि- एतेक पैघपैघ साहित्यकारक बधाइ की हमरा लेल गोल्ड मेडलसँ कम छल-? मुदा, हमर मोन इलाहाबाद मे धर्मवीर भारतीक सुधाकेँ, पम्मीकेँ, सायकिल पर चन्दरकेँ खोजि रहल छल-

एहि सभ स्नेह सम्मानक कारण जखन द्वितीय मैथिली महासम्मेलन प्रयाग मे 1977 मे होमऽ बला छल तँ हमरा ओहिमे महिला विभागक सभापति मनोनीत कयल गेल । प्रधान सभापति महाकवि सुमित्रा नंदन पंत छलाह । बीसटा विभागमे सभापति मे हमरा अतिरिक्त पं0 भोला लाल दास, पं० शशिनाथ चौधरी, पं० लक्ष्मी पति सिंहजी, पं० हरिमोहन झाजी पं० विभूति भूषण मुखोपाध्याय, प्रो० धीरेन्द्र जी, पं० आद्याचरण जी, रमानाथ मिश्र मिहिर जी, पं0 शंकर मिश्रजी आदि कतेको विद्वान छलाह । 'बटुक' मे पन्त जीक संग-संग हमरो फोटो छपल छल मुदाअभाग्य हमर जे ओ महासम्मेलन कोनो खास परिस्थिति मे स्थगित भऽ गेल छल ।

ओहि राति पापा माँ खाली हमरे चर्च करैत रहलाह- हमर जनम- हमर खेल हमर बदमाशी- सभटा वर्माजी कँ सुनवैत रहलाह- होटल स्टैंडर्डक ओ कोठरी मे केकरो आँखि मे नीन नहि छल- एकटा खुशी छल- एक उल्लास। अशोक नगर स्थित महादेवी वर्माक निवास पर सेहो गेल छलहुँ। बड़का अहाता, चारू कात

प्राकृतिक निष्पंदता जेना गाछ बीरीछ सभ शान्त साधना मे तल्लीन, एकटा तपस्विनीक कुटिया एकटा किशोरी बाला निकलल छलीह -महादेवीजी जी अस्वस्थ छथि किनको सँ भेट नहि कऽ सकैत छथि ।

सुधा भाइ ओहि बाला केँ हमरा सभक विषय मे कहलन्हि । स्वर्ण पदक महादेवी जी केँ देबाक छल । नाम सुनतहि भगवतीक द्वार खुजि गेल। ड्राइंग रूम मे चारू कात देवाल सँ सटल सोफा लागल छल। बीच मे सुन्दरसन कालीन पर गोल मेज, केबाड़क एक दिस वीणवादिनीक दुग्ध-उज्जवल प्रतिमा, चारू दिस ईसा मसीह सँ लय गुरू नानक धरि सभ धर्मक संत लोकनिक फोटो सभ लागल आ श्वेत परिधान मे आवेष्टित साक्षात सरस्वती महादेवी आयल छलीह, दुर्बल काया, अधर पर मोहक मुस्की, आँखि मे एकटा सपना लहराइत ।

हम सभ कालीन पर बैसल छलौं । ओ हमरा सभ लग आबि बैसि गेलीह। सुधाकान्त भाइ सभसँ परिचय करौलन्हि ।

अहाँ अस्वस्थ छी की- ? हमर बात पर ओ हँसि देलीह- एखन तँ समस्त देश अस्वस्थ अछि ओहि ठाम हमर अस्वस्थताक कोन अर्थ ? हुनक वाणी मे अग्निए टा नहि आँचो छल - भोरे भोर जखन अखबार पढ़ैत छी तँ लुटि-पाट, हिंसा, बलात्कार, हत्या- ई सभ देखतहि अखबार छुबाक साहस नहि होइत अछि। पता नहि की भऽ गेल अछि देश केँ - वर्त्तमान व्यवस्थाक प्रति मोन मे जे क्षोभ छल ओ महादेवीक वेदनाक स्वर मे प्रस्फुटित होइत रहल ।

हमर पोथी 'विप्रलब्धा' मे हरिमोहन झाजी द्वारा लिखित 'मैथिलीक महादेवी' पढि ओ विस्मित भऽ गेलीह । हमर प्रणत चिबुक उठाय स्नेह सँ निहार' लगलीह । हमर डायरी पर ओ बड़ प्रेम सँ लिखि देलीह - तू न अपनी उम्र को अपने लिए कारा बनाना, जाग तुझको दूर जाना- तेँ तँ हमर यायावरी मोन गवैत रहैत अछि - माइल्स टू गो-

पापा-माँक गप कान मे संगीत जकाँ बाजि रहल छल - अपना सभ कतेक घुमलौं मुदा इलाहाबादक ई यात्रा ! सोचू अपन बेटीक सौभाग्य सँ हम सभ एहिठाम आयल छी।

माँ बजलीह- से ठीके बजैत छी, कहियो नहि सोचैत रही । सभ कहैत छल एकर धीया पुता की पढ़त लिखत -पापा बीचे मे बात कटैत बजलाह - हम तँ सोचैत रही - सपना देखैत रही एकर नाम तँ हम टिप्पणि पर 'तेजस्विनी' राखने छलौं ।

ओना जखन जयकान्त जी हमर आनन्दपुरी बला बासा पर अबैत छलाह हमर घर-आंगनमे उत्सवक अरिपन खिंचा जाइत छल? ओ तँ अबैत छलाह मैथिली लेल हाइकोर्ट मे केस करवा लेल ? जेँकि वर्मा जी हुनकर ओकिल रहथि घर मे अपन

जूनीयर अनिल मिश्राक संग वर्माजी निरंतर ड्राफ्टिंग मे लागल रहैत छलाह- आ तेँ जयकांत बाबूक आगमन इलाहाबादसँ प्राय: होइते रहैत छल। कतेक आशीष हमरा दैत छलाह- हमरा तँ इएह सभ नीक लगैत छल। कतेक तरहक सुझाव दैत छलाह- पुस्तक क्रय-विक्रयक बाट देखाबैत छलाह- एक बेर हुनक तीरभुक्ति निवास, इलाहाबाद गेल छलहुँ- हुनका ओतऽ भोजन सेहो केने छलहुँ- किन्तु सात्विकता, पवित्रता ककरा कहल जाइत छैक तकर साकार रूप देखलौं- हम सभ।

एक बेर दूरदर्शन मे कवि सम्मेलन लेल बैसल छलहुँ- मधुकान्त जी, विमल जी, शशि जी रहथि संचालन बटुक भाइक छलैक। मधुकान्त जी केँ बहुत बेर मंच सभ पर देखने हएब किन्तु भेंट ओहि दिन भेल छल जखन ओ आ विमल जी हमर रचना सभ लेल बाजऽ लगलाह। विमल जी बजलाह जे हिनकर अपन धारा छन्हि जे सभ सँ अलग छैक-आइ कालिह अहाँ चुप किएक भऽ गेल छी शेफालिका जी? हम चुप तँ नहि छी- लिखते रहैत छी किन्तु अपना सभक सम्पर्क-सेतु मिथिला-मिहिर छल- हम सभ मिहिरक माध्यम सँ एक दोसराक सोझां रहैत छलहुँ- आब ओहेन सशक्त पत्रिकाक सर्वथा अभाव भऽ गेल-मधुकांत जी बजलाह- अहाँक रचना सभ पढ़ि एकटा सिल्की-सिल्की सन अनुभूति होइछ।

यादि, यादि, यादि... चारू दिस यादिक रेत पसरल अछि । एहि तप्त रेतक मध्य क्षीणकाय भटकल नदी सन हमर जिनगी । बहुत किछु लिखबा लेल चाहैत छी मुदा, लिखि नहि सकैत छी आ अपार दर्दक काँट सँ जेना क्षत-विक्षत भऽ उठैत छी । एकटा विद्वान्क उक्ति - 'सभ आदमी यदि अपन जीवनी लिखऽ लागय, तँ संसार मे श्रेष्ठ उपन्यासक कमी नहि रहत। सरिपहुँ, ई उक्ति कतेक साँच अछि ? लिखबाक आकांक्षा हमरा लेल मृग मरीचिका सन अछि ? दूर सँ देखाइत पानि लेल भागैत रहैत छी, दौड़ैत रहैत छी आ एक दिन पिआस सँ दम घुटि जायत । मुदा हम जे चाहैत छी से लिखि नहि सकैत छी- ई दरद जेना हमरा लहुलुहआन केने अछि- जे हम चाहैत छी ओ लिखि नहि पबैत छी .... । आत्मदान मे जे आनन्द अछि ओ अननुभूत अछि ।

कथा कविता किएक लिखल गेल ? एकर प्रेरणा हमर कतऽ सँ भेटल ? की एकर कथानक भोग्य अनुभूतिक यथार्थता छी ? एहि सभ निरर्थक प्रश्नशलाक सँ हमर अन्तस बिद्ध हिरणी जकाँ छटपटाए लगैत अछि? जिनगीक बिखराव मे कथाक एकात्मकता हमरा लेल सतत एकटा मानसिक संतोषक कारण बनि जाइछ । विभिन्न परिवेशक अपन पात्र पात्री मे अपन अनुभूतिक सागर उझलला उपरान्तो लगैत अछि हम कत्तौ किछु चुकि रहल छी । जेना जे लिखऽ चाहलौंह ओ तँ रहिए गेल।

कविता-कथा पढ़बाक आनन्द एक बात थीक मुदा ओकर निर्माण आन बात थीक । मातृत्वक पीड़ा माइए जनैत अछि । ओहि तरहे कविता-सृजनक व्यथा माइए

बुझैत अछि । ओहि पीड़ा मे, ओहि व्यथा मे ओ सर्वथा असगर अछि । अपन काँटक ताज ओकरा स्वयं पहिरए पड़ैत छैक । अपन 'क्रास' ओकरा स्वयं उठवऽ पड़ैत अछि। आ व्यथा वेदन तँ ओकरा लेल वरदान थीक । रक्त, स्वेद आ नोर कणक स्याही सँ ओ अपन सौन्दर्य सृष्टिक निर्माण करैत अछि ।

-हिन्दीक भगैत भावना मे मैथिलीक कोंपल नान्हि नान्हि टा निकलैत साइत बासठ इस्वीक अंक वैदेहीक कोनो होयत जाहिमे पहिल बेर अपना विषयमे अपन नामक संग अपन कवयित्री रूपक परिचय पढ़लौं- तन मोनमे बसन्त आबि गेल- गंध कस्तूरी मोन बिहुँसाय गेल- 'सहरसा जिला निवासिनी, पटना वीमेन्स कालेजक छात्रा श्रीमती शेफालिका वर्मा हिन्दी ओ मैथिली मे समान कुशलता सँ कविता एवं निबन्ध लिखैत छथि। हिनका लेल हिन्दी आ मैथिली दुनू सहोदर बहिन जकाँ अछि..........'

श्री गोपीकृष्ण एम.ए. (मैथिलीक नूतन कवयित्री)

हमरा विश्वास नहि होइत छल ई हम छी- हमही छी- आ तकर बाद तँ हमरा लिखबाक लगन लागि गेल। लिखैत रहलहुँ- मिहिरक पाठकीय मंच तँ वैदेहीक पाठकक पत्र मे अपन आलोचना पढ़ैत रही। अपना कें सुधारैत रही- पटना एलाक बाद पं० गोविन्द झाक पुत्रीवत स्नेह आ उत्साह पाबि हम निरंतर लिखैत रहलहुँ। ओहिना देवकांतझाक उत्साह प्रेरणा हमरा हरदम बाट देखबैत रहल- साहित्यक इजोतमे अनैत रहल- आइ हम सभक ऋणी छी। हमर अन्तरमे कतेक गोटाक कतेक स्नेहिल स्मृति अछि हम लिखऽ लागब तँ अनामदासक पोथा तैयार भऽ जायत जकरा हम सम्हारि नहि पायब आ जकरा पाठक सहि नहि पओता- किन्तु, भऽ सकैत अछि ओहि मे सँ कतेक गोटाक मधुर मधु स्मृति सभ होयत- अधर पर असगरो मे हँसी आपि जाइछ- काश, हम लिखि पबितहुँ ?

ई हरदम हमरा कहैत छलाह-

"तुम तो अच्छे खासे इन्साँ हो फिर क्यों पागल से लगते हो ? हँसते-हँसते रो देते हो रोते-रोते हँस देते हो।

हमर अधर पर काचक खुंडी सन वेदनाक हँसी आबि जाइत छल।

कालिह आइ आ पुन: कालिह एहि तीन शब्द मे हमर सभक समस्त जीवन भरल अछि । नियति एहि तीनूक डोरि सँ हमर सभक जीवन-योजना बुनैत अछि । आ हम कानि कें, हेराय कें एहि मे स्वयं कें पएबाक उपक्रम करैत छी । ओहि दिन जखन हमर आँखि दिने मे एक क्षण लेल लागल छल कि एकटा विचित्र सपना देखने छलौं। एहि सपनाक अर्थ हम ताकैत रहलौं, सोचैत रहलौं मुदा नहि पाबि सकलौं आ सोचि बैसलौं - इएह हमर नियति थीक । किन्तु आइ सरिपों हमर स्थिति एहने अछि-एकटा पानिक जहाज पर हम यात्रा कऽ रहल छी । ढेर यात्री सँ भरल जहाज

– चारू दिस पानि-पानि । जेम्हर दृष्टि जाइत छल अथाह सागरक उत्ताल तरंग। हमरा एकटा विचित्र सन सिहरन, विचित्र सन अनुभूति होइत अछि । हम अपन भावना मे अटकल, भटकल जहाजक एकटा खाली हिस्सा दिस चलि जाइत छी । रेलिंग पर झुकल, झुकल हम सागरक लहरि गीनि रहल छी । हमर केश हवा मे उड़ि रहल अछि। हमर कल्पना सागर आ आकाशक नीलम आलिंगन मे हेरायल अछि । तावत एकटा बड़ पैघ झटका हमरा लगैत अछि आ जहाजक ओ हिस्सा जाहि मे हम ठाढ़ छी जहाज सँ अलग भऽ जाइत अछि । ओहि हिस्सा कँ छोड़ि जहाज आगू बढ़ल जाइत अछि हम अपना कें स्वयं कें जहाजक ओहि टूटल हिस्सा मे देखि रहल छी, विस्मित, विमूढ, चकित भीत सन आ पुनः हम चौंकि ओहि जाइत जहाज कें स्वर दऽ रहल छी – बजा रहल छी, हमर हाथ उठले कें उठल अछि, मुदा ओ जहाज हमरा अनदेखल, अनसुनल केने चलल जा रहल अछि ... हमर आँखि खुलि गेल । साँस जोर जोर सँ चलि रहल छल। सौसे देह यष्टि स्वेद-कण सँ तीतल । हम बदहवास सन कखनो अपन ओछाओन कें देखि रहल छलौं कखनो अपन आँखि मे नचैत स्वयंक असहायता, विवशता जहाजक ओहि भग्न खण्ड मे अगाध जलराशिक मध्य हम विवश ठाढ छलौं ...

राति कें अंगना मे पड़ल पड़ल घण्टो आकाश कें निहारैत रहैत-छलहुँ नील-नील आकाश ! अबरकक खुंडी सन जेना बुकल तारा छिरिआयल । हमर आँखि स्वप्निल भऽ जाइत छल ... हम पैघ होयब ताराक बुकनीक नुआ पहिरि समस्त संसार कें अपन नील आँचरिक छाहरि मे स्वप्न आ कल्पना सँ झिलमिलाय देब ... कखनो हम अनलरकें रूपस्त जगत केर जननी बुझड लगैत दलै। गोधूली बेला मे आकाश मे मेघक कोनो एहेन खण्ड लगैत छल जेना एकटा सीढ़ी बनल अछि स्वर्गक- हमर बाल मोन कल्पनाक सतरंगी ताना-बाना बुनैत रहैत छल – एहि पर केओ पवित्र आत्मा एखन स्वर्ग जाइत होयत जकरा हम नहि देखि सकैत छी आ मोने मोने एकटा अपूर्व निष्ठा आ विश्वास सँ ओहि अदृश्य आत्माक आदर मे नमित भऽ उठैत छलहुँ ।

कहियो-कहियो सोचैत छी जिनगीक सभटा झंझट एकदम नेनमति वाला बात सँ भरल अछि। प्रतिबिम्ब पकड़बाक चेष्टा, अर्थ कें तकबाक प्रयास, निर्दोष इच्छा कामना- ई सभ की थीक ? समस्त संसार मे एकेटा जाति देखैत छी मानवक, एकेटा गुण देखैत छी मानवताक । हमरा लगैत अछि हम समस्त संसारक जननी छी हमर छाती मे दूध उतरि जाइत अछि, काश, कि विश्व बन्धुत्वक निर्दोष भावक प्रचार प्रसार कऽ सकितहुँ ? एकबेर नीरजा रेणुक पत्र आएल छल – 'अहाँक कंथाक लेल हम पागल रहैत छी। ताहि लेल ई हमरा बड़ चिढ़वैत छथि । कुशल अछि जे अहाँ स्त्री छी यदि पुरूष रहितहुँ तँ महाभारत मचि जाइत ....' कतेक काल धरि ओहि अनचिन्हार स्नेहिल वाला लेल हमर हृदय प्रसुप्त वेदनामय स्नेह सँ स्नात रहि गेल ।

जीवन बड़ विचित्र अछि । कतेक बेर हमरा सभ एकर परत मे जाहि रंग कें तकैत छी, नहि भेटैत अछि, मुदा कोनो एहेन रंग निकलि जाइत छैक जे ओकरो सँ बढ़ि सुन्नर होइत छैक – जतवे हम कल्पना लोक मे जीवैत छी वास्तविकता सँ हमर सम्पृक्ति खतम भऽ जाइत छैक... ।

कखनहुँ काल होइत अछि कोनो एकान्त मे बैसि किछु सोची, मुदा कत्तहु एकान्तो तँ नहि अछि। सभ स्थान पर खाली मानव, मानवक समस्या ! मानवक इएह छोट-मोट समस्या राष्ट्रीय रूप धारण कऽ अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष बनि जाइत अछि ।गाँधी कहने छलाह – मानव कँ मारवा सँ काज नहि चलत । मुदा मानव परम्परा कें नष्ट करवाक चाही, प्रत्येक मानव परम्परा संगे जन्म लैत अछि आ परम्पराक संगहि मरैत अछि । मानव परम्परा द्वारा निर्मित अछि ओ ई परम्परा तँ सेहो मानवे द्वारा बनाओल गेल अछि । ज्ञान, विश्वास आ अनुभव ई तीनू मूल रूपे मानव भावनाक उपज थीक। भावना मारल नहि जाइत अछि, बदलल जाइत अछि ।

आ मानवक बनाओल संबंध जाति-पाँति कतेक संकुचित घेरा मे बान्हि के राखि देने अछि स्वयं मानव कें ? ई रिश्ता-नाता, बनाओल संबंध, ई सभ की थीक? की थीक ई जाति-पाँति ? जे हमर हृदयक साझा अछि-सह-संवेद्य अछि से हमर जाति थीक । संबंध तँ आत्मा सँ होइत छैक । प्राण-प्राणक होइत अछि आ एखनहुँ हमरा अस्पताल मे बीताएल किछु दिन आ विदाइक ओ क्षण मोन आबि जाइत अछि तँ नयन अश्रुपूरित भऽ उठैत अछि । के छलीह ओ 'सिस्टर' सभ हमर ? केओ केरल कन्या, केओ ब्राह्मण, केओ मुसलमान, केओ बंगाली आ केओ क्रिश्चियन । मुदा ई हृदयक अपूर्व बन्धन कत्तऽ-कत्तऽ बन्हि जाइत छैक से के जनैत अछि ? मोन होइत अछि लिखी आ सभटा लिखी दी कहियो तँ केओ पढ़त किन्तु, सीमा-कतेक प्रकारक सीमा......

पटनाक जनाना अस्पतालक 'जी' बार्ड मे चौदह नम्बर 'बेड' पर हम पड़ल छलहुँ । उज्जर-उज्जर, ऊँच-ऊँच प्राचीरक बन्धन मे हम निस्सहाय बंदिनी जकाँ उज्जर-उर्ज्जर बिछौन पर, उज्जर-उज्जर नुआ मे चारू दिस उज्जर-उज्जर वस्त्र पहिनने श्वेतांगना- श्यामांगना 'सिस्टर' सभक हलचल कें देखैत –

आप कवयित्री है न ? किम्हर दन सँ एकटा श्वेतांगना ठिठिआइत अएलीह। हम चौंकि उठलहुँ आ ओकर उत्फुल चेहरा देखि हम पुछि बैसलहुँ-'आप कैसे जानती है ?' 'हम कैसे जानता है यह छोड़िये न ! प्लीज मुझ पर एक कविता लिखिये' न प्लीऽऽज – आ ओ हमरा उत्तर देनाइ निरर्थक बुझि अपन मनुहार संग हमर दुनू हाथ पकड़ि मचलि उठलीह । हम ओहि निर्दोष आग्रह कें घुराय नहि सकलहुँ आ कहि देलहुँ अच्छा बाबा, लिख दूँगी- ओ मचलैत केरल कन्या अपन अल्हड़ हँसीक कलनाद छोड़ने चलि गेलीह । हम ओकर हँसीक स्वर मे अपन मोनक कड़ी जोड़ऽऽ

लगलहुँ – काश, कि केकरो कहि देला पर जेँ हमरा पर कविता लिखू, हम लिखि सकितहुँ । हमरा मे ओतेक प्रतिभा नहि अछि जे फलाँ टापिक पर एकटा कविता बनाय दी।

'दीदी की भऽ रहल छैक–किमहर दन सँ हमर छोट भाइ शरद आबि एकटा शारदीय बयारक झोंक सन मोन कँ उल्लसित कऽ देलक ।

'ओह सेन्टू ! आबह–आबह ! तोरा सभक हम कौखन सँ प्रतीक्षा कऽ रहल छी।

कतेक भगवंत हम छी, दस भाइ–बहीन छी, वंश मे सभ सँ ज्येष्ठ हम !! मुदा सभ भाइ–बहिन हमरा अपन हृदय–हार बनाय रखने छथि। हमर चेहरा पर उदासीक कनिको मेघ आवए कि सभक हृदय पर घनघोर कालिमा आवि जाय। 'दीदी के की भऽ गेलैक? किएक उदास अछि? हमर चेहराक उदासी मात्र सँ ओकर सभक उन्तर उदास भऽ जाइत छल। सोचैत हमर मानस–ग्रन्थि जेना शिथिल भऽ गेल । हम आस्ते सँ अपन माथ दीवार पर टेकि छत दिस देखऽ लगलहुँ – चारू कात एकटा श्वेतताक आभास– ओह जेना ई दीवाल ई बेड, ई नुआ सभटा कफन अछि हमर चारू दिस लिपटल–सिपटल। हम जीवते कफन मे लटपटाएल छी श्वेत–श्वेत कफन। हम एहि कफन केँ ओढ़ने असहाय जकाँ साँस लऽ रहल छी मुदा हमर मोन–पंछी निस्सीम नीलाकाश मे असीम उछाह सँग विचरण कऽ रहल अछि, कनिक काल लेल हम अपन सभ बन्धन, सभटा नाता केँ अलग हटाए स्वयं के मुक्तिक एकटा अभिभूतीय क्षण देलहुँ । अन्तरक शिशु–शावक एकटा अशेष प्यास लेने तृप्तिक कामना मे भटकऽ लागल । मोनक विकलता जेना चैनक छाहरि लेल तरसि तरसि उठल । अधर सँ उच्छवासक बरखा जकाँ होमऽ लागल आ हमर अन्तरक कवयित्री सजला बनि कागजक पन्ना पर बरसऽ लागली–झिलमिल छाहरि मे पलपल ओ अयलाह होइ अछि भान !! आ' ई सजल तरल क्षण जेना हमर प्राण केँ झकझोरि केँ राखि देलक... अनचिन्हार स्पर्श भरल सिहरल सिहरल गात....।

भावनाक सजलता हमर शब्द शब्द कें आकुलता सँ अनुप्राणित कऽ देलक आखिर हम कवयित्री छी आ कखनहुँ कखनहुँ अपन लिखल क्षण कें जेना स्वयं भोगऽ चाहैत छी। लगैत अछि ई तरल, स्पन्दित क्षण कनिको काल लेल यदि हमर अपन, नितांत अप्पन बनि जएतियैक।

'अइ, क्या सोता है ? तुमको 'न्यूरोबियन' का इंजेक्शन का टाइम हो गया है ' ओढ़ना घीचैत एकटा केरल–कन्या सिस्टर ठाढ़ छलीह।

ओह, हम चौकि उठलहुँ – अरे, हम तँ अस्पताल मे बेड पर पड़ल छी, हमर 'ऑपरेशनक तीने दिन भेल अछि– हम बिनु किछु बजने बाँहि आगू कऽ देलियैक । ओ सिस्टर इंजेक्शन देमऽ लागल । हम दर्द सँ चिकरि उठलहुँ ओह–आह।

जब तक आदमी को तकलीफ नही मिलता है, तब तक आदमी को सुख नहि मीलता है – केरल कन्या अचम्मा जाइत–जाइत बजलीह । हमर सोच दोसर मोड़ पर घुरि गेल – 'नहि नहि जिनगी सपनाक परिजात सुमन नहि थीक, मुदा 'न्यूरोबियन' सूइया सन 'पेनफुल' कठोर–

'दीदी, की भऽ रहल छैक ? – स्वर सुनतहि हम चौकि उठलहुँ । अन्तर मे आँजुरि भरि सोन जूही फूल उल्लासक छिरिआ गेल । प्रदीप आवि गेल छल– 'अहाँ कॉलेज नहि गेल छी की ? शरद तँ चलि गेल – एकटा अद्भुत उल्लास सँ ओकर चेहरा चमकैत छल– अरे दीदी, आइ कॉलेज नहि गेलहुँ । बड़ काज भऽ गेल आन–आन, अहांक मोन आब कोना अछि । मोन ? – एकटा हल्लुक खनकी संग हम बजलहुँ – एखन हमर मोन की ? लगैत अछि ई बेड हमर 'क्रास' थीक जाहि मे हाथ पएर बान्हि हमरा ईसा जकाँ ठोकि देल गेल अछि –'दीदी, अहाँ ग्रेट छी।

सत्ते, इ तऽ नर्से सभ अछि जे हरदम हमरा हँसवैक प्रयास मे रहैत अछि। नर्स जे कविता बनवऽ कहलक से अहाँ बना लेलहुँ की दीदी ? – बीचे मे बात कटैत प्रदीपक एहि प्रश्न पर हमर आँखिक समक्ष अचम्मा सिस्टरक चेहरा विहुँसि उठल । ओ सदिखन हँसिते रहैत छलीह। ओकर एहि सिंगरहार सन झहरैत हँसि देखि हमर मुँह सँ स्वतः बहराय गेल– 'अहाँक एहि सिंगरहारी हँसीक छाहरि मे हमर सभ दर्द, सभ पीड़ा धोखरि जाइत अछि – 'दीदी, अहाँ रहि रहि कतऽ चलि जाइत छी ? – प्रदीप पुछि बैसल। 'कहाँ कत्तहुँ गेलहुँ ? अहीं लग तँ छी । हिरदू के नहि देखि रहल छी ! हृदय हमर छोट बहीनक देअर छथि । आ हमरा लेल एकटा अपूर्व नेह हुनको अन्तर मे सजल रहैत छैन्हि ! ओ जनैत छथि जे हमरा गीत बड़ प्रिय अछि तेँ ओ सदिखन गबिते रहैत छलाह अस्पतालो मे ! 'हम आबि गेलहुँ' – हम आ प्रदीप अकचका उठलहुँ ? किम्हरदन सँ अलादीनक चिरागी भूत जकाँ हृदय हाजिर भऽ गेल ! 'शैतानक चर्च करू, शैतान हाजिर' प्रदीप विनोदक स्वर मे हिरदू सँ बाजल!

'अरे, अहाँ किछु बाजि दिअऽ अहाँक सात खून माफ !' हिरदूक उत्तर छल।

एहि बीच सेंटू, अंजू सेहो कओलेज सँ आबि गेल छल । हम अपन चारूकात स्नेहक असीम सागर लहराइत देखलहुँ आ अस्पतालक ई नीरस वातावरण प्रेमक सरसता मे डूबऽ लागल । अंजू हमर एक पएर दबबय लागल, हिरदू दोसर पएर । – 'वाह रे वाह – हम की नहि छी – कहि प्रदीप हमर माथ दबबऽ लागल आ सेंटू सकौतुक सभक चेहरा पढ़ऽ लागल ।

'दीदी, अहाँ लेल एकटा फर्स्ट क्लास गीत अनने छी ! – आ हिरदूक कण्ठ स्वर लहरी समस्त वार्ड मे पसरि गेल – 'मेरा दर्द तुम न समझ सके मुझे सख्त इसका मलाल है' – आ गीतक स्वर बड़ स्वाभाविक ढंग सँ उठल, तरंगित भेल, कंपित भेल

आस्ते आस्ते एकटा पीड़ित सिसकैत लय मे डुबि गेल । देखैत छी चारू कात श्वेत परीक झुण्ड यानी जानकी, अचम्मा, हेलेन, बुलबुल, रेवा- कतेको सिस्टर ठाढ़ - 'हाय, कितना अच्छा गाता है । ' हिरदू लजा गेलाह।

'आप लोग अभी फ्री हैं क्या ? - हम एतेक शांति सँ गीत सुनैत देखि पुछलहुँ "अरे इस हाउस-सर्जन स्ट्राइक में भी हम लोग फ्री नहीं रहेंगे तो क्या ? अगर अभी स्ट्राइक नहीं रहता तो क्या कभी आपलो 'जी' वार्ड को घर बना सकता था? यहाँ तो नीचे ऊपर दोनो पेशेन्ट से भरा रहता है? - एकटा सिस्टर बाजि उठलीह ! सत्ते, 'जी' नंबर जेनरल वार्ड मे मात्र दुइ-तीन पेशेन्ट छलहुँ । हमरा लग सदिखन 15-20 आदमी रहैत छल ! कनिको दर्द होइत छल या कुहरैत छलौं तँ सभ चिन्तित भऽ उठैत छल। जे चिन्तित ने होथि यानी जिनका सरिपहुँ हमर स्वास्थ्य सँ कोनो प्रयोजन नहि छल ओहो हाल पुछि पुछि बेहाल कऽ दैत छलाह ।

हमर ऑपरेशन सँ एक दिन पहिने पटना कालेज मे कवि सम्मेलन छल जकरा मे हम आमंत्रित छलहुँ। किन्तु हुनको सभकेँ पता लागि गेलैक जे हमर आपरेशन होयत, हम अस्पताल मे भरती छी। तखन कतेक भीड़ लागि गेल छल आपरेशन काल।

एहि अवस्था मे अस्पताल मे पड़ल देखि हम अपना केँ विश्वक सभ सँ पैघ भागवंत बुझऽ लगलहुँ एतेक प्रेम, एतेक स्नेहक बरखा मे भीजैत, एखन हम मृत्युक चिरनिन्द्रा मे सुति जायब तँ हमर मृत्यु कतेक भागवंत भए जायत ! सभटा आत्मीय, स्वजन-परिजन, कतेको साहित्यकार कतेको छात्र-छात्रा, कतेको हमर कथा-कविताक पाठक-पाठिका, अपन स्नेहाकर्षण आ शुभाशंसा सँ हमरा मृत्युक मुँह सँ घीचि एहि संसार मे लए अनलाह ।

हमर बहीन सभ मधु चयनी इरा सपना शंकर बाबू पाहुन आ वर्माजी अपने खपाइ लडकऽ।

पहुँचि गेलाह ई देखतहि बाजि उठलाह- बाप रे, एहि ठाम ततेक मोन लगवैवाला बैसल अछि जे हिनका की भूख लगतन्हि ?

'अरे दीदी केँ ई खेनाय-पीनाय सँ की हेतन्हि? प्रदीप बाजि उठल - हुनका लेल तँ हम 'मेन्टल-फूड' अनने छीअन्हि । कविता - बस दीदीक पेट एतबे सँ भरि जाइत अछि । आ ई व्यंग करय लगलाह । हमरो अधर पर मुस्कीक एकटा खुंडी आबि बैसि रहल ।

एहि सभ सुख-दुख, हँसी ठठ्ठा, कविता-कथा, सिसकी, कुहरनक मध्य समयक सागर मे ज्वार-भाटा आबैत रहल, जाइत रहल । कोनो दिव्य अनुभव, सन दिनँ आवैत छल, कोनो भावना सन संध्या घनीभूत होइत छल आ कोनो भ्रमक छाहरि

सन यामिनीक अन्हार गहराइत रहल । एतेक लोकक प्रेम, शुभाशंसा, सिस्टर सभक सेवा, डाक्टर सभक सहानुभूतिक मध्य हम शंखघोष सन प्रसृत होइत रहलहुँ । लगैत छल जेना आकास सँ, अन्तरिक्ष सँ, वार्डक प्राचीर सँ प्रकाश जकाँ जीवन सर्वत्र झड़ि रहल अछि ।

आइ हम असंभावित रूपेँ असगर छलहुँ, नितान्त असगर। हम एकान्त चुनैत नहि छी मुदा स्वीकारैत छी एहि मे आ अपन परिस्थिति सम्प्रेष्य बनाबै मे कोनो विरोध नहि अछि । एकान्त केँ हम वरीयता नहि देने छी, मुदा लेखिका होयवाक कारणे दोसरा तक पहुँची, ओकर अन्तर मे जाय, ओकरा अपन अन्तर मे आबय देनाइ - हम अनिवार्य बुझैत छी । मुदा असगर तँ हम कहियो रहिए नहि सकैत छी । स्मृति मे आयल डा० निर्मल झा हमर भाइक प्रश्न - 'दीदी, एतेक सुख वैभव मे रहितो तँ 'ट्रेजडी' कियेक लिखैत छहीक?' एकर हम की उत्तर देतीयैक ? हमरा समक्ष एकटा कविक किछु पंक्ति आबि जाइत अछि -

"दी ह्यूमैन हार्ट हैज हिड्डन ट्रेजर्स, इन सीक्रेट केप्ट, इन सायलेन्स सील्ड- दी थउट्स, दी होप्स, दी ड्रीम्स, दी प्लेजर हूवज चार्म्स वेयर ब्रोकेन, इफ रीभील्ड !"

आ कृष्ण कुमार यानी, हमर डाक्टर भाइ बाजि उठल छल - अरे दीदी ? ओ रास्ता चढ़ल अछि ऊपर जाय लेल ! रहैत-रहैत कोन पथ पर दिगभ्रमित जकाँ भटकि जाइत छैक से के बुझत ? आ हमर हँसी छुटि गेल। की 'ट्रेजेडी' लिखवाक अर्थ ऊपरक रास्ता थीक ? कृष्ण कुमारक ओ कविता हमरा मोन पड़ि आएल । 'ऑपरेशन थियेटर' जेवाक एक क्षण पूर्व ओ एकटा कागज देने छल - 'दीदी जखन तोरा बेहोस करऽ लगतौक तकर पूर्व ई कागज पढ़ि लीहें ! " (ई हमर चारिम मेजर ऑपरेशन छल आ जीवन-मृत्युक प्रश्न छल) हम ऑपरेशन टेबुल पर सूतल कंपित हाथ सँ ओहि कागज केँ पढ़लहुँ । एकटा छोट सन कविता छल -

...14 न० बेड पर पड़ी है कविताओं की जननी । कविता को विश्वास है। पूर्ण विश्वास है खींच लायेगी जननी को वह इस भू पर, इस धरातल पर। उसी आत्म विश्वास के साथ !

हमर आँखि सँ दहो-बहो नोर बहए लागल छल ! हम बिसरि गेलौं जे हम ऑपरेशन टेबुल पर पड़ल छी आ चारू दिस सँ डाक्टर नर्स सभ विस्मित चकित हमर क्रिया-कलाप देखि रहल अछि! हमर चारू दिस अशेष स्नेह सम्मोहिनी पड़ल छल आ ओहि अपूर्व सम्मोहन मे पड़ि कखन बेहोश भेलहुँ किछु सुधि नहि छल ।

'सदिखन कत्तौ भटकल छी, कत्तौ हेरायल रहैत छी राज ! कम सँ कम अस्पतालो मे तँ ई सभ छोड़ू । - हम चौंकि उठलहुँ । हिनकर प्रेमिल दृष्टि हमर चेहरा

पर खसल छल ! हमर अन्तर मे जेना मौलश्री खिलि-खिलि उठल - वस्तुतः हम साहित्यांगनक देहरीयो पर आइ ठाढ़ छी तँ मात्र हिनके कारण, हिनके प्रेरणा सँ!!

'सुनू काल्हि 31 दिसम्बर छैक । हम काल्हि वासा पर जाए लेल चाहैत छी। हम एक तारीख कें अस्पताल मे कोनो हाल मे नहि रहब । ओना तँ हम '73 सँ '74 मात्र अंक बढ़ा लेवाकें नवीन वर्ष नहि बुझैत छी। दिन वएह, राति वएह सभ किछु तँ ओहिना बीतै छैक, मुदा लोक कहैत छैक नव वर्ष! हम एक तारीख कें घर मे रहए लेल चाहैत छी ! हमरा एहि कफन सँ निकालि लियऽ ... 'भावावेश मे हुनकर हाथ पकड़ि हमर स्वर मचलि गेल-हल्कुक-हल्लुक हाथ माथ पर फेरैत आशीर्वादक निर्झरणी मे डूबल स्वरें बजलाह - एतेक सजल नहि बनू- राज ! ई कफन नहि छी । एहि ठाम स्वर्गक पावनता अछि । देवताक स्थापना अछि जे अहाँ कें मृत्युक मुँह सँ घुराय जीवनक वरदान दऽ देलक।'

'जीवनक वरदान? हम मौन सोचऽ लगलहुँ - जीवनो की वरदान होइत छैक? ई हरदम हमर 'ओभर सेंटीमेंटस्' कें देखि कहैत रहैत छथि - 'दुनिया मे रहबाक अछि की नहि ? आ हम आश्चर्यित भऽ उठैत छी - 'की सत्ते हम दुनिया मे रहैत छी ? दुनिया मे जीबैत छी ? किएक तँ जखन हम जीबैत छी मात्र अपन दुनिया मे ! गहीर भऽ कऽ देखैत छी तँ मानैत छी ओ दुनिया हम स्वयं बनवैत छी, स्वयं सजबैत छी । कखनो पापा पर तामस उठैत अछि। कोन नाम राखि देलन्हि - शेफाली ? रात्रिक शीतलता मे खिलि खिलि उठैत छी आ सूर्यक प्रथम रश्मिक तापक आशंके सँ काँपि-काँपि धरती पर खसि पड़ैत छी । शेफालीक मस्त सुरभि राति भरि मानव मोन कें तोष दैत रहैत अछि नींद मे डूबल मानव - मोने एकटा अलस तँद्रा भरैत रहैत अछि मुदा जखन मानव- ओहि तंद्रा सँ चेतना मे आबि जाइत अछि तँ सिसकैत शेफाली अपना सभटा सुरभिक संग अछोरक अशेष गहीराय मे निमज्जित भऽ जाइत अछि ! घरमे हम रजनी छी, बाहर शेफाली । शेफाली जे जीविते अछि रजनी मे । जीवनक यथार्थता सँ पलायन करऽवाली, रात्रिक कुज्झटिका मे साँस लेबय वाली । - मुदा नहि नहि हम ईहो सोचैत छी जे शेफालीक झहरैत श्वेतरागी मुकुल सँ सुन्दर कोनो चीज नहि। आस्ते आस्ते लयात्मक गति सँ झहरनाय मानू ठारि सँ विलग होयबाक कल्पने ओकरा मे वेदनाक गान भरि दैत अछि ? - आ मलयक संग एक तान, एक प्राण भऽ धरती पर खसि जाइत अछि । समस्त सृष्टि मे सौन्दर्यक रहस्य एहि सँ बेसी की भऽ सकैत अछि ? अपन विनष्टियो मे समष्टि सुखक कामना बुझि हँसैत हँसैत भू-लुंठित भेनाइ - ई समर्पण कतेक दुर्भेद्य अछि, कतेक अगम- कतेक अथाह -

आ क्षण भरि मे सौंसे वार्ड मे पसरि गेल, हल्ला भऽ गेल छल 14 नं. कल घर चला जायगा। सभटा सिस्टर चारू दिस सँ घेरि लेलक -आप कल चला जायगा'

हम अपन मूक दृष्टि सभक चेहरा पर पसारि देलहुँ । एकटा वेदना, एकटा पीड़ा सभक चेहरा कें झापने छल। हम किछु नहि बजलहुँ । हमर नयन अश्रुपुरित भऽ गेल-अरे आप हर समय उतनी हँसती रहती थी, आपको रोना भी आता है क्या-हमरा मोन पड़ि आयल जे एक दिन हम एतेक हँसैत छलहुँ जे पेट मे दर्द भऽ गेल। टाँका सभ दुखाय लागल । डाक्टर बाजल एतेक हँसनाइ ठीक नहि। टाँका टुटि जायत। तखन ई बिगड़ि कें सभ कें ओहि ठाम सँ लऽ गेलाह, मात्र अखिल कें हमरा लग छोड़ि गेलाह। हमहूँ सोचलौंह जे अखिल सीरीयस रहैत अछि एकरा लग हम की हँसब मुदा आश्चर्य छल हम आ अखिल दुनू भाय-बहिन जे बातें बात पर ठहाका लगेनाइ शुरू केलहुँ तँ अन्तक कोनो आसार नञि देखायल । कनिञें हँसी कि अखिल डॉटय लागय-'दीदी तोरा की भऽ गेलहुँ अछि - आ लगे ठहाका जे ई की भेल '-सत्ते ओहि दिनक हँसी नञि जानि कथीक नशा छल इथरक, वार्ड के आ कि नर्स सभकेर पता नञि।

ओ राति नञि तँ कोनो सिस्टर केर आँखि मे नींद छल नञि हमर आँखि मे ! सभक मोनमे एके अनुभूति छल काल्हि के कतऽ रहत? ओहि राति माँ नञि आयल छलीह । जाधरि हम अस्पताल मे रहलहुँ माँ हमरे लग भरि राति रहैत छल। अपन स्नेहमयी माँ कें देखि हमर मोनमे असीम करुणा उमड़ैत छल जे भरि दिन थाकि -हारि बासा पर सँ आबि राति हमरा लग अस्पताल मे बेडपर बीतैवत छल। मुदा ई अन्तिम राति तँ असगर छलहुँ । पापा पटना सँ बाहर चलि गेल छलाह डेरा पर केओ नहि छल। हम स्वयं मना कऽ देलहु ! भरि राति हम नर्स सभ लेल कविता बनवैत रहलहुँ ....अहाँक सेवा मे ग्रहण नहि लागि जाय। स्नेहक धवल ज्योत्स्ना मैल नहि भऽ जाय।

आओर एहि रूप मे लेपटल-सेपटल भोर आबि गेल । सोनजूहीतारा सभ उषाक आँचरि मे नुकाय गेल । आकाश एकटा मृगशावकक निश्छल नयन सन सरल आ पावन लागि रहल छल। शारदीय बयार मोन-प्राण कें पुलकित कऽ देने छल। हम बेड पर पड़ल -पड़ल खिड़कि दिस सँ आकाशक एकटा खुन्डी के अरूणिम स्वर्णिम किरिनक आलिंगन-पाश मे देखलहुँ । अस्पतालक एहि अन्तिम उषा के हम अपन अशेष स्नेह दऽ नमित भऽ उठलौं ।

सभ सिस्टर सभ आबि घेरि लेलक - आप चला जायगा- आपके ऐसा पेशेन्ट हमको आज तक नहीं मिला था- हम लोग आपका कुछ सेवा भी नहीं किया पर आप से हमारा मन ऐसा बँध गया-कतेको बाझल स्वर कान मे अबि टकराय गेल। आपने कविता लिखा -पनम्मा पुछि बैसलीह। हम भावाविभूत भऽ कविता कें स्टांफ रूममे टाँगि देलौं- आपकी याद हर समय हम सबों के पास रहेगी-हम सबको कविता दिखा कहेंगे इतना इतना अच्छा पेशेन्ट हम सबको आज तक नहीं मिला।

'जीजाजीसे कहें एक गाना सुना दें '-सारम्माक आग्रह-ओकर सभक

अन्तिम आग्रह ओहि विदाइक क्षण मे केओ टारि नञि सकल। ई गीत गओलैन्हि –तुझें क्या सुनाऊँ ऐ दिलरूबा.....

15-20 सिस्टर सभक मध्य हिनकर स्वर-लहरी जीवंत छल। सभक चेहरा पर एकटा अद्‌भुद स्नेह नेने, अपूर्व प्रेम नेने !

सेंटू, प्रदीप, माँ डा० अम्बिका सभ केओ कार लऽ कें हमर विदागरी करयबा लेल पहुँचि गेल छल एहेन भावपूर्ण ओ क्षण छल, लगैत छल एकटा बेटी अपन नैहर सँ विदा भऽ रहल हो! एकाएक अचम्मा बाजि उठलीह – 'बहीन, हम सब का मन आपको जाने देने का नहीं कर रहा है । पर यह ऐसा जगह है जो तुम्हें रहने भी नहीं कह सकता ! और जाने भी नहीं- हाँ हम सबको भूलना नहीं।

हमर भावुक अन्तर मे एकटा कचोट सन उठल, हमर नोर आँखिक सीमा सँ बाहर आबि हिचकी बनि गेल । सभ सिस्टर कानऽ लागल- 'जीजा जी सहरसा जाने के पहले दीदी से एक बार हमारी भेंट करा देना' ! चारू कात सँ सिस्टर सभ हमरा घेरि कार पर बैसाय देलक । – 'भुलाना नहीं हम सहरसा भी आयेंगे' – कतेको स्वर गूँजि गेल । एक दिस मानवताक धवल आकास आ दोसर दिस पातालक अंधकार एखनो जेना कान मे ओ स्वर गुंजि रहल अछि आ आँखिक आगू ओ चित्र। सभ चलचित्र जकाँ नचैत रहल। की ई आपरेशन हमर सफल भऽ सकल? 74 ई० का फरवरी मार्च मे सहरसा आबि गेलहुँ। जेपी आन्दोलन मे कुदि गेलहुँ। आपरेशनक टांका टुटि टुटि खसैत रहल।

हँसी आबि जाइत अछि– मोन पड़ि जाइत अछि सात-आठ बरीसक सहरसा आँखि मे किछु शिखी कण जकाँ प्रज्वलित भऽ उठैत अछि। प्रत्येक शहरक अपन इतिहास होइत छैक, एकटा सुगन्धि एकटा सौरभ! भारती, मंडन, चन्दा झा, छेदी झा आदिक धरतीक कण-कणमे साहित्य, धर्म, कला विद्यमान! राजकमल प्रख्यात साहित्यकार अपन प्रखर आ नग्न लेखनी सँ मैथिली साहित्यकें चौकाय देलनि। ई सहरसा जहिना राजनीतिक गढ़ रहल ओहिना साहित्यकारक उद्‌भव स्थल रहल। प्रबोध नारायण सिंह सँ लऽ उदय नारायण सिंह नचिकेताक परिवार साहित्यक पावनी गंगा प्रवाहित कयलनि- ब्रजेश्वर मलिकक 'कोसी गीत', ललितेश्वर मलिकक 'कोसी' एहि नदीक प्रलयंकारिता पर साहित्यिक बाँध बान्हि अपन भुजपाशमे समेटि लेलक! सरिपों सहरसाक साँसमे विद्वता आ कण-कणमे साहित्य सहरसा! तखन तँ आचार्य योगेश्वर अपन 'इत्यादि' मे लिखने छथिः-

कमलक पराग सँ माँतल भ्रमरक चरण-स्पर्श सँ उठैत जल-तरंगक ध्वनि कें राग-रागिनी मे आबद्ध करैत श्री मायानन्द जी एवं श्रीमती शेफालिका जी, पेटक ज्वाला सँ झुलसैत श्रमिक मे शक्ति तकैत श्री कृष्ण चन्द्र 'मस्ताना जी', मधुमाँछीक खोता मे मनुक्खक मनकें जोहैत श्री जयानन्द जी, टुटल टुकड़ी सभकें जोड़ि पूर्ण

चान बनाए ओहि चान कें चूमबाक हेतु अपन आँखि सँ शीशाक देवाल तोड़बामे व्यस्त महाप्रकाश जी, कीट्स, इलियट, शेक्सपीयरक द्वारा चुराओल भारतीय चरित्रकें स्वदेश लौटेवा मे व्यथित श्री ललितेश जी 'उमस'क लघु परिधि मे राजकमलक विशाल आत्माकें बान्हैत श्री महेन्द्र जी तथा हवाक झोंक सँ झुकैत उठैत ताढ़ वृक्षक द्वारा अपन प्रेमिका कें मौन निमन्त्रण दैत श्री अनिष शेष, सभ हमरा एबनोरमल लगैत छथि आ तखन हमर इच्छा होइत अछि जे एहि सभ एबनॉरमल लोककें एकटा रूम मे बन्द कए दियैक, वर्ष मे एक वा दुई बेर हिनका सभकें सहरसाक सड़क पर निकलए दिअन्हि जाहि सँ सहरसाक धरती नॉरमल रहइक।

विचित्र आदति छल हिनक। केओ पुछैत छल फलाँ काज लेल बैलेंस अछि बैंकमे? ई तुरत जवाब दैत छलाह हमरा छह टा बैं क अछि जाहि मे हम अपन सभटा पूजी जमा कऽ रहल छी।

केओ पुछैत छल घर कहिया बनायब तँ फेर ई छुटिते बजैत छलाह छह-छह टा घर बना रहल छी। देखी कहिया धरि तैयार भऽ जायत- तरुणा तुरत उत्तर दैत छलीह ओहि घरमे हम किरमिची बनब, भावना दीदी डिस्टेंपर, बंदना दीदी मोजाइक, सुपर्णा दीदी फर्नीचर आ सजेबाक समान, आ राजीव भैया, संजीव भैया एक तला दुइ तल्ला। ई बच्चा सभमे एकटा आदत दऽ देने छलाह जेना घर बनेबाक अछि तँ एकटा पैसा जमा करऽ वला गुल्लक राखि देने छलाह ओहि पर लिखि देने छलाह ''मकान फंड''। सभ बच्चा ओहि मे अपन-अपन दस पैसा, एक टाका जे होइत छल जमा कऽ दैत छल? ओहि फंड सँ होइत किछुनहि छल किन्तु, बच्चा सभ मे उद्देश्यक पूर्त्ति लेल उत्साह भरि जाइत छल संगे कोनो वस्तुक बचत व्यवस्थाक (मैनेजमेंट) न्यों बच्चा सभक दिमाग मे पड़ि जायत छल। एहिना कहियो वर्मा जी टी वी फंड तँ कहियो 'कार फंडक' जोगार मे निरंतर बच्चा सभकें लगेने रहैत छलाह- कोनो प्रकारक काज ई बड़ वैज्ञानिक ढंगसँ करैत छलाह।

जिनीक पन्ना सभ उनटाबऽ लगैत छी तँ कखनो ह्रदयमे टीस तँ कखनो खुशीक लहरि, बीतल खुशीक पल हमरा मे एकटा नवीनता भरि दैत अछि। जेना हम एकदम टटका भऽ जाइत छी! लगैत अछि सभटा कली एखनहि चटकि फूल बनल होऽ। मौसमक स्वभाव बदलि गेल हो, उदासीक तितली पंख पसारि ओस धुआयल पुष्प पर नाचय लागल हो। पुष्प गंधक सुवास मधुर वातास मे घुल तन मोन मे स्वर्गिक पुलक भरि दैत छल- किएक उदास छी अहाँ ? खुशीक क्षण अहाँक सामने पसरल अछि, झुमि जाउ।

घर सँ पहिने कार कीनि रहल छलौ राजीव दिल्ली सँ मना केलक-कार तँ हम सभ कहियो लऽ सकैत छी मुदा हम सभ पहिने घरक सोची-बच्चा सभक छोट-छोट उमंग, तँ कहियो आत्माक स्वर प्रेरणा बनल।

किस्त-किस्त मे पैसा दऽ किस्त-किस्त मे घर बनल 'शेफालिका'। हम सभ अपन घर मे आबिं गेलौं। घर एकटा मंदिर होइत अछि, हमर बाल-बच्चा सभ अपन मेहनत लगनसँ एहि घर कें एकटा व्यक्तित्व दऽ देलक आ लोकक दृष्टि मे सरस्वतीक मंदिर बनि गेल ? एहि ठाम सरस्वती वास करऽ लगलीह। संबंधमे प्रगाढ़ता आबय लागल। घरक कोन-कोनसँ सरस्वती आ दुर्गाक अराधनाक मंत्र प्रतिध्वनित होमऽ लागल। प्रत्येक दिसा सँ मधुर रागिनी बजैत छल जखन कि यामिनीक अन्तिम प्रहरमे सरगमक सुमधुर ध्वनि हारमोनियासँ निःसृत होइत छल । ई घर ओहि लोक लेल बनल जकर हृदय मे विद्याक वास छल, सत्य, शिव आ सुन्दरक भाव छल ?

कानून आ कविताक अद्‌भुद संगम स्थल ई घर बनल जाहिमे बच्चा सभ अपन साधनाक रंग भरि देलक।

एहि घरक न्यो 20 मार्च फाल्गुन शुक्ल एकादशी 1978मे पड़ल छल। पक्का मकान हमरा सभकें नहि धारबाक कारण मैनेजर मामा पूजा पर वैसल छलाह आ बाबूजी स्वयं ठाढ़ भऽ पूजा करवौने छलाह। हुनकर आशीर्वाद सँ एहि मकानक पूर्णता लेल सदिखन सोचैत छलौं कहिया काज शुरू होयत, कहिया बनत किन्तु, हम कहियो ऊँच उड़ान भरवा लेल नहि सोचलौं, सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़बाक धैर्य हमरामे छल।

1981क नवम्बर मे, चित्रगुप्त पूजाक दिन मात्र दुइ कोठरी बना हम सभ अपन घर मे चलि आयल छलौं। चारुकात पानि जमा, साओनक गृहवास मे, तखन गंगजलाक सभसँ ऊँच स्थान पर हमर सभक घर छल।

27 जनवरी '83 मे आफिस कोठरीक ढलैया भेल। हम सभ आस्ते आस्ते कछुआक चालिसँ अपन लक्ष्य दिसि बढ़ैत छलौं। गिट्टीमे उगल घास फूसि चुनइत हमर आंगुर सभ छिला गेल छल जखन कि विष्णु वेदोजी दुनू गोटे हमरा संग घास चुनि रहल छलाह। हम अपन आंगुर हिनका देखने छलहुँ त ई बजलाह ई आंगुर संघर्षक संघर्षक पाथर सँ टकरेबा लेल नहि कविता लिखबा लेल बनल अछि रन्नो, नहि कि गिट्टी चुनबा लेल। हिनकर बात सुनि वेदोजी, विष्णु सभ हँसि देने छलाह- एकदम ठीक बजैत छथि।

आब जखन एहि 'शेफालिका' कें देखैत छी तँ ममत्व सँ भरि जाइत छी जेना कोनो माय अपन संतान कें देखैत अछि। वास्तव मे एहि घरक लेल हम अपन शोणित डाहने छलौं। कतेक पीड़ा दंश सहने छलौं। समयक सागरमे ज्वार-भाटा अबैत रहल जाइत रहल। सभ बच्चा अपन-अपन जगह पर चलि गेल छल। संघर्षों अबैत रहल- बच्चा सभक नेनपनाक अबोध क्षण, किछु करवाक स्वप्न, अपन अस्तित्वकें अक्षुण्ण राखबाक प्रयास कतेक भावकें नुकौन अछि एहि घरक देवार सभ।

कत्तौ सभ भाई बहीनीक खिलखिल हँसी, कत्तौ छाहरियो मे रौद तँ रौद मे छाहरि- कत्तौ राजीवक सरदार जीक चुटुक्का, कत्तौ भावनाक शायरी 'बकरी चढ़ी पहाड़ पर, कत्तौ बंदनाक हँसी-कने हँसियौ ने भौजी, कत्तौ सुपर्णाक नृत्य-वाशिंग पाउडर निरमा, कत्तौ संजीवक अमिताभक डायलाग तँ कत्तौ तरुणाक खिलखिल गुड्डू भैया, पापा आइ देर सँ अओताह। मम्मी कें खुब तंग करब अपना सभ.....मोतीक गीत 'भोला अहाँक महिमा बच्चे सँ हम जनैत छी तँ नेहाक जनम, छठिहारक खुशी सँ दीप्त ई मकान अपना मे कतेक किछु समेटने अछि-- मंड़वा सँ लऽ कऽ कोहबरक लाल पीअर रंगक अपूर्व छटा ढोलपीपहीक स्वरमे बरिआतीक हलचल, पाजेबक रूनझुनमे वधूक प्रवेशः, अपन अपन जन्मदिन पर लगाओल गगनचुम्बी नारियल वृक्षसभक शाखा लहराइत आमंत्रण दैत- हे बटोही सभ! ई घर प्रीत प्रेमसँ रंगल अछि-दुइ क्षण एहिठाम बैसि सुस्ता लियऽ तखन आगू बढ़ब? शर्त्त इएह अछि जे अहाँ सभक हृदय मे सेहो प्यार आ विश्वासक सागर भरल हो नहि कि तर्क-वितर्क, संशय असंशयक तामसिक भाव।

शाहजहाँ-मुमताजक मृत्युक उपरान्त ताजमहल बनौने छल किन्तु ई शाहजहाँ मुमताजक जीते जी 'शेफालिका' बना रहल छलाह। अपन हाथ सँ ओहि नामक डरीर खीचलनि, अपन हाथ सँ ओहि मे प्रेमक रंग भरलनि। जे ओहि बाटे जायत छल ठाढ़ भऽ-हे देखू पीपी साहबकें। सीढ़ी पर चढ़ि मजदूर जकाँ की कऽ रहल छथि ? छोट-मोट भीड़ जमा भऽ जाइत छल। किन्तु, एहि सभ सँ अभिज्ञ ओ शाहजहाँ तन्मय भऽ अपन कार्य मे लीन रहैत छलाह। अपन लगन मे एकाग्र - हम लाज सँ कोठरीमे भागि जाइत छलौं- मजदूर जकाँ बांसक सीढ़ी पर लटकल पागल सन साँचे पागले तँ छलाह- तखन तँ हमर कोमल भावना कें फूल जकाँ सहेजिकें रखने छलाह। खाली कल्पनाक दुनिया मे विचरण करबा लेल छोड़ि देलनि- जाहिसँ हम अपन लेखन सँ साहित्य संसारक महासागर मे किछु रेत, किछु बून्न समर्पित कऽ सकी।

हरदम बजैत छलाह-एहि मकान के नीक जकाँ राखब। ई अहाँक सांच अर्थमे बेटा छी। आन बेटा तँ अपन परिवारक खर्च उठाओत तखन अहाँ पर। किन्तु ई मकान अपन कमायल सभटा अहींके देत.....एहि सभ बात सँ हम आर यथार्थक दुनिया सँ दूर भऽ जाइत छलहु। कहियो यथार्थक पाथर सँ चोट लागि जाइत छल तँ कहियो संबंधक कीचड़मे धंसि जाइत छलौं- सरिपों गृहस्थीक संसारमे हम आइधरि फिट नहि रहलौं। सभटा कर्त्तव्य निभाबइतो, हमर बच्चा सभ हमरा तंग करइत छल तँ हम कानऽ लागैत छलौं- हुनका सभकें दमसाबइक बदला अपन माथ देवार मे फोड़ऽ लगैत छलौं।

खानदान मे सभ सँ पैघ पुतौह रहितो- बड़का बेटाक पत्नी-ओहि ससुर विहीन भरल पुरल घरमे 'बड़का मालिक बड़की मलकाइन' सेहो अधिकार अपन

नहि ग्रहण कऽ सकलौं- ओ सभ प्यारक भाषा नहि बुझैत छलनि- हम सभ व्यवहारिकता केर शब्द नहि जनैत रही। मोन पड़ि जाइत छल विनोद बिहारी, श्याम विहारीक प्रश्न अहाँ अपन गृहस्थी मे सफल छी कि असफल–

'ययाति' मे पढ़ने छलौं- 'नहुष के ये पुत्र कभी सुखी नहीं रहेगे सकेंगे।' कखनो-कखनो हमरो लगैत अछि जे केओ हमरपापाकें श्राप देने होयत– मलिक जीक ई ज्येष्ठ संतान, ई पुत्री कहियो सुखी नहि रहतीह– द्विरागमन कऽ जखन डुमरा आयल छलौं तँ झंझारपुर सँ हमर सभक गुरु गोसाँय, हमरा, पहिल पुतौह कें आशीर्वाद देवा लेल गाम आयल छलए– हमर घोघ उनटाय हमर मुँह देखाओल गेल, हमर हाथक रेख देखलनि– 'ई कनिया सबहक करतीह, किन्तु हिनका केओ यश नहि देतै।हमर हृदयमे ई बात बड़ गहीर भऽ घुसि गेल छल–।

भावना आ प्रकाश जी हमरा अपना लग बजा लेलन्हि पाँडिचेरी–कारेकल जखन तखन हमरा किछु चेत आयल छल–डेढ़ बरीस तक हम पटना दिल्ली भटकैत रहलौं– सभ ठाम हिनके कार्यकलापक चित्र छल! डा० राजीव रंजन, संजीव कें चुपचाप बजाय कहने छल- दीदीकें 'डिप्रेशन सँ निकालनाइ आवश्यक छैक हमरा सभकें', यदि एक बेर डिप्रेशन मे चलि जेतीह तँ फेर किछु नइं होयत। श्वेता नवीन जी चेन्नई मिलवा लेल एल- बड़ नीक लागल छल- नवीन श्वेतासँ हरदम कहैत छलाह, तुम्हारे परिवारमे मुझे सबसे अच्छी बुआ लगती है। श्वेता हँसि-हँसि हमरा कहैत छलीह–पता नहि किएक एहेन मानसिकता हमर छल जे बेटी ओतऽ गेनाइ नीक नहि लगैत छल? हिनकर मोन मे ई बात नहि अबैत छल। किन्तु हमर? विश्लेषण करैत छी तँ देखैत छी ओहि समयक नियम परंपरा प्राचीन मानसिकता एहि सभक कारण लगैत छल? हमर नैहर एतेक 'एडवान्स' रहितो मानैत छल जे बेटी जतेक सासुर बसय ओतेक नीक। नानी हमरा सीथ देखैत छलीह- मुन्नीक सासुर बड़ दूर हेतैक, नम्हर सीथ फारल छैक! यानी बेटीक सुख-दुख सँ माय-बापकें मतलब नहि राखबाक चाही। अहाँ ओकरा संस्कार देने छी तँ ओ विपरीत परिस्थितियो मे कनैत बजैत अपन घर परिवार कें सम्हारि लेत। यदि बीच-बीच मे नैहरबला पुछैत रहत बेटीसँ आ बेटी अज्ञानी हेतीह छोट-छोट बात माय बापसँ कहैत रहता स्वभावत: माय-बाप अपन सलाहो बेटीकें दैथ- एहिसँ बेटी अपन परिवार बसेनाय छोड़ि बेर-बेर माता-पिताक सलाह लऽ घर चलेतीह। आ तखन बेटी नहि तँ नैहरक होयत छैक नहि तँ सासुरक। अपन घर गृहस्थी बसवैत बसवैत आधा जिनगी बीति जाइत अछि ओकर। बाल्यकालेसँ सुनैत छलौं ई सभ बात। वियाह भेल तँ सासुरो मे इएह विचारधारा देखलौं। तँ हम सभ चाहितो कहियो सूकू यानी भावनाक घर गृहस्थी देखऽ नहि गेलौं। छियासीमे ओकर वियाह केलौं छियानवे मे यानी दस बरीसक बाद बम्बइ गेल छलौं। हिनकर कहब छल हमर बच्चे सभ हमर चारु धाम थीक। राजीव-तरुणा दिल्ली एक

धाम, भावना बंबई एक धाम, बंदना इंगलैंड एक धाम, सुपर्णा मास्को एकधाम, संजीव अहमदाबाद एक धाम। सभ धाम तँ हम जायब, खाली बद्री केदार यानी इंगलैंड, मास्को हम शारीरिक अस्वस्थताक कारण नहि जा पायब। किन्तु वर्मा जी इंगलैंडो गेलाह किन्तु, मास्को हिनका लेल केदार गंगोत्री भऽ गेल।

तीन चारि दिन बंबइ मे रुकि हम सभ द्वारका चलि गेल छलौं। ओहि तीन चारि दिन मे बेटीक गृहस्थीक पहिल अनुभव बड़ रोमांचकारी लागल छल। एनजीसी कालोनीक पनवेल, सांई बाबा मन्दिर, महालक्ष्मी आदि कतेको मंदिर गेल छलौं- ओहि ठाम इरा पंकज जीक आतिथ्य, निर्भय बाबू दौड़ल आयल छलाह भेंट करवा लेल..... अहमदाबाद, द्वारका, सोमनाथ, जामनगर, भेरावल, अजमेर, सभ ठाम देखने छलौं जे हिन्दू मुसलमान भैयारी जकाँ रहैत छल। अहमद खाँक उक्ति कतहु पढ़ने छलौं हिन्दू-मुसलमान नववधूक सुन्दर आँखि जकाँ चमकैत रहैत अछि– सांचे तँ कहने छलाह? सभ मुसलमान अजमेर सँ पुष्कर जाइत छथि सभ हिन्दू पुष्कर सँ अजमेर-सहोदर भाई जकाँ अभिन्न।

अजमेर जाइत काल ट्रेन मे एकटा शालीन आ सभ्य व्यक्ति सँ पुछलौं–कोना-कोना पुष्कर अजमेर जायब? अचानक कोनो स्टेशन पर चढ़ल छल–हम सभ बस लग गेलौं तँ ओ बस पुष्कर नहि जाइत छल-हम सभ हताश भऽ गेलौं कि अचानक वएह व्यक्ति बीच सड़क पर ठाढ़ भऽ बड़ दूर मे ठाढ़ बस दिसि संकेत केलक- हम सभ दौड़ि बस पकड़ने छलहुँ। पुष्कर सँ अजमेर शरीफ गेलौं तँ मौलवी ठाढ़ छल। हम सभ फूलक चद्दर कीनलहुँ वएह फूल, वएह इलाइची दाना-दरगाह मे सभसँ पहिने पएर दिसि बैसि गेलौं- अल्लाह लेल मौलवी किछु पढ़ि फेर माथ टेकि, फूलक चद्दर कें चुमबा लेल कहलनि, फेर चादर ओढ़ाय फूल चढ़यलौं। फेर चादर उठाय हमर सभक माथ सँ लगा देलनि- हम सभ परिक्रमा करैत पएर दिसि सँ चद्दर उठाय प्रणाम कऽ परिक्रमा कयने छलहुँ- मोन अभिभूत भऽ गेल छल सरिपों, ईश्वर आ खुदा मे अन्तरे की छैक ? ओ हमरा अपन गुरु लग लऽ गेल- हम सुपर्णाक कोर भरि जाय एहि लेल मंदिर मस्जिद सभ ठाम भटकि रहल छलौं- संगे हिनक बीमारी। ओ हमरा अपन कार्ड देलनि- सैय्यद सगीरशाह सिद्दकी शाह, वकीन पंजाब शाह मंजिल- मामू भाँजा- दरगाह शरीफ, अजमेर- हम सभ श्रद्धा सँ किछु दक्षिणा देलहुँ जकरा ओ डाक सँ किछु प्रसाद स्वरूप पठौने छलाह। आ दीपांकरक जन्म भेल? फेर तरुणाक स्थितिमे किछु विलम्ब भऽ गेल तँ हम पटने सँ आँचर पसारि अजमेर शरीफ सँ मन्नत मांगने छलहुँ तरुणा स्वयं अजमेर गेल छलीह आ सात्विकक जन्म भेल। शनि मंदिर, रक्त काली मंदिर सभ ठाम राजीवक आँखि सँ नोर जाइत छल भगवान सभ किछ अछि खाली सुपर्णा तरुणाकें भरल पूरल बना देथि। एकर फल इएह भेल जे दीपांकर भरि दिन राजीवक घरमे ओंघड़ायल रहैत छल आ सात्विक राजीवक छाती पर- अपन बहीन सभकें राजीव बड़ मनैत छल ? हमरा

मोन अछि एक बेर भावना कें हम परीक्षा काल डाँटि देने छलौं तँ राजीव हमरा डाँटय लागल-अहाँ किएक ओकरा डाँटलौं- परीक्षा चलि रहल छैक- ओहिना तरुणा कें डांटने छलौं- अहाँ छोड़ु मम्मी- अहाँ एकरा सभकें नहि दमसाबियौक- हम समझा दैत छी- आ हमरा सभकें बड़ नीक लगैत छल- पैघ भाइक प्रेम ममता सभटा भेटि रहल छैक हमर बच्चा सभकें।

पांडिचेरी सँ आगू कारेकल नागापत्तनम पहुँचलौं तँ लागल जेना दोसर देस कोस मे आबि गेल छी? ताहि पर सँ भावना प्रकाश, सुप्रभा हनीक प्रेम हमरा मे किछु जान आबय लागल। हम अपन आन सँ बड़ दूर आबि गेल छलौं समुद्रक कात मे। दोसरे तरहक वातावरण, दोसर तरहक रहन-सहन समाज केर छल- सूकू ओएनजीसी महिला समितिक सचिव, कोषाध्यक्ष छलीह जकर कार्यक्रम प्रायः प्रतिदिन होइत छल। ओ हमरा छोड़िके जेवा लेल नहि चाहैत छलीह। हम ओहि सभमे जेवा लेल चाहैत नहि छलौं। दुनू बच्चा स्कूल पाहुन आफिस। एहि एकान्तक आवश्यकता हमरा छल। हमरा सोचवाक, स्वतंत्र भऽ कऽ कानवाक पर्याप्त समय भेटैत छल। आ मोनकें स्थिर कऽ नागफांस उपन्यासक पूर्णता दिसि लागि गेलौं।

ओ एनजीसी परिवारक स्नेह आ आदर हमरा घेरि लेलक- हमहूँ किछु छी इ सोचबा लेल हमरा विवश कऽ देलक। खास कयऽ रीता बरुआ साकार स्नेह लगलीह- भावना हमरा लेल नीक-नीक साड़ी कीनि घर पर दर्जीकें बैसाय हमर नापक अनुसार ब्लाउज सीआय हमर व्यक्तित्व कें वापस आनबाक प्रयास मे लागि गेलीह। सभ तरहक आहे माहेसँ दूर हमरा मनन आ चिंतनक अवसर भेटल। सभ समारोहमे जाय लागलौं। एक डेढ़ बरीस सँ बिन्दी विहीन चेहरा ऐना मे नहि देखने छलौं। कहियो समुद्रक कात तँ कहियो तरंगक बाड़ी-समुद्रमे। सभसँ पैघ बात छल जे हम एको सांझ बिन माछ कें नहि खाइत छलौं। पड़ोस सँ माछक सुगन्धि अबैत छल तँ माँ कें कहैत छलौं जल्दी भात-दालि परसि दियऽ हम एहि सुगन्धिक संग खा लेब। बच्चन बिन पीबने मधुशाला लिखलनि किन्तु हमर नैहर मे बारहो मास निरामिष भोजन बनैत छल। कोनो पावनि तिहार नहि धारैत छल तें पापा बड़ शौकीन छलाह तरह-तरहक कबाब, तरह तरहक मुर्ग-मुसल्लम, माछक बड़ी, पूड़ी, हमर माँ की नहि बनबैत छलीह ? सासुर गेलौं तँ वएह हाल। बारह बजे राति गाम पहुंचैत छलौं तँ बाबूजी मोइन मे जाल फेकाय माछ निकलबावैत छलाह हमरा लेल? से हम माछ मासु छोड़ि देलौं। हमर छहो संतान खेनाय छोड़ि देलक ? सभ हमरा जिद्द करथि मम्मी जमाना कतऽसँ कतऽ चलि गेल- अहाँ किएक ने खायब- हम सभक भावनाकें चीन्हैत छलौं जे मम्मी कोना माछ मासु बिना जीअत- हम समझावैत रही बेटा जखन हमरा अहाँक पापा बिना जीवऽ पड़ि रहल अछि तँ माछ मासुक कोन कथा, मोन तँ दूर ध्यानो नहि जाइत अछि ओहि दिसि.....।

मोन पड़ि आयल जखन एटैकक उपरान्त हम सभ हिनका मद्रास लऽ जेवा लेल छलौं तँ रंगम जीक वियाह छल। पापा बरिआती सँ घुरलाह तँ हमरा कात बजाय चुपचाप अपन सूटक जेब सँ दुइ खंड तरल माछ निकालि कें देलनि- रजनी पहिने अहाँ ई माछ खा लियऽ। ओम्हर हिनकर हालत अचानक गंभीर भऽ गेल छल एम्हर अपन बेटीक अंधकारमय भविष्यकें अनुमानैत पापा हमरा माछ खुआ रहल छलाह। हम पापाक भावना बुझि माछ हुनका हाथसँ लऽ लेलौं आ चुपचाप फ्रिजमे राखि देलौं। तखन हमरा माछ-तांछ सुझैत छल ? आँखि सागर बनल रहैत छल? प्रकाश जी कहलनि मम्मी अहाँकें हम माछ खुआयब आ बड़ प्रेमसँ माछ बनेलनि- अपने से माछक कौर बनाय हमरा मुँहमे देमऽ लेल हाथ उठेलनि। हम मुड़ी झुकौने चुपचाप मुँह खोलि देलौं किन्तु ओहि सँ पहिने आँखि सँ दुइ बून्न नोर खसि पड़ल.....नोरक बून्न देखतहि प्रकाशजी हाथ वापस कऽ लेलनि आ फेर हुनका साहस नहि भेलैक जे हमरा आग्रह करनि। ......

हिनकर बाद हम अपन हँसी बिसरि गेल छलौं। लगैत छल हम कहियो नहि हँसि सकब- किन्तु, हँसी तँ नहि मुस्केबा लेल सीखि लेलौं- अपन भीतर मे शक्तिकें अनुभूत केलौं- खास कऽ नीरजाक पाती- अपन आँखि नोरे नहि भरल राखब- किन्तु कतेक बेर एहेन होइत अछि जे नोर अपने आप बहय लगैत अछि। मोन मे एतेक घाहछल जे कखन मोन घाह सँ रक्त नोर बनि नि नाय-आ तकर बाद तीन मास ओहिठाम रहि गेलौं।

जखन बंदना हमरा तीन मास कारेकल मे रहैत देखलीह हमर आत्मविश्वासक प्रस्फुरण जानलीह तँ ओ हमरा अपना लग इंगलैंड न्यू कास्ल बजा लेलीह।

अपन मोनकें स्थिर करवाक क्रममे राजीव अपन घर रोहिणी मे नेने छल- ओकर गृह-प्रवेशमे नहि रहि सकलौं। पहिल बेर सभक इच्छा कें नकारैत हम अपन अशान्त, विक्षिप्त मोन लेल सोचने छलौं। हमरा अपन आन सँ बड़ दूर जेवाक मोन करैत छल डा० राजीवक डिप्रेशन शब्द हमरा आर उदभ्रांत कऽ देने छल- ओहि सँ बेसी मोन पड़ैत छल राजीवक प्रीतमपुरा एपी 60 गृहप्रवेशक पूजा मे हम दुनू गोटे बैसल छलौं- ई सभ स्मृति आर छटपटा दैत छल हमरा आ सरिपों कारेकल हमरा अपना विषयमे सोचबाक, आत्मविश्लेषण करवाक पर्याप्त समय देलक-फेर इंगलैंड रूस सभ ठाम जेवाक योग्य बनि गेलौं।

16 दिसंबर 88' कें जखन ई जीवन मृत्युक मध्य झुलि रहल छलाह-सभक आशीर्वाद, सौंसे सहरसा जिलाक शुभाशंसाक संग हम हिनका वापस सहरसा अनने छलौं अपोलो अस्पताल मद्रास सँ। जखन अपोलो मे छलाहे तखने सहरसा मे केओ हल्ला कऽ देलकैक पीपी.... साहब खत्म भऽ गेलाह.... ई श्याम बाबू कें पीपी इन्चार्ज बना कें गेल छलाह। सभटा खबर हमरा सभकें मद्रास मे भेटैत छल। हम सभ वापस

सहरसा घुरलौं। स्वस्थ छलाह किन्तु कमजोर बड़ वर्मा जी-हँ, नव जीवनक उत्साह छल। मोन मे उमंग छल सहरसा मे लोक देखत तँ आश्चर्य मे पड़ि जायत वर्मा जी कतऽ सँ। श्याम बाबू छोड़ि केओ नइं जनैत छल जे हम सभ सहरसा आबि रहल छी। हाजीपुर स्टेशन पर हरिहरनाथ पकड़बा लेल प्लेटफार्म पर ठाढ़ छलौं कि सहरसाक एकटा दबंग मंत्री आ नेता जे हमर सभक परिवारक सदस्य सन छलाह-ओ पाँच सात आदमीक संगे सहरसा जाइत छलाह।। हमरा सभ कें देखि ओ सभ आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता सँ भरि गेलनि, फेर ओ पूर्वमंत्री हिनका कात लऽ जा कऽ कहलनि- हम माफी मँगैत छी- जखन अहाँ अपोलो मे छलौं तखन एकटा आवेदन सरकार के देल गेलैक जे वर्तमान पीपी काज करवाक योग्य नहि छैक ताहि कारण हिनकर सभटा उमंग सभ उत्साह खत्म भऽ गेल छल- सहरसाबला उत्साह सँ भरि गेल छल-लेकिन हिनक हृदय उदास, मोन उचाट भऽ गेल छल-हिनक खिलाफ आवेदन गेल ई कोनो पैघ बात नइं छल। पीपीक पद पोलिटिकले होइत छल- ई सभ चलिते रहैत छल किन्तु केओ अपन दोस्त, नितान्त आपन संगी यदि दस्तखत कऽ दैक- जेना छटपटी छुटल छल हिनकर अन्तर मे। फेर बड़ नाटकीय ढंग सँ हम सभ पटना आबि गेलौं-श्याम बाबूकें पीपी इन्चार्ज बनाइ। पटना आबि ते ई सभ सँ पहिने....पीपीशिप सँ त्याग पत्र सहरसा कलक्टर आ बिहार सरकार कें पठा देलैथ।

सँ नया पीपी बनाओल जाय-ओहि आवेदनपर बहुत गोटे हमरा पर जोर दइ हमरोसँ दस्तखत करा लेलक। आ हृदयाधातक भीषणता सँ उबरि घुरल छलाह ई किन्तु एहि बात सँ हिनक मोन पर बड़ पैघ चोट पहुँचल छल- "यू ब्रूटस टू.."

हम सभ श्री कृष्णनगर मे छलौं आ ई कहि देने रहथि जे सात दिन सँ बेसी यदि हमरा सासुर मे रहय पड़त तँ हम वापस सहरसा आबि जायब।

पटना एबाक निर्णय दुनू गोटे हाजीपुर स्टेशने पर ल' नेने छलौं-मोने मन तय कऽ नेने छलौं- बहाना डाक्टरक छल किन्तु चोट कत्तौ आर लागल छल। हमरा अपन भविष्य अन्हार लगैत छल जे पटना हाईकोर्ट मे एकटा नवसिरा सँ प्रैक्टिस। भगवान ओहि समय मे बाट खोज दैत छलाह ओहि समय मार्केटिंग बोड क भीजीलेन्स ऑफिसर मे जीवछ झा छलाह। जे पहिने सहरसा मे पदस्थापित छलाह। हुनक पुत्री सोनी आ सुपर्णा अभिन्न संगिनी छलीह।। आ ओहि दुनू बच्चाक कारण जीवछ जी आ लीलाजी सँ औपचारिक भेंट यदा कदा होइत छल। किन्तु, दूनू बेकति कें एतेक मधुर आकि मीठ स्वभाव छल जे प्राय: ओहि मिठासक अभिव्यक्ति नइ भऽ सकैत अछि। हमरा मोन की फुरल नइं फुरल-नइं जानैत छी-किन्तु हम सहरसा सँ हुनका एकटा पत्र लिख देलौं-जे परिस्थितिवश हमरा सभकें पटना शिफ्ट करऽ पड़ि रहल अछि। हमर पापा पटना मे छथि किन्तु हम अपने सँ कहि रहल छी जे वर्मा जी पटना मे कोना सेटल करताह, ई अपने कें सोचनाइ छैक। हिनक हार्ट-अटैक सँ सभ दुखी

छला, सभ केओ हमर पीड़ा बुझैत छलाह। पापा सँ नइ बाजलौं जे अपन जमाइक लेल पापा किएक कत्तौ बदनाम होइतथि। जीवछ जी तुरत हमरा फोन केलाह always welcome-बस एहि दुइ शब्द सँ हमरा ताकत भेटि गेल। हम वर्मा जी सँ ई सभ गप नहि केने छलौं। हमरा तँ हिनकर जीवनक रक्षा केनाइ छल-अपोलो अस्पताल हमरा सभ कें निराश कऽ घुरा देने छल- तखन हिनकर आँखि मे नोर मन्नाजीक आँखि मे नोर- किन्तु हमरा आइ धरि मोन नइं अछि जे हिनकर बीमारीक कारण कहियो हिनकर सामने हमर आँखि मे नोर या कि कोनो दुख प्रकट भेल होयत। जनैत छलौं ई नहि तँ हमर आँखि मे नोर देखि सकैत छलाह आ नइं तँ अपन बीमारीक कारण हमरा बेचैन...

सहरसाक हवाक गंध सेहो बदलि गेल छल। आस्ते-आस्ते मौसम बदरंग भेल चलल जा रहल छल-आ भावना प्रकाश जी सभक संगे हम सभ ककरो बिनु किछु बजने रात्रिक अंधकार मे ट्रेन पकड़ि पटना लेल विदा भऽ गेलौं। साझीदार श्याम बाबू छलाह।

कृष्णा नगर मे जखन घर खोजबा लेल जाइत छलौं तँ क्यो ओकिल कें घर देबा लेल तैयार नइं। घर मे सभ केओ घर खोजबा मे लागल छलाह।

जाहि दिन सात दिन खत्म भेल कि अचानक दूबे चाचाक पत्नी दौड़ल एलीह। एकटा मकान मालिक आयल छथि- बात करवा लेल बैसल छथि। दूबे चाचा पापाक अन्दरमे मजिस्ट्रेट छलाह कहियो कत्तौ। आब श्रीकृष्णनगरमे अपन मकान बना नेने छलाह? मकान मालिक डा० हरिप्रपन्न द्विवेदी, संस्कृत विभाग अध्यक्ष, मुजफ्फरपुर वि.वि.मे छलाह। ओ एके बात पुछलनि अहाँक बड़का जमाइक की नाम थीक- हम बाजलौं श्री प्रकाश चन्द्र नवीन। बस बस भऽ गेल ई मकान अहाँकें दऽ देलौं। तखन 1400 रु० भाड़ा पर हम सभ आनंदपुरीक मकान मे चलि एलौं जाहिठाम दस बरीस रहलौं आ तीन हजार भाड़ा पर मकान छोड़ने छलौं।

ओहि मकान मे अबितहि हम वर्माजीकें लऽ कऽ अमृतसर चलि गेलौं। डा० दलजीत सिंह सँ मोतियाक आपरेशन करएबा लेलं। अमृतसरमे जीवछ झाजीक फोन आयल, वर्माजी मार्केटिंग बोर्डक एडवोकेट भऽ गेलनि- आइ सोचैत छी जीवछ झा भगवान नहि छलाह तँ के छलाह ?

पटना अबितहि जतेक आत्मसंतोष हिनकर स्वास्थ्य, हिनक प्रतिष्ठा लऽ कऽ भेल छल, आब दोसर संघर्ष आरंभ भऽ गेल। हमर कोनो पटनाक कोनो कॉलेज मे बदली भऽ जाय। जखन पटना विश्वविद्यालयक अधिकारीगण सँ सम्पर्क केलौं तँ ओ बजलाह दोसर विश्वविद्यालय सँ पटना विश्वविद्यालय मे स्थानान्तरणक प्रश्ने नहि अछि। हम कतेक कहलौं हम शुरु सँ पटना विश्वविद्यालयक छात्रा रहल छी- की

नैहर सँ गेल बेटी कें फेर नैहर मे आश्रय नहि भेटैत छैक? ओ बजलाह– नइं नैहर सँ गेल बेटीक स्वागत एहि विश्वविद्यालय मे नहि होइत अछि।

एम्हर हिनका छोड़ि हमरा सहरसा क्लास लेमऽ जाय पड़ैत छल। कहियो कोनो मोक्किल संग तँ कहियो कोनो। मोन पड़ैत अछि एक बेर बुचनजीक बेटा मुक्ति आयल छल, हमरा विवश भऽ कऽ ओकरे संग जाय पड़ल छल। रातुक सात आठ बजे आनन्दपुरी सँ स्टेशन जाइत छलौं ओहिठाम सँ टेम्पो पकड़ि हाजीपुर। गांधी सेतु पर तखन बेसी सवारी नहि रहैत छल– बड़ डर लगैत छल। फेर हाजीपुर मे हरिहर नाथ एक्सप्रेस पकड़ि सहरसा जेबाक रहैत छल। मुक्तिक संग जखन हाजीपुर पहुँचलौं तँ ज्ञात भेल जे ट्रेन कैंसिल भऽ गेल अछि। आब कोनो उपाय नहि छल, मुक्तिक संग एगारह–बारह बजे राति मे वापस पटना एलौं। कतेक गंजन हमर भऽ जाइत छल। पटना सहरसाक बीच बँटल, माँ अस्वस्थ भऽ गेल छलीह– ओम्हर माँ, एम्हर वर्मा जी दूनूक मध्य पटना मे बँटल–

किन्तु, हमरा लगैत अछि जकरा जतेक सहनशीलता आ धैर्य अछि सभ सँ बेसी भगवान ओकरे परीक्षा लैत छथि। 'जीवन एकटा चुनौती थीक– स्वीकार करू'– हम एहि चुनौती कें स्वीकार केने रही किन्तु, हिनका लग किछु नइं बजैत छलौं। एखने तँ भगवान सँ छीनि हिनका अनने छलौं, जाहि कारण पटना एलौं, तखन हिनका लग कोनो समस्या राखब अपन अहित केनाइ छल।

अपन स्थानान्तरण लेल हम राजभवन दौड़ैत रहैत छलौं। मगध विश्वविद्यालयक कुलपति कें कतेको आवेदन देने छलौं। असगर मे चुपचाप कनैत रहैत छलौं। कतेक दुख भगवान तन मोन कें दऽ देलनि।

समय सभ दिन एक सन नहि रहैत छैक। शफी कुरैशी आबि गेल छलाह राज्यपाल भऽ कऽ। हम भेंट करवाक हेतु कक्ष मे बैसल छलौं। अचानक रमेश बाबू पाहुन भेटि गेलाह ओहिठाम। हमर हताश निराश चेहरा देखि ओ पुछलनि की बात थीक विवाहिता अहाँ एहिठाम। हमर वियाह सँ पहिने पाहुन हमरा अनाघ्रात कहैत छलाह विवाहक बाद विवाहिता कहऽ लगलाह। हम सभ बात कहलौं हुनका सँ। ओ तुरत अपना बगल मे बैसल व्यक्ति सँ हमर परिचय करौलनि–ई वाणवीर बाबू ए.एन. कालेज मे प्रिंसिपल छथि। पाहुन स्वयं ओहि कालेजक हिन्दी विभाग मे छलाह। दुनू गोटे आपस मे गप कऽ कहलनि– अहाँ चिन्ता नहि करू। ए.एन. कॉलेजक हिन्दी विभाग मे स्थान खाली छैक। अहाँ काल्हि प्रिंसिपल साहब ओतऽ चलि आउ–हम ओतय रहब। सभ कागज भेटि जायत। तावत हमरा राज्यपाल सँ भेंट करबा लेल अरदली बजाय लेलक। हम जायतहि शफी कुरैशी महामहिमकें हिनकर रिपोर्ट देखाय फुटि फुटि कानय लागलौं। हिन्दू मुसलमान किछु नइ होइत छैक, ओहि सँ उपर मानवता होइत छैक, इन्सानियत होइत छैक। ओ हमर माथ पर हाथ राखि बजलाह–

'मत रोओ बेटी–तुम्हारा ट्रान्सफर हम करेंगे–' एतबे बात हमर हौसला बढ़ा देलक। ओ. एस.डी. रजा साहब कें बजाय पुछलनि सभ बात। रजा साहब सेहो हमरा बड़ मानैत छलाह। अपने मोन सँ पत्र व्यवहार मगध विश्वविद्यालय सँ लगातार कऽ रहल छलाह।

आ फेर तँ सभ बाटे आसान भऽ गेल– बाणवीर जी लिखि कें दऽ देलनि–ओम्हर रामेन्द्र भैया बी.एन. मंडल विश्वविद्यालयक कुलपति भऽ गेलाह। आ ए.एन. कालेजक प्राचार्यक रूप मे मदन मुरारी सिंह अपन योगदान देलनि आ ठीक तकर बादे हम हुनका हाथ मे अपन योगदान पत्र थमाय देलौं। इहो एकटा मधुर स्मृति रहि गेल छल– योगदान पर योगदान।

किन्तु, हमर माँ हमर एहि खुशी कें नइ देखि सकलीह जे सहरसा एबा जेबाक संघर्ष सँ हमरा मुक्ति भेटि गेल।' 89 ई मे माँक मृत्युक उपरान्त श्रीकृष्ण नगर मे एकटा श्मशानक उदासी पसरि गेल। माँ ओहि घरक आत्मा छलीह। अन्नपूर्णा तँ छलीहे। हमर बच्चा सभ माँ सँ बड़ बेसी जुड़ल छल। मोन पड़ैत अछि राजीव जखन दिल्ली जाय लगैत छल आकि सहरसा आबय लगैत छल तँ माँ गबैत छलीह– *'तुम रूठ के मत जाना–तेरा मेरा क्या रिश्ता तूने नहीं जाना'*–

माँक इएह आदत हमरामे प्रचुर मात्रा मे आबि गेल छल। जावत काज करैत रहैत छी खूब गबैत रहैत छी। केओ किछु घर मे बजैत छल तँ फट्ट सँ गीत गाबि जबाब दैत छलौं। जे आदत एखन धरि पाछा नहि छोड़लक– हमर जिनगीक सभ सँ पैघ चैनक समय रहल चाहे तँ हम गीत सुनैत रही आकि स्वयं काज करैत गबैत रही– सभटा तनाव खत्म भऽ जाइत छैक– सरिपों, संगीत सँ बढ़ि उपचार कोनो नइं।

90 नं. श्री कृष्ण नगरक घर ऐतिहासिक घर भऽ गेल छल– कतेक उतार चढ़ाव, जीवन मृत्यु, हँसी टट्ठा, नोक झोंक, वियाह दान, की नइं देखने अछि ई घर–

90 नम्बर कें हम सभ दस भाई बहीन, शेफालिका, दीपमालिका, मधुलिका, डॉ. कृष्ण कुमार, मृणालिका, शरद मल्लिक, चयनिका, सारिका, नीहारिका, असीम मल्लिक ई हमर सभक छोट मोट परिवार छल पटनाक। एकटा आर विशेषता हमर सातो बहीनीक प्रण छल जे हम सभ दहेज दऽ कें तँ ब्याह नहिए करब किन्तु डाक्टरों सँ वियाह नहि करब। विचित्र मानसिकता ! मन्नाजी (कृष्ण कुमारक) वियाह चंदा सँ भेल तँ सभ बहीन ओकरा चिढ़ाबी, बड़का कलेजा अहाँक अछि भौजी जे डाक्टर सँ वियाह केने छी। ओ मंद मंद मुस्काइत रहैत छलीह, प्रायः सोचैत हेतीह केहने बहीन सभ छथि, अपने भाई लेल एना बजैत छलीह।

आ फेर एकटा घड़ी फौन्टेन पर ओहि घरक जमाइ सभ एलनि–ललन वर्मा, अमरनाथ सिंह, शंकर लाल दास, विजय कर्ण, शिवनाथ सिंह हृदय, पंकज सिन्हा, आ डॉ० बैद्यनाथ लाभ। चंदारानी, अनुलीना आ समीता पुतहु बनि मल्लिक परिवार कें गौरवान्वित केलीह।

एतवे नहि एम्हर प्रेम यानी साधनाक पति विमलेन्दु ना० सिन्हा आ सांत्वनाक पति अमलेन्दु ना० सिन्हा ओहि घड़ी फोन्टेन पर एहि घर मे एलाह। सांत्वना तँ नइं रहलीह नूर फातमा अमलेन्दुक जीवन संगिनी भऽ गेल छलीह। विमलेन्दु बाबूक ज्येष्ठ भाई डा० पूर्णेन्दु ना० सिन्हा हमरा बड़ मानैत दलाह-हमर कथा कविताक अंग्रेजी अनुवाद करवा लेल उताहुल।

इन्कमटैक्स चौराहा सँ एकटा पातर रोड किदवई पुरी दिसि घुमैत छल। ठीक मोड़ पर रोडक दूनू बगल एक बाँस सँ ऊपर गढ़हा छल, बड़ खतरनाक मोड़ छल। नव निर्मित किदवईपुरी सेहो बरसा मे पानिए मे डूबल रहैत छल। ओहि मोड़ सँ डाक बंगला चौक तक एकदम सूनसान, एम्हर आर ब्लॉक मोड़ तक खाली एमएलए क घर सभ आ ओम्हर वेयर हाउसक ऑफिस आ इलाहाबाद बैंक छल। हमरा सभ कें डाक बंगला चौक पर केक पैलेस जेबाक बड़ हिस्सक छल। केक पैलेस मे रसमलाई बड़ खाइत छलौं। बगल मे पानक गिलौरी कोनो रसगुल्ला सँ कम नइं छल। सामने लखनऊ स्वीट हाऊस हमर दोस्त मीना खन्नाक भाईक छल। ओहिठाम जाकऽ मीनाक हाल चाल पुछैत छलौं, ओकर नामी मिठाई एटम बम कीनि घर अनैत छलौं। ओहिठाम रीडर्स कार्नर छल जाहिठाम ठाढ़ भऽ कतेक काल धरि पुस्तक सभ उनटाबैत छलौं आ दाम देखि एकटा 'आह' भरिकें रहि जाइत छलौं। आ आइयो दाम देखि ' आह' भरैत रहैत छी। बगले मे इंडियन नेशन प्रेस छल जाहि मे मिथिला मिहिरक कार्यालय सेहो छल। ओहि सड़क पर कतेक बेर साकेतानंद, पंचानन मिश्र, भीमनाथ झा, बटुकभाई, मुखिया जी आदि लेखकगण सँ भेट भऽ जाइत छल- सड़को पर साहित्य छल। कतेक शांति छल डाक बंगला चौक पर- हम सभ भाई बहीन पएरे अबैत छलौं, पएरे घुरैत छलौं। रिक्शा तँ बुझितो नहि छलौं। माँ पापा कहैत छलाह अन्हार होअऽ सँ पहिने घुरि आयब- बड़ सुनसान इलाका छैक। किन्तु न्यू पिन्टू हमर सभक प्रिय स्थान छल जे इंडियन नेशन प्रेस सँ आगू छल- ओना पुरना पिन्टू होटल पटना कालेज लगक शाने किछु आर छल किन्तु, न्यू पिन्टू मे हमर प्रिय डीश छल- ग्रेभीस कटलेट।

ओहि समय एक टाका मे भुजल काजूक छोटसन पैकेट दैत छल जे हम सभ फाँकैत रहैत रही। कहियो कहियो हम दुनू गोटे रीडर्स कार्नरक बगल मे भारत कॉफी हाऊस चलि जाइत छलौं। एक कोन मे दूनू गोटे बैसैत छलौं। मद्रासी बेयरा उज्जर धोती ठेहुना तक उनटौने बड़ फुरती सँ आर्डर लऽ चीकरैत छल- रण्डे-मसाला-ओहि समय हम एक बेर मे दुइ टा मसाला डोसा खा लैत छलौं। आइ ओहि कॉफी हाऊसक स्थान पर होटल सत्कार बनि गेल। जेजी कार रोशन ब्रदर्स सँ लऽ कऽ डी लाल मे घुमैत दूनू गोटे समय बीतवैत छलौं।

हँ, ओहि समय हार्डिंग पार्क बड़ जाइत छलौं जकर एकदम भीतर जा कऽ लवर्स जोन छल। कतेक बेर हमरा लऽ गेलाह, ओहिठामक सूनसान वातावरण, प्रेमी

युगलक ठाम-ठाम मिलन देखि हमरा भय भऽ जाइत छल। आगू मे रोज गार्डेन लग दुबि पर ई हमर कोर मे माथ दऽ सुति जायत छलाह- आ एक घंटा खाली गीत गबैत बिता दैत छलाह- *'तेरे रास्ते पे हमने...* वियाहक बादो खाली प्लेटोनिक लव हमर सभक चर्चक विषय रहैत छल।

विचित्र योग छल-ई गाबयवला हम सुनय वली- भगवानो जोड़ बना कें पठौने छलाह- हिनका गयबा मे चैन भेटैत छल, हमरा सुनबा मे- किन्तु, हमर माँ हिनका सँ एकटा गीत बराबर सुनैत छलीह- पाहुन ओ गीत सुना दियऽ आ तखन माँक फरमाईश पर ई शुरु भऽ जाइत छलाह- *'अरे, हमदम मेरे मान भी जाओ-कहना मेरे प्यार का.....'*

हम कोनो कोठरी मे किछु करैत रहैत छलौं आ कान मे जहाँ गीतक स्वर-लहरि पड़ैक बुझि जाइत छलौं-माँ सुनि रहल हेतीह- ई उछलि उछलि कें, झुमि झूमि गबैत हेताह। ओ सभ एकटा स्वप्नक संसार छल। माँ चलि गेलीह, पापा टुटि गेलाह। पापा जीविते छलाह माँ मे। कतेक बेर एहेन होइत छल कोनो बात पर हमरा मन्ना सेंटू मे बहस भऽ जाइत छल तँ दोसर दिन माँ पापा भिनसरे टहलैत-टहलैत आनन्दपुरी आबि जाइत छलैथ। रजनी, भऽ सकैत छैक आइ मन्ना, सेंटू सभ तोरा लग आबौक। किछु मोन मे अहाँ नहि राखब। ओकर सभक बात सुनि लेब। ओकरा सभकें नहि पता चलैक हम सभ एहिठाम आयल रही। हम हँसि दैत छलौं। माँ पापा कें इएह प्रेम, इएह वात्सल्य- सरलता हमरा आइयो अनुभूत होइत रहैत अछि-संबंध कें जोड़बा लेल कतेक उताहुल।

आइ वएह 90 नवम्बर अछि- ने ओ नगरी ओ ठाम? कोर्स मे पढ़ैत छलौं- 'उजड़ा दयार या चमन कहूँ ऐ वसुन्धरे इस परिवर्तन को निधन कहूँ या सृजन कहूँ, ..' पापा दानवीर कर्ण जकां ओतेक टाक अन्नपूर्णा काटेज प्रेस अपन भागिन बाला जी भैया कें लनिन कऽ देलद

पटना एलाक बाद तँ पं. गोविन्द झा, डॉ. देवकांत झा, प्रो. इन्द्र कान्त झा, आनन्द मिश्र, गोपालजी झा गोपेश, अमरेश पाठक, भक्तीश्वर झा सभ सँ भेंट होइत रहल- कहियो चेतना समिति, कहियो पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग सभ ठाम मैथिलीक कार्यक्रम आयोजित होइत रहैत छल।

एकबेर अखिल भारतीय कायस्थ सम्मेलनक आयोजन पटना मे भेल छल। के.एन. सिन्हा क आमंत्रण पर हमहु दूनू गोटे गेल छलौं। दस हजार सँ बेसी कायस्थ सम्पूर्ण देश आ नेपाल सँ आयल छलाह। स्टीफेन्सन हॉलक प्रांगण मे ई जमघट छल। मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अपन भाषण मे लाला आ ग्वालाक बड़ सुन्दर विवेचना केने छलाह

हरियर कोट पहिरने शत्रुघ्न सिन्हा सेहो आयल छलाह। चेहरा पर उगैत सूर्यक आभा नाचि रहल छल। हमर भाषण सेहो छल जाहि मे सभ बातक संग एकटा बात हम अवश्य बाजलौं-एहिठाम हम सभ अपार भीड़ लऽ कऽ एकत्र भेल छी किन्तु जतेक कायस्थ आइ.ए.एस., आइ.पी.एस. ऑफिसर छथि, केओ नहि आयल छथि किछ, अपवाद छोड़ि। हुनक अहंकार हुनका जनमानस सँ मिलवाक अनुमति नहि दैत अछि... जखन कि आन सभ जाति मे आइ.ए-एस. आइ.पी-एस. जनता सभ एक रहैत छथि......सरिपों हम प्राय: गौर केने छी कायस्थ आइ.ए.एस., आइ.पी.एस.कें अहंकार एतेक पैघ होइत छैक जे ककरो मदति कें नाम तँ दूर जे ककरो सँ भेंट करबा मे अपना कें अपमानित बुझैत छथि। किछु गोटे अपवाद हेताह- तखन फुसिए एहेन सम्मेलनक कोन प्रयेजन। जाहिठाम सभ अपने बुद्धि मे सभ सँ पैघ छथि।

हमरा सभ कहियो जाति-पाति मानबे नहि केने छलौं। आइ.ए.एस. सभ कें जतऽ किछु गोटा अहंकारी बुझैत छथि ओहिठाम हमरा लगैत अछि जे वास्तविक अर्थ मे आइ.ए.एस. छथि हुनका सन विनम्र व्यक्तित्व दुर्लभ। सहरसाक एस.डी.ओ. छलाह अजय कुमार झा आइ.ए.एस. हुनक पत्नी दीपा छलीह। एतेक विनम्र दुनू गोटे, खास कऽ हुनक पत्नी जतवा सुन्दर देखवा मे ओतबे शालीन साधारण नारी सन- ओहिना मदन मोहन झा, जिलाधीश अमिताभ बच्चन जकाँ लोकप्रिय छलाह। जनता जनार्दनक मध्य जिनक एकटा झलक हम अपन कथा वीआइपीज मे देने छी-

एतबे नहि शशिभूषण वर्मा आइएएस नहि छलाह किन्तु हाजीपुरक सिविल एस डी ओ छलाह- हमरा सभ कें पटना आबि अपना ओतऽ हाजीपुर क्वार्टर मे लऽ गेलाह भोजन कराय हमर सभक समान अपने सँ उठाय हाजीपुर स्टेशन आबि हरिहरनाथ ट्रेन मे सहरसा जेवा लेल पहुँचा देलनि- इ सभ की थीक विनम्रताक प्रतिमूर्त्ति सभ! रेलवेक कार्मिक विभागमे उदय प्रकाश एल आइड अफसर छलाह- हम सभ पुष्कर अजमेर सँ घुरल छलौं- रास्तामे संग भऽ गेलनि आ पटना जंक्शन पर हमर सभक समान स्वयं उठौलनि 'माता-पीता तीर्थ कय अबैत छथि तँ बेटा समान उठबैत छैक तँ पुण्य होइत छैक।'

पता नइं कतऽ छथि- कोना छथि- अरविन्द प्रसाद डी.एम. कत्तौ कोनो अहंकार नहि- एहिना डी.डी.सी. छलाह चन्द्रगुप्त अशोक वर्धन तिवारी-हुनक पत्नी कें हम बीच-बीच मे हिन्दी पढ़ाबऽ जाइत छलौं। कोर्ट सँ वर्मा जी अबैत छलाह, तिवारी जी सेहो अबैत छलाह- फेर हम सभ संगे भोजन कऽ तिवारी जी अपने सँ गाड़ी चलाय हमरा सभकें घर पहुँचा दैत छलाह। सौंसे मेघदूत हुनका कण्ठस्थ छल। कहैत छलाह-वर्मा जी हम संस्कृतक कर्जदार छी जकरा कारण हम आइ.ए.एस. बनलौं। फेर तँ ईश्वरी प्रसाद, सत्यनारायण प्रसाद, शिवचंद्र झा सभ एकटा परिवार छल हमर सभक। अपना जमाना मे मंत्रेश्वर झा जी सेहो बड़ लोकप्रिय छलाह। कोनो

अंहकार नहि हुनका मे? जखन बेसूसराय में जिलाधीश छलाह हम सभ भेंट करऽ गेल छलहुँ संगे हमर छोट बहीन मधुलिका आ शंकर बाहु छलाह किन्तु बिन भोजन केरौने नहि आबय देलनि एहिना विजय प्रकाश छोट भाइक सिनेहदैत रहलप हिनक अवसान काल मृदुलाक संग आदि-कतैक सांख्ना देने छल-

राजीवक दोस्त राजेश भूषण आइ.ए.एस. कें बिहार कैडर भेटि गेलैक आ एक बरीसक प्रोबेशन पीरीयड मे सहरसा मे रहऽ पड़लैक। जेँकि ओकर पत्नी ऋतु तखन नहि आयल छलीहतँ राजेश रोज साँझ मे ऑफिसक बाद बासा पर आबि जाइत छल। आ राति दस ग्यारह बजे जाइत छल। सौंसे सहरसा ई बात जनैत छल। हमरा सभकें एकरत्ती ई नहि लगैक जे राजेश हमर बेटा राजीवं नहि अछि। एतेक हँसमुख, मिलनसार, एक सँ एक चुटुक्का सुनाय-सुनाय हिनका हँसबैत रहैत छल।

एक दिन बाजल... चाचा जनैत छियैक एहि ठामक लोक हमरा कायस्थ बुझैत अछि। एक तँ भूषण टाइटिल अछि दोसर एहिठाम रोज अबैत छी। फलना पंचायत सँ एक आदमी अपन पैरवी मे आयल छल.. बाते बात मे हमर कान मे कहलक। हमहू कायस्थे छी। (राजेश भूषण गढ़वाली ब्राह्मण छथि)।

आब तँ हँसैत हम सभ बेहाल छलौं। ओहिना जखन ओकर पत्नी अयलीह तँ फेर प्रत्येक साँझ संग बीतैत छल। ऋतु, तरुणा कें बड़ मानैत छलीह, ओकरा अपना हाथ सँ सजावैत संवारैत छलीह। वएह राजेश भूषण जखन पटना पी.एच. इ डीक, एम.डी. बनल तँ हमरा सभकें बड़ नीक लागल छल। किन्तु खुशी बेसी देर वर्माजी नहि भोगि सकलाह- अचानक मृत्यु सँ राजेशो स्तब्ध रहि गेल छल। हरदम राजीवक संग ओकरा सहयोग दैत रहल। एहिना प्रत्यय अमृत हिनका सभकें लगैत छैक लोकक दुख हँटेबा लेल, की करी की नहि ?

किन्तु, कतेक आइ.ए.एस. पदाधिकारी एहनो छथि जे अपन घरो ककरो नहि आबय देबा लेल चाहैत छथि, गप कनाय तँ दूर।

बैसल बैसल बीतल जिनगीक लेखा जोखा कऽ रहल छलौं - की हेरा गेल की भेटि गेल -

मुदा, हम हेरयलौं कहाँ किछु ? खाली भेटवे कएल - आँखि मुनि सोफाक पीठ पर माथ टेकि दैत छी। हँ हेरा गेल- सभ किछु हेरा गेल, अर्थाभाव, उपेक्षा, संघर्ष सभ किछु तँ समाप्त भऽ गेल। जीवन मे संघर्ष छल। हम कतेक कर्मठ छलौं - विशाल परिवार कें सम्हारनाइ सँ लऽ कऽ निरंतर कथा कविताक सृजन । आइ साहित्य क्षेत्र में अर्कमण्यताक स्थिति हमर आबि गेल अछि। पी॰पी॰ शिप सँ त्यागपत्र दऽ वर्माजी सहरसा सँ पटना आबि गेलाह। हमर मोन मे उमंग छल। चेतना समिति, मैथिली अकादेमी आदिक साहित्यकार सभ सँ भेंट होयत - तन मोन रोमाचित भऽ

जाइत छल – कतेक भावुक छलौं हम– किन्तु पटना महानगर नहि रहितो महानगरी सभ्यता कें पनपा रहल छलैक यांत्रिक मानव।

टी.वी. पर गीत भऽ रहल छल – 'तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है, अंधेरों से भी मिल रही रोशनी है –' माथ भारी भऽ जाइत अछि 'प्यासा सावन' इएह तँ नाम थीक एहि सिनेमाक ! हम दुनू गोटे जखन इ फिल्म देखने छलौं तँ अपने जिनगी लागल छल। बड़ प्रेरणा भेटल छल एहि फिल्म सँ ! अर्थक वृद्धिक संगे संग पति अपन पत्नी सँ दूर भेल जा रहल छल – बड़ दूर, पत्नी अर्थक नइं प्रेमक भूखल छलीह मुदा पति पत्नीक दुख कें देखने छल। ओहि आगि मे ओ त्रिलोकक समस्त सम्पत्ति सँ पत्नी कें अलंकृत करबा लेल प्रतिबद्ध ।

हमरो सभक जिनगी मे जखन सुखक क्षण आयल तँ दुखक घनीभूत मेघ ओहिना फेर पसरि गेल– सहरसा जिलाक लोक अभियोजक बनि गेलाक बाद सरकारी फीसक अलावे मुद्दई मुद्दालह सँ पैसाक कोन कथा एक खंड मिठाइयो नेनाइ वर्माजी गोमाँस बुझैत छलाह। हिनक ईमानदारीक चर्च सहरसा जिले नहि वरन समस्त बिहार मे होइत छल। कतेको एहेन केस अबैत छल जाहि मे वरिष्ठ मंत्रीगणक पैरवी होइत छल, अपना पक्ष मे केसक निर्णय होइ। किन्तु, एहि बात मे ई केकरो परवाह नइं करैत छलाह! सदैव अपन आत्माक स्वर पर काज करैत छलाह ! फल ई भेल जे ई सदिखन मानसिक तनाव मे रहय लगलाह। एम्हर घर मे सरकारी फीस सँ बच्चा सभकें पढ़ेनाइ तलवारक धार पर चलनाइ छल !

बिहारक सभ सँ कम आयुक पीपी ई छलाह। जाहि निष्पक्षता, कर्मठता आ ईमानदारीक संग एहि पदक गरिमाक निर्वाह ई केलन्हि, बिहार मे असगर उदाहरण बनि गेलाह! पैघ सँ पैघ विरोधी धरि हिनक एहि पक्षकें मुक्त कंठ सँ स्वीकारैत छल संगहि प्रशंसो करैत छल। मास बादे कांग्रेस सरकार मे आबि गेल आ डा० जगन्नाथ मिश्रा मुख्यमंत्री बनि गेलाह। जखन पहिलुक बेर दुनू गोटे सहरसा हवाई हड्डा पर मिललैथ तँ डा० मिश्रा गला मिलबैत बाजल छलाह – अहाँ तँ बड़कम उमर मे पीपी बनि गेलौं – हिनक हाजिर जबाब छल – अहूँ तँ बड़ कम आयु मे मुख्यमंत्री बनि गेलौं – आ दूनूक समवेत ठहाका सँ वातावरण गुंजित भऽ गेल छल।

20 जून –79कें चीनी बाबू हमर डायरी मे लिखने छलाह.....अहाँ नीक जकाँ जनैत छी, लोक आओत, अहाँक आदर सत्कार सँ तृप्त भऽ जायत। हुनक एकटा मामूली मुस्की लेल अहाँ जान प्राण देने रहब। अहाँक अन्तरक समस्त आदर भाव उजागर भऽ जायत आ फेर ओहि पर एकटा तीर चलि जायत। एके वाण सँ आहत भऽ जायब अहाँ, विक्षुब्ध भऽ उठत अहाँक मोन। अहाँक समस्त त्याग, समर्पण भावना स्नेह उत्साह सभटा, एके संग कानय लागत– आर्त्तनाद करऽ लागत। अहाँ सभ किछु बुझैत, सभटा जनैत फेर ओकर आगू अधर पर मुस्कान नेने विहुसैत ठाढ़ रहब– जेना

अहाँ एहि लेल बनल छी।' मोन पड़ैत अछि तं हंसी लागि जायत अछि हमर स्वभाव हमरा संबेसी आन बुझैत छथि–

सरिपो, एहि परिवारक कारण कतेको अवसर हमर जिनगी मे आयल जकरा गमाय देलौं....नहि तँ आइ मैथिली साहित्य मे हमर स्थान सर्वोपरि तँ नहि किन्तु, किछु अवश्य रहितैक। हम कोनो चीज कें गंभीरता सँ नहि लेलौं अपन संयुक्त परिवार मे अपन समर्पण छोड़ि मुदा भेल की ? खड़िका खड़िका बनि घर परिवार सभ बिखरि गेल। आइ हमरो सपन रंग विरंगी भऽ सकैत छल। हम ओहि अवसर कें देहरिए पर सँ घुरा देलौं जे जीवनक, जीवन-सौंदर्यक अभिव्यक्तिक माध्यम छल। मैथिली अकादेमीक गद्य पद्य संग्रह मे रचना पठेबाक आमंत्रण, चेतना समितिक कतेको पुस्तक आलेख लेल अनुरोध एहेन एहेन कतेको अनमोल अवसर दिसि हम आँखि उठाइयो कें नहि ताकलौं किएक तँ घर परिवारक खुशी हमर लक्ष्य छल जकर व्यस्तता मे सभ किछु अस्तव्यस्त भऽ गेल हमर जिनगी मे। हम सृजन सँ दूर भेल जा रहल छलौं। हृदय कनैत छल अभिव्यक्ति लेल। हम मौन भऽ गेल छलौं किन्तु, मौनक अपन रोदन होइत अछि। अन्हार नहि कनैत अछि, क्षितिज नहि कुहरैत अछि, शून्य नहि सिसकैत अछि– किन्तु हमर हृदय सतत कुहरैत रहैत छल। ई कुहरब एकटा हिमशिला जकाँ हमरा जड़ बनौने जा रहल छल। ओहि समय मिहिर आ वैदेही मे हम निरंतर छपैत छलौं किन्तु अचक्के काल आ परिस्थिति ब्रेक लगा देलक। जीवन मे एहनो मर्मांतक क्षण अबैत छैक जखन शब्द पाथर भऽ जाइत छैक आ समय हिमशिला जकाँ शनैःशनैः बरकैत रहै अछि, गलैत रहैत अछि– जेना हम बाँझ भऽ गेल छलौं– दिल्ली मे छलौं तँ शरदिन्दु, मधुकान्त दूनूक फोन पहुँचल छल जे हमरा अहाँक कविता संग्रहक पोथी सभ चाही आवश्यक कार्य छैक– हमरा एतेक नीक लागल छल जे ओ सभ हमर पुछारि दिल्ली मे केलनि– पुस्तकक की प्रयोजन छल कहियो नहि पुछलौं किन्तु हमर पुछारि– जिनगी मे छोट-छोट खुशीक बड़ महत्व होइत छैक जे साँस मे रमल रहैत छैक। एहिना देवकांतजी टेक्स्ट बुक कमिटि मे हमरा अपने मोने रख लनि। कथा कविता लेल तगादा केलैनि, अर्जुन चौधरी घर आबि-आबि मिथिला महान कें महान आर महान करबाक संकल्प कें प्रारुप दैत छलाह– किन्तु हम नहि सकि सकलौं।

मैथिली साहित्य जगत मे तखन लोक किछु किछु हमरा जानऽ लागल छलाह कनी कनी चीन्हय लागल छलाह। आइयो रील जकाँ दरभंगाक ओ दिन सभ आँखिक आगू घुमि जाइत अछि-आ स्वयं पर विश्वास नहि होइत अछि– 8 जनवरी 1984 कें बंदनाक मेडीकल टेस्ट दरभंगा मे छल। परीक्षाक बाद हम सभ घुमबा लेल निकललौं। तँ वर्मा जी बजलाह-चलू शंकर जी ओतऽ– शंकर मिश्र जी हमर 'रक्त संबंधक अग्नि परीक्षा' कथा पर बड़ मर्मस्पर्शी पत्र हमरा लिखने छलाह– हमरा सभकें देखतहि ओ गद्गद् भऽ गेलाह। चाह, शरबत, जलखैक आवभगत सँ हम सभ तीति

भीजि गेलौं। लागैत छल जेना अपने परिवारमे छी। कहऽ लगलाह-जनैत छी हम नवीन जी सँ बजैत छलौं जे हम सहरसा जायब। ओहिठाम दुइ टा भगवती छथि तिनक हम दर्शन करब। नवीन जी पुछलनि दुइ टा कोन तँ हम कहलौं-भगवती उग्रतारा, भगवती शेफालिका- आ एकटा उन्मुक्त सरल हँसी हुनक अंग अंग सँ निःसृत भऽ रहल छल।

आ हमर अंग अंग सँ लाज- हम तँ किछु नहि छी-आँखि सँ नोर झहरि रहल छल या तँ संसार मे एखनो नीक लोक सभ छथि जे प्रशंसाक अतिरेक सँ दोसरा कें भावविभोर कऽ दैत छथि या नहि तँ उपहासक पात्र बना दैत छथि।

एहिना नवीन चंद्र मिश्र जी सहरसा मे मैथिली विभाग मे जखन अपन योगदान देने छलाह तँ इएह बात कहने छलाह। ओ तीन चारि गोटेक संग हमर बासा पर आयल छलाह। हमरा सहरसा एवाक मोन नहि छल किन्तु ई संतोष छल जे एहिठाम दुइ भगवतीक दर्शन.........

सर्वथा लज्जासँ धरतीमे गड़ल जाइत रही- हम स्वयं अपनाकें कतेक तुच्छ बुझैत छी, मुदा, ई मान सम्मान मनोरंजनजीक कहब- आइ सरस्वती पूजा छी हम पहिने साक्षात् सरस्वतीक दर्शन करय आयल छी एकर बाद मूर्त्तिक दर्शन करब- ई सभ की छलैक? हुनकर सभक हृदयक विशालता रहैक। ओ समय छल जखन साहित्यमे राजनीति नहि छल। सहरसाक कण-कण मे साहित्यक रंग भरल छल। प्रत्येक हफ्ता साहित्यिक कार्यक्रम होइत छल। एकटा आयोजन स्व. भवेश मिश्र जी करैत छलाह तँ तुरत दोसर जयानन्द झा जी। हम सभ दूनू समारोह जान रहैत छलौं। एहि सभ आयोजनक सूत्रधार छलाह साहित्यमय मंत्रेश्वर झा जी जे तखन सहरसामे चार्ज ऑफिसर छलाह। ओ जा सहरसामे रहलाह समस्त साहित्यकार कें एकटा नव जीवन, नव दिशा, नव आशा-उषा दय सहरसाक धरतीकें कृतार्थ केलन्हि ई छल रस सिंचित सहरसा-

दरभंगा राजक मनोकामना मंदिर मे बंदना अपन इच्छा-सपना लिखने छलीह। कहल जाइत छल जे मंदिरक देवार पर दृश्य अदृश्य किछु मनोकामना लिखि दिऔक तँ ओ पूर्ण भऽ जाइत अछि। हमहूँ मंदिरक सीढ़ी लग अपन अंगुर सँ की सभ लिखलौं मोन नहि अछि। प्रश्न छैक इच्छा-कामना, मांगनाय-नहि मांगनाय, निष्काम भक्ति कें-बिन मांगने भगवान बुझैत छथि। किन्तु की ई साँच अछि। की हम सभ मांगैत नहि छी? बड़का बड़का ऋषि मुनि की बिनु मांगने पूजा अर्चना करैत छथि- हमर सभक प्रत्येक मंत्र मे, प्रत्येक स्तुति मे हमर मांग अछि- रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, द्विषो जहि।'- 'बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हहु कलेश विकार' आदि कतेको स्रोत्र मे खाली हमर सभक इच्छा-कामना भरल अछि-

दरभंगा काली मंदिर साक्षात काली- कटकट.... विकट ओठ पुट पांड़रि... जेना सम्मोहित भऽ जाइत छी। कतेक बेर तँ कोनो मंदिर सँ अबैत छी तँ लगैत

अछि-जाह भगवान सँ ई बात तँ कहबे नहि केलौं। प्रणाम कऽ घुरि गेलौ।... चिता पर स्थित माता कालीक मनोरम छवि अपन मधु-स्मितिक संग अपन भक्त कें मोहित सम्मोहित करैत! सहरसा सँ हम बेसीकाल दरभंगा जाइत छलौं। जानकी सँ हम दुनू गोटे स्टेशन पर उतरैत छलौं। वेटिंग रूम मे नहा धो तैयार भऽ कऽ पहिने रेडियो स्टेशन जाइत छलौं। दरभंगा स्टेशनक प्रथम तल पर स्थित बड़का वेटिंग रूम एतेक साफ सुथरा रहैत छल जे नहाय सुनाय अपना आपकें बड़ तरोताजा बुझऽ लगैत छलौं। ई कहैत छलाह सहरसा मे अहाँकें कहियो एतेक फ्रेश नहि देखैत छलौं जतेक 'फ्रेश' अहाँ एतऽ लगैत छी। तखन वेटिंग रूमक दर्पण मे अपन चेहरा देखलौं तँ हमरा स्वयं अनचीन्हार लागऽ लागैक। हमरा लागल जेना हम कोनो सुन्दर शेफाली कें देखि रहल छी-तन मोन सँ टटका टटका ओस मे नहायल फूल सन-

मोनक दुख तन पर भारी पड़ैत छैक। दरभंगा अबिताहि हम दूनू गोटे उन्मुक्त चिड़ै जकाँ चहकऽ लगैत छलौं-निर्बंध बन्धनहीन। रेडियो स्टेशन मे प्रोग्राम रेकार्डिंग हेवाक बाद काली मंदिर अवश्य जाइत छलौं- फेर टावर लगक संगम होटल मे माछ भात- कतेक पवित्र लगैत छल इ सभ। आ तकर बाद तँ कोनो बेर सुमन जी ओतऽ मिहिर जी, अमर जी सभ सँ तँ कोनो बेर साकेतानंद, रमानंद रेणु तँ भाई सोमदेव ओतऽ। सोमदेवजी तँ हमर भाई बनि गेल छलाह आ हिनका सँ खूब हँसी ठठ्ठा करथि- आ भौजीक आग्रह कतेक तरहक भोजन ओहि धरणीधर पथ मे हम सभ करैत छलौं- कहियो हरिश्चंद्र झा जी ओतऽ- नीरजा रेणु आ नागेश जीक कारण हमरा सभक संबंध छल, रामदेव झा सँ भेंट स्वीट होम मे मधुर खुऔ, दुनू संगी अपन छात्र जीवन स्मरण करय लगैत छलाह। एहि मे कोनो संशय नहि दरभंगा मे मिथिला बसैत छल, मैथिल संस्कारक आत्मा छल- जतय जतय गेलौं रामानंद रेणु रहथि वाकि शालिग्रामजी, भीम नाथजी हंसराजजी, मिहिरजी, सोमदेवजी सभ ठाम प्रेम-अपनत्वक संसार भेटल जकरा अपना मे समेटि लेबाक क्षमता हमरा एहेन तुच्छ लोक मे नहि छल-

हँ, हम खोजैत रहैत छलौं कत्तौ, रामदेव राय भेटि जाय, कत्तौ लक्षमण झा 'सागर' तँ कत्तौ चन्द्रेश मुदा, केओ कत्तौ नहि बस पत्रक आत्मीयता मे बन्हायल छलौं। किन्तु इएह अपनत्व हमर सहरसाक साहित्यिक समाज मे छल। रवीन्द्र महेन्द्रक जोड़ी कें हम-विद्यापति-हरिमोहन झाक उपरान्त तेसर कड़ी मे मैथिली भाष प्रचारक सशक्त साधन मानइत छलौं। समय कतऽ सँ कतऽ चलि गेल किन्तु रवीन्द्र महेन्द्रक गीत-संगीत, मायानंदक अपूर्व संचालन ककरो लेल गौरवक वस्तु थीक- सहरसा हमरा मंच देलक तँ मायानंद पटना रेडियो स्टेशन सँ हमर स्वर-

सोचैत छी कहियो कोनो विजन विपिन मे बैसि चुपचाप लिखैत रही- पवन उर्मिक वेग कें पकड़ैत रही, आकाशक तारा कें बीछइत रही-विरही यक्ष जकाँ हमर

आत्मा भटकैत रहैत छल- चोट पाबि, ठेस लागि जखन स्नेह आ प्यारक धार मानव कें भेटैत छैक तँ बड़ चैन भेटैत छैक। कनिक स्नेह, कनिक प्रेमक प्राप्ति सँ मोनक प्रत्येक गिरह स्वयं खुलय लगैत अछि- सभटा वेदना हाहि काटऽ लगैत छैक। भटकैत, भोतिआयल मोनक संग जीनाय-विचित्र स्थिति छैक, एकटा विवशताक संदर्भ भऽ जाइत छैक। मंदिर मे गेनाइ नीक लगैत अछि हमरा मुदा कोनो अनुष्ठान लेल नहि मात्र शांति लेल, शांतिक संचय लेल, मोन कें चुपचाप धो देबा लेल। सोचैत छी ककरो दुखी नहि देखी। यदि ककरो कोनो प्रकारक कनिको कष्ट देखि लैत छी तँ मोने मोन ओकर कष्ट मिटएबाक उपाय सोचैत छी तँ कलेजा दर्द करऽ लगैत अछि- हमर अपन दुख की कम अछि जे आनक दुख कें सेहो अपन बनाय अपना कें आर दुखी कऽ लैत छी। ओअन देखल दीपचंद्र जखन अपन सद्य वैवाहिक जीवनक करुण गाथा लिखने छल तँ कतेक दिन धरि नहि कतेक मास धरि ओकर संग हमहूँ बेचैन रहलौं-

दरभंगा हमरा सभकें नव उमंग, नवजीवन दैत रहल। रेडियो प्रोग्राम मे जानकी सँ जाइत छलौं, राति जानकी सँ घुरैत छलौं- आ भरि दिन उमंग तरंग सँ बीतवैत छलौं। साँच पुछु तँ ई हमर सभक हनीमूनक यात्रा रहैत छल- सर संबंधी सँ दूर, परंपरा अपरंपराक निर्वाह सँ फराक- हृदयक संबंधक मध्य उन्मुक्त हँसीक संग मुक्त विचरनाइ। जखन दरभंगा सँ हमरा पत्र आ चन्द्रेशक समाद आयल 'मिथिला विभूतिक' सम्मान लेल तँ विपरीत परिस्थिति रहितो हम दिल्ली सँ पटना अयलौं, पटना सँ दरभंगा-कतेक उछाह छल दरभंगा जाइत छी- पीड़ा छल काश वर्माजी रहितथि- सम्मान पुरस्कार कोनो चीज नहि थीक वरन् सिनेहक प्रतीक होयइ अछि-आ सिनेहक प्रतिदान यदि दऽ सकी तँ कहियो पाछू नहि हँटबाक चाही फेर तँ रामदेवजीक संग हुनक, हुनक परिवारक सिनेह प्रेम, धीरेन्द्र जी सभक सिनेह जेना पुरबिल प्रीत, बिसरल अतीत कें उजागर कऽ देलक।

मुद्रण वाटिका प्रेम सँ राजू जी आ पूनमक आग्रह छल हमरे लग ठहरब- जेँकि बेटीक भैंसुर दिआदिनी-मास्को मे सुपर्णा छलीह आ तै पूनमक आग्रह हमरा सुपर्णाक आग्रह बुझा पड़ल। फेर तँ पटना सँ टैक्सी सँ हम संजीव, शबनम आ संस्कृति तीनू दरभंगा पहुँचलौं। बड़ नीक लागल हुनकर सभक आत्मीयता देखि- खासकऽ राजू जी हमरा सभक संग छाहरि जकाँ रहलाह। रामदेव जी सँ रेडियो स्टेशन, विश्वविद्यालय सभ मे भेंट भऽ जाइत छल। मोन पड़ैत अछि जखन ओ डेरा पर जाय लेल कहैत छलाह, जखने कबिलपुर बजैत छलाह, हम हँसि दैत छलौं-बाप रे काबिलपुर कोना जायब हम, ओनेक काबिल अपना कें नहि बुझैत छी-

रात्रि मे कार्यक्रमक उपरान्त एतेक प्रेम आदर सँ हमरा सभकेँ भोजक पंगत मे बैसाऽ भोजन करौलनि। विद्यापति सेवा संस्थानक प्रत्येक सदस्य धीरेन्द्र, शंकर देव, चन्द्रेश आदि सभ तँ अपन छलाह-

एहिना वैदेहीक कृष्णकान्त मिश्र जी ओतऽ एक बेर गेल रही, कारण जे ओ हमरा सँ भेंट करय सहरसा अबैत छलाह पुनः पटनाक आनन्दपुरी बासा पर।

मौन मूक ससरैत मेघक पाछां अदृश्य चान क्षण भरि लेल संपूर्ण आकर आ आलोकक झलक देखाय पुनः लुप्त भऽ जाइत अछि तहिया हमर हमर दिनचर्या आ अनुभवक अढ़ मे कहियो कहियो बहुत पहिनुक लघु स्मृति सभ छटपटाय लगैत अछि । लघु एतेक जे ककरा लग व्यक्त करी, ककरा सुनाबी मुदा उज्जर आ स्पष्ट भोरक मौन कें तोड़य वला पंछी जकाँ... जखन कि दोसर बेर कलकत्तामे साहित्य अकादेमी 'अनुवाद कर्यशाला' मे नचिकेताजीसँ भेट भेल! कतेक उत्साह छल हुनक हृदय मे। ठीक प्रबोध एवं अणिमा सिंह जकाँ कतेक सहयोग हमरा करैत छलाह। हमरा सभकें महाराष्ट्र निवास मे ठहरायल गेल छल। संग मे वर्माजी आ तरुणा छलीह। सभ कवि लेखकक ठहरबाक व्यवस्था प्राय: ओहिठाम छल। किन्तु जखन भोजन मे तीमन-तरकारीमे चीनी मिलल देखलौं तँ किछु खायल नहि गेल। साहित्य अकादेमी कार्यालयमे हमर सभक कार्यशालाक उद्घाटन अमियदेव, इन्द्रनाथ चौधरी सभक द्वारा भेल। निर्मल कवि लेखक सभक टेबुल बाँटि अपन-अपन कार्यमे लगा देलनि- हम मैथिली सँ अंग्रेजीमे अनुवादक भार नेने छलहुँ साहित्य लहरि पर हँस जकाँ हम सभ विचारि रहल छलौं- नचिकेता बेर-बेर हमरा सभसँ पुछथि कोनो कष्ट नहि ने-तखन हम हुनका कहलौं-हमरा महाराष्ट्र निवास नहि नीक लगैत अछि- ओ हँसय लगलाह आ तुरत बाद हमर सभक व्यवस्था भाषा परिषद् कार्यालय-शेक्सपीयर सारणी मे कऽ देलनि-एतेक छोट बात मे कोन संकोच। हुनक अपनत्व भरल मृदु हँसी हमरा सभकें बड़ नीक लागल छल? फेर तँ रामलोचन ठाकुर, हरेकृष्ण झा, गोविन्द झा आदि विद्वान सँ तरुणा खूब हिलि-मिलि गेल छलीह। दिनका भोजन माछ-भात कार्यकाले मे करैत छलौं- ओहि बीच प्रभाकर श्रोत्रिय सँ बड़ आत्मीयता भऽ गेल छल हमरा सभकें- भाषा परिषद्क आवास सँ जीवन तारा बिल्डिंग एबा जेवा मे बड़ दूर भऽ जाइत छल किन्तु चैन तँ राति मे होइत छल? एहि मे तँ किछु बरस पहिने 'पोएट्स वर्कशॉप' भेल छल पूर्वांचल कवि सभक, कतेक इला तंग केने छलीह- पहिने कहू ने अहाँ एतेक हँसैत छी- फेर कथा-कविता......आ इला चलि गेलीह एकटा कुसुम कली असमये काल कवलित भऽ गेलीह। प्रेमशंकर जीक साहित्यमय व्यक्तित्व आ इलाजीक कवित्वमय हृदय सभटा संगत विसंगत मोन पड़ैत रहैत अछि- हृदय दर्द सँ भरि जाइत अछि-

फेर ओहि दिन यास्मीनक फोन- 'हेलो, हम यास्मीन बाजि रहल छी ! देखू ने अहाँ सँ हमरा कोन सम्बन्ध भऽ गेल अछि ? ई कोन स्नेह अछि? सम्भव मोनक सम्बन्ध हो...? हँ, मोनेक सम्बन्ध हएत-'

कहियो कहियो कोनो सम्बन्ध एहेन होइत अछि जे किछु नहि रहियो कें

एकटा बड़ पैघ सम्बन्ध भए जाइछ । मोनक, आत्माक जकर कोनो सम्बोधन नहि, कोनो अभिधा नहि। मानवक मोने एकटा अदृश्य, अवचेतन अन्तर्लोक होइत अछि जकरा विषय मे ओ स्वयं नहि बुझैत अछि। ओकर मात्र ओतबेटा वस्तु ओकर बड़ पैघ गोपनीय सम्पदा होइत अछि जकरा ओ कोनो मूल्य पर बतएबा लेल तैय्यार नहि होइत अछि । सम्बन्ध-? हँऽ ठीके तँ बाजल यास्मीन-सम्बन्ध सत्ये मोनेक होइत अछि जे सहज भावे सभकेँ सर्वत्र स्वीकार्य भए जाइत अछि ।

पुनः राति-राति भरि जागबाक ई हिस्सक? उफ, कतेक प्राण लेबा अछि ई हिस्सक ? एहि करोट सँ ओहि करोट करैत राति बीति जाइत छल । एकटा अनुभूति उर्दू मे कहल गेल 'एहसास' जे हमरा सुतऽ नहि दैत छल । एकटा 'फीलिंग' जे हमरा करोट बदलवा लेल विवश कऽ दैत छल । मुदा, ई अनुभूति छी की ? एकर नाम की छैक ? ई कोन वस्तु यीक ? एकटा यात्रा, जकर मंजिल अनजान घाटी मे भुतियायल अछि । लिखैत लिखैत लगैत अछि सभटा शब्द हँफसि रहल अछि, सभटा पंक्ति काँपि रहल अछि । सभटा आखर निसाँस लए रहल अछि । ओह ई कोन थकान अछि जे नहि जीवऽ दैत अछि ने मरऽ... मात्र एकटा कुहरबि आहत ह्रदयक आहत आह चाह पर चाह पीबैत छलहुँ तखन प्रायः बीस पचीस कप चाह दिन कें हम नशा जकाँ पीबैत छलौं। जखन कि अपन जिनगीक पहिल कप चाह दुनू बेकति ओकालति आरंभ करबाब बाद पीने छलौं ।

ककरो पत्र नोर मे डूबल अबैत छल तँ लगैत छल ओहो एहि अनुभूति मे डूबल अछि! केकरो स्वर व्यथा विगलित रहैत तँ हमर 'आह' सेहो व्यथा सँ काँपि जाइत- हमर जान निकलैत रहैत छल । भरि दिन ठाढ़क ठाढ़े रहैत छलैं । राति जखन बिछौना पर जाइत छलौं तँ पुनः वएह अनुभूति, एहसास 'फीलिंग'! कखन दिन होइत अछि, कखन राति सभटा एक्के रंग, हमर कमजोर बीमार देह आयुक यात्रा करैत रहल । छाहरियो मे जरैत रहल, रौदे मे पजरैत रहल। एहि यात्रा मे कतेक संगी भेटल मुदा हमरा आर असगर कए गेल, आओर असगर आ हम शब्दक देवाल गढ़ैत रहलहुँ, कैलेण्डरक पन्ना फटइत रहल, मुदा हमर समय जेना थम्हि गेल, बीतिए नहि रहल छल । ओहि राति मोती भाभी हिनकासँ कहने छलीह - "अहाँ सावधान भऽ जाउ। अहाँक घरवालीकेँ 'इन्सोमिनिया' रोग 'डेवलप' कऽ रहल अछि ।"

'इन्सोमिनिया'-ई कोन रोग थीक ? जिनगी तँ स्वयं एकटा रोग अछि आ दम तोड़ैत हमर आत्मा-एहि रोगक एक्के इलाज अछि मृत्यु...मृत्यु ओहि दिन ई अपन आँखिमे ह्रदयक समस्त प्रेम लए हमरा देखने छलाह - एकटा अव्यक्त पीड़ाक भाव संग-राज, अहाँ एम॰ए॰ कए कालेज ज्वाइन कऽ लियऽ। भरि दिन असगर किछु किछु सोचैत रहैत छी ताहि सँ तँ नीक कोनो चीज मे अपना कें व्यस्त कऽ दिअऽ।

हिनक स्वरक उदासी हमर अन्तरकें सिहरा देने छल - कतेक ध्यान छन्हि हमर-सदिखन हुनक इएह प्रयत्न रहैत छन्हि एहि शेफाली कें हम रौद सँ बचा ली-कतेक हमर मोनक ध्यान...हिनकर प्रेम मे हमरा माय-बापक वात्सल्य भेटल अछि - पतिक प्रेम-प्रेमीक आकांक्षा-की नहि भेटल- हमर ह्रदयक पीड़ा कें ओ अपन जीवनक मुस्कान बना लेने छथि । हमर अन्तरक उदासी कें ओ अपन सौभाग्य बना लेने छथि...मुदा... हम खाली अपन सोच...अपन सोच... ।

कहियो-कहियो एकटा अनुभूति होइत अछि जे जिनगी एकटा गीत अछि। एकटा दोसर दर्द ओकरा मोहक स्वर मे गबैत अछि। एकटा विचित्र करुण स्वर मे जे कागजक खंडी पर लिखल आखरक सभटा आकृति आ भाग्य कें बदलि दैत अछि। हमर जिनगी मे ई दोसर स्वर 'यास्मीने' बनि आएल छलीह यास्मीन हमर हेरायल बाल्य भाव..... जकरा सँ दोस्तीए हमरा फोन सँ भेल छल? डी आइजी अंसारीजीक नतनी छलीह पन्द्रह-सोलह वर्षीय यास्मीन। पटना मे बाढ़ि आयल छला। हम सभ महिला समिति दिसि सँ चंदा उगहबा लेल डीआइजी साहब ओतऽ गेल छलौं-ओहिठाम अनचीन्हार किशोरी एकटा चीन्हार दृष्टिसँ हमरा अपलक निहारि रहल छलीह। दृष्टिक ओहि तरलता सँ हम चौंकि गेल छलौं क्षण भरि लेल, भीड़ मे छलौं-काज मे व्यस्त भऽ गेलौं। राति मे अचक्के ओ सरल तरल दृष्टि आँखिक सम्मुख आबि गेल- हमरा लागले अरे इ। तँ हमहीं थीकहुँ।

फेर तँ फोन पर दूनू गोटेक रोजे रोज गप होमय लागल- जनैत छी हम फोने पर अहाँ सँ गप करैत एकटा आकृति अहाँक बना नेने छी। अहाँ हमरा बड़ नीक लगैत छी- यास्मीनक स्वरक कंपनसँ हम सिहरि गेल छलौं आ स्वरक संबंध बनैत रहल।

हँ सुनू अहाँ कथा कविता लिखैत छी? हँ, किएक? एकटा कथा अहाँ लिखू 'फोनक मित्रता'। अहाँक लिखल कें हम सतत अपन ह्रदय मे अंत काल धरि राखब-आ यास्मीनक स्वर स्नेहक आवेग सँ थरथरा रहल छल? ओहि स्वर मे हम अपन आत्मा कें देखि साजक तार जकाँ कांपि गेल छलहुँ- हम क्षण क्षण एहि शेफालीकें बचबऽ चाहैत छलहुँ किन्तु, ओ जेना बताहि भऽ गेल छलि हमर पाछू- किछु दिन लेल गर्मी छुट्टी मे पटना सँ सहरसा आयल छलीह- स्नेहक तिजत्व मे तीताय, हमर समस्त ह्रदयकें रिक्त कऽ यास्मीन चलि गेलीह सहरसासँ। हमरा लागल छल जेना हमर बाल्यभाव पुनः एक बेर हमरा छोड़ि चलि गेल- हम जर्जर क्लान्त रहि गेल छलौं-

जे कथा अनेक वर्ण सँ चित्रित छल, जल-थल, पर्वत, नदीमय मानचित्र सन हमर मोन सँ लिपटल छल ओकरा हम जेना अपना आगू पसारि लेने छी । 'जे आदमी जतेक मित्रता अरजइत अछि, ओ अपना छाती मे ओतबे कील ठोकैत अछि। जेना हमर समस्त ह्रदय कें लहुलहुआन कए देने छल। आइ धरि करेजा मे कीले तँ ठोकैत रहलहुँ - समस्त तनक रक्त जेना हमर मस्तिष्क मे आबि जमि गेल । सभटा नस

चरचरा कें टूटि रहल छल। अंग-अंग थकान सँ बोझिल छल। देह मे पहिरल सभटा कपड़ा जेना सोचक हजार दंश बनि डँसि रहल छल! उदास दुपहरियाक सून आङन, असगर बैसल हम मौन मूक । स्मृति खंडी रौदक खंडी सन हमर मोनांगन मे पसरि गेल। मोनक एहि हलचल कें कलम सँ उतारि कागज पर फेंकवाक ज्वार उठल । हाथ मे कलम काँपऽ लागल, कोना शुरू करी ? तावत जय बाबू आबि बैसि रहलाह-"की भऽ रहल छैक भाभी? कोन चीज लिखबाक भूमिका अछि ई ?"

अचक्के हम पुछि बैसलहुँ- "जय बाबू, एकटा पात्राक नीक सनक नाम बाजू- हमर प्रश्नवाचक दृष्टि जय बाबूक चेहरा सँ लिपटि गेल - जय बाबूक मुँह सँ जे प्रथम नाम निकलत वैह हमर कथाक पात्रा हेतीह।

"भाभी ! ई हमरा सँ नहि हएत । अहाँ अपना पात्रा सभक जिनगी दु:खमय कए मारि दैत छी -" हम चौंकि उठलहुँ-एकटा अद्‌भुत बात - "अहाँ वाणी कें किएक मारि देलियैक, गँधाकें, बेदनाकें, हालहि मे यामिनी कें-यामिनी कें। तँ एखनो अहाँ बचा सकैत छी, भाभी । ओकरा बचा लियऽ । हमर माथ भारी भए गेल अछि। पहिने ओकरा बचा लियौक-- मोहन जी प्रलाप मे बजलाह

"जय बाबू ! अहाँ ई किएक नहि बुझैत छी जे एहि छल प्रपंची जिनगी सँ लाख गुना नीक मृत्यु थीक । हम अपन कथाक पात्रा कें अपना सँ बढ़ि कए मानैत छी । तें ओकरा सभकें शीघ्र सँ शीघ्र मुक्ति दिआ दैत छी एहि नरक सँ...' आ, जेना हमर मस्तिष्क घुमऽ लागल - 'हारल जुआरी',क अमित हमर चेतना पकड़ि दहो वहो कानऽ लागल - अहाँ हमर वेदना कें किएक मारि देलहुँ? हमर पत्नी कें किएक मारि देलहुँ ? की विवेकहीन भए मानव कोनो अनर्थ कऽ बैसत तँ एतेक कठोर दंड? हम अमित कें कहऽ चाहलहुँ-'हमर तँ इएह मान्यता अछि जे स्त्री-पुरूषक संग यदि कोनो आकस्मिक घटना घटित भए जाइत अछि - किंवा कोनो भयंकर अपराध कऽ बैसैत अछि तँ ओकर मर्यादा नष्ट नहि होइत छैक । हँ, अहाँक वेदना एतेक कोमल, एतेक मसृण छलीह जे ओ अहाँक विश्वासघात नहि सहि सकलीह । ओकर मरनाइ आवश्यक छल, आवश्यक ।" अमित कनैत रहल- 'हम अहाँ सँ सहमत नहि छी ।'

जय बाबू सेहो हमरा सँ सहमत नहि भेलाह आ हम उदास भए गेलहुँ- नितान्त उदास-'वेदनाक सम्बन्धक' मीता अपने शेखर सँ निर्दोषरूपे कहि रहल छलीह- "शेखर बाबू ! हमर अन्तरक उदासी सँ गंगा उदास भए गेल ! मुदा कोनो मानव पर एकर असरि किएक नहि पड़ैत अछि"-शेखर लग कोनो उत्तर नहि छल । कोनो पुरूषक संग कोनो उत्तर नहि रहैत छैक किन्तु समाजक द्वारा अपना लेल बनाओल प्रत्येक मान्यता कें स्वीकारैत नारी अपन अस्तित्वक रक्षा लेल सतत प्रयत्नशील रहलीह । डॉ० मंजूगीता मिश्रा आ जस्टिस मृदुला मिश्र सन नारी अपन त्याग, समर्पण आ धैर्यक बल पर समाजे नहि देश-विदेश मे नारी-शक्तिकें उजागर

केलनि । जखन मंजूगीताक जीवन मे एहेन हृदय द्रावक घटना भेल छल तँ श्री कृष्ण नगर मे चाचीक विक्षिप्तावस्था कें देख सिहरि उठल छलै । मृदुला जीखन अपन जीवन गाथा सुनौलनि तँ हुनक त्याग, तपस्या कें देखि समाज पर हमरा आक्रोश उठल छल-की समाजक कोनो दायित्व नहि--उन्मत, उल्लास मे विभोर भए नहि जानि कतेक युग सँ ई समाज एक्के ढँग सँ अपन एक्के रेख पर चलल आबि रहल अछि। ओ बिसरि गेल अछि जे कतेको सदी सँ परिष्कृत, परिमार्जित ओकर रक्त क्रमश: गाढ़ भए ओहि साधनाक धार सँ विछिन्न भए चलल जा रहल अछि। नदी मानू उलटे बहि उपत्यका दिसि चलल जाइत हो- सोचैत-सोचैत हमर मोनक समस्त ग्रन्थि शिथिल भऽ गेल - 'काश ! की हम अपन अन्तर्दाह कें, अन्तज्वाला कें शान्त कऽ सकितहुँ !' छटपट, छपपट करैत रहि जाइत छी कि हमरा सामने एकटा निसासक ' प्रकृति' हिचुकि उठलीह-' हमरा सभ कें जीवनक निर्माता हेबाक चाही । ई समाज कुमारि कन्या कें देखऽ नहि चाहैत अछि । ई अशक्ति, असमर्थता मानव अपमानक साक्षी ई दुगुर्ण कहिया धरि नारीक विशेषता बनल रहत ? नारीक अधिकार खाली माय बनबाक अछि - जाधरि एहि मान्यता कें हमरा सभ अवला बनि स्वीकार करैत रहब ताबत हमरा सभक संग एहिना हएत । कोनो धर्म मे एहि अन्यायक प्रतिकार नहि अछि, एकर प्रतिकार अछि तँ मात्र अपना अन्तर मे-"प्रकृतिक आँखि भरि आएल छल --'इति की नारी वियाहक विनु किछु नहि? की ओकर कोनो गति नहि -सरिपहुँ अपन काल्पनिक पात्रक विलखव आ तेज अपने परिवार मे प्रकृति नहि, मातृ पितृ विहीना पवित्री मे भेटि गेल छल। हम अपन प्रकृति कें, एहि पवित्री कें "स्वय" कें चिह्नबाक प्रयास मे जेना अपन कथाक जीवंत पात्रक रूप मे देखैत रहि गेलहुँ ।

विद्यापति जयन्ती मे आरसी प्रसाद सिंहजी आएल छलाह । - हम गुलाबी नुआ पहिरने मौन मूक मंच पर बैसल छलौं । मणिपद्मजी, डॉ जयकान्त मिश्रजी, अमरजी आदि मैथिलीक मूर्धन्य कवि लोकनि मंच पर छलाह, असगर कवयित्री हम । कनिये काल मे आरसी जी हमरा बजाय कहलन्हि - "अहाँ शेफालिका छी की ?" हम स्वीकारात्मक माथ हिलाय हुनक चरण रज लेलहुँ-"अहाँ कें देखतहि हम बुझि गेलहुँ - अहाँ शेफालिके भए सकैत छी । अहाँक रचना सभ तँ हम पढ़ैत छी - मुदा... हमर दुनू हाथ मे जेना खुशीक ताजमहल आबि गेल छल-अहाँ शेफालिके भऽ सकैत छी - अहाँ शेफालिके भऽ सकैत छी- हमर मोनमे आरसीजीक ओहि कविताक किछु पंक्ति नाचि गेल जाहि पर हमर नाम राखल गेल अछि-मधुकरि! एहि विश्व-विपिनक हम सरल शेफालिका छी---।

वीरेन्द्र मल्लिक जी एक दिन हमर कथा-कविता लेल कोनो सागर कोनो जंगलक गप्प करैत रहलाह-"लगैत अछि जेना कतौ भटकि जाइत छी, कतौ हेराय जाइत छी" -- हम सुनैत रहलहुँ, हुनक भाव-जाल मे ओझराय स्वयं हेराय गेलहुँ।

स्मृति क कील जेना आओर करेजा मे टीसऽ लागल – ईश्वरी भैयाक ओतय कवि-सम्मेलन मे रामगोपाल 'रूद्र' जीक कहब मोन पड़ि गेल– ''आपकी कविता सुनने के बाद 'वाह' कहने का होश नहीं रहता, एक 'आह' सी निकल जाती है''– आओर इ 'आह' हमर जीवन बनि गेल ! जिनगीक लहरि मे भसियाइत, भसियाइत थाकि जाइत छी तँ अन्तर सँ उच्छवास निकलैत अछि– ''आब नहि जीअल जाइत अछि' । मुदा, संसार जखन किछु दैत अछि तँ वरदान बुझि दूर्वादल सन ओकरा धारण कऽ लैत छी–'' मैं आप में माँ, बहन, दोस्त का प्यार चाहता हूँ ! इन सबकी मिली-जुली तस्वीर हैं आप जिनमे माँ की शफ्फकत है, एक तरफ बहन की पाकीजा मुहब्बत है, तो दूसरी तरफ दोस्त की तरह हमराज...!

तखन हमर मोनमे आक्रोश उठल छल– दीपशिखा क डहनाइ पर, गुलाबक मुस्कान पर-केओ ओकर हृदयक दरद चीन्हवाक चेष्टा कएलक–! आ छाती मे गड़ल काँटी सभ आओर भीतर...आओर हमर अन्तर कें लहुलुआन कऽ देलक हम घबड़ाय कँ कलम राखि दैत छी ।

साहित्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'क अभिव्यक्ति थीक. मात्र सत्यक प्रतिष्ठासँ साहित्यकारक कार्य पूर्ण नहि होइत छैक. सत्यमे सुन्दरताक समावेश हो तँ कलाक रूप छिटकि जाइत अछि. आ दुनूक योगसँ सत्यक मंगल रूप मानव जीवनकँ शुभ बना दैत छैक आ तखन ओ स्वयं आनन्द रूप भऽ जाइत अछि. एहि तरहे साहित्यमे सत्यं शिवम् सुन्दरम्क अजस्र धार प्रवाहित होइत रहैत अछि।

साहित्य कोनो भाषाक हो-मैथिली, मणिपुरी, डोगरी आदि-ओहिमे स्थायित्वक बड़ पैघ महत्व होइत छैक। कोनो युग आबय मुदा प्रेम, ममता, मोह, वात्सल्य, घृणा, क्रोध आदि भावना चिरंतन होइत अछि, शाश्वत होइत अछि। साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि। आब साहित्य संस्कारक दर्पण भऽ गेल। समाज रहल कतए? जतऽ एकात्मकता रहैत छल, एक दोसरा संग मिलि सुख दुख बँटैत छल ओ समाज होइत छल। मुदा आब? सभ अपना-अपना लेल। समाज टुटि रहल अछि, परिवार टुटि रहल अछि। पति पत्नी संतान-परिवारक अवधारणा भऽ गेल। एकटा समय एहनो अवैत अछि जखन माय-बाप देखैत अछि जे हम सभ एकदम असगर छी। बाल बच्चा सभ अपन अपन परिवारमे लागि गेल, तखन हमर परिवार कोन-हम ककर-आ दुर्दिन तखन अवैत अछि जखन माय बापमे सँ एकटा चलि जाइत छथि? आ फेर बचल एकटाक किस्मत-ओ एहि कलमसँ व्यक्त हेवामे पूर्णतः अक्षम अछि. एकटा माय बाप सात बाल बच्चाकें पालि पोसि आदमी बनवैत अछि मुदा सात बाल बच्चा मिलि एकटा माय बापकें नइं राखि सकैत छथि-की एकरा परिवारक संज्ञा देल जा सकैत अछि? की साहित्यक कोनो दायित्व नहि एहि दर्द लेल।

हम सभ अपन भारतीय संस्कृतिक गप करैत छी हम जखन सुपर्णा लग रूस मे एकतरीनबर्ग गेल छलौं तँ मनोज जी आ सुपर्णाक किछु रूसी संगी, किछु रूसी डाक्टर क्षण हमरा सँ भेंट करबा लेल डेरा पर आयल छलाह ? बिना मसालाक खेनाय सुपर्णा बनौने छलीह ? ओहिठाम ओ सभ हमरा सँ रूसी भाषा मे बात करैत छलीह पाहुन ओकर अनुवाद कय हमरा कहैत छलाह। हम पाहुनकें मैथिलीए मे जवाब दैत रही किएक तँ ओ सभ अंग्रेजी नहि जनैत छल तें हम कोनो भाषामे बाजी ओकरा सभ लेल धन सन। ओहिमे एकटा डाक्टर बजलीह– हमरा सभकें हरदम अपन माता-पिता लेल सोचबाक चाही। हमरा सभकें पालि-पोसि जीवनमे सेट्ल कय ओ बुझैत छथि जे हमर दायित्व खत्म भऽ गेल। हमरा सभकें चाही जे हुनका भरोस दी जे अहाँ सभक आवश्यकता तँ आब अछि जखन संघर्ष करैत थाकि जाय तखन जीवनक प्रत्येक मोड़ पर अहाँ सभक अनुभव, अहाँ सभक सलाहक आवश्यकता हमरा सभ कें होयत...हमरा बड़ नीक लागल छल, रूस मे, विदेशमे भारतीय संस्कारक दिग्दर्शन।

सोचैत छी, लेखक, कलाकार उदार वैश्विक दृष्टिकोण रखैत छथि। समस्त मानवताकें एकटा परिवारक रूपमे देखैत छथि. समस्त पृथ्वी कुटुम्बे अछि. लेखक कलाकार यदि राजनैतिक प्रभावसँ मुक्त रहथि तँ भारते नहि अपितु समस्त विश्वमे एकटा जबर्दस्त नैतिक शक्तिक निर्माण कऽ सकैत छथि जकर अनुपम प्रभाव राजनीतियो पर पड़ि सकैत अछि। विश्व शान्तिक स्वप्न साकार होयत। कलाकारक हृदयमे चैतन्यक जे स्फुल्लिग जरैत अछि ओ समस्त ब्रह्मांडक मूलमे जे विराट् चैतन्य-ज्योति अछि, ओकर अंशमात्र थीक। एहि लेल ओ विश्वात्माक अनिवार्य अंग थीक ।

राँचीमे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन भेल छल. डॉ. घनाकर ठाकुरक हृदयमे जे स्फुल्लिग प्रज्ज्वलित भऽ रहल छल से देखने छलहुँ किन्तु वर्तमानमे की भऽ रहल छैक–किछु पता नहि–डा जयकांत मिश्र, बाबू साहब चौधरी, पंचानन मिश्र, पूर्णानन्द पाठक, गिरीश चन्द्र, कृष्ण किशोर, हेमन्त, बुद्धिनाथ झा, महारुद्र झा, डा. प्रकाश आदि– मूर्धन्य साहित्यकार लोकनि तँ ओहि सम्मेलनमे आयल रहथि–ठीक आयोजन सेहो अपना आपमे उत्कृष्ट छल–मुदा किछु रिक्तताक आभास सेहो होइत छल। अभाव अछि एकटा एहेन मंचक-मैथिलीमे, जाहिमे नव-पुरान-जाति पातिसँ बाहर सभ लेखककें समायोजन भऽ सकय। मैथिली बखारी मे बंद नहि रहि छिड़िया जाइ, खेतमे लहलहा जाय। संपूर्ण मिथिलाक सभ जाति मैथिली मे गप करैत छथिन्ह किन्तु ओ ई नहि जनैत छथि जे इएह मैथिली हुनक मातृभाषा थीक। प्रकृतिक कण कण मैथिलीभय भऽ जाय-आवश्यकता अछि एहेन मंचक...–मुदा की संभव छैक ई? समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिकाक संपादक गिरिधर राठीसँ भेंट भेल छल साहित्य

अकादमीक कार्यालय दिल्लीमे. हँसमुख मिलनसार व्यक्तित्व-अपन रचना, स्वयं अनुवाद कऽ पठावैक लेल ओ आग्रह कयलनि। आगि अरूण प्रकाश कें हृदय मे देखने छलौं जभेट आँच हुनक आधार पर छल।

मोन पड़ैत अछि हम श्रमजीवी एक्सप्रेससँ पटनासँ साहित्य अकादमीक मीटींग लेल चलल छलौं। विदा करबा लेल स्टेशन पर राजमोहनजी, अग्निपुष्प आदि कतेको साहित्यकार आयल छलाह। व्यासजी, देवकातजी, मोहन भारद्वाज जी, सुभाषजीक संग ई साहित्यिक यात्रा दिल्लीक छल हमर। श्रम करैत-करैत श्रमजीवी एकदम पस्त भऽ बड़ लेट खुलल, ताहि पर अमियजी अपन पत्नीक संग हकासल पिआसल खुजैत ट्रेनकें पकड़लैनि साहित्यकार सभक संग एकटा प्रकाशक जा रहल छलाह। मनोविनोदपूर्ण यात्रा छल ओ। जें कि हम असगर छलौं तें सभ हमरे खियाल रखैत छलाह. भारद्वाजजीक नेतृत्वमे मीनी मीटींग यानी मीटींगक रिहर्सल ट्रेनहुमे चलि रहल छल. अमियजीक पत्नीक आतिथ्य सत्कार मिथिलाक संस्कृतिसँ भरल छल। रेलगाड़ी घरगाड़ी बनि गेल, मोनक हिलकोरक संगे ट्रेनक हिलकोरक अद्‌भुत साम्य छल। खास कय व्यास जीक संत स्वभाय आ पूजा पाठ समस्त वातावरणकें पवित्र बनाय देने छल। ओहि मीटींगमे दरभंगासँ सुरेश्वर जी, रामदेव जी आ हंसराज जी, बेगूसरायसँ हाशमीजी, हैदराबादसँ नचिकेता जी पहुँचल छलाह। साहित्य अकादमीक सचिव इन्द्रनाथ चौधुरीजी अपन प्रभावशाली व्यक्तित्व आ मोहक मुस्कानक संग बाजल छलाह—आप लोग अपनी भाषा मैथिली मे ही मीटींग करें-बड़ नीक लागल छल।

देवकांत जी हमर सभ बातक समर्थन करैत छलाह। जखन ओ मैथिली अकादेमीक निदेशक छलाह तँ सभसँ पहिने हमर कथा संग्रह 'एकटा आकास'क प्रकाशन मोनसँ केलन्हि, ओ स्वीकृत पांडुलिपि चारि-पाँच बरिससँ अकादेमीमे पड़ल छल। रमेश भसीनजीक कार्य शैलीसँ सभक मोन मुग्ध भऽ गेल छला मीटींग चलैत रहल. अन्तरमे विरोध रहितहु एक मत एक रसक भाव प्रवाहमे सभ बहैत रहलौं। इन्द्रनाथ चौधुरीजी आ रमेश भसीनजी मैथिली परिवारक एकटा सदस्य लगैत छलाह, सहज, सरल, निर्विकार, निरहंकार। किछु एहिना तँ विजेन्द्र त्रिपाठी, अरूण प्रकाशकेर व्यक्तित्व अछि–

'यात्रा अनुदानक' प्रसंगमे इन्द्रनाथ जी बजलाह-जे वृद्ध नहि होथि आ यात्रा कऽ सकैथ वएह अनुदान लेल सक्षम छथि। हम अपन नाम बजलौ-चौधरी जी चौंकि हमरा देखऽ लगलाह-एकटा महिला घर परिवारसँ बन्हल ओ कोना यात्रा कऽ सकतीह?

मुदा, हमर यायावरी तन आ मोनक व्यथा कथा के बुझत-जे सदिकाल यात्रे मे रहैछ। सभकेओ सहमति दऽ देलन्हि। हम अपरूप संधानमे डूबि गेलौं खुशीसँ। यात्रा तँ तखनहि आरम्भ भ' गेल कल्पनामे।

स्मृतिक झील मे मोनक जलतरंग बाजऽ लागैत अछि....'स्पैरो' बम्बइसँ 'रायटर्स कैंप लेल' निमंत्रण आयल छल संगहि हवाइ जहाज सँ एवा जेबाक टिकट! ई कैम्प अलीबाग सँ आगू कासिद बीच पर छल। हम एतेक समारोह मे कलकत्ता, उड़ीसा आदि एतेक धरि जे साहित्य अकादेमीक समारोह मे कतके बेर गेल छी मुदा लेखक सभ लेल एहेन भव्य स्वागतक तैयारी कत्तहु नहि देखने छलहुँ। विभिन्न भाषाक लेखिका करीब साठि-पैंसठक संख्यामे सभ पहुँचल छलि। बड़का उपलब्धि छल. महिला सभ लेल, सभ हवाइ जहाजे सँ आयल छलीह। महिलाक संस्था, महिलाक द्वारा, महिलाक लेल एहि संस्था 'स्पैरोक'क ट्रस्टी डा० सी. एस. लक्ष्मी निरंहकार आ अपन शालीन व्यवहार सँ सभक मोन मोहि नेने छलीह। ओहिठाम हमरा सभ सँ नीक लागल मंचक पाछू मे टांगल परदा पर सभ भाषाक नाम छपल छल जाहि मे मैथिलीक नाम सभ सँ उपर जगमगाय रहल छल। मैथिली हमरा देखि मुस्का रहल छलीह हम मैथिली कें देखि- देखू हम अहाँ कें कतऽ लऽ अनलौं- अहाँ हमरा कतऽ लऽ अनलौं? एहिना तँ संबलपुर उड़ीसाक प्रोग्राम मे सभ सँ उपर मैथिलीक नाम लिखल छल आ असगरे हमहीं टा मैथिली सँ छलहुँ। स्टेजक बगल मे पांच फीटक मोट थर्मोकोल पर अखंड बिहारक नक्शा बनल छल ओहि नक्शाक उपर हमर चित्र बनल छल, नक्शाक नीचा भावांजलिक पांच छह पाती मैथिली मे आ ओकर अनुवाद अंग्रेजी मे छपल छल- हम सिहरि उठल छलहुँ- 'व्हेन माइ हर्ट बीकम्स डेजर्ट, यू शोअर रेन आन इट....जाहि भावांजलिक बिहारमे केनो चर्च नहि भेल ओ एतेक नाम एतय कोना पाबि लेलक- सभ केओ हमरा भावांजलि सँ बेसी चीन्हैत छलीह।

जखन बंबई पहुंचल छलहुँ तँ अंधेरीक सोबेडील हाउसमे हमरा सभक ठहरबाक व्यवस्था छल। मलयालम लेखिका अनिता थंपा हमर रूम पार्टनर छलीह हम सभ लेखिका सँ गप करैत छलहुं कि हमर स्वर सँ चीन्हि गेल स्पैरोक लड़की सभ-अहाँ शेफालिका वर्मा छी की? हमरा हँसी लागि गेल- कतेक गोटे हमर मित्रगण कहैत छल अहाँ जकरा सँ एक बेर फोनसँ गप कऽ लैत छी ओ दुनियाक कोनो कोन मे किएक नहि रहय अहाँकें अवश्य चीन्हि लेत? तें हम कतेक बेर अपन स्वर बदलिकें बात करवाक प्रयास करैत छलहुँ- दुइ तीन बस सँ हम सभ अलीबाग सँ आगू निर्जन एकान्त प्रकृतिक कोर मे, सागरक लहराइत बाँहि मे बसल कासिद बीच रिसोर्ट मे पहुंचल छलौं। पहाड़ीक आंचर पर उड़ैत चिड़ै जकाँ ई रिसोर्ट छल- कतेको सूट छल, बेडरूम, लीवींग रूम, समुद्र दिसि खुलैत बरंडा आ हरियर लान। बरंडा पर बैसल बाँहि पसारैत सागरक आकुल आमंत्रण देखैत रहू- सौसें रिसोर्ट रिजर्व छल किएक तँ स्पैरोक टीम स्वयं चालीस-पचास सँ बेसी छल। कतेको फिल्मी हस्ती एहिठाम आबि ठहरल छल जाहिमे अमिताभ बच्चनक नाम सुनि मोन आह्लादित भऽ

गेल छल? हमर 'सुइट' एतेक सुन्नर छल जे हमरा होइत छल जे एहिमे अमिताभ ठहरल हेताह आ रोमांच होमऽ लगैत छल। एहिठाम हमर रूम पार्टनर छलीह मराठीक प्रख्यात लेखिका कविता महाजन।

हमर सभक समस्त कार्यक्रम चार्ट बनाय ठोकल छल। भोरे भोर योग, फेर तैयार भऽ जलखै लेल उपर रेस्तराँ छल जकर चारमे लालटेन डिबिया जकाँ टांगल छल आ छोट-छोट बल्ब जरैत। जलखै आ भोजन मे प्रायः सभ प्रदेशक खेनाइ रहैत छल। आ ओहिठाम 'फूड फार थाउट'क कार्यक्रम होइत छल। टेबुल कुर्सी एक दिसि लागल। डायरेक्टर लक्ष्मी कोनो भाषाक लेखिका कें आमंत्रित करैत छलीह ओ अपन भाषा मे कविता या कथांश पढ़ैत छलीह जकर अनुवाद संपूर्णा चटर्जी या कि अरुन्धती करैत छलीह? पहिलुक सेशन तीन चारि लेखिका सँ चाह काफीक संग खत्म भऽ जाइत छल? फेर हम सभ नीचा हाल मे जाइत छलौं- एक घंटाक फिल्म देखाओल जाइत छल। कोनो ने कोनो लेखिकाक त्रासदी पूर्ण जीवनक! खास कय तमिल लेखिका सलमाक त्रासदी पूर्ण जीवन- कतेक कम आयुमे ओकरा अपन लेखनक कारण कतेक पीड़ा या यंत्रणा सहऽ पड़ल छलैक। ओकर पति ओकर हत्या धरि करवा लेल तत्पर छल? किन्तु, सलमा सभ किछु सहैत आइ सरपंचो छलीह आ एकटा फराक व्यक्तित्वक स्वामिनी।

कुट्टी रेवती सेहो तमिल सँ छलीह, असमियाक फूल गोस्वामी, सीमा विश्वास, मिजोक मोना जोटा, जैथांगपुली, मालस्वामी, मणिपुरीक हिम्बानी, नी देवी, अरंबम, मायरंगथम, टूलूक सुनीता सेठी, जानकी छलीह तँ गुजराती लेखिका स्वरूप ध्रुव। सभसँ वयोवृद्धा पंजाबी लेखिका सुखवंत मान छलीह जे सभ सँ बेसी जवान जकाँ करैत छलीह- ओहिनो साहित्यकार चिर युवा होइत छथि स्त्री हो वा कि पुरुष। पंजाबीक दीपेन्द्र, सिमरन एकदम युवा लेखिका छलीह, नेपालीक बिंदिया सुब्बा, शांति क्षेत्रीय, उड़ियाक बनज, प्रतिभा राय तँ उर्दूक अफीफी, हिन्दीक अनामिका, बंगलाक कृष्णा बसु, बाणी छलीह जाहि मे वाणी एकटा बात बड़ सुन्नर बजलीह मैथिली बंगला उर्दू एतेक मीठ भाषा अछि तें स्त्रीलिंग थीक बाकी सभ भाषा पुलिंग थीक। कन्नड़क मल्लिका तुलसी वेणुगोपाल, इन्दिरा सिन्धी कवयित्री, अंग्रेजीक संपूर्णा अरुन्धती, सानिया छलीह? डोगरीक शकुन्तला छलीह। सिसिलियाक एक पांती सौंसे हृदयकें मथि देलक- हमर गाम मे हरदम बाढ़ि अबैत अछि तें हम अपन पलकक तट पर कोनो मकान नहि बनैलौं......तेलुगुक सत्यवती-जयन्ती, नयना कोंकणी लेखिका सभक चहचही सँ, अपन-अपन अंदाज सँ, अपन-अपन भाषा मे हंसीक साम्राज्य पसारैत छल। लगैत छल सागरक उन्मत्त लहरि एहि रेस्तराँमे उमड़ि रहल हो-सभ जवान भऽ गेल छल- दोसर सेशन 'स्टोर्म इन ए टी कप' भोजनक उपरान्त फुलवारीमे होइत छल, प्रकृतिक कोर मे! सांझ मे समुद्र तट पर टहलबाक

आ राति मे मुक्ताकाशक नीचा मंच पर रंगारंग कार्यक्रम होइत छल। कहियो सुषमा देशपांडेक नाटक, सावित्री फूलेक जीवन पर आधारित 'व्हाइ सावित्री' तँ कहियो अदिति देसाइक अभिनय 'एक सूरज अमरी भीतर' तँ मल्लिकाक भारत नाट्यम सभ होइत छल। एकर उपरान्त रातुक खाना, एतवे नहि भोजनोपरान्त नीचा हाल मे फेर सभ एकत्र भऽ कोनो कोनो विषय पर 'रायटिंग द बाडी' तँ 'ए रूम फार वन्स ओन' आदि विषय पर तन आ यौनक चर्च उन्मुक्त रूपे लेखिका सभ करैत छलीह जे हम सभ एहि विषय पर किएक नहि लिखि सकैत छी- आ रातुक एहि कार्यक्रमक नामे छल- 'ओपन हार्ट विथ हाट चाकलेट' एकर बाद लेटिंग गो; जकरा मोन हो इनडोर गेम खेलू- एग्यारह-बारह बजे राति धरि ई सभ चलैत रहैत छल। हम किछु देर बैसि फेर अपन रूममे चलि अबैत छलहुँ। उड़िया लेखिका बनज सेहो आबि जाइत छलीह। ओहिनो हमरा दूनू गोटे मे विचारक पटरी संगे दौड़इत छल? हमरजन्म 9 अगस्त कें भेल छल तँ बनज केर दस अगस्त कें।

एहि अधिवेशनक प्रमुख स्वर छल-कन्याक भ्रूण हत्या, परिवार आ समाज मे नारीक स्थिति-दुख, वेदना, अवसाद सँ भरल। अनामिकाक कविता एकटा बेटीक व्यथा- 'विथआउट ए प्लेस', कृष्णावसुक मागो आमार बाड़ी कोथाय- अपूर्ण पत्र एकटा बड़का अवसादित प्रश्न चिन्ह ठाढ़ कऽ देने छल तँ सी एस लक्ष्मीक कथा 'रुद्रवीणा', मोनोपॉजक उपरान्त पतिविहीन स्त्रीमे कोनो संगीक आवश्यकता होयत छैक- तँ इएह रूद्रवीणा ओकर संगी होइत छैक ओकर प्रियतम दैत काल बाजल छल। एकरा धरती पर नहि राखब ई हम छी।

कोनो कोनो सांझ सभ केओ हवा मे उधियाबैत बीच दिसि उड़ि जाइत छलीह आ हम एकटा पाथर जकाँ रिसोर्ट मे जमल रहैत छलहुँ- कविता महाजनक पांती सभ मोन पाड़ैत-'खरोंचे एक जैसी नहीं होती, सभी एक ही नाखून के हों पर सबका रंग अलग, रूप अलग है- अलग होती है हरेक की लंबाई और हर खोरोच को हम लिख भी नहीं सकते- सुनीताक टुलू कवित हम सभ एक पतिकें संम्हारि नहि सकैत छी, अहाँ कोना पांच-पांच पतिकें सम्हारैत छलहुँ द्रौपदी-अहाँ महान् छी- स्वरूपक गुजराती कविता-दंगाक जीवन्त चित्रण, हम मुसलमान भाईक रक्षा लेल जीवऽ चाहैत छी-! हमर कविता पिआसल पिआसक अंग्रेजी अनुवाद मेनका शिवदसानी सुनौने छलीह। अनुवाद अनामिका केने छलीह- अंग्रेजीएमे बजलीह जे हिनक कविता मे एतेक गहन संवेदना अछि जे अनुवाद बड़ कठिन लगैत छल- दोसर कविता भावांजलिक छल जकर अनुवाद अनुलीना मलिक कयने छलीह? हम मैथिली मे अपन कविता सभ, एतेक जे अपन भाषण मैथिलीमे बाजलौं- सभ मंत्रमुग्ध भऽ सुनि रहल छल आ हमर आत्मा मे मैथिली, मिथिला उद्भासित भऽ चेहरा पर उजागर छलीह।

जिज्ञासु, संवेदनशील व्यक्ति प्रत्येक वस्तुकें, वातावरण कें बड़ सूक्ष्मता सँ देखैत अछि जाहि ठाम ककरो ध्यान नहि जाइत छैक। ओहिठाम सँ सत्व तत्व खोजबाक प्रयास करैत अछि? लोकल अनर्गक प्रलापो मे ओ सार्थकता खोजि लैत अछि- एक सांझ हमरा सभकें बिड़ला मंदिर जेवाक छल ? हम अनठाय दितौं तावत स्पैरो पूजा, पन्ना सभ हमरा जबरदस्ती ऑटो मे बैसबऽ लऽ गेलीह कि एकटा ऑटो सँ हाथ बढ़ाय कृष्णा हमरा अपना लग घींचि लेलीह। ओहि ऑटो मे हम, कृष्णा, सुनीता, जानकी, मल्लिका सिद्धकाटे, तुलसी यानी मैथिली, बंगाली, टुलू, कन्नड़ सभ भाषांक राज भऽ गेल। करीब बीस पचीस टा बड़का-बड़का ऑटो छल? फेर तँ हम अन्ताक्षरी शुरू कऽ देलौं, कारण जे हम गीत गाबऽ बिना कोनो काज नहि कऽ सकैत छी? दोसर जे अपना सँ भगवाक सभ सँ नीक उपाय अछि गीत गबैत रहु-दुख मे या सुख मे- लक्ष्मी बजने छलीह- शेफाली, अहाँ बजैत छी, अहाँकें हाई ब्लड प्रेशर अछि किन्तु अहाँ ततेक हँसैत छी जे बुझा नहि पड़ैत छैक- कोना बजितौं प्रत्येक हँसीक पाछा रूदनक इतिहास नुकायल रहैत अछि? गंगेश गुंजन कहियो इएह प्रश्न हमरा सँ पुछने छलाह- इलारानी सेहो इएह प्रश्न मुदा प्रश्नक उत्तर बस हमर इएह एकटा हँसी रहल !-जिनगी जीवा लेल आग बढ़ऽ पड़ैत छैक मुदा जिनगीकें बुझबा लेल पाछू ताकऽ पड़ैत छैक? हम जनैत छी हमरा जिनगी जीवाक नहि वरन निरंतर सोचैत रहबाक कष्ट अछि।.... आ अपन एहि सोचसँ मुक्ति पएबा लेल छटपटाइत रहैत छलहुँ।

एक ठाम हम कृष्णा अरंबम ऑटो मे बैसल छलौं- तीन चारि टा आर ऑटो बला सभ आबि गेल-पुछलक आपलोग कहाँ से आया- कृष्णा बजलीह कलकत्ता, अरंबंम मणिपुरी-हम बाजलौं। लालू यादव का नाम सुना है- गर्व सँ ओ ऑटोबला बाजल- हाँ क्यों नहीं- हम भी यादव हैं, हमरा सभ कें हँसी आबि गेल छल- बाह रे लालू। सभ ऑटो सँ डैम देखबा लेल पहाड़ी पर गेल छल तँ हम ओहि ऑटो बलासँ पुछलहुँ-कोन नदी पर डैम अछि- बड़ मासूम भऽ बाजल छल गंगा नदी पर। हम सभ फेरि हँसि देलौं- गंगा नदी एतऽ कतऽ- किन्तु, ओ हारि मानय बला नहि छल। दार्शनिक अंदाज मे बाजल- सब नदी गंगा मे मिलैत अछि गंगा समुन्दर मे तँ हम सभ नदी कें गंगे बुझैत छी।

हमर सभक पांचो दिनक कार्यक्रमकेर फिल्म बनाओल गेल छल? विष्णु चुपचाप फोटोग्राफी करैत छलाह। संग दैत छलीह कुट्टी रेवती आ अरुन्धती आ प्रिया! अलग सँ हमर फोटो सेशन सेहो केने छलाह- वक्तव्यक संग संग! एखनो मोन पड़ैत अछि ओ घटना तँ हँसी लागि जाइत अछि- एक बेर बीच सँ हम आ बनज घुरि रहल छलौं कि पाछां सँ लक्ष्मी दौड़ल एलीह- रूकू रूकू, अहाँकें सड़क हम पार करा दैत छी- एहिठामक ट्रैफिक बड़ खराब अछि- आ भरि रास्ता ओ अपन खिस्सा कहैत

रहलीह- कोना सासुरमे सासु हुनका पूजा पर बैसबा लेल कहलनि तँ हम क्षमा माँगि लेलहुँ- हम पूजा पाठ मे विश्वास नहि करैत छी! सासु पुछने छलीह तखन अहाँ कथी पर विश्वास करैत छी- हम आदमी पर विश्वास करैत छी। ओकर दुःख दूर केनाइ हमर पूजा थीक। सासु संतुष्टे टा नहि भेलीह बड़ प्रसन्नो भेलीह। हम पुछलहुँ। अहाँक पति कतऽ छथि ? ओ बजलीह- एहि कार्यक्रमक जे फिल्म बना रहल छथि, जे शूटिंग कऽ रहल छथि, वएह हमर पति छथि।

-हम अकचका गेल छलौं- अहाँक पति छथि विष्णु ? एतेक शांत- अपना काज मे डूबल मौन आ विष्णुक इएह एकान्त भाव अपन कर्तव्यक लेल, हमरा आकृष्ट करैत छल-

एक बेर हम सभ बाड़ी झूला पर बैसि रामायणक गंभीरता आ महाभारतक विश्लेषण कऽ रहल छलौं जे कोन भाषा मे की सभ लिखल गेल अछि- एहि मध्य विष्णु अपन टीम सहित आबि हमर सभक गप सभक फोटोग्राफी करऽ लागल छलाह? तखन हम विष्णुकें कहने छलौं अपन पता हमर नोट बुक पर लिखि दियऽ विष्णु हमर नोट बुक पर चुपचाप लिखि देलनि- विष्णु माथुर हम चौंकि गेल छलहुँ माथुर ई कायस्थ छथि- मुदा, बाजलहुँ किछ नहि। विशाल समुद्रक समक्ष जातिक क्षुद्र सन विन्दु ढारि देनाइ नीक नहि लगैत छल। दोसर दिन विष्णु कें हम भोजन काल कहलहुँ- जनैत छी अहांकें देखैत छलौं तँ हमरा अपन छोट भाइ मोन पड़ि जाइत छल। सुनैत देरी कि ओ शान्त प्राणी बड़ आस्ते बड़ 'अदा'सँ बजलाह- कायस्थ छी ने? आ बड़ 'गरमजोशी'सँ हाथ मिलाय लेलनि हमरा सँ। फेर तँ दूनू गोटेक समवेत ठहाका सँ डायनिंग हाल हिलि गेल, चम्मच प्लेट खनखना उठल, थारी कटोरा जल-तरंग बजबऽ लागल- सभ चकित विस्मित बात की थीक ? किन्तु, बात सागरक लहरि जकाँ उमड़ल सागर मे समा गेल- मुदा, हम मोने मोन मुस्काइत रहलहुँ- कायस्थ छी ने! बंबंई केर लक्ष्मी बनारसक विष्णु सुदूर दक्षिणक पर्वत अरण्यमे उत्तर भारतक गप अह्लादक अनुभूति सँ भरि भरि गेल छलौं- हम सभ कहियो जाति पाति नहि मानलौं जे हमरा समय पर काज देलक ओ हमर जाति थीक जे हमरहु सँ विश्वासघात केलनि ओ अपन जाति कोना भऽ सकैत छथि ? किन्तु, हम एक बेर अनजाने मे जतीयारे कऽ बैसल छलहुँ।

हम जखन आनर्सक क्लास पटना कालेज मे करैत छलहुँ तँ अनन्त लाल चौधरी हमर मनपसन्द प्राध्यापक छलाह। जेँकि लहटन चौधरी हमर नैहर सासुर दूनू दिसि सँ परिवारक सदस्य जकाँ छलाह तँ हम अनन्त लालजी कें लहटने चौधरीक जातिक बुझैत छलहुँ। जखन पी.एच-डी. करबाक बेर आयल तँ हम एकदम अपन मनपसन्द प्रोफेसर चुनलहुँ अनन्तजीकें। ओहि क्रम मे हम हुनक बासा पर जाइत अबैत रहैत छलहुँ। एहि बीच एक बेर केओ परिवार मे बजलाह-रजनी तों अपन बेटी सूकूक कथा चौधरीजीक बेटा सँ किएक नहि लगबैत छह! डाक्टर छैक हुनक बेटा।

हमरा बड़ अजगुत लागल छल–एहेन बात कोन आधार पर हमरा ई सभ बजैत छथि। तखन बुझलौं जे ओ कायस्थे छथि सेहो कर्ण कायस्थ आ अनजाने मे हम जतियारे कऽ बैसलौं। आइयो सोचैत छी तँ हँसी लागि जाइत अछि।

–कासिद बीचक ओहि एकान्त, निर्जन रिसोर्ट मे सभ किछु बिसरि गेल छलौं जे हमर अपन परिवार अछि, बाल–बच्चा अछि–! हा–हा, ही–हीक मध्य अन्तर बैसल नान्हि टा शेफाली कखन बाहर निकलि उछलऽ कूदऽ, नाचऽ गाबऽ लगलीह हम स्वयं नहि जानि सकलहुँ। सभ दुख बिसरि गेल छलहुँ– स्त्री जाति बदनाम छथि साड़ी कपड़ा जेवर जातक गप लेल, एक दोसराक निन्दा खिस्सा लेल– किन्तु, आश्चर्य छल जे सौंसे भारतवर्षक कोन–कोन सँ महिला सभ आयल छलीह नहि तँ कोनो ग्रुपइज्म छल, नहि तँ निंदा खिस्सा–सभक सामने वर्तमान छल, समाज छल, नारीक स्थिति छल, पुरुषक अहंकार छल– अपन अपन भावक आदान–प्रदान! ओना अतीत कहियो विनष्ट नहि होइत अछि हमर चिरंतनताक अर्थे इएह थीक जे भूत वर्तमान आ भविष्य मे प्रवाहित होइत रहैछ! हम पटना विश्वविद्यालय मे रिफ्रेशर कोर्स कऽ रहल छलौं। ओहि समय हिन्दी विभागक अध्यक्ष डा० वीणा रानी श्रीवास्तव छलीह आ हमरा अपन अनुजा तुल्य मनैत छलीह। ओहिनो ओ चांदक बहिनि छलीह। एहि कोर्सक नामे छल 'पुनर्नवा–' नामे एतेक मसृण, एतेक कोमल छल जे बुझाइत रहैक– 'बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी–' हम तीस–बत्तीस बरीसक उपरान्त अपन एहि हिन्दी विभाग मे गेल छलौं किन्तु, तीस बरीसक व्याख्याता सभ एहि कोर्स मे भरल छलाह। हम सभ छात्रक बेंच पर बैसि अपनाकें नवयुवती बुझि रहल छलौं। हम सभ फेर सँ जवान भऽ गेल छलौं। नहुष जकाँ हमरा सभकें यौवन मांगऽ नहि पड़ल ई पुनर्नवाक देन छल? बेंच डेस्क पर बैसि कखनो थपड़ी पाड़ि, कखनो अनर्गल प्रश्नो पूछी, कखनो चुटकियो लैत छलहुँ विद्वान प्राध्यापक लोकनिक भाषणमे हिमालय सँ निकलल धारा जकाँ कतऽ कतऽ सँ व्याख्याता सभ आबि पटना वि.वि.क एहि सिन्धु मे समा गेल छलौं।

एतेक करबाक बादो ध्यान रहैत छल जे घरो जेबाक अछि– कतेक काज पड़ल अछि– किन्तु, एहि कासिद बीच पर पटनाक एपार्टमेंटी कारा सँ मुक्त, दीन दुनिया, अपन आन सभ सँ निश्चिंत, सभक मोबाइल नेटवर्कक अभाव मे बक्सा मे पड़ल–कतेक चैनक सांस छल– मात्र टी वी सँ सौंसे संसारक खबर भेटैत छल–

आ ओहि कार्यक्रमक अन्तिम रात्रि कें हम गरम पानि सँ नहा धोय सलवार सूट पहिरि आराम सँ टीवी देखि रहल छलहुँ कि तावत स्पैरो पूजा आ भावना पहुँचि गेलीह– चलू, प्रोग्राम चलि रहल अछि– हम शाल लपेटि हुनका सभक सँ विदा भऽ गेलौं। आइ अतिथि रचनाकारक कार्यक्रम सभ छल। इन्दिरा शबनम सिन्धी लेखिका खूब नाच केलीह– पंजाबीक दीपेन्द्र, सम्राट गगन नाच मे पाछू नहि छलीह– आब

कविता महाजनक बारी आयल– "हम पहिनहि सभ पैघ लोक सँ क्षमा मांगि रहल छी– सभक जिनगीक विषय मे बाजब– आ ओ सभ सँ पहिने स्पैरोक ट्रस्टी डाइरेक्टर डा० सी. एम. लक्ष्मीक विवाहक पहिनेक स्थिति पर एकटा जोक सुनैलीह– फेर बजलीह– हमर रूम पार्टनर छथि शेफालिका, मैथिलीक लेखिका! ओ अपन हाइ ब्लड प्रेशर देखेबा लेल डाक्टर लग गेलीह! डाक्टर कहलक अहाँ पन्द्रह दिन सीढ़ी नहि चढ़ू उतरू तँ नीक रहत– पन्द्रह दिन बाद डाक्टर फेर देखलक तँ बाजल– अहाँ एक मास आर सीढ़ी नइं चढ़ू– एकदम ठीक भऽ जायब शेफालिका बजलीह– डाक्टर साहब, हमरा बड़ दिक्कत होइत अछि– आब हम नहि सकब– एहिमे सकबाक कोन गप थीक– जतेक रेस्ट लेब ओतेक नीक होयत– नहि ई बात नहि थीक, अहाँ सीढ़ी उतरबा लेल मना कऽ देने छी हमरा रोज रोज पाइप सँ उतरऽ मे बड़ दिक्कत होइत अछि।

आब तँ ठहाकाक एकटा गूँज उठल– वन अरण्य सँ टकरा गेल– सभ हमरा दिसि ताकऽ लागल, हम हाथ मे मुड़ी नुका लेलौं–

हमर 'हाइ ब्लड प्रेशर' आ हमर हँसी एके सिकाक दुई रूप भऽ गेल छल– मालविका आबि कान मे फुसफुसाय गेलीह– शेफालिका जी, पारितोषिक वितरण अहींक हाथे होयत। एकदम अकचकाय सन गेलौं– हम सलवार सूट मे विश्रामावस्था मे सभ सँ पाछू बैसल छलौं– खैर, हम मालविका सँ कहि रूम मे जा सलवार सूट बदलि साड़ी पहिरि लेलौं– मोस्किल सँ हमरा पाँचो मिनट नहि लागल होयत–मोन पड़ि आयल 29 अगस्त'79 ई०क जखन कि सहरसाक गर्ल्स हाइ स्कूल मे तुलसी जयन्तीक अवसर पर हमरा समारोहक उद्घाटन, अध्यक्षता आ पुरस्कार वितरण तीनू काज लेल आमंत्रित कयल गेल छल। हमर जीवनक ओ प्रथम अनुभव छल। बालिका वधू बनल सुपर्णाक नृत्य आ बंदनाक एक्टिंग देखि हम दंग रहि गेल छलौं।

आ हमर नामक उद्घोषणा भेल जे आब शेफालिका वर्माक कर–कमल सँ पारितोषिक वितरण होयत–करतल ध्वनिक तुमुल नादक मध्य हम मंच पर गेलौं– एतेक आदर, एतेक सम्मान सुदूर दक्षिण पच्छिम मे हमरा भेटत, हम कल्पनो नहि करैत छलौं।

एकेक नाम कें माइकसँ बजबैत छलीह आ हम प्राइज दैत छलौं! सभ हमर गर सँ लागि जाइत छलीह, तँ केओ पैर छुवि लैत छल तँ केओ हाथ मिलाबैत छलीह। हम स्वप्नक संसार मे छलौं– मोहाविष्ट सन जेना टीवी पर फिल्म फेयर एवार्ड, स्टार स्क्रीन एवार्ड देखि रहल होइ– किछु एहने अनुभूति भऽ रहल छल– खास कय सभक प्यार, स्नेहक संसार देखि– भाव विह्वल स्वरे बाजलौं– आइ अहाँ सभक सम्मान, आदर आ सिनेह देखि हम अपनाकें बड़ गौरवान्वित बुझि रहल छी– एक आँखि मे नोर सजल अछि, एक आँखि मे हँसी– आजुक बिछुड़ल नहि जानि कहिया मिलब–

हँसी एहि लेल एकटा शुभ स्वप्न सन सात-आठ दिन बीति गेल- सुख आ उल्लाससँ भरल! नोर एहि लेल आइ सरस्वतीक मंदिर सँ सभ सरस्वती अलग-अलग विदा भऽ रहल छथि। सात आठ दिनक सरस्वती पूजाक उत्सव समाप्ति पर अछि। हृदय मे विलग हेवाक वेदना अछि किन्तु, हम सभ एकटा नवीन उर्जाक संगे, नवीन क्षितिज स्पर्श करबाक संकल्पक उत्साह लय विदा भऽ रहल छी- एहि लेल हम लक्ष्मी विष्णुंक संगे समस्त स्पैरो टीम कें हार्दिक धन्यवाद दैत छी! हँ, एक बात हम अवश्य लक्ष्य केलौं जे स्त्री प्रायः जेवर जात, नुआ कपड़ा, निन्दा खिस्साक लेल बदनाम होइत रहैत छथि- किन्तु, देशक कोन कोन सँ आयल हम सभ महिला एहिठाम संग रहलौं- आश्चर्य छल नहि तँ कोनो निन्दा खिस्सा, नहि तँ खुसूर-फुसुर- टीवी धारावाहिक सीरीयल मे वर्णित सासु पुतौहक खिस्सा, पारिवारिक षड्यंत्र, विचित्र, विचित्र वेश-भूषाक संगे नारीक क्रूरतारूप वाकि नोर भरल आँखि- आइ सभ फूसि भऽ गेल- एहिठाम करीब सय कें लगभग, हम सभ नारीए मात्र रहलौं- हमर सभक एकटा नितान्त पृथक संसार रहल, एकदोसराक नोर सँ स्वयं नोर सिक्त भेनाइ, एक दोसराक उल्लाससँ स्वयं उमगित- मात्र साहित्य, समाज आ संवेदनक चर्च सँ ओत-प्रोत रहल ई 'रायटर्स कैंप' केओ पुरुष अनुमानो नहि कऽ सकैत छथि नारीक एहि स्वर्णिम उज्जवलतम पक्ष केर।

सभक थपड़ीक तुमुल नाद सँ धरती आकासक संग सागरक हृदय मे लहरि उठि रहल छल गुरु गंभीर अनुगूंज गूँज सँ लगैत छल खाली हम छी, हम ही छी। जमाना बीति गेल कहियो मौनक बाँहि मे, कहियो असगरपनक बौल पर नहि गाबि सकलौं, थिरकि सकलौं- यह संसार झाड़ और झांखर उलझ पुलझ मरि जाना है- सभ दिन संबंध सभ मे ओझरायल रहलौं- सभकें खुश रखवाक क्रम मे स्वयं कहियो खुश नहि रहि सकलौं। जिनगी भरि तँ भावनाक व्यापार करैत रहलौं, नफा नोकसान सोचने बिना हृदयक सभटा पूंजी दाँव पर लगाय देलौं? की पयलौं की हेराय देलौं-

अपन आन सँ दूर एहि कासिद बीच, नहि पहाड़ पर बीच रिसोर्ट मे रहलौं हम एकटा नेना बनि जेवा लेल चाहैत छलौं-नइं बनि गेल छलौं- कतेक नीक लगैत छल अपना सँ संभाषण- अपन आनक परिभाषा हमर अहाँ सँ दूर-अन्तर अवस्थित शेफाली बाहर आबि गाछ बीरीछक बाँहि मे पर्वत जंगलक कोरमे- सागरक मूक आमंत्रण मे शेफाली गाबि रहल छलीह- हम फेर निरपेक्ष भाव सँ ओहि शेफालीक असीम खुशीकें देखि नहि रहल छलौं वरन ओकरा संग ताल सँ ताल मिलाय स्वयं उन्मादित भऽ गेल छलौं। वापिस बंबई अबैतछलहुँ मँ ट्रैफिक पुलिस जकाँ विकास जी बीच बाट पर ठाड़ भऽ ओहि विशालकाय बस कें रोकि, हमरा उतारि अपन बासा पर पनवेल लऽ गेलैथ। विकास पम्मीक सत्कार सँ मोन छल जीआ ओहिदिन सरस्वती पूजा से हो छल-अलबेला आदि गेलौं मौसी नीतू भेट करवा लेल आदी

गेलैथ आय सरस्वती पूजाक दिन सरस्वतीक दर्शन देवी लेल जमायक उक्ति सुनिले जागेल छलौं।

हम जखन कोनो बात बजैत छलौं वाकि अपन संबंधी सभकें पत्र लिखैत छलौं ओ सभ हमर कोनो न कोनो बात कें, कोनो कोनो पंक्ति कें पकड़िलेत छलाह ओकर पोस्टमार्टम कर' लगैत छलाह-हम कानऽ लगैत छलौं हमर लिखवाक ई तात्पर्य तँ कित्रहुँ नहि छल। हमर भगिना उग्रनाथजी बड़ शांत स्वरे समझौने छलाह- मामी, अहाँ खाली लेखक लेखिका सभक गप करू, हुनके सभ कें पत्र लिखू। ओ अहांक पत्रकें समझि जेताह- उग्रजी कतेक नीक जकाँ हमरा बुझैत छलाह। हँसी आबि गेल छल हमरा- हमरा फोन करबाक बड़ हिस्सक अछि। हरदम फोन घुमबैत रहैछी खास कऽ बाल बच्चा सभकें केओ नहि उठवैत अछि, आब तँ मोबाइल पर नम्बरो आबि जायत अछि। संजीव काजत मम्मी, अहाँ किएक बेचैन छी सभ सुतल छैक अहूँ सुति जाउ। ओ सभ जागत तँ अपने फोन करत-सरिको की हम कहियो सुति सकलहुँ ? ई अनुभूति सभ की हमरा कहियो यथार्थक धरती पर जीवऽ देलक? कालक ई दीर्घ अन्तराल, ई जीवनक कटु मधु क्षण! की उड़ैत कालक संग हम नहि तिनका सदृश भागि रहल छी? तखन कोन स्थायित्व, कोन थकान, कोन तपन !

-जरा सिसु कत दिन गेला- इएह मानव जीवन थीक? मुदा, मानव एकरा एहिना जीवि पबैत अछि की? काम क्रोध मद लोभ मोहक मध्य की मानव संतुलित भऽ सकल अछि?

निरंतर बढ़ैत भावुकता सँ कहियो काल हम स्वयं अपस्यांत भ' जाइत छी, हमर लेखन सेहो हमर पर्याय बनि जाइछ। जे साँच अछि ओकर निषेध किएक? पृथ्वी अपन आवेग मे दिन राति घुमैत रहैछ आ हमर नियति की पृथ्वी थीक ?

एहिना हवाक वेग पर उड़ैत हम साहित्य अकादेमी आमंत्रण पर 'मैथिली उपन्यासक विकास यात्राक त्रिदिवसीय सेमिनारक एक सत्रक अध्यक्षता लेल जमशेद्पुर पहुँचि गेलहुँ। संजीव, संस्कृति, अभिश्री आ शबनमक संगे !

पं० गोविन्द झा, चन्द्रनाथ मिश्र अमर अमरेश पाठक, मायानंद मिश्रक संगम हमरा सभ सँ नीक लागल छल।

जीवछ झा, एम सी मधुकर, रवीन्द्र कु० चौधरी, अशोक अविचल सभ केओ मिथिला सांस्कृतिक परिषद दिसिसँ हमर सभक स्वागतमे चाह जलखै मे लागल छलाह।

शंकरदेव कें देखतहि लागल केओ अपन तँ भेटि गेलाह एहि भीड़ मे जिनका अपन कष्ट आ कि अशोकर्थ लेल किछु कहि सकैत छलौं। ओहि ठामर्य हृदय जेना जीवंत भऽ उठल-

चारू कात सँ कोठरी सभ छल। सभ मे विद्वान लोकनि भोरे भोरे तैयार भऽ रहल छलाह- सरस्वती पुत्र सभक विद्वताक लहरि समस्त वातावरण कें पावन बना देने छल। ओहि भवनक सभागार मे उद्घाटन सत्र आरंभ भऽ गेल। बृजेन्द्र त्रिपाठी जी अकादेमी दिसि सँ सभ अभ्यागत लोकनिक स्वागत भाषण देलनि- साहित्य अकादेमीक उपसचिव बृजेन्द्र जी बड़ शालीन, गंभीर आ शांतिप्रिय लगलाह। ओहिनो साहित्य अकादेमी मैथिलीक अपनत्व सँ, स्नेह सँ तीतल भीजल रहैत अछि। मैथिली भाषा संविधान मे छल वा कि नहि किन्तु अकादेमीक संपूर्ण सहयोग सभ दिन सँ मैथिलीकें भेटैत रहल अछि। एहि लौहनगरीक पर उपन्यासक कथा कविता बुनवा लेल सभ सरस्वती संतान एकत्रित भऽ गेल छलाह। मायानंद मिश्र कें देखि मोन जेना गद्‌गद् भऽ जाइत छल? एक दिसि सुधांशु शेखर चौधरी हमरा प्रकाशित कऽ मैथिली साहित्य मे उजागर केलनि तँ दोसर दिसि मायानंदजीक देल मंच, माइक, आकाशवाणी- आबह शेफालिका तों आइ भागि नहि जइ हऽ- एहि मे अपनत्वक कतेक सिनेह वात्सल्य हमरा भेटैत छल- हम हुनका चाचाजी कहैत छलौं- सहरसा छोड़लाक बाद तँ सहरसाक साहित्यिक मंच हमरा सँ छुटि गेल आ कि मंच हमरा बिसरि गेल, हम नहि जनैत छी। जखन तखन हुनका सभसँ भेंट भऽ जाइत छल तँ प्रसन्नताक अतिरेक सँ भाव विह्‌वल भऽ जाइत छलौं। कहियो साहित्य अकादेमीक बैसार मे सुभाषजी सँ भेंट तँ मैथिली अकादेमीक सदस्य सभक बैसार मे रवीन्द्र जी सँ भेंट। आरो बहुतो सँ भेंट होइत छल तँ लगैत छल साहित्य मे हेरायल हमर बाल्यकाल आबि गेल।

-राजस्थान भवन मे मायानंद जी हमरा देखतहि हमर माथ पर हाथ दय झुर्राइल गर सँ एतबे बजलाह- शेफालिका जहिना सुनलौं ललनजी चलि गेलाह- घर ककरो खेनाय नहि नीक लागलैक। आँखिक आग खाली तोहरे चेहरा नचैत छल- आ रूमाल सँ अपन आँखि पोछऽ लगलाह- तीन दिन राजस्थान भवन मे एकटा पारिवारिक संसार आ कि आत्मीयताक बैकुंठ बसि गेल छल।

रमण जी, रमाकांत मिश्र जी, शंकर देव, अशोक ठाकुर, योगानंद जी, अमरनाथ, शंकर झा, शिवशंकर श्रीविनास, पंचानन मिश्र, सुरेन्द्र झा, कमला चौधरी, दमन जी, अर्द्धनारीश्वर, रवीन्द्र चौधरी, शशिबोध मिश्र, तारानन्द वियोगी, फूलचंद्र झा, सुस्मिता, वीणा, शैलेन्द्र, विभूति आदि एक सँ एक विद्वानक बाढ़ि उमड़ल छल।

सभ सँ भेंट होइत रहल छल- सभक कोठरी मे सभ। हम तँ भोरे भोर चारि बजे करीब उठि कें नहा धो लैत छलौं। किन्तु ओहि समय कतेको कोठरी सँ 'ॐ' केर ध्वनि, तँ भ्रामरीक स्वर यानी स्वामी रामदेवक प्राणायाम चलैत रहैत छल।

उद्घाटन मे आयल सत्यनारायणजी सँ भेंट भेल तँ ओ हमर जमाय निकलि गेलाह- हमर जैधी नीलम सँ हुनक वियाह भेल छल? एकटा अतीतक विसरल चित्र पर सँ बालु झाड़ि फरछाय कें सभ नाता रिश्ता देखलौं।

हमरे जकाँ कमलाजी सेहो अपन अभाग्यकें सौभाग्य बनाय जीवी रहल छलीह। हम सभ अपन दरवज्जाक ताला खोलि रहल छलौं मुरारी मधुसूदन जी आबि गेलाह- बाते बात मे हमरा सभकें देखइत बजलाह- हमहूँ कुमारे छी- हुनक कहब पर हम ध्यान नहि देलौं किन्तु कमलाजी हमरा दिसि ताकि मुस्केलीह तँ तुरत ध्यान आबि गेल। हमर दूनू गोटेक सीउथ खाली देखि स्वतः हमहुँ कुमारे छी- आ फेर कतेक देर तक हम सभ हँसैत रहलौं मोन पाड़ि-पाड़ि- कतेक गोटा लग कमलाजी ई गप बजलीह- दुखोमे मुस्की आबि जाइत छल- तँ हम सभ की करी ?

पंचानन मिश्र सँ- एक दुइ बेर हमरा हुनका सँ क्षण दू क्षण लेल रस्ता बिरस्ता भेट भेल छल। ओ हमरा विषय मे बागमती दामोदर टाइम्स मे सेहो विस्तार सँ छापने छलाह- किन्तु, हुनकर पहिचान हमरा लेल से नइं छल- हमरा मानस मे एकटा आलेख हुनक मिहिर मे छपल छल- तकर एकटा पंक्ति हमर मर्मकें स्पर्श कऽ नेने छल- के छथि ई पंचानन जी? पंक्ति मोन नइं अछि आब तँ आलेखो स्मृति मे नइं अबैत अछि- किन्तु, ओहि एक पंक्ति मे मैथिली वरीय लेखक गणक संग हमरो नाम जुड़ल छल जे हिनका सभ पर कें आंगुर उठा सकैत अछि वा कि के काटि सकैत अछि किछ एहने! तखुनका स्थितिमे मे जत' जत' उत्साहक किरण भेटैत छल हम समेटि अपन मोन-आँगन मे भरि लैत छलौं। जखन अन्हार जीवन मे आयत तँ एहि सभक इजोत ल' आनब, किएक तँ आजुक युग मे सभ किछु भेटि जायत जल्दी प्रशंसा नहि आ पंचानन जी सँ भेटि भेल तँ आदर आ श्रद्धा सँ हृदय भरि गेल- तकर बाद तँ ओ आत्मकथा लेल हमरा ततेक उत्साहित आ प्रेरित करय लगलाह जे हम सोच' लगलौं जे आप बीती तँ अछि नइं हँ आत्मालाप भ' सकैत अछि कतेक निराश हेताह- तखन हमर हुनका कहलौं- अपने पर एतबे भार जे हमरा बीचे मे किछु भ' जायत तँ हम बच्चा सभ सँ पाण्डुलिपि ल' क' एकरा प्रकाशित अवश्य करबाक देवैक। हमर सभ बच्चा अपनेकें सहयोग करत....।

ओहि सेमिनारक मध्य अचक्के मंजू आ मदनजी सँ भेंट भऽ गेल जे अपन युवा डाक्टर पुत्रक आकस्मिक देहावसान सँ शोक संतप्त छल! मंजूक जीवन पर भेल अनभ्र वज्रपात सँ हम अपन दुख विसरि गेलौं। बीहरा मे लड़ाइबला मामा आ हुनक समस्त परिवार स्मृति चित्र मे नाचि गेल मंजू, श्यामा, सिंधु, राणाजी, नारायण जी (निखिल) एकटा प्रेमधारा मे हम सभ भाई बहीन जीवैत छलौं- मंजूक बेटी मोहिनी, मिल्की सभकें देखि लागल कतेक संस्कार आ विनयशीलता भरल अछि- कार चलबैत, स्कूटर चलबैत, माता-पिताक नोर पोछैत, भनसा-भात करैत एतेक, शालीनता! अपने समाज मे कन्या रत्नक मेल टाका पैसा भऽ गेल- हमरा गर्व भऽ उठल ओहि बच्चा सभ पर खास कय छोटका कुमार संभवम् पर।

नहि-नहि करितो कोनो कोनो समारोह मे चलिए जाइत छी। हृदयक आकर्षण

कत' रोकि पायब– खास कय सुधांशु शेखर चौधरीक जयन्ती ओहि महापुरुषक जे एकटा विशाल वटवृक्ष बनि मैथिली साहित्य संसार मे अपूर्व श्री वृद्धि कयलनि। ओहि वटवृक्षक जटाजूट सँ मैथिली साहित्यक कतेको पीढ़ीक जन्म भेल। चेंथड़ी मे रत्न नुकायल रहैत अछि, कोयला मे हीरा। किन्तु, एकरा उजागर केनाय सभक वशक बात नहि थीक– जेँकि हमर 'शेफालिका वर्मा' बनैनिहार शेखर जी छलाह नहि तँ इ नाम प्रमाण-पत्र मे छपल रहि जइतैक।

कहल जाइत छैक बाढ़हि पूत-पिताकें धर्मा– शरदिन्दु एतेक भव्य आयोजन पिताक जयन्ती लेल केने छलाह– आ केशवक धीर गंभीर संचालन। बगल मे बैसल जगन्नाथ मिश्रजी हालचाल पुछइत रहलाह– आ जखन भ्रमरजीकें पत्रकारिता लेल शेखर सम्मान देल गेल तँ अतीव प्रसन्नता भेटल। शरदिन्दु स्वयं कतेको सम्मान सँ सम्मानित छथि तेँ तँ पिताक नाम सँ सभ कें सम्मानित करैत छथि–

सम्मानित करवाक परंपरा सँ हमर मोनमे आरसी प्र० सिंह आबि जाइत छथि– सम्मानित करैत देखि किछु चित्र आंखिक आगू नाचऽ लागल– आरसी प्रसाद सिंह के हम अन्तिम क्षण मे देखने छलौं– कतेक रुग्ण, कतेक असहाय– कत्तौ कोनो सहायता नहि। हुनक अपने किछु प्रतिबद्ध शिष्य अरुण भगत सभ छलाह जे हुनकर उपचार आर्थिक जोगाड़ मे लागल रहैत छलाह। आरसीए नहि, एहेन एहेन कतेक महान साहित्यकार हिन्दीयों मे भेल अछि। अन्तिम काल केओ देखयबला नहि। नहि तँ सरकार आ नहि तँ साहित्य संसार ?

अपना ओतऽ पुरस्कारो जे भेटैत छैक तँ कखनो काल मरणोपरान्त जकर कोनो महत्व नहि अछि। ओहि पाइ सँ रचनाकारक संतति लाभान्वित होइत अछि रचनाकार स्वयं अभाव मे रहि भाव छिड़िआबैत रहि जायत छथि, कखनो काल तँ पुरस्कार एहेन कृति पर भेटि जाइत अछि कि हँसी आबि जाइत अछि लोककें। ओहि रचनाकारक अन्य कृति अपूर्व उत्कृष्ट रहैत अछि मुदा ओहि पर नहि भेटि कोनो आन पर पुरस्कार भेटैत अछि। एहि सँ प्रतीत होइत अछि जे पुरस्कार वितरणकर्त्ता कृति नहि कृतित्वकारकें सम्मानित कऽ रहल छथि। आ एहि तरहक विचारधारा उत्तम अछि यदि रचनाकार के पूर्णता मे पुरस्कार देल जाय कोनो एक्टा कृति पर नीह ओहि पुरस्कार सँ लेखक स्वयं लाभान्वित होथि– विदेश मे वर्डस्वर्थ, शेक्सपीयर, थामस हार्डी ह्यूज आदि साहित्यकार लेल जनता सँ लऽ कऽ सरकार धरि जान दैत अछि? अपना ओतऽ बड़का-बड़का बुद्धिजीवी लोकनि अपन लेखक सभक नामो नहि जनैत छथि। बर मिघंम ये म, मृजा था डा० अरविन्द ओतऽ गेलौं तँ ओहि ठाम बंदना कौशलेन्द्र जीक संग मैथिलीक ठहाका सँ जेना दूगलहुँ दलमलित भऽ जाइत छल । समयाभाव रहितो सृजा जबरदस्ती हमरा शक्स सीथरक क गाम लडगे गेलीह बड़ नीक लागल छल जेना अपन मिथिल मे छी–

कतेक कार्यक्रमक खबरि अबैत अछि, जेबाक मोने नहि होइत अछि। सभ करैत छथि–अहाँ बदलि गेल छी, किन्तु हमरा लेल तँ जमाना बदलि गेल। नव पीढ़ीक सुरतान मे हमरा गाबऽ नहि अबैत अछि। स्वयं के काते राखैत छी कि फेर नहि जानि कोना सभक संग ठाढ़ भऽ जाइत छी! नीक छथि जीवकांत एके ठाम सँ बैसल बैसल सभ पत्र-पत्रिका मे साकार भेटि जाइत छथि! ओहि दिन योगेन्द्र मल्लिक फोन केने छलाह– मणिपद्म जयन्ती मे आउ! उदासीनता हमरा घेरि लैत अछि– कहियो एहि मणिपद्म जयन्ती मे हम कवयित्री-गोष्ठीक आयोजनक संगे संचालन सेहो केने छलौं। मणिपद्म जीक पुत्री आयल छलीह संगे। नव नव कवयित्री आशा, माया आदि सभकें अपन कविताक संग ठाढ़ केने छलौ। किन्तु उचित हवा पानि नहि मिलला सँ सभ मौलाइ गेल नहि। माया ओहिदिन पुछलीह– हरिमोहन झा जयन्ती मे नहि गेलौं ? कोना बाजी, हमरा सभटा निरर्थक लगेत अछि। भरि जिनगी इएह सभ तँ करैत रहलौं। कालक परिवर्तन हमरा सभ ठाम सँ निरासक्त बना गेल। हम सभक संग प्राय: खेपि नहि सकलौं–एक बेर मनोज जी रूस मे कहने छलाह– मां, अहाँ किएक ने कोनो संगी खोजि लैत छी जकरा संग अहाँ हँसि बाजि सकी। अपन सुख-दुख, मोनक बात बाजि अपनाकें हल्लुक कऽ सकी।–मोनक बात– संगी ? कल्पने सँ भय भऽ जाइत अछि। पतां नहि के कखन अपन निजत्व मे तीताय देत पीठ पाछां, कथ्य-अकथ्य बाजि उपहासक पात्र बना देत। एहि जीवन मे जकरा जानलौं, सभकें अपन संगी बुझलौं– कूल बुझि लेलौं सहारा मुदा तरणि धरि धार भऽ गेल।–परछाहीं के पकड़नाइ आसान थीक की ? किन्तु, संगी भेटल छलीह। इंगलैंडक न्यू कास्ल मे संडरलैंडक सीमा स्व० डा० गौतमक पत्नी-दूनू गोटे दुख आ वेदनाक एके तराजू पर छलौं।

–हम अहाँकेँ शेफाली कहि सकैत छी– हमरा हँसी आबि गेल छल। कौशलेन्द्रजी बंदना जखन अस्पताल चलि जाइत छलाह, अंकिता अनुपमा स्कूल तखन ओ नेपाली सुन्दरी स्वयं कार चलबैत पहुंचि जाइत छलीह हमर। लग। फेर तँ दूनू गोटे उड़ैत उड़ैत न्यू कास्ल संडरलैंड एक कऽ दैत छलौं। कोन पार्क, कोन शापिंग सेन्टर– कतऽ कतऽ लऽ जाइत छलीह।– घंटो हम सभ हृदयक गप करैत छलौं घर परिवारक चर्च सँ दूर चान तारा कें धरती पर लऽ अनैत छलौं। हमरे जकाँ सीमा सेहो पागल छलीह। अबैत काल हम ओकरा एकटा सुन्दर साड़ी ब्लाउज देलौं जकरा पहिरि ओ हमर प्यारक प्रतिदांन दऽ देलीह। किन्तु ओ सेहो हमरा एकटा घड़ी देलीह जकरा हम 'फ्रेंडशिप बैंड' जकाँ आइयो अपन हाथ मे बान्हने रहैत छी। घड़ीक मंद स्वर मे हमरा एखनो अपन आ सीमाक हृदयक धड़कब सुना पड़ैत अछि। किन्तु, सीमाक सीमान छल आ हमरो सीमान, अपन-अपन सीमान मे दुनू अलग भऽ गेलौं।

कतेक दिन बाद शिव कुमार झा नीरवक पुस्तकक लोकार्पण समारोह मे गेल छलौं।

शरदिन्दुक आयोजन, आजादक संचालन एकटा अनुराग हमरो लेल अपना हृदय मे नेने- ई हम स्पष्ट देखलौं! विद्यापति पाठक अकसर पा बुद्धिनाथ मिश्र, सरस जी सागर कें प्रथम बेर स्यात् साकार देखने छलौं- वीरेन्द्र जी ओहिना ओझरायल आ रामलोचन ठाकुरक मंदमुस्कीक हमरा समक्ष अतीत अंगेठी लऽ रहल छल।

ई आत्मकथा जखन अपन प्रवाह प्रवेग मे पाँच सय पन्ना लिखा गेल तँ शरदिन्दु बजलाह-अहाँ एकरा काँटि छाँटि दियऽ। हम पांडुलिपि हुनके दऽ देलहुँ ई काट छांट अहीं कऽ दियऽ। हम मानसिक रूप सँ तंग भऽ गेल छलौं- आब ई जटाजूट हमर अख्तियार सँ बाहर भऽ गेल छल। शरदिन्दु पांडुलिपि लऽ गेलाह आ किछु दिन बाद अपन किछु नोट संग आपस कऽ देलनि। जकर किछु पंक्ति एखनो पढ़ैत छी तँ आँखिक संग संग हृदयो नोरा जाइत अछि- 'अहाँक भोगल यथार्थ कें कपचबाक धृष्टता करबा मे स्वयं कें असमर्थ पाबि रहल छी से एहि कारणे जे 'पापाक बेटी बतहियाक' असाधारण सम्प्रेषणीयता के बाधित-खंडित करबा योग्य हम असाधारण कलमक पुजारी नहि छी' हम चंचल नेना बनि जाइत छी- अपन पापाक संग उछलैत कूदैत, हुनका गुदगुदी लगबैत। जेना पापा एखनो कतौ सँ बाजि रहल होथि- उस द्वार से भी दुख दूर रहे जिस द्वार से मिले लोकार्पण समारोह मे ओहि दिन प्रेमलता पुछने छलीह-

-आब तँ पटना सँ बाहर जेबाक नहि अछि तँ हँसैत बाजलौं- उपर छोड़ि कत्तौ नहि जायब- प्रेमलताक सिनेह भरल झिड़की- धौह, की बजैत छी- नीक लागल छल 'धौह'- कतेक अपनत्व छल एहि शब्द मे।

मोन पड़ि जाइत अछि छत्रानंद- बटुक भाइक गीत-'बीच मझधार मे छोड़ि गेलौं अपने' हृदयके के बुझत ?

ओहि दिन चित्रगुप्त भगवान प्रायः पचास बरीस बाद अपन घर घुरलाह आ आदि मंदिर प्रबंधक समिति द्वारा हमरा डा. मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर सम्मान सँ' हिन्दी साहित्य लेल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सम्मानित केलनि- सभ खुश छल- किन्तु हम सांचे थाकि गेल छी आब- ओहिनो पटना-दिल्ली केनाय जखन कि खाली हवाई जहाजे सँ जाइत अबैत छी-ताहि पर दिल्ली मे खन रोहिणी, खन मुकर्जी नगर-महानगर स्थिति तँ आर खराब भऽ गेल अभ सभ भागि रहल अछि अपस्यांत भेल, ककरो लेल को करो छुट्टी नहि, जतबा पाइमबैत छथि ओहि हिसाब सँ तनाव कीनैत छथि एहि भागक की आगम ओ स्वयं नहि जनैत छथि-आब किछु नीक नहि लगैत अछि- राति मे जखन ओछाओन पर सूतल रहैत छी कतेक काल धरि बीतल युगक नीरव इतिहास आगू मे ठाढ़ भऽ जाइत अछि- की सरिपों, जाय बला कें भविष्यक आभास होमऽ लगैत छैक ? तखन तँ वर्मा जी जेबा सँ दुइ तीन मास पहिने हमर पलंग लेल लाल रंगक तोसक बनवाय देलनि। 'स्पान्डलाइटिस'क कारण डा० सुनील

मल्लिक सँ पुछि दुइटा लरगुज सन तकिया बनवाय देलनि। पलंगक पौआ कटवाय हमर इच्छानुसार नीचा करवाय देलनि। सौंसे पलंगकें लाल रंग सँ पेन्ट करबा देलनि। ओ स्यात् जनैत हेताह जे हमर राज कें हमरा बिना जीवऽ पड़तैक- ओ ककरो सँ किछु अपना लेल नहि कहतीह- कतेक बेर तरुणा- संजीव बाजल- मम्मी आब अहाँ एहि पलंग कें बदलि दियऽ। हुनका कोना कहब जे अपन वियाह यानी उनसठ ईस्वी सँ ई पलंग डुमरा सहरसा होइत पटना आयल जे हमर सभक प्रणयक संग संग प्रत्येक सुख सपनाक साक्षी रहल, प्रत्येक दुख हताशाक गाथा एहि मे रहल। कतेक चैन हमरा भेटैत अछि एहि पलंग पर जे संसारक कोनो कोन मे नहि भेटैत अछि। इंगलैंड नहि, रूस नहि, दिल्ली नहि, पांडिचेरी नहि- हमर दुनिया इएह पलंग थीक। सीमित संसारक असीमित विस्तार कँपइत लेखनी-कागजक पन्ना रँगैत स्मृतिमे कखनो जयन्त नाचि जाइत अछि- मामी गे तूँ एतेक नकि छी तखन......राजीव आ तरुणा किछु बाजि दैत छलीह तँ अदिति बड़ प्रेम सँ बजैत छलीह- यार, दादी माँ राइटर छथि ओ तँ एहिना डायलॉग मे बजतीह- हमरा हँसी लागि जाइत छल दस सालक बच्चाक मीमांसा सुनि। अरुषीकें कम बजवाक हिस्सक छल किन्तु हमर चेहराक एकएक टा रेखकें पढ़ि ओहि अनुरूप हमर काज करैत रहैत छलीह। 15 वर्षीय अंकिता लेल इंडिया माने नानी माँ, समयक धार मे बहय दिऔक सभटा नानी माँ हम इंगलैंड मे हरदम गीत गबैत रही अहाँक खुशी लेल- 'इन दिनों दिल मेरा मुझसे है कह रहा तू खाब सजा- तू जी ले जरा......' आंखि भरि जाइत छल- सुप्रभा पांडिचेरी मेडिकल कालेजक द्वितीय वर्षक छात्रा आ प्रसून दूनू भाई बहीन, नानी माँ, अहाँ कहियो कोनो बातक चिन्ता नहि करू हम सभ अहाँक संग छी, हृदय स्पन्दित भऽ जाइत छल, एकटा हिम्मत फेर जनम लऽ लैत छल-तीन वर्षीयदीपांकर नानीयाँ, आप क्यों उदास है मैं आपके पास हूँ- आ संस्कृति स्यात आठेमास सँ हमर नोरपोछैत रहलीह। अभि श्री हमरा उदास देखि देह पर औंघड़ा जाइत अछि आ सात्विक कखनो काल एना तकैत अछि लगैत अछि जेना ई ताकि रहल होथि अहाँ असगर कहाँ छी ?

कखनो काल हिनकर कहल कोनो बात मोन पड़ैत अछि तँ जेना किछु सोचवा लेल विवश भऽ जाइत छी- हम सृष्टिकर्त्ता छी, अहाँ सृजनकर्त्री। छओ संतान हमर सभक सृष्टि, पाहुन सभ एहि सृष्टिक पालनकर्त्ता, पुतहु सभ सृष्टिक रक्षिका, पुनः दूनू गोटे मिलि नवीन सृष्टिक रचना करताह- सरिपहुँ नवीन सृष्टिक नूतन उर्जाक संगे जमाना बदलि जाइत अछि? जया बजलीह- अहां सभक जमानाक बाद जे पीढ़ी आयल ओ तैयो नीक अछि मम्मी मुदा ई नव पीढ़ी फटाफट जवाब दैत अछि। हम एतबे बाजलौं- जे आजुक पीढ़ी अपना अस्तित्व लेल बेसी 'कन्फीडेन्ट' अछि- आजुक पीढ़ी लेल कन्फीडेन्ट शब्द बेसी उपयुक्त अछि ओकर पर्याय कोनो शब्द सटीक नहि अछि।

रूबी कननमुँह भऽ बजैत छलीह- मामी तोरा विरुद्ध केओ किछु बजैत छैक से हमरा नहि नीक लगैत अछि-एहिना राकेशक सरल संभाषण......कखनो मनोजक प्रेममय दृष्टि सभटा दुख पर मेघक छाहरि सन तँ कखनो डायरी मे चून्नूक लिखल-मामी आप मुझे बहुत अच्छी लगती हैं......तँ कखनो मंजूषा शैलूक निश्छल प्यार अपन मामा मामी सँ तँ डबलूक नेह भरल हँसी तँ बुल्लू एम ए, एल एल बी रहितो मात्र गृहस्वामिनी बनि सुमनजीक संगे हमरा सभ लेल स्नेहक अक्षय कोष नेने प्रतिपल मदति लेल तत्पर- ई सभ ककरा भेटैत छैक- ओहि दिन कतेक निश्छल प्रश्न अदिति केने छल- दादी माँ, अहाँक आत्मकथा कहिया खत्म होयत- जहिया हम दुनिया सँ चलि जायब- भक्क दादी माँ! हम सोचैत रहलौं कतऽ खत्म करी- कोना खतम करी। जिनगी पर पूर्णविराम लगा देवाक सामर्थ्य तँ हमरा मे नहि अछि किन्तु, आत्मकथा पर पूर्णविराम लगा देवाक क्षमता तँ हमरा मे अछि.....।

एतबे नहि गाम जखन जाइत छी तँ पल्लवी हमर छोट सन जैधी हमर हाथ पर डरायल डरायल अपन आंगुर फेरइत अछि- हम भरि पांज ओकरा पकड़ि लैत छी- निक्की, शिल्पी, नेहा, स्नेहा, मेघा, अर्पिता अंकित खासकऽ अंकितक लिखल 'माइमम्मी यूआर द बेस्ट इन युनिवर्स......सभकें हमरा लग आत्मिक भावात्मक तुष्टि भेटैत छैक- हम तँ ककरो किछु नहि दैत छी- दिनकर, टिंकी, नन्ही, रिंकू, सोनू विभू कतेक चित्र स्मृति मे नचैत अछि। हमरा सियान सँ बेसी बच्चे सभक संग नीक लगैत अछि- एहियो सँ बेसी अपन जतेक पाठकवर्ग छथि, हमर प्रेरणा स्रोत छथि- प्रशंसक, आलोचक, अप्पन-आन सभ मे हिनके छवि देखा पड़ैत अछि। सरिपों, हम सभ सँ मुहब्बत केने छी ने- जतऽ जतऽ प्रेम प्रीत आदर सँ, एकता सँ भरल हृदय हमरा भेटैत अछि खाहे परिवार हो कि समाज, ओतऽ ओतऽ हमरा ई देखा पड़ैत छथि, वर्मा जी साकार भेटैत छथि- पाहुन सुमन जी होथि आ कि अजीत सिन्हा होथि।

किन्तु, जे हम चाहलौं से नहि भऽ सकल। सभ कें अपन बना लेबाक इच्छा छल, प्रत्येक हृदय मे उतरि जाइत छलौं- सभकें अपन हृदय मे उतारि लैत छलौं किन्तु, केओ ओहि योग्य नहि छलाह जे हमरा बुझि सकितथि.....आश्चर्य लगैत अछि साहित्य अकादेमीक निमंत्रण पर कोना हम नहि चाहितौं जमशेदपुर चलि गेलौं। कोना अचानक भूलल बिसरल गीत जकाँ 'मैथिल समाज' आ 'ओ लोकनि' पुस्तकक प्रणेता विद्वान लेखक पंचानन मिश्र सँ भेंट भऽ गेल। हमर रचना सभक सरगम गबैत रहलाह, मोन प्राण मे नवजीवनक उत्साह झंकृत करैत रहलाह- बीतल युगक इतिहास स्मृति मे अनैत रहलाह- हम चुपचाप मुग्ध सन सुनि रहल छलौं। विश्वास नहि होइत छल हमरा अपन भाग्य पर। बगल मे पड़ल कमला चौधरी हमरे जकां चुपचाप सभटा आत्मसात कऽ रहल छलीह। 'किस्त-किस्त' अतिशीघ्र पूरा करवाक आग्रह- फेर कखनो फोनसँ पुछइत रहलाह कखनो पत्र द्वारा उत्साहित करैत रहलाह कहियो अपन

व्यस्ततम जीवनक किछु पल पन्ना सभकें उनटाय अपन अमूल्य सलाह दैत रहलाह- हमरो लेखनी मे त्वरा आबि गेल- कोना शरदिन्दु घर पर आबि पाण्डुलिपि प्रकाशन लेल लऽ गेलाह- सभ किछु हमरा स्वप्नवत लागि रहल छल। जेना कोनो अदृश्य शक्ति सभ किछु करवा रहल हो- आ ई अदृश्य शक्ति हिनका छोड़ि कें भऽ सकैत छल- मैं तो मरकर भी मेरी जान तुझे चाहूंगा....।

पतिविहीन नारी या पत्नी विहीन पुरुषक जीवन कटल गुड्डी सन होइत अछि जे 'अप्पन' मे अपन संतान मे आधार खोजैत अछि। कतेक विचित्र लगैत अछि वियाहक बेर दूनूक मिलन होइत अछि। चान तारा सँ झिलमिलाइत स्वप्न संसार सजबैत छथि- फेर संतानक उत्पत्ति, पालन पोषण, वियाह दान आ तकर बाद बच्चा सभक अपन अपन संसार, अपन अपन समस्या। पति-पत्नी फेर असगर रहि जायत छथि जाहि ठाम सँ दूनू मिलि जीवन आरंभ केने छलाह ओहि ठाम आबि जाइत छथि। एक स्थिति मे यौवनक उर्जा छल, प्रच्छन्न नदी सन प्राणक जीवन्त वेग, दोसर स्थिति मे शिथिल जीवन, पोखरिक पानि सन ठहरल। पति-पत्नी बेसी लग आबि जाइत छथि एकटा दोस्त जकाँ। प्रेम 'रोमांस' सँ फराक सुख दुख, हंसी रुदन, आलाप-प्रलापक दुनिया मे, जिनगीक उपलब्धि गिनैत-गिनाबैत, नोक झोंक, शिकाइतक पेटार तखनो खुजले रहैत छैक आ कि वज्रपात होइत अछि दूनू मे सँ एक के उठाय भगवान लऽ जाइत छथि- दोसर असगर आधारहीन भरल पूरल परिवार, सुख समृद्धिक मध्य साँस लैतो असगर नितांत असगर भऽ जाइत छथि मृत्यु सँ विवाह करबाक प्रतीक्षा मे।

-लगैत अछि जेना अतीतक गली मे दौड़ैत, संघर्ष करैत क्षणक बीतल कथाक हम वर्तमान छी।

बाल्यकाल सँ हम झरना जकाँ झरझर बहैत रहलौं, पवन उर्मिक संग गबैत रहलौं, फूलक संग झूमइत रहलौं, पात-पात सन डोलैत रहलौं- ई भेटलाह- झरनाकें अपन बाँहि मे समेटि लेलनि, हमर गीत कें अपन अधक शृंगार बना लेलनि- हिनका संग झूमइत रहलौं, डोलइत रहलौं.....आइ घर बेटा पुतौह बेटी जमाय सँ भरि गेल- हम गबैत रहलौं, झुमइत रहलौं केहनो परिस्थिति आयल आ सभ हमरा हिनके जकाँ अपना मे समेटने रहलाह

एकाकी अवसादित क्षण मे जखन डायरीक पन्ना उनटाबैत छी तँ कहियो चोटक दर्द, तँ कहियो खुशीक उजास भरि जाइत अछि। जीवनक एतेक पैघ अनुभव राशि सँ कोनो ज्वलंत अंश, कोनो निजी रहस्य, कोनो चोरायल क्षण अतीतक प्रांगण केर छुटि नहि जाय एकरा लेल सचेष्ट रहल छी। हँ, जे किछु घटल मोनक तह मे घटल जकरा अभिव्यक्त करवा मे हमर लेखनी नहि वरन् हम स्वयं अक्षम छी। प्रत्येक दायित्व कें संपूर्णता समग्रताक संग सहेजबा मे जीवन बीतल जा रहल अछि। एतेक ओझरायल जिनगीक कष्ट वएह अनुभूत कऽ सकैत छथि जकर जीवन मे कर्त्तव्यक

प्रेरणा, मूल्यक प्रति निष्ठा आ दायित्व-बोधक भाव भरल हो। किन्तु, आब थाकि रहल छी- वैधव्यक दुख भोगैत डुमरा परिवारक भाग्य बदलवा लेल चाहैत छलौं- भैरव भैरवी साथ नहि देलन्हि आ ओहि श्रेणी मे हमरा ठाढ़ कऽ देलनि। हँ, डुमरा खानदानक प्रतिष्ठा मे हम चारि चान अवश्य लगा देलहुँ एकर गुमान हमरा अछि। जनजनक अधर पर वकालत क्षेत्र मे वर्माजीक अमर गाथा सभ श्लोक जकाँ उच्चरित भऽ रहल छैक। हुनक सुसंस्कृत संतानक परिवार देश-विदेशमे खानदानक नाम ऊँच कऽ रहल छथि। कखनो काल सोचितो छी ई सभ हमरे सभक बाल बच्चा थीक- विपरीत परिस्थितियो मे कोना कोना पालि पोसि पैघ केलौं, आइ सभटा सपना लगैत अछि- निर्बल सँ लड़ाइ भगवान केर।

किन्तु, आब जिनगी बड़ सूनसान उदास लगैत अछि। आगूमे धीपल रेतक मैदान खाली पएरे हम भागि रहल छी। कत्तौ जेवाक मोन नहि करैत अछि नहि तँ सुख मे नहि तँ दुख मे। किन्तु, तखने एकटा दोसर चित्र देखा पड़ैत अछि- जेम्हर तकैत छी स्नेह-सागर हमरा लेल उधिआ रहल अछि-एहिमे निचिन भऽ चैन सँ सुतवाक मोन होइत अछि- चिर निद्रामे- आगू अंतहीन पथ हमरा दिसि ताकि ताकि शब्दहीन ठहाका मारि रहल अछि- हम धड़फड़ाकेँ उठि जाइत छी, पुनः लेखनी उठाय कागदक पन्ना रंगऽ लगैत छी- अतीतक शोकगीत बिसरि- 'असंख्य बंधने माझे महानंदमय लाभि ओय मुक्तिस्र्वाद एइ वसुधा' आकाससँ, धरासँ पवन उर्मिक वेग सँ, अपन आनक सिनेह सँ एके स्वर आबि रहल अछि- मैं तो मरकर भी मेरी जान तुझे चाहूँगा......

